विश्व-प्रसिद्ध पुस्तक 'THE SKETCH BOOK'
का हिन्दी अनुवाद

बिखरे चित्र

वाशिंगटन इर्विंग
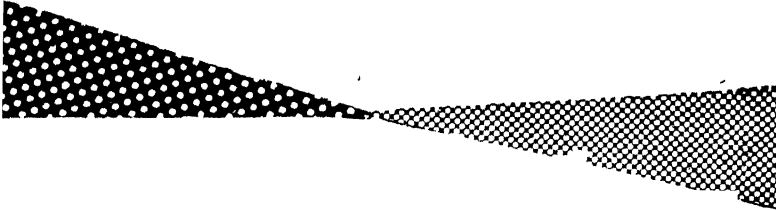
राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

THE SKETCH BOOK by Washington Irving

का हिन्दी अनुवाद

अनुवादक

श्रीरामनाथ सुमन

मूल्य

विशिष्ट सस्करण [illegible]-रुपये

वाशिंगटन इर्विंग (१७८३-१८५९)

लेखक-परिचय

१८१४ मे जब ग्रेट ब्रिटेन के साथ होनेवाले युद्ध की समाप्ति हुई तब अपने भाइयो के आयात-व्यवसाय की ओर से लिवरपूल के व्यापारियो के साथ व्यावसायिक सम्बन्ध स्थापित करने के लिए वाशिंगटन इर्विग इग्लैण्ड गए। उन्होने कानून की शिक्षा पाई थी और न्यूयार्क मे डचो के प्रवेश पर एक मनोरजक इतिहास लिखने के कारण कुछ प्रसिद्धि प्राप्त कर ली थी—यद्यपि उसका लेखक उन्होने एक काल्पनिक जानपद को बताया था, जिसे वह डीडरिख निकरबोकर नाम से पुकारते थे। इग्लैण्ड मे उनके दिन कभी लाभप्रद रहे, कभी सूने और ...त, किन्तु वह प्रेमल और अच्छे स्वभाव के व्यक्ति थे और भ्रमण तथा वार्तालाप मे उनको बडा सुख मिलता था। अपने खाली समय का उपयोग कर उन्होने सर वाल्टर स्काट, राबर्ट सदी, टाम मूर तथा अन्य लेखको से परिचय प्राप्त किया और देहात मे भ्रमण करते रहे—वहा वे ऐतिहासिक स्थानो मे जाते और ग्रामीण प्रथाओ का निरीक्षण करते थे। इन्हीका वर्णन लेखो मे लिखकर पत्रिकाओ मे प्रकाशनार्थ वे अमरीका भेजते रहे। इन लेखो को अग्रेजी पत्रिकाए उद्धृत करती रही और इर्विग ने देखा कि अतलान्त महासागर के दोनो ओर के लोग उनकी इन रचनाओ को पढकर उतने ही प्रसन्न होते है जितना वे खुद उनको लिखकर होते है।

१८१६ मे ये लेख पुस्तकाकार प्रकाशित हुए। नाम था—'दि स्केचबुक आफ ज्योफरी क्रेयान, जेण्ट' (ज्योफरी क्रेयान की चित्राकन पुस्तिका)। इस शीर्षक से ही मालूम पडता था कि वे लेख उतने ही विविध प्रकार के थे जितना कि चित्रकार के आकृतिचित्रो एव भूदृश्यो का कोई सकलन होता है। जब इर्विग को यह सम्भावना दीख पडी कि उनके लेख इग्लैण्ड मे चुराकर पुस्तकाकार छाप लिए जाएगे तो उन्होने प्रकाशक 'कास्टेबल' से उन्हे छापने का अनुरोध किया। किन्तु कास्टेबल की अनिच्छा के कारण इर्विग ने स्वय ही किताब प्रकाशित करने का निश्चय किया। सर वाल्टर स्काट ने उन्हे ऐसा करने से मना किया, किन्तु

इर्विंग इसपर अडे रहे और एक पुस्तक विक्रेता को इस कार्य के लिए तैयार किया, किन्तु वह एक महीने के अन्दर ही बैठ गया। आग्रही ग्रन्थकार ने अब 'कीचड मे फस जाने पर' स्काट से अपील की। स्काट ने उसे छापने के लिए जान मरे को तैयार किया। कुछ ही दिनो बाद दूसरी पोथी भी छप गई। दोनो पोथियो मे वे सब लेख थे जो वर्तमान पुस्तक मे दिए गए है।

यद्यपि विषय-वस्तु मे बडी विविधता है, किन्तु यह पुस्तक 'बिखरे चित्र' (दि स्केचबुक) मनोरजक कथाओ और वर्णनात्मक निबन्धो के अतिरिक्त भी कुछ है। इसने अमरीकी और ब्रिटिश पाठको को एक ऐसे व्यक्तित्व से परिचित कराया, जिसने आगे चलकर अपने मूलदेश की सस्कृति को प्रभावित किया। इसके अतिरिक्त इस ग्रन्थ के कारण विदेशो मे अमरीकी लेखन के लिए आदर बढा। जिस वृत्ति से प्रारम्भिक सघ-युग का अमरीकी यूरोप के, विशेषत इग्लैण्ड के, ऐतिहासिक कोषो या विशेषताओ को देखता था, उसका आदर्श रूप हमे इर्विंग मे प्राप्त होता है। इर्विंग अपने उन अमरीकी बन्धुओ की भाति नही थे जो अंग्रेज पर्यटको की सरक्षात्मक या उपदेशपूर्ण बातो का उत्तर शेखियो और व्यग्यो मे देते थे। इसकी जगह इर्विंग ने 'जिस महती जाति से मैं पतित होकर निकला हू' उसके मिथ्याहकार का मजाक उडाना ज्यादा पसन्द किया और इस प्रकार अपने से कम व्यवहारकुशल लेखको की बाते सुनी जाने के लिए वातावरण तैयार किया।

कोई नवीन पाठक जब इस पुस्तक को पढने के लिए खोलता है तो उसपर यह छाप पडे बिना नही रहती कि वह पुराने मित्रो से मिल रहा है। कम से कम इर्विंग के दो पात्र—रिप वान विकल और इछाबोड क्रेन—तो अमरीकी लोकवार्त्ता के इतने अभिन्न अग है कि जान पडता है, इर्विंग ने उन्हे वलात् छीन लिया है। इतने पर भी, पर्यटक की कहानियो, देहाती प्रथाओ की वार्त्ताओ तथा प्राचीन स्मारको के बीच की यात्राओ के इस पिटारे मे ही एक सौ तीस साल पहले, अमरीकी साहित्य के उष काल मे उन्होने पहली बार दर्शन दिए थे।

ज़ार्ज वाशिंगटन को मरे केवल बीस वर्ष हुए थे, जेम्स मनरो सयुक्त राज्य के पाचवे ही प्रेसीडेण्ट थे। यूरोप धीरे-धीरे नेपोलियनी युद्धो से उबर रहा था। सयुक्त राज्य मे अग्रेजो के विरुद्ध बडी नाराजी फैली हुई थी और ब्रिटिश समालोचक अमरीकी लेखन के प्रति तिरस्कार से भरे हुए थे। किन्तु इर्विंग मे शत्रुतापूर्ण वृत्तियो को दूर कर देने का सहज गुण था और यह पुस्तक दोनो

राष्ट्रो मे अधिक अच्छी भावना पैदा करने का एक साधन बन गई ।

यद्यपि विषयो मे भिन्नता है, किन्तु 'स्केच बुक' की कहानिया और निबन्ध अपने रचयिता के व्यक्तित्व से बधे होने कारण सग्रथित है । उनमे वाशिगटन इर्विग सदा उपस्थित है । यदि वे यह नही बता रहे होते कि उन्होने क्या देखा था, तो भी वे पाठक को इतनी याद अवश्य दिला देते है कि कहानी कहनेवाले वही हे । इर्विग ने इनमे उस कथावाचक (Raconteur) की भूमिका ग्रहण की है, जो उन्नीसवी शताब्दी के हल्के-फुल्के आख्यायिका-साहित्य मे प्रकट हुआ है । वे प्राय कहानी को इस रूप मे उपस्थित करते है, जैसे वह उनकी मूल रचना नही, सुनी हुई है। जब कथावाचक कोई ऐसी कथा कहता है, जिसके लिए विश्वास-शीलता को बहुत फैलाना पडता है, तो वह सदा यह कह सकता है कि वह स्वय उसकी प्रामाणिकता मे सन्देह करता है । जब वे अपने पुरातन मित्र डीडरिख निकरवोकर द्वारा 'रिप वान विकल' और 'निद्रालु खोह की कहानी' कहलाते है तब इर्विग इसी शैली का प्रयोग करते हे । उनके पुनर्लेख बिल्कुल अनावश्यक हे और उन्हे अपठित छोड देना ही अच्छा है । इर्विग के काल के बाद लघुकथा के लेखको ने अनावश्यक वर्णनो तथा व्याख्याओ का त्याग करना शुरू कर दिया। कहानी की वृत्ति (मूड) को अखण्डित रखनेवालो मे पो शायद सबसे प्रभावशाली है । 'स्केच बुक' के प्रकाशित होने के कुछ साल बाद इर्विग ने कहा था—"मै कहानी को एक ऐसा फ्रेम—ढाचा-मात्र समझता हू जिसपर अपनी सामग्री का विस्तार कर सकू ।" फिर भी उनकी कहानी का प्रारम्भ, विकास और अन्त इस प्रकार होता है कि उसने इर्विग को अमरो की अमरीकी चित्रशाला मे सनातन स्थान का अधिकारी बना दिया है ।

इर्विग अक्सर सामान्य से विशेष की ओर बढते है । जब वह पोकनोकेट के फिलिप के कार्यो का वर्णन करते हे तो औपनिवेशिक युग के इतिहासो मे आदि-वासी इण्डियनो के प्रति किए गए व्यवहार पर अपने विचार शुरू करते है । स्ट्रैटफर्ड-आन-ऐवन तथा वेस्टमिस्टर एब्बी की सैर के उनके वर्णन ज्यादा वैय-क्तिक है और बाद के ऐसे कितने ही पर्यटको के ऐसे लेखो के लिए आदर्श-रूप बन गए है । उनके चिन्तन गाथाओ मे पिरो दिए गए है । इर्विग के लिए क्रिस-मस सदा सुखद ऋतु के रूप मे आता था और उन्होने इग्लैण्ड मे प्रचलित प्रथाओ को अपने लिए बडा सुखद पाया । यह देखकर आश्चर्य होता है कि एक शती से

भी अधिक पहले लिखे अपने एक निबन्ध मे इर्विंग ने पुरातन गृहपालित क्रिसमस प्रथाओ के क्रमिक लोप का जिक्र किया है, जो 'दिन-दिन अधिकाधिक धुंधली पडती जा रही है' और 'आधुनिक फैशन द्वारा मिटाई जा रही है।' ऐसी शिकायत पर विचार किया जाना आज के लिए अधिक प्रासगिक है, क्योकि क्रिसमस व्यावसायिकता के कारण खतरे मे है। इर्विंग के बहुत दिनो बाद डिकेंस क्रिसमस के उत्सव पर मुग्ध हुआ और वह उनकी (इर्विंग की) रचनाओ से परिचित था।

अपने जीवन-काल मे भी इर्विंग की लोकप्रियता में उत्थान-पतन का क्रम चलता रहा—अशत इसलिए कि वे बहुत समय तक सयुक्त राज्य से अनुपस्थित—दूर—रहे। जब १८४६ ई० मे वे स्पेन से घर लौटे तो यह देखकर निराश हुए कि उनकी पुस्तके अप्राप्य है और उनका प्रकाशक उन्हे फिर से छापने के लिए तैयार नही है। एक नूतन प्रकाशक जार्ज पी० पटनम ने इर्विंग के कार्य के प्रति विश्वास प्रकट किया, उसने उन्हे जार्ज वाशिंगटन की जीवनी लिखने के लिए साधन प्रदान किए और इर्विंग की पहले की स्केच बुक सहित सम्पूर्ण रचनाओ को फिर से प्रकाशित किया। एक नई पीढी ने इन कहानियो को ग्रहण किया। नये पाठको मे जोजेफ जेफर्सन नाम का एक तरुण अभिनेता भी था, जो स्टाक कम्पनियो का अनुभव प्राप्त कर रहा था। इर्विंग की मृत्यु के वर्षो बाद, जेफर्सन ने हर अच्छे शहर मे रिप वान विकल का अभिनय करके उसको घरेलू नायक बना दिया। आज वह गूदड वस्त्र, जिसे कैट्स किल्स मे लम्बी निद्रा से लौटने के बाद रिप के रूप मे उसने अभिनय के समय पहिना था, इर्विंगटन आन हडसन, न्यूयार्क के सनीसाइड मे स्थित इर्विंग के 'फेयरी-टेल हाउस' मे ऐतिहासिक सामग्री के रूप मे प्रदर्शित है। १९५३ के ग्रीष्म मे रिप पर रेजीनाल्ड डी कोवेन ने एक गीतिनाट्य बनाया था तथा म्युनिसिपल थियेटर सेंट लुई मे एक दूसरा सगीतात्मक मनोरजन उपस्थित किया था। और कुछ ही समय पहले 'निद्रालु खोह की कहानी' ब्राडवे मे एक सगीतात्मक हास्यप्रधान नाटिका का आधार बनाई गई थी।

इर्विंगटन के बहुशिखर-युक्त भवन मे इर्विंग के और भी बहुत-से स्मृति-चिह्न पाए जाते है—पुस्तके जिन्हे वे पढते थे, कलमे जिनका वे उपयोग करते थे, कक्ष जिसमे वे लिखते थे। उस सज्जा के बीच प्रारम्भिक प्रजातन्त्र का वह वातावरण तक सुरक्षित है, जिसमे बैठकर एक रूमानी लेखक ने इन कुमारी पहाड़ियो के अनुकूल कहानियो की रचना की थी।

—हैरी हानसेन

निर्देशिका

संशोधित संस्करण की भूमिका

दो को छोडकर ये सभी निबन्ध इग्लैण्ड मे लिखे गए थे और एक ऐसी लेख-मालिका के अग थे, जिसके लिए मैने टिप्पणिया और स्मरणपत्र लिख रखे थे। किन्तु पुस्तक रूप मे लिखने की योजना के कार्यान्वित होने के पहले ही परि-स्थितियो से बाध्य होकर मुझे उन्हे खण्डश सयुक्तराज्य भेजना पडा, जहा समय-समय पर वे अशो मे या क्रमश प्रकाशित होते रहे। मेरा इरादा उन्हे इग्लैण्ड मे प्रकाशित करने का नही था क्योकि मै समझता था कि उनकी अधिकाश सामग्री केवल अमरीकी पाठको के लिए मनोरजक होगी, बल्कि सच तो यह है कि ब्रिटेन के समाचारपत्र अमरीकी पुस्तको के प्रति जो कठोरता बरतते थे, उसके कारण ही मैने ऐसा निश्चय कर रखा था।

जब इस ढग पर पहली पुस्तक के लेख प्रकाशित हो रहे थे, तो मैने देखा कि उन्होने अतलान्त महासागर के उस पार अपनी राह बना ली है और कृपा-पूर्ण प्रशसाओ के साथ 'लण्डन लिटरेरी गजट' मे छापे जा रहे है। यह भी मालूम हुआ कि लन्दन का कोई पुस्तक-विक्रेता उन्हे सकलित रूप मे छापने की इच्छा रखता है। इसलिए मैने स्वय ही उन्हे प्रकाशित करने का निश्चय किया जिससे उन्हे मेरी देखरेख और सशोधन का भी लाभ मिले। तदनुसार सयुक्त राज्य से प्राप्त छपे लेखो को मै जान मरे नामक विख्यात प्रकाशक के पास ले गया, जिन्होने इसके पूर्व ही मेरे प्रति अपनी मैत्री-भावना प्रकट की थी। मैने उन्हे देखने के लिए उनके पास छोड दिया और यह भी सूचित कर दिया कि यदि वह उन्हे जनता के सामने लाने की इच्छा करेगे तो मेरे पास दूसरी पोथी के लिए भी काफी मसाला एकत्र है। जब कुछ दिन बीतने पर भी मि० मरे से कोई सूचना प्राप्त नही हुई तो मैने उनके मौन का अर्थ लगाया कि उन्हे मेरी कृति स्वीकार नही है, इसलिए उन्हे लिखा कि जिन अको को मै उनके पास छोड आया हू वे मुझे लौटा दिए जाए। उत्तर मे उनका यह पत्र मिला—

मेरे प्रिय महोदय,

मै आपसे यह विश्वास करने की प्रार्थना करता हू कि आपने मेरे प्रति जो कृपापूर्ण भावनाए व्यक्त की है उनके कारण मै सचमुच आपका आभार मानता हू, और आपकी रसमयी प्रतिभा के प्रति मेरे हृदय मे अकृत्रिम सम्मान है। इस समय मेरा घर कामगरो से पूरी तरह भरा हुआ है और केवल एक छोटा आफिस मेरे काम के लिए बच रहा है। कल मै बुरी तरह व्यस्त था, नही तो मै स्वय ही आपके दर्शनो का लाभ उठाता।

यदि मै आपकी वर्तमान कृति के प्रकाशन के लिए तैयार नही हो पाया हू तो इसका एकमात्र कारण यही है कि मुझे वह सम्भावना नही दिखती जो हमारे बीच सन्तोषजनक हिसाब-किताब रखने मे सहायक हो, और जिसके बिना मुझे काम लेने मे सन्तोष नही होता। किन्तु मै इन रचनाओ के प्रचार-प्रसार के लिए सब कुछ करूगा जो मै कर सकता हू, और आपकी किसी भावी योजना पर विचार करने के लिए सदा तैयार रहूगा।

सम्मान-सहित

आपका निष्ठावान् सेवक

जान मरे

यह स्थिति निराशाजनक थी और यदि ग्रेट ब्रिटेन मे प्रकाशित करने की बात केवल मुझपर निर्भर करती तो आगे कोई प्रयत्न करने का साहस मै न करता, किन्तु मुझे भय था कि उस अवस्था मे कोई नकली सस्करण प्रकाशित हो जाएगा। अब प्रकाशक के रूप मे श्री आर्किबाल्ड कास्टेबल पर मेरा ध्यान गया क्योकि जब मै एडिनबरा गया था तो उन्होने मेरी बडी खातिरदारी की थी। किन्तु कई साल पहले ऐबट्सफोर्ड जाने पर सर (तब मिस्टर) वाल्टर स्काट ने मेरा जैसा स्वागत किया था तथा मेरी पूर्व रचनाओ के प्रति जो शुभ सम्मति प्रकट की थी, उससे उत्साहित होकर मैंने कास्टेबल से बात चलाने के पहले अपनी कृति उनको दिखलाने का निश्चय किया। मैंने पार्सल बनाकर छपे अक उनके पास भेज दिए और—उनसे प्रार्थना की कि इधर मैं मुसीबत मे फस गया हू इसलिए मेरे साहित्यिक लेखो को देखने की कृपा करे और यदि समझे कि उन्हे यूरोप मे छपना चाहिए तो पता लगाए कि क्या मि० कास्टेबल उन्हे

प्रकाशित करने के लिए तैयार होगे ?

मैने लेखो वाला पार्सल स्काट के पते पर घोडागाडी से एडिनबरा भेज दिया था और पत्र डाक द्वारा उनके ग्राम्य-निवास के पते पर भेजा गया था। तुरन्त उन्होने, पुस्तक देखने के पूर्व ही, निम्नलिखित उत्तर दिया—

"जब आपका पत्र ऐबट्सफोर्ड पहुचा, मै केल्सो गया हुआ था। अब मै शहर जा रहा हू और वहा कास्टेबल से बात करूगा, और आपके विचारो को आगे बढाने मे शक्तिभर सब कुछ करूगा। मैं विश्वास दिलाता हू कि उससे मुझे जो सुख मिलेगा वह और किसी काम से प्राप्त नही होगा।"

मुसीबत के सकेत ने स्काट को चिन्तित कर दिया था और उस व्यावहारिक एव कुशल सद्भावना के साथ, जो उनकी प्रकृति मे सहज थी, उन्होने मेरी सहायता करने का एक रास्ता ढूढ लिया था।

उन्होने मुझे सूचित किया कि एडिनबरा से शीघ्र ही एक साप्ताहिक पत्र निकलने जा रहा है। इस योजना को अत्यन्त सम्मानित प्रतिभाओ का समर्थन प्राप्त है। सम्पादक के लिए काफी धनराशि की व्यवस्था है। उसको ५०० पौण्ड स्टर्लिग प्रतिवर्ष पर नियुक्त किया जाएगा और आगे और भी सुविधाए दी जा सकेगी। यह नियुक्ति उन्ही के हाथ मे थी और उन्होने यह स्थान मुझे देने का स्पष्ट प्रस्ताव किया। किन्तु उन्होने यह भी लिखा कि कार्य राजनीतिक ढग का है और उसमे जिस स्वर को ग्रहण करना है वह शायद मुझे पसन्द न आए। उन्होने लिखा—"फिर भी मै खतरा उठाने को तैयार हू क्योकि इस महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए आपसे अधिक योग्य आदमी मुझे दिखाई नही पडता, और शायद इसलिए भी कि इसके कारण आप एडिनबरा आ जाएगे। यदि मेरा प्रस्ताव आपको न जचे तो कृपया उसे गुप्त ही रखे क्योकि उससे कोई हानि नही होगी। जहा तक मेरे स्नेह की बात है, मेरी प्रार्थना है, आप मेरे साथ अन्याय न करेगे। यदि इसके विपरीत आप समझते हो कि वह आपके अनुकूल बन सकेगा तो कैसिल स्ट्रीट, एडिनबरा के पते पर मुझे शीघ्र से शीघ्र उसकी सूचना दीजिए।"

इसके बाद एडिनबरा से उन्होने फिर लिखा—"मै अभी आया हू और आपकी 'स्केच-बुक' को सरसरी तौर पर देख गया हू। यह निश्चित रूप से सुन्दर है, तथा इससे यदि सभव हो तो आपको यहा बुला लेने की मेरी इच्छा और बढ गई है। ऐसी बातो के प्रबन्ध मे, विशेषत शुरू-शुरू मे, कुछ कठिनाइया

तो आती है, किन्तु जितना भी हो सकेगा, हम उनका निराकरण करेगे ।"

मैने जो उत्तर भेजा, उसका अपूर्ण मस्विदा, जिसमे कुछ सशोधन किए गए थे, निम्नलिखित है—

"मै प्रकट नही कर सकता कि आपके पत्र के लिए मै कितना कृतज्ञ हू । मुझे तो अनुभव हो रहा था, मानो मैने आपके प्रति अनावश्यक स्वच्छन्दता का व्यवहार किया हो, किन्तु आपमे एक दयालु सूर्यरश्मि है जो हर रेगती वस्तु को उष्णता देकर हृदय से चिपटा लेती है और अपने विश्वास मे ले लेती है । आपका साहित्यिक प्रस्ताव मुझे चकित करता है और मेरे अह को जाग्रत् करता है क्योकि मुझमे जितनी प्रतिभा है उसका वह कही अधिक मूल्याकन कर लेता है ।"

इसके बाद मैंने लिखा कि जो जगह मुझे देने का प्रस्ताव किया गया है उसके लिए मै अपने को बिल्कुल असमर्थ पाता हू, केवल अपनी राजनीतिक सम्मतियो के कारण नही, वरन् अपने मानस की रचना और आदतो के कारण । मैने लिखा—"मेरी समस्त जीवन-धारा अनियमित रही है, और किसी सावधिक पुनरावर्त्तक कार्य अथवा शरीर वा मन के किसी पूर्वनियोजित श्रम के लिए मेरी तैयारी नही है । जो भी प्रतिभा या बुद्धि मुझमे है उसपर मेरा नियन्त्रण नही है, और मुझे वातदर्शक की भाति ही अपने मन की विविधताओ की ओर भी नज़र रखनी पडती है । अभ्यास एव शिक्षण कदाचित् मुझे नियम के अन्तर्गत ला सके किन्तु इस समय तो मैं किसी नियमित नौकरी के लिए उसी प्रकार निरर्थक हू जिस तरह मेरे देश का कोई इण्डियन या एक कजाक सरदार होता है ।

"इसलिए जो कुछ मैने शुरू किया है उसे ही जारी रखना पडेगा—तभी लिखना जब मै लिख सकू, न कि तब जब मुझे लिखना ही पडे । मै जब-तब अपना निवास बदलता रहूगा और मेरी दृष्टि के सामने आनेवाले पदार्थ जैसा सुझाव देंगे, या जो कुछ मेरी कल्पना मे आएगा, लिखता रहूगा और धीरे-धीरे ज्यादा अच्छा और ज्यादा मात्रा मे लिखने लगूगा ।

"यह मेरा अह बोल रहा है, किन्तु आपके प्रस्ताव का उत्तर देने का मै इससे अच्छा तरीका नही जानता कि आपके सामने प्रकट कर दू कि मै किसी काम के योग्य प्राणी नही हू । यदि मि० कांस्टेबल मेरी तैयार सामग्री का सौदा करना पसन्द करें तो वे मुझे अगले प्रयासो के लिए उत्साहित करेगे । यह उस जिप्सी (खानाबदोश) के परिभ्रमण के परिणामो के साथ व्यापार करने के

समान होगा, जिसके पास कभी तो काष्ठपात्र से अधिक कुछ देने के लिए न होगा, और कभी वह रजत चषक भी दे सकेगा।"

उत्तर मे स्काट ने मेरे कार्य से, जो त्रासदायक कार्य होता, इन्कार करने पर दुःख प्रकट किया परन्तु आश्चर्य नही। तब उन्होने हमारे पत्र-व्यवहार के मूल हेतु की ओर ध्यान दिया। लेखको एव पुस्तक-विक्रेताओ के बीच विविध प्रकार के प्रबन्ध की जो शर्तें थी उनसे मुझे ब्यौरेवार अवगत कराया, जिससे मै चुनाव कर सकू। उन्होने मेरे कार्य की और पहले अमरीका मे जो कुछ मै कर सका था, उसकी सफलता मे उत्साहपूर्ण विश्वास प्रकट किया। उन्होने लिखा—"मैने इससे ज्यादा कुछ नही किया है कि कास्टेबल तक जाने का मार्ग आपके लिए खोल दिया है, किन्तु मुझे विश्वास है कि यदि आप उन्हे लिखने का कष्ट करेगे तो उन्हे अपने रुख के प्रति काफी सजग एव उन्मुख पाएगे। या यदि आप इस सम्बन्ध मे पहले मुझसे मिलना उपयोगी समझे तो एक मास के भीतर मै लन्दन आऊगा, और जो कुछ अनुभव मुझे है वह सब आपकी सेवा मे प्रस्तुत मिलेगा। किन्तु मैने ऊपर जो कुछ कहा है, उसमे कास्टेबल से बातचीत करने के लिए अपनी सिफारिश के सिवा शायद ही मै कुछ और जोड सकू।"

किन्तु इस कृपापूर्ण पत्र के मिलने के पहले ही मैने निश्चय कर लिया था कि अब किसी विख्यात पुस्तक-विक्रेता से अपनी कृति के प्रकाशन के विषय मे कोई बात न करूगा और स्वय खतरा उठाकर उसे उसके गुणो के अनुसार, डूबने-उतराने के लिए जनता के सामने रख दूगा। मैने स्काट को इसी आशय का पत्र लिख दिया और शीघ्र ही उनका उत्तर भी आ गया।

स्केच बुक की पहली पोथी लन्दन के एक प्रेस मे हानि उठाने के मेरे आश्वासन पर एक अज्ञात पुस्तक-विक्रेता द्वारा उन सब उपायो का बिना प्रयोग किए दे दी गई जिनसे किसी रचना का ढोल पीटा जाता है। फिर भी उसके कुछ अश 'लिटरेरी गजट' मे निकल जाने के कारण तथा उनके बारे मे पत्र के सम्पादक के कृपापूर्ण शब्दो के कारण उसपर लोगो का ध्यान गया था। अच्छी बिक्री हो रही थी कि पहले मास के समाप्त होने के पूर्व ही मेरे योग्य पुस्तक-विक्रेता के फेल हो जाने के कारण बिक्री मे बाधा उपस्थित हो गई।

इसी समय स्काट का लन्दन मे आगमन हुआ। मैने उनसे मिलकर सहायता मागी क्योकि मै दलदल मे पड गया था। उन्होने हरक्यूलीज से भी अधिक साहस

के साथ अपना कधा मेरे फसे पहिये मे लगा दिया । उनकी अनुकूल सिफारिशो से मरे ने आगे प्रकाशन का बीडा ले लिया—जिसे पहले वे इन्कार कर चुके थे । तब से मरे ही मेरे प्रकाशक हुए और अपने व्यवहार मे उस न्याय्य, स्पष्ट एव उदारतापूर्ण भावना का परिचय दिया जिसके कारण वे उचित ही 'पुस्तक-विक्रेताओ के राजा' नाम से विख्यात हो गए है ।

इस प्रकार सर वाल्टर स्काट के कृपापूर्ण एव अनुकूल तत्त्वावधान मे मैने यूरोप मे अपना साहित्यिक कार्य आरम्भ किया, और मुझे अनुभव हो रहा है कि मै उस स्वर्णिम हृदय वाले व्यक्ति के प्रति आभार प्रकट करके, अल्प मात्रा मे ही सही, उनके प्रति अपनी कृतज्ञता का ऋण चुका रहा हू । उनके साहित्यिक समकालीनो ने जब भी उनसे सहायता या सलाह मागी है तभी उन्हे उनकी उदार एव प्रभावशाली सहायता तुरन्त ही प्राप्त हुई है ।

सनीसाइड, १८४८ वा० इ०

बिखरे चित्र

कुछ अपनी बात

"मै होमर के साथ इस विषय मे सहमत हू कि जैसे शम्बूक (घोघा) अपने खोल से बाहर निकलकर शीघ्र ही मेढक बन जाता है और अपने बैठने के लिए आसन बनाने को विवश होता है, वैसे ही जो पर्यटक अपने देश से बाहर प्रयाण करता है वह शीघ्र ही ऐसे विशाल आकार मे बदल जाता है कि उसे अपने ही ढंग से अपने भवन मे परिवर्तन करने पडते हैं—जहां वह आराम से रह सके न कि रहने के लिए विवश हो।"

—लाइली का यूफ़एस

मुझे सदा से नवीन दृश्यो को जाकर देखने, और विचित्र चरित्रो तथा जीवन-विधियो का निरीक्षण करने का शौक था। जब मैं बिल्कुल बच्चा था तभी मैंने अपनी यात्राए आरम्भ कर दी थी और अपने देशी नगर के विदेशी भागो एव अज्ञात अगो को खोज निकालनेवाली ऐसी कितनी ही यात्राए कर डाली थी, जिनके कारण मेरे प्रतिपालक-गण प्राय चिन्तित हो उठते थे और नकीब या मुनादी करनेवाले की बन आती थी। ज्यो-ज्यो मै बढकर बडा होता गया, अपने निरीक्षण की परिधि का विस्तार करता गया। मेरी छुट्टी की दोपहरिया अब निकटवर्ती देहातो मे परिभ्रमण करने मे बीतती थी। इतिहास या किस्सो मे जितने भी प्रसिद्ध स्थान थे, उनसे मैने अपने को परिचित कर लिया था। मै ऐसे हर स्थान को जानता था जहा कोई हत्या या डकैती हुई थी, या जहा कोई भूत-प्रेत दिखलाई पडा था। मै पास के गावो मे जाता था और वहा के निवासियो की आदतो और रिवाजो को देखकर तथा उनके साधुओ एव महान् व्यक्तियो से वार्तालाप करके मैने अपनी ज्ञान-राशि बहुत बढा ली थी। गर्मी का एक पूरा दिन सबसे

ज्यादा दूरी वाली पहाडी की उस चोटी पर पहुचने मे मैने खर्च कर दिया जहा से मैंने मीलो तक अपरिचित धरती पर अपनी निगाहे डाली और यह देखकर चकित रह गया कि जिस पृथ्वी पर मै रहता हू वह कितनी विस्तृत है ।

उम्र के साथ मेरी परिभ्रमण-वृत्ति बढती गई । समुद्री एव स्थलीय यात्राओ का वर्णन करने वाले ग्रन्थ मुझे प्रिय हो गए । उनमे मै इस तरह मग्न हो जाता कि उनके ब्यौरो को आत्मसात् करने मे स्कूल के नियमित कार्यो की उपेक्षा करता । सुहावने मौसम मे कैसी उत्सुकता के साथ मै बन्दरगाहो के घाटो पर घूमता और सुदूर देशो को विदा हो रहे जहाजो को देखा करता था ! कैसी लालसाभरी आखो से मै उनके छोटे होते जाते मस्तूलो को देखता और अपने को कल्पना मे पृथ्वी के छोर पर पहुचा देता था !

और अधिक पठन एव चिन्तन ने, यद्यपि इस अस्पष्ट प्रवृत्ति को अधिक तर्कसम्मत सीमाओ मे मर्यादित कर दिया, किन्तु उनके कारण वह और निश्चित भी हो गई । मै अपने देश के विविध भागो की सैर करता रहा, और यदि मै केवल सुन्दर दृश्यो का प्रेमी होता तो उस वृत्ति की तुष्टि के लिए और कही जाने की इच्छा शायद ही मुझे होती, क्योकि प्रकृति का इससे अधिक आकर्षण और किसी देश को नही मिला है । इसकी तरल रजत-सागर-सी ।वशाल झीले, प्रकाशमान दिव्य रग-युक्त इसके पर्वत, सघन वनश्री-समन्वित इसकी घाटिया, अपने निर्जन एकान्त मे गर्जन करते हुए इसके महत् प्रपात, सहज हरीतिमा से आन्दोलित इसके असीम मैदान, पवित्र मौन के बीच सागर की ओर उछलती चली जा रही इसकी चौडी-गहरी नदिया, ग्रीष्म-घन और भव्य सूर्यरश्मि के इन्द्रजाल से प्रकाशित इसके आकाश !—नही, प्राकृतिक दृश्य मे भव्य एव सुन्दर की खोज के लिए किसी अमरीकी को अपना देश छोडकर अन्यत्र जाने की आवश्यकता नही है ।

किन्तु कथागत एव काव्यगत सम्पर्कों एव सगतियो के कारण यूरोप का आकर्षण बना था । वहा हमे कला के सर्वोत्तम नमूनो, उच्च सस्कारसम्पन्न समाज के सस्कारो, प्राचीन एव स्थानीय प्रथाओ की अद्‌भुत विचित्रताओ के दर्शन होगे । मेरी मातृभूमि यौवनोन्मुख सम्भावनाओ से परिपूर्ण थी, यूरोप आयु के सचित कोषो मे समृद्ध था । उसके ध्वसावशेष भी अतीत युगो का इतिहास सुनाते हैं और प्रत्येक ह्रासशील अश्म-खण्ड एक गाथा है । प्रसिद्धि प्राप्त

सफलता के दृश्यो के बीच फिरने— यानी पुरातन के पदचिह्नो पर चलने, ध्वस्त-गढ के आसपास चहलकदमी करने, गिरते हुए स्तम्भ पर विचारमग्न होने, अर्थात् थोडे मे वर्तमान के रोजमर्रा यथार्थ से पलायन करके अतीत की छाया-मयी महानताओ मे अपने को डुबा देने के लिए मेरा मन लालायित रहता था।

इन सबके साथ, पृथ्वी के महान पुरुषो से मिलने की इच्छा भी मुझमे थी। यह ठीक है कि हमारे पास अमरीका मे भी महान पुरुष है, कोई ऐसा नगर नही जिसमे वे पर्याप्त सख्या मे न हो। अपने समय मे मै उनसे हिला-मिला हू, और उन्होने मुझे जिस रग मे ढाला, उससे मै प्राय मुरझा ही गया होता, क्योकि किसी छोटे आदमी के लिए किसी बडे आदमी, विशेषत नगर के बडे आदमी, की छाया से बढकर हानिकर और कुछ नही है। किन्तु मै यूरोप के महान पुरुषो को देखने के लिए उत्सुक था, क्योकि अनेक तत्त्वज्ञानियो की पुस्तको मे मैने पढा था कि सभी प्राणी अमरीका मे ह्रास को प्राप्त होते हे, और मनुष्य भी उनमे एक है। इसलिए मैने सोचा कि यूरोप का महापुरुष अमरीका के एक महापुरुष से उसी तरह श्रेष्ठ होगा जैसे आल्प्स-शृग हडसन-तटस्थित पहाडियो से उत्तुग है। जब मैने देखा कि हमारे बीच आने वाले ऐसे अग्रेज पर्यटको की बढती हुई भीड को तुलनात्मक रूप से कही अधिक महत्त्व मिल रहा है, जो अपने देश मे बहुत छोटे जन गिने जाते हे, तब मेरा यह विचार और पुष्ट हो गया। मैने सोचा कि मै आश्चर्यो के इस देश की यात्रा अवश्य करूगा और उस महान जाति के दर्शन करूगा जिससे पतित होकर मै निकला हू।

चाहे इसे मेरा सौभाग्य समझिए या दुर्भाग्य कि मेरी घुमक्कडी इच्छा परि-तुष्ट हो गई है। मै विविध देशो मे घूमा हू और जीवन के अनेक परिवर्तनशील दृश्यो को मैंने देखा है। मै यह तो नही कह सकता कि मैने दार्शनिक की आख से उनका अध्ययन किया है, बल्कि यह कहना ज्यादा ठीक होगा कि मैने उन्हे उस निरुद्देश्य दृष्टि से देखा है जिससे विचित्रताओ के अकिचन प्रेमी एक चित्राकन-भण्डार से दूसरे चित्राकन-भण्डार की खिडकियो मे झाकते फिरते है और जो कभी सौन्दर्य की रेखाओ से, कभी व्यग्यचित्रो की विकृतियो से और कभी किसी प्रकृतिदृश्यचित्र (लैण्डस्केप) की मनोरमता से आकर्षित हो उठते है। चूकि आधुनिक यात्रियो मे एक फैशन चल पडा है कि वे हाथ मे पेसिल लिए चलते है और अपने चित्राधार रेखाकनो से भरे हुए घर लौटते है इसलिए मेरी भी

अपने मित्रो के मनोरजन के लिए चन्द चित्र बनाने की चेष्टा है । किन्तु जब मै उन सकेतो और टिप्पणियो को देखता हू जो मैने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए लिख रखी है, तो मेरा हृदय यह सोचकर बैठ जाता है कि मेरी मौजी वृत्ति मुझे उन सब महान पदार्थो से हटाकर कहा उडा ले गई जिनका अध्ययन पुस्तक लिखने वाला प्रत्येक नियमित यात्री अवश्य करता है । मुझे भय है कि मैं उस अभागे प्रकृतिदृश्य-चित्रकर्त्ता की भाति ही निराश करूगा जो यूरोप मे परिभ्रमण करते हुए भी अपनी सनकभरी प्रवृत्तियो के कारण इधर-उधर के तथा सामान्य स्थानो के चित्र अकित कर लाया था और जिसकी रेखाकन-पुस्तिका झोपडियो, प्राकृतिक दृश्यो और अप्रसिद्ध खडहरो के चित्रो से भरी हुई थी जब कि उसने सेण्ट पीटर के गिर्जाघर या कोलेजियम, तर्नी-प्रपात या नेपुल्स की खाडी का चित्र खीचने की उपेक्षा की थी और उसके सम्पूर्ण सकलन मे एक भी हिमनद या ज्वालामुखी का चित्र नही था ।

समुद्र-यात्रा

हे जलयान ! हे जलयान !
मै पुकारता हू तुमको इस सागर-मध्य सुजान !
मै आऊगा पास तुम्हारे,
देखूंगा क्या पास तुम्हारे।
किसकी रक्षा हो तुम करते,
किसका हो प्रक्षेपण करते।।
क्या गन्तव्य तुम्हारा है और क्या है लक्ष्य महान ?
कोई व्यवसायी विदेश जाता करने व्यापार।
अन्य, देश की आक्रमणो से रक्षा को तैयार।
और एक आता है घर को लिए रत्न-धन मान।
हे जलयान ! हे जलयान !
तुम जाओगे किधर स्वप्नमय ! कौन तुम्हारी राह ?

—एक पुरानी कविता

यूरोप का प्रवास करने वाले एक अमरीकी के लिए जो लम्बी समुद्र-यात्रा उसे करनी पडती है, वही उसके लिए अच्छी तैयारी है। सासारिक दृश्यो और धन्धो से यह अस्थायी अनुपस्थिति एक ऐसी मन स्थिति का सृजन करती है जो नवीन एव सजीव विचारो को ग्रहण करने के लिए विशेष रूप से उपयुक्त होती है। जो असीम जल-विस्तार दोनो गोलार्द्धो को पृथक् करता है उसका अस्तित्व एक खाली—अलिखित पृष्ठ की भाति है। यहा ऐसा कोई क्रमिक परिवर्तन नही दिखाई पडता जिससे यूरोप मे एक देश की निर्मिति एव जनसख्या, दूसरे देश की निर्मिति एव आबादी मे, सहज भाव से विलीन हो जाती है। जिस क्षण वह भूमि आपकी दृष्टि से ओझल हो जाती है जिसे आप पीछे छोड आए है, उस

क्षण से ही चारो ओर रिक्तता ही रिक्तता है। यह रिक्तता तब तक रहती है जबतक आप दूसरे तट पर पाव रखकर सहसा एक दूसरी दुनिया के शोरगुल और नवीनताओ मे पहुच नही जाते।

जब हम स्थल से यात्रा करते है तो उसमे दृश्य की निरन्तरता और शृखला बनी रहती है और ऐसी घटनाओ तथा व्यक्तियो से बराबर भेंट होती रहती है जो जीवन की कहानी जारी रखते है और अनुपस्थिति एव वियोग के प्रभाव को कम करते है। यह सत्य है कि हम अपनी तीर्थयात्रा के प्रत्येक नवप्रयाण से 'एक लम्बी होती शृखला' को और आगे खीचते है, किन्तु शृखला अटूट तो बनी ही रहती है और हम एक-एक कडी के द्वारा उसे पीछे के आरम्भ-बिन्दु तक खोज और पा सकते है, इसलिए हम अनुभव करते है कि अन्तिम कडी भी हमे घर के साथ सयुक्त रखे हुए है। किन्तु एक विस्तृत समुद्र-यात्रा हमे तुरन्त वियुक्त कर देती है। वह हममे यह अनुभूति जगाती है कि हम एक निश्चित जीवन के सुरक्षित आश्रय से टूटकर अलग हो गए है, और एक सन्देहास्पद जगत् की ओर बहे जा रहे हैं। वह हमारे तथा हमारे घरो के बीच एक खाई पैदा कर देती है—खाई तो कल्पना-मात्र नही है बल्कि वास्तविक है—एक खाई जो तूफान, भय तथा अनिश्चितता से पूर्ण है एव जिसके कारण दूरी प्रत्यक्ष हो उठती है और प्रत्यावर्तन सकटापन्न लगने लगता है।

कम से कम मेरे साथ तो यही बात थी। जब मैने देखा कि मेरी मातृभूमि की अन्तिम नील रेखा क्षितिज के बादल की भाति आखो से ओझल हो गई है, तब मुझे प्रतीत हुआ जैसे मैंने विश्व-पुस्तक की एक जिल्द बन्द कर दी हो, और दूसरी जिल्द खोलने के पूर्व मुझे ध्यान का समय मिल गया हो। मेरी आखो से वह भूमि लुप्त होती जा रही है जिसमे वह सब निहित है जो मुझे जीवन मे प्रिय है, मेरे पुन वहा लौटने के पूर्व उसमे न जाने क्या उलट-फेर हो जाए या मुझमे ही न जाने क्या परिवर्तन हो जाए! जब यात्री परिभ्रमण के लिए बाहर निकलता है तो कौन कह सकता है कि अस्तित्व की अनिश्चित धाराए उसे बहाकर कहा ले जाएगी, या वह कब लौट सकेगा, या अपने शैशव के परिचित दृश्यो एव स्थानो को पुन देखने का अवसर भी उसे मिलेगा या नही?

मैंने ऊपर कहा है कि समुद्र-तल पर सब कुछ रिक्तता-मात्र है, पर मै इस अभिव्यक्ति मे सुधार करूगा। जो दिवा-स्वप्न देखने का अभ्यस्त है और मधुर

कल्पनाओ मे अपने को विस्मृत कर देने का प्रेमी है, उसके लिए समुद्र-यात्रा ध्यान एव मनन के विपयो से भरी हुई है। किन्तु ये विषय अतल जल तथा वायु के आश्चर्य है और वे प्राय पार्थिव विषयो से मन को दूर हटा ले जाते है। मैं तो रेलिग पर लोटने, या किसी शान्त दिन मस्तूल के ऊपरी पटरे पर चढकर ग्रीष्म के समुद्र की स्थिर छाती की ओर घण्टो देखते रहने या क्षितिज से ज़रा ही ऊपर झाकते स्वर्णिम बादलो के झुड का निरीक्षण करने तथा उसमे परियो के लोक की कल्पना करने एव उसे आत्म-सर्जित प्राणियो से भर डालने या फिर उन धीरे-धीरे उठती शान्त लहरो का निरीक्षण करने मे ही मुदित रहता था जो अपनी रजत सघनता को लपेटती दूर चली जाती थी, मानो उन प्रसन्न तटो पर मरण का आलिगन करने जा रही हो।

अपनी सिर चकराने वाली ऊचाई से, मै सुरक्षा एव आतक के मिश्रित स्वादयुक्त उद्वेग के साथ नीचे अतल के दानवो को कुत्सित कुलेले करते देखता। शिशुक-वृन्द पोताग्र के इर्द-गिर्द चक्कर काटते, तिमिंगिल धीरे-धीरे अपनी विराट् काया को जलस्तर के ऊपर निकालते, क्षुधातुर शार्क नीलजल पर सहसा प्रेत-छाया की भाति फैल जाते। मेरे पादतल मे फैले जल-जगत् की वे सब चीजे मेरी कल्पना मे प्रत्यक्ष हो उठती जिनके बारे मे मैंने पढा या सुना था—उसकी अथाह घाटियो मे चलते-फिरते मत्स्य समूह, पृथ्वी की नीव मे चहलकदमी करते कदाकार मानव तथा मछुओ एव नाविको की कथाओ को ऊर्जस्वित करनेवाली मायामूर्तिया।

कभी-कभी महासागर के छोर पर फिसलता हुआ दूरस्थ जलयान निरर्थक कल्पना की एक और विषय-वस्तु प्रस्तुत कर देता। किसी जगत् के वियुक्ताश की, अस्तित्व की महती काया मे मिलन की यह त्वरा! मानवीय आविष्कार का कैसा भव्य स्मारक, जिसने एक प्रकार से वायु एव तरग पर विजय प्राप्त कर ली है, दुनिया के सुदूर छोरो मे सम्पर्क-सूत्र स्थापित कर दिया है, उत्तर की बाझ भूमि पर दक्षिण की सम्पूर्ण विलासिता ला धरी है, ज्ञान के प्रकाश और सुसस्कृत जीवन की उदारताओ का वितरण किया है और इस प्रकार मानव जाति के उन बिखरे खण्डो को एक-दूसरे के साथ गूथ दिया है जिनके बीच प्रकृति ने एक अलघ्य अवरोध पैदा कर दिया था।

एक दिन हमने कुछ दूर पर एक बेढगी-सी चीज बहती देखी। समुद्र मे ऐसी

हर चीज, जो ग्रासपास के विस्तार की एकरसता भग करती है, ग्रपनी ग्रोर ध्यान खीचती है । ग्रन्त मे वह किसी ऐसे जहाज का मस्तूल निकला जो पूर्णत नष्ट-भ्रष्ट हो चुका था, क्योकि उसमे ऐसे रूमालो के ग्रवशेष लगे हुए थे जिमसे कुछ नाविको ने ग्रपने को इस दण्ड के साथ इसलिए बाध लिया था जिससे लहरे उन्हे बहा न ले जाए । ऐसा कोई चिह्न शेष नही रह गया था जिससे उस जहाज के नाम का पता लगाया जा सकता । स्पष्टत यह ग्रवशेष महीनो से बहता वहा पहुचा होगा, घोघे ग्रौर सीपियो के जुट्ट उसमे एकत्र हो गए थे ग्रौर लम्बी समुद्री वनस्पतिया जहा-तहा उग ग्राई थी । मैने सोचा—इसके नाविक ग्राज कहा है ? बहुत पहिले उनके सघर्ष का ग्रन्त हो चुका होगा ग्रौर वे तूफान की गर्जनाग्रो के बीच समुद्रगर्भ मे चले गए होगे—उनकी हड्डिया ग्रतलगर्भ की कन्दराग्रो मे पडी उन्हे प्रकाशित कर रही होगी। तरगो की भाति, मौन एव विस्मरण ने उन्हे ग्रपनी गोद मे छिपा लिया होगा ग्रौर ग्राज कोई ऐसा नही है जो उनके ग्रन्त की कहानी सुना सके । इस जहाज के बाद कितने उच्छ्वास उद्भूत हुए होगे। घर की सूनी ग्रातिशदानियो के सामने कितनी प्रार्थनाए की गई होगी । समुद्र पर परिभ्रमण करनेवाले इस जलयान का कोई ग्राकस्मिक सवाद पाने के लिए गृहिणियो ग्रौर माताग्रो ने कितनी बार दैनिक पत्रो के पन्ने पलटे होगे । किस प्रकार ग्राशा चिन्ता मे, चिन्ता भय मे ग्रौर भय निराशा मे बदल गई होगी ! हाय ! प्रेम को रखने के लिए एक भी यादगार न लौट सकी होगी । ज्यादा से ज्यादा इतना ही मालूम हो पाएगा कि उसने ग्रपने बन्दरगाह से प्रस्थान किया था "ग्रौर उसके विषय मे फिर कुछ सुनाई नही पडा !

स्वभावत इस ध्वसावशेष के कारण बहुतेरी निरानन्द कहानिया सुनाई पडी । जब सध्या समय मौसम, जो ग्रभी तक साफ था, भीषण ग्रौर डरावना होने लगा तथा उसने उस ग्राकस्मिक तूफान के ग्रागमन का सकेत दिया जो ग्रीष्म-कालिक समुद्रयात्रा के सौम्य वातावरण को कभी-कभी सहसा भग कर देता है, तो इस तरह की बातो ने ग्रौर जोर पकडा । हम केबिन मे एक धूमिल प्रकाश वाले लैम्प के चारो ग्रोर बैठे हुए थे, इस धूमिल प्रकाश के कारण कमरे की उदासी ग्रौर भयानक लग रही थी ग्रौर हर एक के पास कहने को जहाज टूटने एव डूबने की कोई न कोई कहानी थी । कप्तान ने जो एक छोटी कहानी इस सम्बन्ध मे सुनाई, उससे मैं विशेष रूप से ग्राकर्षित हुग्रा ।

उसने कहा—"एक बार की बात है कि मैं एक उत्तम मजबूत जहाज मे न्यूफाउण्डलैड के तटो के पार जहाज मे चला जा रहा था कि उन भागो मे पाए जानेवाले सघन कुहासे से ऐसा घिर गया कि दिन मे भी अपने आगे दूर तक देखना असम्भव हो गया। रात मे तो मौसम ऐसा सघन हो गया कि जहाज की लम्बाई की दूनी दूरी पर भी कोई पदार्थ दिखाई नही पडता था। मैने मस्तूल-शिखर की बत्तियो को बराबर जलाए रखा और उन मछली मारने वाली मस्तूली नौकाओ पर बराबर ध्यान जमाए रखा जो इन तटो पर लगर डाले पडी रहती है। हवा तेज होती जा रही थी और हम पानी मे बहुत तेजी के साथ चले जा रहे थे। सहसा प्रहरी ने 'आगे कोई जलयान होने' की चेतावनी दी। उसके शब्द पूरे होते-होते तो हम उसपर चढ चुके थे। वह एक छोटा दो मस्तूलो वाला 'स्कूनर' (बडी नौका) था जो लगर डाले खडा था और जिसका चौडा भाग हमारी ओर था। उसके सारे नाविक सो गए थे और उसपर कोई रोशनी जलाना भूल गए थे। उसके ठीक मध्य भाग पर हमारी टक्कर लगी। हमारे जलयान के बल, आकार और भार ने उमे तरगो के गर्भ मे भेज दिया, हम उस निमग्न जलयान के ऊपर से निकल गए और अपने रास्ते पर तेजी के साथ बढ गए। जब ध्वस्त जहाज हमारे नीचे डूब रहा था तो हमारी नजर दो-तीन अर्धनग्न अभागो पर पडी जो अपने केबिन से निकलकर भाग रहे थे। वे अपने बिछौनो से घबडाकर एकाएक उठे थे और चीखते हुए लहरो द्वारा निगल लिए गए। मैने उन डूबते हुए लोगो का चीत्कार हवा मे घुलते हुए सुना। जो तेज हवा उसे हमारे कानो तक ले आई वही हमे इतनी दूर धकेल ले गई कि आगे कुछ सुनाई न पडा। मै उस चीत्कार को कभी भूल न सकूगा। जहाज को मोडने मे कुछ समय लगा क्योकि उसकी गति तेज़ थी। हम लौटे, अनुमान से घटनास्थल के जितना निकट सम्भव था, आए—उस स्थान पर जहा उसने लगर डाल रखा था। घने कुहासे मे हम कई घण्टे तक आसपास चक्कर लगाते रहे, हमने सकेत के तौर पर कई बार बन्दूको से गोलिया छोडी और कान लगाए रहे कि शायद बचे हुए लोगो की आवाज सुनाई दे, किन्तु सब कुछ नीरव था, हमे उसके बारे मे और कुछ भी देखने-सुनने को नही मिला।"

मै स्वीकार करता हू कि इन कथाओ ने, कुछ समय के लिए मेरी समस्त सुन्दर कल्पनाओ को समाप्त कर दिया। रात होने पर तूफान भी बढ गया।

पवन की मार से समुद्र बुरी तरह अस्तव्यस्त हो गया। उमडती लहरो एव हुकार करती तरगो का भयानक-क्रुद्ध स्वर सुनाई पडने लगा। अतल अतल को पुकार रहा था। सिर मे ऊपर काले बादलो के जो झुण्ड थे उन्हे रह-रहकर बिजली मानो छिन्न-भिन्न कर देती थी—यह बिजली फेनिल उच्च तरगो पर थिरकती हुई छिप जाती थी और बाद मे आनेवाला अन्धकार पहिले से कही अधिक भयानक हो उठता था। दूर-दूर तक जल-विस्तार पर विद्युत्गर्जन लुढकता चला जाता था और गगनचुम्बी लहरो के कारण उसकी प्रतिध्वनि और लम्बी हो जाती थी। जब मैं इन गरजती तरगो के बीच लडखडाते और निमग्न होते अपने जलयान को देखता तो मुझे यह एक चमत्कार-सा लगता था कि इनके बीच भी वह किस प्रकार अपना सन्तुलन और अपनी चचलता बनाए रखता है। उसके पाल-दड पानी मे डूब-डूब जाते थे और उनका माथा लहरो के गर्भ मे लगभग निमग्न हो गया था। कभी-कभी ऐसा प्रतीत होता था कि सामने से आती उत्तुग तरग उसे अपने अक मे समेट लेगी परन्तु नौकर्ण या पतवार के दक्ष परिचालन के कारण वह उसके आघात से वच जाता था।

जब मै रात को अपने कक्ष मे सोने चला गया तब भी वह भीपण दृश्य मेरा पीछा करता रहा। जहाज की सज्जा से टकराकर बजनेवाली वायु की सीटी मरणान्तर विलाप-सी लगती थी। विक्षुब्ध सागर मे सघर्ष करते हुए जहाज, मस्तूलो की चरचराहट, जलयानशीर्षो की ध्वनिया और आर्त्तनाद अत्यन्त त्रासजनक हो उठे थे। जब मैं लहरो को जहाज के चतुर्दिक प्रधावित और अपने कानो मे गरजते देखता था तो मुझे ऐसा लगता था, मानो स्वय यमराज इस सतरणशील कारागृह के चतुर्दिक् नाच रहे हो और अपना शिकार ढूढ रहे हो और किसी कीले के निकल जाने या दरार के जम्हाई लेने-मात्र से वह इसमे प्रवेश पा सकते थे।

किन्तु रात बीती, सुन्दर दिवस आया, शान्त समुद्र तथा अनुकूल वायु ने इन दु:खदायी कल्पनाओ को दूर भगा दिया। समुद्र मे सुन्दर मौसम तथा सुखद वायु के आह्लादकारी प्रभाव का प्रतिरोध असम्भव है। जब अर्णवपोत पर उसके समस्त कनवास सज उठते है, सब पाल फूल उठते है और जहाज प्रसन्न मन्थर गति से बल खाती लहरो पर बढता जाता है, तब वह कितना उच्च, कितना शौर्यवान दिखाई पडता है, वह अतल पर किस प्रकार प्रभुत्व स्थापित करता

प्रतीत होता है ।

मै समुद्र-यात्रा की रगरेलियो के विषय मे पूरा ग्रन्थ लिख सकता हू क्योकि मेरे लिए वह एक अनवरत क्रीडा हे, किन्तु अब समय आ गया है कि हम तट की ओर चले ।

वह एक सुन्दर सूर्यरश्मि से उजला प्रभात था जब मस्तूल के शीर्ष भाग से "वह रही धरती !" की आह्लादकारी ध्वनि सुन पडी । जिन्होने अनुभव किया है केवल वही मनोवेगो की उस सुस्वादु भीड की कुछ कल्पना कर सकते है जो यूरोप के प्रथम दर्शन के साथ एक अमरीकी वक्ष मे उत्पन्न होती है । नाम-मात्र के साथ न जाने कितनी स्मृतिया जुडी हे । यह सम्भावनाओ की भूमि है जिसमे प्रत्येक ऐसी वस्तु भरी है जिसके विषय मे उसके बाल्यकाल ने सुना है अथवा जिसपर उसके अध्ययनशील वर्षो ने चिन्तन किया है ।

उस समय से तट तक पहुचने के समय तक बस तीव्र उत्तेजना की मन स्थिति थी । तट के आसपास युद्धपोत अभिभावक महावीरो की भाति पहरा दे रहे थे, आयरलैण्ड की उच्च भू-रेखा समुद्र पर फैली हुई थी, वेल्स के पर्वत बादलो मे सिर उठाए हुए थे, सब गहरी दिलचस्पी के पदार्थ थे । जब हम घाट की ओर जा रहे थे मैने खुर्दबीन से तटो का अवलोकन शुरू किया । आनन्दपूर्ण आखो से मैने स्वच्छ कुटीरो या गृहो तथा उनके सुन्दर निकुजो एव हरित भूखण्डो को देखा। मुझे एक मठ के भूमिसात् होते ध्वसावशेष दिखाई पडे जिनपर दूर-दूर तक सिर-पेचे की लता फैली हुई थी तथा एक निकटवर्ती पहाडी के किनारे पर निर्मित ग्राम्य गिरजे की ऊपर की ओर नुकीली होती गई मीनार दिखाई पड रही थी । यह सब कुछ इग्लैण्ड के ही अनुरूप था ।

ज्वार और वायु इतनी अनुकूल थी कि जहाज तुरन्त घाट पर आ लगा । वहा लोगो का जमघट था, कुछ बेमतलब दर्शक थे, दूसरे कुछ लोग मित्रो एव सम्बन्धियो की उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे थे । मै उस व्यवसायी को पहिचान सकता था जिसके नाम जहाज भेजा गया था । उसकी कुचित भौहो एव अस्थिर प्रकृति से मै उसे जान गया। उसने हाथ अपनी जेबो मे डाल रखे थे । वह चिन्तामग्न हो सीटी बजाता ओर उस छोटे-से स्थान मे इधर-उधर चहलकदमी कर रहा था जिसे उसके क्षणस्थायी महत्त्व के कारण भीड ने उसके लिए छोड दिया था । ज्यो-ज्यो मित्र एक-दूसरे को पहिचान रहे थे त्यो-त्यो तट एव जहाज के

मध्य बार-बार हर्षध्वनि और नमस्कार-प्रणाम का विनिमय हो रहा था। मेरा ध्यान विशेष रूप से एक मामूली वस्त्रो, परन्तु आकर्षक हाव-भाव वाली तरुणी की ओर गया। वह भीड से कुछ आगे की ओर झुकी हुई थी, उसकी आखे तट के निकट आते हुए जहाज पर जल्दी-जल्दी पड रही थी—किसी वाञ्छित मुख को देखने के लिए। वह निराश एव उत्तेजित-सी होने लगी थी, इसी समय हमने एक हल्की आवाज को उसका नाम पुकारते सुना। यह एक गरीब नाविक की आवाज थी जो सम्पूर्ण यात्रा के बीच बीमार रहा था और जहाज़ के प्रत्येक यात्री की सहानुभूति प्राप्त कर सका था। जब मौसम साफ था, उसके साथियो ने डेक (छत) पर छाया मे एक चटाई उसके लिए बिछा दी थी, किन्तु पिछले दिनो उसकी बीमारी इस कदर बढ गई कि उसने खाट पकड ली थी और उसकी एकमात्र यही इच्छा थी कि मृत्यु के पूर्व पत्नी से उसकी भेट हो जाए। जब हम नद के मुहाने पर पहुचे तब उसे सहारा देकर डेक पर लाया गया। इस समय वह मस्तूल की रस्सियो पर झुका हुआ था, उसका चेहरा इतना जीर्ण, इतना विवर्ण, इतना डरावना हो रहा था कि हमे इससे कोई आश्चर्य नही हुआ कि अनुराग की आखे भी उसे पहिचान नही सकी। किन्तु उसकी आवाज की ध्वनि से उसकी आखे उसके चेहरे पर तेजी से जा लगी। उनमे शोक की घटा छा गई, उसने अपने हाथ पकड लिए, उसके मुख से एक हल्की चीख निकली और मौन वेदना से उसके हाथ हिलने लगे।

इस समय चारो ओर भाग-दौड और शोरगुल मचा हुआ था। परिचितो का मिलन—मित्रो का अभिनन्दन और व्यवसायी वर्ग का विचार-विनिमय। केवल मैं अकेला और फालतू था। मुझसे मिलने के लिए वहा कोई मित्र नही था। कोई हर्षध्वनि मुझे मिलनेवाली नही थी। मै अपने पूर्वजो की भूमि पर उतर तो पडा किन्तु मुझे यह अनुभव हो रहा था कि मै उस देश मे एक अजनबी हू।

रास्को

मानव की सेवा मे होना रक्षक एक देवता नीचे।
फिर भी शौर्यपूर्ण लक्ष्यो-हित मन की वल्गा रहना खीचे।
ऐसे लक्ष्य हमे जो पीडित झुण्डो के ऊपर करते है
और सदा के लिए हमे इस दुनिया मे ज्योतित रखते है।
अरे! यही तो है जीवन!

—टामसन

जिन प्रथम स्थानो पर अजनबी लिवरपूल मे ले जाया जाता है, उनमे से एक है एथेनियम (विचार-परिषद्)। इसकी स्थापना बडे उदार एव न्यायपूर्ण आधार पर की गई है। इसमे एक अच्छा पुस्तकालय और विशद वाचनालय है। यह सस्था यहा की महती साहित्यिक स्थली है। चाहे जिस समय आप वहा जाइए, आप उसे समाचारपत्रो के अध्ययन मे निमग्न गभीर दिखाई देने वाले आदमियो से भरा-पूरा पाएगे।

एक बार जब मै विद्वानो के इस स्थल मे गया हुआ था, मेरा ध्यान कमरे मे प्रवेश करते एक आदमी की ओर खिच गया। वह अधिक आयु वाला, लम्बा और ऐसे नाक-नक्श का था, जो कभी न कभी प्रभावशाली रहा होगा, किन्तु शरीर को समय ने कुछ झुका दिया था—शायद चिन्ताओ के कारण ऐसा हुआ होगा। उसकी मुखाकृति श्रेष्ठ रोमन शैली की थी, सिर ऐसा था जो किसी चित्रकार को मुदित कर सकता था और यद्यपि उसकी भवो पर चन्द सलवटे यह प्रकट कर रही थी कि विनाशिनी चिन्ता वहा व्यस्त रही है, फिर भी उसकी आखे काव्यमयी आत्मा की अग्नि से प्रदीप्त थी। उसके सम्पूर्ण दर्शन मे कुछ ऐसी चीज थी जो उसके इर्द-गिर्द फैली कोलाहलमयी भीड से उसे कुछ दूसरी ही श्रेणी का प्राणी घोषित कर रही थी।

मैने उसका नाम पूछा तो मुझे सूचित किया गया कि वह रास्को है। सुनते ही एक सहज आतक-भावना से झिझककर मै पीछे हट गया। तब ये एक प्रसिद्ध लेखक है, उन आदमियो मे से एक जिनकी वाणी पृथ्वी के छोरो तक पहुच चुकी है और जिनके विचारो के साथ मैने अमरीका के एकान्त मे भी सम्पर्क स्थापित कर लिया था। हम तो अपने देश मे यूरोपीय लेखको को केवल उनकी कृतियो के माध्यम से जानने के अभ्यस्त है, इसलिए हम दूसरे मानवो की भाति उनके बारे मे यह कल्पना नही कर सकते कि वे महत्त्वहीन या तुच्छ कार्यो मे मग्न होते होगे या जीवन के धूलिभरे पथ पर मामूली दिमाग वाली भीड मे कन्धे से कन्धा भिडाकर खडे होते होगे। वे तो हमारी कल्पना के सामने अपनी प्रतिभा की किरणो से दमकते हुए, तथा साहित्यिक कीर्ति के प्रकाश-वलय से घिरे हुए, श्रेष्ठ आत्माओ की भाति आते है।

इसलिए मेदिसी (Medici) के श्रेष्ठ इतिहासकार को पथ के व्यस्त पुत्रो के बीच मिलते-जुलते देखकर, पहिले तो मेरे काव्यात्मक विचारो को आघात लगा, किन्तु जिन परिस्थितियो मे वे अवस्थित है, श्री रास्को उन्हीके कारण सबसे अधिक सम्मान के पात्र है। यह बडी दिलचस्प-सी बात है कि कुछ लोग प्रत्येक असुविधा को कुचलकर ऊपर उठते हुए तथा सहस्र-सहस्र बाधाओ के बीच अपना एकान्त किन्तु दुर्निवार मार्ग बनाते हुए कैसे अपना सृजन कर लेते हैं। कला के जिन प्रगाढ मनोयोगो से वैध निश्चेतनता का प्रकृति पोषण करती एव अपनी आकस्मिक रचनाओ की स्फूर्ति तथा वाढ का यशोगान करती है, उन्ही-को निराश करने मे वह आनन्द का अनुभव भी करती दिखाई पडती है। वह प्रतिभा के बीज हवा मे फेकती चलती है, यद्यपि उनमे से कुछ विश्व के पथरीले स्थानो मे पडकर नष्ट हो जा सकते है तथा दूसरे कुछ प्रारम्भिक विपन्नता एव विषमता के कारण कुश-कण्टको से निष्प्राण हो सकते है, किन्तु दूसरे कुछ ऐसे भी होते है जो कभी न कभी चट्टान की दरारो मे भी अपनी जड जमा लेते हैं, वीरतापूर्वक सघर्ष करते हुए धूप मे सिर उठाते है और अपनी वध्या जन्मभूमि पर हरीतिमा का सम्पूर्ण सौन्दर्य फैला देते है।

श्री रास्को के विषय मे भी यही बात घटित होती है। वह ऐसे स्थान मे उत्पन्न हुए जो साहित्यिक प्रतिभा के विकास के लिए अनुकूल नही था—ऐसे स्थान मे जो व्यापार का मुख्य बाज़ार था। उन्हे कोई सम्पत्ति, पारिवारिक

सम्वन्धो की सुविधा या सरक्षण प्राप्त नही हुआ। आत्म-प्रेरित, आत्म पोषित और प्राय स्वय-शिक्षित उन्होने प्रत्येक बाधा पर विजय प्राप्त की है, प्रसिद्धि का मार्ग खोज लिया है और राष्ट्र का एक अलकार बनने के बाद अपनी बुद्धि एव प्रभाव का उपयोग अपने जन्मनगर की वृद्धि एव शृगार करने मे किया है।

उनके चरित्र के इस अन्तिम वैशिष्ट्य के कारण ही मेरी दृष्टि मे उनके प्रति सर्वाधिक रुचि जाग्रत हुई है और इसीने मुझे अपने देश-बन्धुओ का ध्यान उनकी ओर आकर्षित करने को बाध्य किया है। साहित्यिक क्षमता मे महान होते हुए भी वह इस बौद्धिक राष्ट्र के अनेक प्रसिद्ध लेखको मे से एक है। पर ऐसे लेखक सामान्यत अपनी प्रसिद्धि या अपने सुख-भोग के लिए जीते है। उनका व्यक्तिगत जीवन ससार के लिए कोई पाठ नही प्रस्तुत करता और करता भी है तो मानवीय दुर्बलता एव असम्बद्धता का अपमानकारी उदाहरण ही प्रस्तुत करता है। बहुत किया तो वे व्यस्त जीवन के कोलाहल से छिपकर पलायन कर जाते है, विद्या की सुविधाओ के स्वार्थ मे डूब जाते है और मानसिक किन्तु सर्वथा एकान्तिक सुखोपभोग के दृश्यो के साथ रगरेलिया करते है।

इसके विपरीत श्री रास्को ने प्रतिभा को दी जानेवाली किसी सुविधा के लिए दावा नही किया है। उन्होने अपने को किसी विचार के उपवन या कल्पना के स्वर्ग मे बन्द नही किया, वरन वह जीवन के राजपथो एव वीथियो मे गए है। उन्होने राह के किनारे पथिक एव यात्री के श्रमलाघव के लिए लताए रोपी है और ऐसे विशुद्ध फव्वारो का आयोजन किया है, जहा श्रमिक मानव दिन के उत्ताप एव धूलि से दूर हटकर, ज्ञान के जीवन्त निर्झरो से अपनी प्यास बुझा सकता है। "उनके जीवन मे एक दैनिक सौन्दर्य है", जिसपर मानवजाति ध्यान केन्द्रित कर सकती और अधिक अच्छी बन सकती है। यह श्रेष्ठता का कोई बहुत ऊचा और अनुकरणीय होने के कारण प्राय निरर्थक उदाहरण नही उपस्थित करता, परन्तु ऐसे सक्रिय, फिर भी सरल एव अनुकरणीय, गुणो का चित्र प्रस्तुत करता है जिनको प्रत्येक आदमी प्राप्त कर सकता है किन्तु जिनका बहुत-से आदमी दुर्भाग्यवश उपयोग करना ही नही जानते, नही तो यह ससार स्वर्ग हो जाता।

किन्तु उनके व्यक्तिगत जीवन पर हमारे उस तरुण एव व्यस्त देश के नागरिको को विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए जहा साहित्य तथा उत्तम कलाओ

को दैनिक आवश्यकता के घटिया पौधो के साथ-साथ विकसित होने की आवश्यकता है और जहा के निवासियो को अपनी सस्कृति के लिए काल एव सम्पत्ति पर ही सम्पूर्ण भक्ति केन्द्रित करने की आवश्यकता नही, न इसके लिए उन्हे पदवीधारियो के सरक्षण की गतिशील किरणो की जरूरत है, उन्हे तो ऐसे घण्टो एव ऋतुओ के प्रति समर्पित होने की आवश्यकता है जो प्रबुद्ध एव जनसेवी व्यक्तियो द्वारा सासारिक कार्यो से झटक लिए गए हो ।

उन्होने यह प्रदर्शित कर दिया है कि किसी महत् आत्मा द्वारा फुर्सत के घण्टो मे किसी स्थान के लिए कितना काम किया जा सकता है और उन महदात्मा की अपने चतुर्दिक् के पदार्थो पर कितनी गहरी और पूर्ण छाप पड सकती है । जैसे उन्होने प्राचीन खोज के विशुद्ध नमूने के रूप मे अपनी दृष्टि अपने लारेजो-द-मेदिसी पर जमाई, उसी प्रकार उन्होने अपने जीवन का इतिहास, अपनी मातृ-नगरी के इतिहास के साथ गूथ डाला है और उसकी प्रतिष्ठा की नीव को अपने गुणो का स्मारक बना दिया है । आप लिवरपूल मे जहा भी जाइए, जो कुछ वहा उदार एव श्रेष्ठ है सबमे उनके चरण-चिह्न आपको दिखाई देगे । उन्होने यातायात के स्रोतो मे सम्पदा के ज्वार को उमडते पाया है, और साहित्य-वाटिका को सीचने के लिए उससे छोटी-छोटी नालिया निकाल दी है । अपने ही उदाहरण तथा निरन्तर के श्रम द्वारा उन्होने व्यापार तथा बौद्धिक अनुष्ठान का वह समन्वय स्थापित किया है जिसकी सिफारिश बडे जोरो के साथ उनकी एक अन्तिम रचना मे की गई है, उन्होने इसे व्यवहार मे सिद्ध कर दिया है कि एक-दूसरे के लाभ के लिए उनमे कैसी सुन्दरता के साथ सामजस्य लाया जा सकता है । साहित्यिक एव वैज्ञानिक प्रयोजनो वाली जिन भव्य सस्थाओ के कारण लिवरपूल का इतना नाम है और जो जनरुचि को इस प्रकार मोड रही है उनमे से अधिकाश का आरम्भ तथा सबकी प्रभावपूर्ण अभिवृद्धि श्री रास्को द्वारा ही हुई है । और जब हम उस नगर की तेजी से बढती हुई उस समृद्धि तथा विस्तार का खयाल करते है जो अपने व्यापारिक महत्त्व के लिए राजधानी (लन्दन) से प्रतियोगिता करने की ओर उन्मुख है, तब यह बात स्पष्ट हो जाती है कि उसके निवासियो मे मानसिक विकास की महत्त्वाकाक्षा जगाने मे उन्होने ब्रितानी साहित्य को भी बहुत लाभ पहुचाया है ।

अमरीका मे हम श्री रास्को को केवल एक ग्रन्थकार के रूप मे जानते है,

लिवरपूल मे साहूकार (बैकर) के रूप मे उनकी चर्चा की जाती है, और मुझे बताया गया है कि व्यवसाय मे वे अभागे रहे है। किन्तु इसके कारण मैं उनपर तरस नही खाता, जैसाकि कुछ धनवान लोग करते है। मै तो उन्हे तरस या दया की सीमा के बहुत ऊपर मानता हू। जो लोग केवल ससार के लिए जीते है या ससार मे जीते है वे विपदा की भृकुटियो के कारण नीचे गिर सकते है किन्तु रास्को जैसा मनुष्य भाग्य के विपर्यय से दलित नही किया जा सकता। वह तो उलटा उसे अपने दिमाग की पूजी और अपने विचारो की उस उच्चतर सगति की ओर खीच लाता है, सर्वोत्तम मानव भी कभी-कभी जिसकी उपेक्षा कर जाते है और कम योग्य साथियो की खोज मे इधर-उधर फिरते है। वे अपने चतुर्दिक् के ससार से स्वतन्त्र है। वे अतीत एव भविष्य के बीच विचरण करते है— एकान्त अध्ययन के मृदु साहचर्य के द्वारा वे अतीत के साथ रहते है, और भावी प्रतिष्ठा की उदार उच्चाभिलाषाओ के द्वारा वे भविष्य के साथ विहार करते है। ऐसे मन का एकान्त ही उनके सर्वोच्च आनन्दोपभोग की स्थिति है। तभी तो उनमे उदात्त चिन्तनो का आगमन होता है जो श्रेष्ठ आत्माओ का उचित आहार है, और इस विश्व की मरुभूमि मे स्वर्ग से भेजे हुए आध्यात्मिक आहार की भाति है।

इस विषय पर जब मेरी भावनाए जाग्रत् ही थी तभी मेरे सौभाग्यवश श्री रास्को की और कुछ विशेपताए मुझे मालूम हुई। मै एक सज्जन के साथ, लिवरपूल के आसपास के स्थानो को देखने के लिए अश्वारोहण कर रहा था। वे सज्जन एक फाटक से अलकृत मैदान मे मुड गए। थोडी दूर जाने के बाद, हमे यूनानी शैली पर बनी हुई पत्थर की एक बडी अट्टालिका दिखाई पडी। यद्यपि उसे विशुद्धतम सुरुचि का नमूना नही कह सकते थे, फिर भी उससे भव्यता टपक रही थी और स्थान चित्ताकर्षक था। उसके ढलुवे भाग पर एक सुन्दर हरित भूमिखण्ड या लान था, इसमे बीच-बीच मे पादप-पुज थे। यह सब कुछ इस प्रकार निर्मित हुआ था कि एक मृदु उपजाऊ भूखण्ड अनेक प्रकार के भूचित्रो (लैण्डस्केप) मे बदल गया था। हरित शाद्वलभूमि के विस्तार के बीच शान्त जल की एक कलकलस्वनी बह रही थी और वेल्स के पर्वत बादलो से आख-मिचौनी करते हुए दूर जाकर क्षितिज की सीमारेखा बना रहे थे।

रास्को के समृद्धि-काल मे यही उनका प्रिय निवास था। यह भव्य आतिथ्य

एव साहित्यिक विश्राम का केन्द्र रह चुका था। अब वह मौन तथा उजडा हुआ लग रहा था। मैने अध्ययन-कक्ष की खिडकिया देखी जो उपर्युक्त मृदुल दृश्य की ओर खुलती थी। इस समय वे बन्द थी। पुस्तकालय अब नही था। दो-तीन भद्दे से आदमी इधर-उधर चहलकदमी कर रहे थे। मैंने कल्पना की कि वे कानून के प्रहरी होगे। यह यात्रा किसी ऐसे भव्य प्राचीन फव्वारे की यात्रा करने के सदृश थी जो पवित्र छाया-तले कभी अपना निर्मल जल उद्गीर्ण करता रहा होगा। किन्तु अब शुष्क एव धूलि से आवेष्टित हो गया है और उसके भग्न मर्मर पत्थरो पर गोथिका और दादुर वृन्द राज्य कर रहे है।

मैने श्री रास्को के पुस्तकालय के विपय मे पता [illegible] जिसमे दुर्लभ एव विदेशी ग्रन्थ थे और जिनमे से अनेक (ग्रन्थो) से उन्होने अपने इतालवी इतिहासो की आधार-सामग्री ग्रहण की थी। मालूम हुआ, वह नीलाम कर दिया गया और उसके ग्रन्थ सारे देश मे इधर-उधर बिखर गए। जो भव्य जलयान बहकर तट पर आ लगा था उसका कुछ भाग हथियाने के लिए पास-पडोस के लोगो की भीड इस प्रकार जमा हो गई थी मानो वे लोग ही उसके विध्वसकर्ता हो। यदि ऐसे दृश्य मे परिहासजनक ससर्गो की सम्भावना होती तब हम विद्या के क्षेत्रो पर इस विचित्र आक्रमण को एक सनक समझ सकते थे। ऐसा लगा मानो विराट् के शस्त्रागार मे बौने लोग घुस गए हो और ऐसे शस्त्रो पर अधिकार करने को उत्सुक हो जिनका उपयोग वे न कर सकते हो। हम अपने से ऐसे सट्टेबाजो के गुट की कल्पना कर सकते है जो किसी अप्रचलित लेखक के ग्रन्थ की विचित्र जिल्दसाजी और उद्दीप्त हाशिये पर भृकुटिया टेढी कर बहस कर रहे होगे, इसी प्रकार हम किसी सफल क्रयकर्ता के उस गभीर पर घबराहट-भरे वैदग्ध्य की कल्पना भी कर सकते है जिसके साथ वह कृष्णाक्षरो के उस सौदे का ऊहापोह कर रहा हो।

श्री रास्को के दुर्भाग्य की कथा मे यह एक सुन्दर घटना है, और वह अध्ययनशील मस्तिष्को मे दिलचस्पी जगाए बिना नही रहेगी—कि अपने ग्रन्थो के विछोह ने उनकी मृदुलतम भावनाओ को स्पर्श किया और यही एक मात्र ऐसी परिस्थिति थी जिसने उनकी सरस्वती का ध्यान आकर्षित किया। एक विद्वान् ही यह जानता है कि शुद्ध विचारो एव निर्दोष घण्टो के ये मौन, फिर भी बोलने वाले, साथी विपन्नता की ऋतुओ मे कितने प्रिय हो उठते है। जब वह सब जो

पार्थिव है हमारे चतुर्दिक् जग के रूप मे बदल जाता है तब यही है जो अपने स्थिर मूल्य पर बने रहते है। जब मित्र ठण्डे पड जाते है और सुपरिचितो की वार्ता विरस शिष्टता और दिखावे मे बदल जाती है, तब यही है जो सुखमय दिनो की अपरिवर्तित मुखाकृति बनाए रखते है और उस सच्ची मैत्री के साथ हमे प्रोत्साहित करते है जो आशा मे धोखा नही देती, और शोक एव दुख मे साथ नही छोडती।

मै निन्दा नही करना चाहता, किन्तु निश्चय ही यदि लिवरपूल के निवासी ठीक प्रकार से विचार कर सकते कि श्री रास्को और स्वय अपने प्रति क्या देय है तो उनका पुस्तकालय हरगिज बिकने नही पाता। निस्सन्देह, इस परिस्थिति के लिए अच्छी दुनियावी दलीले दी जाएगी और उन्हे दूसरी कल्पनात्मक दलीलो से निरस्त करना भी कठिन होगा, किन्तु मुझे तो निश्चित रूप से ऐसा लगता है कि दुर्भाग्य के बीच सघर्ष करते हुए किसी भव्य आत्मा को सार्वजनिक सहानुभूति के एक अत्यधिक कोमल किन्तु सर्वाधिक अभिव्यक्तिशील स्मृतिचिह्न से अभिनन्दित करने का ऐसा अवसर कभी-कभी ही मिलता है। किन्तु ऐसे प्रतिभावान व्यक्ति का उचित मूल्याकन करना कठिन ही होता है जो प्रतिदिन हमारी आखो के आगे से गुजरता हो। वह दूसरो के झुण्ड मे सम्मिलित कर लिया जाता और उनके साथ उपेक्षित होता है। उसकी महती विशेषताए अपनी नवीनता खो देती है, हम उस सामान्य सामग्री के साथ बहुत अधिक परिचित हो जाते है, जिससे उच्चतम स्वभाव के आधार की भी रचना होती है। श्री रास्को के कुछ नगरनिवासी उन्हे केवल एक व्यापारी के रूप मे मान सकते है, दूसरे कुछ उन्हे राजनीतिज्ञ मान लेगे, सब उन्हे अपनी तरह ही सामान्य धन्धो मे लगा पाएगे, और सासारिक ज्ञान के कुछ मुद्दो मे शायद वे उनसे भी बढे होगे। जो नही जानते कि वास्तविक योग्यता सदैव ही चमक-दमक और आडम्बर से रहित होती है, ऐसे अनगढ मस्तिष्क वाले प्राणी यथार्थ महानता को नामहीन सौष्ठव प्रदान करने वाली, आचरण की स्नेहपूर्ण एव अकृत्रिम सरलता की कम कीमत आक सकते है। किन्तु जो विद्वान् है और लिवरपूल का जिक्र करते है, वे उसका रास्को के निवास-स्थान के रूप मे ही वर्णन करते है। इसे देखने आनेवाला प्रबुद्ध यात्री यही पूछता है कि रास्को के दर्शन कहा हो सकते है? वह इस स्थान के साहित्यिक सीमान्त है—सीमान्त जो दूरस्थ विद्वान् या

अध्येता का इस स्थान के अस्तित्व का निर्देश करता है। वह सिकन्दरिया के उस पाम्पी स्तम्भ की भाति है जो अपनी पुरातन मर्यादा के साथ आज भी अकेले सबसे ऊचाई पर सिर उठाए हुए हे।

जब श्री रास्को अपनी पुस्तको से वियुक्त हो रहे थे तो उन्होने उनके नाम एक चतुर्दशपदी (सॉनेट) लिखी थी। उसमे जो उदात्त विचार और शुद्ध अनुभूति चित्रित है उसमे यदि प्रभावशाली वस्तु जोडी जा सकती है तो वह यह विश्वास है कि यहा सब कुछ कल्पना का चमत्कार ही नही है वरन लेखक के हृदय का वास्तविक चित्र है।

मेरी पुस्तकों को

मै, नियति जिसकी कि मित्रो से जुदा हो,
शोक करता हानि पर हू, पर यही आशा हमारी।
फिर करूगा बात उनसे और मजुल श्रान्तिहारी।
मुस्कराहट फिर मिलेगी, और विपदा-बाण भी कुछ मृदुल होगे।
प्यार के साथी, कला के श्रेष्ठ अधिपति, जो हमारे।
ज्ञान के शिक्षक, बुरे दिन के सहारे।
श्रान्ति-श्रम-हर्त्ता, तुम्हे मै छोडता हू।
भरे मन से आज नाता तोडता हू।
चन्द छोटे वर्ष या दिन या कि घण्टे।
बीत जाएगे, उषा फिर सुखद ऋतुए ला सकेगी।
फिर तुम्हारा स्पर्श पावन पा सकूगा।
इस जगत् से मुक्त, प्राणो मे अपरिमित शक्ति होगी।
प्राण से फिर प्राण का प्रत्यक्ष सब सम्बन्ध होगा।
बन्धुओ के चिरमिलन मे फिर न कोई विरह होगा।

पत्नी

रत्न-राशि सागर की भी बहुमूल्य नहीं है उतनी ।
नारि-प्रेम-रत मानव की प्रच्छन्न सुखाशा जितनी ।
जब मै अपने प्यारे घर की सन्निधि मे आता हूं ।
वरदानो की मलयवाहिनी वायु वहां पाता हू ।
परिणय से निःसृत सुगंधमय श्वास स्वादु है जितना ।
कोमल शेफाली कलिका-पर्यंक नहीं है उतना ।।

—मिडिलटन

मैंने अनेक अवसरो पर उस साहस का उल्लेख किया है जिसके साथ स्त्रिया भाग्य के अत्यन्त दुर्दम्य विपर्ययो को सहन करती है । जो विपदाए एक पुरुष के हृदय को टूक-टूक कर देती हैं और उसे धूल मे लोटने के लिए विवश करती है, वे ही कोमलप्रकृति स्त्री की समस्त शक्तियो को जागृत कर देती है और उसके चरित्र को इतनी दिलेरी और ऊचाई पर उठा देती है कि कभी-कभी तो वह दिव्यता की सीमा को छूने लगता है । जो मृदुल और कोमल स्त्री दुर्बलता और निर्भरता की मूर्ति रही है और जीवन के समृद्ध मार्गो पर चलते हुए ज़रा-ज़रा-सी रूखी बातो पर जिसका ध्यान जाता रहा है, उसका अकस्मात् अपनी सम्पूर्ण मानसिक शक्ति के साथ उठकर अपने दुर्भाग्य मे पडे पति को दिलासा और सहारा देने तथा विपन्नता के निष्ठुरतम प्रहारो को अदम्य दृढता के साथ सहन करने से बढकर हृदयस्पर्शी दृश्य और क्या हो सकता है ?

जैसे बहुत दिनो तक बलूत वृक्ष को अपनी मनोरम हरीतिमा से लपेटने वाली और उसके द्वारा सूर्य रश्मियो की ओर उठी हुई लता, ऋतुसहिष्णु वृक्ष के करकापात द्वारा भग्न कर दिए जाने पर भी उसके साथ अपने दुलार-भरे तन्तुओ से लिपटी रहती है और उसकी छिन्न-भिन्न टहनियो को बाधे रखती है, उसी

प्रकार ईश्वर का यह मजुल विधान है कि जो स्त्री-पुरुष के सुखमय दिनो मे उसकी आश्रिता एव अलकरण बनकर रहती है, उसके आकस्मिक सकट-द्वारा दशित एव पीडित होने पर वह उसका अवलम्ब और सान्त्वना बन जाए, उसकी प्रकृति की बीहड कन्दराओ मे प्रवेश करे, उसके झुके हुए सिर को अपना कोमल सहारा दे तथा उसके टूटे हृदय को जोड दे।

एक समय मै अपने एक ऐसे मित्र को बधाई दे रहा था जिसके पास दृढतम अनुराग-बन्धनो मे बधा परिवार था। उसने बडे उत्साह के साथ मुझसे कहा—"एक पत्नी और बच्चो से ज्यादा अच्छी वस्तु की कामना मै तुम्हारे लिए नही कर सकता। यदि तुम समृद्ध हो, तो वे तुम्हारी समृद्धि मे भाग लेने के लिए है ही, और परिस्थिति इसके विपरीत हुई तो उसमे भी वे तुम्हे सान्त्वना और सुख देगे।" और मैने निश्चय ही इस बात का पर्यवेक्षण किया है कि एक विवाहित आदमी के लिए, जो बुरे दिनो मे फस गया है, उबरने की अविवाहित मनुष्य की अपेक्षा कही अधिक सम्भावना है। इसका आशिक कारण तो यह है कि जीवननिर्वाह के लिए अपने ऊपर निर्भर असहाय परन्तु प्रिय प्राणियो की आवश्यकताओ के कारण उसे प्रयत्न एव श्रम करने मे अधिक प्रोत्साहन प्राप्त होता है परन्तु मुख्य कारण यह है कि पारिवारिक प्रेम-स्पर्श के कारण उसकी भावनाए शान्त और भारहीन हो जाती है और यह देखकर उसका आत्म-सम्मान जीवित वना रहता हे कि यद्यपि उसके चतुर्दिक् अन्धकार और अपमान का विस्तार है किन्तु उसके बीच घर मे प्रेम की एक छोटी-सी दुनिया ऐमी बच गई है, जिसका वह अब भी राजा है। एक अविवाहित आदमी के लिए, ऐसी ही स्थिति मे विनाश और आत्मोपेक्षा की अधिक सम्भावना रहती है क्योकि वह अपने अकेले और परित्यक्त होने की कल्पना कर लेता है और उसका हृदय, किसी ऐसे परित्यक्त, उजडे हुए भवन की भाति, गिरकर टूट जाता है जिसमे कोई निवासी न रह गया हो।

इन विचारो को लिखते हुए मुझे एक छोटी-सी पारिवारिक घटना की याद आ रही है जो मेरे सामने गुजरी है। मेरे घनिष्ठ मित्र लेस्ली ने एक ऐसी सुन्दरी तथा योग्य कन्या से विवाह किया था जो फैशनेबुल-जीवन-विधि मे पली हुई थी। यह सत्य है कि उसके पास कोई विशेष सम्पदा न थी किन्तु मेरे मित्र (उसके पति) के पास खूब पैसा था, और वह यह कल्पना कर प्रसन्न था कि अपनी

जीवन-सगिनी की हर प्रकार की सुरुचि और प्रवृत्ति को सन्तुष्ट कर सकेगा—उन सब सुविधाओ के सपने पूरे कर सकेगा जो नारी जाति पर जादू-टोने की भाति फैले होते हे। उसने कहा—"उसका जीवन परियो की कहानी-जैसा रहेगा।"

उनकी प्रकृति मे जो भिन्नता थी उसीके कारण दोनो के बीच बडा ही सामजस्यपूर्ण सम्बन्ध स्थापित हो गया था। मेरा मित्र रूमानी और गभीर प्रकृति का था, पत्नी जीवन और प्रफुल्लता से मुखरित थी। मैंने प्राय पाया है कि मित्र-मण्डली के बीच बैठे हुए भी वह मौन हर्षोन्माद के साथ उसे देखा करता था और मित्रपत्नी की उल्लसित शक्तियो से मण्डली आनन्दमग्न होती रहती थी। मैंने देखा है कि मण्डली मे मित्रो की हर्षध्वनि एव तालियो के बीच भी पत्नी की आखे मित्र की ओर घूम जाती थी मानो उसे केवल उसीकी अनुकूलता एव स्वीकृति की चाह हो। जब वह उसकी बातो पर झुकी होती तो उसके नाजुक बदन के साथ मित्र की लम्बी पौरुषमय आकृति की विपरीतता बडी भली लगती थी। प्रीतिभरी और विश्वासपूर्ण जिन नजरो से वह उसे देखती थी उनमे एक विजयपूर्ण गर्व और कोमलता का आवाहन होता था, मानो मेरा मित्र अपने उस सुन्दर भार को उसकी असहायता के कारण ही उठा रहा हो। प्रारम्भिक एव एक-दूसरे के योग्य विवाह के कुसुमित मार्ग पर इससे अधिक आनन्दमय भविष्य की सम्भावनाए लिए चलने वाले दम्पति मैंने नही देखे थे।

किन्तु दुर्भाग्य-वश मेरे मित्र ने सपनी सम्पत्ति को बडे सट्टे या फाटके के दाव पर लगा दिया। उसका विवाह हुए ज्यादा महीने नही बीते थे कि आकस्मिक आपदाओ की शृखला ने उसकी सम्पत्ति उससे दूर फेक दी और वह लगभग दारिद्र्य के स्तर पर आ गया। कुछ समय तक उसने अपनी स्थिति छिपाई और अपने तक ही रहने दी, वह मरियल मुखाकृति और टूटते हृदय के साथ काम मे लगा रहा। उसका जीवन एक दीर्घ सताप-मात्र था और वह इसलिए और दु सह हो गया कि उसे अपनी पत्नी के सामने मुस्कान लिए जाना पडता था, वह इस बुरे समाचार को बताकर अपनी पत्नी को घबराहट मे डालने के लिए तैयार न था। किन्तु पत्नी ने अपनी प्रीति की दृष्टि से शीघ्र ही भाप लिया कि कही कोई गडबडी जरूर है। उसने उनकी बदली हुई नजर और अवरुद्ध उच्छ्वासो को देख लिया और उनके प्रसन्न रहने के रुग्ण एव विरस प्रयत्नो से भलावे मे नही आई। उसने उन्हे पुन सुखी करने के लिए अपनी समस्त प्रफुल्ल

कारिणी शक्तियो तथा मृदुल चाटूक्तियो का प्रयोग किया किन्तु जितना ही वह उनको सुखी करने के ये प्रयत्न करती, उतना ही बाण उनके कलेजे मे गहरा घुसता जाता था। जितना ही वह उसे प्रेम करने की आवश्यकता का अनुभव करते, उतना ही यह विचार उनके मन को व्यथित करता कि शीघ्र ही उनके द्वारा उसका जीवन दु खपूर्ण होने वाला है। वह सोचते कि थोडे समय बाद ही उसके कपोलो से मुस्कान तिरोहित हो जाएगी, उन अधरो का सगीत मर जाएगा, उन आखो की ज्योति शोक से बुझ जाएगी और जो आनन्दपूर्ण हृदय, उसके सीने मे धीर गति से स्पन्दित हो रहा है, उनके हृदय की भाति, ससार की चिन्ताओ और व्यथाओ के बोझ से दब जाएगा।

अन्त मे वह एक दिन मेरे पास आए और अत्यन्त गहरी निराशा-भरी वाणी में अपनी सम्पूर्ण परिस्थिति मुझे बताई। जब मै उनकी पूरी बात सुन चुका तो पूछा—"क्या तुम्हारी पत्नी यह सब जानती है ?" सवाल सुनते ही वह व्यथा-पूर्ण आसुओ मे फूट पडे और चीखकर बोले—"यदि तुम मुझपर ज़रा भी दया रखते हो तो ईश्वर के लिए मेरी पत्नी का जिक्र मत करो, उसीका विचार तो मुझे प्राय. पागल कर देता है।"

मैंने कहा—"क्यो नही! आगे-पीछे उसे पता तो लग ही जाएगा, तुम यह बात उससे बहुत दिनो तक छिपाए नही रह सकते और यह भी सम्भव है कि तुम्हारे द्वारा बताए जाने की अपेक्षा कही अधिक चौका देने वाले ढग पर उसे इसका ज्ञान हो। हम जिन्हे प्यार करते है उनकी मुखध्वनि से निष्ठुरतम आघात मृदुल हो जाते है। इसके अतिरिक्त तुम अपने को उसकी सहानुभूति के सुख से वचित रख रहे हो। केवल इतनी ही बात नही है, तुम उस एकमात्र बन्धन को भी खतरे मे डाल रहे हो जो दो हृदयो को एकत्र रख सकता है—विचार एव भावना की मुक्त साझेदारी का बन्धन। वह शीघ्र ही समझ जाएगी कि कोई वस्तु गुप्त रूप से तुम्हारे मन को आक्रान्त किए हुए है, और सच्चा प्रेम दुराव को सहन नही करता, मनुष्य जिन्हे प्यार करता है उनके शोक और दु ख भी यदि उससे छिपाए जाते है तो उसे लगता है कि उसके प्रेम का मूल्य कम आका जा रहा है, वह अपने प्रेम को अपमानित अनुभव करता है।"

"परन्तु मेरे मित्र! यह तो सोचो कि वैसा करके मैं उसकी सम्पूर्ण भावी सम्भावनाओ पर कैसा प्रहार करूगा—उसे यह बताकर कि उसका पति आज

भिखारी है, उसकी आत्मा को किस प्रकार मारकर धरती पर गिरा सकूगा ? कैसे उससे कह सकूगा कि उसे जीवन के समस्त शृगार का त्याग करना है, समाज के सम्पूर्ण सुख-भोग छोड देने है और मेरे साथ दरिद्रता और गुमनामी की जिन्दगी मे खो जाना है ? किस तरह मै उससे कहने का साहस करू कि जिस वातावरण मे वह निरन्तर प्रकाश मे चलती रह सकती थी और प्रत्येक की आखो का तारा तथा प्रत्येक हृदय की प्रशसा बनी हुई रह सकती थी उससे धकेलकर मैने उसे नीचे पटक दिया है ? वह गरीबी को कैसे सहन कर सकेगी ? वह वैभव के सस्कारो मे पाली गई है । अब वह उपेक्षा को कैसे बर्दाश्त करेगी ? वह समाज की पूजा की वस्तु रही है । हाय ! यह सूचना उसका हृदय टूक-टूक कर देगी—उसका हृदय टूक-टूक कर देगी !"

मैने देखा, उनकी व्यथा बोल रही है, इसलिए मैने उसके प्रवाह मे बाधा नही दी, क्योकि कहने से दु ख घटता है । जब उनका उफान कम हो गया, और वह विषादमय मौन की गोद मे आ गए, तब मैने बडी कोमलता से विषय को फिर उभारा और उनसे अनुरोध किया कि परिस्थिति अपनी पत्नी को तुरन्त बता दे । उन्होने दु खपूर्वक परन्तु निश्चित रूप से सिर हिला दिया ।

"किन्तु तुम उससे छिपाओगे कैसे ? यह आवश्यक है कि वह उसे जाने, जिससे तुम अपनी बदली हुई परिस्थिति के अनुकूल उचित कदम रख सको । तुम्हे अपने रहन-सहन मे परिवर्तन करना ही चाहिए—(उसके चेहरे पर गहरी वेदना की रेखा देखकर) नही, तुम्हे उससे पीडित नही होना चाहिए । मुझे विश्वास है कि तुमने बाहरी दिखावटो मे अपने आनन्द की कल्पना नही की है-- अब भी तुम्हारे ऐसे मित्र है, गहरे मित्र जो कम शानवाले मकान मे रहने के कारण तुम्हे कुछ नीचा न समझेगे, और यह भी निश्चित है कि मेरी के साथ सुखी होने के लिए किसी महल की आवश्यकता नही है—"

वे बल खाते हुए चीख पडे—"मैं उसके साथ एक पर्णकुटी मे भी सुखी हो सकता हू ! मै उसके साथ दरिद्रता और धूल मे जा सकता हू ! हा, मै वैसा कर सकता हू पर ईश्वर उस पर दयालु हो !—ईश्वर उस पर दयालु हो !" व्यथा और मृदुता की स्थिति मे फूट पडते हुए उन्होने चिल्लाकर कहा ।

उठकर प्रेम के उत्ताप के साथ उनका हाथ पकडते हुए मैने कहा—"और मेरे मित्र ! मेरा विश्वास करो, मेरी बात मानो, वह तुम्हारे साथ इस अवस्था

मे भी वैसी ही (सुखी) बनी रह सकती है। बल्कि उससे भी अधिक। उसके लिए यह गर्व और विजय की बात होगी—यह उसकी प्रकृति मे प्रच्छन्न समस्त क्षमताओ और आकुल सहानुभूतियो का आवाहन करेगी, क्योकि वह इसे प्रमाणित करने मे प्रसन्न होगी कि वह तुम्हे तुम्हारे लिए प्रेम करती है। प्रत्येक सच्ची स्त्री के हृदय मे स्वर्गीय अग्नि की एक ऐसी चिनगारी होती है, जो समृद्धि के सूर्यप्रकाश मे गुप्त पडी रहती है किन्तु विपदा के काले क्षणो मे चमक उठती, मुस्कराती और दहक उठती है। कोई पुरुष नही जानता कि उसके हृदय से लगी पत्नी क्या है—कोई पुरुष नही जानता कि वह कैसी दिव्य देवदूती है—तबतक नही जबतक कि वह इस दुनिया की अग्निपरीक्षाओ के बीच से उसके साथ नही गुजर जाता।"

मेरे कहने के ढग की सच्चाई और मेरी वाणी की अलकृत शैली मे कुछ ऐसी बात थी जिसने लेस्ली की उत्तेजित कल्पना को पकड लिया। जिस श्रोता से मुझे काम लेना था उसे मैं जानता था, और जो प्रभाव मैने उसपर डाला था उसका अनुसरण करते हुए अपनी बात यो समाप्त की कि वह घर जाए और अपना विषण्ण हृदय अपनी पत्नी के सामने खोल दे।

मै स्वीकार करता हू कि मैने जो-कुछ कहा था उसके बावजूद, मेरे हृदय मे परिणाम के विषय मे कुछ सन्देह था। एक ऐसी स्त्री के धैर्य का हिसाब कौन लगा सकता है जिसका जीवन सुखोपभोग की एक शृखला रहा हो ? सम्भव है कि उसकी उत्फुल्ल भावनाए अकस्मात् अपने सामने दिखाए जाने वाले निम्न विनम्रता के अधोगामी अन्धकार-मार्ग को देखकर विद्रोह कर दे और जिन सूर्य-रश्मि-आलोकित प्रदेशो मे अभी तक वे अठखेलिया करती रही है उन्हे ही पकड-कर बैठ रहे। इसके अतिरिक्त फैशनप्रधान जीवन के ध्वस के साथ क्षोभकारी इन्द्रियनिग्रह की ऐसी कितनी बाते भी लगी है जो दूसरे वर्गों के जीवन मे नही पाई जाती। सक्षेप मे दूसरे दिन जब मैं लेस्ली से मिला तो मेरा हृदय काप रहा था। उसने सब बाते पत्नी पर प्रकट कर दी थी।

"उसने उसे कैसे सहन किया ?"

"देवदूती की भाति ! बल्कि इससे उसके मन को राहत महसूस हुई, उसने अपनी बाहे मेरे गले मे डाल दी, और पूछा कि क्या बस इतनी ही बात से तुम पिछले दिनो इतने दु खी हो रहे थे ? किन्तु भोली लडकी ! वह उस परिवर्तन

को अनुभव नही कर पाई जिसके बीच से हमे गुजरना पडेगा । उसे कल्पना के सिवा गरीबी का कोई अन्दाज नही है, उसने उसके बारे मे केवल काव्य मे पढा है, जहा वह प्रेम से सम्बद्ध है । अभी उसे कष्ट का अनुभव तो हुआ नही है, अभी तक उससे अभ्यस्त सुविधाए एव सुघडताए तो छिनी नही है ! जब हम गरीबी की सकीर्ण चिन्ताओ, उसकी क्षुद्र आवश्यकताओ और उसकी अधम अवमाननाओ का व्यावहारिक अनुभव करेंगे तभी हमारी यथार्थ परीक्षा होगी ।"

मैने कहा— "अब जब तुमने उसपर स्थिति प्रकट कर देने का कठोरतम कार्य पूरा कर लिया है तो जितनी जल्दी तुम ससार पर भी उसे प्रकट कर दो, अच्छा होगा । उसे प्रकट करना लज्जाकारी हो सकता है किन्तु वह सिर्फ एक ही व्यथा होगी और शीघ्र समाप्त हो जाएगी, जबकि इसके विपरीत अभी तुम दिन के प्रत्येक घण्टे, उसकी कल्पना से, व्यथा भोग रहे हो । गरीबी नही बल्कि उसका दुराव ही वह चीज है जो विनष्ट मानव को बराबर त्रस्त रखती है। वास्तविक दुख उस सघर्ष मे है जो एक गर्वित मन और खाली जेब के बीच चलता रहता है—वह एक खोखले दिखावे को जारी रखने मे है जिसका शीघ्र ही अन्त होना है । गरीब के रूप मे प्रकट होने का साहस कर लो, बस समझ लो कि तुमने गरीबी को तीक्ष्णतम डक से रहित कर दिया । मैने देखा कि इस मुद्दे पर लेस्ली पूरी तरह तैयार है । उसे स्वय अपने तई कोई झूठा दभ नही था, और जहा तक उसकी पत्नी की बात है वह अपने परिवर्तित भाग्य के अनुसार जीवन-विधि मे सुधार करने को उत्कण्ठित थी ।

चन्द दिनो बाद एक शाम को मेरे मित्र मुझसे मिलने आए । उन्होने अपना निवास-गृह बेच दिया था, और नगर से कुछ मील दूर देहात मे एक छोटा मकान ले लिया था । सारे दिन वह अपना फर्नीचर निकालने मे व्यस्त रहे थे । नवीन निवास मे बहुत थोडी और अत्यन्त सरल चीजो की आवश्यकता थी । उसके पिछले निवासस्थान के सब शानदार फर्नीचर बेच दिए गए थे, केवल उनकी पत्नी की विपची (हार्प वाद्य) रख ली गई थी । उन्होने कहा कि वह स्वय उनकी पत्नी की भावना के साथ घनिष्ठ-रूप से सम्बद्ध होने के कारण नही बेची गई । उसके साथ उनके प्रेम की लघु-कथा जुडी हुई है, क्योकि विवाहार्थ प्रेमार्चन की बहुतेरी मृदु घडियो मे वह उस तत्रवाद्य पर झुककर उसकी वाणी की द्रवणशील ध्वनियो को सुनते रहे है। एक मुग्ध पति के रूमानी औदार्य के इस उदा-

हरण पर मैं मुस्कराए बिना नही रह सका ।

अब वह अपने उस कुटीर (काटेज) को जा रहे थे, जहा उनकी पत्नी सारे दिन घर की व्यवस्था की देखरेख मे लगी रही थी। इस परिवार की कथा की प्रगति के प्रति मै बहुत आकर्षित हो गया था और चूकि सध्या बडी सुहावनी थी, मै उनके साथ जाने को तैयार हो गया ।

वह दिनभर के श्रम से थक रहे थे, और बाहर निकलते ही विषादपूर्ण विचारो मे खो गए ।

अन्त मे एक दीर्घ नि श्वास लेते हुए उनके ओठो से ये शब्द फूटे —"बेचारी मेरी !"

मैने पूछा—"क्या हुआ उसको ? क्या उसके साथ कोई बात हो गई ?"

एक अधैर्यपूर्ण दृष्टि डालकर उन्होने कहा—"क्या इस दरिद्र स्थिति मे पतित होना, किसी दु खदायी झोपडी मे बन्दी होना, अपने कुत्सित निवास के भृत्योचित कार्यो को करने के लिए विवश होना कुछ नही है ?"

"तब क्या उसे इस परिवर्तन पर मनस्ताप है ?"

"मनस्ताप ! वह तो मृदुता और प्रसन्नता की मूर्ति-सी दिखाई पडती है । मैंने आज तक उसे जिस रूप मे जाना है उससे कही अधिक प्रसन्न और उत्साहित आजकल पाता हू, मेरे साथ तो वह केवल प्रेम, मृदुता और राहत की मूर्ति का-सा आचरण कर रही है !"

मैने कहा—"प्रशसनीय लडकी ! मेरे मित्र ! तुम अपने को गरीब कहते हो ? तुम कभी उतने धनवान नही थे जितने आज हो ! उस स्त्री के रूप मे असीम भव्यता का जो रत्नकोष तुम्हारे पास है उसका ज्ञान पहले कभी तुम्हे नही था ।"

"आह ! मेरे मित्र ! जब इस कुटीर मे यह पहला मिलन समाप्त हो जाएगा, मैं सोचता हू कि तब शायद मैं आराम पा सकूगा । किन्तु उसके लिए यथार्थ अनुभव का यह पहला दिन है, वह एक क्षुद्र निवास मे प्रविष्ट की गई है और उसने उसकी दु खदायी सामग्रियो को सजाने रखने मे सारा दिन बिताया है, उसे पहली बार पारिवारिक कार्यों के श्रमशैथिल्य का ज्ञान हुआ है— पहली बार उसने एक ऐसे घर मे अपने को देखा है जो प्रत्येक श्रेष्ठ वस्तु से रहित है— जो प्रत्येक सुविधाजनक वस्तु से हीन है । इस समय शायद वह श्रान्त एव

उत्साहहीन होकर भावी अकिंचनता की सम्भावनाओ पर विचार करती बैठी होगी ।"

इस चित्र मे एक सीमा तक सम्भवनीयता की गुजाइश थी इसलिए हम दोनो चुपचाप होकर चलते रहे ।

हम मुख्य मार्ग से एक सकरी गली मे मुड गए । यह गली वन्यतरुओ की घनी छाया से इस प्रकार आच्छादित थी कि वहा एकान्त का वातावरण फैला हुआ था । गली मे मुडते ही एक कुटीर (काटेज) पर मेरी दृष्टि पडी । अत्यन्त धार्मिक कवि के लिए भी वह देखने मे अत्यन्त सामान्य लगती थी, फिर भी वह एक मुदित ग्राम्य-रूप से पुष्ट थी । एक सिरे पर कोई वनलता अपने पत्र-पुष्पो के साथ फैली हुई थी और उसके ऊपर कुछ वृक्षो ने बडी भव्यता के साथ अपनी शाखाए फैला रखी थी । मैने देखा द्वार के निकट फूलो के कुछ गमले बडी सुरुचि के साथ सजाए गए है और उसके सामने ही एक दूर्वा-श्यामल भूखण्ड है । एक छोटा फाटक ऐसी पगडण्डी के ऊपर खुलता था जो दोनो ओर निकुजो से पूर्ण गृह-द्वार तक जाती थी । द्वार के निकट पहुचने पर हमे गाने का स्वर सुनाई पडा—लेस्ली ने मेरी बाह पकड ली, हम खडे हो गए और सुनने लगे । यह मेरी की आवाज थी, जो अत्यन्त हृदयस्पर्शी सरलता की शैली मे गा रही थी—ऐसे ढग से जो उसके पति को बहुत ही प्रिय था ।

मैने अनुभव किया कि मेरी बाह पर लेस्ली का हाथ काप रहा है । वह और अच्छी तरह सुनने के लिए कुछ आगे बढ गया । उसके पग से बजरी की सडक पर कुछ शब्द हुआ । एक दमकता, सुन्दर मुख खिडकी पर दिखाई पडा और क्षणभर मे लुप्त हो गया । हल्की पग-ध्वनि सुनाई पडी और मेरी जल्दी-जल्दी चलकर हमसे मिलने आ गई । वह सुन्दर श्वेत ग्राम्यवस्त्र पहिने हुए थी, उसके सुन्दर बालो मे कुछ वन्य-कुसुम गुथे हुए थे, उसके गालो पर एक नवीन लालिमा और ताजगी थी, उसका सम्पूर्ण चेहरा मुस्कान से दीप्त था—मैने इसके पहिले कभी उसे इतने मनोरम रूप मे नही देखा था ।

वह चीखकर बोली—"मेरे प्यारे जार्ज ! तुम आ गए, इससे मैं कितनी खुश हू ! मै कबसे तुम्हारी प्रतीक्षा करती रही हू । मैने कुटीर के पीछे एक सुन्दर तरु के नीचे टेबल लगा दिया है, और कुछ बडी ही स्वादिष्ट स्ट्राबेरिया एकत्र करती रही हू, क्योकि मै जानती हू तुम्हे वे बडी प्रिय है, और फिर हमारे पास बहुत

बढिया क्रीम है—यहा सब कुछ बडा ही मधुर और शान्त है—आह !" कह कर उसने अपनी बाहे लेस्ली की बाह मे डाल दी और उसके मुख की ओर प्रकाशपूर्ण नयनो से देखती हुई बोली—"ओह ! हम यहा कितने सुखी होगे !"

बेचारा लेस्ली भाव-विभोर हो गया। उसने उसे पकडकर अपने सीने से लगा लिया—उसने अपनी भुजाए मेरी के गिर्द डाल दी। वह उसे बार-बार चूमने लगा। वह बोल नही सका किन्तु उसकी आखो मे आसू भर आए। तब से वह कई बार मुझे विश्वास दिला चुका है कि यद्यपि इस बीच दुनिया उसके साथ पुन समृद्धि के पथ पर चलने लगी है और उसका जीवन निश्चित रूप से सुखपूर्ण रहा है किन्तु उसने उससे अधिक आनन्द एव उल्लास के क्षण अपने जीवन मे कभी अनुभव नही किए।

रिप वान विंकल

डीडरिख निकरबोकर की मरणोत्तर प्रकाशित रचना

सत्य ही है वस्तु जिसका नित्य मै पालन करूंगा।
मरण-दिन पर कब्र मे जब तक न जाऊ॥

—कार्ट राइट।

[न्यूयार्क के निवासी एक वृद्ध सज्जन स्व० डीडरिख निकरबोकर के कागजो मे निम्नलिखित आख्यायिका प्राप्त हुई थी। स्व० निकरबोकर प्रान्त के डच इतिहास और उस के आदिमकालिक उपनिवेशियो से ग्रहण की गई वशजो की जीवन-विधियो के विषय मे बडी दिलचस्पी रखते थे। किन्तु उनकी ऐतिहासिक खोजो की सीमा पुस्तको की अपेक्षा मनुष्यो के बीच ही अधिक थी। क्योकि उनके प्रिय विषय पर दु खजनक रूप से पुस्तको का अभाव है, इसके विपरीत वृद्ध जनपदवासी और विशेष रूप से उसकी स्त्रिया गाथाओ के विषय मे बहुत जानकारी रखती थी—उन गाथाओ के विषय मे जो सच्चे इतिहास के लिए बहुमूल्य है। इसलिए श्री निकरबोकर जब भी किसी सच्चे डच परिवार मे पहुच जाते थे तो छतनार अजीरवृक्ष के नीचे बने उसके नीची छतवाले खेत-घर का इस तरह पर्यवेक्षण करते थे मानो वह एक लघु ग्रन्थ हो और किताबी कीडे की लगन के साथ उसका अध्ययन करते थे।

इन खोजो के परिणाम-स्वरूप उन्होने डच गवर्नरो के शासनकाल का प्रान्त का इतिहास लिखा, जिसे उन्होने कुछ साल बाद प्रकाशित किया। उनके ग्रन्थ के साहित्यिक रूप के विषय मे विविध प्रकार के मत प्रकाशित किए गए है, और सच्ची बात कही जाए तो वह उससे तिल-भर भी श्रेष्ठतर नही है जितना कि उसे होना चाहिए। उसकी मुख्य विशेपता बारीकी से प्रामाणिकता का पालन है। प्रकाशन के बाद इस प्रामाणिकता पर उगली उठाई गई थी किन्तु अब वह पूर्ण-

रूप से सिद्ध हो चुकी है और असन्दिग्ध प्रमाण-ग्रन्थ मानकर सब ऐतिहासिक सग्रहो मे उसका सकलन किया जाता है।

इन वृद्ध सज्जन की, उनके ग्रन्थ के प्रकाशन के थोडे ही समय के अनन्तर मृत्यु हो गई। और जब वह मरकर स्वर्गलोक को चले गए है तब यह कहने से उनकी स्मृति को ज्यादा हानि नही पहुच सकती कि उनका समय इससे अधिक महत्त्वपूर्ण कामो मे लगता तो और अच्छा होता। पर उनको अपनी प्रिय रुचि (हाबी) को अपने ही ढग पर चरितार्थ करने का अभ्यास था। यद्यपि ऐसा करते हुए वह कभी-कभी अपने पडोसियो की आखो मे धूल झोकते और कुछ ऐसे मित्रो की भावना को भी आघात पहुचाते थे जिनके प्रति उनका सच्चा आदर और प्रेम था, फिर भी उनकी त्रुटियो और बुराइयो को लोग 'क्रोध की अपेक्षा शोक के साथ ही अधिक' याद करते है, बल्कि यह सन्देह भी किया जाने लगा है कि किसीको हानि पहुचाने या अपमान करने की इच्छा उनकी बिल्कुल नही थी। किन्तु उनकी स्मृति का सम्मान समीक्षकगण चाहे जिस रूप मे करे, अब भी वह बहुत-से ऐसे लोगो को प्रिय है जिनकी शुभ सम्मति लेने योग्य है—विशेष रूप से कुछ बिस्कुट-निर्माताओ की जो इस मामले मे इतनी दूर तक गए है कि अपने नव-वर्ष के 'केक' पर उनकी प्रतिच्छवि अकित कर दी है और इस प्रकार उन्हे अमर होने का एक अवसर प्रदान किया है, जो वाटरलू पदक या महारानी एनी की फार्दिंग पर छवि अकित करने के बराबर ही महत्त्वपूर्ण है।

जिसने भी हडसन (नद) मे जलयात्रा की है उसे काट्सकिल पर्वतो की याद अवश्य होगी। वे महान अप्पालेशियन परिवार की एक विच्छिन्न शाखा है, और नद के पश्चिम की ओर दूर तक चले गए दिखाई पडते है तथा फूलकर उदात्त ऊचाई तक पहुच गए है और चतुर्दिक् के ग्राम्य प्रान्तो पर आतक जमाए हुए है। ऋतु का प्रत्येक परिवर्तन, मौसम की हरेक तब्दीली, बल्कि दिन का प्रत्येक घण्टा इन पर्वतो के ऐन्द्रजालिक रग-रूप मे परिवर्तन उपस्थित करता रहता है। दूर तथा निकट की सब अच्छी पत्निया उन्हे परिपूर्ण बरोमीटर (वायुभारमापक यन्त्र) के रूप मे ग्रहण करती है जब मौसम साफ और स्थिर रहता है तब वे नीले और बैंगनी रगो के परिधान मे होते है और निर्मल साध्य गगन के साथ उनकी रूप-रेखा खूब मेल खाती है, किन्तु कभी-कभी जब शेष भूदृश्य निर्मेघ रहता है, वे

अपने शिखरो पर धूसर वाप्पपुज का आच्छादन लगा लेते है जो अस्तगत सूर्य की अन्तिम किरणो मे चमक उठता है और गौरव-किरीट की भाति ज्योतित हो जाता है ।

इन तिलस्मी पर्वतो के पादतल मे यात्री को एक ऐसे गाव से हल्का धुआ बल खाकर ऊपर उठता हुआ दिखाई देगा जिसके मकानो की आयताकार काष्ठ-फलको वाली छते पेडो के बीच उस स्थान पर चमक रही होगी जहा अधित्यका की नीलाभाए पास के भूपट के नव-हरित मे घुल जाती है । यह बडे प्राचीन युग का एक छोटा-सा गाव है जो प्रान्त के प्रारम्भिक युग मे कतिपय डच औप-निवेशिको-द्वारा बसाया गया था । यह भले पीटर स्टुई बेसेण्ट (ईश्वर उसे शाति प्रदान करे) की सरकार के आरम्भ के जमाने की बात है । चन्द सालो के अन्दर मूल उपनिवेशी अधिवासियो के कुछ मकान वहा खडे हो गए थे । ये मकान हालैण्ड से लाई गई छोटी पीली ईटो से बने थे, इन मकानो की खिडकिया जालीदार थी, आगे का हिस्सा ढलुवा था और उस पर वातदर्शक बना होता था।

उसी गाव मे, और इन्ही मकानो मे से एक मे (जिसके बारे मे सच्ची बात यह है कि वह बुरी तरह से युगजीर्ण और मौसम के प्रहार से खराब हो रहा था) बहुत साल पहले, जबकि वह भाग ग्रेट ब्रिटेन का एक प्रान्त ही था, रिप वान विकल नाम का एक सरल, अच्छे स्वभाव का आदमी रहता था । वह उन वान विकल का वशज था जिसने पीटर स्टुई बेसेण्ट के शौर्यप्रधान दिनो मे अपनी वीरता के लिए नाम कमाया था और क्रिस्टिना गढ के घेरे मे उनके साथ था । किन्तु रिप वान विंकल को अपने पूर्वजो की सैनिक प्रकृति विरासत मे नही मिली थी । मैंने कहा है कि वह एक सरल, भले स्वभाव का आदमी था । इसके अति-रिक्त वह दयालु पडोसी तथा आज्ञाकारी, पत्नी-भीरु पति भी था । शायद इस उत्तरवर्ती परिस्थिति के कारण ही उसके स्वभाव मे वह विनम्रता आ गई थी जिसने उसे सब मे इस प्रकार लोकप्रिय बना दिया था क्योकि जो लोग घर मे चण्डिकाओ के अनुशासन मे रहते है उनके ही बाहर अत्यनुवर्ती एव सराधनशील होने की अधिक सम्भावना रहती है । निस्सन्देह उनके स्वभाव कौटुम्बिक मन-स्ताप की दहकती हुई भट्ठी की आच मे विनम्र एव लचीले हो जाते है, और धैर्य तथा प्रलम्बित कष्ट-सहन के गुणो को सिखाने के लिए पर्दे के अन्दर का एक व्याख्यान दुनिया-भर के सदुपदेशो एव प्रवचनो के बराबर होता है । इस-

लिए, कुछ दृष्टियो से, एक कर्कशा पत्नी को सहनीय वरदान समझा जा सकता है, और यदि यह बात सच हो तो रिप वान विंकल तिहरा भाग्यशाली था।

इतना तो निश्चित ही है कि वह गाव की सब भली पत्नियो का प्रीति-भाजन था, जो स्त्री-जाति के स्वभावानुसार सभी कौटुम्बिक झगडो मे उसका पक्ष लेती थी, और जब वे अपनी साध्य-वार्ताओ मे इन बातो पर विचार करती थी तो सारा दोष श्रीमती वान विंकल पर थोपे बिना नही रहती थी। गाव के बच्चे भी जब रिप वान विंकल को आते देखते तो आनन्द से शोर कर उठते थे। वह खेलो मे उनकी सहायता करता, उनके लिए खिलौने बना देता, उन्हे पतग उडाना और कचे खेलना सिखाता, तथा उन्हे भूतो, डाइनो तथा इण्डियनो की लम्बी-लम्बी कहानिया सुनाता था। जब भी वह गाव मे चहलकदमी करने निकलता बच्चे उसे घेर लेते और यह हाल होता कि कुछ उसके पायजामे से लटके हुए है, कुछ उसकी पीठ पर चढ रहे है, और भयरहित होकर उससे हजार-हजार चालाकिया करते है, सारे पडोस मे उसको देखकर एक कुत्ता भी नही भौकता था।

रिप के निर्माण मे सबसे बडी खराबी यह थी कि वह सब तरह के लाभ-प्रद धन्धो के प्रति अदम्य उपेक्षा का भाव रखता था। यह कुछ कर्मठता या अध्यवसाय की कमी के कारण नही था, क्योकि वह तातारी बर्छे के समान लम्बी और भारी लग्गी लिए, मछली फसाने के हित, चू-चपड किए विना, सारे दिन गीली चट्टान पर बैठा रहता, फिर चाहे एक भी मछली न फसे। वह जगलो और दलदलो के बीच, काधे पर चिडिया पकडने का जाल धरे घण्टो घूमा करता था और चन्द गिलहरियो या जगली कबूतरो के शिकार के लिए पहाडियो पर चढना और फिर घाटियो मे उतरना उसके लिए मामूली बात थी। कठिनतम श्रम के कार्य मे भी किसी पडोसी के सहायता मागने पर वह उसे कभी इन्कार नही करता था और सब देहाती तमाशो मे इण्डियन मक्का को कूटने या पत्थर की चहारदीवारी बनाने मे वह सबके आगे आता था, गाव की औरते भी अपने सदेशे भेजने के लिए उसे दौडाती और बहुत से ऐसे विचित्र कामो के लिए उसका उपयोग कर लेती थी जो उनके कम आज्ञाकारी पति करने को तैयार नही होते थे। थोडे मे कहे तो रिप अपने काम के सिवा हर एक का काम करने को तैयार रहता था। जहा तक अपने कुटुम्ब का काम करने या अपना खेत ठीक

रखने की बात थी, यह उसके लिए असम्भव थी ।

तथ्य तो यह है कि उसने घोषित कर दिया था कि "अपने खेत पर काम करने मे कोई लाभ नही है, वह सारे प्रदेश मे सबसे मनहूस जमीन का टुकडा है, उसके प्रयत्न करने पर भी उसके बारे मे सब कुछ अशुभ ही होता रहा है, और आगे भी अशुभ और गलत ही होता रहेगा, उसकी बाडे निरन्तर गिरती रहती थी, उसकी गाय या तो इधर-उधर चली जाएगी या फिर पातगोभियो मे घुस जाएगी, और दूसरी जगहो की अपेक्षा उसके खेत मे घासपात कही तेज़ी से उगेगी, जब भी उसे बाहर निकलकर कोई काम करना होता है कि वर्षा होने लगती है ।" इस प्रकार यद्यपि उसके प्रबन्ध मे उसकी पैतृक ज़मीदारी, एक-एक एकड करके धीरे-धीरे समाप्तप्राय हो चली थी और अब उसके पास इण्डियन मक्का एव आलुओ वाला एक छोटा-सा टुकडा ही बच रहा था किन्तु उसकी भी पास-पडोस के खेतो मे सबसे बुरी अवस्था थी ।

उसके बच्चे भी वैसे ही फटेहाल और जगली थे । ऐसा लगता था, मानो कोई उनका धनी-धोरी नही है । उसके पुत्र रिप को, जो उसका हमशक्ल था, अपने पिता के पुरातन वस्त्रो के साथ उसकी आदते भी विरासत मे मिली प्रतीत होती थी । वह बछेडे की तरह अपनी मा के पीछे-पीछे उससे चिपका रहता और अपने पिता के उतारे हुए ढीले पायजामे को पहिनकर उसके सिरे को एक हाथ से पकडकर यो चलता था जैसे खराब मौसम मे सभ्य स्त्री अपनी साडी या घाघरे को उठाकर चलती है ।

फिर भी रिप वान विंकल बुद्धू तथा मस्त प्रकृति के उन सुखी मानवो मे से एक था, जो दुनिया को सहज भाव से ग्रहण करते है, थोडे विचार से और झझट के बिना रूखी-सूखी जो मिल जाए उसे खा लेते है, और रुपये के लिए काम करने की अपेक्षा एक पैसे मे भूखा रहना ज्यादा पसन्द करते है । यदि उसे अपने तक ही छोड दिया जाता तो वह पूरे सन्तोष के साथ जिन्दगी बिता देता, किन्तु उसकी पत्नी सदा उसके कानो मे ठनकती रहती कि उसका आलस्य और उसकी लापरवाही कुटुम्ब को विनाश के मार्ग पर ले जा रही है । सुबह, दोपहर, रात उसकी जीभ बराबर चलती ही रहती थी और रिप वान विंकल जो कुछ भी करता या कहता उसके कारण कौटुम्बिक वाग्मिता का प्रवाह फूटकर निकलना निश्चित था । इस प्रकार के व्याख्यानो का रिप बस एक ही ढग पर जवाब देता

था, और बार-बार के प्रयोग से वह उसकी आदत मे दाखिल हो गया था। वह कन्धे उचकाता, अपना सिर हिलाता, आखे चढा लेता किन्तु बोलता कुछ नही था। इससे सदा ही उसकी पत्नी को एक नया लेक्चर झाड देने की उत्ते-जना प्राप्त होती थी, यहा तक कि वह अपना दल-बल वापिस ले लेने को विवश हो घर के बाहर चला जाता था—एकमात्र दिशा जो दरअसल एक स्त्रैण पति की चीज है।

रिप का एकमात्र कौटुम्बिक अनुयायी उसका कुत्ता 'वुल्फ' (भेडिया) था, जो अपने स्वामी की भाति ही स्त्रैण था, क्योकि श्रीमती वान विकल दोनो को आलस्य का साथी मानती थी, वल्कि वह 'वुल्फ' को ही अपने स्वामी के अक्सर विपथगामी होने का कारण मानकर उसे बुरी निगाह से देखती थी। यह सच है कि एक सम्माननीय कुत्ते के योग्य आचरण के सब मुद्दो मे वह उतना ही साहसी जानवर था, जितना कभी वनो मे विचरण करता पाया गया होगा, किन्तु एक स्त्री की जिह्वा के सर्वग्राही तथा सर्वकालिक आतक के आगे कौन-सा साहस ठहर सकता है? ज्योही 'वुल्फ' घर के अन्दर प्रवेश करता उसका शिखर (सिर) झुक जाता, उसकी पूछ धरती छूने लगती या फिर उसकी टागो के बीच मुड जाती, इधर-उधर छिपता फिरता मानो फासी के चौखटे से डर गया हो, बार-बार तिरछी नजरो से श्रीमती वान विकल को देखता और झाडू या कडछी के जरा भी चमकते ही आर्त्तनादपूर्ण उतावली के साथ द्वार की ओर भाग खडा होता था।

ज्यो-ज्यो दाम्पत्य के वर्ष बीतते गए, रिप वान विंकल का समय बुरे से बुरा ही होता गया, कर्कश स्वभाव आयु के साथ कभी मृदुल नही होता, और तीखी जिह्वा ही ऐसा धारदार औजार है जो निरन्तर प्रयोग से और तेज होता जाता है। बहुत समय तक तो घर से बाहर निकलने पर विवश होकर वह अपने को सान्त्वना देने के लिए एक ऐसी गोष्ठी मे चला जाया करता था जिसमे गाव के सन्तपुरुष, दार्शनिक तथा दूसरे बेकार लोग एकत्र हुआ करते थे। इस गोष्ठी के अधिवेशन एक ऐसी छोटी सराय के सामने पडी बेच पर होते थे जिसका नाम हिज़ मेजेस्टी जार्ज तृतीय के एक अरुणाभ चित्र द्वारा व्यक्त किया गया था। यहा वे लोग लम्बे, आलस्यभरे गर्मी के पूरे दिन छाया मे बैठकर गाव के जन-प्रवाद पर प्रमादपूर्ण ढग से बाते करते या फिर असम्बद्ध अन्तहीन निद्रालु कहा-

निया सुनाते थे। किन्तु जब वहा से गुज़रते हुए किसी यात्री से कोई पुराना समाचारपत्र उनके हाथ लग जाता तब जो गभीर [illegible] उसे सुनने के लिए किसी राजनीतिज्ञ का धन सार्थक माना जा सकता था। स्कूल-मास्टर डेरिक वान बूमेल, जो एक चुस्त विद्वान नाटा आदमी था और शब्दकोश के बडे से बडे शब्द से भी हतोत्साह होनेवाला नही था, जब चबा-चबाकर उसको पढने लगता तो वे सब कैसी सजीदगी के साथ उसकी बाते सुनते थे और सार्वजनिक घटनाओ के घटित होने के चन्द महीने बाद कैसी साधुता के साथ उनपर विचार करते थे।

इस जत्थे की सम्मतिया सराय के मालिक तथा गाव के मुखिया निकोलस-वेडेर द्वारा पूर्णत नियन्त्रित होती थी। वेडेर अपनी सराय के द्वार पर सुबह से रात तक बैठा रहता था, सिर्फ सूर्य की धूप से बचने तथा बडे वृक्ष की छाया मे अपने को रखने के लिए आसन इधर-उधर हटाता था। उसके इस हटने-बढने को देखकर उसके पडोसी समय उतना ही ठीक-ठीक बता सकते थे जितना एक सूर्य घडी बताती है। यह सच है कि उसे बोलते बहुत ही कम सुना जाता था किन्तु वह अपना पाइप बराबर पीता रहता था। जो भी हो उसके अनुयायी (क्योकि हरएक महान व्यक्ति के अनुयायी तो होते ही है) उसे पूरी तरह समझते थे और जानते थे कि उसकी राय कैसे मालूम की जा सकती है। जब किसी पढी या कही बात पर वह नाराज होता था तो अपना पाइप जोर-जोर से पीने और बार-बार धुए के हलके तथा क्रुद्ध फूक छोडने लगता था, किन्तु जब खुश होता तो धीरे-धीरे एव शान्तिपूर्वक कश लेता और उन्हे हल्के एव सौम्य बादलो के रूप मे मुह से निकालता था, और कभी-कभी पाइप मुह से निकाल लेता और सुगन्धित वाष्प को अपनी नाक के इर्द-गिर्द बल खाते उठने देता तथा पूर्ण अनु-मोदन के अर्थ मे गम्भीरतापूर्वक अपना सिर हिलाता था।

इस गढ से भी अभागा रिप, अन्त मे, अपनी कर्कशा पत्नी-द्वारा भगा दिया गया। वह अकस्मात् वहा पहुचकर गोष्ठी की शान्ति भग कर देती और सब सदस्यो की अच्छी खबर लेती। वह महान पुरुष निकोलस वेडेर, तक उस भया-नक चण्डिका की जिह्वा के प्रहार से नही बच पाता था, वह सीधे उसपर दोषा-रोपण करती कि उसीने उसके पति को आलस्य की आदत लगाई है।

बेचारा रिप अन्त मे लगभग हताश हो गया, अब खेत के श्रम और अपनी पत्नी की चीख-पुकार से बचने का एक ही उपाय उसके सामने रह गया कि बन्दूक

हाथ मे लिए जगलो मे घूमता फिरे। वहा जाकर वह कभी-कभी एक वृक्ष के नीचे बैठ जाता और झोले मे जो कुछ खाने को होता उसे 'वुल्फ' के साथ बाट-कर खा लेता क्योकि वह 'वुल्फ' को सह-पीडित समझ उसके साथ सहानुभूति रखता था। वह कहता—"गरीब वुल्फ! तेरी मालकिन तुझसे कुत्ते की तरह बरतती है, परन्तु मेरे वत्स! कुछ चिन्ता न करो, जबतक मै जीवित हू तुम्हारा साथ देने के लिए मित्र का अभाव नही रहेगा।" वुल्फ अपनी पूछ हिलाता और मालिक के चेहरे की ओर उत्कण्ठापूर्वक देखता, और यदि कुत्ते दया का अनुभव कर सकने हो तो मुझे विश्वास है कि वह मालिक की भावनाओ का अपने समस्त हृदय से प्रतिदान देता।

पतझड की ऋतु के एक सुहावने दिन, इसी प्रकार के लम्बे परिभ्रमण मे रिप अजाने ही काट्सकिल पर्वतो के एक उच्चतम भाग पर पहुच गया। वह गिलहरियो को मारने की अपनी प्रिय क्रीडा के फेर मे आया था और उस भाग का शान्त एकान्त उसकी बन्दूक की आवाज से बार-बार ध्वनित एव प्रतिध्वनित हो उठता था। दोपहर के पिछले भाग मे थकावट से चूर होकर हाफते हुए वह पार्वत्य जडी-बूटियो से आच्छादित एक हरित शृग पर पड रहा। यह शृग एक कगार के ऊपर था। वृक्षो के बीच के अवकाश से वह नीचे की ओर मीलो तक फैली हुई समृद्ध वनस्थली को देख सकता था। उसने देखा कि कुछ दूरी पर उससे बहुत नीचे, शानदार हडसन नद, शान्त किन्तु गौरवपूर्ण ढग पर अपनी धुन मे बहा जा रहा है। उसमे नीलारुण बादलो की छाया प्रतिबिम्बित है, जहा-तहा उसके काच के-से सीने पर पिछडी हुई नौकाए सो रही है, अन्त मे नद स्वय नील अधित्यकाओ मे जाकर खो गया है।

फिर उसने दूसरी ओर एक ऐसी गहरी पार्वत्य द्रोणी पर निगाह डाली, जो उजाड, अकेली और रूखी थी, उसका पादभाग उठते हुए टीलो के टुकडो से भरा था और अस्तगत सूर्य की प्रतिबिम्बित किरणो से भी उसमे बहुत ही कम प्रकाश हो रहा था। रिप कुछ समय तक इस दृश्य पर विचार करता रहा, सन्ध्या धीरे-धीरे बढी आ रही थी, घाटियो पर पर्वत अपनी लम्बी छायाए फेंकने लगे थे। उसने देखा कि गाव तक पहुचने के बहुत पहिले ही अधेरा हो जाएगा। फिर जब उसे श्रीमती वान विंकल के आतक का ध्यान आया तो उसने एक लम्बी सास ली।

वह नीचे उतरने को ही था कि दूर से आती आवाज सुनाई पडी जो उसे पुकार रही थी—"रिप वान विकल ! रिप वान विकल !" उसने चारो ओर देखा किन्तु पर्वत के पार उडते एक कौवे के सिवा उसे कही कुछ दिखाई न पडा। उसने सोचा कि उसकी कल्पना ने धोखा दिया होगा इसलिए वह फिर नीचे उतरने के लिए मुडा, परन्तु इस बार फिर वही आवाज शान्त साध्य वातावरण को चीरती गूज उठी—"रिप वान विकल ! रिप वान विकल !" इसी समय वुल्फ ने अपनी पीठ कडी की और हलके से भौककर अपने मालिक के बगल मे खडा हो गया तथा भयग्रस्त हो नीचे उस तग घाटी की ओर देखने लगा। रिप को भी अब अनुभव हुआ कि उसके ऊपर एक अस्पष्ट-सा भय छाता जा रहा है। वह भी उत्सुकतापूर्वक उसी दिशा मे देख रहा था। उसने देखा कि एक विचित्र मूर्ति धीरे-धीरे टीलो पर चढ रही है और कोई चीज जो वह अपनी पीठ पर लादे हुए है, उसके बोझ से झुकी जा रही है। इस एकान्त एव निर्जन स्थान मे किसी आदमी को देखकर उसे आश्चर्य हुआ, परन्तु यह समझकर कि पडोस का ही कोई आदमी होगा जिसे उसकी सहायता की जरूरत होगी, वह सहायता पहुचाने के विचार से तेजी के साथ नीचे की ओर बढा।

कुछ और निकट पहुचने पर वह अजनबी का विचित्र चेहरा-मोहरा देखकर चकित हो उठा। वह एक नाटा, वर्गाकार-निर्मित बूढा था, जिसके बाल गुच्छेदार और घने थे और दाढी धूसर थी। उसकी पोशाक प्राचीन डच फैशन की थी—कपडे का एक जर्किन कमर के चारो ओर लिपटा था। वह कई जोडी बिरजिस पहिने था जिसमे बाहरवाली बहुत वडे आयतन की थी जिसमे बगल की ओर बटनो की कई पक्तिया थी और घुटनो के पास गुच्छक लगे हुए थे। वह कधे पर एक बडा पीपा लिए हुए था, जिसमे मदिरा भरी हुई लगती थी। वह रिप को आगे बढकर उसके बोझ के वहन मे मदद देने के लिए इशारा कर रहा था। इस नये परिचय के प्रति सकोची एव अविश्वासपूर्ण होने पर भी रिप ने अपनी स्वाभाविक फुर्ती के साथ उसके अनुरोध का पालन किया। बारी-बारी से उस बोझ को उठाते हुए वे एक सकरे नाले की राह ऊपर की ओर चले। यह नाला किसी पहाडी धारा की शुष्कस्थली था। जब वे चढते जा रहे थे तो रह-रहकर रिप को, दूरागत विद्युत्गर्जन की भाति, विलम्बित और घुमडती हुई आवाज सुनाई पडती थी, जो ऊची शिलाओ के बीच के किसी गहरे खड्ड, बल्कि

दरार से निकलकर आती प्रतीत होती थी। यह आवाज उसी दिशा से आ रही थी जिधर उन्हे उनका ऊबड-खाबड मार्ग ले जा रहा था। वह क्षणभर के लिए रुका परन्तु यह समझकर कि शायद यह उन क्षणस्थायी तडित् झझाओ मे से किसी एक की ध्वनि होगी जो बहुधा पर्वतीय ऊचाइयो पर देखी जाती है, वह आगे बढ चला। खड्ड को पार कर वे, लघु वृत्ताकार रगभूमि-जैसे रिक्त स्थान पर पहुचे। यह स्थान चतुर्दिक् सीधी खडी कगारो से घिरा हुआ था। इन कगारो के किनारो पर बहुत से पेड उग आए थे, जिनकी शाखाए इधर-उधर फैल गई थी। इनके कारण नीलाकाश एव दीप्तिमय सान्ध्य जलद-पटल की केवल झाकिया भर मिलती थी। इस सारे समय मे रिप और उसका साथी मौन रहकर ही अपना काम करते रहे थ, क्योकि यद्यपि रिप को बहुत अधिक कुतूहल हो रहा रहा था कि इस निर्जन पर्वत पर मदिरा-भाण्ड ले आने का क्या अभिप्राय हो सकता है, फिर भी उस अज्ञात साथी मे कोई ऐसी विचित्र एव अज्ञेय बात थी जो आतक पैदा करती और घनिष्ठता मे बाधा देती थी।

उस रगभूमि मे प्रवेश करने पर आश्चर्य के नवीन पदार्थो पर निगाह पडी। मध्य मे चौरस भूमि पर विचित्र-से दीखने वाले कुछ आदमी बैठे 'नाइनपिन्स' नामक खेल खेल रहे थे। उनकी पोशाक विचित्र और विदेशी ढग की थी, कुछ छोटे कुर्ते पहिने हुए थे, कुछ औरो ने जर्किने पहिन रखी थी और इन जर्किनो के साथ जो पेटिया बधी थी उनमे लम्बे छुरे लगे हुए थे। अधिकाश बडी-बडी बिरजिस पहिने हुए थे जो देखने मे साथी पथदर्शक की बिरजिस-जैसी ही थी। उनके चेहरे-मोहरे भी अजीब थे, एक के लम्बी दाढी, चौडा चेहरा और छोटी, शूकरी आखे थी, दूसरे के चेहरे पर सिर्फ नाक ही दिखाई पडती थी, उसने लाल मुर्ग के पख से युक्त विचित्र-सा हैट पहिन रखा था। सभी की विविध प्रकार और रग की दाढिया थी। उनमे एक ऐसा था जो उनका नायक जान पडता था। वह एक चुस्त वृद्ध भद्रपुरुष था जिसके चेहरे पर ऋतुओ के प्रहार के चिह्न थे। वह गोटदार कुर्ता, चौडी बेल्ट, ऊचा हैट एव पख, लाल जुर्राब तथा ऊची एडी के जूते पहिने हुए था। इन जूतो मे गुलाब लगे हुए थे। इस सारी मण्डली को देखकर रिप को एक प्राचीन फ्लेमिश चित्र मे बने आदमियो की याद आ गई। उसने वह चित्र ग्राम-पुरोहित डोमिनी वॉन शायक के बैठकखाने मे देखा था, और वह बस्ती के निर्माण के ज़माने मे हालैण्ड से लाया

गया था।

जो बात रिप को विशेष रूप से अनोखी लगी, वह यह थी कि यद्यपि ये लोग स्पष्टत अपना मनोरजन कर रहे थे, फिर भी वे चेहरे को बडा गम्भीर बनाए हुए थे, अत्यन्त रहस्यमय रूप से मौन थे तथा आजतक उसने ऐसी जितनी भी मण्डलिया देखी थी, उनमे यह सुखोपभोग करनेवाली सबसे अधिक विषादाच्छन्न मण्डली थी। दृश्य की निस्तब्धता, उन गेदो की ध्वनि के सिवा और कोई चीज भग नही कर पाती थी जो लुढकाने पर पहाडो से टकराकर विद्युत्गर्जन-जैसी गडगडाहट उत्पन्न करती थी।

ज्योही रिप साथी को लिए उनके पास पहुचा, उन्होने सहसा खेल बन्द कर दिया, और ऐसी स्थिर, प्रतिमोपम दृष्टि तथा ऐसे विचित्र, अशोभन, आभारहित चेहरो से उसकी ओर देखा कि उसका हृदय अन्दर ही अन्दर बैठ गया और उसके घुटने एक साथ खिच गए। अब उसके साथी ने पीपे की चीज बडे-बडे पानपात्रो मे उडेल दी, और उसे मण्डली की खिदमत करने का इशारा किया। उसने भय और कम्पन के साथ आज्ञा का पालन किया, वे लोग गहरे मौन के साथ मदिरा गट-गट पी गए, और फिर अपने खेल मे लग गए।

धीरे-धीरे रिप के मन से आतक और भय दूर हो गया। उसने यहा तक साहस किया कि जब कोई उसकी ओर देख नही रहा था, मदिरा चख ली जिसमे उसे हालैण्ड की बढिया मदिराओ की सुगन्ध प्राप्त हुई। स्वभावत वह प्यासा मानव था इसलिए शीघ्र ही पुन घूट लेने का प्रलोभन उसके मन मे पैदा हुआ। एक चखने से दूसरे चखने को उत्तेजना मिलती रही और उसने पानपात्र से इतनी बार भेट की कि अन्त मे उसकी चेतना दब गई, उसकी आखे कपार पर चढ गई, उसका सिर शनै-शनै नीचे झुकता गया और वह गहरी नीद मे सो गया।

जगने पर उसने अपने को उसी हरित शृग पर पाया जहा से उसने पहली बार द्रोणी या सकरी घाटी मे उस बूढे को देखा था। उसने अपनी आखे मलकर देखा—सूर्यरश्मिया फैली हुई है, प्रकाशमान प्रभात हो गया है। झाडियो मे चिडिया फुदक और चहक रही है, गृध्र आकाश मे ऊचे उड रहे है और शुद्ध पहाडी हवा मे तैर रहे है। रिप ने सोचा—"निश्चय ही, मै सारी रात तो यहा सोता नही रहा हू।" तब उसे नीद मे डूबने के पहले की घटनाए याद आने लगी। मदिरा का पीपा लिए वह विचित्र आदमी, वह पर्वतीय खड्ड, चट्टानो

के बीच का वह निर्जन विश्राम-स्थल, नाइनपिन्स खेलनेवाली वह मनहूस मण्डली, पानपात्र—'ओ वह पानपात्र! वह दुष्ट पानपात्र!' रिप सोचने लगा—"मैं श्रीमती वान विकल से क्या बहाना करूगा ?"

उसने अपनी बन्दूक के लिए इधर-उधर निगाह डाली परन्तु स्वच्छ, तैलसिक्त शिकारी बन्दूक की जगह उसे एक पुरानी चकमकी बन्दूक अपने पास पडी दिखाई दी, उसकी नली पर जग जमी हुई थी, घोडा गिर-गिर जाता था और कुन्दा कीडे खा गए थे। अब उसे सन्देह हुआ कि पहाड के उन दुष्ट विनोदियो ने उसके साथ धोखा किया है और उसे मदिरा पिलाकर उसकी बन्दूक चुरा ली है। 'वुल्फ' भी लापता था किन्तु वह शायद किसी गिलहरी या तीतर के फेर मे इधर-उधर चला गया होगा। उसने सीटी बजाई उसका नाम लेकर पुकारा, किन्तु सब व्यर्थ गया, उसकी सीटी और पुकार प्रतिध्वनित होकर रह गई, किन्तु कोई कुत्ता नही दिखाई पडा।

उसने पिछली शाम के प्रमोदस्थल तक पुन जाने, और वहा यदि मण्डली का कोई आदमी मिल जाए तो उससे अपना कुत्ता और बन्दूक वापिस मागने का निश्चय किया। जब वह चलने के लिए उठा तो देखा कि उसकी गाठे कडी पड गई है और उसमे स्वाभाविक क्रियाशीलता का अभाव है। रिप ने सोचा—"ये पहाडी तल मुझे अनुकूल नही पडते। किन्तु यदि इस आमोद प्रमोद के कारण मुझपर गठिया का आक्रमण हो गया तब फिर श्रीमती वान विंकल से खूब प्रसादी मिला करेगी।" कुछ कठिनाई के साथ वह द्रोणी मे उतरा, उसे वह ऊपर जाने वाला नाले का रास्ता मिल गया जिससे वह और उसका साथी पिछली सध्या को ऊपर चढे थे, परन्तु यह देखकर उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा कि वहा एक पर्वतीय जलधारा उमड रही है और चट्टान-चट्टान पर कूदती-उछलती खड्ड को अपनी कल-कल ध्वनि से गुजित कर रही है। अब उसने कुछ हटकर किनारे-किनारे ऊपर जाना शुरू किया और वेत्र, गन्धवल्क तथा पिंगल वृक्ष की झुरमुटो के बीच से अपना कठिन और श्रमकारी रास्ता बनाया। इसमे भी एक वृक्ष से दूसरे वृक्ष पर फैली वन्य द्राक्षालताओ की टहनियो वा कुण्डलिकाओ के कारण, जिन्होने उसके पथ पर एक जाल-सा बिछा रखा था, वह फस-फस जाता था।

अन्त मे वह उस स्थान पर पहुचा जहा खड्ड दरारो के द्वारा रगभूमि मे खुलती थी, किन्तु वहा तो किसी द्वार या राह का कोई चिह्न ही न रह गया

था। चट्टाने, ऊची, अगम्य दीवार की भाति खडी थी और उस दीवार से प्रपात हलके फेन की चादर-सा फैलाता नीचे एक ऐसी चौडी और गहरी जलद्रोणी मे गिर रहा था जो चतुर्दिक् की वन-छाया से अधेरी हो रही थी। यहा आकर बेचारे रिप को रुक जाना पडा। उसने फिर कुत्ते को पुकारा और उसके लिए सीटी बजाई किन्तु एक सूर्यालोकित कगार पर लटके एक सूखे वृक्ष के आसपास ऊपर की ओर मड-राते काक-वृन्द की काव-काव के सिवा उसका कोई उत्तर न मिला। ऐसा जान पडता था कि उस ऊचाई पर अपने को सुरक्षित अनुभव करने के कारण वे सब उस गरीब की परेशानियो का उपहास कर रहे थे। अब क्या किया जाए ? प्रभात काल समाप्त हुआ जा रहा का और नाश्ते के अभाव मे रिप क्षुधार्त्त हो रहा था। उसे अपना कुत्ता और बन्दूक चली जाने का दु ख था, वह अपनी पत्नी से मिलने मे डरता था। किन्तु पहाडो के बीच भूखे मरने से भी तो काम नही चल सकता। उसने अपने सिर को झटका दिया, जग लगी चकमकी बन्दूक को कधे पर रखा और सकट तथा चिन्ताग्रस्त हृदय के साथ मुडकर घर की ओर चला।

जब वह गाव के निकट पहुचा, उसे बहुत से लोग मिले किन्तु उनमे एक भी ऐसा न था जिसे वह जानता हो। इससे उसे कुछ आश्चर्य हुआ क्योकि वह समझता था कि आसपास के प्राय सभी लोगो को जानता है। उन लोगो की पोशाके भी उनसे भिन्न शैली की थी जिनसे वह परिचित था। वे सब लोग भी उसी तरह आश्चर्यपूर्वक उसकी ओर ताक रहे थे। और वे जब भी उस पर अपनी निगाहे डालते तब निश्चित रूप से अपनी ठोडियो पर अचरज से हाथ रखते थे। बार-बार यह बात देखकर रिप ने भी अनिच्छापूर्वक वैसा ही किया और यह देखकर विस्मित हो गया कि उसकी दाढी बढकर एक फुट लम्बी हो गई है।

अब वह गाव की सीमा मे आ गया था। चित्र-विचित्र बच्चो की एक टोली उसके पीछे दौड पडी। वे लू-लू करते उसे पछियाये आ रहे थे और उसकी भूरी दाढी की ओर सकेत करते थे। बहुत-से कुत्ते भी, जिनमे से एक को भी वह पहिचानता न था, उसे गुजरते देख भौकने लगे। गाव ही बदल गया था, यह पहले से बडा और अधिक आबादी वाला था। उसमे ऐसे मकानो की कतार की कतार थी जिन्हे उसने कभी न देखा था, और जो उसके परिचित आश्रयस्थल थे, गायब हो गए थे। दरवाजो पर विचित्र-विचित्र नाम लिखे थे, खिडकियो मे विचित्र शक्ले दिखाई पडती थी, वहा का सब कुछ विचित्र था। अब उसका

सिर चकराने लगा, उसे सन्देह होने लगा कि कही वह और उसके चारो ओर की दुनिया किसी जादू का शिकार तो नही हो गए है। इसमे तो कोई सन्देह नही था कि यही उसका अपना गाव है, जिसे वह एक दिन पहले ही छोडकर गया था। काट्सकिल पर्वतमाला वैसी ही खडी है, कुछ दूरी पर रजतवर्ण हडसन-नद वैसे ही बह रहा है, हर एक पहाडी और घाटी ठीक उसी तरह है, जैसी सदा रही है। रिप बुरी तरह परेशान हो उठा। उसने सोचा—"बस, कल रात की मदिरा ने मेरे दुर्बल मस्तिष्क को बुरी तरह द्विधाग्रस्त कर दिया है।"

कुछ कठिनाई से वह अपने घर की ओर जानेवाले मार्ग का पता लगा सका। मौन आतक के साथ वह उसकी ओर गया, हर क्षण वह श्रीमती वान विकल की तीखी आवाज सुनने की आशा कर रहा था। किन्तु उसने देखा कि मकान ध्वस्त हो गया है, छत गिर पडी है, खिडकिया टूट गई है और दरवाजे कब्जो से अलग हो गए है। 'वुल्फ'—जैसा दीख पडनेवाला एक अधभूखा कुत्ता दुबका-दुबका फिर रहा था। रिप ने उसे नाम से पुकारा पर वह दुष्ट गुर्राने लगा और दात दिखाकर वहा से चला गया। यह बडा निर्दय प्रहार था। गरीब रिप ने नि श्वास लेकर कहा—"मेरा कुत्ता भी मुझे भूल गया!"

उसने उस मकान मे प्रवेश किया, जिसे सच्ची बात कहे तो, श्रीमती वान विकल सदा स्वच्छ एव व्यवस्थित रखती थी। वह रिक्त, दयनीय और स्पष्टत ही परित्यक्त था। इस सुनसान ने उसके सम्पूर्ण दाम्पत्य भय को दबा दिया—उसने चिल्लाकर अपनी पत्नी और बच्चो को आवाज दी, निर्जन कमरे क्षण-भर के लिए उसकी आवाज से गूजे, और फिर सब कुछ नीरव हो गया।

अब वह शीघ्रता के साथ, तेज चाल से अपने पुराने आश्रयस्थल, गाव की सराय की ओर चला। परन्तु उसका भी लोप हो चुका था। उसके स्थान पर एक बडी, जीर्ण, काठ की इमारत खडी थी। उसमे बडी-बडी, बीच मे खाली, खिडकिया बनी थी, जिनमे से कुछ टूट चुकी थी और कुछ पर पुराने हैट या पेटीकोट बाध दिए गए थे। दरवाजे के ऊपर पेंट किया हुआ था—"जोनाथन डूलिटिल का यूनियन होटल।" वह विशाल वृक्ष, जो पूर्वकाल की शान्त, छोटी डच सराय को आश्रय एव छाया प्रदान किया करता था, अब वहा नही था और उसकी जगह एक लम्बा, नगा, खम्भा खडा था, जिसके सिरे पर लाल नाइटकैप-सी दिखनेवाली कोई चीज थी और उससे निकलकर एक झण्डा लहरा रहा था।

झण्डे पर बहुत से सितारे और पट्टिया बनी थी। ये सारी बाते विचित्र और अचिन्त्य थी। फिर भी उसने निशान पर बादशाह जार्ज के लालिमायुक्त चेहरे को पहिचान लिया। इसी के नीचे उसने कितनी ही बार शान्ति के साथ पाइप के कश लिए थे, पर वह भी बहुत बुरी तरह बदल गया था। लाल वश-चिह्न नील एव हलका पीत हो गया था, राजदण्ड की जगह हाथ मे तलवार थी, सिर पर तिरछा हैट था तथा चित्र के नीचे बडे-बडे अक्षरो मे लिखा था—'जनरल वाशिंगटन।'

सदैव की भाति इस समय भी दरवाजे पर लोगो की भीड थी किन्तु उनमे एक भी ऐसा न था जिसको रिप पहिचान सकता हो। लोगो की प्रकृति तक बदल गई थी। अभ्यस्त, उदासी एव तन्द्रिल शान्ति के स्थान पर वहा एक व्यस्त, कोलाहलपूर्ण और विवादग्रस्त वातावरण था। उस साधु निकोलस वेडेर का कही पता न था जो निरर्थक वक्तृताए देने के बदले अपने चौडे चेहरे, दोहरे चिबुक और सुन्दर लम्बे पाइप के साथ धुए के बादल बनाया करता था, न कही स्कूल-मास्टर वान बूमेल ही दिखाई पडता था जो किसी प्राचीन समाचारपत्र के विषयो को सुना रहा हो। इनकी जगह एक दुबला, पित्त रोग-ग्रस्त-सा आदमी, जिसकी जेबे विज्ञप्तियो से भरी हुई थी, बडे जोर-शोर के साथ नागरिको के अधिकार, निर्वाचन, काग्रेस के सदस्यो, स्वतन्त्रता, बकर पहाडी के छिहत्तर वीरो के विषय मे तथा इसी तरह के अन्य शब्द बोल रहा था, जो बैबिलोनी भाषा की तरह आश्चर्यचकित वान विकल की समझ के बाहर थे।

लम्बी धूसर दाढी, जगदार शिकारी बन्दूक तथा बेढगी पोशाक के साथ रिप और उसके पीछे लगे औरतो-बच्चो के झुण्ड को देखकर शीघ्र ही सराय के राजनीतिज्ञो का ध्यान उधर गया। उन्होने आकर उसे घेर लिया और सिर से पैर तक उसे बडी उत्सुकता के साथ देखने लगे। तब वक्ता भी उसके साथ चला आया और उसे ज़रा एक तरफ ले जाकर पूछा—"तुमने किसकी तरफ वोट दिया?" रिप शून्य मूर्खता के साथ उसकी ओर देखता रहा। अब एक दूसरे नाटे परन्तु व्यस्त आदमी ने बाह पकडकर उसे अपनी ओर खीच लिया और अगूठे के बल खडा होकर उसके कान मे पूछा—"फेडरल (सघीय) हो या डेमोक्रैट (लोकतत्र-वादी)?" रिप अब भी उसी तरह प्रश्न का अर्थ समझने मे असमर्थ रहा। यह देखकर एक जानकार, आत्मगर्वित वृद्ध सज्जन तिरछी टोपी लगाए हुए, भीड

मे से राह बनाते और लोगो को अपनी कुहनियो से दाहिने-बाए हटाते हुए आए, उन्होने अपने को वान विकल के सामने स्थापित किया और एक हाथ कुहनी निकाले कमर पर तथा दूसरा अपनी बेत पर रखे हुए, अपने तीक्ष्ण नयनो तथा हैट को उसकी आत्मा मे प्रविष्ट करते-से कर्कश स्वर मे बोले—"तुम अपने कधे पर बन्दूक और अपने पीछे भीड लिए हुए निर्वाचन मे कैसे चले आए ? क्या तुम गाव मे दगा कराना चाहते हो ?" रिप ने कुछ त्रासपूर्वक, चिल्लाकर कहा—"हाय ! सज्जनो ! मै एक गरीब शान्त आदमी हू, इसी जगह का निवासी और बादशाह की एक वफादार प्रजा हू । ईश्वर उनपर कृपा करे !"

आस-पास खडे लोग एक साथ चिल्ला उठे—"टोरी (प्रतिक्रियावादी) है ! टोरी है ! भगोडा है ! इसे हटाओ ! इसे दूर करो ।" बडी कठिनाई से उस आत्मगर्वित आदमी ने शान्ति स्थापित की और अपनी भौहो पर दसगुनी कठोरता लाकर फिर उस अज्ञात अपराधी से पूछा कि वह वहा क्यो आया है और किसे खोज रहा है ? गरीब रिप ने विनम्रतापूर्वक विश्वास दिलाया कि उसका इरादा किसीको नुकसान पहुचाने का नही है और वह यहा अपने कुछ ऐसे पडोसियो की तलाश करने आया है जो सराय के निकट बैठा करते थे ।

"तो, कौन है वे ? उनके नाम बताओ ।"

रिप ने एक मिनट मन मे कुछ सोचा, फिर पूछा—"निकोलस वेडेर कहा है ?"

कुछ देर के लिए वहा नीरवता छा गई, उसके बाद किसीने पतली सुरीली आवाज़ मे कहा—"निकोलम वेडेर ! अरे वह तो अठारह वर्ष हुए मर गया ! चर्च के अहाते मे एक कब्र पर एक लकडी का तख्ता लगा था, जिससे उसके बारे मे ये बाते मालूम हुई थी परन्तु अब वह भी नष्ट होकर समाप्त हो गया है।"

"ब्राम डचर कहा है ?"

"ओह ! युद्ध के आरम्भ मे ही वह फौज मे चला गया । कुछ कहते है कि वह 'स्टोनी प्वाइण्ट' के आक्रमण मे मारा गया, दूसरे बताते है कि 'एण्टोनीज नोज़' के पादतल मे किसी तूफान मे डूब गया । मै नही जानता—वह फिर लौटकर नही आया ।"

"और स्कूलमास्टर वान बूमेल कहा है ?"

"वह भी युद्ध मे चला गया था, और वह महान सेनानायक सिद्ध हुआ ।

अब वह कांग्रेस मे है ।"

अपने गाव और मित्रो के विषय मे ये शोकजनक परिवर्तन सुनकर तथा अपने को ससार मे अकेला पाकर रिप का हृदय बैठ गया। प्रत्येक उत्तर से उसकी परेशानी बढ रही थी क्योकि उसमे इतना अधिक काल बीत जाने की बात होती थी या फिर ऐसी बातो का उल्लेख होता था जिन्हे वह समझ नही पाता था—युद्ध, कांग्रेस स्टोनी प्वाइण्ट। अब उसे किसी अन्य मित्र के बारे मे पूछने का साहस नही हुआ परन्तु गहरी निराशा मे वह चीख पडा—"क्या यहा कोई रिप वान विंकल को नही जानता ?"

दो-तीन आदमी बोल पडे—"अरे, रिप वान विंकल ! निश्चय ही रिप वान विंकल उधर उस पेड पर झुका हुआ है ?"

रिप ने उधर नजर उठाई और अपना ठीक वही प्रतिरूप देखा जिस तरह कि वह पर्वत पर गया था, वैसा ही आलसी और वैसा ही फटेहाल ! अब तो उसकी अक्ल बिल्कुल गुम हो गई। उसे अपने ही बारे मे सन्देह होने लगा—वह स्वय है या कोई दूसरा आदमी है ? जब वह इस तरह चकित और परेशान था, तिरछे हैटवाले आदमी ने पूछा--"तुम कौन हो और तुम्हारा नाम क्या है ?"

हतबुद्धि-सा वह बोला—"ईश्वर जाने। मै स्वय नही हू, मै कोई दूसरा आदमी हू—मै तो वहा हू, नही, मेरी शक्ल मे वह कोई दूसरा है। पिछली रात मैं स्वय ही था, किन्तु मै पहाड पर निद्रामग्न हो गया, और उन्होने मेरी बन्दूक बदल ले ली, अब तो हर चीज बदल गई है, मै भी बदल गया हू, और मै नही बता सकता कि मेरा नाम क्या है, और मै कौन हू ।"

खडे लोग एक-दूसरे की ओर देखने, सिर हिलाने तथा अभिप्रायपूर्वक आखे मारने और उगलियो से कपार ठोकने लगे। इस बात के लिए भी कानाफूसी होने लगी कि बन्दूक इससे ले ली जाए जिससे बुड्ढा कोई शरारत न कर सके। यह सुनते ही टेढी टोपीवाला आत्मवर्गी कुछ हडबडी के साथ हट गया। इस कठिन समय पर एक नई, मनोरम नारी धूसरदाढी वाले आदमी को देखने के लिए भीड को चीरती आ गई। वह अपनी गोद मे एक मोटा-ताजा बच्चा भी लिए हुए थी, जो बूढे को देखते ही डरकर रोने लगा। औरत चीख पडी—"चुप रिप मूर्ख ! बूढा तुम्हे मारेगा नही ।" बच्चे के नाम, मा के ढग, उसकी आवाज की ध्वनि, सबने उसके मन मे स्मृतियो की एक शृखला जगा दी। उसने

पूछा—"भली औरत, तुम्हारा नाम क्या है ?"

"जूडिथ गार्डेनियर ।"

"और तुम्हारे पिता का नाम ?"

"ओह गरीब आदमी ! उसका नाम था रिप वान विंकल, किन्तु बीस वर्ष हो गए जब वह घर से अपनी बन्दूक लेकर बाहर गया था और तबसे उसकी कोई खबर नही मिली है—उसका कुत्ता, उसके बिना ही, घर वापिस आ गया, परन्तु कोई नही बता सकता कि उसने अपने को गोली मार ली या इण्डियन लोग उसे उठा ले गए। उस समय मै बहुत छोटी थी ।"

अब रिप को सिर्फ एक और सवाल पूछना रह गया था, किन्तु उसने उसे लडखडाती आवाज मे पूछा—

"तुम्हारी मा कहा है ?"

"हाय, वह भी कुछ समय बाद ही मर गई। एक न्यू इगलैण्ड के फेरीवाले पर क्रोध के दौरे मे उसकी एक रक्तवाहिनी फट गई थी।"

इस सूचना मे कम से कम राहत की एक बूद तो थी। अब वह ईमानदार आदमी अपने को रोक न सका। उसने अपनी कन्या और उसके बच्चे को बाहो मे भर लिया और चिल्ला पडा—"मै हू तुम्हारा पिता—जो एक दिन तरुण रिप वॉन विंकल था, अब बूढा रिप वान विंकल है। क्या कोई बेचारे रिप वान विंकल को नही जानता ?"

सब लोग हैरत मे खडे थे, तब एक बूढी औरत भीड मे से निकल आई, और भौंह पर एक हाथ रखकर उसके नीचे से क्षणभर बूढे के मुख की ओर झाकती हुई बोली—"बिल्कुल निश्चित ! यह रिप वान विंकल है—हा वही है ! पुराने पडोसी ! घर मे पुन तुम्हारा स्वागत है ! कहा, तुम इन बीस वर्षों तक कहा थे ?"

रिप ने अपनी कहानी सुना दी, कहानी छोटी थी क्योकि ये सारे बीस वर्ष उसके लिए एक रात के बराबर थे। पडोसी सुनकर हैरत मे आ गए, कुछ दूसरे को आखे मारते दिखाई पडे, उनका मुह खुला रह गया। तिरछी टोपीवाला आत्मगर्वी, झगडे की सम्भावना दूर हो जाने पर लौट आया था। अब अपने मुह के छोर उठाकर उसने सिर हिलाया, जिस पर सारी भीड सिर हिलाने लगी।

निश्चय यह हुआ कि बूढे पीटर वाण्डरडोक की सलाह ली जाए जो धीरे-

धीरे सडक से आता हुआ दिखाई पड रहा था। वह उसी नाम के एक इतिहासकार का, जिसने प्रान्त का एक सबसे पुराना विवरण लिखा था, वशज था। पीटर उस गाव का सबसे पुराना निवासी था और पास-पडोस की सम्पूर्ण परम्पराओ तथा अद्भुत घटनाओ की जानकारी रखता था। उसने तुरन्त ही रिप को पहिचान लिया और बडे ही सन्तोषजनक रूप मे उसकी कहानी का समर्थन किया। उसने मण्डली को विश्वास दिलाया कि यह एक तथ्य है, "जो मेरे इतिहासकार पूर्वज के समय से हमारे वश के लोगो को बताया जाता रहा है कि काटसकिल पर्वतो मे विचित्रात्माए आती रहती है। यह भी सिद्ध हो चुका है कि नदी एव प्रदेश के प्रथम अन्वेषक महान हेण्ड्रिक हडसन उनपर प्रति बीस वर्ष मे एक बार चौकसी के लिए, अपने अर्द्धचन्द्र की टोली लिए आते है। इस प्रकार उन्हे अपने साहस के दृश्यो को आकर पुन देखने और अपने नाम से पुकारे जाने वाले नद एव महानगर पर रक्षा की दृष्टि रखने के लिए अनुमति प्राप्त है। मेरे पिता ने भी उन्हे पर्वत की एक खोह मे प्राचीन डच वस्त्रो मे नाइनपिन्स का खेल खेलते हुए देखा था। और स्वय मैने भी ग्रीष्म ऋतु मे एक दिन दुपहरिया मे विद्युत्गर्जन-माला की भाति उनकी गेदो की आवाज सुनी थी।"

लम्बी कहानी को सक्षेप मे कहे तो इसके बाद भीड छट गई और निर्वाचन के अधिक महत्त्वपूर्ण विषय की ओर लौट गई। रिप की कन्या पिता को अपने साथ रहने के लिए घर ले गई। उसका घर काफी बडा और सुसज्जित था और उसका पति एक बलवान खुशदिल किसान था। रिप को याद आ गया कि यह उसकी पीठ पर सवारी करनेवाले लडको मे से एक था। जहा तक रिप के पुत्र एव उत्तराधिकारी की बात है, और जिसे उसने अपने ही प्रतिरूप की भाति वृक्ष पर झुके हुए देखा था, उसे खेत पर काम करने के लिए नियुक्त किया गया था, किन्तु उसमे भी, अपनी पैतृक परम्परा के अनुसार, अपने काम के अतिरिक्त और सब काम करने की प्रवृत्ति थी।

अब रिप ने अपना पुराना सैर-सपाटा और आदते फिर शुरू कर दी, शीघ्र ही उसने अपने पहले के अनेक घनिष्ठ मित्रो को खोज लिया, सभी काल के आघात के कारण बुरी हालत मे थे। इसलिए उसने तरुण पीढी के लोगो से दोस्ती करनी शुरू की और जल्द ही उनमे लोकप्रिय हो गया।

उसे घर पर तो कोई काम-काज रहता नही था, फिर अब वह उस सुखी

आयु की सीमा पर पहुच चुका था जब आदमी क्षति की आशका के बिना ही बेकार रह सकता है। अब उसने पुन सराय के द्वार के पास बेच पर आसन जमाया और लोग गाव के एक बुजुर्ग और सरक्षक तथा "युद्ध के पहले" के युग की गाथा के रूप मे उसपर श्रद्धा करने लगे। कुछ समय बाद उसकी नियमित गप-शप चलने लगी और उसकी निद्रावस्था मे जो विचित्र घटनाए घटी थी, उनकी जानकारी उसे हुई। इस निद्राकाल मे एक क्रान्तिकारी युद्ध हुआ, और देश ने पुराने इग्लैण्ड के जुए को गले से उतार फेका और अब वह सम्राट् जार्ज तृतीय की एक प्रजा नही, सयुक्त राज्य (युनाइटेड स्टेट्स) का स्वतन्त्र नागरिक है। सच पूछो तो रिप कोई राजनीतिज्ञ नही था, राज्यो एव साम्राज्यो के परिवर्तन का उसपर कोई विशेष प्रभाव नही पडता था किन्तु निरकुश शासन—नारी राज की एक प्रणाली के अन्दर वह बहुत दिनो से कराह रहा था। खुशी की बात है कि उसका अन्त हो गया, दाम्पत्य के जुए से अब उसकी गर्दन मुक्त हो चुकी थी, और अब वह श्रीमती वान विकल के अत्याचार से भयभीत हुए बिना जहा चाहे जा सकता था। फिर भी जब कभी उसका नाम लिया जाता, वह अपना सिर हिला देता, खवे हिलाता और आखे चढा देता था। इसे अपने भाग्य के प्रति आत्मसमर्पण की अभिव्यक्ति भी समझा जा सकता था और अपनी मुक्ति के प्रति हर्ष का उद्गार भी माना जा सकता था।

मि० डूलिटिल के होटल मे आने वाले प्रत्येक अजनबी को वह अपनी कहानी सुनाता था। शुरू मे लोगो ने ध्यान दिया कि हर बार जब वह अपनी कहानी सुनाता उसमे कुछ न कुछ भिन्नता होती थी—निश्चित रूप से इसका कारण यही था कि वह हाल मे ही सोते से जग पडा था। अन्त मे उस कहानी का वही रूप स्थिर हो गया जो हमने बयान किया है। पास-पडोस मे एक भी आदमी, औरत या बच्चा ऐसा नही था जिसे वह जबानी याद न हो। कुछ लोग सदा ही कहानी की यथार्थता मे सन्देह का बहाना करते और जोर देकर कहते रहते थे कि रिप का दिमाग खराब हो गया था और ऐसे मुद्दे पर वह सदा ही कल्पनाशील रहता आया था। किन्तु जितने भी पुराने डच निवासी थे वे उसे पूर्णत सत्य समझते थे। आज तक काट्सकिल पर किसी ग्रीष्मकालिक दुपहरिया मे उन्हे विद्युत्ध्वनि नही सुनाई पडती किन्तु फिर भी वे कहते है कि हेण्ड्रिक हडसन और उनकी मण्डली नाइनपिन्स का खेल खेल रही है और पास-पडोस के सभी स्त्रैण

पतियो के मन मे यह इच्छा उत्पन्न होती है कि जब जिन्दगी उनपर बोझ हो रही हो तब वे रिप वान विंकल के पानपात्र से एक शान्तिकारिणी घूट पी ले।

टिप्पणी

किसीको सन्देह हो सकता है कि शायद श्री निकरबोकर को सम्राट् फ्रेडरिक डेर रोथबार्ट एव काईफाउजेर पर्वत-विषयक लघु जर्मन प्रवाद से उपर्युक्त कथा लिखने का विचार आया होगा। किन्तु उन्होने कथा के साथ जो निम्नलिखित टिप्पणी जोड दी है उससे पता लगता है कि यह बिल्कुल सच्ची घटना है और अपनी सहज ईमानदारी के साथ उन्होने इसका बयान किया है—

बहुतो को रिप वान विंकल की कहानी अविश्वसनीय मालूम होगी, किन्तु मुझे उसमे पूरा विश्वास है, क्योकि मै जानता हू कि हमारी पुरानी डच बस्तियो के आस-पडोस मे चमत्कारपूर्ण घटनाए होती रही है और विचित्र शक्ले दिखाई पडती रही है। मैने तो हडसन के तट के गावो मे इससे भी आश्चर्य-जनक कितनी ही कहानिया सुनी है, और वे इतनी प्रमाणपूर्ण थी कि उनके विषय मे किसी प्रकार का सन्देह नही किया जा सकना। मैने खुद रिप वान विंकल तक से बाते की है। जब मैने पिछली बार उसे देखा था, तो वह बडा ही श्रद्धेय और वृद्ध हो गया था तथा इतना तर्कसगत एव हर बात मे सगति रखनेवाला लगता था कि मै समझता हू, कोई ईमानदार आदमी इस पर विश्वास किये बिना रह नही सकता। इतना ही नही, मैंने इस विषय पर एक ऐसा प्रमाणपत्र भी देखा है जो एक ग्राम्य न्यायाधीश के सामने लिया गया था। इस प्रमाणपत्र पर क्रूस की छाप के साथ न्यायाधीश ने अपने हाथ से हस्ताक्षर किया है। इसलिए कहानी किसी भी प्रकार के सन्देह के परे है।

"डी० के०"

अनुलेख

नीचे श्री निकरबोकर की एक ज्ञापन-पुस्तिका से यात्रा-सम्बन्धी कुछ टिप्प-णिया उद्धृत की जा रही है —

काट्सबर्ग, अथवा कैट्सकिल पर्वतमाला, सदैव कहानी-किस्सो से भरा प्रदेश रहा है। इण्डियन लोग तो इन स्थानो को ऐसी प्रेतात्माओ का स्थान मानते है जो मौसम को प्रभावित करती है, प्रदेश को सूर्य-प्रकाश से आलोकित करती या उसपर बादलो को फैला देती है, तथा अच्छी या बुरी शिकार की ऋतुए भेजती रहती है। इन पर भी एक बूढी स्क्वा (अमरीकी रेड इण्डियन) आत्मा का शासन है जिसे उनकी माता बताया जाता है। वह कैट्सकिल की सबसे ऊची चोटी पर रहती है तथा दिन और रात के दरवाजे उसके अधिकार मे है, वही उन्हे उचित समय पर खोलती और बन्द करती है। वही नवचन्द्रो को आकाश मे टागती है और पुरानो को काटकर तारिकाओ मे बदल देती है। सूखे और अकाल के समय, यदि उसे ठीक तरह मे परितुष्ट कर दिया जाता है तो वह तन्तुजालो और प्रभातकालीन ओस-कणो से बुनकर हलके ग्रीष्म-जलदो का निर्माण कर देती है और उन्हे पर्वत-शिखर से तह पर तह धुनी रुई के गालो की तरह, हवा मे तैरने के लिए भेजती रहती है—तबतक जबतक कि वे सूर्य-ताप मे घुलकर कोमल धारो मे धरती पर गिर नही पडते, और इस प्रकार गिरकर घास के बदले, फलो के पकने और अन्न के प्रति घन्टे एक इच बढने का का कारण होते है। किन्तु यदि वह नाराज हो जाती है तो वह स्याही-जैसे काले बादलो की सृष्टि करती है और उनके बीच जाले की लम्बोदरी मकडी की भाति बैठ जाती है, और जब ये मेघ फटते और बरसते है तो घाटियो पर प्रलय ही आया समझिए !

(रेड) इण्डियनो मे परम्परा से यह प्रवाद प्रचलित है कि काट्सकिल पर्वत-माला के भीषणतम गह्वरो मे एक ऐसी प्रेतात्मा रहती थी जो रेड इण्डियनो पर हर प्रकार की बलाए और सकट डालने मे शरारत-भरा सुख अनुभव करती थी। कभी वह रीछ, कभी चीते, और कभी हिरन का रूप ग्रहण कर लेती थी, शिकारी को छकाते और थकाते हुए घने जगलो एव दुर्गम चट्टानो के बीच ले जाती थी और किसी अधोनत कगार या तूफानी प्रवाह के पास पहुचकर जोर से 'हा-हा' अट्टहास कर गायब हो जाती थी।

इस प्रेतात्मा के प्रिय निवास स्थान को अब भी दिखलाते है। यह पर्वत-माला के सबसे एकान्त एव निर्जन भाग पर एक बडी-सी चट्टान या टीला है। अपने आस-पास की पुष्पबहुल लतिकाओ तथा पडोस मे प्राप्त वन्यकुसुमो के

कारण यह 'गार्डन राक' या 'वाटिका-शिला' के नाम से प्रख्यात है। इसके पाद-तल मे एक छोटी झील है, जो एक एकाकी ज्योत्स्ना-बक की विहारस्थली है और जिसके तलपर विकसित पुरइन के पत्तो पर जलसर्प (सूर्य की) धूप का आनन्द लेते है। इण्डियन इस स्थान से बहुत डरते थे—इतना अधिक कि वीर से वीर शिकारी भी इसकी सीमा मे अपने शिकार का पीछा करने का साहस नही करता था। एक बार की बात है कि एक शिकारी अपना रास्ता भूल कर 'गार्डन राक' की सीमा मे पहुच गया। वहा उसे पेडो की दो-दो शाखाओ के बीच के स्थानो पर अनेक तुमडिया रखी हुई दिखाई पडी। उसने इनमे से एक को उठा लिया और लेकर चल दिया किन्तु जल्दी मे ठोकर लग जाने से वह चट्टान पर गिर पडी। गिरते ही उससे बडी धारा फूट निकली जो उसे बहा ले गई और कगारो पर इस प्रकार ले जा पटका कि उसके टुकडे-टुकडे हो गए। वह धारा बहती हुई हडसन नद मे जा मिली और अबतक उसी तरह बह रही है, उसे अब 'कार्ट्सकिल' के नाम से पुकारा जाता है।

अमरीका के अंग्रेज़ लेखक

"मुझे ऐसा प्रतीत होता है और मै अपने मन मे देख रहा हूं कि एक श्रेष्ठ एव पराक्रमी राष्ट्र निद्रा के अनन्तर उठे हुए शक्तिमान व्यक्ति की भाति, अपने को उठा रहा है और अपने अजेय बन्धनों (तालो) को कम्पित कर रहा है। मुझे लगता है कि मै उसे ऐसे गरुड़ के रूप मे देख रहा हू जो अपने शक्तिमान यौवन को मुखरित कर रहा है और अपने चकाचौंधपूर्ण नयनो को मध्याह्न की पूर्ण किरण पर प्रदीप्त कर रहा है।"

—प्रेस के स्वातन्त्र्य पर मिल्टन

इग्लैण्ड और अमरीका के बीच दिन-दिन बढती हुई साहित्यिक विरोध-भावना को मै गहरे दु ख के साथ देख रहा हू। पिछले कुछ समय से सयुक्त राज्य के विषय मे लोगो मे महती जिज्ञासा जाग्रत् हुई है, और लन्दन के प्रकाशको ने इस प्रजातन्त्र के मध्य की जाने वाली यात्राओ के विषय मे ग्रन्थ के ग्रन्थ प्रकाशित किये है। किन्तु ऐसा जान पडता है कि ज्ञान की अपेक्षा भ्रान्ति का प्रसार ही उनका लक्ष्य है, और इसमे उन्हे इतनी सफलता प्राप्त हुई है कि राष्ट्रो के बीच निरन्तर आवागमन के होते हुए भी आज दूसरी कोई जाति ऐसी नही है जिसके विषय मे ब्रिटिश जनता के महान समूह को इतनी कम शुद्ध जानकारी हो, या जिसके प्रति वह इतनी अधिक सख्या मे पक्षपातपूर्ण भावनाए रखता हो।

अग्रेज पर्यटक ससार मे सबसे अच्छे और सबसे बुरे होते है। जहा अहकार या स्वार्थ की भावनाए बीच मे नही आती, वहा समाज का गम्भीर एव तात्त्विक विचार उपस्थित करने अथवा बाह्य पदार्थों का ईमानदारी के साथ और हूबहू चित्रण करने मे कोई उनकी समता नही कर सकता, किन्तु जहा अपने

देश के स्वार्थ या यश का किसी दूसरे देश के साथ सघर्ष हो वहा वे विपरीत सीमा तक चले जाते है और वक्रोक्ति तथा उपहास की अनुदार भावना के प्रयोग मे अपनी सहज ऋजुता और निष्कपटता को भूल जाते है ।

इसीलिए वर्णित देश उनसे जितना ही दूर हो उतना ही सच्चा और सही उनका यात्रा-वर्णन होता है। जब कोई अग्रेज नील के प्रपातो के आगे के भूखण्डो या पीत सागर के अज्ञात द्वीपो, या भारत के अन्तरग प्रदेशो या किसी दूसरे ऐसे भाग का वर्णन कर रहा हो जिसका चित्रण अन्य पर्यटक अपनी भावनाओ एव कल्पनाओ के मिश्रण के साथ करते है, तो मैं उस पर असदिग्ध रूप से विश्वास कर लूगा, किन्तु नजदीक पडोसियो या उन राष्ट्रो के उसके वर्णन को मैं बडी सतर्कता के साथ ग्रहण करूगा जिनके बीच वह प्राय आता जाता रहता है । मैं उसकी ऋजुता का चाहे जितना विश्वास करता होऊ, उसके पक्षपातपूर्ण विचारो पर कदापि विश्वास नही कर सकता ।

फिर हमारे देश का यह भी दुर्भाग्य रहा है कि उसमे निकृष्टतम प्रकार के अग्रेज पर्यटक आते रहे है । जहा तत्त्वदर्शी एव सुसस्कृत मन के अग्रेज इग्लैण्ड से ध्रुवप्रदेशो का अन्वेषण करने, मरुस्थलो मे प्रवेश करने तथा उन जगली जातियो की जीवन-विधियो एव रीतियो का अध्ययन करने के लिए भेजे जाते रहे है जिनके साथ उनके लाभ या सुखोपभोग का कोई स्थायी ससर्ग नही हो सकता, वहा अमरीका मे उसके आप्त पुरुप या प्रतिनिधि होने का कार्य खण्डित व्यापारियो, षड्यत्रकारी दुस्साहसियो, चलते-फिरते मिस्त्रियो और मानचेस्टर तथा बरमिंघम के एजेण्टो के जिम्मे है । जो देश नैतिक एव भौतिक विकास की अनोखी अवस्था मे है, जिस देश मे ससार के इतिहास का एक सबसे बडा राजनीतिक प्रयोग हो रहा है और जिसके पास राजनीतिवेत्ता एव तत्त्वविद् के लिए अत्यन्त गहन एव महत्त्वपूर्ण अध्ययन की सामग्री प्राप्त है उस देश के विषय मे ऐसे स्रोतो से जानकारी पाकर इग्लैण्ड सन्तुष्ट है ।

ऐसे लोग यदि अमरीका के विषय मे पक्षपातपूर्ण विवरण दे तो इसमे आश्चर्य की कोई बात नही है । यह देश चिन्तन के लिए जो विषय प्रस्तुत करता है वे उनकी क्षमता के लिए बहुत विशाल और उच्च है । हमारा राष्ट्रीय चरित्र अभी निर्माण की अवस्था मे है, अभी औटा जा रहा है, इसमे फेन और तलछट हो सकता है परन्तु इसके उपादान अच्छे और स्वास्थ्यवर्द्धक है । अब भी

वे अपनी शक्तिमती एव उदार विशेषताओ का प्रमाण दे चुके हैं, और सम्पूर्ण चरित्र भी बहुत अच्छे रूप मे स्थिर हो जाने की सम्भावनाए व्यक्त कर चुका है। परन्तु जो कारण उसे शक्तिमान एव श्रेष्ठ बनाने मे लगे हुए है और उसके प्रशसनीय गुण-धर्म का नित्य सकेत कर रहे है वे सब इन अन्धप्राय पर्यवेक्षको को नज़र ही नही आते, वे वर्तमान परिस्थिति से सम्बद्ध तुच्छ असमानताओ और कठिनाइयो से ही प्रभावित हो जाते है। उनमे केवल वस्तुओ की सतह (बाह्य रूप) तक देख सकने की क्षमता होती है, वे उन्ही विषयो को देख पाते है जिनके साथ उनके निजी हितो एव व्यक्तिगत परितोष का सम्बन्ध आता है। उन्हे यहा कुछ ऐसी सुरक्षित सुविधाए और तुच्छ सुख प्राप्त नही हो पाते, जो समाज की एक प्राचीन, सुसस्कृत एव अत्यधिक जनाकीर्ण स्थिति मे सुलभ होते है—ऐसी सामाजिक स्थिति जिसमे उपयोगी श्रमिको की भीड लगी हो, और जहा भोग-विलास एव चटोर जिह्वा की सनको के अध्ययन-द्वारा ही बहुत-से लोग व्यथाजनक एव दासवत् जीविका प्राप्त कर सकते हो। सकुचित एव तुच्छ प्राणियो की दृष्टि मे ये लघु सुविधाए ही एकमात्र महत्त्वपूर्ण वस्तु होती है, वे या तो देख नही पाते या देखकर भी स्वीकार नही करना चाहते कि हमारे अन्दर इन अभावो की उनसे भी अधिक पूर्ति महत् एव सामान्यत वितरित वरदानो से हो जाती है।

शायद वे किसी आकस्मिक लाभ की अन्यायपूर्ण आशा मे निराश हुए होगे। शायद उन्होने अपने मन मे अमरीका को एलडोराडो समझ लिया होगा, जहा सोना-चादी का बाहुल्य है परन्तु जहा के निवासियो मे विचक्षणता का अभाव है और जहा वे किसी अज्ञात परन्तु सरल ढग से विचित्रतापूर्वक सहसा धनवान बन जा सकते हैं। मन की वही दुर्बलता जो वाहियात आशाओ मे निमग्न रहती है, निराश होने पर झल्लाहट और दु शीलता पैदा करती है। ऐसे लोग जब देखते और पाते है कि सब जगह की भाति यहा भी आदमी को काटने के पहिले बोना पडता है, अध्यवसाय एव बुद्धि से धनार्जन करना पडता है, सामान्य प्राकृतिक कठिनाइयो तथा बुद्धिमान एव साहसिक जाति के चातुर्य से मुकाबला करना होता है तो वे देश के प्रति ही कटु हो उठते है।

शायद गलत अथवा दुर्निर्देशित आतिथ्य के कारण, या मेरे देशवासियो के बीच प्रचलित अजनबी का स्वागत एव अभिनन्दन करने की त्वरित प्रवृत्ति के

आक्रमणो को बहुत ज्यादा महत्त्व देने लगे है । वे हमे कोई वास्तविक हानि नही पहुचा सकते । हमारे चतुर्दिक् गलतबयानियो के जो धागे बुने गए है वे एक बालदानव के अगो के चतुर्दिक् बुने गए मकडी के जाले के समान है । हमारा देश निरन्तर उनको तोडता और पार करता जा रहा है । एक के बाद दूसरा झूठ अपने-आप गिर रहा है । हमे तो बस जीते जाना है, और हमारे जीवन का प्रत्येक दिवस प्रतिवाद के एक ग्रन्थ के बराबर है ।

यदि हम क्षण-भर के लिए मान भी ले कि इग्लैण्ड के सब लेखक मिल जाएगे और उनके महत् मस्तिष्क ऐसे अयोग्य सघ मे मिलने के लिए नीचे झुक जाएगे तो ऐसा करके भी वे हमारे तेजी के साथ बढते हुए महत्त्व और अप्रतिम समृद्धि को छिपा न पाएगे । वे यह छिपा नही सकेंगे कि इन सबका कारण केवल भौतिक एव स्थानीय नही है, बल्कि उनके पीछे कुछ नैतिक हेतु है—राजनीतिक स्वतन्त्रता, ज्ञान का सामान्य प्रसार, शुभ नैतिक एव धार्मिक सिद्धान्त, वे वस्तुए जो किसी जाति की प्रकृति को बल एव स्थायी स्फूर्ति प्रदान करती है और जो खुद उनकी राष्ट्रीय शक्ति एव गौरव के स्वीकृत तथा आश्चर्यजनक आधार रही है ।

परन्तु हम इग्लैण्ड के आक्षेपो पर इतना अधिक ध्यान क्यो देते है ? हम उस भर्त्सना से इतने प्रभावित क्यो होते है जो वह करता है ? केवल इग्लैण्ड की राय पर प्रतिष्ठा और यश निर्भर नही करते । यह विशाल विश्व ही किसी राष्ट्र के यश का निर्णयकर्ता है, वह अपने सहस्र-सहस्र नयनो से किसी राष्ट्र के कार्यो को देखता है और उन सबके सयुक्त प्रमाणपत्र पर राष्ट्रीय गौरव या राष्ट्रीय कलक की स्थापना होती है ।

इसलिए, हमारे अपने तई यह बात अपेक्षाकृत बहुत कम महत्त्व की है कि इग्लैण्ड हमारे साथ न्याय करता है या नही, शायद, यह बात उसीके लिए ज्यादा महत्त्व रखती है । वह एक जवानी से भरे राष्ट्र के हृदय मे ऐसा क्रोध एव नाराज़गी भर रहा है, जिसमे उसके विकास के साथ वृद्धि होती जाएगी, और उसकी शक्ति के साथ मज़बूती आती जाएगी । जैसा कि उसके लेखक उसे विश्वास दिलाने का प्रयत्न कर रहे हैं, यदि आगे से अमरीका के रूप मे उसे एक रोष-जनक प्रतिद्वन्द्वी और विराट् शत्रु प्राप्त होता है तो उस प्रतिद्वन्द्विता और क्षोभ-जनक शत्रुता को उत्तेजन देने के लिए उसे अपने इन्ही लेखको का धन्यवाद

करना चाहिए। हरेक जानता है कि आज साहित्य का प्रभाव सर्वव्यापक हो गया है और मानवजाति की सम्मतियो एव भावनाओ पर उसका कैसा नियत्रण है। तलवार की प्रतियोगिताए क्षणिक होती है, उनके घाव केवल मास मे होते है और उन्हे क्षमा कर देना या भूल जाना उदारमना लोगो के लिए गर्व की बात है, किन्तु कलम का अपमान हृदय को वेधकर उसके अन्दर घुस जाता है, और श्रेष्ठात्माओ मे भी बहुत लम्बे काल तक करकता रहता है, वह मन मे सदा उपस्थित रहता है और क्षुद्र-से-क्षुद्र टकराव मे भी उसे अस्वस्थ रूप से उत्तेजित कर देता है। ऐसा बहुत कम होता है कि केवल एक स्पष्ट कार्य से दो राष्ट्रो के बीच लडाई का आरम्भ हो, आमतौर से पूर्ववर्त्ती एव दुर्भावना तथा अपमान को ग्रहण करने की मनोवृत्ति भी उपस्थित रहती है। इनके कारण का पता लगाइए, तो आप देखेंगे कि बहुधा स्वार्थी या भाडे के टट्टू लेखको के शरारत-भरे उद्गारो से उनका आरम्भ होता है। अपनी कोठरियो मे सुरक्षित ये लेखक कलकित रोटी के लिए, उस जहर का निर्माण और प्रसार करते है जो उदार एव वीर लोगो मे भी आग लगा देता है।

यह देखते हुए कि यह बात हमारे विशेष मामले पर बहुत स्पष्ट रूप से लागू होती है, मै इस मुद्दे पर बहुत ज्यादा जोर नही दे रहा हू। जिस प्रकार अमरीका की जनता पर प्रेस (समाचारपत्रादि) का पूर्ण नियत्रण है वैसा दूसरे किसी राष्ट्र पर उसका नियत्रण नही है, क्योकि गरीब से गरीब वर्गों के भी सार्वदेशिक शिक्षण ने हर एक व्यक्ति को पाठक बना दिया है। हमारे देश के बारे मे इग्लैण्ड मे जो भी बात प्रकाशित होती है वह हमारे प्रत्येक भाग मे फैल जाती है। आग्ल लेखनी से नि सृत कोई निन्दा और आग्ल राजनीतिवेत्ता के मुह से निकला कोई उपहास ऐसा नही जो शुभेच्छा को मुरझा न देता हो, और प्रच्छन्न असन्तोष के पुज मे वृद्धि न करता हो। जब इग्लैण्ड के पास वे स्रोतोद्गम है जिनसे हमारी भाषा का साहित्य प्रवाहित होता है तब यह बात कितनी पूरी तरह उसके वश मे है, और कितनी सच्चाई के साथ उसका यह कर्त्तव्य है कि वह इस (भाषा) को मृदुल एव उदार भावनाओ का माध्यम बनाए—एक ऐसी धारा का जिसमे दो राष्ट्र एक-दूसरे से मिल सके और शान्ति एव सज्जनता का अमृतपान कर सके। किन्तु यदि वह इसे कटुता के जल के रूप मे ही परिणत करने का कार्य जारी रखेगा तो एक ऐसी गाठ पड

जाएगी कि उसे स्वय अपनी गलती के लिए अनुताप करना पडेगा। आज अमरीका की मित्रता भले ही उसके लिए ज्यादा महत्त्व की न हो किन्तु इस देश की भावी नियति मे किसी प्रकार के सन्देह की गुजाइश नही है, जब कि इग्लैण्ड के भविष्य पर अनिश्चितताओ की छाया पडने लगी है। तब यदि शोक का एक दिन आया, यदि पराजयो ने, जिनसे बडे-बडे गौरवशाली साम्राज्य भी अछूते नही रहे, उसे दबोच लिया, तब पीछे की ओर देखते हुए अपनी तरफ से एक ऐसे राष्ट्र पर चोट करने मे उत्फुल्ल होने के लिए उसे दुख अनुभव करना पडेगा जिसे वह अपनी छाती से लगा सकता था। इस प्रकार अपने उपनिवेशो की सीमा के पार उसे सच्ची मैत्री का जो अवसर मिला है, उसे वह नष्ट कर रहा है।

इग्लैण्ड मे यह आम खयाल है कि सयुक्त राज्य के लोग अपने पितृ-देश के विरोधी है। यह उन गलतियो मे से एक है जो षड्यन्त्रकारी लेखको-द्वारा बडी कर्मठता के साथ प्रचारित की गई है। इसमे सन्देह नही कि आग्ल प्रेस की अनुदारता के कारण हमारे देह मे पर्याप्त राजनीतिक शत्रुता और सामान्य कटुता है, किन्तु सामान्य तौर से आज भी यह कहा जा सकता है कि जन-परम्पराए इग्लैण्ड के पक्ष मे है। कोई समय तो ऐसा था कि यूनियन (सयुक्त राज्य) के अनेक भागो मे वे धर्मान्धता की सीमा तक पहुची हुई थी। अग्रेज का नाम ही प्रत्येक परिवार के विश्वास एव आतिथ्य के लिए पासपोर्ट था, और प्राय इसके कारण अयोग्य एव अकृतज्ञ को भी, अस्थायी रूप से, सुविधाए मिल जाती थी। सम्पूर्ण देश मे इग्लैण्ड के विचार को लेकर एक उत्साह की लहर फैली हुई थी। हम उसकी ओर कोमलता एव श्रद्धा की प्रदीप्त भावनाओ के साथ देखते थे, हम उसकी ओर अपने पूर्वजो के देश के रूप मे देखते थे, अपनी जाति के प्राचीन गौरव एव स्मारको के महान् आगार के रूप मे देखते थे, अपने पैतृक इतिहास के सन्तो एव वीरो के जन्म एव मरणस्थान के रूप मे उसे देखते थे। अपने देश के बाद उसके सिवा दूसरा ऐसा देश न था जिसके गौरव से हम इससे अधिक हर्षित होते हो—जिसकी शुभ सम्मति प्राप्त करने को हम इतने उत्सुक रहते हो—जिसकी ओर हमारे हृदय घनिष्ठ सगोत्रता की भावनाओ से इस प्रकार धडकते हो। पिछले युद्ध तक मे, जब कभी शुभ भावनाओ के प्रकाशित होने का ज़रा भी अवसर मिलता तो हमारे देश की उदारा-

त्माओ को यह प्रकट करके प्रसन्नता होती थी कि लडाइयो के बीच भी वे भावी मैत्री की चिनगारियो को जीवित रखे हुए है ।

क्या इन सबका अन्त हो जाना चाहिए ? क्या सजातीय सहानुभूतियो के इस स्वर्णिम बन्धन को, जो राष्ट्रो के मध्य इतनी बहुमूल्य होती है, सदा के लिए तोड दिया जाना चाहिए ? शायद उससे अच्छा ही परिणाम निकले, इससे एक ऐसी भ्रान्ति दूर हो सकती है जो हमे मानसिक दासता की दशा मे पडे रख सकती है, जो समय-समय पर हमारे सच्चे हितो और उचित राष्ट्राभिमान के विकास मे बाधक हो सकती है । परन्तु सजातीय बन्धन का त्याग करना बडा कठिन है । ऐसी भावनाए भी तो है जो स्वार्थ की अपेक्षा भी अधिक मूल्यवान है, जो अहकार की अपेक्षा भी हृदय के अधिक निकट है । इनके कारण, जब हम पतृक आश्रय से दूर होते जाएगे, तब पीछे फिर कर दु ख के साथ निगाह डालते रहेगे और उस पालक के दिशाभ्रष्ट होने पर रोते रहेगे जो शिशु के प्रेम को ठुकरा देता है ।

किन्तु आक्षेप और निन्दा की इस प्रणाली मे इग्लैण्ड का आचरण चाहे जितना अदूरदर्शितापूर्ण और अनीतिमूलक हो, हमारी ओर से प्रत्यारोप भी उतना ही बुरा होगा । यहा मै अपने देश की ओर से सत्वर एव भावनापूर्ण उत्तर देने की या उसके मिथ्यानिन्दको की तीव्र भर्त्सना करने की बात नही कर रहा हू—मै उसी भाषा मे जवाब देने की बात कर रहा हू, मै उपहास, व्यग्य करके वह द्वेष-भावना फैलाने की बात कर रहा हू, जो हमारे लेखको मे भी व्यापक रूप से फैलती जा रही है । हमे ऐसी मन स्थिति, ऐसे मिजाज पर चौकसी रखनी चाहिए, उसे बढने न देना चाहिए क्योकि इससे बुराई दूर नही होगी, बढकर दूनी हो जाएगी । निन्दा और उपहास भरे उत्तर से अधिक प्रलोभक एव सरल कोई दूसरी चीज नही है, किन्तु यह क्षुद्र एव अलाभकर प्रतियोगिता है । यह एक ऐसे अस्वस्थ मन का वाहक है जो आक्रोश से गर्म होने की जगह खीझकर दु शीलता पर उतर आता है । यदि इग्लैण्ड प्रेस की ईमानदारी को कलकित करने और जनसम्मति के स्रोत को विषाक्त करने के लिए•व्यापार की क्षुद्र ईर्ष्याओ तथा राजनीति की विषैली शत्रुताओ को जारी रखने देता है तो हमे उसके उदाहरण से सतर्क हो जाना चाहिए । सम्भव है कि वह परदेशगमन को रोकने के उद्देश्य से गलतियो का वितरण

करने और विरोधभाव पैदा करने मे अपना हित देखता हो, हमे उस प्रकार का कोई स्वार्थ सिद्ध नही करना है। हमे राष्ट्रीय ईर्ष्या की किसी भावना को सन्तुष्ट भी नही करना है, क्योकि अभी तक इग्लैण्ड के साथ हमारी जितनी भी प्रतिद्वन्द्विता हुई है, उसमे हम ही विकासमान और लाभ प्राप्त करने वाले रहे है। इसलिए जवाब देने मे नाराजगी की सन्तुष्टि के सिवा कोई लक्ष्य नही है और यह केवल प्रतिघात की भावना है, फिर यह भावना नपुसक (अशक्त) भी है। हमारे प्रत्युत्तर कभी इग्लैण्ड मे प्रकाशित नही किये जाते, इसलिए उनका लक्ष्य भी पूरा नही होता, किन्तु हमारे लेखको मे वे एक कलह-प्रिय एव चिडचिडे स्वभाव की वृद्धि करते है, वे हमारे प्रारम्भिक साहित्य के मधुर प्रवाह को खट्टा करते है तथा उसकी कलियो मे काटे उत्पन्न कर देते है। इससे भी बुरी बात यह है कि वे हमारे ही देश मे वितरित होते है और जहा तक उनका प्रभाव पड सकता है विषाक्त राष्ट्रीय विद्वेष को जन्म देते है। इस अन्तिम बुराई की विशेष रूप से निन्दा की जानी चाहिए। चूकि हम लोग पूर्णत लोकमत से शासित होते है इसलिए लोक-मानस की पवित्रता को सुरक्षित रखने के लिए सर्वाधिक सावधानी रखी जानी चाहिए। ज्ञान ही शक्ति है और सत्य ही ज्ञान है, इसलिए जो कोई जान-बूझकर विद्वेष का प्रचार करता है वह दुराग्रहपूर्वक अपने देश की शक्ति की नीव को कमजोर बनाता है।

एक प्रजातन्त्र के सदस्यो को तो और सब आदमियो से अधिक खरा और निरुद्वेग होना चहिए। व्यक्तिगत रूप से वे सर्वसत्तावान् मन एव सर्वसत्ता-शालिनी सकल्पशक्ति के खण्ड है इसलिए उन्हे राष्ट्रीय विषय के सम्पूर्ण प्रश्नो पर शान्ति एव विद्वेषरहित निर्णयशक्ति से विचार करना चाहिए। इग्लैण्ड के साथ हमारा जो विशेष प्रकार का सम्बन्ध है उसके कारण हमारे सामने उसके साथ जटिल एव सूक्ष्म प्रकृति के जितने प्रश्न प्राय उपस्थित होगे उतने और किसी राष्ट्र के साथ उत्पन्न नही होगे ऐसे प्रश्न जो तीक्ष्ण एव उत्तेजनशील भावनाओ को प्रभावित करते है, और इनका समाधान प्राप्त करने मे यद्यपि हमारे राष्ट्रीय उपाय अन्त मे जन-भावना से ही निर्णीत होगे, फिर भी उन्हे सम्पूर्ण अन्तर्हित भावो एव पूर्वाग्रहो से मुक्त रखने के लिए हमे बहुत ध्यान रखना होगा।

जैसा कि हम कर भी रहे है, हमे धरित्री के प्रत्येक भाग से आने वाले अजनबियो के लिए एक आश्रयशाला खोलनी चाहिए। वहा सबका निष्पक्षता-पूर्वक स्वागत होना चाहिए। हमे एक ऐसे राष्ट्र का उदाहरण उपस्थित करने का गर्व होना चाहिए जो राष्ट्रीय वैर-भावना से मुक्त है और न केवल आतिथ्य-सत्कार मे प्रवीण है, वरन उन दुर्लभ एव श्रेष्ठ शिष्टाचारो मे भी निष्णात है जो मत के औदार्य से विकसित होते है।

हमे राष्ट्रीय ईर्ष्याओ को लेकर क्या करना है? वे तो पुराने देशो के जीर्ण रोग है जिन्हे उन्होने उन रूक्ष एव अज्ञान युगो मे प्राप्त किया था जब राष्ट्र एक-दूसरे के विषय मे बहुत कम जानते थे, और अपनी सीमाओ के आगे के देशो की ओर अविश्वास एव शत्रुता से देखते थे। इसके विपरीत हम अपने राष्ट्रीय अस्तित्व मे एक प्रबुद्ध एव दार्शनिक युग मे आए है—ऐसे युग मे जब बसने योग्य ससार के विभिन्न भागो, तथा मानव-कुटुम्ब की विविध शाखाओ का अत्यन्त अध्यवसाय एव लगन के साथ अध्ययन किया जा चुका है और उन्हे एक-दूसरे से परिचित भी किया जा चुका है। ऐसी हालत मे यदि हम पुरानी दुनिया की राष्ट्रीय ईर्ष्याओ को भी ठीक उसी तरह नही त्याग देते जिस तरह हमने स्थानीय मूढ विश्वासो का त्याग किया है तो इस युग मे पैदा होने के लाभो से हम अपने को वचित करेगे।

और इन सबके ऊपर हमे रोषपूर्ण भावनाओ से इस तरह प्रभावित न हो जाना चाहिए कि हमारी आखे उन गुणो को देखना भी बन्द कर दे जो आग्ल-प्रकृति मे सचमुच श्रेष्ठ और अनुकरणीय है। हम एक किशोर राष्ट्र है, स्वभावत अनुकरणशील है और (बहुत अश मे) हमे यूरोप के वर्तमान राष्ट्रो से ही अपने उदाहरण और नमूने ग्रहण करने है। हमारे अध्ययन के लिए इग्लैण्ड से बढकर योग्य दूसरा देश नही है। उसके विधान की आत्मा हमारे विधान की भावना से बहुत मिलती-जुलती है। उसकी जनता की जीवनविधि—उनके बौद्धिक कार्यकलाप—उनका मत-स्वातन्त्र्य उन विषयो पर उनके चिन्तन की आदते जो व्यक्तिगत जीवन के अत्यन्त मूल्यवान हितो एव परमपवित्र वदान्यताओ से सम्बन्धित है, वे सब अमरीकी प्रकृति के अनुकूल है, और वस्तुत, सब आन्तरिक रूप से श्रेष्ठ है, क्योकि जनता की नैतिक भावना मे ही आग्ल-समृद्धि की गहरी नीवे डाली गई है, और ऊपर की इमारत चाहे जितनी कालजीर्ण हो गई हो

और उसका चाहे जितना भी दुरुपयोग हुआ हो, परन्तु एक महल जो ससार के तूफानो एव आधियो के बीच इतने दिनो से सिर ऊचा किए खडा हो उसके आधार या नीव मे कुछ न कुछ ठोस, उसकी सामग्रियो मे कुछ न कुछ प्रशसनीय और उसके निर्माण मे कुछ न कुछ अचल अवश्य है।

इसलिए हमारे लेखको का खीझ की सम्पूर्ण भावनाए त्याग देने, आग्ल ग्रन्थकारो की अनुदारता का बदला चुकाने की वृत्ति से दूर रहने और बिना किसी द्वेष के निश्चित ईमानदारी के साथ अग्रेज जाति के बारे मे बोलने मे गर्व का अनुभव करना चाहिए। जहा उन्हे उस विवेकशून्य कट्टरता का विरोध करना चाहिए जिसके साथ हमारे कतिपय देशवासी प्रत्येक आग्ल वस्तु की प्रशसा और अनुकरण केवल उसके अग्रेजी होने के कारण करते है वहा उन्हे यह भी बताना चाहिए कि उनमे वस्तुत समर्थनीय कौन-सी चीज है। इस तरह हम इग्लैण्ड को अपने सामने एक ऐसे स्थायी सन्दर्भ-ग्रन्थ के रूप मे रख सकते है जिसमे अनुभव के युगो के सही निष्कर्ष अकित है, और यद्यपि हम उन गलतियो एव भ्रान्तियो से दूर रहेगे जो उसके पृष्ठो मे आ गई है, हम उनसे व्यावहारिक प्रज्ञा के उन स्वर्ण-सूत्रो को ग्रहण करेगे जो हमारे राष्ट्रीय चरित्र को पुष्ट एव अलकृत कर सकते है।

इंग्लैण्ड में ग्राम्य-जीवन

अहो, मानव के सर्वोत्तम, उद्यमों – कर्मो के तुम मित्र !
मित्र हो चिन्तन के, गुण के, शान्ति के हो तुम सुन्दर चित्र ।
ग्राम्य तुम सुख के हो आगार, तुम्ही हो धरती के अभिमान ।
जहां कौटुम्बिक जीवन – सत्य सुखो-आनन्दो की है खान ।।

—काउपर

जिस अजनवी को आग्ल-चरित्र के विषय मे सही राय बनानी हो, उसे अपना पर्यवेक्षण केवल राजधानी (लन्दन) तक सीमित नही रखना चाहिए। उसे देहात मे अवश्य जाना चाहिए, उसे गावो और झोपडियो की सैर अवश्य करनी चाहिए। उसे किले, हवेलिया, खेतघर, कुटीर देखना चाहिए, उसे बाडो एव हरित वीथिकाओ के साथ पार्को एव बागो मे अवश्य घूमना चाहिए, उसे ग्राम्य चर्चो के आसपास चहलकदमी करनी चाहिए, मेले-तमाशो तथा दूसरे देहाती उत्सवो-त्यौहारो मे शामिल होना चाहिए तथा लोगो को उनकी सब अवस्थाओ, उनकी सब आदतो एव विनोदो मे देखना चाहिए।

कुछ देशो मे बडे-बडे नगर राष्ट्र की सम्पत्ति एव फैशन को आत्मसात् कर लेते है, वे ही परिमार्जित एव प्रबुद्ध समाज के एकमात्र स्थिर निवास होते है, और देहात मे प्राय पूर्णतया गवार किसान रहते है। इसके विपरीत, इग्लैण्ड मे राजधानी केवल एक समवाय स्थान है, मिलन स्थल है, अथवा सभ्य वर्गो का सामान्य विश्राम स्थान है, जहा लोग साल का एक स्वल्प अश विनोद और व्यसन की उतावली मे खर्च करते है, और इस प्रकार के आनन्दोत्सव मे भाग लेने के बाद अपने ग्राम्य-जीवन के अधिक अनुकूल वातावरण मे लौट जाते है। इस प्रकार समाज की विविध श्रेणिया राज्य की सम्पूर्ण सतह पर फैली हुई है और अत्यन्त एकान्त बस्तियो मे भी विभिन्न वर्गों के उदाहरण मिल जाते है।

यह तथ्य है कि अग्रेज ग्राम्य-भावना मे बहुत समृद्ध है। उनमे प्रकृति के सौन्दर्य को तेजी से ग्रहण कर लेने की प्रज्ञा है, और देहात के सुखो एव पेशो के लिए तीव्र अभिरुचि है—वे उनमे स्वाद लेते है। यह भावावेग उनमे अन्तर्हित जान पडता है। ईटो की दीवारो तथा जनाकीर्ण मार्गो के बीच उत्पन्न एव पालित नगरो के निवासी भी सरलता से ग्रामीण आदतो को अपना लेते है और ग्राम्य पेशो के प्रति अपने कौशल का प्रदर्शन करते है। व्यापारी के पास भी राजधानी के पडोस मे एक सुखद आश्रयगृह होता है, जहा वह अपने पुष्पोद्यान को विकसित करने और अपने फलो को प्रौढ बनाने मे उसी गर्व एव लगन का परिचय देता है जिसका उपयोग वह अपना व्यवसाय चलाने और अपने व्यापारिक प्रयासो की सफलता के लिए करता है। वे कम भाग्यवान व्यक्ति भी, जो शोरगुल एव यातायात के मध्य जीवन के दिन बिताने को विवश है, ऐसा कुछ रखने का प्रयत्न करते है जो उन्हे प्रकृति के हरित पक्ष का स्मरण दिलाता रहे। नगर के अत्यन्त अन्धकाराच्छन्न और गन्दे मकानो मे भी प्राय बैठकखाने की खिडकी कुसुमकूट-सी मालूम पडती है, उद्भिज-योग्य प्रत्येक स्थान मे दूर्वाखण्ड एव पुष्प-वीथिकाए अवश्य होती है तथा प्रत्येक स्क्वायर (वर्गाकार मुहल्ला) मे उसके अनुरूप चित्रमय अभिरुचि-द्वारा निर्दिष्ट तथा नवोन्मेषकारी हरीतिमा से दीप्त एक पार्क होता है।

जो अग्रेज को केवल नगर मे देखता है उसके लिए उसके सामाजिक चरित्र के विषय मे प्रतिकूल सम्मति बना लेने की ही अधिक सम्भावना रहती है। वहा वह या तो अपने व्यापार मे तल्लीन रहता है या इस विशाल राजनगर मे समय विचार एव भावना का अपव्यय करने वाले हजारो पूर्व नियुक्त कार्यो के कारण अस्थिरचित्त होता है। इसलिए वह अक्सर हडबडी—जल्दबाजी और खिचाव या अन्यमनस्कता की मुद्रा मे दिखाई पडता है। वह जहा भी होता है वही से अन्यत्र जाने की हडबडी मे रहता है, जिस क्षण वह एक विषय पर बात कर रहा होता है उसी क्षण उसका मन दूसरे विषय की ओर उडता रहता है। जब वह किसी मित्र से मिलने जा रहा होता है तब भी मन मे हिसाब लगा रहा होता है कि वहा किस तरह समय की बचत की जाए कि प्रभात की अन्य निश्चित भेंटो का कार्य पूरा किया जा सके। लन्दन-जैसा विशाल महानगर लोगो को स्वार्थी एव अरोचक बना ही देता है। अपनी आकस्मिक एव क्षणजीवी मुला-

कातो मे वे बस सक्षेप मे रोजमर्रा की, साधारण बाते ही कर सकते है। वे चरित्र के केवल ठण्डे या शुष्क धरातल को ही उपस्थित करते है उसकी समृद्ध एव मृदुल विशेषताओ को उत्तप्त होकर प्रवाहित होने के लिए समय ही नही मिलता।

भूमि की काश्त और पृथ्वी को सौन्दर्य प्रदान करने की बागवानी की सुरुचि मे अग्रेज बेजोड हे। उन्होने अनन्यचित्त होकर प्रकृति का अध्ययन किया है, और उसके सुन्दर रूपो एव सामजस्यपूर्ण समवायो मे उत्कृष्टता को खोज निकाला है। दूसरे देशो मे प्रकृति अपना जो सौन्दर्य निर्जन वनो मे बिखेरती है, उन्हे यहा कौटुम्बिक जीवन की सीमाओ के इर्द-गिर्द एकत्र कर दिया गया है। ऐसा जान पडता है कि उन्होने उसकी लज्जाशील और छिपी हुई अदाओ को पकड लिया है और अपने ग्राम्य निवासो के चतुर्दिक् जादू-टोने की भाति फैला दिया है।

आग्ल उपवनो (पार्को) की दृश्यावली के ऐश्वर्य से अधिक प्रभावकारी दूसरी चीज नही हो सकती। विस्तृत लान, जो परिस्फुट हरीतिमा की चादर-जैसे लगते है, उनके बीच जहा-तहा विशाल वृक्षो के झुरमुट—पल्लवो की समृद्ध राशि से पूर्ण, निकुजो एव वनभूमि की वीथिकाओ की उदात्त शोभा, और उनके बीच विचरण करते हिरनो के मौन वृन्द, झाडियो मे छिपने को भागते हुए खरगोश, या सहसा पख फडफडाने वाले चकोर, प्राकृतिक वक्र मार्गो मे बल-खाती बहनेवाली या फिर काच की तरह स्वच्छ झील का रूप ग्रहण करने वाली सरसी, एकान्त सरोवर मे उभरी कम्पित वृक्षो की परछाइया, उसके वक्ष पर सोता पीत अवकाश तथा उसके निर्मल जल मे निर्भर होकर विचरती (ट्राउट) मछ-लिया और आयु के कारण हरित एव आर्द्र पड गया अनलकृत मन्दिर या वन-देवता की प्रतिमा जिससे उस एकान्त मे पुरागौरव एव पवित्रता का वातावरण बन जाता है।

पार्क दृश्यावली के ये कुछ अग है, किन्तु जो बात मुझे सबसे अधिक प्रमु-दित करती है, वह अग्रेजो की सृजनात्मक प्रतिभा है जिसके साथ वे मध्य (वर्गीय) जीवन के निराडम्बर आवासो को अलकृत करते हे। रूक्ष से रूक्ष आवास, भूमि का सर्वाधिक सम्भावनारहित एव तुच्छ भाग, किसी सुरुचिपूर्ण अग्रेज के हाथ मे पडकर एक छोटा स्वर्ग बन जाता है। अपनी भली विवेकपूर्ण आखो से वह उसकी क्षमताओ को पकड लेता है और अपने मस्तिष्क मे भावी भू-चित्र की कल्पना कर लेता है। उसके हाथो के नीचे-ऊसर स्थान मनोरम हो उठता है,

फिर भी परिणाम या प्रभाव उत्पन्न करनेवाली कला की कार्यशैली, कठिनाई से ही दिखाई पडती है। कुछ वृक्षो का पोषण एव रूपायण, दूसरो की सतर्क काट-छाट, फूलो तथा मृदुल एव भव्य पल्लवयुक्त पौधो का सुन्दर वितरण, मखमली शाद्वल के हरे ढालो का नियोजन, नील-विस्तार या जल की रजत काति की झाकी के लिए थोडा-सा खुला स्थान, इन सब चीजो की एक सूक्ष्म चतुरता, एक परिव्याप्त किन्तु शात अवधानता से व्यवस्था की जाती है—चित्रकार के उस जादुई स्पर्श की भाति जिसके साथ वह अपने प्रिय चित्र को अन्तिम रूप देता है।

देहात मे समृद्ध एव सुरुचिपूर्ण लोगो के निवास करने के कारण ग्राम्य अर्थ-प्रणाली मे एक सीमा तक सुरुचि और लालित्य आ गया है और वह निम्नतम वर्गो तक पहुच गया है। अपने सकरे भूमिखण्ड तथा छपरैल के कुटीर मे रहने-वाला श्रमिक भी उन्हे सुन्दर एव अलकृत बनाने की चेष्टा करता है। सुन्दर कटी हुई झाडीदार बाड, द्वार के सामने दूर्वाच्छादित प्लाट, भव्य सदाबहार के हाशिये के अन्दर छोटी-सी फूलो की क्यारी, दीवार पर चढाई हुई अपने पुष्प-गुच्छ गवाक्ष तक लटकाने वाली मारबल्ली (वुडबाइन), खिडकियो पर रखे हुए पुष्पपात्र, घर के पास लगी शिशिर की शुष्कता एव उदासी को दूर करनेवाली तथा हरित ग्रीष्म का छलावा उत्पन्न करने वाली एव अगीठी के पास बैठे लोगो मे आशा भरनेवाली शूलपर्णी—ये सब उच्च स्रोतो से आने वाली और लोक-मानम के निम्नतम स्तरो तक व्याप्त हो जानेवाली सुरुचि की कहानी कहते है। जैसा कि कविगण गाते है, यदि कभी प्रेम को किसी कुटिया मे जाने मे आनन्द का अनुभव होता हो, तो निश्चित रूप से वह कुटिया आग्ल कृषक की होगी।

अग्रेजो के उच्च वर्गो मे ग्राम्यजीवन के लिए जो अनुराग पाया जाता है उसका उनके राष्ट्रीय चरित्र पर महत् एव शुभ प्रभाव पडा है। मै आग्ल भद्रजनो से अच्छी मानवो की किसी जाति को नही जानता। जब दूसरे देशो के उच्चवर्गीय लोगो मे सुकुमारता एव स्त्रैणता पाई जाती है तब इनमे लालित्य एव शक्ति, शारीरिक हृष्टपुष्टता तथा वर्ण की ताजगी के दर्शन होते है। इसका कारण मैं यही समझता हू कि वे बहुत ज्यादा खुली हवा मे रहते है और देहात के स्फूर्ति एव शक्ति देनेवाले मनोविनोदो तथा क्रीडाओ मे खूब भाग लेते है। इन कठोर कसरतो के कारण उनके मस्तिष्क एव मन को एक स्वस्थ वृत्ति

प्राप्त होती है तथा पौरुष एव आचार की वह सरलता भी मिलती है जिन्हे नगर की बुराइया और स्वैराचार भी आसानी से विकृत नही कर पाते, और पूरी तरह नष्ट तो कर ही नही सकते। इसके अतिरिक्त देहात मे समाज के विभिन्न वर्ग ज्यादा स्वतन्त्रतापूर्वक एक-दूसरे से मिलते-जुलते है, वहा एक दूसरे के प्रति उनमे अधिक अनुकूलता एव सामजस्य प्राप्त होता है। वहा उनके बीच का अन्तर इतना स्पष्ट एव अपूरणीय नही मालूम होता जितना नगरो मे मालूम होता है। जिस ढग पर छोटी-छोटी जमीदारियो मे सम्पत्ति का विभाजन हुआ है उससे सरदारो (नोबुलमैन) या ताल्लुकेदारो से लेकर, छोटे भूमिस्वामियो, बडे कृषको तथा श्रमिको-खेतिहरो तक भद्रजनो की क्रमिक श्रेणिया बन गई है और इसने जहा समाज के दोनो छोर पर स्थित वर्गों को बाधकर निकट ला दिया है वहा बीच की प्रत्येक श्रेणी मे स्वतन्त्रता की भावना भी भर दी है। हा, यह स्वीकार करना पडेगा कि पहले यह बात जितने व्यापक रूप से सत्य थी, उतनी आज नही रह गई है, क्योकि सकट के पिछले दिनो मे बडी-बडी इस्टेटो ने छोटियो को आत्मसात् कर लिया है, और देश के कुछ भागो मे तो छोटे कृषको के दृढाग समाज को लगभग नष्ट ही कर दिया है। परन्तु मेरा विश्वास है कि उपर मैंने जिस सामान्य प्रणाली का उल्लेख किया है उसमे ये क्षणिक अन्तराय है।

ग्रामीण अधिवास मे कुछ भी क्षुद्र एव हेयकारी नही है। यह मनुष्य को प्राकृतिक महानता और सौन्दर्य की ओर ले जाता है, यह उसे अपनी बुद्धि के अनुसार चलने को प्रेरित करता है और उसपर पवित्रतम एव परम उत्थानकारी बाह्य प्रभाव काम करते है। ऐसा आदमी सरल और अपरिष्कृत हो सकता है, परन्तु वह ओछा नही हो सकता। इसलिए सस्कारवान आदमी को ग्राम्य जीवन मे निम्न वर्गों के साथ बात करने या मिलने-जुलने मे विरक्ति या घृणा नही अनुभव होती, जैसी कि उसे नगर मे कभी-कभी निम्न वर्गों के आदमियो के साथ मिलने मे होती है। यहा तो वह अपनी दूरी और अलगाव को दूर फेक देता है, और श्रेणी-भेद को एक ओर रखकर सर्वनिष्ठ जीवन के सच्चे एव हार्दिक उपभोग मे शामिल हो जाता है। यही क्यो, देहात के आमोद-प्रमोद ही ऐसे होते है कि वे आदमियो को अधिकाधिक निकट लाते है। मै समझता हू कि यह एक बडा कारण है कि क्यो इग्लैण्ड की निम्न मानव-श्रेणियो मे

रईस एव भद्रजन जितने लोकप्रिय है उतने और किसी देश मे नही है, और क्यो गरीबो ने वहा धन एव सुविधाओ के विषम वितरण पर विशेष क्षुब्ध हुए बिना अत्यधिक दबावो एव कष्टो को सहन किया है।

सुसभ्य एव देहाती समाज के इस हेलमेल के कारण ही ब्रिटेन के साहित्य मे भी ग्राम्य-भावना व्याप्त दिखाई पडती है, उसमे ग्राम्यजीवन के उदाहरणो एव चित्रणो का बार-बार प्रयोग हुआ है, वे निरुपमेय प्रकृति-वर्णन, जो चॉसर की "फूल एव पत्ती" ("दि फ्लावर ऐण्ड दि लीफ")से आरम्भ होकर सब आग्ल कवियो मे पाये जाते है और ओसपूर्ण भू-चित्र लेण्डस्केप) की सम्पूर्ण ताजगी एव सुगन्ध हमारी झोपडियो मे ले आते है। दूसरे देशो के ग्राम्य-लेखको को पढकर ऐसा प्रतीत होता है, जैसे उन्होने क्वचित् ही प्रकृति का दर्शन किया हो और उसके सामान्य सौन्दर्य से परिचित हो गए हो, किन्तु ब्रिटिश कवि तो उसके बीच रहे है और उसके साथ उन्होने रगरेलिया की है उन्होने अत्यन्त गुप्त बसेरो मे उसको रिझाने का प्रयत्न किया है, उन्होने उसके सूक्ष्म हावभावो को, अदाओ को देखा है। मन्दानिल मे टहनी नही हिलती, एक पत्ता धरती पर नही सरसराता, एक हीम्न-बिन्दु-धारा मे 'टप-टप नही करता अकिंचन वायलेट (पुष्प) से सुगन्ध नही निकल सकती, न डेजी (फूल) अपनी रक्तिम आभा प्रभात मे उद्घाटित करती है, किन्तु इन भावोद्दीप्त एव सूक्ष्म पर्यवेक्षको ने उन्हे देखा है और किसी सुन्दर पुण्यशीलता मे उनको चित्रित कर दिया है।

ग्रामीण अधिवास के प्रति श्रेष्ठ मस्तिष्को की, बडे लोगो की इस भक्ति का देश के चेहरे-मोहरे पर अद्भुत प्रभाव पडा है—उसका चेहरा ही बदल गया है। इस द्वीप का एक बहुत बडा भाग सपाट है, और यदि उसमे सस्कृति का आकर्षण न होता तो वह उबानेवाला हो जाता, किन्तु जैसी कि बात है, वह किलो और महलो से परिपूरित है और पार्को एव उपवनो से अलकृत है। उसमे महान् एव भव्य दृश्य बहुत कम है किन्तु ग्रामीण विश्रान्ति एव आश्रित शान्ति के लघु गृह-दृश्य खूब है। प्रत्येक पुरातन खेतघर तथा कार्ययुक्त कुटीर तस्वीर है और चूकि सडक निरन्तर घूमती एव मुडती जाती है तथा यह दृश्य निकुजो एव झाडीदार बाडो के कारण तिरोहित है, आखे दिल लुभाने वाले सौन्दर्य से पूर्ण लघु-भू-चित्रो (लैण्डस्केप) की अटूट शृखला को देखकर तृप्त हो जाती है।

किन्तु आग्ल दृश्यपट का सबसे बडा आकर्षण वह नैतिक भावना है जो

उसमे व्याप्त दिखाई पडती है। वह मस्तिष्क की व्यवस्था की नीरवता की, सयत सु-प्रतिष्ठित सिद्धान्तो की, प्राचीन परम्पराओ एव आदृत रीतियो की याद दिलाती है। हर वस्तु युगो के नियमित एव शान्तिपूर्ण अस्तित्व से विकसित हुई मालूम पडती है। अपने नीचे, परन्तु स्थूलकाय, सिहद्वार से युक्त प्राचीन स्थापत्य वाला उसका पुराना चर्च, उसका गाथिक स्तम्भ, नक्काशी के काम एव चित्रित शीशे वाले उसके वातायन, वर्तमान भूस्वामियो के पूर्वजो —वीर एव प्रतिष्ठित पुरुषो के भव्य स्मारक, उस पुष्टशरीर कृषक-वर्ग की अनुवर्त्ती पीढियो के समाधि प्रस्तर, जिनके बच्चे आज भी उन्ही खेतो को जोत रहे है और उसी वेदिका पर नमन कर रहे है, पादरीघर, एक विचित्र, अनियमित ढेर, जो अशत प्राचीन है किन्तु जिसमे विभिन्न युगो और अधिवासियो की विविध अभि-रुचि के अनुकूल परिवर्तन एव सुधार होता गया है, चर्च भूमि से बाहर आने के लिए बनी सोपान-श्रेणिया, और आह्लादकारी खेतो मे से होकर झाडीदार बाडो के साथ-साथ आगे बढती पगडडिया, जो न जाने किस युग से गुजरने के अधिकार का दावा करती चली आई है, अपने सम्माननीय कुटीरो, तथा हरित सार्व-जनिक मैदान, जो उन वृक्षो से आच्छादित है जिनके नीचे आज नीचे की पीढी के पूर्वज खेलते आए है, से युक्त पडोसी गाव, कुछ दूर हटकर लघु ग्राम्य क्षेत्र मे खडा किन्तु निकटवर्ती दृश्यपट की ओर सरक्षक की मुद्रा मे देखता हुआ प्राचीन पारि-वारिक सौध आग्ल भूदृश्य की ये सब सामान्य विशेषताए एक शान्त एव स्थिर सुरक्षा और उन गृहोत्पन्न गुणो तथा स्थानीय आसक्तियो के आनुवशिक सम्प्रे-षण का भाव व्यक्त करती है जिनसे राष्ट्र के नैतिक चरित्र का पता चलता है।

रविवार के प्रभात का वह दृश्य कितना सुखद है जब घडियाल की मन्द ध्वनि खेतो के पार तक पहुच रही होती है और कृषक-वर्ग सुन्दर परिच्छद मे अपने गुलाबी मुखडे एव उत्फुल्लता को लिए हुए हरित वीथिकाओ से चर्च की ओर जा रहा होता है, परन्तु इससे भी सुखद है उन्हे सध्या समय देखना, जब वे अपने कुटीर-द्वारो के पास एकत्र होते है और उन आह्लादो एव अलकरणो को देखकर गद्गद हो जाते है जिन्हे उनके ही हाथो ने उनके चतुर्दिक् फैला दिया है।

यही मधुर गृह-भावना, पारिवारिक दृश्य मे अनुराग की यही स्थिर विश्रान्ति वस्तुत, स्थिरतम गुणो एव पवित्रतम सुखोपभोगो की जननी है, और मै इन असम्बद्ध वचनो को इससे ज्यादा अच्छी तरह समाप्त नही कर सकता कि एक ऐसे आधु-

निक आग्ल कवि के शब्दो को उद्धृत कर दू जिसने इस भाव को उल्लेखनीय सहजता के साथ व्यक्त किया है—

श्रू ईच ग्रेडेशन, फ्राम दि कैसिल्ड हाल,
दि सिटी डोम, दि विला राउण्ड विद् शेड।
बट चीफ फ्राम मॉडेस्ट मैशस नम्बरलेस,
इन टाउन आर हैमलेट, शेल्टरिग मिडिल लाइफ,
डाउन टु दि काटेज्ड वेल, ऐण्ड स्ट्रा-रूफ्ड शेड,
दिस वेस्टर्न आइल हैथ लाग बीन फेम्ड फार सीस
व्हेयर ब्लिस डोमेस्टिक फाइण्ड्स ए ड्वेलिग-प्लेस,
डोमेस्टिक ब्लिस, दैट, लाइक ए हार्मलेस डोव,
(आनर ऐण्ड स्वीट एण्डियरमेण्ट कीपिग गार्ड,)
कैन सेण्टर इन ए लिटिल क्विट नेस्ट
आल दैट डिजायर वुड फ्लाई फार श्रू दि अर्थ,
दैट कैन, दि वर्ल्ड एल्यूडिग, बी इटसेल्फ
ए वर्ल्ड एनज्वाएड, दैट वाण्ट्स नो विटनेस
बट इट्स ओन शेयरर्स, ऐण्ड एप्रूविग हैवन,
दैट लाइक ए फ्लावर डीप हिड इन राकी क्लेफ्ट,
स्माइल्स, दो 'टिज लुकिग ओनली ऐट दि स्काई।[1]

(हिन्दी भावानुवाद)

गढ-प्रकोष्ठ, नागर गुम्बद, वे तरुछायाच्छादित हवेलिया,
उनसे बढकर वे असख्य प्रासाद नगर के, वे झोपडिया,
जिनमे मध्यवर्ग का जीवन वह आशा-आश्रय पाता है,
जिसके कारण द्वीप पश्चिमी का यश सकल विश्व गाता है,
जहा पारिवारिक आनन्दो का सुखकर विश्राम-स्थल है,
जहा निरीह कपोत-तुल्य लघु नीडो मे उसका सबल है,
जहा मान के, मधुर प्रेम के प्रिय सम्बोधन सुन पडते हैं,

---

१. राजकुमारी चार्लोट के देहावसान पर, रेवरेण्ड रान केनेडी-द्वारा रचित कविता से।

जहा जगत् के मजु दृगचल कोमल अश्रुबिन्दु झडते है,
जिन्हे चाहिए यह सुख वे जगती को लाघ-लाघ आते है,
विश्व भागता है उनसे पर वे तो अमर विश्व पाते है,
विश्व जो कि पुलकित है निज मे, जिसे न साक्षी की आवश्यकता,
केवल अशी गण मे नर्तित है इस लघु आश्रय की ममता,
यही स्वर्ग है, नग-दीर्ण की गहराई मे छिपे पुष्प-सा,
नभ की ओर देखता केवल, मुस्काता है चकित रूप-सा।"

भग्न हृदय

आई नैवर हर्ड

आफ एनी ट्रू अफेक्शन, बट 'ट वाज़ निप्ट
विद केयर, दैट, लाइक दि केटरपिलर, ईट्स
दि लीव्स आफ दि स्प्रिग्स स्वीटेस्ट बुक, दि रोज़ ।

—मिडिलटन

कभी न मैने सुना कि कोई सत्य प्रेम ऐसा होता है,
जिसमे चिन्ताओ के मारे मनुज नहीं सुध-बुध खोता है ।
चिन्ताए, वसन्त की मृदुतम पुस्तक उस पाटल के अन्दर,
इल्ली-सी बैठी पंखुरियां खाया करतीं अहो, निरन्तर ।।

जिन लोगो की आरम्भिक भावना की सवेदनशीलता मर चुकी है या जो लोग व्यसनासक्त जीवन की उत्फुल्ल हृदयहीनता मे पले है, उनमे यह आदत आमतौर से पाई जाती है कि वे सभी प्रेम-कथाओ पर हसते है और रूमानी प्रणयोन्माद की बातो को केवल उपन्यासकारो एव कवियो की मनगढन्त कहानिया कह देते है । परन्तु मैने मानव चरित्र के जो पर्यवेक्षण किए है उनसे मै कुछ और ही सोचने को विवश हुआ हू । उनके कारण मुझे विश्वास हो चुका है कि ससार की चिन्ताओ के कारण मानव-चरित्र ऊपरी तल पर चाहे जितना ठण्डा हो, चाहे जितना जम गया हो, कठोर हो गया हो या समाज की कलाओ के कारण केवल मुस्कराना सीख गया हो किन्तु ठण्डे से ठण्डे हृदय मे भी ऐसी सुप्त चिनगारिया पडी होती है, जो एक बार जग जाने पर, प्रचण्ड हो जाती है तथा कभी-कभी तो उनका परिणाम यह होता है कि सब कुछ मिटकर राख हो

जाता है। मुझे तो अन्धदेव (प्रेम) मे पक्का विश्वास है और उसके सिद्धान्तो को मैं पूरी तरह मानता हू। क्या मैं स्वीकार करू कि मै हृदय टूट जाने और निराश प्रेम से मर जाने की सम्भावना मे विश्वास करता हू ? हा, मै इसे ऐसा रोग नही मानता जो पुरुषो के लिए प्राय साघातिक सिद्ध होता हो परन्तु मै पूर्णत विश्वास करता हू कि यह बहुतेरी सुन्दर स्त्रियो को सुखाकर शीघ्र कब्र मे पहुचा देता है।

पुरुष स्वार्थ एव महत्त्वाकाक्षा का प्राणी है। उसकी प्रकृति उसे ससार के सघर्ष एव कोलाहल की ओर ले जाती है। प्रेम उसके प्रारम्भिक जीवन का शृगारमात्र है अथवा उसे कर्म के मध्यान्तरो मे सुनाई पडनेवाला एक गान समझ लीजिए। वह यश के लिए, धन के लिए और विश्व के विचारो मे अपना स्थान बनाने के लिए तथा अपने मानव-बन्धुओ पर प्रभुता स्थापित करने के लिए प्रयत्न करता है। किन्तु स्त्री का सम्पूर्ण जीवन ही अनुराग का इतिहास है। उसका हृदय ही उसकी दुनिया है। उसकी महत्त्वाकाक्षा उसीके अन्दर साम्राज्य बनाने की होती है, वही उसका लोभ गुप्त कोषो की खोज करता है। दुस्साहसिकताओ से वह सहानुभूति रखती है और प्रेम के व्यवसाय मे ही अपनी सम्पूर्ण आत्मा लगा देती है। यदि जहाज़ बीच मे टकराकर टूटा तो उसके बचने की आशा नही—क्योकि उसके लिए यह हृदय का दीवालिया हो जाना, उसका ही समाप्त हो जाना है।

पुरुष को यदि प्रेम मे निराशा हुई तो उसे कुछ तीखी टीसे होती है, कुछ कोमल भावनाओ को चोट लगती है—मृदुलता एव लालित्य की कतिपय सम्भावनाए छिन्न-भिन्न हो जाती है, किन्तु वह कर्तृत्वप्रधान प्राणी है—विविध कार्यो के आवर्त्त मे वह अपने विचारो को विलीन कर सकता है, या आमोद-प्रमोद की धारा मे डुबकी ले सकता है, अथवा यदि निराशा का दृश्य व्यथासकुल स्मृतियो से बहुत पूर्ण रहा तो स्वेच्छा से वह अपना निवास कही और बदल सकता है और प्रभात के पखो पर सवार होकर "धरित्री के दूरतम भागो मे जाकर विश्राम प्राप्त कर सकता है।"

किन्तु स्त्री का जीवन, उसकी तुलना मे कही, स्थिर, एकान्त एव मननशील-कल्पनाशील होता है। वह अधिकाशत अपने ही विचारो एव भावनाओ की साथिन होती है, और वे ही यदि शोक के साधनो के अधीन हो गए तब वह

बेचारी सान्त्वना के लिए किसकी ओर देखेगी ? उसका अस्तित्व तो प्रणय-निवेदन से पुरस्कृत होने एव उसके द्वारा विजित होने के लिए है, जब वह प्रेम मे दु खी होती है, निराश होती है तो उसका हृदय उस गढी के समान हो जाता है जिसे कब्जे मे लाया गया हो, फिर लूटा गया हो और फिर उजाडकर छोड दिया गया हो ।

कितने उद्दीप्त नयन धुधले पड जाते है, कितने कोमल कपोल विवर्ण हो जाते है , कितनी मनोरम देहे नष्ट होकर कब्र मे, मृत्यु की गोद मे चली जाती है, और कोई कह नही सकता कि किस कारण उनका सौन्दर्य नष्ट हो गया । जैसे कपोत उस बाण को छिपाने के लिए अपने पख और चिपटा लेता है जो उसके प्राण दुह रहा है, वैसे ही यह स्त्री की प्रकृति है कि वह आहत प्रेम की टीसो एव वेदनाओ को दुनिया की निगाह से छिपाती है । नाजुक स्त्री सदा लज्जालु एव मौन रहती है । जब वह सौभाग्यवती होती है तब वह क्वचित् ही अपने मन से भी अपनी बात कहती है, और जब दुर्भाग्य के दिन आते है तब वह अन्तर की गुप्त गुफाओ मे अपनी वेदना को दफ़ना देती है । वह वेदना, उसके शान्ति के खडहरो मे भूमि पर दुबकी हुई चिन्ता किया करती है । उसके साथ ही उसके हृदय की कामना भी मिट गई है । अस्तित्व का, जीने का महत् आकर्षण समाप्त हो गया है । अब वह उन सब हर्षभरी कार्रवाइयो की उपेक्षा करती है जो प्राणो को प्रफुल्ल करती है, नाडियो (रक्तप्रवाह) को तेज कर देती है और रक्तवाहिनियो-द्वारा जीवन का ज्वार स्वस्थ धाराओ मे प्रवाहित करती है । उसका आश्रय टूट गया है—निद्रा की मधुर ताजगी शोकावह स्वप्नो से विपाक्त हो गई है—"शुष्क शोक तबतक उसका रक्तपान करता रहता है" जबतक कि उसकी दुर्बल देहयष्टि लघुतम बाह्य आघात मे डूब नही जाती । कुछ दिनो बाद उसकी खोज करने पर आप देखते है कि मित्रता उसकी असामयिक समाधि पर रो रही है और आश्चर्य कर रही है कि कुछ ही दिनो पूर्व जो स्वास्थ्य एव सौन्दर्य से दमक रही थी वह इतनी जल्दी "अन्धकार एव कीटाणु" की गोद मे कैसे पहुच गई । आपको बताया जाएगा कि उसे शिशिर का शीत लग गया था, या कोई आकस्मिक बीमारी हो गई थी जिसने उसको समाप्त कर दिया—किन्तु कोई उस मानसिक रोग को नही जानता जिसने उसकी सारी शक्ति पहिले ही चूस ली थी, और उसे लुटेरे रोग का आसान शिकार बनाकर छोड दिया था ।

वह उस कोमल पादप के समान है, जो उपवन का गर्व एव सौन्दर्य है, जो आकार मे मनोरम तथा पत्र-पल्लव मे दीप्त है, किन्तु जिसके हृदय को, गूदे को कीडा खा रहा है। एक दिन हम सहसा देखते है कि वह सूख रहा है—जबकि उसे पूर्णत नवीन एव समृद्ध होना चाहिए था। हम देखते है कि उसकी शाखाए धरती पर लटक आई है, एक-एक करके पत्ते गिरते जा रहे है—यहा तक कि सूखकर, नष्ट होकर वह बन की नीरवता मे ही गिर पडता है, और जब हम उस सुन्दर ध्वसावशेष पर चिन्ता करने बैठते है तो व्यर्थ ही किसी प्रहार या विद्युत्-पात की याद करने का यत्न करते है जिसने उसे ह्रास की दाढो से दबोच लिया हो।

मैने ऐसी बहुत-सी स्त्रियो का उदाहरण देखा है जो अपने को घुला-घुलाकर और उपेक्षा करने के कारण धीरे-धीरे पृथिवी से लुप्त हो गई है, जैसे भाप बन-कर स्वर्ग की ओर उड गई हो। तब मै बार-बार सोचता था कि विविध ह्रास-द्वारा उनकी मृत्यु की खोज राजयक्ष्मा, जुकाम, शक्तिहीनता, थकावट, विषाद इत्यादि रोगो मे कर सकता हू। इन्ही कारणो की खोज करता हुआ मै निराश प्रेम के प्रथम लक्षणो तक पहुचा। ऐसी ही एक घटना पिछले दिनो मुझे सुनाई गई, जिस प्रदेश मे यह घटना घटी वहा तत्सम्बन्धी परिस्थितिया लोगो को भलीभाति ज्ञात है। मुझे तो वह जिस रूप मे सुनाई गई उसी रूप मे यहा लिख रहा हू।

आयरिश देश भक्त तरुण ई—की दु खान्त कहानी हर आदमी को याद होगी, वह इतनी करुणाजनक थी कि शीघ्र भुलाई नही जा सकती। आयरलैण्ड के क्रान्तिकाल मे उसपर मुकद्दमा चला, सजा हुई और उसे फासी दे दी गई। उसके भाग्य ने सार्वजनिक सहानुभूति पर गहरा प्रभाव डाला। वह इतना तरुण, इतना बुद्धिमान्, इतना उदार, इतना वीर, हर ऐसी चीज मे, जिसको हम किसी तरुण मे देखना पसन्द करते है, अच्छा था। मुकद्दमे के समय भी उसका आचरण बडा भव्य और निर्भय था। जिस उदात्त रोष के साथ उसने अपने देश के प्रति द्रोह करने के आरोप का खण्डन किया, जिस वाग्मिता के साथ उसने अपने नाम की सफाई दी और फासी की सजा की निराश घडियो मे जिस प्रकार भावी पीढियो से करुण अपील की, उसके कारण उसकी वे सब बाते प्रत्येक उदार व्यक्ति के हृदय मे गहरा प्रवेश कर गई और उसके शत्रुओ तक

ने उस कठोर नीति पर दु ख प्रकट किया जिसके कारण उसे फासी हुई थी ।

यह सब तो था ही, परन्तु एक हृदय ऐसा था जिसकी व्यथा कही नही जा सकती । सुख एव सौभाग्य के दिनो मे उसे ग्रायरलैण्ड के एक प्रतिष्ठित स्वर्गीय बैरिस्टर की सुन्दरी ग्रौर चित्तरजक कन्या का प्यार मिला था । वह लडकी उसे नारी के प्रथम एव प्रारम्भिक प्रेम के स्वार्थहीन भावोद्वेग के साथ चाहती थी । जब प्रत्येक सासारिक सिद्धान्त तरुण के विरुद्ध ग्राकर खडा हो गया, जब धन-सम्पत्ति नष्ट हो गई ग्रौर कलक तथा सकट का ग्रन्धकार उसके नाम के चतुर्दिक् घिर ग्राया, तब वह उसके प्रत्येक कष्ट-सहन के कारण उसे ग्रधिकाधिक गहराई से प्यार करने लगी । यदि तरुण के भाग्य को देखकर उसके शत्रुग्रो के हृदय सहानुभूति से भर जा सकते है तो जिसकी सम्पूर्ण ग्रात्मा के ग्रन्दर उसकी तस्वीर समाई हुई थी उसकी यत्रणा कैसी रही होगी ! इसे वही बता सकता है जिसने ग्रपने ग्रौर जिसे वह दुनिया मे सबसे ग्रधिक चाहता था उसके बीच कब्र के द्वार को सहसा बन्द होते हुए देखा है, जिसने उसकी देहरी पर बैठकर यह देखा है कि एक ठण्डी ग्रौर ग्रकेली दुनिया मे जिससे वह सब कुछ चला गया है जो सुन्दर ग्रौर प्यार से भरा था, बन्द हो जाने का क्या ग्रर्थ है ।

फिर ऐसी कब्र की भीपणताए ! ऐसा भयजनक, ऐसा कलकपूर्ण ग्रन्त ! स्मृति के लिए ऐसा कुछ नही जो विरह की यत्रणाग्रो के बीच किंचित् सान्त्वना दे सके, उन कोमल, यद्यपि शोकजनक, परिस्थितियो मे से एक भी नही, जो विरह के दृश्य को प्रिय बना देती है—ऐसा कुछ भी नही जो शोक को उन पवित्र ग्रासुग्रो मे द्रवित कर देता है जो टीस से भरी बिछोह की घडी मे हृदय को बल देने के लिए स्वर्ग के ग्रोस-बिन्दुग्रो के रूप मे ग्रा जाते है ।

ग्रपनी वैधव्यपूर्ण परिस्थिति मे वह इसलिए ग्रौर भी निराश्रित हो गई थी कि उसके पिता इस दुर्भाग्यपूर्ण ग्रनुराग के कारण उससे ग्रप्रसन्न हो गए थे ग्रौर उसे पैतृक ग्राश्रय से बाहर निकाल दिया गया था । ऐसी प्रहार-पीडित ग्रौर भीषण स्थिति मे धकेल दी गई लडकी को मित्रो की सहानुभूति एव सहायता की कमी नही थी क्योकि ग्रायरिश लोग उदार सवेदनाग्रो वाले होते है । धनी एव प्रतिष्ठित कुटुम्बियो की ग्रोर से उसपर ग्रत्यन्त सूक्ष्म एव वाछित ध्यान दिया गया । उसे समाज मे, गोष्ठियो एव क्लबो मे, प्रतिष्ठा का स्थान दिया गया ग्रौर लोगो ने उसके दु:ख को भुलाने के लिए हर तरह के कार्य एव ग्रामोद-

प्रमोद की योजना की। उन्होने उसके प्रेम की करुण कथा के वातावरण से उसे दूर ले जाने का हरएक सम्भव प्रयत्न किया। किन्तु सब व्यर्थ गया। विपदा की कुछ चोटे ऐसी है जो आत्मा को क्षतिग्रस्त कर देती—झुलसा देती है—जो सुख के जीवनमय केन्द्र को चीरकर घुस जाती है, और उसे इस प्रकार विनष्ट कर देती है कि उनमे फिर कलिया या फूल खिलने की सम्भावना ही नही रह जाती। इस लडकी ने आमोद-प्रमोद के स्थानो मे जाने से कभी इन्कार नही किया, किन्तु वहा जाने पर भी वह इतनी ही अकेली रहती थी जितनी अकेली एकान्त की गोद मे होने पर अनुभव करती थी, इन स्थानो मे भी वह शोकाच्छन्न दिवा-स्वप्न मे डूबी अपने चारो ओर के ससार से बेखबर घूमती फिरती थी। वह अपने साथ एक ऐसी आन्तरिक यत्रणा लिए होती थी जो मैत्री की सम्पूर्ण चाटूक्तियो का उपहास करती और विमोहक के गान की ओर ध्यान ही न देती थी, भले ही वह सम्मोहन की क्रिया कितनी भी चतुराई के साथ की जाती हो।

जिस आदमी ने उसकी कहानी मुझे सुनाई थी, उसने उसे एक बालडास—सहनृत्य—मे देखा था। दूर तक अन्दर बैठी हुई विपदा का दर्शन ऐसे दृश्य के बीच जितना बेधक एव व्यथाजनक हो सकता है, उतना दूसरी स्थिति मे नही हो सकता। जहा चारो ओर हर्ष और उल्लास का सागर उमड रहा हो वहा उसे एक अकेली एव आनन्दरहित प्रेतछाया की भाति डोलते देखना, विवर्ण एव दुखमग्न होने पर भी अपनी वेदनापर हास्य का जाल फैलाते देखना, मानो शोक को क्षणभर भुलाने के लिए वह अपने अकिचन हृदय को धोखा दे रही हो, कितना व्यथाजनक है? शानदार कमरो और अचेत भीड मे पूर्ण अनासक्ति और अलगाव की भावना के साथ घूमने के बाद वह जाकर आरकेस्ट्रा के आसन पर बैठ गई और कुछ देर तक शून्य दृष्टि से इस प्रकार देखती रही जिससे प्रकट होता था कि वह इस भडकीले दृश्य के प्रति बिल्कुल बेखबर है। फिर अस्वस्थ हृदय की चचलता के साथ उसने एक शोकाकुल गीत गाना शुरू किया। उसका कण्ठ बहुत सुरीला था, किन्तु इस अवसर पर वह इतना सरल, इतना करुण था और उसमे दुर्भाग्य की आत्मा इस प्रकार उच्छ्वसित थी कि उसके चारो ओर मूक एव मौन लोगो की एक भीड एकत्र हो गई और हर एक की आखो से आसू टपकने लगे।

ऐसी सच्ची एव कोमल आत्मा की कहानी उस देश मे गहरी दिलचस्पी

पदा किये बिना नही रह सकती थी जो अपने उत्साह के लिए प्रमिद्ध हो। उसने एक वीर अफसर का दिल पूरी तरह जीत लिया। अफसर ने सोचा कि जो एक मृत प्राणी के प्रति इतनी सच्ची और ईमानदार है वह एक जीवित के प्रति भी प्रेमल हुए बिना नही रह सकती। लडकी ने उसकी खुशामदो को अस्वीकार किया, क्योकि उसके विचार उसके पूर्ववर्ती प्रेमी की स्मृति मे ही निमग्न थे। परन्तु उस अधिकारी ने प्रेम-याचना का क्रम जारी रखा। वह उसकी मृदुलता का नही, उसके सम्मान का भिखारी था। इस विषय मे उसे इस बात से भी सहायता मिली कि लडकी उसकी योग्यता की कायल थी तथा उसे अपनी अनाथ एव पराश्रयी स्थिति का भी भान था, क्योकि वह मित्रो की कृपा पर जी रही थी। सक्षेप मे कहे तो लडकी विवाह के लिए तैयार हो गई किन्तु उसने गम्भीर भाव से यह स्पष्ट कर दिया कि उसके हृदय पर अपरिवर्तनीय रूप मे दूसरे का अधिकार है।

अफसर प्रणयी उसे अपने साथ सिसली (इटली का एक स्थान) ले गया। उसे आशा थी कि दृश्य-परिवर्तन से शायद पहले के दुख की स्मृति धुल जाएगी। वह बडी ही मृदु एव आदर्श पत्नी थी और खुश रहने का प्रयत्न करती थी, किन्तु जो मौन एव भक्षणकारी दुख उसकी आत्मा मे प्रविष्ट हो गया था उसे कोई भी चीज दूर नही कर सकती थी। धीरे-धीरे परन्तु आशा-रहित ह्रास मे, वह घुलती गई, और भग्नहृदय का शिकार वह लडकी अन्त मे कब्र की गोद मे जा पडी।

प्रसिद्ध आयरिश कवि मूर ने उस पर निम्नाकित पक्तिया लिखी थी—

शी इज फार फ्राम दि लैण्ड व्हेयर हर यग हीरो स्लीप्स,
ऐण्ड लवर्स एराउण्ड हर आर साइग
बट कोल्डली शी टर्न्स फ्राम देयर गेज, ऐण्ड वीप्स,
फार हर हार्ट इन हिज ग्रेव इज लाइग।

× ×

शी सिंग्स दि वाइल्ड साग्स आफ हर डियर नेटिव प्लेन्स,
एव्री नोट व्हिच ही लव्ड अवेकिंग—
आह! लिटिल दे थिंक, हू डिलाइट इन हर स्ट्रेन्स,
हाऊ दि हार्ट आफ दि मिंस्ट्रल इज ब्रेकिंग।

ही हैड लिव्ड फार हिज,लव—फार हिज कंट्री ही डाइड,
दे वेयर आल दैट टु लाइफ हैड एन ट्वाइण्ड हिम।
नार सून शैल दि टियर्स आफ हिज कंट्री बी ड्राईड,
नार लाग विल हिज लव स्टे बिहाइण्ड हिम ॥

× ×

ओ ! मेक हर ए ग्रेव व्हेयर दि सनबीम्स रेस्ट,
व्हेन दे प्रामिज ए ग्लोरियस मारो।
दे 'ल शाइन ओ' र हर स्लीप, लाइक ए स्माइल फ्राम दि वेस्ट,
फ्राम हर ओन लव्ड आईलैण्ड आफ सारो ॥

(हिन्दी अनुवाद)

वहुत दूर वह देश जहा उसका प्रणयी सोता है,
इधर प्रेमियो के समूह है उस पर खडे मिहाते।
रूखेपन से नैन फिरा लेती, अन्तर रोता है,
उसका हृदय कब्र मे उसकी पडा, न कोई भाते ॥

× ×

वन्यगीत अपने प्रिय देशी मैदानो का गाती,
ओ प्रत्येक तान जो उसको प्रिय थी यहा उठाती।
नही समझते उसकी ताने है वे जिन्हे सुहाती,
हृदय गायिका का फटता है, जो प्रेमी की थाती ॥

× ×

वह तो जिया प्रेमिका के हित, मरा देश-हित अपने,
जीवन के सर्वस्व यही थे उसके मन के प्यारे।
शीघ्र न सूखेगे स्वदेश के आसू और न सपने,
और प्रेमिका छोड, जाएगी प्रिय तक सभी सहारे ॥

× ×

करो समाधि जहा स्वर्णिम किरणे सूरज की सोती,
और जहा वे भव्य उषा की आगमनी गाती है।
उसकी निद्रा पर चमकेगे मुस्कानो के मोती,
उन किरणो मे, शोक-द्वीप से उसके जो आती है ॥

ग्रन्थ-निर्माण की कला

यदि साइनेसियस की यह कठोर उक्ति सत्य हो कि—"मृत व्यक्तियो के कफन चुराने की अपेक्षा उनके श्रम को चुरा लेना कहीं अधिक बड़ा अपराध है" तो अधिकांश लेखको का क्या हश्र होगा ?

—बर्टन-लिखित एनेटमी आफ मैलकली (विषाद की शारीरिकी)

मुझे प्राय प्रेस की अतिशय उर्वरता पर आश्चर्य होता रहा है। मुझे यह देखकर भी आश्चर्य हुआ है कि कैसे उन बहुतेरे सिरो पर मोटे-मोटे ग्रन्थो के निर्माण का बोझ लद गया है जिनपर प्रकृति ने ही अनुर्वरता का अभिशाप लाद दिया था। परन्तु जब मनुष्य जीवन की यात्रा मे आगे बढता है तब जिन चीजो पर उसे आश्चर्य हुआ करता था वे दिन-दिन मिटती जाती है और उसे बराबर विस्मय की बडी-बडी बातो के भी बहुत सरल कारणो का पता चलता जाता है इसी तरह इस महती राजधानी मे घूमते-फिरते हुए मै गलती से एक ऐसे दृश्य के सामने जा पडा जिसने मेरे सम्मुख ग्रन्थ-निर्माण-कौशल के कुछ रहस्यो को खोल दिया, तथा मेरे आश्चर्य की समाप्ति हो गई।

ग्रीष्म ऋतु के एक दिन मैं ब्रिटिश म्यूजियम के बडे-बडे कक्षो मे ऐसे उदासीन भाव से चहलकदमी कर रहा था जिसके साथ लोग गरम मौसम मे किसी म्यूजियम मे घूमा करते है, कभी मैं धातुओ वाले शीशे के केसो पर झुका होता, कभी किसी मिस्त्री ममी के चित्रलेखो का अध्ययन करने लगता, और कभी उतनी ही सफलता-सहित ऊची छतो के रूपक—चित्रो को समझने की कोशिश करता। जब मै ऐसे अलस ढग पर इधर-उधर देख रहा था तब प्रकोष्ठो की शृंखला के पार एक दूरस्थ द्वार की ओर मेरा ध्यान गया। वैसे वह बन्द था परन्तु थोडी-थोडी देर मे वह खुल जाता था और सामान्यत काले वस्त्र पहिने एक विचित्र-सा आदमी जैसे चोरी के कदम रखता हुआ उससे निकलता और

निकटवर्ती पदार्थों की ओर ज़रा भी दृष्टि डाले बिना कमरो से गुज़र जाता था इसमे रहस्य का कुछ ऐसा वातावरण था जिसने मेरी निष्क्रिय जिज्ञासा को झकझोर दिया और मैने निश्चय कर लिया कि सकीर्ण गलियारे को पार कर उसके परे जो अज्ञात प्रदेश है उसका पता जरूर लगाऊगा। मेरे हाथ रखते ही द्वार उतनी ही सरलता से खुल गया जैसे भुतहे किलो के द्वार दुस्साहसिक मध्ययुगीन वीरो के सामने खुल जाया करते थे। अब मैने अपने को एक विशद कमरे मे पाया जिसमे वन्दनीय पुस्तको के बडे-बडे केस लगे हुए थे। केसो के ऊपर और कार्निस या मुडेरी के नीचे प्राचीन ग्रन्थकारो के काले-काले से दीखने वाले बहुसख्यक चित्र लगे हुए थे। एक तरफ कमरे मे इधर-उधर तक लम्बे टेबल रखे हुए थे, जिनके साथ लिखने-पढने के लिए स्टैण्ड बने हुए थे। वहा बहुत से विवर्ण अध्ययनशील व्यक्ति बैठे धूलभरी पुस्तको को बडे ध्यान से पढने, फफूद-लगी हस्तलिपियो का अनुसधान करने और उनसे विशद टिप्पणिया लिखने मे लगे हुए थे। इस रहस्यमय कक्ष मे नीरव शान्ति छाई हुई थी, केवल कागज के तख्तो पर कलम के दौडाने या किसी पुरानी पुस्तक के ऊपर झुकने मे अपना आसन बदलते हुए इन साधुओ मे से किसी के नि श्वास फेकने पर ही कुछ ध्वनि सुनाई पड जाती थी। यह नि श्वास उस रिक्तता एव आडम्बर से निकलता था जो विद्वत्तापूर्ण अनुसन्धान के साथ सम्बद्ध है।

कभी-कभी इन व्यक्तियो मे से कोई कागज के एक छोटे टुकडे पर कुछ लिखता था, फिर घण्टी बजाता था जिसपर एक कर्मचारी वहा पहुच जाता, गम्भीर मौन के साथ वह कागज ले लेता, धीरे-धीरे कमरे के बाहर जाता और कुछ ही देर मे मोटी-मोटी पुस्तके लिए लौट आता, जिन पर वह अनुसन्धानकर्ता क्षुधार्त्त के पेटूपन के साथ टूट पडता था। अब मुझे कोई सन्देह नही रह गया कि मैं तान्त्रिक विज्ञानो के गहरे अध्ययन मे डूबे ऐन्द्रजालिको की मण्डली मे पहुच गया हू। यह दृश्य देखकर मुझे एक पुरानी अरबी कथा याद आ गई जिसमे पर्वतो के हृदय मे बने एक भुतहे पुस्तकालय मे एक तत्त्ववेत्ता बन्द हो जाता था। इस पुस्तकालय का द्वार साल मे सिर्फ एक बार खुलता था। वह तत्त्ववेत्ता वहा बैठा हुआ प्रेतात्माओ—द्वारा रहस्यमयी विद्याओ की हर तरह की पुस्तके मगवाता और जब एक साल के अनन्तर जादू भरा द्वार अपने कब्जो पर घूमकर खुल जाता तो वह विद्वान् उसमे निषिद्ध विज्ञानो मे निष्णात होकर बाहर

निकलता और जनसमूहो के सिरो के ऊपर उडने लगता तथा प्रकृति की शक्तियो पर नियत्रण कर लेता था।

चूकि इस समय तक मेरी उत्कण्ठा पूर्णत जाग्रत् हो चुकी थी, मैने कमरे से बाहर जा रहे एक कर्मचारी के कान मे अपने सामने फैले इस दृश्य का अर्थ पूछा, उसके चन्द शब्द ही मेरे तात्पर्य की पूर्ति के लिए पर्याप्त थे। मुझे मालूम हुआ कि ये रहस्यमय व्यक्ति, जिन्हे मैने भूल से ऐन्द्रजालिक समझ लिया था, मुख्यत ग्रन्थकार है, और ग्रन्थ-निर्माण कार्य मे ही लगे हुए है। वस्तुत इस समय मै एक ऐसे महत् ब्रिटिश पुस्तकालय के वाचनालय मे था जिसमे सभी युगो एव भाषाओ का प्रभूत ग्रन्थ-सग्रह था। इनमे से कितने ही इस समय विस्मृत हो चुके थे और अधिकाश ऐसे थे जिन्हे अब शायद ही कोई पढता है, अप्रचलित साहित्य के ऐसे ही वियुक्त पोखरो से आधुनिक ग्रन्थकार बाल्टियो प्राचीन ज्ञान ले लेते है और उनमे अपने विचार के स्वल्प नालो को मिला देते है।

अब चूकि मुझे रहस्य ज्ञात हो गया था, मै एक कोने मे बैठ गया और इस ग्रन्थनिर्माण की प्रक्रिया को देखने लगा। एक क्षीण, पित्तग्रस्त-से आदमी पर मेरी नजर गई जो काले अक्षरो मे मुद्रित सबसे अधिक कीडो की खाई पुस्तके ही मगवाता था। स्पष्टत वह गहन पाण्डित्य का कोई ऐसा ग्रन्थ-निर्माण करने मे लगा था जिसे ऐसा हर आदमी खरीदे, जो दूसरो की दृष्टि मे अपने विद्वान् समझे जाने की आकाक्षा रखता हो, और अपने टेबल पर रखे किन्तु कभी उसे पढे नही। मैं देख रहा था कि बीच-बीच मे वह अपनी जेब से बिस्कुट का एक बडा-सा टुकडा निकालता और मुह मे डाल चबाने लगता था। पता नही कि यह उसका भोजन था या वह जठर की परिक्लान्ति को दूर करने की चेष्टा कर रहा था जो शुष्क ग्रन्थो के अत्यधिक अध्ययन से पैदा होती है। इसका निर्णय करने का भार मैं अपने से अधिक परिश्रमी छात्रो पर छोड देता हू।

उनमे दीप्तवर्ण वस्त्रो से आच्छादिन एक चुस्त नाटा आदमी भी था। उसका चेहरा गुनगुनाता और गप-शप करता मालूम पडता था। उसके मुख पर ऐसे ग्रन्थकार की सम्पूर्ण अभिव्यक्ति थी जिसका अपने पुस्तकविक्रेता के साथ अच्छा सम्बन्ध हो। भलीभाति देखने पर मैंने पहिचान लिया कि वह विविध ग्रन्थो से सामग्री सगृहीत करने मे पटु है—ऐसा सग्रह बना डालने मे जो बाज़ार मे खूब चलता है। मैं यह देखने को उत्कण्ठित था कि वह अपनी चीजे कैसे तैयार

करता है । वह औरो से कही ज्यादा चचल था और अपने को अत्यधिक व्यस्त प्रकट करता था, कभी विविध ग्रन्थो मे झाकता, कभी हस्तलिपियो के पृष्ठ फडफडाता, एक कौर एक ग्रन्थ से लेता, एक दूसरे से, पक्ति पर पक्ति, सूत्र पर सूत्र, कुछ यहा से कुछ वहा से ।" उसके ग्रन्थ की विषय-सूची इतनी पच-मेल लगती थी जितनी मैकबेथ की जादूगरनी की देग की थी । कही से उगली, कही से अगूठा, मेढक का पजा तो क्षुद्रचक्षु सरीसृप का डक । फिर मिश्रण को स्वादिष्ठ और लसदार बनाने के लिए "लगूर के रक्त" के समान कुछ अपनी लतरानी की चाशनी भी डाल देता था ।

मैने सोचा कि क्या श्रेष्ठ उद्देश्यो के लिए इस चौर्यकला का ग्रन्थकारो मे अभिनिवेश नही किया जा सकता, क्या इस रास्ते पर चलाने मे दैव ने यह सावधानी नही रखी है कि ज्ञान एव प्रज्ञा के बीज एक युग से दूसरे युग मे बरा-बर सुरक्षित चलते रहे, भले ही उन ग्रन्थो का ह्रास हो जाए जिनमे वे पहली बार उदित हुए थे ? हम देखते है कि प्रकृति ने, बडी बुद्धिमत्ता, यद्यपि कुछ सनक के साथ, कतिपय पक्षियो के पेट मे बीज के एक देश से दूसरे देश मे ले जाए जाने का प्रबन्ध किया है । इस प्रकार जो जानवर, अपने तई लोथ से कुछ ही अच्छे होगे और देखने मे वृक्षसमूहो एव अन्नक्षेत्र के कानून-विरुद्ध विनाश-कर्त्ता है, वे ही वस्तुत प्रकृति के वरदानो को वितरित एव स्थायी करने मे उसके वाहक का काम करते है । इसी तरह प्राचीन एव अप्रचलित लेखको के सौन्दर्य एव उदात्त विचार लुटेरे लेखको की इन उडानो से गृहित हो काल के दूरस्थ क्षेत्र मे पनपने और फल पैदा करने के लिए छोड दिए जाते है । उनकी बहुत-सी रचनाओ का, एक प्रकार से, पुनर्जन्म होता है और वे नव-नव रूप धरकर प्रकट होती है । जो कभी भारी-भरकम इतिहास था, वह रोमास के रूप मे पुनर्जीवित हो उठता है, एक पुराना आख्यान आधुनिक नाटक के रूप मे बदल जाता है, और एक गम्भीर दार्शनिक पुस्तिका पुष्ट एव प्रभामय निबन्धो की एक पूरी माला के लिए सामग्री दे देती है । अपने अमरीकी वन्यप्रान्तो मे भी तो यही होता है कि हम उच्च और शानदार पाइनो का जगल जला देते है, और बौने बलूतो की सन्तति उनकी जगह उगने लगती है, हमे किसी वृक्ष का धराशायी तना तो मिट्टी मे मिलता हुआ दिखाई नही देता किन्तु वह छत्रको (कुकुरमुत्तो) के झुण्ड के झुण्ड पैदा कर देता है ।

इसलिए हमे उस ह्रास एव विस्मरण पर विलाप करने की आवश्यकता नही है जिसमे प्राचीन लेखक गिर जाते है, वे केवल प्रकृति के उस महान कानून के वशीभूत होने है जो घोपित करता है कि पदार्थ की सम्पूर्ण पार्थिव आकृतियो की अवधि सीमित होगी, किन्तु जिसका यह भी फैसला है कि उनके तत्त्वो का नाश कभी नही होगा। पीढी के बाद पीढी, प्राणी एव वनस्पति जीवन दोनो मे, समाप्त होती जाती है, किन्तु प्राण-तत्त्व, जीवन-तत्त्व सदा बना रहता है, और प्रजाति फलती-फूलती रहती है। इसी प्रकार ग्रन्थकार से ग्रन्थकार पैदा होते रहते है और बहुतेरी सन्तति उत्पन्न करने के बाद, वृद्धावस्था मे वे अपने पितरो अर्थात् उन लेखको के साथ सो जाते है जो उनके पूर्ववर्त्ती थे, और जिनसे उन्होने चोरी की थी।

जब मै इन असम्बद्ध कल्पनाओ मे डूबा हुआ था तब मेरा सिर श्रद्धास्पद ग्रन्थो के एक ढेर पर झुक गया। चाहे उन ग्रन्थो के निद्राकर प्रभाव के कारण हो, कमरे की गहन शान्ति के कारण हो, या बहुत घूमने की थकावट के कारण हो, या चाहे अनुचित समय एव स्थान पर ऊघने की मेरी उस दुर्भाग्यपूर्ण आदत के कारण हो, जिससे मै बुरी तरह ग्रस्त हू, मतलब चाहे जैसे हो मुझे झपकी आ गई। इतना होने पर भी मेरी कल्पना बराबर व्यस्त बनी रही बल्कि वही दृश्य भी मेरी आखो के आगे बना रहा, बस ब्यौरे की बातो मे थोडा अन्तर हो गया। मैने स्वप्न देखा कि प्रकोष्ठ अब भी प्राचीन लेखको के चित्रो से अलकृत है किन्तु उनकी सख्या बढ गई है। लम्बे-लम्बे टेबल लुप्त हो गए है और ऐन्द्र-जालिक की जगह जीर्ण-शीर्ण वस्त्राच्छादित फटेहाल लोगो की भीड है—जैसी कि उतारे हुए, पुराने वस्त्रो के भण्डार मानमाउथ स्ट्रीट मे दिखाई पडती है। ज्यो ही वे कोई पुस्तक उठाते, स्वप्न मे प्राप्त किसी सामान्य असगति के कारण, वह विदेशी या प्राचीन फैशन की पोशाक मे बदल जाती और वे उसीको पहिनने लगते थे। मैंने यह भी देखा कि कोई एक ही विशेष वस्त्र नही पहिन रहा है, बल्कि किसीकी बाह तो किसीकी केप (बिना बाह का लबादा) और तीसरे की स्कर्ट इस तरह खण्ड वस्त्रो को लेकर अपने को सजा रहा है और इन मगनी के वस्त्रो के बीच से भी उसके मूल जीर्ण वस्त्र झाक रहे है।

उनमे एक भारी-भरकम, गुलाबी रग का, खूब खाने-पीने वाला पादरी था जो खुर्दबीन से कतिपय अत्यन्त प्राचीन विवादास्पद लेखको की ओर कनखी

मार रहा था। बहुत जल्द उसने पुराने धर्मयाजको मे से एक का मोटा लबादा उठाकर पहिन लिया और दूसरे की भूरी दाढी चुराकर लगा ली और अत्यन्त प्रबुद्ध दिखने का प्रयत्न करने लगा किन्तु उसके चेहरे-मोहरे की बनावटी हसी ने ज्ञान के समस्त जाल को विच्छिन्न कर दिया। एक बीमार-सा दीखनेवाला आदमी महारानी एलिजाबेथ के राज्यकाल के प्राचीन दरबारी वस्त्रो मे से निकाले हुए सोने के तारो से एक बहुत मामूली पोशाक मे कसीदा काढ रहा था। एक-दूसरे ने प्रदीप्त पाण्डुलिपि से अपने को खूब सजा रखा था और अपने सीने पर "सुन्दर विधियो का स्वर्ग" से लेकर पुष्प-गुच्छ लगा रखा था। अपने सिर के एक ओर सर फिलिप सिडनी का हैट लगाए हुए कुसस्कृत मार्दव की हवा बाधे अकडकर चल रहा था। एक और ने, जो नाटे कद का था, तत्त्वज्ञान की कतिपय अप्रचलित पुरानी पुस्तको से चुराई सामग्री से अपने को फुला लिया था जिससे उसका अग्रभाग बडा प्रभावशाली हो गया था, किन्तु पृष्ठ भाग मे उसके चीथडे वैसे ही दिखाई दे रहे थे। ध्यान से देखने पर मैने पाया कि उसने एक लैटिन ग्रन्थकार की पुस्तक के पन्नो से अपने जीर्ण लघुवस्त्रो मे पैबन्द लगा रखे है।

यह सच है कि उनमे कुछ सुवस्त्राच्छादित सज्जन भी थे जिन्होने केवल एकाध रत्न उठाकर लगा लिया था। यह रत्न उनके आभूषणो के बीच चमकता तो था किन्तु उनकी ज्योति को धूमिल नही करता था। कुछ ऐसे थे जो पुराने लेखको के वस्त्रो का पर्यवेक्षण केवल इसलिए कर रहे थे कि उनकी रुचि के सिद्धान्तो को अपनाए और उनका-सा वातावरण और भावना पैदा करे, किन्तु यह कहते हुए मुझे दु ख होता है कि उनमे अधिकतर ऐसे ही लोग थे जो सिर से पैर तक अपने को उसी पैबन्दगीरी के ढग पर सजाए हुए थे जिसका वर्णन मैंने ऊपर किया है। मै यहा एक और प्रतिभावान का वर्णन किए बिना नही रह सकता। वह बादामी रग की बिरजिस और गेटर पहिने तथा आर्केडियन हैट लगाए हुए था, बहुत-कुछ चरवाहे-जैसा लगता था किन्तु जिसकी ग्राम्य-यात्राए प्रिमरोज हिल के प्राचीन सैरगाह और रीजेण्ट के एकान्त स्थानो तक सीमित थी। उसने अपने को समस्त प्राचीन ग्राम्य कवियो की मालाओ एव सम्मान-चिह्नो से सजा रखा था और एक ओर सिर को तिरछा किए, शानशौकत एव दभपूर्ण हाव-भाव से "हरे खेतो के बारे मे प्रलाप करता" चला जा रहा था। परन्तु

जिस व्यक्ति ने मेरा ध्यान सबसे ज्यादा आकर्षित किया वह था क्लर्की की पोशाक मे एक धृष्ट बूढा, जिसका सिर लम्बा एव वर्गाकार तथा खल्वाट था। उसने हाफते एव गला घरघराते हुए कमरे मे प्रवेश किया और भीड के बीच मे से दृढ आत्म-विश्वास के साथ राह बनाता हुआ चौपेजी आकार की मोटी यूनानी पुस्तक तक पहुचा, उस पर हाथ डाला, उसे अपने सिर पर रखा और उसे एक भीषण घुघराले विग (उपकेश) की भाति पहिने हुए शान के साथ चला गया।

इस साहित्यिक नृत्य के पूर्ण आरोह के अवसर पर प्रत्येक दिशा से जोर की चिल्लाहट सुनाई पडी—"चोर! चोर!" मैने इधर-उधर देखा। अरे! दीवार पर लगे छविचित्र सजीव हो उठे थे! पुराने लेखको ने पहले एक सिर, फिर कधा कैनवास से गिराया, क्षण-भर भीड की ओर उत्कण्ठापूर्वक देखा, और अपने नयनो मे रोष की आग जलाए, चुराई सम्पत्ति का दावा करने के लिए, नीचे आ गए। इससे जो कोलाहल पैदा हुआ और जो भगदड मची, उसका वर्णन करना मुश्किल है। अभागे अपराधियो ने अपनी लूट का माल लेकर भागने की व्यर्थ चेष्टा की। एक ओर दिखाई पडा कि आधा दर्जन वृद्ध सन्यासी किसी आधुनिक प्रोफेसर को नगा कर रहे है, दूसरी ओर आधुनिक नाट्यलेखको की मण्डली बुरी तरह पिट रही है। कैस्टर एव पोलुक्स की तरह ब्यूमोण्ट और फ्लेचर क्रुद्ध होकर साथ-साथ घूम रहे है तथा दृढाग बेन जानसन उससे भी ज्यादा कमाल दिखा रहे है जितना उन्होने फ्लैण्डर्स के युद्ध मे एक सैनिक स्वयसेवक के रूप मे दिखाया था। जिस नाटे चुस्त सकलनकर्त्ता का जिक्र हम कुछ समय पहले कर चुके है, उसके शरीर पर इतने घाव और रग उभरे हुए थे जितने हार्लेक्विन पर भी दिखाई न पडे होगे, और उसके दावेदारो मे इतनी गहरी प्रतियोगिता थी जैसी कि पैत्रोक्लस के मृत शरीर के लिए दिखाई पडी थी। मुझे यह देखकर दु:ख हुआ कि जिन बहुतेरे आदमियो को मैं आतक एव भक्ति के साथ देखने का अभ्यस्त रहा हू उनके पास अपने नगेपन को ढकने के लिए एक चिथडा भी नही रह गया है। ठीक इसी समय मेरी निगाह यूनानी विग वाले उस उद्धत बूढे भद्रजन पर पड गई जो नितान्त भीत मुद्रा मे भागा जा रहा था और आधा दर्जन ग्रन्थकार चीखते हुए उसका पीछा कर रहे थे। वे उसके कूबड तक पहुच गए थे, निमिषमात्र मे उसका विग छिन गया और हर मोड पर पोशाक का कुछ न कुछ भाग निकलता गया—यहा तक कि सब कुछ गिरने से वह लगभग नगा

हो गया और पीठ पर झूलते चन्द चीथडो के साथ वहा से गायब हो गया।

इस विद्वन्मण्डली की तबाही कुछ इतनी हास्यास्पद थी कि मैं अट्टहास कर बैठा जिससे सारी माया छिन्नभिन्न हो गई। कोलाहल और हाथापाई का कही नाम न था और प्रकोष्ठ अपने पूर्व रग पर आ गया था। प्राचीन ग्रन्थकार फिर दीवारो पर अपनी-अपनी जगह लौट गए और वहा छायापूर्ण गम्भीरता मे लटक गए। सक्षेप मे, मैं अपने स्थान पर जग गया। पुस्तक-कीटो की सारी मण्डली मेरी ओर आश्चर्य के साथ ताक रही थी। केवल मेरे अट्टहास के सिवा स्वप्न की कोई बात वास्तविक नही थी और इस प्रकार की ध्वनि उस गम्भीर पुण्यालय मे कभी सुनी नही गई थी। वह प्रज्ञा के कानो के लिए इतनी भयावनी थी कि सारी बिरादरी सजीव हो उठी थी।

अब पुस्तकालयाध्यक्ष मेरे पास आया और पूछा कि क्या मेरे पास प्रवेश-पत्र है? पहिले तो मै उसकी बात समझ ही न पाया किन्तु शीघ्र ही मुझे ज्ञान हो गया कि यह पुस्तकालय एक प्रकार का साहित्यिक "रक्षितस्थान" (शिकार-गाह) है जिसमे शिकार के अपने नियम है और बिना विशेष लाइसेस एव अनुज्ञा के कोई उसमे शिकार खेलने नही जा सकता। एक शब्द मे कहे तो मै इस समय वहा पक्के जगलचोर के रूप मे खडा था, इसलिए इसके पहिले कि लेखको की पूरी मण्डली मुझपर टूट पडे मै सिर नीचा किए प्रत्यावर्त्तन कर गया।

एक राजकवि

दो योर बॉडी बी कनफाइण्ड,
एण्ड साफ्ट लव ए प्रिजनर बाउण्ड,
येट दि ब्यूटी आफ योर माइण्ड
नीदर चेक नार चेन हैथ फाउण्ड ।
लुक आउट नोबली, देन, ऐण्ड डेयर
ईवन दि फेटर्स दैट यू वियर ।

—फ्लेचर

(हिन्दी भावानुवाद)

हो शरीर बन्धनो से ग्रस्त यह भले,
मृदुल प्रेम भी अगर बन्दी हो चले,
किन्तु मजुता जो है अन्तर मे शेष तव,
बन्धनो और बेड़ियो मे नहीं पले ।
सिर को ऊचा किए हुए जग को देख लो ।
बेड़ियां भी गर्वभरे दृग से पेख लो ।।

मई का सुहावना मास था । एक मृदुल सूर्य-रजित प्रभात मे मै विण्डसर कैसिल का भ्रमण करने निकला था । यह एक ऐसा स्थान है जिसके साथ अनेक कथात्मक एव काव्यात्मक स्मृतिया सम्बद्ध है । गौरवमय प्राचीन पुजो के बाह्य-दर्शन से ही उच्च विचार जाग्रत् हो जाते है । यह कैसिल (गढ) एक ऊचे टीले के माथे पर आभूषित भित्तिमुकुट की भाति, अपनी टेढी-मेढी दीवारो एव विशाल गुम्बदो का पालन करता है, बादलो मे अपनी राजकीय पताका फहराता है और चतुर्दिक् स्थित ससार की ओर प्रभु-भाव से देखता है ।

उस प्रभात मे मौसम ऐसी मोहक वासन्ती छटा से पूर्ण था, जो मानव-स्वभाव मे निहित सम्पूर्ण रूमानी भावना को जगा देती है और मन को सगीत से भर देती तथा कविताए गुनगुनाने और सौन्दर्य का स्वप्न देखने को बाध्य करती हे । गढ के विशाल कक्षो एव लम्बे प्रतिध्वनि-कम्पित गलियारो मे घूमते हुए मै उन वीरो एव राजमर्मज्ञो के छविचित्रो की शृखला से उदासीनतापूर्वक गुजर गया, जो चार्ल्स द्वितीय के विलासितापूर्ण दरबार की सुन्दरियो के चित्रो के साथ दीवार से लटके हुए थे । मैने जब इन सुन्दरियो पर उनके अधखुले कामनाकलित केश और प्रेम के निद्रालु नयनो सहित, निगाह डाली तो मैने सर पीटर लेली की पेंसिल का धन्यवाद किया, जिसने मुझे सौन्दर्य की प्रतिबिम्बित किरणो से दमकने का यह अवसर प्रदान किया । धूप मे चमकती भूरी दीवारो वाले 'लम्बे हरित प्रागणो' को पार करते हुए तथा मखमली शाद्वलभूमि पर नजर डालते समय मेरा दिमाग उस कोमल, वीर किन्तु अभागे सरे की छवि और अपने किशोर वय मे लेडी गेरल्डाइन पर आसक्त हो इन स्थानो मे घूमने के उसके वर्णनो से भर उठा था—

उस कुमारिका की ऊची आकृति मे खोये नयन हमारे ।
नि श्वासो से पूरित, जैसे प्रेम-मग्ध कोई मानव हो ।।
(विद् आईज कास्ट अप अनटु दि मेडेस टावर
विद् ईजी साइज, सच ऐज मेन ड्रा इन लव)

काव्यात्मक भावनाओ मे इस प्रकार खोए हुए मैने किले के प्राचीन बन्दी-गृह को देखा, जहा स्काटिश कवियो एव इतिहासकारो का गौरव एव विषय, स्काटलैण्ड का जेम्स प्रथम, अपने यौवन-काल मे बहुत वर्षो तक राजबन्दी के रूप मे रखा गया था । यह एक बडा, भूरा स्तम्भ है, जिसने युगो के प्रहार सहन किए हैं और अब भी अच्छी हालत मे है । यह एक टीले पर स्थित है जिसके कारण किले के दूसरे भागो से ऊचा हो गया है और बहुत-सी सीढिया चढने के बाद ही इसके अन्दर पहुचा जा सकता है । गाथिक हाल मे जो शस्त्रागार है उसमे अनेक प्रकार और अनेक युगो के अस्त्र-शस्त्र सजाए गए है । मुझे दीवार से लटकता एक ऐसा वशचिह्नयुक्त वर्म दिखाया गया जो किसी समय जेम्स की सम्पत्ति था । फिर मुझे सीढियो-से ऐसे कक्ष मे ले जाया गया जिसका सौन्दर्य फीका पड गया था और जिसमे प्राचीन समय से सुन्दर पर्दे झूल रहे थे । यही

स्थान उसके बन्दीगृह के रूप मे प्रयुक्त किया गया था और यही उस भावोद्दीप्त एव कल्पनाप्रधान प्रणय का स्थान था जिसने उसके कथा-जाल मे काव्य एव कहानी के जादुई रग भर दिए है।

इस स्नेही किन्तु अभागे राजकुमार का सम्पूर्ण इतिहास ही अत्यधिक रूमानी है। ग्यारह साल की छोटी आयु मे उसके पिता राबर्ट तृतीय ने उसे घर से फरासीसी दरबार मे भेज दिया था जिससे फरासीसी सम्राट् की देखरेख मे उसका पालन-पोषण एव विकास हो और वह स्काटलैण्ड के राजवश के चतुर्दिक् फैले विश्वासघात एव खतरे से सुरक्षित रहे। किन्तु दुर्भाग्य-वश अपनी यात्रा के मध्य ही वह अग्रेजो के हाथ मे पड गया और यद्यपि दोनो देशो के मध्य युद्ध-विराम की सन्धि थी, फिर भी हेनरी चतुर्थ ने उसे बन्दी बना लिया।

उसके दु खी पिता तो पहले से ही अनेक दु खो एव विपत्तियो मे फसे हुए थे। इसलिए पुत्र के बन्दी बनाए जाने का समाचार वह सहन न कर सके और वह उनके लिए साघातिक सिद्ध हुआ। हमे बताया गया है कि "जब वह रात के भोजन पर बैठे थे तभी उनको यह समाचार सुनाया गया जिसने उन्हे शोक मे इस प्रकार निमग्न कर दिया कि वह अपने खिदमतगार की बाहो मे ही दिवगत होते-से जान पडे। किसी तरह उन्हे उनके शय्या-भवन तक ले जाया गया। उन्होने खाना-पीना बिल्कुल छोड दिया और तीन दिनो के अन्दर ही भूख और दु ख से राथसे मे दिवगत हो गए।"[१]

जेम्स अठारह वर्ष से अधिक आयु तक बन्दी रहा। यद्यपि उसकी वैयक्तिक स्वतन्त्रता छीन ली गई थी किन्तु उसके साथ व्यवहार उसकी पद-मर्यादा के अनुकूल ही किया जाता था। उस समय जिन विद्याओ का प्रचलन था उन सबमे उसे उपयोगी ज्ञान दिया गया। उसे वे सब बाते सिखाई गई जो एक राजा या राजकुमार के मानसिक एव वैयक्तिक विकास के लिए उन दिनो आवश्यक समझी जाती थी। बल्कि इस दृष्टि से उसका बन्दीजीवन उसके लिए उपयोगी ही सिद्ध हुआ, क्योकि इससे उसे अपने को विकसित करने, चुपचाप ज्ञान के अमित कोष से लाभ उठाने और उन सब उदात्त अभिरुचियो को बढाने का अवसर मिला जिनके कारण उसकी स्मृतियो को इतना गौरव प्राप्त हुआ है।

---

१ **बुचानन।**

स्काटिश इतिहासकारो ने उसके प्रारम्भिक जीवन का जो चित्र खीचा है, वह अत्यन्त आकर्षक है और वास्तविक इतिहास के चरित्र की अपेक्षा एक रूमानी नायक के वर्णन से अधिक मेल खाता है। हमे बताया गया है कि "वह असि-युद्ध, अश्वारोहणावस्था मे बर्छा-युद्ध करने, सैनिक कला, मल्लयुद्ध, गान तथा नृत्य मे निष्णात था। वह वहुत अच्छा वैद्य, सारगी और विपचीवादन तथा अन्य सगीतवाद्यो मे प्रवीण तथा व्याकरण, वक्तृत्वकला एव काव्य का अच्छा ज्ञाता था।"[1]

जिस व्यक्ति मे पुरुषोचित तथा मृदुल दोनो प्रकार की उपलब्धियो का ऐसा सयोग हो,—सयोग जो उसे सक्रिय एव मृदुल दोनो प्रकार के जीवन मे चमकने योग्य बनाता हो और आनन्दपूर्ण जीवन के प्रति गहरे स्वाद से पूर्ण करने वाला हो, उसके लिए कोलाहल एव वीरता के उस युग मे अपना वसन्तकाल इस प्रकार नीरस बन्दीगृह मे बिताना कैसा कठोर परीक्षण प्रमाणित हुआ होगा। किन्तु यह उसका सौभाग्य था कि उसे बडी शक्तिमती काव्य-कल्पना प्राप्त हुई थी, वाणी की सुन्दरतम भावनाए जेल मे उसके अन्दर मुखर हो उठती थी। कुछ लोग ऐसे होते है जिनका मानस, शारीरिक स्वतन्त्रता लुप्त हो जाने पर, विकृत और निष्क्रिय हो जाता है, कुछ दूसरे, ऐसी स्थिति मे रोगी एव चिडचिडे हो जाते है किन्तु यह कवि की प्रकृति है कि वह बन्दीगृह के एकान्त मे और भी मृदुल एव कल्पनाशील हो जाता है। वह अपने ही विचारो का मधु पीता है और बन्दीपक्षी की भाति अपनी आत्मा को सुर-लय मे उडेल देता है—

नही है देखा, क्या कोकिला को
जो तीर्थयात्री है पिजरे की।
गाती है कैसी निज दु ख-कथाए
बैठी हुई आश्रम के एकान्त मे ॥

यही सिद्ध कर रही वहा भी उसकी मजुल मृदुल तान है।
सभी तीलिया वृक्ष बन गई, पिजरे मे उपवन का भान है ॥

(मूल)

हेव यू नाट सीन दि नाइटिगेल,
ए पिलग्रिम कोप्राप्ड इनटु ए केज,

---

१ हेक्टर ब्वाएस कृत बैलेण्डेन का अनुवाद।

हाऊ डथ शी चैण्ट हर वोण्टेड टेल,
इन दैट हर लोनली हरमिटेज ।

ईवेन देयर हर चार्मिग मेलोडी डथ प्रूव,
दैट ग्राल हर बाउज ग्रार ट्रीज, हर केज ए ग्रोव ।[१]

यह कल्पना का दैवी गुण है कि वह ग्रदम्य एव ग्रबाध्य होती है, जब यथार्थ जगत् दृष्टि से ग्रोझल कर दिया जाता है तब वह ग्रपने लिए स्वय जगत् की सृष्टि कर सकती है, वह एकान्त को जनाकीर्ण बनाने तथा कालकोठरी के ग्रधेरे को प्रदीप्त करने के लिए ग्रपनी जादुई शक्ति से ग्राकर्षक मूर्त्तियो एव ग्राकृतियो ग्रौर उदात्त दृश्यो का निर्माण कर सकती है । जव फेरारा की ग्रपनी ग्रधियारी कोठरी मे तास्सो को रहना पडा था तब उसके इर्द-गिर्द तडक-भडक एव शोभा का ऐसा ही ससार छा गया था ग्रौर उसीके बीच उसने ग्रपने यरू-शलेम के भव्य दृश्यो की कल्पना की थी, जेम्स ने विण्डसर मे बन्दी रहते समय जो "किग्स क्वेयर" काव्य की रचना की थी उसमे भी बन्दीगृह के बन्धन एव उदासी को बहा ले जाने वाले ग्रात्मा के सुन्दर प्रवाह के दर्शन होते है ।

कविता का विषय है इग्लैण्ड के राजवश की एक राजकुमारी समरसेट के ग्रर्ल की कन्या कुमारी जेन ब्यूफोर्ट के प्रति उसका प्रेम । बन्दीगृह मे रहते समय ही वह उसपर ग्रासक्त हो गया था । जो बात इस रचना को विशेष मूल्य प्रदान करती है वह यह है कि इसे राजकवि की सच्ची भावनाग्रो तथा उसके यथार्थ प्रेम एव सौभाग्य का प्रतिरूप माना जा सकता है । बादशाहो के कविता लिखने के दृष्टान्त कम ही है, यह भी बहुत कम देखा जाता है कि कवि तथ्यो का वर्णन करते हो । सामान्य मानव जब देखता है कि एक सम्राट् इस प्रकार उसकी झोपडी मे प्रवेश के लिए व्याकुल है ग्रौर उसके ग्रामोद-प्रमोद की चिन्ता रखता है तो उसके ग्रह को इससे तृप्ति होती है । यह बौद्धिक प्रतियोगिता की सच्ची समानता का एक प्रमाण है कि वह कृत्रिम मर्यादा के जाल को छिन्न-भिन्न कर देती, उम्मीद वार को ग्रपने साथी मानवो के स्तर पर ले ग्राती ग्रौर बाध्य करती है कि प्रतिष्ठा एव विशिष्टता प्राप्त करने के लिए वह ग्रपनी ही शक्तियो पर निर्भर करे । फिर एक बादशाह के हृदय के इतिहास तक पहुचना ग्रौर उसके रोम के

---

१. रोजर ले' स्त्रांज ।

नीचे मानव प्रकृति के सरल अनुराग की धडकने सुनना कितना विचित्र है। किन्तु जेम्स तो बादशाह होने के पूर्व ही कवि बन गया था, विपदाओ से उसने शिक्षा पाई थी और अपने ही विचारो की सगत मे पला था। बादशाहो के पास अपने हृदयो से आखमिचौनी करने या अपने मानस को काव्य मे उतारने के लिए शायद ही समय रहता है, और यदि जेम्स राजदरबार की चाटूक्तियो और आमोद-प्रमोद के बीच पला होता तो बहुत सम्भव है कि हम उससे "क्वेयर" जैसी कविता न प्राप्त कर सके होते।

मुझे खास तौर से कविता के उन अशो मे दिलचस्पी थी जिनमे उसकी परिस्थितिजन्य भावनाओ का, या स्तभ-स्थित उस विशेष कक्ष का चित्रण हुआ है। उनमे एक वैयक्तिक एव स्थानीय सौन्दर्य है और उनके साथ ऐसे परि-स्थितिजन्य सत्य का दर्शन होता है मानो पाठक उसके साथ स्वय कारागार मे उपस्थित हो, तथा उसकी चिन्तनाओ का साथी हो।

मन की थकान का और उस घटना का, जिसने पहिली बार उसे यह कविता लिखने की प्रेरणा दी, ऐसा ही वर्णन इसमे मिलता है। वह स्वच्छ चन्द्रज्योतित निशा का नीरव मध्य प्रहर था। वह लिखता है कि तारिकाए आकाश के उच्च वितान पर चिनगारियो की भाति टिमटिमा रही थी, "सिन्थिया कुभ राशि (के जलाशय) मे अपने सुनहले केश डुबा रही थी।" वह अपनी शय्या पर जाग रहा था और बेचैन था। उसने अपने नीरस घण्टो को बिताने के लिए किताब उठा ली। यह पुस्तक थी बोनियस की "तत्त्वज्ञान की सान्त्वना" (कानसोलेशस आफ फिलासफी)। यह पुस्तक उन दिनो लेखको के बीच खूब लोकप्रिय थी और जिसे उसके ही महान् प्रतिरूप चासर ने अनूदित किया था। जेम्स ने इसकी जैसी प्रशसा की है उससे प्रतीत होता है कि कारागार मे यह उसकी बडी प्रिय पुस्तक थी, और इसमे कोई सन्देह भी नही है कि विपदा मे चिन्तन के लिए यह बहुत अच्छी पाठ्य-पुस्तक है। यह एक ऐसी उदात्त एव धैर्यवान् आत्मा की देन है जो शोक एव व्यथा से धुलकर पवित्र हो गई थी। उसने सकट मे पडे हुए अपने उत्तराधिकारियो को मधुर नीति तथा वाग्मितापूर्ण यद्यपि सरल तर्क के ऐसे सूत्रो का उपहार दिया है जिनमे वे जीवन के विविध सकटो एव बुराइयो को सहन करने मे समर्थ हो सकते है। यह एक ऐसा कवचमत्र है जिसे दुर्भाग्य-ग्रस्त लोग अपने हृदय मे धारण कर सकते है या भले बादशाह जेम्स की भाति

अपने निशाकालीन तकिए पर रख सकते है ।

कुछ देर उलटने-पलटने के बाद वह पुस्तक बन्द कर देता है तथा अपने मन मे उसकी बातो का ध्यान करता है और धीरे-धीरे भाग्य की सनक, अपने जीवन के उलटफेर तथा कोमल यौवन मे अपने ऊपर आई आपदाओ की चिन्ता मे डूब जाता है। सहसा उसे प्रात कालीन प्रार्थना की घण्टी सुनाई पडती है। किन्तु उसकी ध्वनि उसकी विपादभरी कल्पनाओ मे गूजती हुई ऐसी लगती है जैसे कोई आवाज उसे अपनी कथा लिखने को उत्साहित कर रही हो । अपने काव्यभ्रमण की भावना मे वह इस अनुरोध के पालन का निश्चय करता है, इसलिए वह कलम हाथ मे लेता है, दैवी आशीर्वाद की आकाक्षा से क्रूस का चिह्न अकित करता है और काव्य के कल्पना-लोक मे पलायन कर जाता है। इन सबमे कल्पना का प्राधान्य है, और इसलिए मनोरजक है कि यह ऐसी सरल विधि का उल्लेखनीय एव सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत करता है जिसमे कभी-कभी काव्यात्मक चिन्तन की सम्पूर्ण शृखला जाग पडती है और मन को साहित्यिक माहगिफ्ताओ की ओर प्रेरित करती है ।

अपनी कविता के मध्य, वह एकाधिक बार, अपने भाग्य की विचित्र कठोरता का रोना रोता है कि वह कैसे एकान्त एव निष्क्रिय जीवन मे फेक दिया गया है और ससार के उस स्वातन्त्र्य एव सुखोपभोग से वचित है जिसे क्षुद्रतम प्राणी भी अनियन्त्रित रूप से प्राप्त कर रहे है। जो भी हो, उसकी शिकायतो मे भी एक माधुर्य है, वे एक ऐसी कोमल एव सामाजिक आत्मा के क्रन्दन है जिसे अपनी दयालु एव उदार प्रवृत्तियो तथा रुझानो से वचित कर दिया गया है । उनमे कुछ भी कठोर अथवा अन्र्तग्निपूर्ण नही है, वे स्वाभाविक एव हृदय को स्पर्श करने वाली करुणा से ओतप्रोत है और अपनी सरल सक्षिप्तता के कारण और भी हृदयहारी, और भी करुण हो उठी है । वे उन विस्तृत एव पुनरुक्त मनस्तापो से सर्वथा भिन्न है जिनसे काव्य मे हमारी यदा-कदा भेट हो जाती है—ऐसे रुग्ण मानस के उद्गार जो अपनी ही पैदा की हुई विपदाओ से झुलस रहे होते है और अपनी कटुता एक निर्दोष जगत् पर उगलते रहते है। जेम्स अपनी विपदाओ को तीव्र भावनाओ के साथ उपस्थित करता है किन्तु एक बार उनका वर्णन करके आगे बढ जाता है—मानो उसका पौरुष से भरा मस्तिष्क अपरिहार्य सकटो पर देर तक चिन्तित होने को तैयार नही । जब ऐसा प्राणी

शिकायत करता है, तो वह चाहे जितनी सक्षिप्त हो, हम कल्पना कर सकते है कि जो व्यथा वडवडा रही है, वह कितनी गहरी होगी । हम रूमानी, सक्रिय एव योग्यता प्राप्त राजकुमार जेम्स के प्रति सहानुभूति रखते है क्योकि वह यौवन की सवलता के बीच जीवन के समस्त प्रयासो, उदात्त उपयोगो एव प्राणवन्त सुखो से अलग कर दिया गया है । यह ठीक वैसी ही सहानुभूति है जैसी हम मिल्टन के प्रति उस समय प्रकट करते है जव प्रकृति के समस्त सौन्दर्य एव कला की महानताओ के प्रति जाग्रत् रहते हुए भी वह अपनी चिरन्तन अन्वता पर सक्षिप्त किन्तु गहन करुणा मे डूबा हुआ रोदन करता है ।

यदि जेम्स काव्य-कौशल मे कुछ अपूर्णता न प्रकट करता, तो शायद हम यही सन्देह करते कि विषादपूर्ण भावनाओ के ये निम्नावतरण उसकी कथा के सर्वोत्तम दृश्य की तैयारी-मात्र होगे, या फिर प्रकाश एव सौन्दर्य की उस प्रभा, पक्षी एव सगीत तथा हरीतिमा एव पुष्प के उस समन्वय तथा वर्ष के उस सम्पूर्ण समारोह के प्रति उसकी विपरीतता दिखाने के लिए किए गए होगे जिसके साथ वह अपने हृदय की रानी को काव्य मे प्रविष्ट करता है । विशेष रूप से यही वह दृश्य है जो गढ के पुराने कारागार को रूमानियत के सम्पूर्ण जादू से ढक देता है । वह कहता है कि रीति के अनुसार ही वह तडके, निद्राहीन शय्या की नीरस विचारणाओ से जान बचाने के लिए उठ खडा हुआ है । "इस प्रकार अपने कक्ष मे अकेले विलाप करते हुए" तथा सम्पूर्ण आनन्द एव उपाय से निराश होकर, "दु ख एव चिन्ता से थका हुआ", टहलते हुए वह वातायन के निकट पहुच जाता है क्योकि उस दुनिया पर एक लालसापूर्ण दृष्टि डालने के लिए, जिससे वह अलग कर दिया गया है, यही तो बन्दी की एक मात्र सान्त्वना है । वातायन, स्तम्भ के पाद-भाग मे बने एक छोटे से उपवन की ओर खुलता है । यह उपवन लता-कुजो एव हरित वीथियो से युक्त, छायाच्छादित है, शान्त स्थल है तथा तरुओ एव बाडो से बाहरी लोगो की दृष्टि मे सुरक्षित है ।

Now was there made, fast by the tower's wall,
A garden faire, and in the corners set
An arbour green with wandis long and small
Railed about, and so with leaves beset
Was all the place and hawthorn hedges knet,

That lyf[1] was none, walkyng there forbye
That might within scarce any wight espye

So thick the branches and the leves grene,
Beshaded all the alleys that there were,
And midst of every arbour might be sene
The sharpe, grene, swete juniper,
Growing so fair, with barnches here and there,
That as it seemed to a lyf without,
The boughs did shread the arbour all about

And on the small grene twistis[2] set
The lytel swete nightingales, and sung
So loud and clear, the hymnis consecrate
Gf lovis use, now soft, now loud among,
That all the garden and the wallis rung
Right of their song —[3]

(स्वतन्त्र अनुवाद)

स्तभ-भित्ति के पाद-भाग मे लगा हुआ है वह उपवन ।
कुजो, हरित लताओ से है पुलकित जिसका सुन्दर तन ।
लम्बे तरुओ और कटीली बाड-लताओ से रक्षित ।
है एकान्त शान्त मन-भावन मानो हो नन्दन-कानन ।
किसी घूमते-फिरते मानव का है नही वहा दर्शन ।
जिसे कठिनता से भी कोई देख करे उसका अभिनन्दन ।।

सघन वृक्ष-शाखाओ, मृदुतम हरित पल्लवो से परिपूरित ।
लघु वीथिया सकल है जिनकी शीतल छाया से आच्छादित ।

1. व्यक्ति, मनुष्य । 2 लघु शाखाएं या टहनियां ।
3 ये कविताएं अंग्रेजी की पुरानी स्पेलिंग मे हैं ।

कुज-कुज मे जूनीपर की तीखी, हरित, मधुर लतिकाए ।
जहा-तहा शाखाए फैला बढती निज सुषमा से मडित ।
मानव को लगता है जैसे निज मधुमय सुषमा मे माती ।
अपने कोमल मजु करो से है तरु-पुजो को लिपटाती ।।

लघु-लघु हरित लोल शाखाओ पर बैठे वासनी कोकिल ।
मधुमय ऊची, स्वच्छ तान मे गा उठते रस से बोझिल ।
गान पवित्र प्रेम के ऊचे नीचे स्वर मे मधुर मनोरम ।
दिशा, भित्ति, वन, उपवन गुजित, हो उठता सब कुछ तद्दिल ।।

यह मई का महीना था, जब सब कुछ कुसुमित हो उठता है, सब कुछ नव-यौवन से दीप्त हो उठता है । ऐसे समय बन्दी कवि कोकिल के गान का अपने अनुराग की भाषा मे अनुवाद करता है —

वर्शिप, आल यी दैट लवर्स बी, दिस मे,
फार आफ योर ब्लिस दि कैलेड्स बिगन,
ऐण्ड सिग विद अस, अवे, विण्टर, अवे,
कम, समर, कम, दि स्वीट सीजन ऐण्ड सन ।

(स्वतन्त्र हिन्दी अनुवाद)

पूजा करो, सभी तुम प्रेमी, मई मास की जो आया है ।
जो आनन्द-हेतु तव नूतन, सुरभित, मजु वर्ष लाया है ।
आओ, मेरे साथ आज गाओ, ऐ शिशिर दूर हो जाओ ।
आओ, ग्रीष्म मधुर ऋतु आओ, आज अशुमाली भाया है ।।

जब वह इस दृश्य को देखता है और पक्षियो की ताने सुनता है तो धीरे-धीरे एक ऐसे मृदुल एव व्याख्यातीत दिवास्वप्न मे डूब जाता है जो इस रसमय ऋतु मे यौवनपूर्ण हृदयो मे भरा होता है । वह आश्चर्य करता है कि यह प्रेम क्या है, जिसके विषय मे उसने प्राय पढा है, और जो इस प्रकार मई के तेज होते हुए श्वासो मे सास लेता तथा समस्त प्रकृति को परमानन्द एव गान मे द्रवित करता प्रतीत होता है । यदि यह ऐसा ही महत् सौभाग्य है, और ऐसा वरदान है जो अत्यन्त अपदार्थ प्राणियो को भी सामान्यत प्राप्त है तो वही अकेले

क्यो उसके उपभोग से वचित किया गया है

Oft would I think, O Lord, what may this be,
That love is of such noble myght and kynde?
Loving his folke, and such prosperitee
Is it of him, as we in books do find,
May he cure hertes setten[1] and unbynd
Hath he upon our hertes such maistrye?
Or is all this but feynit fantasye?

For giff he be of so grete exellence,
That he of every wight hath care and charge,
What have I gilt[2] to him, or done offense,
That I am thral'd, and birdis go at large?

(स्वतन्त्र पद्यानुवाद)

मै प्राय चिन्ता करता हू, क्या रहस्य है इसका स्वामी ?
प्रेम उदात्त शक्ति से पूरित, और श्रेष्ठ जग मे पावन।
करना प्रेम प्राणियो से, जग के वैभव से अन्तर्यामी,
हम पढते ग्रन्थो मे यह सब तेरा ही गुण है जगवदन।
करो हमारे अन्तर उन्मुख और मुक्त कर दो यह बधन।
अरे, हमारे हृदयो पर छाया है क्या रहस्य बेनामी ?
या यह सब तेरी माया की हल्की छाया है अभिरामी ?

तेरी तो इतनी क्षमता हे, इतनी व्यापक तेरी माया,
करता है प्रत्येक जीव की तू ही चिन्ता, तू ही पालन।
तव हमने क्या पाप किया है, क्या अपराध किया जो काया
मन मेरा अवरुद्ध आज, जब पक्षी मुक्त कर रहे गायन ?

वह अपनी कल्पना मे डूबा हुआ है, उसकी नजर नीचे की ओर चली जाती

---

1 सेटेन—प्रवृत्त होना, झुकना। 2 गिल्ट—मैने क्या अपराध किया है ?

है, और आज तक जीवन मे उसने जो कुछ सुन्दर देखा है "उन सबसे सुन्दर और नूतन तरुण कुसुम" पर उसकी आखे पडती है। यह सुन्दरी लेडी जेन है, जो नूतन मई-प्रभात का सौन्दर्य-पान करने के लिए बाग मे घूम रही है। ऐसे एकान्त, और उत्तेजित कल्पनाओ के क्षण मे अकस्मात् उसके दृष्टि-पथ पर उदित होकर वह रूमानी राजकुमार के मन पर छा जाती है तथा उसकी उडती हुई कामनाओ का लक्ष्य एव उसके आदर्श जगत् की रानी बन जाती है।

इस मनोरम हृदय मे चासर के "नाइट्स टेल" (kınghts tale) के उस आरम्भिक भाग से स्पष्ट समानता दिखाई पडती है जिसमे, अपने कारागृह की वाटिका मे एमीलिया को टहलते देख पैलामोन तथा आर्काइट उसके प्रेम मे डूब जाते है। शायद चासर मे पढी हुई घटना से वास्तविक तथ्य के सादृश्य ने ही जेम्स को अपनी कविता मे उसका वर्णन करने को प्रेरित किया हो। लेडी जेन का उसने जो वर्णन किया है वह अपने गुरु की ही चित्रात्मकता और सूक्ष्म प्रणाली का है, और चूकि वह कल्पना से नही वरन् जीवन से लिया गया है इस-लिए वह उस काल की सुन्दरी का एक परिपूर्ण चित्र है। वह प्रेमी के अनुराग के साथ, अपनी प्रेयसी के परिधान की प्रत्येक वस्तु का वर्णन करता है। उसके स्वर्णकेश पर फैले हुए मरकत एव इन्द्रनीलमणियो से आच्छादित मुक्ताजाल का वर्णन करता है, गले मे पहिने सुन्दर स्वर्णहार का वर्णन करता है जिसमे हृदय की आकृति की पद्मरागमणि उसके शुभ्र वक्ष पर लटकी ऐसी लगती है मानो कोई अग्नि-स्फुलिग हो। सुन्दरी का अधोवस्त्र घेरदार कर दिया गया था जिससे चलने मे सरलता हो। उसके साथ दो परिचारिकाए भी थी और साथ-साथ एक शिकारी कुत्ता, जिसके गले मे नन्ही-नन्ही घण्टिया पडी थी, चल रहा था। कदाचित् यह बहुत ही सुन्दर शारीरिक सन्तुलनवाला लघु इतालवी कुत्ता था। जिसे प्राचीन काल की महिलाए प्रिय साथी के रूप मे रखती थी। सामान्य प्रशस्ति के उद्गार के साथ जेम्स अपना वर्णन समाप्त करता है

In her was youth, beauty, wıth humble port,
Bounty, rıchesse, and womanly feature,
God better knows then my pen can report,
Wısdom, largesse[1], estate[2], and cunnıng[3] sure,

1. उदारता, 2. मर्यादा, 3 चातुर्य, विवेक।

In every point so guided her measure,
In word, in deed, in shape, in countenance,
That nature might no more her child advance

(पद्यानुवाद)

उसमे था यौवन, सुन्दरता औ, सुशीलता का मिश्रण ।
दानशीलता, वैभव, नारी-सुलभ मुखाकृति का अकन ।
मेरी कलम लिखेगी जो कुछ उससे अधिक जानते ईश्वर ।
उसकी बुद्धि, उदार वृत्ति, चतुराई और शील पावन ।
है प्रत्येक बिन्दु मे उसकी चाल-ढाल मे वह सभ्रम ।
वाणी, कार्य, रूप आकृति मे, हाव-भाव सबमे सयम ।
जिससे अच्छी सन्तति अपनी प्रकृति नही पैदा करती ।
उसका सब कुछ मजु मधुर है, उससे पावन है धरती ।।

उपवन से लेडी जेन के प्रस्थान के साथ ही हृदय के इस क्षणभगुर हगामे का अन्त हो जाता है । उसके साथ ही प्रीति-विषयक वह इन्द्रजाल भी विदा हो जाता है जिसने उसके कारावास के दृश्य मे एक क्षणिक आकर्षण उत्पन्न कर दिया था । अप्राप्य सौन्दर्य की इस किरण के गुजर जाने के कारण वह पहले की अपेक्षा दसगुने इकलेपन मे डूब जाता है । लम्बे और थकान भरे दिन मे वह अपनी अभाग्यपूर्ण स्थिति पर विलाप करता है और जब सध्या होने को आती हे और, जैसा कि वह सुन्दर ढग से व्यक्त करता है, सूर्य "प्रत्येक पत्र एव पुष्प से विदा ले लेता है", तब भी वह वातायन के पास टहलता रहता है और शीतल पत्थर पर अपना मस्तक रखकर प्रेम एव शोक के मिश्रित उद्गार व्यक्त करता रहता है, यहा तक कि गोधूलि वेला की मूक व्यथा से धीरे-धीरे शिथिल पड कर वह 'अर्धनिद्रा एव अर्ध-सुषुप्ति' मे डूब जाता है और उस अवस्था मे एक स्वप्न देखता है जो उसकी कविता के शेपाश का विषय है और जिसमे रूपक की शैली मे उसके अनुराग के इतिहास का अनुगमन किया गया है ।

जब वह अपनी समाधि से जगता है तो उस पत्थर के शिरोधान से उठ खडा होता है और नीरस विचारो मे मग्न, अपने कक्ष मे टहलते हुए अपनी जीवात्मा से पूछता है कि वह कहा फिरती रही है, और जो कुछ उसकी स्वप्निल कल्पना के सामने से गुजरता रहा है क्या वह पूर्ववर्त्ती परिस्थितियो से निर्मित

हुआ था, या यह सब एक सपना है जिसका हेतु उसकी निराशा की घडियो मे उसे राहत और विश्वास दिलाना है । यदि अन्तिम बात ठीक है तो उसकी प्रार्थना है कि नीद मे उसे सुखी दिनो का जो आश्वासन दिया गया है उसका कोई चिह्न भेजा जाए । अकस्मात् अत्यन्त शुभ्र रग का एक कबूतर उडता हुआ खिडकी मे आया और उसके हाथ पर बैठ गया । उसकी चोच मे रक्ताभ पुष्प की एक डाली थी जिसकी पत्तियो पर, स्वर्णाक्षरो मे, निम्नलिखित वाक्य अकित था—

Awake ! awake ! I bring, lover, I bring
The newis glad that blissful is, and sure
Of thy comfort, now laugh, and play, and sing,
For in the heaven decretit is thy cure

(अनुवाद)

जगो ! जगो ! ओ सोए प्रेमी, मै लाया हू पास तुम्हारे,
समाचार यह हर्ष-समन्वित, सुख से पूरित होगा प्यारे—
तेरा जीवन, हसो और खेलो, गाओ अब मेरे प्रेमी,
क्योकि तुम्हारी दवा स्वय प्रभु ने निश्चित कर दी है नेमी।

वह डाली को आशा एव भय की मिश्रित भावनाओ के साथ ग्रहण करता है, उसे आह्लादपूर्वक पढता है, वह कहता है कि यह उसके आगामी सुख का प्रथम चिह्न है । यह केवल एक काव्यात्मक आख्यान है या लेडी जेन ने इस रूमानी ढग पर सचमुच उसके पास अपना प्रेम-चिह्न भेजा था, यह तो पाठक की श्रद्धा या कल्पना के अनुसार निश्चित होगा । कवि तो अपनी कविता इस सूचना के साथ पूरी करता है कि स्वप्न मे तथा बाद मे पुष्प के द्वारा जो आश्वासन उसे दिया गया था वह उसके जेलमुक्त और स्वतन्त्र कर दिए जाने तथा अपनी हृदयेश्वरी के प्राप्त हो जाने के कारण पूरा हो गया है ।

विण्डसर कैसल मे अपनी प्रेम-सम्बन्धी दुस्साहसिकताओ की जेम्स ने यह काव्यात्मक कहानी हमे दी है । इसमे से कितना पूर्ण सत्य है, और कितना कल्पना का अलकरण है, इसका अनुमान लगाना निरर्थक है, किन्तु जो हो, हमे प्रत्येक रूमानी घटना को यथार्थ जीवन से असगत नही मान लेना चाहिए, बल्कि कभी कवि की बात पर भी विश्वास करना चाहिए । मैने तो कविता के केवल

उन्ही अशो पर चर्चा की है जिनका स्तम्भ (टावर) से सीधा सम्बन्ध है और ऐसे अधिक अशो को छोड दिया है जो रूपक की शैली पर, जिसका उन दिनो बहुत प्रचार था, लिखे गए है। भाषा अवश्य विचित्र तथा पुरानी है, इसलिए उसके अनेक स्वर्णिम पदो का सौन्दर्य आज मुश्किल से ही समझा जाएगा, किन्तु सच्ची भावना, मनोरजक अकृत्रिमता तथा नागरिकता की जो विशेषता आदि से अन्त तक दिखाई पडती है, उसपर मुग्ध न होना असम्भव है। जिन प्रकृति-दृश्यो से यह अलकृत है, उसमे इतना यथार्थ, विवेक और ताजगी है कि वह कला के अत्यन्त उन्नत युगो के योग्य है।

प्रीति-कविता की दृष्टि से भी, रूखे चिन्तन के इन दिनो मे, उसमे व्याप्त प्रकृति, सुरुचि तथा नजाकत का पर्यवेक्षण ज्ञानवर्द्धक है, क्योकि यहा प्रत्येक हीन विचार या असयत अभिव्यक्ति का बहिष्कार किया गया है और अति प्राकृतिक पवित्रता एव शील के साथ नारी-सौन्दर्य का वर्णन किया गया है।

जेम्स का समय प्राय वही है जो चासर और गोवर का है। वह इन दोनो का प्रशसक था और उनका अध्ययन भी कर चुका था। एक पद मे तो वह उनका उल्लेख अपने गुरु के रूप मे भी करता है, और उसकी कविता के कुछ अशो मे दोनो की, विशेषत चासर की, रचनाओ से बडा सादृश्य है। किन्तु समसामयिक साहित्यकारो की रचनाओ मे सादृश्य की सामान्य बाते प्राय पाई जाती है, जो उतनी एक-दूसरे से ली हुई नही होती जितनी काल से ली हुई होती है। मधुमक्षिकाओ की भाति ही लेखकगण भी विस्तृत जगत् से मधु-सचय किया करते है, समाज मे जो विचार तथा बाते प्रचलित होती है, उन्हे वे अपनी धारणाओ मे ढालकर ग्रहण कर लेते है और इस तरह प्रत्येक पीढी जिस युग मे रहती है उसकी कुछ न कुछ विशेषताए अपने अन्दर ग्रहण कर ही लेती है।

जेम्स हमारे साहित्यिक इतिहास के अत्यन्त प्रकाशमान युग मे हुआ और उस आदिकालिक सम्मान मे अपने देश के भागीदार होने के दावे की स्थापना करता है। जहा अग्रेज लेखको के एक लघु गुल्म को हमारे पद्य-काव्य के जनक के रूप मे निरन्तर उद्धृत किया जाता है वहा उनके महान् स्काटिश प्रतियोगी को चुपचाप बिल्कुल भुला दिया जाता है, जब कि वह उन दूरस्थ तथा सदा प्रद्योतमान ज्योतिष्को की लघु राशिमाला मे सम्मिलित किए जाने के सर्वथा उपयुक्त है जो साहित्य के उच्चतम क्षितिज पर चमकते है, और जो मिलकर

प्रभात-नक्षत्रो की भाति, ब्रिटिश काव्य की उज्ज्वल उपा के उदय का गीत गाते है ।

हमारे कुछ पाठक स्काटलैण्ड के इतिहास से अपरिचित होगे (यद्यपि हृदय-हारी कथा-उपन्यास साहित्य मे पिछले दिनो जिस प्रकार उसे पिरोया गया है उसने उसे सार्वदेशिक अध्ययन की वस्तु बना दिया है) और वे जेम्स के वाद के इतिहास और उसकी प्रेम-कथा के परिणाम को जानने के लिए उत्सुक होगे। लेडी जेन के प्रति उसका अनुराग उसके कारावास मे तो उसकी सान्त्वना था ही, वह उसकी मुक्ति मे भी सहायक सिद्ध हुआ, क्योकि अग्रेज दरबार ने यह अनुमान किया कि सम्राट् के वश से उसका सम्बन्ध हो जाने पर वह अपने हितो पर अधिक ध्यान देगा। अन्त मे उसे स्वतन्त्र कर दिया गया और सिंहासन भी उसे वापिस दे दिया गया। इसके पूर्व लेडी जेन से उसका विवाह हो गया जो उसके साथ ही स्काटलैण्ड गई और उसके लिए अत्यन्त मृदुल एव निष्ठापूर्ण पत्नी सिद्ध हुई ।

लौटने पर जेम्स ने अपने राज्य को बडा विश्रृखल पाया। लम्बे मध्यान्तर मे सामन्तो एव जागीरदारो ने गडबडी का खूब फायदा उठाया और वे इतने सुदृढ हो गए थे कि अपने को कानून के ऊपर समझने लगे थे। जेम्स ने अपनी शक्ति का आधार प्रजा के प्रेम मे खोजा। उसने पदो के दुरुपयोग को समाप्त किया, न्याय के उचित एव समान वितरण की व्यवस्था की, शान्ति की कलाओ को प्रोत्साहन दिया और हर तरह का ऐसा काम किया जिससे राहत और योग्यता का अधिकाधिक प्रसार हो और मौका मिले, उसने समाज के निम्नतम वर्गों के लिए निर्दोष मनोरजन का प्रवन्ध किया। इनके कारण निम्न वर्गो के लोग उसके साथ हो गए। वह कभी-कभी छद्म वेश धारण कर सामान्य प्रजा मे घुल-मिल जाता तथा उनके दु ख-दर्द का पता लगाता रहता था, वह उनके अग्नि-कुण्डो के पास जाता और उनकी चिन्ताओ, धन्धो, मनोरजनो मे स्वय भाग लेता, वह यत्र-कलाओ का खुद अभ्यास करता और इसपर विचार करता कि उनमे कैसे सुधार किया जा सकता है या उन्हे किस प्रकार सरक्षण प्रदान किया जा सकता है। इस प्रकार वह सर्वव्यापक आत्मा की भाति, दयालु नयनो से, अपने क्षुद्र से क्षुद्र प्रजाजन के हित का ध्यान रखता था। जब उसने इस उदार ढग से सामान्य प्रजा के हृदय मे अपना स्थान बना लिया तब उसने सामन्तो की

शक्ति से लोहा लेना शुरू किया। उन्होने जो कानूनबाह्य खतरनाक सुविधाए अपने लिए ले ली थी, वे छीन ली गई। जो घोर अपराधो के अपराधी थे, उन्हे उसने दण्डित किया और सबको सम्राट् के प्रति आज्ञाकारी बनाकर छोडा। कुछ समय तक तो वे बाहरी दिखावे के रूप मे ही आज्ञा मानते रहे और भीतर ही भीतर गुप्त असन्तोष एव क्षोभ से उबलते रहे। अन्त मे जेम्स के प्राण लेने का एक षड्यन्त्र उन्होने किया। इस दल का नेता खुद जेम्स का चचा एथोल का अर्ल राबर्ट स्टिवर्ट था। स्वय वृद्ध तथा इस रक्तरजित कार्य का सम्पादन करने मे असमर्थ होने के कारण उसने अपने पोते सर राबर्ट स्टिवर्ट को यह कार्य सौपा। उसके साथ सर रावर्ट ग्राहम, और दूसरे कुछ कम प्रसिद्ध लोगो को भी लगा दिया। ये खूनी षड्यन्त्रकारी पर्थ के निकटस्थित डोमीनिकन कान्वेण्ट (जहा वह उस समय रह रहा था) के उसके सोने के कमरे मे घुस गए और बार-बार उसपर वार करके बडे जगली तरीके पर उसकी हत्या कर दी। उसकी वफादार रानी ने दौडकर तलवार एव पति के बीच अपने कोमल शरीर को डालकर खूनी से उसकी रक्षा करने की चेष्टा की और दो बार घायल हुई। जब तक उसे बलात् घसीटकर जेम्स के पास से हटा नही दिया गया तबतक हत्याकार्य पूरा नही किया जा सका।

पूर्ववर्त्ती युग की इस रूमानी कथा तथा लघु स्वर्ण-कविता की, जिनका जन्म इस स्तम्भ मे हुआ था, याद के कारण ही मै असामान्य रुचि के साथ पुरानी इस इमारत को देखने गया था। हॉल मे उसका जो कवचवस्त्र टगा था, वह चादी के काम और अलकरण से चमक रहा था। उसे देखकर वीर एव रूमानी राज-कुमार की मूर्ति मेरी कल्पना के सामने स्पष्ट हो गई। मै उस उजडे कक्ष मे, जिसमे उसने अपनी कविता लिखी थी, टहलता रहा, मै खिडकी पर झुका हुआ अपने मन को समझाता रहा कि शायद यही वह खिडकी है जहा उसे स्वप्न-दर्शन हुआ था, मैने बाहर उस स्थान पर दृष्टि डाली जहा उसने पहली बार लेडी जेन को देखा था। यह भी वही प्रिय एव हर्षोत्फुल्ल मास था, पक्षी द्रवित रागिनी की तानो मे एक-दूसरे से होड कर रहे थे, सब कुछ हरीतिमा मे फटा पडता था और वर्ष की कोमल सम्भावना मुकु-लित हो रही थी। काल, जिसे मानवीय अहकार के कठोर स्मारको को मिटा देने मे प्रसन्नता होती है, काव्य एव प्रेम के इस छोटे-से दृश्य के ऊपर से सर-

लतापूर्वक गुजर गया था और ऐसा लगता था मानो उसने अपने नाशक हाथो को पीछे खीच लिया हो। कई सदिया बीत गई है, फिर भी स्तम्भ के पादभाग मे स्थित वह वाटिका वैसे ही फूल फल रही है। यह वही है जहा कभी कारागार की परिखा थी, और यद्यपि कुछ भाग विभाजक दीवारो के कारण अलग हो गए है, फिर भी दूसरे जो भाग बचे है उनमे अब भी वही लता-कुज है, वही छायामय मार्ग है जो जेम्स के दिनो मे थे और सम्पूर्ण वाटिका छायामयी, उत्फुल्ल तथा निर्जन है। उस स्थान मे एक आकर्षण, एक सौन्दर्य तो है ही जहा विगत सुन्दरी के चरण-चिह्न मुद्रित है और जो कवि की प्रेरणाओ से पवित्र है। यह आकर्षण या सौन्दर्य युगो के अतिक्रमण के कारण, घटा नही, बढता ही गया। निश्चय ही, यह काव्य का वरदान है कि जिस भी स्थान मे वह चलता है उसे गौरवान्वित करता जाता है, और प्रकृति के चतुर्दिक् पाटलगन्ध से भी अधिक अच्छी सुगन्ध भरता जाता है। इसी प्रकार वह उसपर प्रभात की लज्जारुणिमा से भी अधिक जादुई आभा बिखेर देता है।

दूसरे लोग एक योद्धा तथा विधायक के रूप मे जेम्स के महत्त्वपूर्ण कार्यों का वर्णन करेगे, परन्तु हमे उसे अपने साथी मानवो के सहचर, मानव-हृदय के उपकारी तथा सामान्य जीवन की राहो पर काव्य एव गीत के मधुर पुष्प बिखेरने के लिए अपने उच्च सिहासन से नीचे उतरने वाले सहृदय व्यक्ति के रूप मे ही देखने मे सुख मिलता है। स्काटिश प्रतिभा के शक्तिमान एव ऋतुसहिष्णु पौधे को लगानेवाला वह पहला आदमी था और अब तो वह पौधा बढकर अत्यन्त स्वस्थ एव स्वादिष्ठ फलो से भर गया है। वह अपने साथ उत्तर के कठोरतर प्रदेशो मे दक्षिणी सस्कार की उत्पादक कलाए ले गया। जो उत्फुल्ल, उदात्त एव शीलमय आचरण, एक जाति के चरित्र को मृदुल एव सस्कृत बनाता है तथा गौरवशील एव युद्धोन्मुख प्रवृत्तियो की उच्चता को सौन्दर्य से अलकृत कर देता है, उसकी ओर अपने देशवासियो को ले जाने के लिए उसने सब कुछ किया, जो उसकी शक्ति मे था। उसने अनेक कविताए लिखी थी जो आज लुप्त हो गई हे, एक अभी तक सुरक्षित है अर्थात् 'क्राइस्ट्स कर्क आफ दि ग्रीन'। इससे पता चलता है कि उसने उन ग्राम्य खेलो एव आमोद-प्रमोदो का कितनी गहराई के साथ परिचय प्राप्त किया था जो स्काटिश किसानो के बीच दयालु एव सामाजिक भावना के मुख्य स्रोत है। कैसे सरल एव प्रसन्न चित्त से वह इन

किसानो के आमोद-प्रमोद मे शामिल होता था ! उसने राष्ट्रीय सगीत के सुधार मे बहुत योग दिया और स्काटलैण्ड के वीरान पर्वतो तथा एकान्त सकरी घाटियो मे जो ताने अब भी सुनी जाती है उनमे अपनी मृदुल भावनाओ तथा सुरुचि की छाप डाल दी थी। इस प्रकार राष्ट्रीय चरित्र मे जो भी रुचिर एव प्रीतिकर है उसके साथ उसकी प्रतिमा सयुक्त हो गई है। वह गीत मे अपनी स्मृति को सुरक्षित छोड गया है और स्काटिश रागिनी की समृद्ध धाराओ पर बाद के युगो के लिए अपने नाम को तैरता छोड गया है। जब मै उसके कारावास के मौन दृश्यस्थल पर टहल रहा था तब मेरे हृदय मे इन वातो की स्मृति प्रदीप्त हो उठी थी। मैने वाक्लूज की यात्रा उसी उत्साह के साथ की है जिस उत्साह के साथ कोई तीर्थयात्री लोरेटो के मन्दिर की यात्रा करता है किन्तु इस प्राचीन स्तम्भ एव विण्डसर की लघु वाटिका को देखते तथा लेडी जेन एव स्काटलैण्ड के राजकवि के रूमानी प्रेम पर विचार करते हुए जिस काव्यात्मक भक्ति का अनुभव मुझे हुआ, वह और कभी नही हुआ था।

ग्राम्य गिर्जाघर

चरित्र के अध्ययन के लिए आग्ल ग्रामीण चर्च से अच्छे अनुकूल स्थान कम ही होगे। एक बार मै कुछ सप्ताह के लिए अपने एक मित्र के यहा ठहरा हुआ था। यह मित्र एक ऐसे ही गिर्जाघर के निकट रहते थे, जिसने मेरी कल्पना को विशेषरूप से प्रभावित किया। वह विलक्षण पुरातनता के उन समृद्ध नमूनो मे से एक था, जो आग्ल-भूदृश्य को अनोखा आकर्षण प्रदान करते है। वह एक ऐसे अचल मे खडा हुआ था जो प्राचीन कुटुम्बो से भरा है और जिसके स्तब्ध एव शात समाधिकक्षो मे अनेक भव्य पीढियो का सचित भस्मावशेष रक्षित है। गिर्जे की आन्तरिक भित्तियो पर प्रत्येक युग और शैली के स्मारक-चिह्न लगे है। कुछ चिह्न पटो से धूमिल तथा स्टेण्ड ग्लास के समृद्ध चित्राकनो से विभूषित वातायनो से प्रकाश छन कर आता है। चर्च के विविध भागो मे सामन्तो तथा उच्च कुलोत्पन्न महिलाओ की कब्रे है जिनपर रगीन सगमर्मर मे उनके पुतले बने है। प्रत्येक दिशा मे आखे उच्चाकाक्षी नश्वरता का कोई न कोई उदाहरण देखती है। कोई न कोई उद्धत स्मारक जिसे मानवीय अहकार ने अपने सगी एव समानुवर्ती धूल के ऊपर सम्पूर्ण धर्मो मे सबसे अधिक नम्र धर्म के इस मन्दिर मे निर्मित किया है।

एकत्र धार्मिक समुदाय मे निकटवर्ती अचलो के प्रतिष्ठित लोग थे, जो एक कतार मे कटघरो मे रखे गद्दीदार आसनो पर बैठे थे। उनके पास चमकदार जिल्दोवाली प्रार्थना-पुस्तिकाए रखी थी और उनके कटघरो के द्वारो पर उनके कुलचिह्न बने हुए थे। इस समुदाय मे ग्रामवासी तथा किसान भी थे जो पिछली कुर्सियो पर तथा वाद्यस्थान के निकट के छोटे दालान मे बैठे थे। इसके अतिरिक्त पादरी-प्रदेश के दीन जन भी कुछ दूर बेचो पर आसीन थे।

प्रार्थना का सम्पादन एक नकियाने वाले, खाने-पीने से मुस्टण्ड ग्राम-पादरी ने किया जिसका साफ-सुथरा मकान चर्च के पास ही था। पास-पडोस के लोग

उसे अपने यहा विशेप रूप से निमन्त्रित करते रहते थे। वह प्रदेश मे लोमडियो का एक प्रसिद्ध शिकारी था। बाद मे उम्र और भले जीवन-यापन के कारण उसने अपने को शिकारी कुत्तो के लोमडियो पर झपटने या शिकारियो के भोजन मे उसका मजा लूटने तक ही सीमित कर लिया था।

ऐसे पादरी के पारोहित्य मे स्थान एव समय के अनुकूल विचार-शृखला को पकड पाना मुझे असम्भव मालूम हुआ। इसलिए अन्य अनेक दुर्बल ईसाइयो की भाति अपने दोप-पाप का भार दूसरे आदमी की देहरी पर फेककर मैने अपने अन्त करण से समझौता कर लिया ओर अपने पडोसियो के पर्यवेक्षण मे निमग्न हो गया।

उस समय भी मै इग्लैण्ड मे एक अजनवी ही था और उसके फैशनेबल वर्गो का अवलोकन करने की वडी उत्सुकता मुझमे थी। सदा की भाति मैने पाया कि जो लोग सम्मान के सबसे अधिक पात्र है, उनमे उसके लिए दावा या आडम्बर सबसे कम है। उदाहरणार्थ, मै उच्च वर्ग के एक सामन्त के कुटुम्ब से बहुत अधिक प्रभावित हुआ। इस कुटुम्ब मे कई पुत्र एव कन्याए भी थी। वे जिस वेश-भूषा मे आए थे उसमे अधिक सरल और आडम्बर शून्य और क्या हो सकता है? सामान्यत वे चर्च मे सरलतम उपकरणो के साथ और प्राय पैदल ही आते थे। कुटुम्ब की तरुण महिलाए रुककर किसानो के साथ अत्यन्त दयालुता से वार्तालाप करती, बच्चो को सहलाती-चुमकारती और झोपडो के निवासी गरीबो की कहानिया सुनती। उनके चेहरे मुक्त तथा सुन्दररूप से उज्ज्वल थे, उनपर सस्कृति एव सुरुचि के साथ ही स्पष्ट उत्फुल्लता एव आकर्षक मृदुलता की छाप थी। उसके भाई लम्बे एव सुगठित शरीरवाले थे। उन्होने फैशनेबल परन्तु सरल परिधान धारण कर रखा था। पोशाक खूब साफ-सुथरी तथा समीचीन थी परन्तु उसमे कोई आडम्बर या दिखावा न था। उनकी सम्पूर्ण मुद्रा सहज एव प्राकृतिक थी, उसमे वह उच्च शील एव भव्य स्पष्टता थी जो उन मुक्तात्माओ की बात कहती है जिनके विकास की गति कभी हीनता की भावनाओ से अवरुद्ध नही हुई। यथार्थ उच्चता मे एक स्वस्थ कठोरता होती है जो दूसरो के, फिर वे चाहे कितने ही दीन एव तुच्छ हो, सम्पर्क एव ससर्ग मे आने से भय नही खाती। वह तो कृत्रिम अहकार है जो रुग्ण एव चिडचिडा होता है और हरएक के स्पर्श से भागता है। जिस ढग पर वे उन ग्राम्य प्रश्नो एव खेलो के विषय

मे किसानो से बात करते थे, जिनमे इस देश के भद्रजन इतना आनन्द लेते है, उसे देखकर मुझे बडी प्रसन्नता हुई । इन वार्ताओ मे न तो एक पक्ष मे कोई अह था, न दूसरे मे दास भावना थी । हा, कृपक के अभ्यासगत सम्मानप्रदर्शन से केवल श्रेणी-भेद का ज्ञान होता था ।

इनके विपरीत एक ऐसे धनवान नागरिक का कुटुम्ब था, जिसने विशाल सम्पत्ति अर्जित की थी और पडोस मे ही एक विनष्ट रईस की हवेली तथा जमीदारी खरीद ली थी और आनुवशिक भूमिपतियो की मर्यादा एव जीवन-शैली अपनाने का प्रयत्न कर रहा था । यह कुटुम्ब सदैव शाही शान से चर्च मे आता था । वे लोग एक बढिया गाडी मे, जिस पर कुलचिह्न अकित थे, बैठकर आते थे । अश्व-सज्जा या साज के प्रत्येक भाग पर जडी रजत कलगी चमकती थी । तिकोना और गोटेदार हैट तथा अपने गुलाबी चेहरे तक आनेवाला घुघराला चर्मविग पहिने मोटा कोचवान आगे बक्स पर डैनिश कुत्ते के साथ बैठा होता था । और चमकदार वर्दी पहिने दो चोबदार बडे-बडे पुष्पगुच्छ तथा सोने की मूठवाली बेत लिए पीछे-पीछे चलते थे । गाडी अपनी लम्बी कमानियो पर कभी उठती, कभी गिरती विचित्र मदमाती गति से चलती थी । घोडे सामान्य घोडो की अपेक्षा कुछ अधिक गर्वपूर्वक अपनी वल्गा चबाते, गर्दने घुमाते या आखे नचाते थे, शायद इसलिए कि उन्हे भी कौटुम्बिक भावना की छूत लग गई थी या फिर उनकी लगाम अधिक कसी होती थी ।

मै उस ढग की प्रशसा किए बिना नही रह सकता जिसमे यह शानदार स्वाग चर्च-प्रागण के द्वार तक आता था । जहा दीवार का एक कोना मुडा था वहा तो बहुत ज्यादा प्रभाव पैदा किया जाता था—कोडे का सडाक-सडाक प्रयोग, घोडो का खिचाव और धक्कामुक्की, साज की चमक-दमक और बजरी के बीच चलते हुए पहिये । यह कोचवान के विजय-गर्व और शेखी का क्षण होता था । वह घोडो की लगाम तब तक खीचे रहता था, जबतक खीझ से वे फेन न उगलने लगे । वे दुलकी चाल मे कुलाचे मारते और हर कदम पर रोडो से टकराते थे । मस्ती के साथ धीरे-धीरे चर्च की ओर जानेवाली ग्रामवासियो की भीड, हडबडी के साथ,• रास्ता छोड दाए-बाए हट जाती थी और मुह बाये उधर देखने लगती थी । द्वार पर पहुचते ही घोडो को सहसा इस प्रकार रोका जाता कि वे अपने कूल्हो पर झुक-झुक जाते थे ।

अब कोचवान बडी हडबडी मे नीचे आता और सीढिया खीचकर लगा देता तथा वे सब उपाय करता था जो इस महत् कुटुम्ब को धरती पर लाने मे समर्थ हो। पहले दरवाज़े से वृद्ध नागरिक का गोल लाल मुह बाहर निकलता। वह अपने चतुर्दिक् एक ऐसे आदमी की आडम्बरपूर्ण मुद्रा से देखता जो अपने सिर हिलाने मात्र से शेयर बाजार मे उथल-पुथल पैदा कर सकता हो। उसकी सह-धर्मिणी, एक भली, मासल एव स्वानन्दी महिला, उसका अनुगमन करती। यहा मुझे यह स्वीकार करना चाहिए कि उसके अग-विन्यास पर गर्व की कोई छाया नही होती थी। वह विशद, सच्चे पर असम्कृत सुखोपभोग की प्रतिमा थी। दुनिया उसके साथ भला व्यवहार करती थी और वह दुनिया को पसन्द करती थी। उसके पास अच्छे वस्त्र थे, अच्छा मकान था, अच्छी गाडी थी, अच्छी सन्ताने थी—मतलब उसके इर्द-गिर्द सब कुछ अच्छा ही अच्छा था। गाडी पर सैर करने, लोगो से मिलने-जुलने जाने और खाने-खिलाने के सिवा और कोई काम नही था। जीवन उसके लिए एक स्थायी विलासोत्सव था।

इस भले युगल-दम्पति का अनुगमन दो कन्याए करती थी। वे निश्चित रूप से सुन्दर थी, किन्तु उनमे जो एक दृप्त मुद्रा थी उसके कारण प्रशसा की भावना शिथिल पड जाती थी और दर्शक को उनका आलोचक बना देती थी। वे परिधान मे अति-फैशनेबल थी और यद्यपि कोई उनके अलकरण की समृद्धि-शीलता से इन्कार नही कर सकता, किन्तु एक ग्राम्यचर्च की सादगी के बीच उनके औचित्य पर शका अवश्य की जा सकती है। वे सिर ऊचा किए गाडी से उतरी और किसानो की पक्ति की ओर ऐसे पद-क्षेप के साथ बढी जो उस धरती पर, जिसपर वे चल रही थी, बडा विलासितापूर्ण लग रहा था। उन्होने चारो ओर एक उडती हुई नज़र डाली जो किसानो के हृष्ट-पुष्ट चेहरो पर से उपेक्षा-पूर्वक गुज़र गई किन्तु जब उनकी आखे पूर्वोक्त सामन्त के कुटुम्बियो की आखो से मिली तो उनके चेहरो पर मुस्कान फैल गई और तब उन्होने गहरे एव मृदु शिष्टाचार का प्रदर्शन किया। दूसरी ओर से भी ऐसा ही किया गया किन्तु उससे जान यह पडा कि उनमे बहुत साधारण-सा ही परिचय है।

मुझे इस महत्त्वाकाक्षी नागरिक के दो पुत्रो को भुलाना नही चाहिए जो एक सरपट दौडती हुई टमटम मे अश्वारोही अनुचरो के साथ चर्च मे आते थे। उनमे तो इस प्रवृत्ति की अतिशयता थी, वे परिधान के सम्पूर्ण दभ मे सजे

होते थे—वह वस्त्रदभ जो कुलीनता का सन्देहास्पद दावा करनेवाले आदमी मे दिखाई पडता है । वे अपने को सब लोगो से बिल्कुल अलग रख रहे थे, और जो कोई उनके पास आता उसे तिरछी नजर से देखते थे—मानो सम्माननीयता के उसके दावे की माप कर रहे हो । वे परस्पर भी कोई बातचीत नही कर रहे थे, कभी-कभी साकेतिक भाषा के एकाध शब्द उनके मुह से निकल जाते थे । वे बनावट के साथ चल भी रहे थे, क्योकि, प्रचलित सनक के अनुसार उनके शरीर सब प्रकार की स्वतन्त्रता एव आराम के अभाव मे अनुशासित कर दिए गए थे । कला ने उन्हे फैशन मे ढालने का पूरा प्रयत्न किया था किन्तु प्रकृति ने उन्हे अपनी अनाम महिमा से मण्डित करने से इन्कार कर दिया था । उनकी शरीर-रचना ही ओछी थी और ठीक वैसी ही थी जैसी उन आदमियो की होती है जो जीवन के सामान्य कार्यो के लिए निर्मित होते है और जिनमे वह उद्दण्ड मुद्रा पाई जाती है जो सच्चे भद्रजन मे दिखाई नही पडती ।

मैने बडी सूक्ष्मता के साथ इन दो कुटुम्बो का चित्राकन किया है, क्योकि इस देश मे जो प्राय दिखाई देता है—अर्थात् महान् व्यक्ति प्रदर्शनशून्य है एव तुच्छ लोग दर्प से भरे—उसका मै इन दोनो को नमूना मानता हू । मेरे मन मे पदवीधारी लोगो के प्रति आदर की भावना नही है, जब तक कि वे आत्मा की सच्ची महानता से भी पूरित न हो, किन्तु जिन सब देशो मे कृत्रिम श्रेणीभेद वर्तमान है उन सबमे मैने देखा है कि सर्वोत्तम वर्ग के लोग सबसे शिष्ट तथा सरल होते है । जिनको अपनी स्थिति के विषय मे विश्वास होता है, उनके दूसरो की स्थिति मे अनधिकार-प्रवेश करने की सम्भावना सबसे कम होती है । दूसरी ओर असस्कारिता की महत्त्वाकाक्षा, जो अपने पडोसी को अपमानित करके अपने को ऊपर उठाना चाहती है, से बढकर बीभत्स और कुछ नही है ।

चूकि मैने इन कुटुम्बो को परस्पर विपरीत रूप मे उपस्थित किया है, इसलिए मुझे चर्च के अन्दर उनके आचरण के विषय मे भी कुछ लिखना चाहिए । पहले सामत का कुटुम्ब शान्त, गम्भीर एव ध्यानस्थ था । इसलिए नही कि उनमे कोई भक्ति-प्रवणता थी किन्तु इसलिए कि उनमे पवित्र वस्तुओ, पवित्र स्थानो के प्रति सम्मान का भाव था, जो शील और कुलीनता का अविच्छेद्य अग है । इसके विपरीत दूसरा कुटुम्ब निरन्तर बडबडाता और कानाफूसी करता रहा, उनमे अपने अलकरण के प्रति निरन्तर चेतना बनी रही । उनमे ग्राम्य

जन-समूह की निगाह मे आश्चर्य-सा दिखाई पडने की दु खजनक आकाक्षा प्रकट होती रही ।

उनमे वस प्रौढ पुरुष ही प्रार्थना के प्रति ध्यान दे रहा था । उसने कौटुम्बिक भक्ति का सारा भार अपने ऊपर ले लिया था और सीधा तना हुआ इतनी जोर से प्रार्थना को दोहरा रहा था कि सारे चर्च मे सुनाई पडता था । स्पष्ट था कि वह चर्च एव बादशाह के उन पूर्ण अनुगामियो मे है जो भक्ति एव राजनिष्ठा की भावना को मिला देते है, जो किसी तरह ईश्वर को, प्रभु को सरकारी दल का समझते है तथा धर्म को "एक बडी अच्छी-सी चीज मानते है जिसे सुरक्षित रखना चाहिए ।"

जब वह प्रार्थना मे शरीक हुआ तो ऐसा लगा कि वह निम्न वर्ग के लोगो के लिए उदाहरण के रूप मे अधिक था—उन्हे यह दिखाने के लिए कि इतना बडा और धनवान होकर भी वह धर्म के ऊपर नही है, ठीक वैसे ही जैसे मैंने एक बार एक कपोतभक्षी उपनगरपाल—एल्डरमैन—को देखा था जो तसलेभर दान का शोरबा पीता जा रहा था और हर घूट पर अपने ओठो को चाटता हुआ कहता जा रहा था—"गरीबो के लिए क्या बढिया भोजन है !"

जब प्रार्थना समाप्त हो गई, तो मैं इन दोनो कुटुम्बो को विदा होते देखने को उत्सुक था । चूकि दिन बडा सुहावना था तरुण सामन्तो और उनकी बहिनो ने खेतो के बीच चहलकदमी करते हुए घर लौटने का निश्चय किया । रास्ते मे, वे ग्राम-वासियो से बाते करते जा रहे थे। दूसरा कुटुम्ब वही शाही प्रदर्शन करता गया, जैसे आया था । फिर गाडी फाटक तक लाई गई, फिर वही चाबुक की सडाक-सडाक सुनाई पडी, वही खुरो का शब्द हुआ, उसी प्रकार साज चमक उठा । घोडे एकदम सरपट भागे, हडबडी मे फिर ग्रामवासी दाए-बाए हो गए, पहियो से धूल के बादल उठे और महत्त्वाकाक्षी कुटुम्ब तूफान मे आखो से ओझल हो गया ।

विधवा और उसका पुत्र

Pittie olde age, within whose silver haires
Honour and reverence evermore have raign'd.

—Marlowe's Tomburlaine

(स्वतन्त्र पद्यानुवाद)

जिसके रजत केश-पुजो मे भक्ति और आदर का शासन।
बना रहा अब तक, उस वृद्धावस्था पर बरसो करुणा-घन ॥

—मार्लो-कृत तैमूरलेन

ऐसे विषयो पर ध्यान देना जिनका स्वभाव है, उन्होने रविवार को आग्ल भूदृश्य (लैण्डस्केप) की निष्क्रिय शान्ति अवश्य देखी होगी। चक्की की चर-मराहट, मूसल की नियमित अन्तर से बार-बार आनेवाली धमक, लोहार के हथौडे का शब्द, हलवाहे का सीटी बजाना, गाडियो एव छकडो की खडखडाहट तथा ग्रामीण श्रम-सम्बन्धी और सब ध्वनिया बन्द हो जाती है। गुज़रनेवाले पथिको द्वारा कम बाधा पडने के कारण खेतो के कुत्ते तक भौकते है। मुझे तो ऐसे समय लगता है कि मानो हवाए भी शान्ति मे डूब गई है और अपनी ताजी हरी आभा को नीले धुन्ध मे द्रवित कर देनेवाला सूर्यरश्मिमण्डित भूदृश्य भी उस गौरवमयी नीरवता का उपभोग कर रहा है।

[स्वीट डे, सो प्योर, सो काम, सो ब्राइट,
दि ब्राइडल आफ दि अर्थ ऐण्ड स्काई।]
मधु दिवस है शुद्ध कितना, शान्त कितना, दीप्त कैसा।
हो रहा मानो धरित्री से गगन का आज परिणय ॥

ईश्वर का यह आदेश शुभ ही था कि भक्ति का दिन विश्राम का दिन होना

चाहिए। प्रकृति के मुखमण्डल पर जो पवित्र विश्रान्ति शासन करती है, उसका एक नैतिक प्रभाव पडता है, हरेक चचल वासना शान्त हो जाती है और हम अनुभव करते है कि आत्मा का स्वाभाविक धर्म हमारे अन्दर धीरे-धीरे उठ रहा है। कम से कम मेरे अन्दर तो प्रकृति की सुन्दर-शालीनता के बीच स्थित ग्राम्य चर्च मे जो भावनाए आती है वे और कही नही आती, और रविवार को और दिनो की अपेक्षा यदि मैं अधिक धार्मिक नही वन जाता तो कम से कम एक ज्यादा अच्छा मनुष्य तो बन ही जाता हू।

अपने हाल के ग्राम्य-निवास मे मैं पुरातन ग्राम्य-चर्च मे प्राय जाया करता था। उसकी छायामयी वीथिकाए, उसके विनष्टप्राय स्मारक, उसकी गहरी वलूती पेनेलिग, ये सब अतीत वर्षो की उदासी से श्रद्धान्वित, होने के कारण उसे गम्भीर उपासना के लिए उपयुक्त स्थान मे परिणत कर देती थी। किन्तु चूकि वह धनवान और सामन्ती पडोस मे था, इसलिए इस धर्मस्थान मे भी फैशन की चमक-दमक प्रवेश कर जाती थी, और मुझे लगता था मानो मेरे चतुर्दिक् जो क्षुद्र कीट (मनुष्य) थे, उनकी नीरसता और तडक-भडक थी, वह मुझे निरन्तर पीछे दुनिया की ओर फेंक रही हो। उस सम्पूर्ण सत्सग मे एक बूढी जर्जर स्त्रीमात्र ऐसी थी जो सच्चे ईसाई की विनम्र एव प्रणत धर्मनिष्ठा का पूर्ण अनुभव करती जान पडती थी। वह आयु तथा दुर्बलताओ के बोझ से झुक गई थी। उसमे उसकी नितान्त दीनता से अधिक अच्छी किसी चीज की रेखाए भी थी। उसकी मुखाकृति पर गौरव मडराता दीख रहा था। यद्यपि उसकी पोशाक बिल्कुल ही सादी थी, किन्तु वह बहुत स्वच्छ थी। उसे कुछ सम्मान भी प्रदान किया गया था क्योकि वह गाव के दीनो के बीच न बैठकर वेदिका की सीढियो पर अकेली बैठी हुई थी। ऐसा जान पडता था कि वह समस्त प्रेम, समस्त मैत्री एव समस्त समाज को सहन कर भी जीवित है, और अब उसके लिए स्वर्ग की आशा के अतिरिक्त और कुछ नही बचा है। जब मैने दुर्बलतापूर्वक उसे उठते तथा अपनी जराग्रस्त काया को झुकाते देखा, जब देखा कि वह अभ्यास-वश अपनी प्रार्थना-पुस्तक खोल रही है किन्तु उसके जीर्ण कम्पित हाथ तथा दुर्बलदृष्टि आखे उसे पढने नही दे रही है, यद्यपि वह उसे कण्ठाग्र है, तब मैंने यह अनुभव किया कि उस अकिंचन महिला की भग्न वाणी क्लर्क की आवाज़, बाजे की ध्वनि एव भजन-मण्डली के गायन से पहले ही स्वर्ग

के निकट पहुच रही है ।

मुझे ग्राम्य-चर्चो के आस-पास घूमने का शौक है, और यह चर्च कुछ ऐसे मनोरम स्थान पर बना हुआ था कि बहुधा मुझे आकर्षित करता था। यह एक टीले के ऊपर बना हुआ था जिसके पास एक छोटा झरना बडा सुन्दर मोड लेता था और एक मृदुल शाद्वल के बीच से होकर बहता चला गया था। चर्च ऐसे सदा-बहार वृक्षो से घिरा हुआ था जो उसके समवयस्क लगते थे। उसका ऊचा गाथिक शिखर उनके बीच ऊपर उठा दिखाई पडता था। इस शिखर के इर्द-गिर्द सघकाक एव काक चक्कर लगाया करते थे। एक सूर्यरश्मि-प्रकाशित नीरव प्रभात मे मै वहा बैठा हुआ दो मजदूरो को देख रहा था जो एक कब्र खोदने मे लगे हुए थे। इस काम के लिए उन्होने चर्चप्रागण का एक सबसे दूरस्थ तथा उपेक्षित कोना चुना था। उसके आस-पास कितनी ही अनाम समाधिया थी जिनसे मालूम होता था कि अकिचन और बन्धु-बान्धव-रहित जन वहा पृथ्वी के गर्भ मे ठस दिए गए है। मुझे बताया गया कि नवनिर्मित कब्र एक दरिद्र विधवा के एकमात्र पुत्र के लिए है। जब मै सासारिक श्रेणियो के विभेद पर, जो इस प्रकार भस्मावशेष तक फैला हुआ था, चिन्तन कर रहा था, तब घण्टा-ध्वनि ने सूचित किया कि अर्थी आ रही है। वह गरीबो की अन्त्येष्टि थी जिसमे अहकार का कोई चिह्न नही होता। अर्थी बडी ही सादी चीजो से बनी हुई थी और उसपर पर्दे एव शवाच्छादन इत्यादि का नाम भी नही था। उसे चन्द ग्राम-वासी उठाए हुए थे। गिर्जे का उत्खनक (सेक्सटन) आगे-आगे शुष्क उदासी-नता की मुद्रा मे चल रहा था। प्रदर्शित व्यथा की भूषा मे कोई कृत्रिम शोक-कर्त्ता वहा नही थे किन्तु एक सच्चा शोककर्त्ता वहा अवश्य था। वह एक बुढिया थी और शव के पीछे दुर्बलता के कारण लडखडाती चल रही थी। यह मृतात्मा की वृद्धा मा थी, वही गरीब बुढिया जिसे मैने वेदिका की सीढियो पर बैठे देखा था। एक गरीब स्त्री उसे सहारा एव सान्त्वना देती चल रही थी। पास-पडोस के कुछ गरीब आदमी साथ मे थे, गाव के कुछ लडके भी हाथ मे हाथ दिए दौड रहे थे, वे कभी अविचारपूर्ण हास्य के साथ चिल्ला पडते और कभी शोकाच्छन्न बुढिया के दु ख पर निगाह डालने के लिए चुप हो जाते थे।

जब शवयात्रा का जुलूस कब्र के पास पहुच गया तब चर्च के द्वारमण्डप (बरसाती) से पादरी बाहर निकला—लम्बा चोगा पहिने तथा प्रार्थना-पुस्तक

हाथ मे लिये हुए क्लर्क उसके साथ लगा हुआ था। अन्तिम धर्मक्रिया दानखाते जैसी थी। मृतक अकिंचन था, और उसके घर जो बच गई थी—मा, वह कौडी-कौडी को मुहताज थी। इसलिए रीति का पालन तो हुआ परन्तु भावना-रहित एव शुष्क ढग पर। सुखाद्य-पोषित पुरोहित चर्च-द्वार से चन्द ही कदम आगे गया, उसकी वाणी कब्र के पास मुश्किल से ही सुनाई पडी होगी। मैने अन्तिम अनुष्ठान को, उस उदात्त एव करुण अनुष्ठान को इस प्रकार शब्दो के नीरस स्वाग मे परिवर्त्तित होते कभी नही देखा था।

मैं कब्र के पास गया। ताबूत जमीन पर रखा था। उस पर मृतक का नाम और आयु अंकित थी—"जार्ज सोमर्स, उम्र २६ वर्ष।" उसके सिरे पर नतजानु होने के लिये अभागी मा को सहायता दी गई थी। उसके शीर्ण हाथ जुडे हुए थे जैसे वह प्रार्थना मे बैठी हुई हो किन्तु उसके शरीर के क्षीण कम्पन तथा ओठो की ऐंठती गति से मै समझ सका कि वह मा के हृदय की व्याकुलता के साथ अपने पुत्र के अन्तिम अवशेष को देख रही है।

धरती के अन्दर ताबूत को उतारने की तैयारिया होने लगी। वह दौडधूप और हलचल मच गई जो व्यथा एव अनुराग की भावनाओ को बडी कठोरता से झकझोर देती है। व्यवसाय के सूखे लहजे मे निर्देश दिए गए, बालू एव ककरो मे फावडे चले, जो कि उनकी कब्र पर, जिन्हे हम प्यार करते है, सब तरह के शब्दो मे ज्यादा क्लान्तिकर लगता है। जान पडता है, आस-पास के शोर के कारण मा अपने व्यथित दिवास्वप्न से जग पडी। उसने अपनी जाले-वाली आखे ऊपर उठाई, और क्षीण उन्मत्तता के साथ इधर-उधर देखा। जब आदमी रस्सी लेकर ताबूत को नीचे उतारने आए, उसने अपने हाथ मरोड लिए और व्यथा की यत्रणा से फूट पडी। जो स्त्री उसे सहारा दे रही थी उसने उसकी बाह पकड ली और जमीन से उठाने लगी। उसके कान मे भी सान्त्वना के कुछ शब्द कहे—"नही, नही, अब नही। दिल को इतना दुखी न करो।" बेचारी मा ने केवल अपना सिर हिला दिया और अपने हाथ मरोड लिए—उस प्राणी की भाति जो सान्त्वना पाने मे असमर्थ हो।

ज्योही उन्होने लाश नीचे उतारी, रस्सियो की रगड के शब्द सुनकर वह कराह उठी, किन्तु जब किसी घटना के कारण रुकावट आने से ताबूत टकरा गया तो मा की समस्त कोमलता फूट पडी, मानो उस आदमी को कोई क्षति

पहुची हो जो सासारिक व्यथा की पहुच के बाहर जा चुका है ।

अब मुझसे और नही देखा गया—मेरा हृदय मानो मेरे गले मे आ गया हो—मेरी आखे आसुओ से भर गई—मुझे लगा, मानो मै वहा खडा रहने और मा की यत्रणा का दृश्य अलसभाव से देखने मे कोई बर्बर अभिनय कर रहा होऊ । मै चर्च-प्रागण के दूसरे भाग मे चला गया, जहा मै तब तक रहा जब तक कि वह शवयात्रा की मण्डली बिखर नही गई ।

जब मैने देखा कि मा के लिए इस धरित्री पर जो कुछ प्रिय था, उसे अपने पीछे छोडकर वह बडी व्यथा के साथ कब्र से विदा हो रही है, और नीरवता एव दरिद्रता की ओर लौट रही है तो मेरा हृदय उनके लिए रो पडा । मै सोचने लगा कि इसके आगे धनियो की विपदा क्या है ! उसके पास सान्त्वना देनेवाले मित्र है, भुलानेवाले सुख है, उनके दु खो को मोडने और बटानेवाली दुनिया है । उसके सामने तरुणो के शोक क्या है ! उनके विकासशील मस्तिष्क शीघ्र ही घाव को भर देते है ! उनकी प्रसरणशील प्रेरणाए दबाव के नीचे से फिर उठ खडी होती है, उनके हरे एव लचीले अनुरागसूत्र शीघ्र ही नवीन पदार्थो, नवीन प्राणियो के इर्दगिर्द लिपट जाते है । किन्तु उन गरीबो का शोक, जिनके पास सान्त्वना के बाह्य साधन नही है, उन वृद्धो का शोक जिनका जीवन अपने अच्छे से अच्छे रूप मे भी एक शिशिर-दिवस-जैसा है, और जिनके लिए पुन आनन्द के उगने की सम्भावना नही है, एक विधवा का दु ख, ऐसी विधवा का जो वृद्ध है, अकेली है, अकिंचन है, जो अपने बुढापे की एकमात्र सान्त्वना अपने पुत्र को खोकर रो रही है, ये निश्चय ही ऐसे शोक, ऐसे दुख है जिनमे हम सान्त्वना की अक्षमता का अनुभव करते है ।

कुछ देर बाद मै चर्च-प्रागण छोडकर बाहर आया । घर की ओर लौटते समय रास्ते मे मुझे वह औरत मिल गई जो बुढिया को सान्त्वना देने का कार्य कर रही थी । वह मा को उसके निर्जन आवास मे पहुचाकर आ रही थी । उससे मुझे उस दु खदायी दृश्य के बारे मे कुछ बाते मालूम हुई जिसे मैंने कुछ देर पहिले देखा था ।

मृतात्मा के मा-बाप गाव मे बचपन से रहते आए थे । वे एक स्वच्छतम कुटीर मे रहते थे, और विविध ग्राम्य-धन्धो तथा एक छोटे उद्यान को लेकर बडी इज्जत और आराम के साथ जीवन बिता रहे थे । उनका जीवन सुखी और

निर्दोष था। उनको एक ही पुत्र था, जो उनके बुढापे का सहारा और गर्व था। औरत ने बताया—"महाशय, वह लडका ऐसा सुदर्शन, ऐसा शीलवान्, अपने आस-पास के लोगो के प्रति ऐसा दयावान् और अपने माता-पिता के प्रति इतना कर्त्तव्यशील था कि क्या कहे! रविवार को जब वह अपने सर्वोत्तम परिधान मे होता था, तो उसे देखकर आखे ठण्डी हो जाती थी—इतना लम्बा, इतना सीधा, इतना प्रसन्न, अपनी बूढी मा को सहारा देकर चर्च ले जाते हुए क्योकि बुढिया अपने आदमी, अपने पति का सहारा लेने की अपेक्षा जार्ज के कधे पर झुककर चलना ज्यादा पसन्द करती थी। दुखियारी! उसे अपने पुत्र पर उचित ही गर्व था, क्योकि आस-पास के देहात मे वैसा दूसरा लडका नही था।"

दुर्भाग्यवश दुष्काल एव कृषि-सकट के एक साल लडके ने प्रलोभन मे आकर, निकटवर्ती सरिता मे चलनेवाली नौका पर नौकरी कर ली। वहा काम करते अधिक दिन नही हुए थे कि जलदस्युओ का गिरोह उसे समुद्र की ओर पकड ले गया। उसके माता-पिता को इसकी सूचना-मात्र मिली किन्तु उससे अधिक उन्हे कुछ पता नही चला। उनका मुख्य अवलम्ब छिन गया। पिता तो पहले से ही दुर्बल थे, अब उनका दिल बैठ गया, वह उदास रहने लगे और अन्त मे मौत की गोद मे सो गए। ऐसी वृद्धावस्था और दुर्बलता के बीच विधवा अकेली रह गई, वह अपनी जीविका नही चला पाई और सदावर्त पर रहने आई। सारे गाव मे उसके लिए एक शुभ भावना थी, एक प्राचीनतम निवासी के नाते कुछ आदर भी था। चूकि उस कुटीर के लिए, जिसमे उसने अपने सुख के दिन बिताए थे, किसीने आवेदन नही किया था, उसे उसमे ही रहने दिया गया। अपनी कुटिया मे वह अकेली, प्राय निस्सहाय, रहती थी। उसके लघु उद्यान मे पास-पडोस के लोग जब-तब आकर काम कर दिया करते थे, उसी से उसकी ज़रूरते पूरी हो जाती थी। जब मुझे यह कहानी सुनाई गई थी उससे कुछ ही दिन पहले की बात है। विधवा बगीचे मे अपने आहार के लिए कुछ तर-कारिया तोड रही थी, जब उसने सुना कि उद्यान के सामने ही स्थित उसके घर का दरवाज़ा सहसा किसीने खोल दिया है। एक अजनबी उसके अन्दर आया जो अपने इर्द-गिर्द बडी उत्सुकता और उन्मत्तता से देख रहा था। वह समुद्री नाविक की पोशाक मे था, सूखकर काटा हो गया था, मुर्दे की तरह पीला पड गया था। उसकी मुद्रा ऐसी थी जैसी बीमारी और कष्ट से टूटे आदमी की

होती है । उसकी निगाह बुढिया पर पडी, वह झपटकर उसकी ओर बढा किन्तु उसके कदम हलके थे और काप रहे थे, वह उसके सामने जाकर घुटनो के बल बैठ गया और बच्चे की तरह सुबुकने लगा । बेचारी बुढिया शून्य एव अस्थिर नयनो मे उसे ताक रही थी,—'ओ मेरी प्यारी-प्यारी मा ! क्या तुम अपने बेटे को नही पहिचान रही हो ? अपने गरीब बेटे जार्ज को ?' वह पहले के श्रेष्ठ लडके का ध्वसावशेष-मात्र था, जो घावो, बीमारियो और विदेशी कारा-वास के प्रहारो से खण्डित, अपने क्षयित अगो को घर की ओर घसीटते हुए बच-पन के दृश्यो के बीच विश्राम पाने आया था ।

मै ऐसे मिलन के व्यौरो को लिखने की चेष्टा नही करूगा जिसमे आनन्द और शोक इस पूर्णता के साथ जुड गए थे । अब भी वह जी रहा है ! वह घर आया है ! शायद इस बुढापे मे उसे सुख और सहारा देने के लिए वह जी जाए ! परन्तु प्रकृति की शक्ति उसमे खत्म हो चुकी थी, और यदि नियति का कार्य पूरा करने को कुछ शेष रह गया था, तो उसके गृह-कुटीर का उजाड एव सूना वातावरण उसके लिए काफी था । वह उस शय्या पर पड गया, जिसपर उसकी विधवा मा ने कितनी ही निद्राहीन राते बिताई थी । वह फिर उससे उठ नही सका ।

जब ग्रामवासियो ने सुना कि जार्ज सोमर्स लौट आया है, तो उसे देखने आने को भीड लग गई, उनके पास जो कुछ साधन-सामग्री थी, उससे उन्होने हर तरह का आराम और मदद पहुचाने की चेष्टा की । किन्तु जार्ज इतना कमज़ोर हो चुका था कि बोल भी नही सकता था, केवल उसके नयनो मे धन्यवाद उमडता था । मा निरन्तर उसके पास बनी रहती थी, क्योकि वह किसी दूसरे प्राणी की मदद लेना पसन्द नही करता था ।

बीमारी मे कुछ ऐसी चीज होती है जो पौरुष के गर्व को तोड डालती है, जो हृदय को कोमल बना देती और उसमे बचपन की भावनाए जाग्रत् करती है । जो, प्रौढावस्था मे भी, बीमारी एव निराशा से निर्जीव हो चुका है, जो विदेशी भूमि के एकान्त एव उपेक्षा के बीच थकावटभरी शय्या पर पडा रहा है, वह उस मा के सिवा किसकी बात सोच सकता है "जो उसके बचपन को देखती रही है" जो उसके तकिये को मुलायम बनाती रही है और उसकी असहायता मे उसकी देखरेख करती रही है ? अपने बच्चे के प्रति मा के प्रेम मे एक ऐसी

नित्यस्थायी कोमलता होती है जो हृदय के अन्य सब अनुरागो के ऊपर उठ जाती है। वह न तो स्वार्थ से ठण्डी पडती है, न खतरे से बाधित होती है, न अयोग्यता या व्यर्थता से दुर्बल होती है, न अकृतज्ञता से दम तोडती है। वह उसकी सुविधा के लिए अपने हर आराम का त्याग कर देगी, वह उसके सुखोपभोग के लिए अपने प्रत्येक सुख को समर्पित कर देगी, वह उसके यश से गर्वित और उसकी समृद्धि से पुलकित होगी, और यदि दुर्भाग्य उसे ग्रस लेगा तो उस अभाग्य के कारण वह उसके लिए और अधिक प्रिय हो जाएगा, यदि उसके नाम पर धब्बा लग जाएगा तो उस कलक के रहते हुए भी वह उसे प्यार करेगी और उसे चाहती रहेगी, और सारी दुनिया उसे छोड देगी, तो वही उसके लिए सारी दुनिया बन जाएगी।

अभागा जार्ज सोमर्स अनुभव कर चुका था कि ऐसी बीमारी मे पडे रहना जहा कोई सान्त्वना देनेवाला नही है,—अकेले, और कारागार मे, जहा कोई उससे मिलने आनेवाला नही है, कैसा होता है। अब वह अपनी मा का आखो से ओझल होना सहन नही कर सकता था, यदि वह वहा से कही जाती तो उसकी आखे उसका अनुसरण करती थी। बेचारी मा उसकी शय्या के पास घण्टो बैठी रहती और जब वह सो रहा होता उसे देखा करती थी। कभी-कभी वह उत्तप्त स्वप्न से चौककर इधर-उधर देखने लगता और तब तक देखता रहता जब तक मा को अपने ऊपर झुके हुए न देख लेता। तब वह उसका हाथ अपने हाथ मे ले लेता, उसे अपनी छाती पर रखता और एक बच्चे की शान्ति के साथ गहरी नीद मे सो जाता। इसी तरह वह मर गया।

विपत्ति की यह छोटी-सी कहानी सुनकर मेरी पहली प्रेरणा हुई कि दुखिया के कुटीर तक जाऊ, उसकी कुछ आर्थिक सहायता करू और यदि सम्भव हो तो कुछ सान्त्वना दू। किन्तु पूछने पर पता लगा कि ग्रामवासियो की शुभ भावनाओ ने वह सब पहले ही कर रखा है जो इस मामले मे सम्भव है, और चूकि गरीबो को एक-दूसरे के शोक को शान्त करने का सर्वोत्तम ज्ञान होता है, मैने टाग अडाना ठीक नही समझा।

दूसरे रविवार को जब मैं ग्राम्य-चर्च गया तो मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि गरीब बुढिया लडखडाती हुई उसी तरह वेदिका की सीढियो पर अपने स्थान की ओर बढी जा रही है।

उसने कुछ ऐसी चीज पहिनने की चेष्टा की थी जो अपने पुत्र के प्रति शोकार्त्तता की द्योतक हो, पवित्र अनुराग तथा नितान्त अकिचनता के बीच के इस सघर्ष से अधिक करुण और क्या बात हो सकती है ? एक काला रिबन, एक बदरग काला रूमाल और इसी प्रकार की एक-दो और विनम्र चेष्टाए जो बाह्य चिह्नो-द्वारा उस दु ख को व्यक्त करती है जिसका प्रदर्शन सम्भव ही नही है। जब मैने इधर-उधर के ऊचे स्मारको, शानदार कुलचिह्न युक्त फलको, ठडे मर्मर प्रस्तर के प्रदर्शन युक्त स्मारको की ओर देखा, जिनके द्वारा सम्पन्नता शान के साथ विगत गर्व पर शोक प्रकट करती है, और फिर इस अकिचन विधवा पर निगाह डाली जो आयु एव दु ख से सिर झुकाए अपने ईश्वर की वेदी के समीप बैठी है और पवित्र, यद्यपि खण्डित, हृदय से प्रार्थना एव स्तुति कर रही है तब मैने अनुभव किया कि वास्तविक दु ख का यह जीवित स्मारक उपर्युक्त सब स्मारको के योग के बराबर है।

मैने उसकी कहानी सत्सग के कुछ धनी सदस्यो को सुनाई और वे उससे द्रवित हो उठे। उन्होने उसकी स्थिति को और सुखदायी बनाने तथा उसका दु ख हल्का करने का प्रयत्न भी किया। किन्तु यह सब कब्र की ओर बढते हुए चन्द कदमो को सरल बनाना भर था। एक या दो रविवार की अवधि मे ही वह चर्च के अपने आसन पर अनुपस्थित पाई गई, और वहा अपना निवास छोडकर चले आने के पहले ही, सन्तोष की भावना के साथ, मैंने सुना कि उसने शान्तिपूर्वक अपनी अन्तिम सासे छोड दी है और जिन्हे प्यार करती थी उनसे मिलने को उस लोक मे चली गई है जहा शोक का कही पता नही और जहा मित्रो से कभी बिछोह नही होता।

लन्दन का एक रविवार*

किसी पिछले लेख मे मैंने देहात मे विताए आग्ल रविवार और भूदृश्य पर उसके शान्तिकर प्रभाव की बात कही है, किन्तु उस महत् हगामे—लन्दन के केन्द्र भाग से अधिक उसके पवित्र प्रभाव को और कहा इतनी स्पष्टता के साथ देखा जा सकता है ? इस पवित्र दिन यह महादानव विश्रान्ति मे डूब जाता है। सप्ताह-भर के असहनीय कोलाहल और सघर्ष का अन्त हो जाता है। दुकाने बन्द हो जाती है। भट्ठियो और कारखानो की आग बुझ जाती है, और सूर्य धुए के काले बादलो मे वाधित हुए बिना शान्त मार्गों एव वीथियो पर अपना सयत, पीत प्रकाश उडेलता है। जिन चन्द पदातिको से हमारी भेट होती है वे चिन्तित मुखाकृतियो से तेजी के साथ बढते जाने की जगह फुर्सत मे धीरे-धीरे चल रहे होते है, कार्यव्यस्तता और चिन्ता की सिकुडने उनकी भवो पर नही होती, वे इनसे छूटकर सरल हो जाती है, रविवासरीय परिधान के साथ उनमे रविवासरीय दृष्टि और रविवासरीय विधाए भी होती है,—वे शरीर के साथ मन से भी स्वच्छ हो जाते है।

और अब चर्च स्तम्भो से आने वाली श्रुतिमधुर घण्टा-ध्वनि लोगो को अपनी ओर बुलाती है। प्रतिष्ठित व्यापारी का कुटुम्ब तुरन्त अपनी कोठी से निकल पडता है—छोटे बच्चे आगे-आगे होते है, फिर नागरिक उसकी मृदुल जीवन-सगिनी तथा उनके पीछे उनकी वयस्का कन्याए आती है—इनके पाकेट-रूमालो मे मोरक्का चर्म से मढी लघु प्रार्थना-पुस्तिकाए होती है। घर की खिडकी से गृहसेविका उनकी ओर ताकती है, वह कुटुम्ब की सजधज एव अलकारो की ओर प्रशसा की दृष्टि से देखती है और अपनी उन किशोरी स्वामिनियो से शिरश्चालन-द्वारा अनुमोदन एव मुस्कान भी पा जाती है जिनके प्रसाधन मे उसने

---

* एक स्केच का अंश जो पूर्ववर्त्ती संस्करणो से निकल गया था।

सहायता की है ।

अब नगर के किसी अधिकारी, जो एल्डरमैन या शेरिफ कोई हो सकता है की गाडी के शब्द सुनाई पडते है, फिर अनेक पदो की समन्वित ध्वनि घोषित करती है कि पुरातन शैली की वर्दियो मे दानपालित छात्रो का जुलूस, जिनमे से हर एक की काख तले प्रार्थना-पुस्तिका है, आ रहा है ।

अब घण्टो का बजना बन्द हो गया है, गाडियो की गडगडाहट समाप्त हो चुकी है, पद-सचार की ध्वनि अब सुनाई नही पडती, भेडे (भक्तमण्डली) प्राचीन चर्चो के अन्दर आ गई हैं, भीड भरे नगर की उपवीथियो एव कोनो पर एकत्र हो गई है, जहा सतर्क निरीक्षण अधिकारी, मेषपालक के कुत्ते के समान, धर्ममन्दिर के प्रागण पर चारो ओर दृष्टि रखे हुए है । कुछ देर के लिए सब कुछ नीरव हो गया है, परन्तु शीघ्र ही आर्गन (बाजे) की गहरी व्यापक ध्वनि सुनाई पडती है, जो रिक्त वीथियो एव मैदानो पर लहराती एव प्रतिध्वनित होती है। फिर भजनमण्डली के मधुरगान की ताने चतुर्दिक गूज उठती है। चर्च-सगीत को इस प्रकार, आनन्द की सरिता की भाति, इस महती राजधानी के अन्त स्थ निगूढ स्थानो मे बहते और उसे दुर्बल की समस्त कुत्सित कलुषताओ से ऊपर उठाते हुए तथा ससार-शिथिल आत्माओ को स्वर्ग की विजयोन्मुख समस्वरता की ओर उत्थित करते देखने के बाद ही मैं उसके पावन प्रभाव को ठीक तरह से अनुभव कर सका हू ।

प्रात कालीन उपासना का अन्त हुआ । अब प्रार्थनामण्डलियो के घर की ओर लौटने के कारण मार्ग पुन जीवित हो उठे है, परन्तु शीघ्र ही फिर वे नीरव हो जाते है । अब रविवासरीय भोज की बारी है, जो नगर-व्यवसायी के लिए महत्त्व का भोजन है। इस भोज मे सामाजिक विनोद के लिए ज्यादा फुर्सत है । अब कुटुम्ब के सदस्य, जो सप्ताह भर के श्रमपूर्ण धन्धो के कारण बिछुडे से थे, एक जगह बैठ सकते है । इस दिन स्कूली छात्र को अपने पैतृक गृह मे जाने की अनुमति मिल सकती है, कुटुम्ब का कोई पुराना मित्र इस भोज मे अपने अभ्यस्त रवि-वासरीय आसन पर बैठता और अपनी सुपरिचित कहानिया सुनाता है, अपने सुज्ञात परिहासो एव लतीफो से बूढे-जवान सबको खुश कर देता है ।

तीसरे पहर मानव-समुदाय को ताजी हवा मे सास लेने तथा धूप का आनन्द लेने के लिए पार्को एव ग्राम्य वातावरण मे उडेल देता है । व्यग्यकार रविवार

के दिन लन्दन के नागरिक के ग्राम्य सुखोपभोग के बारे मे जो मन मे आए कह सकते है, किन्तु जब मै देखता हू कि जनाकीर्ण एव धूलिभरी नगरी का दीन बन्दी इस प्रकार कम से कम सप्ताह मे एक बार बाहर निकलकर अपने को प्रकृति की हरी गोद मे डाल देता है तो मुझे बडा सुख मिलता है। वह उस बच्चे की भाति है जिसे ले जाकर पुन मा की छाती से लगा दिया गया हो। जिन लोगो ने इस विशाल राजनगर मे फैले सुन्दर पार्को एव शानदार क्रीडागणो का निर्माण कराया होगा उन्होने उसके स्वास्थ्य एव सदाचरण के लिए कम से कम उतना काम तो किया ही है जितना अस्पतालो, कारागारो एव प्रायश्चित्तगृहो मे रुपया लगाकर वे कर सकते थे।

शूकरशीर्ष मदिरालय, ईस्टचीप

(दि बोर्स हेड टेवन, ईस्टचीप)

शेक्सपीयर-सम्बन्धी एक अनुसन्धान

"एक मदिरालय समागमस्थल है, विनिमय-स्थान है और भले लोगो का निभृत कक्ष है । मैंने अपने परदादा को कहते सुना है कि उनके नकडदादा कहा करते थे कि जब उनके परदादा बच्चे थे तब एक पुरानी कहावत प्रचलित थी कि "वह हवा अच्छी होती है जो आदमी को मदिरा तक उडा ले जाती है ।"

— मदर बाम्बी

कुछ कैथोलिक देशो मे यह पवित्र प्रथा है कि सतो की स्मृति के सम्मान के लिए लोग भक्तिपूर्वक उनके चित्रो के सामने ज्योति जलाते है, इसलिए किसी सत की लोकप्रियता इन उपहारो की सख्या से मालूम होती है । कोई तो ऐसा होता है कि अपने लघु उपासना मन्दिर (चैपेल) के अन्धकार मे मिट्टी मे मिलने के लिए छोड दिया जाता है, कोई अपने पुतले के सामने, टिमटिमाती किरणे फेकनेवाला एक मात्र दीप प्राप्त करता है । जब कि किसी परमानन्द प्राप्त विख्यात धर्मपिता (सत) के मन्दिर मे भक्ति जगमग-जगमग कर देती है । धनिक भक्त अपने साथ विशाल मोम-दीप ले आता है, उत्सुक कट्टरधर्मी सप्तमुखी मोमवर्तिका जलाता है, यहा तक कि भिखारी तीर्थ यात्री को भी यह सब देखकर (कि काफी प्रकाश किया जा चुका है) तबतक सतोष नही होता जबतक कि वह अपना धुआ उगलनेवाला तैल-दीप वहा नही लटका देता । परिणाम यह होता है कि प्रदीप्त करने के उत्साह मे वे प्राय वहा और अन्धकार फैला देते है। मैंने कई बार देखा है कि किसी अभागे सत की मुखाकृति अपने अनुयायियो की इस अत्युपकारवृत्ति के कारण धुए से नष्टप्राय हो जाती है ।

अविनश्वर शेक्सपीयर के साथ भी भाग्य ने ऐसा ही कुछ किया है। प्रत्येक लेखक इसे अपना अनिवार्य कर्तव्य मानता है कि चरित्र अथवा रचनाओ के किसी अग पर प्रकाश डाले और किसी विशेषता को विस्मृत हो जाने से बचा ले। शब्दो मे समृद्ध भाष्यकार व्याख्या मे बडे-बडे पोथे रच डालता है, सम्पादको का झुण्ड, प्रत्येक पृष्ठ के पादभाग मे अपनी टिप्पणिया जोडकर दुर्बोधता का कुहासा पैदा करता है, और प्रत्येक लिक्खाड नैवेद्य के गध और धूम के बादलो मे वृद्धि करने के लिए अपनी स्तुति वा अनुसधान का कौडियाई नरकट-प्रकाश लिए चला जाता है।

चूकि मै अपने लेखनी-बन्धुओ द्वारा प्रस्थापित सम्पूर्ण प्रथाओ का सम्मान करता हू, इसलिए मुझे यह उचित जान पडा कि मै भी उस प्रसिद्ध कवि की स्मृति मे श्रद्धाजलि का अपना अश प्रदान करू। कुछ समय तक तो मै इसीमे परेशान रहा कि अपना कर्तव्य किस प्रकार पूरा किया जाए। मैने देखा कि नवीन पाठ का प्रत्येक प्रयत्न मेरे पहले ही किया जा चुका है, प्रत्येक सन्देहास्पद पक्ति दर्जनो विभिन्न रीतियो मे पहले ही समझाई और व्याख्या की सीमा के बाहर तक जा चुकी है, जहा तक उत्तम पदो या वाक्यो का सम्बन्ध है वे सब पूर्ववर्त्ती प्रशसको-द्वारा प्रशसित हो चुके है, और पिछले दिनो तो एक महान् जर्मन समीक्षक द्वारा कवि इस परिपूर्णता के साथ प्रशसित हो चुका है कि अब कोई ऐसा दोष भी ढूढे नही मिलता जिसे तर्क करके सुन्दर न सिद्ध किया जा सका हो।

इसी परेशानी मे मैं एक दिन रचनावली के पृष्ठ उलट रहा था कि यो ही हेनरी फोर्थ के परिहासपूर्ण दृश्यो पर मेरी नजर पड गई और क्षणभर के अन्दर मैं "बोर्स हैड टेवर्न" के उन्मद आनन्द मे बिल्कुल खो गया। हास्य के ये दृश्य इतनी सजीवता एव स्वाभाविकता के साथ चित्रित किए गए है, तथा चरित्रो को ऐसी शक्ति एव पूर्वापर सगति के साथ निबाहा गया है कि वे मानस मे यथार्थ जीवन की घटनाओ एव व्यक्तियो के साथ घुलमिल जाते है। बहुत ही कम पाठको को यह भान हो पाता है कि ये सब एक कवि के मस्तिष्क की आदर्श सृष्टिया हैं, और गभीर सत्य की दुनिया मे ऐसी रगरलिया मचाने वाली मण्डली कभी ईस्टचीप के नीरस पडोस मे पैदा नही हुई।

जहा तक मेरी बात है, मैं काव्य की कल्पनाओ मे खो जाने का प्रेमी हू।

मेरे लिए कहानी का एक नायक जिसका अस्तित्व कभी रहा नही, उतना ही मूल्यवान है जितना आज से हज़ार वर्ष पूर्व हुआ इतिहास का कोई नायक है। और यदि मानव-प्रकृति के सर्वनिष्ठ बन्धनो के प्रति मेरी असवेद्यता को क्षमा कर दिया जाए तो मैं प्राचीन इतिहास के आधे महापुरुषो के बदले भी मोटल्ले जैक को देना पसन्द नही करूगा। उन प्राचीन वीरो ने मेरे लिए या मेरे-जैसे आदमियो के लिए क्या किया है ? उन्होने ऐसे देशो को विजय किया है जिनकी एक एकड भूमि का भी उपभोग मै नही करता, या उन्होने जो जयपत्रमालाए प्राप्त की हैं उनकी एक भी पत्ती मुझे विरासत मे नही मिली है, या उन्होने रोमाचकारी पराक्रम के ऐसे उदाहरण प्रस्तुत किए है जिनके लिए मेरे पास न अवसर है, न उनका अनुगमन करने की इच्छा ही है। किन्तु वृद्ध जैक फाल-स्टाफ![1] दयालु जैक फालस्टाफ!—मधुर जैक फालस्टाफ!—ने मानवी आनन्द की सीमाए विस्तृत कर दी है, उसने प्रत्युत्पन्नमतित्व (हाजिरजवाबी) एव उत्तम विनोद के ऐसे विस्तृत प्रदेशो को बढाया है जिनका गरीब से गरीब आदमी मजा ले सकता है, उसने हास्य की ऐसी अखूट विरासत छोडी है जो अनन्त काल तक मानवजाति को अधिक प्रसन्न और अधिक अच्छा बनाती रहेगी।

सहसा मेरे मन मे एक विचार आया, और मैने किताब बन्द करते हुए कहा—"मै ईस्टचीप की तीर्थ यात्रा करूगा और देखूगा कि क्या पुराना 'बोर्स हेड टेवर्न' अब भी कायम है। कौन जाने, कही मै डेम क्विकली[2] और उसके अतिथियो का कोई पौराणिक स्रोत खोज सकू, जो हो, उन हॉलो, कक्षो के अन्दर चहलकदमी करने का एक सजातीय आनन्द तो मुझे मिलेगा ही, जो कभी उनके हास्य से ध्वनित हुए होगे या मैं मद्यप का वह सुख तो पा ही जाऊगा जो कभी उदार मदिरा से भरी परन्तु आज रिक्त सुराही को सूघने से उसे मिलता है।"

निश्चय होते ही वह तुरन्त कार्यान्वित हो गया। अपनी यात्रा मे मुझे जिन

---

१. हेनरी फ़ोर्थ शेक्सपियर का एक नाटक है। जैक फालस्टाफ उसका एक पात्र है।

२ उसी नाटक की एक पात्री।

दुस्साहसिकताओ एव आश्चर्यो का सामना करना पडा उनको मै इस समय अलग रख देता हू—कामलेन का वह भुतहा अचल, लिटिल ब्रिटेन तथा उसके निकटवर्ती प्रदेशो की वे नष्टप्राय कीत्तिया, कैरीटन स्ट्रीट तथा पुरानी यहूदी वस्ती, प्रसिद्ध गिल्डहाल और उसके दो स्थिर दानव जो कि नगर के गर्व और आश्चर्य तथा अभागे बच्चो के आनक है, या यह कि मैं कैसे लन्दन स्टोन नक गया, और उस महान् विद्रोही जैक केड के अनुकरण मे उसपर लाठी से प्रहार किया—इन सब बातो को यहा छोड देता हू।

इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि अन्तोगत्वा मैं हाजिरजवाबी एव मद्य-पानोत्सव के उस प्राचीन प्रदेश, स्वानन्दी ईस्टचीप मे पहुच गया, जहा सडको के नाम तक वहा की आनन्दी प्रकृति को प्रकट करते है। आज भी 'पुडिग लेन' नाम इसका प्रमाण है। वृद्ध स्टो (Stow) कहता है कि ईस्टचीप "सदा ही अपने कृत्यो के लिए प्रसिद्ध रहा है। यहा रसोइये भुने गोमास की गर्म-गर्म पसलियो, अच्छी तरह सिझे मासपूरित समोसो तथा अन्य भोज्य पदार्थों के लिए आवाहन करते थे, कास्यपात्रो की खनखनाहट, पाइपो का स्वर तथा वीणा एव वेला की झकार होती थी।" हाय, फालस्टाफ तथा स्टो के गर्जन-शील दिवसो से आज कितना परिवर्तन हो गया है। भावुक रसिक की जगह अध्यवसायी व्यापारी ने ले ली है, बर्तनो की खनखनाहट तथा वीणा एव बेला ध्वनि छकडो की खडखडाहट तथा डस्टमैन की घण्टी की शापित टनटनाहट मे खो गई है, अब वहा कोई गान सुनाई नही पडता—सिवाय उस तान के, जो बिलिंग्सगेट (लन्दन का मछली बाजार) के किसी भोपू से, सयोगवश किसी मृत मैकरेल मछली की प्रशसा मे, सुनाई पड जाती है।

मैंने डेम क्विकली के प्राचीन निवास का पता लगाने की व्यर्थ ही चेष्टा की। इसका एक मात्र अवशेष एक शूकरशीर्ष है जो पत्थर मे खुदाई करके बनाया गया है और पहले चिह्न के रूप मे व्यवहृत होता था किन्तु अब उस प्रसिद्ध पुरानी पान्थशाला के स्थान पर बने दो मकानो की विभाजन रेखा के रूप मे रखा गया है।

इस भली बिरादरी के इस लघु आवास का इतिहास जानने के लिए मुझे सामने रहनेवाली एक चर्बी-विक्रेता की विधवा का नाम बताया गया, जो उसी जगह पैदा हुई और पली थी और जिसे पडोस का निर्विवाद इतिहासकार समझा

जाता था। मैंने उसे पिछवाडे के बैठकखाने मे बैठा हुआ पाया जिसकी खिडकी आठ फुट के वर्गाकार आगन की ओर खुलती थी। इस आगन को पुष्पोद्यान के रूप मे बनाया गया था, उस ओर एक शीशे का दरवाज़ा बना हुआ था जिससे सडक का दूर-दृश्य दिखाई पडता था। दोनो ओर साबुन एव चर्बी की मोमबत्तिया एक श्रेणी मे लगी हुई थी, ये दोनो दृश्य बहुत सम्भवत, जीवन मे उसकी सम्भावनाओ को तथा उस लघु ससार को प्रकट करते थे जिसमे वह अभी तक रहती और चलती-फिरती आई थी जिसमे एक शती के अधिकाश भाग तक उसका अस्तित्व समाया हुआ था।

उसकी राय थी कि लन्दन स्टोन से मोनूमेण्ट (स्मारक) तक ईस्टचीप की हर बडी-छोटी बात के इतिहास मे विज्ञ होना, सम्पूर्ण जगत् के इतिहास से परिचित होने के बराबर है। किन्तु इतना मानते हुए भी, उसमे सच्चे ज्ञान की सरलता थी और इसके साथ ही जानकारी देने की वह उदार वृत्ति थी जो अपने पास-पडोस के विषय मे जाननेवाली समझदार बूढी स्त्रियो मे मैंने प्राय पाई है।

किन्तु उसकी सूचनाए प्राचीन युग मे ज्यादा दूर तक नही जाती थी। जिस जमाने मे डेम क्विकली ने बहादुर पिस्टल को प्रोत्साहित किया था, तबसे जब लन्दन के भीषण अग्निकाण्ड मे वह दुर्भाग्य-वश जलकर राख हो गया, बोर्स हेड के इतिहास पर वह कोई प्रकाश न डाल सकी। वह शीघ्र ही पुन निर्मित हुआ और पुराने नाम एव चिह्न के साथ तबतक भलीभाति चलता रहा जबतक कि मरणोन्मुख भूस्वामी ने अपने दोमुहे कामो, गलत नाम एव दूसरी ऐसी अनीतियो से, जो कलवारो की पापपूर्ण जाति मे अक्सर पाई जाती है, अनुतापदग्ध होकर स्वर्ग से शान्ति का समझौता करने के उद्देश्य से एक पादरी का खर्चा चलाने के लिए मदिरालय को सेट माईकेल चर्च, क्रुक्डलेन की भेट न कर दिया। कुछ समय तक गिर्जे की बैठके नियमित रूप से वहा होती रही किन्तु देखा गया कि चर्च के शासन मे शूकरशीर्ष अपना सिर नही उठा पाता है। धीरे-धीरे उसका ह्रास होता गया और लगभग तीस साल पूर्व उसने दम तोड दिये। तब मदिरालय को दुकानो के रूप मे परिवर्तित कर दिया गया। किन्तु उसने मुझे बताया कि उसकी एक तस्वीर अब भी सेट माइकेल चर्च मे सुरक्षित है, और उसके पृष्ठ भाग मे लगी हुई है। अब मैंने इस चित्र का दर्शन करने का निश्चय किया इसलिए देखरेखकर्त्ता (सेक्सटन) के घर का पता पूछकर मैंने ईस्टचीप की उस

इस प्रकार प्रतिष्ठित पुरुषो के विषय मे बात करते हुए किंचित् प्रसगान्तर करके मै कहना चाहूगा कि क्रुकडलेन के सेंट माइकेल चर्च के अन्दर उस शूर नेता विलियम वालवर्थ की शवभस्म भी सुरक्षित है जिसने तगडे मर्द वैट टाइलर को स्मिथफील्ड मे विदीर्ण कर दिया था—एक ऐसा नायक जो प्रतिष्ठित कुल-चिह्न-पताका के योग्य था, क्योकि वही एकमात्र लार्डमेयर है जो शस्त्र-कौशल के कार्यों के लिए विख्यात हो गया है, प्राय स्त्रैण (लन्दनी) नागरिको के शासकगण समस्त नृपतियो से अधिक शान्त रहनेवालो के रूप मे प्रसिद्ध है।[1]

---

१ इस क्षमताशाली पुरुष के स्मारक का प्राचीन लेख नीचे दिया जाता है, यह भयकर अग्निकाण्ड मे नष्ट हो गया —

Hereunder lyth a man of Fame
William Walworth callyd by name,
Fishmonger he was in lyftime here,
And thise word Maior, as in books appeare,
Who, with courage stout and manly myght,
Slew Jack Straw in Kyng Richarsd's sight,
For which act done, and trew entent,
The Kyng made him knyght incontinent,
And gave him armies, as here you see,
To declare his fact and chivaldrie
He left this lyff the yere of our God
Thirteen hondred fourscore and three odd

(अर्थात् यहा एक कीर्तिशाली मानव लेटा हुआ है, जो विलियम वालवर्थ के नाम से पुकारा जाता था। वह अपने जीवनकाल मे यहा मत्स्यविक्रेता था और जैसा कि अन्य ग्रन्थो से पता चलता है, दो बार लार्ड मेयर चुना गया था। उसने स्थिर साहस तथा पुरुषोचित शक्ति से किंग रिचर्ड के सामने ही जैक स्ट्रा को मार डाला था। इस कार्य के लिए किंग ने उसे नाइट बनाया और इस घटना तथा वीरता की घोषणा-स्वरूप उसे सेनाए दी। हमारे प्रभु के तेरह सौ तिरासीवे वर्ष मे उसने जीवनलीला समाप्त की)

जहा कभी बोर्सहेड स्थित था वही चर्च से लगी लघु समाधिभूमि मे बिल्कुल पिछली खिडकी के नीचे राबर्ट प्रेस्टन का समाधि-प्रस्तर खडा हुआ है। यह मदिरालय का पुराना सेवक था। अच्छी मदिरा का वितरण करनेवाले इस सेवक के व्यस्त जीवन की समाप्ति को अब तक लगभग सौ वर्ष हो चुके है और उसे ग्राहको की पुकार की सीमा मे ही चुपचाप धरती के अन्दर रख दिया गया है। जब मैं उसके चैत्यलेख पर जमे कुतृण हटा रहा था, तब वह नाटा सेक्सटन (चर्च की देखरेख करनेवाला कर्मचारी) मुझे बडी भेदभरी मुद्रा मे अलग हटा ले गया और बहुत धीमी आवाज़ मे बताया कि एक बार की बात है कि जाडे की अधेरी रात थी, हवा बेकाबू होकर चीखती और सनसनाती हुई बह रही थी, दरवाजे और खिडकिया उसके प्रहार से खडखडा रहे थे, वातदर्शक फडफडा रहे थे,—यहा तक कि लोग डरकर अपने बिछौनो मे उतर आए और मृतक भी अपनी कब्रो मे सोए रहने मे असमर्थ हो गए, प्रेस्टन का भूत, जो चर्च प्रागण मे चहलकदमी कर रहा था, बोर्सहेड के वेटर की आवाज से आकर्षित हो कोलाहलपूर्ण क्लब मे सहसा उपस्थित हो गया। उस समय चर्चजनपद का क्लर्क 'मिर्री गारलैंड आफ कैप्टेन डेथ' (कैप्टेन मौत की सुन्दर माला एक गान) का कोई पद गा रहा था। ट्रेनबैण्ड (स्टुअर्ट-काल मे लन्दन के नागरिको का सैन्यदल) के विविध नायक तथा नास्तिक एटर्नी हतप्रभ हो गए। एटर्नी तो वही कट्टर ईसाई बन गया और तब से अपने पेशे के अलावा और कभी सत्य को तोडने-मरोडने का काम उसने नही किया।

यहा यह याद रखना चाहिए कि मैं इस घटना की सत्यता की गारटी नही कर सकता, यद्यपि यह सुविदित है कि इस पुरानी महानगरी के चर्चप्रागण एव अन्य स्थान विक्षुब्ध प्रेतात्माओं से परिपूर्ण है, और हर एक ने काकलेन के प्रेत तथा उस वैताल की बात सुनी होगी जो टावर के राजचिह्नो की रक्षा करता है और जिसने न जाने कितने साहसी प्रहरियो की नाक मे दम कर दिया है।

जो भी बात हो, यह राबर्ट प्रेस्टन उस चपलजिह्व फ्रासिस का योग्य

टिप्पणी स्टो ने अपने 'लन्दन ग्रन्थ मे इस चैत्य लेख मे उल्लिखित जैक स्ट्रा के नाम को गलत बताते हुए लिखा है कि विलियम वालवर्थ ने जिसे मारा था वह वस्तुतः वाट टेलर था।

उत्तराधिकारी जान पडता है, जो प्रिस हाल की रगरेलियो मे सेवार्थ उपस्थित रहा करता था । यह भी "अभी, अभी, सरकार" कहने मे उतना ही पटु था और ईमानदारी मे तो अपने पूर्ववर्त्ती से कही अच्छा था, क्योकि जिस फाल-स्टाफ की सुरुचि की सच्चाई पर कोई आपत्ति उठाने का साहस नही कर सकता, वही फ्रासिस पर अपने बोरे मे चूना भर लेने का अपराध लगाता है । इसके विपरीत प्रेस्टन का चैत्यलेख उसके आचरण की शालीनता, उसकी मदिरा की श्रेष्ठता तथा उसके माप की सच्चाई की प्रशसा करता है ।[1] किन्तु चर्च के योग्य अधिकारी इस मद्यविक्रेता के गम्भीर गुणो से अधिक प्रभावित हुए नही लगते । उपवाद्यकार ने, जिसकी आखो की दृष्टि गीली हो गई थी, एक ऐसे आदमी के सयम पर बहुत बुद्धिमत्तापूर्ण विचार प्रकट किया जो सदा मदिरा से भरे पीपो के बीच पला हो, नाटे सेक्सटन ने सूचक सैन चलाकर तथा सिर के शकास्पद कम्पन द्वारा उससे सहमति प्रकट कर दी ।

मेरी खोजे इतनी दूर तक गई । यद्यपि वे मद्यविक्रेताओ, मत्स्यविक्रेताओ तथा लार्ड मेयरो के इतिहास पर बडा प्रकाश डालती है, फिर भी मेरे अनु-सन्धान के मुख्य हेतु, बोर्स हेड टेवर्न के चित्र के विषय मे उन्होने मुझे निराश

---

१ **चूकि यह अभिलेख श्रेष्ठ नीति से पूर्ण है, यहा दिया जा रहा है । ऐसा जान पडता है कि यह बोर्सहेड में प्राय· जाने वाले किसी आदमी द्वारा लिखा गया होगा—**

Bacchus, to give the toping World surprise
Produced one sober son, and here he lies
Though rear'd among full hogsheads, he defy'd
The charms of wine, and every one beside
O reader, if to justice thou'rt, inclined
Keep honest Preston daily in the mind
He drew good wine, took care to fill his pots
Had sundry virtues that excused his faults
You that on Bacchus have the like dependence
Pray copy Bob in measure and attendance

ही किया। सेट माइकेल चर्च मे वैसा कोई चित्र दिखाई नही पडा। इसलिए मैने अपने मन मे कहा—"विदा! यहा मेरी खोज का अन्त होता है!" मैं भ्रमित पुरातत्त्वान्वेषी की मुद्रा बनाए इस विषय का त्याग करने ही जा रहा था कि मेरे मित्र सेक्सटन ने, प्राचीन मदिरालय से सम्बन्धित प्रत्येक वस्तु मे मेरी उत्सुकता देखकर, भण्डारे के चुने हुए बर्तनो को दिखाने की इच्छा प्रकट की। ये उस समय से पीढी-दर-पीढी चले आ रहे थे जब गिर्जे की बैठके बोर्स हेड मदिरालय मे हुआ करती थी। वे गिर्जे के क्लबरूम मे रखी हुई थी, किन्तु पुरानी इमारत के ह्रास के साथ निकटवर्ती एक मदिरालय मे हस्तान्तरित कर दी गई थी।

चन्द कदम चलने पर ही वह मकान आ गया। यह न० १२ माइल्स लेन पर स्थित है। नाम है 'दि सेसन्स आर्म्स'। मास्टर एडवर्ड हनीबाल द्वारा चलाया जा रहा है। यह उन लघु मदिरालयो मे से एक है जो नगर के मध्य भाग मे बहुत अधिक सख्या मे होते है और पास-पडोस की खबरो और गप्पो के केन्द्र बन जाते है। हमने मद्यकक्ष मे प्रवेश किया, जो सकरा और अधेरा था, क्योकि इन घनी गलियों मे प्रतिबिम्बित प्रकाश की चन्द किरणे ही सघर्ष करती हुई, निवासियो तक पहुच पाती है, जिनका खुला दिन भी बस सहनीय गोधूलि बेला-जैसा होता है। यह कमरा छोटे-छोटे बाक्सो या हिस्सो मे विभाजित था। हर बाक्स में एक टेबल था जो स्वच्छ श्वेत वस्त्र से ढका था—भोजन के लिए तैयार। इसे देखकर मालूम हुआ कि अतिथि भी पुरातन शैली के अच्छे-भले लोग होगे, क्योकि इस समय ठीक एक बजा था। कमरे के निचले छोर पर कोयले की साफ आग जल रही थी, जिसपर भेड का सीना भूना जा रहा था। आले पर पीतल के चमकते हुए शमादान तथा कास्यपात्र सजे हुए थे। एक कोने मे पुराने ढग की दीवार-घडी टिक-टिक कर रही थी। रसोई, वार्ताकक्ष और हॉल के इस मिश्रण मे कुछ ऐसी आदिकालिक वस्तु थी जिसने मुझे पहले के ज़माने मे पहुचा दिया और इससे मुझे खुशी हुई। निश्चय ही स्थान बहुत साधारण था किन्तु हर चीज पर स्वच्छता एव व्यवस्था की छाप थी जो किसी उल्लेखनीय आग्ल गृहस्थी की देखरेख की सूचना देती थी। उभयचारी से दिखनेवाले प्राणियो का एक झुण्ड, जो या तो मछुए होगे या समुद्री नाविक, एक बाक्स मे भोजन का आनन्द ले रहा था। चूकि मैं कुछ उच्च और विशिष्ट

प्रकार का आदमी मालूम पड रहा था, मुझे पृष्ठभाग के एक छोटे बेढगे आकार के कमरे मे ले जाया गया जिसमे कम से कम नौ कोने थे। यह कमरा एक रोशन-दान से प्रकाशित और पूर्वकालिक चर्ममण्डित कुर्सियो मे सजा था। उसमे एक मोटे शूकरशावक का चित्र भी टगा था। स्पष्ट था कि यह कमरा विशेष अतिथियो के लिए सुरक्षित है। एक कोने मे मोमजामे की टोपी पहने लाल नाकवाले एक फटीचर सज्जन बैठे हुए थे और पोर्टर (जौ की शराब) के अर्धरिक्त पात्र पर ध्यानमग्न थे।

सेक्सटन मालकिन को एक ओर ले गया और गम्भीर महत्त्व की मुद्रा मे मेरे वहा आने का उद्देश्य बताया। श्रीमती हनीबाल खुशमिजाज, मुटल्ली पर उत्साह से भरी महिला थी और आतिथ्यकर्त्रियो के उस आदर्श डेम क्विकली की बुरी विकल्प नही थी। कृतज्ञ बनाने का एक अवसर पाकर उसे प्रसन्नता हुई, वह कूदती-फादती अपने गृह के पुरातत्त्वागार मे, ऊपर गई, क्योकि वही क्लब के मूल्यवान् भाण्ड रखे हुए थे। और मुस्कराती एव कृपाशीलता वरसाती हुई, उन्हे अपने हाथ मे लिये लौटी।

पहली चीज़ जो उसने मेरे सामने उपस्थित की, कडी वार्निशवाला लोहे का एक तम्बाकू का बृहदाकार डिब्बा था। मुझे बताया गया कि इसीसे गिर्जे की सभाओ मे न जाने किस काल से लोग तम्बाकू पीते आ रहे थे। उसपर कभी कोई कुत्सित हाथ नही पडा, न साधारण अवसरो पर कभी उसका उपयोग ही किया गया। मैने उसे उचित श्रद्धा के साथ स्पर्श किया किन्तु जब मैने देखा कि उसके ऊपर वैसा ही चित्र बना है, जिसकी खोज मे मै था, तो फिर मेरी खुशी का क्या पूछना! उस पर बोर्स हेड टेवर्न के बहिर्भाग का चित्र बना था और उसके द्वार के सामने टेबल पर आनन्द-प्रमुदित भोजमण्डली बैठी दिख रही थी। यह चित्र उसी निष्ठा और शक्ति के साथ बनाया गया था जिसके साथ प्रसिद्ध सेनानायको और नौसेनापतियो के चित्र, आगे आनेवाली पीढियो के लाभ के लिए, बनाए जाते है। कोई भ्रम न हो इसलिए चतुर चितेरे ने बड़ी विचक्षणता के साथ प्रिस हाल एव फालस्टाफ के नाम उनकी कुर्सियो के पाद-भाग पर अकित कर दिये थे।

आवरण के अन्दर एक अभिलेख था, जो मिट चला था और जिसमे बताया गया था कि यह बक्स सर रिचर्ड गोर द्वारा बोर्स हेड टेवर्न मे होनेवाली चर्च

की बैठको के लिए प्रदत्त किया गया। यह सूचना भी थी कि "उसके उत्तराधिकारी मि० जान पैंकर्ड ने १७६७ मे इसकी मरम्मत कराई तथा और सुन्दर बना दिया।" इस महान् एव श्रद्धा-भाजन स्मृतिचिह्न का यह याथातथ्य वर्णन है। मैं पूछता हू कि क्या विद्वान् स्क्रिबलेरियस ने अपनी रोमन ढाल को या गोल-मेज़ के सामन्तो ने अपने बहुईप्सित सेगरियल (ईसामसीह द्वारा अपने अन्तिम भोजन मे प्रयुक्त तश्तरी) को उससे अधिक हर्ष के साथ देखा होगा, जितने हर्ष के साथ मैंने इस बक्स को देखा है ?

जब मैं हर्षोत्फुल्ल दृष्टि से इसपर ध्यान लगाए हुए था, डेम हनीबाल ने, जो मेरी दिलचस्पी देखकर बहुत सन्तुष्ट हो रही थी, मेरे हाथ मे एक पानपात्र लाकर रख दिया, जो गिर्जे का ही था और पुराने 'बोर्स हेड' के समय से चला आ रहा था। उसपर भी आलेख था कि वह सामन्त फ्रासिस विदर्स द्वारा प्रदत्त है। डेम हनीबाल ने बताया कि बहुत प्राचीन होने से यह पात्र अत्यधिक मूल्य-वान् माना जाता है। उस कोने मे जो फटीचर-से लाल नाक तथा मोमी टोपी वाले सज्जन बैठे हुए थे, तथा जिनके वीर बार्डोल्फ के वशानुक्रम मे होने का गहरा सन्देह मुझे था, उन्होने भी इसका समर्थन किया। अपनी पोर्टर मदिरा के पात्र पर से उनका ध्यान सहसा टूट गया और इस पानपात्र की ओर जानकारी-भरी दृष्टि डालते हुए वह बोले—"अरे! अरे! सिर अब मत व्यथित हो, देख इस वस्तु को।"

प्राचीन आमोद-प्रमोद के इस स्मृतिचिह्न को आधुनिक चर्चाधिकारी, जो महत् महत्त्व प्रदान करते है, उसके कारण पहले मुझे कुछ परेशानी अनुभव हुई, किन्तु कल्पना को कोई वस्तु इतना तीव्र नही करती जितनी पुरातात्त्विक खोज करती है, मैंने तुरन्त ही कल्पना कर ली कि यह निश्चय ही वही पानपात्र है जिसपर बैठकर फालस्टाफ ने डेम क्विकली से अपनी प्रेमपूरित परन्तु बेवफाई से भरी, प्रतिज्ञा की थी और इसे निश्चय ही उस पवित्र प्रतिज्ञा[1] के प्रमाणरूप

---

१. Thou didst swear to me upon a *Porcel-gilt goblet*, sitting in my Dolphin chamber, at the round table, by a sea-coal fire, On wednesday, in Whitsunweek, when the Prince broke thy head for likening his father to a singing man at Windsor; thou didst swear to me then, as I was washing my wound, to

मे, उसके राज्य के चिह्न की भाति, सुरक्षित रखा ही जाना चाहिए।

मेरी आतिथ्यकर्त्री ने एक लम्बा विवरण दिया कि पात्र किस प्रकार एक पीढी द्वारा दूसरी पीढी को हस्तान्तरित होता रहा है। उसने ईस्टचीप के प्राचीन रसिको के आसनो पर शान्त बैठने वाले और अन्य भाष्यकारो की तरह शेक्सपियर के सम्मान मे धुआ उगलने वाले बहुत से गिर्जा कर्मचारियो के सम्बन्ध मे कितनी ही बाते बताई। मै उन सबको यहा नही लिखना चाहता क्योकि इन बातो के विषय मे मेरे पाठक इतने उत्कण्ठित नही हो सकते जितना मै हू। इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि ईस्टचीप के पास-पडोस मे रहनेवाले सभी का विश्वास है कि फालस्टाफ और उसके सगी सचमुच वहा जिये है और प्रमोद कर चुके है। मेसन्स आर्म्स मे जो वृद्धजन प्राय आते-जाते है, उनके बीच इन लोगो के विषय मे कितनी ही पौराणिक कथाए प्रचलित है जो उनके पूर्वजो से पीढी-दर-पीढी उनमे चली आई है। बोर्स हेड के पुराने स्थान पर एक आइरिश नाई मि० एम० काश की दुकान है। मि० काश फैट जैक के बारे मे ऐसे-ऐसे मजाक सुनाता है जो किताबो मे नही है किन्तु जिन्हे सुनकर ग्राहक हसते-हसते लोट-पोट हो जाते है।

अब मै अपने मित्र सेक्सटन की ओर इसलिए घूम गया कि उससे कुछ और बाते पूछू, किन्तु मैने देखा कि वह चिन्ताकुल ध्यान मे डूब गया है। उसका सिर एक ओर झुक गया, उसके जठर के नीचे से एक गहरा नि श्वास निकला, और यद्यपि मैने उसकी आखो मे अश्रुबिन्दु कम्पित होते नही देखा किन्तु उसके मुह के एक कोने से नमी निश्चय ही बढी आ रही थी। मैने खुले दरवाज़े के बीच से देखनेवाली उसकी आखो की दिशा का अनुसरण किया, और मुझे मालूम हुआ कि उसकी लालसापूर्ण दृष्टि आग पर भूने जाते भेड के स्वादिष्ठ सीने पर लगी हुई है।

अब मुझे याद आया कि अपने गहन अनुसधान की उत्कण्ठा मे मैं उस बेचारे को उसके भोजन से दूर रख रहा हू। मेरी आते भी सहानुभूति मे कुड-कुडाने लगी और मै उसकी कृपा के लिए अपनी कृतज्ञता-स्वरूप उसके हाथो मे

---

marry me, and make me my lady, thy wife, canst thou deny it ?

—Henry IV, Part 2.

कुछ भेट रखकर तथा उसे, डेम हनीबाल और क्रुक्डलेन के पैरिश क्लब को धन्यवाद देकर वहा से विदा हो गया। हा, मोमी टोपी और ताम्रवर्णी नाक वाले उस फटेहाल परन्तु आडम्बरपूर्ण व्यक्ति के प्रति भी धन्यवाद प्रकाश करना मैं नही भूला।

इस रूप मे मैंने अपने मनोरजक अनुसधान का एक नीरस सक्षेप यहा प्रस्तुत किया है। यदि यह वहुत छोटा और असन्तोषजनक प्रमाणित हो तो मै साहित्य की इस विद्या मे, जो आजकल इतनी लोकप्रिय है, अपनी अनुभवहीनता स्वीकार कर लूगा। मैं जानता हू कि अमर कवि का और अधिक कुशल चित्रकार मेरे द्वारा बताई इसी सामग्री को खूब फुलाकर अच्छे बिकने वाले ग्रन्थ के रूप मे परिवर्तित कर देता , वह विलियम वालवर्थ, जैक स्ट्रा तथा रावर्ट प्रेसटन की जीवनियो से उसे भर देता, फिर सेट माइकेल के चन्द प्रख्यात मत्स्य-विक्रेताओ पर टिप्पणिया देता, ईस्टचीप का इतिहास बताता, डेम हनीबाल तथा उसकी सुन्दरी कन्या, जिसका मैंने उल्लेख तक नही किया है, के निजी स्मरण लेखबद्ध करता और फिर सारे वर्णन को वाट टेलर की रगरलियो से सजीव एव लन्दन के भीपण अग्निकाण्ड से प्रदीप्त कर देता।

इसे मैं एक समृद्ध खान की भाति कार्यान्वित किए जाने के लिए जाने के लिए भावी भाष्यकारो के ऊपर छोड देता हू। मैं उस तम्बाकू के डिब्बे और पानपात्र, जिन्हे इस प्रकार मैं प्रकाश मे ला सका हू, के लिए भी आशा-रहित नही हू कि वे भी भावी नक्काशियो का विषय होगे तथा मोटे-मोटे पोथो एव वाद-विवादो के लिए भी उतने ही फलदायक होगे जितना एचीलीज़ की ढाल या अति-प्रसिद्ध पोर्टलैण्ड का फूलदान है।

साहित्य की परिवर्तनशीलता

(वेस्टमिस्टर एबे मे एक कथोपकथन)

I know that all beneath the moon decays,
And what by mortals ın thıs world ıs brought,
In tıme's gıeat perıod shall return to nought,
I know that all the mues's heavenly lays,
wıth toıl of sprıte whıch are so dearly bought,
As ıdle sounds, of few ao none a are sought,
That there ıs nothıng lıghter then mere praıses,

—Drummond of Howthornden'

(स्वतन्त्र अनुवाद)

मुझे ज्ञात है, चन्द्र तले जो कुछ है वह सब मिट जाता है।
दीर्घ युगो मे श्रम कर मानव दुनिया मे जो कुछ लाता है॥
महाशून्य मे वह विलीन हो जाता जीवन का सब वैभव।
एक दिवस सब चला जायगा जो कुछ है प्रभूतश्रम-सम्भव॥
मै जानता कि जो स्वर्गिक सौन्दर्य काव्य मे आता पावन।
बहुत दिनो के श्रम-सीकर से जिसका होता है अभिसिचन॥
वह भी नीरस हो जाता, जो यश लगता है परम मनोरम।
उससे तुच्छ न कुछ भी मानव, पर कैसा तुझपर छाया भ्रम॥

—हाथोर्नडेन के ड्रमण्ड

मन की कुछ अर्द्धस्वप्निल वृत्तिया ऐसी है जिनमे हम कोलाहल और जगमगाहट से बचने के लिए खो जाते है और कोई ऐसा निर्जन स्थान खोजते है

जहा हम अपनी कल्पनाओ के साथ खेल सके और बिना किसी बाधा के हवाई किले वना सके। ऐसी ही वृत्ति मे मै वेस्टमिस्टर एब्बी के पुराने भूरे मठो मे घूमता हुआ उडते विचारो की उस विलासिता का उपभोग कर रहा था जिसे चिन्तन के गोरवपूर्ण नाम से पुकारा जा सकता है। सहसा वेस्टमिस्टर स्कूल के फुटबाल खेलते प्रमत्त बालको के शोर से उक्त स्थान की आश्रमिक शान्ति भग हो गई। तोरणयुक्त वीथिया एव ढहती हुई समाधिया उनकी खिलखिलाहट से गूज उठी। उनके शोरगुल से त्राण पाने के लिए मैं भवनावली के और अन्तरग भाग के एकान्त मे चला गया और गिर्जे के एक स्थल-निर्देशक से पुस्तकालय नक पहुचा देने का अनुरोध किया। वह मुझे एक ऐसे सिंह-द्वार के अन्दर से ले चला जिसका पुरातन स्थापत्य टूट-टूटकर गिर रहा था और ऐसे अवेरे दालान मे खुलता था जो पादरियो के सभास्थल तक तथा उस कमरे तक जाता था जिसमे अन्तिम निर्णय-दिवस की पुस्तिका रखी थी। इसी मार्ग मे बाईं तरफ एक छोटा दरवाज़ा था। इसमे स्थलनिर्देशक ने कुजी घुमाई; इसमे दुहरा ताला लगा हुआ था, वह ज़रा कठिनाई से खुला, जैसे कभी-कभी प्रयोग मे आनेवाले दरवाजे खुलते है। अब हम लोग अवेरी, सकरी सीढी से ऊपर चढे और एक दूसरे दरवाज़े से गुजरने के बाद पुस्तकालय मे प्रविष्ट हुए।

अब मैंने अपने को एक ऊचे हाल के अन्दर पाया। इसकी छते पुराने आग्ल बलूत (ओक) की मोटी शहतीरो पर उठी हुई थी। फर्श से बहुत ऊचाई पर बनी गाथिक खिडकियो के जरिये उसमे परिमित प्रकाश आ रहा था। ये खिडकिया मठो की छत पर खुलती थी। लबादा पहने चर्च के किसी श्रद्धास्पद अधिकारी का एक पुराना चित्र अग्नि-कुण्ड के ऊपर लटका हुआ था। हाल के चतुर्दिक् एक छोटे गलियारे मे पुस्तके वलूत की तक्षण-कलायुक्त अलमारियो मे सजी हुई थी। अधिकाश पुस्तके पुराने शास्त्रार्थी लेखको की लिखी थी और उपयोग की अपेक्षा काल के कारण ही अधिक जीर्ण-शीर्ण हो गई थी। पुस्तकालय के मध्य भाग मे अकेला एक टेबल था जिसपर दो या तीन ग्रन्थ रखे थे, एक स्याहीदान था जिसमे स्याही नही थी और चन्द कलमे थी जो बहुत दिनो से काम मे न ली जाने के कारण सूख गई थी। यह स्थान शान्त अध्ययन एव गहन चिन्तन के लिए सज्जित जान पडता था। वह

एब्वी की बृहदाकार दीवारो की गहराई मे भूमिस्थ-सा जान पडता था और समार के कोलाहल से दूर था। कभी-कभी मुझे स्कूली बच्चो का शोर मठो से हलका-हलका छनकर आता सुनाई पडता था, या प्रार्थना के लिए वजते घण्टे का स्वर एब्वी की छतो मे प्रतिध्वनित होता जाता था। अश-अश करके खुशियो का शोर क्षीण और क्षीण होता गया और अन्त मे समाप्त हो गया घण्टे की टनटन आवाज वन्द हो गई और उस धुधले हाल पर गहरी नीरवता छा गई।

मैने एक छोटी-सी मोटी चौपेजी, चर्मपत्र मे पीतल के काटे से वधी पुस्तक उठा ली और एक श्रद्धास्पद बाहवाली कुर्सी पर टेवल के पास जा बैठा। परन्तु पढने की जगह पवित्र आश्रमिक वातावरण तथा उस स्थान की निर्जीव शान्ति से मै विचारो मे खो गया। जब मै नष्टप्राय आवरणयुक्त पुराने ग्रन्थो को इस प्रकार आलो पर रखे और प्रकटत अपनी शान्ति मे अबाधित, देख रहा था, तब मै पुस्तकालय को एक प्रकार का साहित्यिक भूगर्भस्थ समाधिस्थान समझे विना नही रह सकता था,—ऐसा समाधिस्थान, जहा सुरक्षित शवो (ममियो) की भाति ग्रन्थकार भी धर्मभावपूर्वक समाधिस्थ हो और उन्हे काला पडने तथा धूलिभरी विस्मृति मे नष्ट होने के लिए छोड दिया जाए।

मैने सोचा, इनमे से हर एक जिल्द (ग्रन्थ) के लिए, जो ऐसी उपेक्षा के साथ यहा फेक दी गई है, किसी मस्तिष्क को कितनी पीडा सहनी पडी होगी। कितने थकावट-भरे दिन उसे बिताने पडे होगे। कितनी निद्रारहित राते काटनी पडी होगी! उनके लेखको ने अपने को किस प्रकार गुफाओ और मठो के एकान्त मे निमग्न किया होगा, कैसे उन्होने अपने को मनुष्यो के चेहरो से, और उनसे भी अधिक पवित्र प्रकृति के चेहरे से, दूर एकान्त मे बन्द करके कष्ट-साध्य अनुसन्धान और गहन चिन्तन मे लगाया होगा! और इतना सब किसलिए? धूलिभरी आलमारी की एक इच जगह भरने के लिए,—किसी भावी युग मे, किसी तन्द्रिल गिर्जानुयायी या फिर मेरे जैसे भटके हुए आदमी द्वारा कभी-कभी अपने शीर्षक पढे जाने के लिए?—यही क्यो, किसी और युग मे स्मृति से भी खो जाने के लिए? इस दर्पपूर्ण अमरत्व का यह हाल है। एक क्षणभगुर प्रवाद, एक स्थानिक ध्वनि, उस घण्टा-ध्वनि की भाति जो अभी-अभी इन स्तभो के बीच वजी थी और एक क्षण के लिए कान को भरती हुई

प्रतिध्वनि मे क्षणभर फैलकर, इस प्रकार मिट गई जैसे कभी थी ही नही ।

जब मैं हाथ पर अपना सिर धरे, कुछ बडबडाता और कुछ इन अलाभप्रद कल्पनाओ मे डूबा हुआ था, तभी दूसरे हाथ से अन्यमनस्कतापूर्वक किताब को दबा रहा था, यहा तक कि सयोगवश काटे ढीले पड गए और मुझे यह देखकर अत्यन्त आश्चर्य हुआ कि उस नन्ही किताब ने दो या तीन जम्हाइया ली है, उस आदमी की तरह जो गहरी नीद से उठ पडा हो । फिर मुझे एक नीरस उद्गार सुनाई पडा, और अन्त मे तो वह बात करने लगी । आरम्भ मे उसकी आवाज़ भारी और टूटी हुई थी—शायद उस जाले के कारण जो किसी अध्ययनशील मकडे ने उसके चतुर्दिक् बुना होगा, या एब्बी की ठण्ड और सीलन मे बहुत दिन तक रहने से जुकाम हो गया होगा । परन्तु थोडी देर मे आवाज़ ज्यादा स्पष्ट हो गई और मैंने देखा कि वह धाराप्रवाह बोलनेवाली, वार्तानिपुण पुस्तिका के रूप मे बदल गई है । उसकी भाषा विचित्र और अप्रचलित थी, और उच्चारण ऐसा था जो आज जगली समझा जाएगा, किन्तु मुझसे जहा तक सम्भव होगा, मैं उसे आधुनिक रूप मे प्रस्तुत करूगा ।

पहले तो उसने ससार की उपेक्षा पर—योग्यता के अधेरे मे पडे-पडे नष्ट हो जाने, तथा इसी प्रकार के साहित्यिक मनस्ताप की अन्य सामान्य बातो पर झाडना शुरू किया और बडी कटुता के साथ शिकायत की कि उसे दो शतियो से भी अधिक समय से खोला तक नही गया है । डीन जब-तक पुस्तकालय मे आता है, कभी-कभी एक-दो किताबे उठा लेता है, कुछ क्षण उनके साथ खिलवाड करता है, और उन्हे आलमारी मे उनके स्थान पर रख देता है । "वे क्या मुसीबत खडी करना चाहते है"—छोटी किताब ने कहा और मैंने देखा कि वह क्रोध से चिडचिडा उठी थी—"इस प्रकार कई हजार ग्रन्थो को यहा बन्द करके और बूढे निरीक्षको के जिम्मे उनकी देख-रेख सुपुर्द करके—मानो हम किसी हरम की सुन्दरिया हो जिनपर डीन कभी-कभी नजर डाल जाता हो—वे क्या मुसीबत खडी करना चाहते हैं । किताबे लिखी गई थी आनन्द देने और उपभोग किये जाने के लिए, और मैं चाहूगी कि ऐसा नियम बना दिया जाए कि डीन को हममे से हर एक को कम से कम साल मे एक बार तो दर्शन देना ही होगा, और यदि यह उसकी सामर्थ्य से बाहर हो तो उन्हे कभी-कभी हमारे बीच सारे वेस्टमिंस्टर स्कूल को छोड देना होगा जिसमे हमे बीच-बीच मे ताज़ी

हवा तो मिलती रहे ।"

मैने जवाब दिया—"मेरी योग्य मित्र ! जरा धीरे बोलो। तुम नही जानती कि अपनी पीढी की अधिकाश पुस्तको से तुम कितनी अच्छी हालत मे हो । इस प्राचीन पुस्तकालय मे रखी जाने के कारण, तुम्हारी स्थिति उन सतो एव सम्राटो के सुरक्षित अवशेपो की भाति हो गई है, जो निकटवर्ती गिर्जो मे समाधिस्थ पडे है, जब कि तुम्हारे समसामयिक मानवो के अवशेप, प्रकृति के सामान्य पथ पर चलकर बहुत दिनो पहले ही धूलि मे मिल चुके है ।"

अपने पन्नो को सिकोडते हुए और बडी-सी दिखाई पडते हुए लघु पुस्तक ने कहा—"मै किसी एब्बी (ईसाई मठ) के पुस्तक-कीटो के लिए नही, सारे विश्व के लिए लिखी गई थी । मै अन्य महती समसामयिक रचनाओ की भाति, हाथो-हाथ प्रचारित होने के लिए बनाई गई थी किन्तु यहा दो से अधिक शतियो से बधी पडी हू, और यदि आपने सयोग-वश, नष्ट होने के पूर्व, मुझे कुछ शब्द बोलने का अवसर न दिया होता तो मै चुपचाप इन कीटाणुओ की शिकार हो गई होती जो मेरी आतो से बदला चुका रहे है ।"

मैंने उत्तर दिया—"मेरी अच्छी मित्र ! यदि तुम उस तरह प्रचारित की गई होती, जिसकी बात कर रही हो, तो अब से बहुत पहले ही तुम समाप्त हो चुकी होती । तुम्हारी मुखाकृति पर विचार करने से मालूम होता है कि तुम्हारी उम्र बहुत काफी है तुम्हारी समकालिको मे बहुत कम ही इस समय बची होगी, और जो थोडी बची है उनकी दीर्घायु का कारण भी, तुम्हारी तरह, पुराने पुस्तकालयो के कारागृह मे बन्द रहना ही है, और मुझे यह कहने के लिए क्षमा करो कि हरम की उपमा की जगह, तुम अधिक औचित्य एव कृतज्ञता के साथ उन रुग्णालयो से उपमा दे सकती हो जो वृद्धो, अपगो और दुर्बलो के लाभ के लिए धार्मिक सस्थानो से सम्बद्ध होते है और जहा वे बिना काम किये शान्त पोषण पाकर आश्चर्यजनक किन्तु निरर्थक पुरानी उम्र तक जीते रहते है । तुम अपनी समसामयिक बहिनो के विषय मे इस प्रकार बात करती हो, मानो वे अब तक प्रचारित हो रही हो,—पर अब उनकी कृतिया हमे कहा मिलती है ? हमे लिंकन के राबर्ट ग्राटेस्ट के विषय मे, क्या सुनाई पडता है ? उससे अधिक श्रम अमरता के लिए किसने किया होगा ? कहा जाता है कि उसने लगभग दो सौ ग्रन्थ लिखे थे । उसने अपनी कीर्ति स्थायी

बनाने के लिए पुस्तको का एक पिरामिड ही खडा कर दिया था। किन्तु हाय! वह पिरामिड बहुत पहिले गिर चुका है, और उसके कुछ टुकडे ही विविध पुस्तकालयो मे फैले हुए है, जहा किसी पुरातत्त्वविद् द्वारा भी मुश्किल से ही उनकी शान्ति मे बाधा पडती है, हम इतिहासकार, पुरातत्त्वज्ञ, दार्शनिक, धर्मशास्त्रवेत्ता और कवि गिराल्डस कैम्ब्रेनसिस के विषय मे क्या सुनते है? उसने दो बार बिशप का पद अस्वीकार किया कि वह एकान्त मे बैठकर भावी पीढियो के लिए कुछ लिख जाए किन्तु 'भावी पीढिया' श्रम के विषय मे कोई जिज्ञासा प्रकट नही करती। और हण्टिगडन के हेनरी का क्या हुआ, जिसने इग्लैण्ड का एक विद्वत्तापूर्ण इतिहास लिखने के साथ ही ससार के तिरस्कार पर भी एक पुस्तिका लिखी जिसका बदला ससार ने उसे भुलाकर चुका लिया है? आज एक्जेटर के जोजफ का, जिसे शास्त्रीय रचनाकला मे अपने युग का चमत्कार माना जाता है, कौन-सा अश उद्धृत किया जाता है? उसकी तीन महती कविताओ मे से, एक तो सदा के लिए नष्ट हो गई है, केवल ज़रा-सा अश मिलता है, दूसरी दो भी उन्ही चन्द आदमियो को मालूम है जो साहित्य के जिज्ञासु है, और जहा तक उसके प्रेम-काव्य एव सूक्तियो का सवाल है, वे बिल्कुल ही लुप्त हो चुकी है। जॉन वालिस, जिसने जीवन-वृक्ष का नाम पाया था, का आज क्या उपयोग होता है? इसी तरह माल्म्सबरी के विलियम, डरहम के सीमियन, पीटरबरो के बेनेडिक्ट, सेंट अल्बास के जान हैनविल, के का आज कितना प्रचार है?'

पुस्तक झल्लाहट-भरे स्वर मे चिल्ला पडी—"कृपा कीजिए मित्र! भला आप मुझे कितना पुराना समझते है? आप तो ऐसे रचनाकारो की बाते कर रहे है जो मेरे समय के बहुत पहले हुए थे, और जिन्होने या तो फरासीसी या लातीनी (लैटिन) मे लिखा था और एक प्रकार से स्वय ही अपने को निर्वासित कर लिया था, वे तो विस्मृत हो जाने के ही लायक थे।[1] किन्तु, महोदय, मै तो

---

1 In Latin and French hath many soueraine wittes had great delyte to endite, and have many noble thinges fulfilde, but certes there ben some that speaken their poisye in French,

वडे ही प्रसिद्ध प्रेस विकिन द वर्दे से दुनिया मे उतरी हू । मै अपनी ही देशी भाषा मे लिखी गई—और ऐसे समय लिखी गई जव भाषा स्थिर हो गई थी, और निश्चय ही मै विशुद्ध एव प्राजल अग्रेजी का नमूना समझी जाती थी ।"

(यहा मुझे यह कह देना चाहिए कि ये विचार ऐसी असहनीय रूप से अप्रचलित भाषा मे व्यक्त किये गए थे, कि उन्हे आधुनिक शब्दावली मे रूपान्तरित करने मे मुझे असीम कठिनाई पडी है ।)

मैने कहा—"आपकी आयु का गलत अनुमान लगाने के लिए मैं आपसे क्षमा चाहता हू, किन्तु इससे कुछ विशेष अन्तर नही पडता, आपके समय के भी प्राय सभी लेखक विस्मृत हो चुके है, और द वर्दे के प्रकाशन आज के पुस्तक-सग्रहकर्ताओ के बीच दुर्लभ साहित्यिक रचनाओ मे गिने जाते है । भाषा की जिस शुद्धता एव स्थिरता पर आपने अमरता के लिए अपने दावे का आधार रखा है, वह सभी कालो के लेखको का भ्रान्त आधार रहा है ।—यहा तक कि वह उस सुयोग्य (ग्लाउसस्टर के) रावर्ट के युग मे भी प्रचलित था जिसने सकर सैक्सन बोली के पद्यो मे अपना इतिहास लिखा है । अव भी वहुत से लोग 'स्पेसर की विशुद्ध अग्रेजी के अकलुषित कूप' की वाते करते है मानो कोई भाषा किसी कुए या फौआरे से निकलती हो, और वह विविध बोलियो का सगम मात्र न हो, या निरन्तर परिवर्त्तन एव अन्तर्मिश्रण का विषय न हो । वस्तुत यही वह गुण है जिसने आग्ल-साहित्य को इतना अधिक परिवर्तनशील

---

of which speche the Frenchmen have as good a fantasye as we have in hearying of Frenchmen's Englishe

—CHAUCER'S Testament of Love

उपर्युक्त उद्धरण प्राचीन काल की अग्रेजी मे है जिसका आशय यह है कि बहुतेरी श्रेष्ठ प्रतिभाए ऐसी थी जिन्हे फ्रेंच एव लैटिन लिखने मे बडा आनन्द मिलता था, उनमे अनेक अच्छी बाते भी थी किन्तु उनमे कुछ लोग ऐसे अवश्य थे जो ऐसी फरासीसी भाषा मे अपना काव्य लिखते थे जो फरासीसियो के लिए वैसी ही अद्भुत थी जैसी हमे फरासीसियो की अग्रेजी सुनने मे लगती है ।

—चासर

तथा इसपर बनी ख्याति को इतना क्षणभगुर बनाया है । जवतक विचार के लिए इस माध्यम, इस साधन की अपेक्षा और अधिक स्थायी एव अपरिवर्त्तनशील कोई चीज़ न खोजी जाए, तबतक विचार को सब वस्तुओ की नियति का भागीदार बनना होगा और उसे भी ह्रास के गर्त्त मे गिरना होगा । अत्यन्त लोकप्रिय लेखक के अह एव विजयाभिमान पर यह अकुश का काम करता है । जिस भाषा मे उसने अपनी यशोयात्रा की है उसे वह धीरे-धीरे बदलते तथा काल के ताण्डव एव फैशन के प्रलोभन द्वारा प्रभावित होते देखता है । पीछे की ओर दृष्टि डालने पर वह देखता है कि उसके देश के पूर्वकालीन लेखक, जो अपने समय मे अत्यन्त प्रिय थे, आधुनिक लेखको द्वारा स्थान-च्युत किए जा चुके है । थोडे लघु युगो ने उन्हे धूमिल कर दिया है, और उनकी श्रेष्ठता का मज़ा अब केवल पुस्तक-कीट की विचित्र स्वादवृत्ति को ही प्राप्त हो सकता है । तब वह अनुमान करता है कि उसकी कृति का भी यही परिणाम होगा, जो अपने समय मे चाहे जितनी प्रशसित हो तथा विशुद्धता का नमूना मानी जाए, किन्तु प्रवाह मे अप्रचलित और परित्यक्त हो जाएगी, यहा तक कि अपने ही देश मे वह उतनी ही अज्ञेय बन जाएगी जैसा कि कोई मिस्री शिलास्तम्भ अथवा तातार देश के मरुस्थल मे स्थित बताई जाने वाली रूनी शिलालिपिया है ।" फिर मैंने किंचित् भावोद्रेक के साथ कहा—"जब मैं स्वर्णमण्डित जिल्दबन्दी वाली नई पुस्तको से पूर्ण किसी आधुनिक पुस्तकालय पर विचार करता हू तो मुझे बैठकर रोने का मन करता है, ठीक वैसे ही जैसे भले ज़ेरक्सीज ने सैनिक कलाओ के गौरव से मण्डित अपनी फौज को पक्तिबद्ध देखकर सोचा था कि एक सौ वर्षों के अन्दर इनमे से एक का भी अस्तित्व शेष न रहेगा ।"

दीर्घ नि श्वास लेकर लघु पुस्तक ने कहा—"आह ! मैं देख रही हूँ कि बात क्या है । इन आधुनिक लिक्खाडो ने सभी अच्छे प्राचीन लेखको को स्थानच्युत कर दिया है । मैं समझती हू कि आजकल सर फिलिप सिडनी के 'आर्केडिया', सैकविले के राजसिक नाटको, एव 'मिरर फॉर मैजिस्ट्रेट्स' अथवा 'अतुलनीय जान लाइली' की शब्दाडम्बरयुक्त रचनाओ के सिवा और कुछ नही पढा जाता ।"

मैंने कहा—' इसमे भी तुम भूल कर रही हो । जिन लेखको के प्रचार की तुमने इसलिए कल्पना कर रखी है कि जब अन्तिम बार तुम्हारा प्रचार था तो

वे प्रचलित थे, उनका समय भी हो चुका था। सर फिलिप सिडनी के जिस 'आर्केडिया' की अमरता की भविष्यवाणी इतनी मुग्धता के साथ उनके प्रशसको ने की थी[1], और जो सचमुच ही उदात्त विचारो, सूक्ष्म चित्रो और भाषा की प्रसादपूर्ण विधाओ से पूर्ण है, उसका उल्लेख अब क्वचित् ही होता है। सैकविले कभी का धूमिल पड चुका है, और लाइली तक को, यद्यपि उसकी कृतिया एक समय राज-दरबार का भूषण थी, आज नाम से भी लोग नही जानते। लेखको का झुण्ड का झुण्ड, जो उस समय लिखता और परस्पर लडता था, अपनी समस्त रचनाओ और विवादो के साथ नीचे चला गया है। अनुवर्त्ती साहित्य की लहर पर लहर उनके ऊपर से गुजर चुकी है, यहा तक कि वे इतने गहरे दब गए है कि कभी-कभी ही कोई पुरातनत्व के अवशेषो को ढूढनेवाला गोताखोर उत्कण्ठितो के सतोष के लिए एकाध नमूना ला पाता है।"

मै कहता ही गया—"जहा तक मेरा सम्बन्ध है, भाषा की इस परिवर्तनशीलता को मैं सम्पूर्ण विश्व के लिए, और विशेषत लेखको के लिए, ईश्वर की ओर से एक बुद्धिमत्तापूर्ण पूर्वविधान मानता हू। तर्क के लिए उदाहरण ले,— हम नित्य देखते है कि वनस्पतियो के सुन्दर कबीले उदित होते है, कुछ समय तक खेत को अलकृत करते है और फिर अपने अनुवर्त्तियो के लिए स्थान बनाने को धूल मे मिल जाते है। यदि ऐसा न होता तो प्रकृति की उर्वरता, आशीर्वाद की जगह पीडा बन जाती। धरती अत्यधिक हरीतिमा से कराह उठती और उसकी सतह सकुल वनो से भर जाती। इसी प्रकार प्रतिभा एव प्रज्ञा अपक्षीण हो जाती है और अपने बाद वाली कृतियो के लिए स्थान खाली कर देती

---

1. Live ever sweete booke, the simple image of his gentle witt, and the golden-pillar of his noble courage, and ever notify unto the world that thy writer was the secretary of eloquence, the breath of the muses, the honey-bee of the daintyest flowers of witt and arte, the pith of morale and intellectual virtues, the arme of Bellona in the field, the tonge of Suada in the chamber, the sprite of Practise in esse, and the paragon of excellency in print HARVEY'S Pierce's Supererogation,

है। भाषा मे क्रमश परिवर्तन होता है, और उसके साथ उन लेखको की रच-नाए फीकी पड जाती है जो अपनी निश्चित अवधि के बाद बने रहते है। ऐसा न हो तो प्रतिभा की सर्जनात्मक शक्तियो से ससार बुरी तरह भर जाए और साहित्य की अन्तहीन भूल-भुलैया मे मानस भटकता ही रह जाए। पुराने जमाने मे अत्यधिक गुणन (सख्यावर्धन) पर कुछ प्रतिवन्ध मौजूद थे। ग्रन्थ हाथ से लिखे जाते थे, जो एक धीमा और श्रमसाध्य कार्य था। फिर या तो वे चर्मपत्र वा चीमड कागज पर लिखे जाते थे जो वहुत व्ययसाध्य होता था और इसी कारण बहुधा एक कृति को मिटाकर उसपर दूसरी कृति लिखी जाती थी, या फिर श्रीपत्र, भोजपत्र, पर लिखा जाता था जो टूटने वाला और बहुत नाशवान् होता था। ग्रन्थ-लेखन एक सीमित एव अलाभकर विद्या थी जिसका अनुसरण मुख्यत विरक्त एव सन्यासी अपने मठो के एकान्त एव अवकाश मे करते थे। पाण्डुलिपियो का सचय मन्द और खर्चीला था और मठो या विहारो तक ही सीमित था। कुछ-कुछ इन कारणो और परिस्थितियो से भी हम पुराकालीन प्रज्ञा की वाढ मे बह नही गए है, विचारो के निर्झर टूटे नही है और आधुनिक प्रतिभा तूफान मे डूब नही गई है। किन्तु कागज एव मुद्रण-यत्र के आविष्कारो ने इन सब प्रतिबन्धो को, इस सब सयम को समाप्त कर दिया है। इन्होने हर-एक को लेखक बना दिया है और प्रत्येक मन को यह छूट मिल गई कि वह अपने को मुद्रण मे प्रवाहित कर सकता और समस्त बौद्धिक जगत् मे अपने को प्रसारित कर सकता है। परिणाम भयजनक है। साहित्य की पतली धारा प्रचण्ड स्रोत, बल्कि नद, मे बदल गई है और प्रचण्ड स्रोत भी फैलकर समुद्र बन गया है। शतियो पूर्व पाच-छ सौ पाण्डुलिपियो से एक वडा पुस्तकालय वन जाता था, अब आप उन पुस्तकालयो को क्या कहेगी जिनमे ३-४ लाख पुस्तके है? अब तो आपको लेखको की फौज की फौज व्यस्त दिखाई पडेगी, और प्रेस उन्हे गुणित करने मे सक्रिय दिखाई पडेगा। आज जब वाणी की प्रजनन-शक्ति इतनी बढ गई है तब यदि उसकी सन्तति के बीच कोई अनपेक्षित महामारी नही आती तो मैं अगली पीढियो की नियति का अनुमान कर काप उठता हू। मुझे भय है कि भाषा का परिवर्तनमात्र पर्याप्त नही होगा। आलोचना बहुत-कुछ कर सकती है। साहित्य वृद्धि के साथ उसकी भी वृद्धि होती है और वह जनसख्या पर उस क्षेमकर

रोक की भाति है जिसकी चर्चा अर्थशास्त्री करते है। इसलिए बुरे या भले आलोचको की वृद्धि के लिए सब प्रकार का सम्भव प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। परन्तु मुझे भय है कि सब कुछ व्यर्थ जाएगा, आलोचना से जो बनता हो करे, परन्तु लेखक लिखते रहेगे, मुद्रक छापते रहेगे और ससार आवश्यकता से अधिक सुग्रन्थो से भर जाएगा। शीघ्र ही वह समय आएगा जब उनके नाम जानने के लिए जीवन-भर श्रम करना आवश्यक होगा। स्वीकरणीय जानकारी रखने वाले बहुत से आदमी, आज आलोचनाओ को छोड शायद ही और कुछ पढते है, और बहुत दिन नही बीतेंगे जब एक विद्वान् शायद ही चलती-फिरती सूची से श्रेष्ठतर रह जाएगा।"

मेरे मुह पर बडी खिन्नता के साथ जभाई लेते हुए लघु पुस्तिका ने कहा—"मेरे बहुत अच्छे महोदय, कृपया मुझे बीच मे बाधा डालने के लिए क्षमा कीजिए, किन्तु मैं देखती हू कि आप गद्य मे अधिक रुचि रखते हे। मै आपसे पूछना चाहूगी कि उस ग्रन्थकार का क्या हुआ जो मेरे दुनिया छोडने के समय कुछ शोर कर रहा था? किन्तु उसकी ख्याति बिल्कुल अस्थायी समझी जाती थी। विद्वान् लोग उस पर अपना सिर हिलाते थे क्योकि वह एक गरीब, अर्द्ध-शिक्षित भृत्य था और बहुत कम लैटिन जानता था—ग्रीक (यूनानी) का तो उसे कुछ भी ज्ञान न था। उस बेचारे को हिरनो को चुराने के कारण अपना प्रदेश छोडना पडा था। मैं समझती हू, उसका नाम शायद शेक्सपीयर था। मैं समझती हू, वह शीघ्र ही विस्मृति के गर्भ मे विलीन हो गया होगा।"

मैने कहा—"इसके विपरीत, यह उसी मनुष्य का प्रताप है कि उसके काल के साहित्य को उससे अधिक अवधि प्राप्त हुई जो आग्ल-साहित्य की सामान्य अवधि समझी जाती है। बीच-बीच मे ऐसे लेखक पैदा होते रहते है जो भाषा की परिवर्तनशीलता से बिल्कुल प्रभावित नही होते, क्योकि वे मानव-प्रकृति के अपरिवर्त्तनीय सिद्धान्तो मे अपने को बद्धमूल कर रखते है। वे उन विराट् वृक्षो की भाति है जिन्हे हम कही कही किसी नदी के तट पर खडा देखते है, और जो सतह के नीचे प्रविष्ट अपनी विस्तृत एव गहरी जडो के कारण धरती के गर्भ मे जमकर, अपने इर्द-गिर्द की भूमि को सदा-प्रवाहित धारा मे बह जाने से बचा लेते है, और अनेक निकटवर्ती पौधो, बल्कि शायद निर-

र्थक तृणो को भी, स्थायित्व प्रदान करते है। शेक्सपीयर की बात भी ऐसी ही है, जिसे हम काल के अतिक्रमण की अवज्ञा करते तथा अपने समय की भाषा एव साहित्य को आधुनिक उपयोग मे स्थिर रखते देखते है। उसने बहुतेरे सामान्य लेखको को केवल इसलिए आयु प्रदान कर रखी है कि वे उसके सन्निकट विकसित हुए थे। किन्तु मुझे कहते दुख है कि उसपर भी धीरे-धीरे उम्र का रग चढता जा रहा है और उसका समस्त शरीर उन भाष्यकारो के आधिक्य से ढक गया है। जो उछलती लताओ के समान है—उन लताओ के, जो उसी श्रेष्ठ वृक्ष को ढक लेती है जो उनको स्थिर रखता है।"

यह लघु पुस्तक अपना पहलू उभारकर मन ही मन हसी, यहा तक कि अन्त मे उस पर हास्य का ज़ोरदार दौरा आ पडा, जिसने उसके अत्यधिक मोटापे के कारण करीब-करीब उसका दम ही तोड दिया। फिर दम आते ही उसने चिल्लाकर कहा—"क्या खूब! तो आप मुझे यह समझाना चाहते है कि किसी काल के साहित्य को एक आवारा हिरन-चोर द्वारा स्थायित्व प्रदान किया जा सकता है!—एक ऐसे आदमी द्वारा जो विद्वत्ता-रहित है, एक कवि, अलबत्ता एक कवि द्वारा?" और फिर कष्ट से श्वास लेते हुए उसे हसी का दौरा आ गया।

मैं स्वीकार करता हू कि इस अशिष्टता पर मुझे कुछ खीझ आ गई, जिसे मैंने इसलिए क्षमा कर दिया कि वह कम सभ्य युग मे विकसित हुई है। फिर भी मैंने निश्चय किया कि अपनी बात नही छोडूंगा।

मैंने दृढता के साथ फिर कहना शुरू किया—"हा, एक कवि, क्योकि सब लेखको की अपेक्षा उसके लिए अमर होने का सयोग अधिक है। दूसरे मस्तिष्क से लिखते है, किन्तु वह हृदय से लिखता है, और हृदय सदैव उसे समझेगा। वह प्रकृति का यथार्थ चित्रकार है, जिसका अग-विन्यास सदा एक-सा किन्तु मनोरजक होता है। गद्य-लेखक पोथन्ना लिखनेवाले तथा बोझिल होते है, उनके पृष्ठ सामान्य बातो से भरे रहते है और उनके विचार उकताहट तक फैले होते हैं। किन्तु सच्चे कवि के साथ प्रत्येक वस्तु सुगठित, हृदयस्पर्शी या फिर प्रभायुक्त होती है। वह उत्कृष्ट विचार भाषा मे देता है। प्रकृति एव कला मे वह जो कुछ सबसे महत्त्वपूर्ण देखता है, उसी के द्वारा उन्हे चित्रित करता है। वह आगे के चित्रो द्वारा उन्हे समृद्ध करता है और जिस युग मे

रहता है उसकी भावना और सुगध को अपने अन्दर भर लेता है। उसकी रचनाए ऐसी रत्नपेटिकाए है जिनमे मानव-जीवन बन्द है,—वह मानव-जीवन जो उसके सामने से गुज़र रहा है। उसकी रचनाओ मे, थोडी जगह मे, भाषा का ऐश्वर्य,—उसके पारिवारिक रत्नाभूषण होते है जो इस प्रकार पोर्टेबुल रूप मे पीढी-दर-पीढी चले जाते है। यह सज्जा कभी-कभी अप्रचलित या जीर्ण हो सकती है और समय-समय पर, चासर की भाति, फिर से उसको नवीन बनाने की आवश्यकता पडती है, किन्तु रत्नो की दीप्ति एव आन्तरिक मूल्य अपरिवर्तित ही बना रहता है। साहित्यिक इतिहास के लम्बे विस्तार का ज़रा सिंहावलोकन तो करो। सन्यासियो की कथाओ एव शास्त्रीय विवादो से पूर्ण नीरसता की कैसी विस्तृत घाटिया है। ईश्वर-विषयक कल्पनाओ के कैसे दलदल है! अध्यात्मविद्या के कैसे निरानन्द मरुस्थल है! सिर्फ कही-कही हमे ईश्वर-दीप्त कवि दिखाई पडते है, जो अपनी दूरस्थ ऊचाइयो पर बने दीपस्तभो की भाति, युग-युग तक काव्यात्मक ज्ञान का प्रकाश फेकते है।"[1]

मैं इस युग के कवियो की प्रशस्ति शुरू करने ही वाला था कि सहसा दरवाज़ा खुलने के कारण मैने चौककर उधर देखा। स्थलनिर्देशक मुझसे यह कहने आया था कि पुस्तकालय बन्द होने का समय हो गया है। मैंने लघु पुस्तक से चलते-चलते कुछ कहना चाहा, किन्तु वह सुयोग्य लघु पोथी मौन हो

---

१ **ठोस धरती, गहन जल-विस्तार को,**
पार करती लेखनी चातुर्य से,
तीक्ष्ण व्यंग्यों की चमत्कृत धार को
विश्व के कुत्सा भरे व्यवहार को,
पार कर जाती अहो, यह लेखनी।
देख पाते काँच मे निज मूर्ति हम,
दोष गुण प्रत्येक प्राणी का वहां।
मक्षिका-कृत चक्र मधु का भी नही,
मधुर उतना श्रेष्ठ कवि के शीर्ष से,
पतित स्वर्णिम पत्र जितने मजु हैं।

—चर्च यार्ड

गई थी, काटे बन्द हो गए थे, और जो कुछ अभी घट चुका था उस सबके प्रति वह बिल्कुल बेखबर थी। तबसे मैं दो-तीन बार और पुस्तकालय मे हो आया हू और उससे आगे बातचीत करने की चेष्टा की है किन्तु वह निरर्थक हुई है। यह वार्तालाप सचमुच घटित हुआ था, या उन विचित्र दिवा-स्वप्नो मे से एक था जो मुझे अक्सर आया करते है,—मै आज तक इसका पता नही लगा सका हू।

ग्राम्य अन्त्येष्टि-सस्कार

**Here's a few flowers ' but about midnight more,
The herbs that have on them cold dew o' the night
Are strewings fitt'st for graves—
You were as flowers now wither'd even so
These herblets shall, which we upon you strow**

—Cymbeline

(स्वतन्त्र पद्यानुवाद)

**ये थोड़े से कुसुम यहां है, फिर निशीथ के नीरव क्षण मे ।
हरे वृन्त जो भर जाएगे श्रोस-बिन्दुश्रो से निज तन मे ।
वे समाधि के लिए तुम्हारे सर्वोत्तम शृंगार बनेंगे ।
जीवन मे जो किया मृत्यु मे वे उसका उपहार बनेंगे ।
फूल एक तुम भी तो थे जो सूख गया जीवन-पादप मे ।
सूख जाएगे ये समाधि पर बिखरे पुष्प-वृन्त श्रातप मे ॥**

ग्राम्य जीवन की जो सुन्दर एव सरल प्रथाए अब भी इग्लैण्ड के कुछ भागो मे चल रही है, उनमे एक शव के ऊपर फूल बिखराना और बिछुडे हुए मित्रो की समाधियो पर उनका चढाना भी है। कहा जाता है कि ये आदिकालिक चर्च की प्रथाश्रो के अवशेष है, किन्तु सच पूछो तो ये प्रथाए और भी पुरानी है। यूनानियो और रोमनो मे भी उनका प्रचलन था जैसा कि उनके लेखको के वर्णनो से ज्ञात होता है । जब कला ने शोक को गान एव स्मारक मे गूथना नही सीखा था तब भी निरक्षर अनुराग की स्वत प्रेरित श्रद्धाजलि के रूप मे इसका प्रचार था। अब तो राज्य के सुदूरस्थ एव एकान्त स्थानो मे ही, जहा फैशन एव नवीन रीतियो का बोलबाला नही है और जहा वे प्राचीन काल की समस्त कुतू-

ह्लोत्पादक एव मनोरजक रेखाओ को कुचलने मे समर्थ नही हुई है, उनके दर्शन होते हैं।

हमे बताया गया है कि ग्लैमोर्गनशायर मे रिवाज है कि जिस शय्या पर लाश रखी जाती है उसे फूलो से ढक दिया जाता है। ओफेलिया ने अपने एक भावोद्रेकपूर्ण शोकाकुल गीतिखण्ड मे इसका उल्लेख किया है —

White his shroud as the mountain snow
Larded all with sweet flowers,
Which be-wept to the grave did go,
With true love showers.

(स्वतन्त्र पद्यानुवाद)

उसका कफन धवल है इतना
जितना पर्वत-शृगो का हिम।
आच्छादित है मजु मधुर
पुष्पावलियो से उसका दामन।
आर्त्त विलाप बीच वह जाता,
है समाधि मे सो जाने को।
सच्चे प्रेम-अश्रु की वर्षा—
में सब कुछ है खो जाने को।

दक्षिण के दूरस्थ कुछ ग्रामो मे, यदि कोई स्त्री अविवाहित एव तरुण अवस्था मे मर जाती है तब उसकी अन्त्येष्टि मे एक बडा ही कोमल एव सुन्दर कृत्य किया जाता है। शव के आगे-आगे उम्र, आकार एव आकृति मे मृतात्मा से मिलती-जुलती एक लडकी सफेद फूलो का गजरा लिये चलती है, जो बाद को मृत कन्या के आसन के ऊपर चर्च मे टाग दिया जाता है। कभी-कभी असली फूलो की नकल मे सफेद कागज से बने हुए फूलो,से भी ये गजरे बनाए जाते है। गजरे के बीच मे प्राय सफेद दस्तानो की जोडी होती है। वे मृतात्मा की पवित्रता तथा स्वर्ग मे उसने जो यश-मुकुट प्राप्त किया है, उसके प्रतीक होते है।

देश के कुछ भागो मे लोग भजन एव प्रार्थना-पद गाते हुए मृतक को कब्र तक ले जाते हैं एक प्रकार के विजयोत्सव के रूप मे। जैसा कि बूर्न कहता है—"इसके द्वारा यह दिखलाया जाता है कि उन्होने अपनी यात्रा आनन्द के

साथ पूरी की है और विजेता बन गए है। मुझे बताया गया है कि ऐसा कुछ आधुनिक जनपदो मे विशेषत नार्थम्बरलैण्ड मे किया जाता है, किसी निस्तब्ध सध्या को एकान्त प्रदेश मे मृत्यु-गान की दूर से आती हुई शोक-विह्वल तान सुनने और भूदृश्य के बीच मृतक को ले जाने वाली टोली को धीरे-धीरे बढते हुए देखने का एक रजनकारी यद्यपि विपादपूर्ण प्रभाव पडता है।

तेरी इस निरीह निर्जन धरती के चहुदिशि घूम रहे हम।
तेरा मृत्यु-गान गाते हैं कंपित कण्ठो से हम निर्मम।
पीत नर्गिसी डैफोडिल वा अन्य फूल हम ले जाते हैं।
अपनी प्रेम-वेदिका तेरे प्रस्तर-पट पर धर जाते हैं॥

—हेरिक

इन पृथक्कृत स्थानो मे पथिक भी गुजरती हुई अर्थियो के प्रति पुण्य-सम्मान प्रकट करते है। जब हम प्रकृति के शान्त वासस्थानो मे ऐसे दृश्य देखते है तो वे हमारी आत्मा की गहराई मे डूब जाते है। जब शवयात्रा निकट आती है, तो पथिक रुक जाता है, सिर से टोपी उतार लेता है और अर्थी को आगे बढ जाने देता है। फिर वह भी सबके पीछे, कभी समाधि तक, और कभी कुछ सौ गज़ की दूरी तक जाता है। इस प्रकार मृतात्मा के प्रति सम्मान प्रदर्शित करने के बाद वह पुन अपने रास्ते चला जाता है।

विषाद के जो समृद्ध तन्तु आग्ल चरित्र मे दौडते है और जो उसे इतना हृदयस्पर्शी एव उदात्त रूप देते है, वे इन करुण प्रथाओ मे तथा आदृत एव शान्तिपूर्ण समाधि के प्रति सर्वसाधारण की आकुलता मे प्रकट होते है। गरीब से गरीब कृषक भी, जीवन मे उसकी जो भी स्थिति रही हो, चाहता यही है कि उसके अवशेष को कुछ सम्मान प्रदान किया जाए। सर टामस ओवरबरी ने एक सुन्दरी एव प्रसन्नहृदया ग्वाल-कन्या के विषय मे लिखा है—"वह इस प्रकार जी रही है और उसकी एकमात्र इच्छा है कि वसन्त ऋतु मे उसकी मृत्यु हो जिससे उसके कफन के ऊपर ढेर के ढेर फूल भरे हो।" कवि-गण भी जो सदा एक जाति की भावना से उच्छ्वसित होते है, समाधि के प्रति सदा ही बहुत ध्यान देते है। ब्यूमोण्ट और फ्लेचर ने, अपनी 'दि मेड्स ट्रेजेडी' रचना मे एक स्थान पर एक भग्नहृदय बालिका के चचल विषाद का बडा सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत किया है—

When she sees a bank
Stuck full of flowers, she, with a sigh, will tell
Her servants, what a pretty place it were
To bury lovers in, and make her maids
Pluck'em, and strew her over like a corse

(हिन्दी-पद्यानुवाद)

जब पुलिन को देखती है।
फूल से जो भर उठा है। आह लेकर एक कोमल
कह रही परिचारिकाओ से कि कैसा मजु यह थल—
प्रेमियो की कब्र के हित है बहुत उपयुक्त पावन।
फिर कहा सखियो से लाओ तोड़ ये सब गधमादन।
फूल-सी यह देह मेरी फूल से भर दो सुहावन—
जिस तरह शव को सजाते हैं। रुचिर अवलोकती है।
जब पुलिन को देखती है!

किसी ज़माने मे कब्रो को सजाने की प्रथा विश्व-भर मे प्रचलित थी, उन-पर बेतो की टहनिया झुकाकर इसलिए लगाई जाती थी कि दूर्वायुक्त भूमितल सुरक्षित रहे, और उनके आस-पास सदाबहार लताए और फूलो के पौधे लगाए जाते थे। ईवलीन ने अपने 'सिल्वा' मे कहा है—'हम उनकी कब्रो को फूलो एव सुरभित पौधो से अलकृत करते है, ये मनुष्य-जीवन की प्रतीक है और इस मानव-जीवन की तुलना पवित्र धर्मग्रन्थो मे उस क्षीयमाण सौन्दर्य से की गई है जिसकी जडे तो असम्मान मे भूमिस्थ है किन्तु अब भी जो पुन यशस्वी जीवन प्राप्त करता है।" यह प्रथा अब इग्लैण्ड मे लुप्त हो चली है, किन्तु अब भी वेल्स पर्वतो के बीच के एकान्त गावो के चर्च-प्रागण मे उसका दर्शन हो जाता है। मुझे रूथेन के छोटे कस्बे का एक उदाहरण याद है। यह कस्बा क्लेवीड की घाटी के ऊपर बसा है। एक मित्र ने भी, जो ग्लैमोर्गनशायर मे एक तरुण लडकी की अन्त्येष्टि मे उपस्थित थे, मुझे बताया कि वहा जो स्त्रिया साथ मे थी, उन्होने अपने आचलो मे फूल भर रखे थे और ज्योही शव भूमिस्थ किया गया, उन्होंने उन फूलो को कब्र के चतुर्दिक् बिखेर दिया।

उसने और भी कई ऐसी कब्रो को देखा जो इसी भाति सजाई गई थी। चूकि फूल सिर्फ ज़मीन पर बिखेर दिए गए थे, उनका रोपण नही किया गया था, वे शीघ्र कुम्हला गए और उन्हे ह्रास की विभिन्न अवस्थाओ मे देखा जा सकता है, कुछ झुक गए है—लटक गए है, दूसरे बिल्कुल विनष्ट हो चुके है। बाद मे उनका स्थान विविध प्रकार के फूल तथा सदाबहार लताए ले लेगी। कुछ कब्रो पर तो वे इतनी अधिक मात्रा मे फैली और फूली दिखाई पडती है कि समाधिप्रस्तर ही उनसे ढक जाता है।

इन ग्रामीण अर्घ्यों की क्रमबद्धता मे पुरातन काल मे जो करुण कल्पना थी, उसमे कुछ न कुछ सच्ची काव्यात्मकता होती थी। कभी-कभी गुलाब के साथ लिली को गूथ दिया जाता था जो दुर्बल मर्त्यधर्मा (मानव) का एक सामान्य चिह्न लगता था। ईवलीन का कथन है —"कण्टकमयी शाखा पर उगा हुआ यह मजुल पाटल-पुष्प तथा उसके साथ लगी हुई लिली दोनो हमारे पलायनशील, छायामय, चिन्तामग्न एव क्षणभगुर जीवन की—उस जीवन की जो एक समय इतना सुन्दर दिखाई पडता है किन्तु फिर भी अपने कण्टको एव व्यवस्थाओ से रहित नही होता,—प्राकृतिक चित्रलिपि-से जान पडते है।" फूलो का ढग और रग, तथा जिन तन्तुओ से वे बाधे जाते है, वे प्राय मृतात्मा की विशेषताओ या उसकी कहानी की ओर इगित करते है, या फिर वे शोककारी की भावनाओ के द्योतक होते है।" 'कोरीडोस डोलफुल नेल' नाम की एक पुरानी कविता है, इसमे प्रेमी उन सज्जाओ का निर्देश करता है जिसका प्रयोग करने की उसकी इच्छा है

A garland shall be framed
By art and natures' rkill,
Of sundry-colored flowers,
In token of good will

And sundry-color'd ribands
On it I will bestow,
But chiefly blacke and yellowe
With her to grave shall go.

I'll deck her tomb with flowers,
The rarest ever seen,
And with my tears, as showers,
I'll keep them fresh and green

(स्वतन्त्र पद्यानुवाद)

कला, प्रकृति के शुभ कौशल से, हार एक बन जाएगा।
मेरी शुभ इच्छा से पूरित,
विविध रंग—कुसुमों से मंडित,
बहुरंगी सूत्रो से ग्रन्थित,
पीत कृष्ण वर्णी सूत्रों से
जो विशेषतः होगा रंजित।
उसके साथ-साथ सब-कुछ यह भी समाधि तक जाएगा।
कला, प्रकृति के शुभ कौशल से हार एक बस जाएगा।
उसकी कब्र सजाऊंगा मै
सुन्दर-दुर्लभ फूलो से।
जग में देखे गए न जो,
ऐसे सुगन्ध के मूलो से
और उन्हे ताजा रक्खूंगा,
अश्रु सींचकर मै अपना।
आंसू की जो झड़ी लगेगी,
हरा बने उससे सपना।
और मधुर मेरा वह सपना हृदय-हार हो जाएगा।
कला, प्रकृति के शुभ कौशल से हार एक बन जाएगा॥

मुझे बताया गया है कि एक कुमारिका की समाधि पर श्वेत गुलाब का रोपण किया गया था तथा शिरोमाल्य भी श्वेत सूत्रो से बाधा गया था—यह सब उसके उज्ज्वल-निष्पाप जीवन के प्रति श्रद्धाजलि थी। श्वेत-सूत्रो के बीच-बीच मे काले सूत्रो की गाठ मिला दी गई थी जिससे घर के जीवितो के शोक का भी कुछ भान हो। जो लोग अपनी दयाशीलता के लिए प्रसिद्ध होते थे,

उनकी स्मृति मे कभी-कभी लाल गुलाब का उपयोग किया जाता था, परन्तु सामान्यत उनका उपयोग प्रेमियो की कब्रो के लिए ही किया जाता था। ईवलीन ने हमे बताया है कि उसके ज़माने मे भी यह प्रथा सर्वथा लुप्त नही हुई थी, और सरे-जनपद मे उसके निवास के निकट ही "कुमारिकाए प्रतिवर्ष अपने मृत प्रेमियो की समाधियो पर गुलाब की लताए रोपती थी और उन्हे गुलाब-पुष्पो से ढक देती थी।" इसी प्रकार कामडेन भी अपने 'ब्रिटानिया' मे लिखता है —"यहा एक प्रथा है जो स्मरणातीत काल से चली आ रही है— समाधियो पर गुलाब के पौधे लगाने की। यह कार्य उन किशोर-किशोरियो द्वारा विशेषरूप से सम्पादित किया जाता है जिनके प्रेमी या प्रेमिकाओ की मृत्यु हो चुकी है। यह चर्च-प्रागण उनसे परिपूर्ण हो उठा है।"

जब मृत प्राणी अपने प्रेम मे असफल एव दु खी रहते थे तब ज्यादा उदास प्रतीको का प्रयोग किया जाता था—जैसे 'यू' (वनुर्वृक्ष), और 'साइप्रस' (एक प्रकार का सरो, जिसकी शाखाए शोकचिह्न-स्वरूप काम मे लाई जाती है)। यदि फूल बिछाए जाते थे तो वे भी अत्यन्त विषादपूर्ण रगो के होते थे। टामस स्टेनली की १६५१ मे प्रकाशित एक कविता का निम्नाकित पद देखिए—

Yet strew
Upon my dısmall grave
Such offerıngs as you have,
Forsaken cypresse and sad yewe ,
For kınder flowers can take no bırth
Or growth from such unhappy earth

(पद्यानुवाद)

दो बिखेर हे मेरे प्रेमी,
मेरी दुखिया इस समाधि पर।
जो कुछ हो बस पास तुम्हारे,
भूला साइप्रस, दुखिया यू तरु।
नहीं जनम या फिर विकास ही,
ले पाएंगे इसके ऊपर।

अधिक दयालु सुमन - गण,
फूलेंगे न कभी दुखिया इस भूपर ।

'दि मेड्स ट्रेजेडी' मे भी प्रेम मे निराश स्त्रियो के अन्तिम सस्कार-सम्बन्धी अलकरण के बारे मे एक करुण भावना का समावेश दिखाई पडता है —

Lay a garland on my hearse,
Of the dismall yew,
Maidens, willow branches wear,
Say a died true

My love was false, but I was firm,
From my hour of birth,
Upon my buried body lie,
Lightly, gentle earth

(स्वतन्त्र पद्यानुवाद)

मेरी अर्थी पर तुम रख दो,
काले यू की माला ।
ले लो नम्रा की शाखाए,
ओ मेरी प्रिय बाला ।
कहो कि मै मरने मे सच्ची,
यद्यपि झूठा प्रेम हमारा ।
जन्मकाल से मै दृढ थी पर,
छूट गया यह अग जग सारा ।
मेरे दफनाये शरीर पर,
मेरी धरती माता आओ ।
करुणा कर धीरे से लेटो,
मेरे प्राण, आज तुम गाओ !

मृतक पर शोक करने का स्वाभाविक परिणाम यह होता है कि हमारे मन परिशुद्ध और उदात्त होते है । इन अन्त्येष्टि-प्रथाओ तथा क्रियाओ मे सर्वत्र विचार की जो स्वाभाविक गरिमा या भावना की पवित्रता होती है उसी से इसका

प्रमाण मिलता है। इसीलिए इस वात का विशेप ध्यान रखा जाता था कि मधुर गध वाले सदाबहार लता-पत्रो तथा फूलो का ही उपयोग किया जाए। उद्देश्य यह जान पडता है कि समाधि की भीपणता कुछ कम हो—विनष्ट होते मानव के कष्टो की ओर से मन जरा दूसरी ओर हटे तथा मृतात्मा की स्मृति प्रकृति के अत्यन्त मृदु एव सुन्दर पदार्थो से सश्लिष्ट हो जाए। जब तक मिट्टी अपनी सजातीय मिट्टी मे मिल नही जाती, समाधि के अन्दर एक विषादपूर्ण प्रक्रिया चलती रहती है और कल्पना उसका ध्यान करने से घबराती है। दूसरी ओर, हम उसी आकृति के बारे मे सोचते रहते है जिसे हम प्यार करते थे तथा उन सुन्दर भावो की याद करते रहते है जो उसकी जवानी एव सौन्दर्य के दिनो मे हमारे मन मे उठते थे। लार्टीज अपनी कुमारी बहिन के विषय मे कहता है—"उसे धरती के अन्दर सुला दो।"

And from her fair and unpolluted flesh,
May violets spring.

उसके सुन्दर और अदूपित मास-पुज से
वायलेट जन्मे!

हेरिक भी अपनी 'डर्ज आफ जेफथा' मे काव्यात्मक भावो एव चित्रो को इस रूप मे प्रवाहित करता है जो जीवितो की स्मृति मे मृतक को शान्तिकर स्थिति मे ला देता है—

Sleep in thy peace, thy bed of spice,
And make this place all Paradise!
May sweets grow here! and smoke from hence,
Fat frankincense,
Let blame and cassia send their scent,
From out thy maiden monument.

... ...

May all shie maids at wanted hours,
Come forth to strew thy tombe with flowers!
May virgins, when they come to-mourn,
Male incense burn,

Upon thine altar ! then return,
And leave thee sleeping in thine urn

(पद्यानुवाद)

निज शय्या पर चिरसुगध की, शान्ति-नीद मे सोओ सुन्दर,
और बना दो इस धरती को स्वर्ग-तुल्य तुम अन्दर-बाहर ।
मधुर-मधुर हो सभी यहा पर, ऊगें मधु-तृण और लताए,
अगुरु, धूम-वर्त्तिका-पुज सब तुम पर सदा सुगंध बहायें ।
सोनामुखी सुगध-वृक्ष भी उगकर निज सौरभ का वितरण,
करते रहे, कुमारी, स्मारक से तव स्मृतियो का अभिवद्ध्न ।
नियत समय पर जब कुमारिया लज्जानत मुख लेकर आये,
तेरी इस समाधि को सुन्दर मधुमय फूलो से भर जायें ।
यदि आयें वे शोक प्रदर्शित करने तो फिर धूप जलायें,
तेरी शत-शत स्मृतियो वाली इस वेदी पर शीश झुकायें ।
लौट जाए तेरी चर्चा से विह्वल प्राण लिये नर-नारी,
तब तू सोये सुखद शान्ति-निद्रा में निज समाधि मे प्यारी ।

मैं इन पृष्ठो को और पुराने उन आग्ल कवियो के उद्धरणो से भर सकता हू जब ये प्रथाए अधिक प्रचलित थी और उन्हे इनका उल्लेख करने मे प्रसन्नता होती थी, किन्तु मैं आवश्यकता मे अधिक उद्धरण दे चुका हू । पर भले वह कैसा भी पिटा-पिटाया मालूम हो, मै यहा शेक्सपीयर का एक पद दिये बिना नही रह सकता, जो इन पुष्पाजलियो द्वारा व्यक्त प्रतीकार्थ का चित्रण करता है, साथ ही जिसमे भाषा का वह जादू तथा रूपक की वह सगति भी है जिसमे कवि को शीर्षस्थान प्राप्त है —

With fairest flowers,
Whilst summer lasts, and I live here, Fidele,
I'll sweeten thy sad grave , thou shalt not lack
The flower that's like thy face pale primrose , nor
The azured harebell, like thy veins , no; nor,
The leaf of eglantine , whom not to slander,
Outsweeten'd not thy breath.

(पद्यानुवाद)

जब तक मजु वसन्त बना है और यहां मेरा निवास है,
सुन्दरतम पुष्पो को लाऊंगा जिनमें मृदु मजु हास है।
उनसे मधुमय करता आऊगा, समाधि हे रानी !
कमी नहीं होगी तेरे मुख-सम फूलो की ओ कल्याणी !
फिर वे पीले पाटल हों या होवें मस-सी तन की तेरी,
नील धतूरे की कलिकाएं, यही साधना होगी मेरी।
और अरण्यजपा के पत्रो से भी मै भर दूगा यह थल,
यद्यपि तव सुरभित सांसो का उनमें होगा कहीं न सबल।

इसमे कोई सन्देह नही कि प्रकृति की इन स्वजात श्रद्धाजलियो मे अत्यन्त मूल्यवान् कला-स्मारको की अपेक्षा अधिक प्रभाव डालनेवाली कोई चीज अवश्य है। हाथ उस समय फूल बिखेर रहे होते है जब हृदय भावोद्दीप्त होता है और जब अनुराग दूर्वावृत भूमि-खण्ड पर वेत्र-मण्डप बनाता रहता है तब समाधि पर अश्रु-बिन्दु झरते है, इसके विपरीत छेनी के धीमे श्रम से करुणा का अन्त हा जाता है और भास्कर्ययुक्त मर्मर-प्रस्तर के ठण्डे दम्भ मे वह (करुणा) जम जाती है।

यह बडे दु ख की बात है कि ऐसी भव्य एव हृदयद्रावक प्रथा सामान्य प्रयोग मे समाप्त हो गई है और अब केवल बहुत दूर के तथा अपदार्थ गावो-भर मे रह गई है। किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि काव्यात्मक प्रथाए सदैव सभ्य समाज की परिधि से दूर ही रहती है। ज्यो-ज्यो लोग सभ्य होने जाते है, उतना ही काव्यात्मकता से दूर होते-जाते है। वे कविता की बाते जरूर करते है किन्तु उसकी मुक्त प्रेरणाओ का प्रतिरोध करना, उसके उफानपूर्ण मनोवेगो का अविश्वास करना और उसकी अत्यन्त प्रभावी एव चित्रमय परिपाटियो की कृत्रिम रूपो एव आडम्बरपूर्ण समारोहो द्वारा पूर्ति करना सीख चुके होने है। नगरो की आग्ल अन्त्येष्टि-क्रियाओ से अधिक आन-बान वाले परन्तु नीरस समारोह शायद ही और कोई होगे। वह प्रदर्शनात्मक भावरहित परेडो, शोक-यानो, शोकाश्वो, शोकचूडाओ तथा भाडे के शोक मनाने वालो से भरे होते है और ऐसा लगता है मानो उस दु ख का उपहास कर रहे हो। जर्मी टेलर कहता है—"वहा एक कब्र खोदी जाती है, एक गम्भीर शोक-प्रदर्शन होता है, पास-

पडोस मे बडी-बडी बाते चल रही होती है, और जब कर्म समाप्त हो जाते है तो फिर कोई उनका स्मरण नही करता।" उत्फुल्ल एव जनाकीर्ण नगर मे साथी शीघ्र ही विस्मृत हो जाता है, नये मित्रो एव नवीन आमोदो का गतिपूर्ण आगमन उसे हमारे मन से दूर हटा देता है और जिन दृश्यो एव परिधियो मे वह चलता-फिरता था वे भी निरन्तर बदलते जाते है। किन्तु देहात की अन्त्येष्टि-क्रियाए बडी प्रभावोत्पादक होती हैं। मृत्यु का प्रहार ग्राम्य-मण्डल मे बृहत्तर स्थान रिक्त कर देता है तथा ग्राम्य जीवन की शान्त एकरसता मे वह एक भयानक घटना होती है। घण्टे की ध्वनि प्रत्येक कान मे गूजती रहती है, वह अपने साथ शोक की व्यापक छाया पहाडियो एव घाटियो मे ले आती है और सम्पूर्ण भू-दृश्य को शोक-मग्न कर देती है।

देहात के स्थिर एव अपरिवर्त्तनशील अगो के कारण भी उस मित्र की स्मृति स्थिर हो जाती है जिसके साथ हम कभी उनका उपभोग कर चुके होते है, जो हमारे अत्यन्त निर्जन भ्रमणो का साथी रह चुका होता है तथा जिसके कारण प्रत्येक एकान्त दृश्य सजीव हो चुका होता है। प्रकृति के प्रत्येक आकर्षण के साथ उसका विचार सम्बद्ध है, जो प्रतिध्वनि उत्पन्न करके कभी वह प्रसन्न होता था उसमे हमे उसकी वाणी सुनाई पडती है, जिन अमराइयो मे कभी वह घूमा करता था उसमे उसकी प्रेरणा, उसकी प्रेतात्मा घूमा करती है, उच्च वन्य निर्जनो मे अथवा घाटी के शोकाच्छन्न सौन्दर्य के बीच हमे उसकी याद आती है। आनन्दपूर्ण प्रभात की ताजगी मे हम उसकी दीप्त मुस्कानो और उसकी उछलती हुई उत्फुल्लताओ की याद करते है, और जब उदास सध्या अपनी घनी होती छाया और मौन शान्ति को लिये आती है तब भी हमे मधुर वार्त्तालाप एव माधुर्यपूर्ण विषाद की कितनी ही गोधूलि-घडियो का स्मरण आ जाता है।

Each lonely place shall him restore,
For him the tear be duly shed,
Beloved, till life can charm no more,
And mourn'd till pity's self be dead

(पद्यानुवाद)

हर एकान्त स्थान याद उसकी है करता,
और याद कर उसे दृगो से नीर बहेगे।

तबतक जबतक जीवन मे आकर्षण होगा,
करुणा की आत्मा मरने तक आह भरेंगे ।

दूसरा कारण जो देहात मे मृतात्मा की स्मृति को स्थायी बनाता है, यह है कि वहा कब्र बहुत-कुछ उत्तरजीवियो की आखो के सामने रहती है । प्रार्थना को जाते समय वे उसकी राह से गुजरते है, जब उनका हृदय भक्ति के अभ्यास से मृदुल होता है तब उनकी आखे उसपर पडती है । जब विश्रान्ति (सैवथ) दिवस को उनका मन सासारिक चिन्ताओ से मुक्त, तथा वर्तमान सुखोपभोगो एव प्रीतियो से दूर हटकर अतीत काल की पवित्र स्मृतियो मे खो जाने को उन्मुख होता है तब वे उसके इर्द-गिर्द मॅडराते है । उत्तरी वेल्स मे रिवाज है कि कृपक-गण अपने मृत मित्रो की समाधियो पर, दफनाये जाने के बाद कई रविवार तक प्रणत होते एव प्रार्थना करते है । जिन स्थानो मे कब्रो पर फूल विखेरने या फूलो के पौधे लगाने की प्रथा अब भी प्रचलित है वहा ईस्टर, ह्विटसनटाइड (ईस्टर के बाद का सोमवार या मगलवार) एव अन्य त्यौहारो के समय, जब ऋतु अतीत की खुशियो के साथी की याद ताजा कर देती है, उसे अवश्य दोहराया जाता है । निकटतम सम्बन्धियो एव मित्रो द्वारा पुष्पार्पण की यह क्रिया की जाती है , कोई निम्न व्यक्ति या भाडे के टट्टू इस काम के लिए इस्तेमाल नही किये जाते और यदि कोई पडोसी सहायता करता है, तो उसे उसके बदले मे कुछ देना अपमानजनक समझा जाता है ।

मैने इस सुन्दर ग्रामीण प्रथा पर इतने विस्तार से इसीलिए लिखा है कि वह प्रेम के अन्तिम अत पवित्रतम कार्यो मे से एक है । समाधि (कब्र) सच्चे अनुराग की कसौटी है । यही वह स्थान है जहा आत्मा की दैवी अनुरक्ति केवल पाशविक आसक्ति की स्वय-प्रेरित भावना पर अपनी श्रेष्ठता प्रकट करती है । पाशविक आसक्ति पदार्थ या व्यक्ति की उपस्थिति द्वारा निरन्तर नवीन होती एव जीवित रहती है, किन्तु जो प्रेम आत्मा मे आसीन रहता हे वह स्मृतियो द्वारा बहुत काल तक जीवित रखा जा सकता है । जिस आकर्षण से इन्द्रिया जीवन-काल मे मुखरित होती थी, उसके विनष्ट हो जाने पर उनकी वासना भी शान्त हो जाती है, और वह समाधि के शोकार्त प्रागण से कम्पित निराशा के साथ दूर हट जाती है । तब वहा सच्चे आध्यात्मिक अनुराग का उदय होता है, यह आध्यात्मिक अनुराग प्रत्येक इन्द्रिय-लब्ध वासना से मुक्त होकर उत्तरजीवी

के हृदय को, एक पवित्र ज्योति की भाति, प्रकाशित एव निष्कलुष कर देती है।

मृतात्मा का शोक ही एकमात्र ऐसा शोक है जिससे वियुक्त होने से हम इन्कार करते हैं। और सब घावो को भरने का हम प्रयत्न करते है, प्रत्येक अन्य दुख को हम भूलना चाहते है, किन्तु इस व्रण को बनाये रखना हम अपना कर्त्तव्य समझते है, इस दुख को हम बनाये रखते और एकान्त मे उसका चिन्तन किया करते है। वह माँ कहा है जो स्वेच्छा से अपने उस बच्चे को भूल जाएगी जो उसकी गोद से एक कली की भाति मुरझाकर नष्ट हो गया है, यद्यपि उसकी हर याद उसका कलेजा छेद देती है? वह सन्तान कहा है जो स्वेच्छा से अपने मृदुलतम माता-पिताओ को भूल जाती है, यद्यपि उनका स्मरण करना बिलखने-जैसा ही है? कौन है वह जो यत्रणा की घडी मे भी उस मित्र को भूल जाएगा जिसके लिए शोक कर रहा है? कौन है वह प्राणी जो, जब उसके प्रियतम के अवशेषो पर कब्र का मुह बन्द हो रहा होता है, और जब लगता है कि कपाट बन्द होने मे उसके हृदय के टुकडे-टुकडे हो रहे है, तब भी उस सान्त्वना को लेने के लिए तैयार होगा जो प्रियतम के विस्मरण द्वारा ही खरीदी जा सकती हो? नही, जो प्रेम समाधि (मृत्यु) के बाद भी जीवित रहता है वह आत्मा का एक सबसे उदात्त गुण है। यदि उसकी अपनी व्यथा है, तो उस का वैसा ही अपना आनन्द भी है, और जब दुख का प्रलय-प्रवाह शान्त होकर स्मरण की मृदु यन्त्रणा मे बदल जाता है—जब जिसे हम सबसे ज्यादा चाहते थे उसकी मृत्यु पर होने वाली आकस्मिक पीडा एव उथल-पुथल कर देनेवाली व्यथा, सुन्दर दिनो मे वह जो कुछ था उसके शोकार्त्त ध्यान मे बदल जाती है,—तब कौन ऐसा है जो उस शोक को अपने हृदय से निर्मूल कर देने की चेष्टा करता है? हो सकता है कि वह कभी-कभी प्रफुल्लता के प्रकाशपूर्ण क्षणो पर गुज़रते हुए बादलो की भाति छा जाए, या दुख की घडियो पर और गहरा शोक फैला दे, किन्तु तब भी कौन ऐसा है जो उसे सुख के गान अथवा रग-रलियो के विस्फोट से विनिमय करने को तैयार होगा? नही, समाधि से एक आवाज़ आती है जो गान से अधिक मधुर है। मृतात्मा का स्मरण ऐसा है कि उसके लिए हम जीवितो का आनन्द छोड देते है। अत समाधि! समाधि!

यह प्रत्येक भूल को भूमिस्थ कर देती है,—यह प्रत्येक दोष पर पर्दा डाल देती है—प्रत्येक नाराज़गी को समाप्त कर देती है। इसकी शान्तिभरी गोद से

अनुरक्त दु खो एव मृदुल स्मृतियो के सिवा और कुछ ऊपर नही आता । कौन ऐसा है जिसमे शत्रु की कब्र को देखकर भी यह अनुतापपूर्ण सिहरन नही होती कि जो बेचारी मुट्ठी-भर मिट्टी उसके सामने बिखरी जा रही है उसी के साथ मैंने झगडा कर लिया था ?

किन्तु जिन्हे हमने प्यार किया है उनकी समाधि ! ध्यान की कैसी जगह होती है वह ! यही स्थान है जहा बैठकर हम गुण एव विनम्रता के समस्त इतिहास का लम्बा सिहावलोकन करते है , यही हम घनिष्ठ मैत्री के मार्ग मे बिना ध्यान दिये प्राय नित्य प्रकट किये गये प्यार के हजारो उद्गारो को याद करते है,—यही हमे जुदाई के दृश्य की मृदुलता गहरी उदात्त कोमलता की याद आती है । यही है मृत्यु की शय्या, अपनी समस्त घुटी हुई व्यथाओ के साथ, अपनी नीरव उपस्थितियो-सहित, अपने मौन सावधान मनोयोग के साथ ! शेष होते हुए प्रेम (प्रेमी) की वे अन्तिम गवाहिया ! दुर्बल, फडफडाती हुई और हृदयद्राविणी ! हाय ! कैसी हृदयद्राविणी ! वह हाथ का दबाव ! धूमिल, अटकते हुए स्वर, मरण के बीच भी प्रेम का एक और आश्वासन प्रदान करने के लिए वह सघर्ष ! अस्तित्व की देहरी से हमे पीछे देखनेवाली चमकभरी आखो की वह अन्तिम अनुरागभरी दृष्टि !

ओह, भूमिस्थ प्रेम की समाधि पर जाना, और ध्यान करना ! जो बिछुडी आत्मा यहा से चली गई है और जो हमारे अनुताप से सान्त्वना पाने के लिए कभी नही आएगी—कभी नही, कभी नही, उसकी समाधि पर जाकर उससे उठाये प्रत्येक भूतकालिक अपुरस्कृत लाभ के लिए, उसके प्रत्येक उपेक्षित अतीत प्यार के लिए अपने अन्त करण से हिसाब तय करना !

यदि तुम बच्चे हो और तुमने कभी एक स्नेही पिता या माता की रजत-धवल भौहो पर कोई सिकुडन आने दी है, या उनकी आत्मा मे एक वेदना की वृद्धि की है,—यदि तुम पति हो और तुमने उस अनुरागभरे कलेजे मे, जिसने तुम्हारी बाहो मे अपना सम्पूर्ण सुख समर्पित कर दिया था, अपने व्यवहार से अपनी कृपालुता या सच्चाई के विषय मे एक क्षण के लिए भी सन्देह पैदा किया है,—यदि तुम मित्र हो और जिसने उदारतापूर्ण तुम पर पूर्ण विश्वास किया था, उसके प्रति मनसा, वाचा, कर्मणा कभी कोई गलत व्यवहार किया है,—यदि तुम प्रेमी हो और तुमने उस सच्चे हृदय को अनुचित व्यथा पहुचाई है जो

आज ठडा, तुम्हारे पैरो के नीचे पडा हुआ है, तो निश्चित समझ लो कि प्रत्येक रूखी दृष्टि, प्रत्येक असौम्य शब्द, प्रत्येक अशिष्ट कार्य, तुम्हारे स्मृति-पट पर लौटकर एकत्र हो जाएगा और तुम्हारी आत्मा को बुरी तरह खटखटा देगा,—और यह भी निश्चित मानो कि तुम शोकार्त और अनुताप-दग्ध होकर समाधि पर लेट जाओगे और तुम्हारे मुँह से अश्रुन कराह निकलेगी तथा तुम निष्फल आँसू बहाओगे , तुम्हारा अनुताप और गहरा, और कटु होगा क्योकि उसे सुननेवाला वहा न होगा और वह निष्फल होकर रह जाएगा।

इसलिए तुम अपना फूलो का गजरा गूथ लो और समाधि पर प्रकृति का सौन्दर्य बिखरा दो। सम्भव हो एव कर सको तो अपनी इन कोमल पर निरर्थक श्रद्धाजलियो—द्वारा अपनी विखण्डित आत्मा को सान्त्वना दो, किन्तु मृतात्मा के ऊपर अपने इस अनुताप-दग्ध दुख की कटुता से शिक्षा ग्रहण करो और अब से जीवितो के प्रति अपने कर्तव्य के पालन मे अधिक निष्ठावान् और प्रेमल बनो।

इस लेख को लिखते समय यह इच्छा नही थी कि इसमे अग्रेज किसानो की अन्त्येष्टि-सम्बन्धी प्रथाओ का पूर्ण विवरण उपस्थित किया जाए , इसमे उन विशेष रीतियो का चित्रण करने वाले कुछ उद्धरणो-सहित कतिपय टिप्पणिया ही देनी थी। इसे एक दूसरे लेख की, जो अब रोक लिया गया है, टिप्पणी के रूप मे देने का विचार था। परन्तु लेख बढते-बढते इस रूप मे हो गया।

यहा मुझे यह भी कह देना चाहिए कि मै भलीभाति जानता हू कि समाधियो के इस प्रकार फूलो से सजाने की प्रथा, इग्लैण्ड के सिवा और देशो मे भी प्रचलित है। यही क्यो, कुछ देशो मे तो वह इग्लैण्ड से भी अधिक प्रचलित है और धनिको तथा फैशनेबुल लोगो द्वारा भी उसका पालन किया जाता है, यद्यपि तब वह अपनी सरलता खो देती है और आडम्बर मे परिणत हो जाती है। ब्राइट अपने लोअर हगरी के प्रवास-विवरण मे मर्मर के स्मारको तथा ससार-त्याग के लिए ऐसे एकान्त स्थलो का वर्णन करता है जिनमे हरित लतिकाओ के बीच आसन बने हुए है तथा समाधिया आम तौर पर ऋतु के हसते हुए फूलो से ढकी हुई है। वह पैतृक श्रद्धा का एक ऐसा उदाहरण देता है जिसे उद्धृत किये बिना मैं नही रह सकता, क्योकि मेरा विश्वास है कि वह स्त्री जाति के स्नेहिल स्वभाव को व्यक्त करने के लिए मनोरजक होने के साथ उपयोगी भी होगा। वह लिखता है—"जब मैं बर्लिन मे था तब सुप्रसिद्ध इफलैण्ड की

अन्त्येष्टि-क्रिया मे शामिल हुआ था। उसमे तडक-भडक जरूर थी परन्तु उसके साथ सच्ची भावना भी बहुत थी। जब अनुष्ठान चल रहा था, मेरा ध्यान एक किशोरी की ओर गया जो नई-नई तृणराशि से आच्छादित भूमि-खण्ड के पास खडी गुज़रती भीड के पैरो से उसे बडी उत्कण्ठा के साथ बचा रही थी। यह उसके पिता की समाधि थी, और इस प्रेमालु कन्या की मूर्ति मुझे कला की अत्यन्त मूल्यवान् कृतियों से कही श्रेष्ठ स्मारक-सी प्रतीत हुई।"

यहा मैं श्मशानीय अलकरण का एक उदाहरण देना चाहूगा, जिसे मैंने एक बार स्विट्जरलैण्ड के पहाडो के बीच देखा था। यह गर्साऊ ग्राम की बात है जो रिगी शृग के पादभाग मे लूजर्न झील की सीमाओ पर स्थित है। किसी जमाने मे यह एक लघु प्रजातन्त्र की राजधानी था। आल्प्स एव उपर्युक्त झील दोनो के बीच अवरुद्ध-सा होने के कारण, भूमिमार्ग से पगडडियो-द्वारा ही वहा जाया जा सकता है। प्रजातन्त्र की पूरी सेना छ सौ लडाकू जवानो से अधिक की नही थी और इसका क्षेत्र भी कुछ ही मीलो तक विस्तृत था, जो लगता था कि पहाडो की गोद से काटकर अलग कर लिया गया हो। यह गर्साऊ ग्राम ससार के शेष भाग से विच्छिन्न प्रतीत होता था। इसमे एक पवित्रतर युग की स्वर्णिम सरलता अब भी कायम थी। इसमे एक छोटा-सा चर्च था और उसी के बगल मे श्मशान-भूमि थी। समाधियो के ऊपर लकडी या लोहे के क्रास बने हुए थे। कुछ समाधियो पर, भोडे ढग पर उत्कीर्ण, मृतात्मा के लघुचित्र-से बने थे। क्रासो के ऊपर फूलो के गजरे लटके हुए थे जिनमे कुछ कुम्हला गये थे, कुछ ताज़े थे, मानो बीच-बीच मे बदले जाते हो, मुझे दिलचस्पी हुई और मै यह दृश्य देखने को जरा रुक गया। मुझे अनुभव हुआ कि मै काव्य-विषय के स्रोत को देख रहा हू क्योकि ये ऐसे हृदय की सुन्दर परन्तु अकृत्रिम श्रद्धाजलिया थी जिसका वर्णन करने को कवि विवश हो जाते है। यदि और उत्फुल्ल तथा जनाकीर्ण स्थान होता तो मै समझता कि वे पुस्तको से उधार ली हुई कृत्रिम भावनाओ के चिह्न हैं, किन्तु गर्साऊ के भले निवासी पुस्तको का बहुत कम ज्ञान रखते थे, सारे गाव मे एक भी उपन्यास या प्रेम-काव्य नही था, और मै पूछता हू कि अपनी पत्नी की समाधि पर रखने के लिए फूलो का एक ताज़ा गजरा गूथते हुए क्या किसी कृषक के मन मे आया होगा कि वैसा करके वह काव्यात्मक निष्ठा की अत्यन्त भावना-प्रधान रीतियो मे से एक की पूर्ति कर रहा है, और कर्मणा वह कवि ही है?

सराय की पाकशाला

'क्या मैं अपनी सराय मे लूं न मधुर विश्राम ?'

—फालस्टाफ

जब मैं एक समय नीदरलैण्डस के बीच भ्रमण कर रहा था, एक शाम को एक छोटे फ्लेमिश ग्राम की मुख्य सराय 'पाम द ओर' मे पहुच गया। गर्मागरम खाने का समय बीत चुका था, इसलिए जो बचा-खुचा था उसे ही एकान्त मे बैठकर खाने के लिए विवश होना पडा। मौसम ठण्डा था, मै लम्बे उदास खाने के कमरे मे एक ओर अकेला बैठा था, और भोजन समाप्त होने के बाद मेरे सामने एक लम्बी, नीरस सध्या की सम्भावना खडी थी जिसे सजीव बनाने का कोई साधन दिखाई नही पडता था। मैंने अपने मेजबान को बुलाया और उससे पढने के लिए कुछ मागा। वह अपने घर का सारा साहित्यिक सरजाम ही उठा लाया—एक डच पारिवारिक बाइबिल, उसी भाषा का एक पचाग तथा पेरिस के पुराने समाचारपत्रो के कुछ अक। जब मैं इन पुराने समाचारपत्रो मे से एक मे पुरानी और पिटी-पिटाई आलोचना पढता हुआ ऊघ रहा था, तब बीच-बीच मे मेरे कानो मे पाकशाला से आता हास्य का स्वर टकराता था। कोई भी आदमी जो यूरोप मे भ्रमण कर चुका है उसे यह अवश्य ज्ञात होगा कि मध्यम एव निम्न वर्ग के भ्रमणार्थियो के लिए देहाती सराय की पाकशाला कैसी प्यारी जगह होती है, विशेषत मौसम की उस सदिग्ध अवस्था मे, जब शाम के समय आग सुहावनी लगती है। मैंने अखबार एक तरफ फेका और उस समूह की झाकी लेने के लिए पाकशाला का रास्ता खोजकर उधर बढ गया जो इस तरह चहक रहा था। मैंने देखा कि झुण्ड मे कुछ तो वे भ्रमणार्थी है जो कुछ घण्टे पहले आ चुके हैं और कुछ सराय के खिदमतगार या उसके आश्रित जन हैं। वे एक प्रज्वलित चूल्हे के चारो ओर गोलाकार बैठे थे। लगता था कि चूल्हा नही, एक वेदी है जिसकी वे लोग पूजा कर रहे है। वह चमचमाते हुए

विविध बर्तनो से भरा था, और उन्ही के बीच एक बृहदाकार ताबे की चायदानी भाफ फेकती तथा फुसकार मार रही थी। एक बडा लैम्प उस झुण्ड पर तीव्र प्रकाश फेक रहा था, जिसके कारण विविध आकृतिया स्पष्ट दिखाई दे रही थी। उसकी पीली किरणे पाकशाला को अशत ही प्रकाशित करती थी और दूर के कोनो मे जाते-जाते धूमिल पडकर खत्म हो जाती थी, हा, शूकर-मास की बगली पर केन्द्रित होकर उसे वे अवश्य मधुर प्रकाश से प्रकाशित कर रही थी, या फिर भलीभाति मजे हुए उन बर्तनो पर पडकर अपना प्रतिबिम्ब फेकती थी जो अधेरे के बीच भी चमक रहे थे। एक लम्बी-तगडी फ्लेमी तरुणी, लम्बे सुनहले झुमके और सुनहले हृदय (लाकेट) वाला हार पहिने उस मन्दिर की प्रधान पुजारिन बनी बैठी थी।

उस झुण्ड मे सबके पास तम्बाकू पीने के पाइप थे और अधिकाश साध्यमदिरा का भी सेवन कर रहे थे। मैने देखा कि एक नाटा गहरे रग का फरासीसी, जिसका चेहरा कठोर और शुष्क था तथा जिसे बडे-बडे गलमुच्छे थे, अपने प्रेम की दुस्साहसिकताओ के किस्से सुना रहा है और और प्रत्येक किस्से के अन्त मे लोगो से बेतकल्लुफ हसी का वह विस्फोट होता है जो सच्ची स्वतन्त्रता के मन्दिर सराय मे ही सुना जा सकता है।

चूकि उस विकराल उदास शाम को बिताने का और कोई ज्यादा अच्छा साधन मेरे पास नही था, मै भी चूल्हे के पास जाकर बैठ गया और घुमक्कडो की विविध कहानिया सुनने लगा— जिनमे से अधिकाश नीरस और कुछ ऊटपटाग थी। उनमे से एक को छोड और सब मेरी विश्वासघातिनी स्मृति से मिट गई है। एक जो याद है, मैं कहने की चेष्टा करूगा। किन्तु मुझे भय है कि इसकी दिलचस्पी उसके कहे जाने की शैली पर तथा कथाकार की विचित्र मुद्रा एव परिवेश पर निर्भर थी। वह एक मुटल्ला प्रौढ स्विस था और देखने से दक्ष घुमक्कड मालूम पडता था। वह मैला हरा जैकेट पहने था और कमर मे चौडा कमरबन्द बाधे हुए था। सबके ऊपर एक लम्बा चोगा था जिसमे कटि-प्रदेश से टखने तक बटन लगे हुए थे। उसका चेहरा गोल और लाल था, चिबुक दोहरा, नाक लम्बी तथा आखे विनोदपूर्ण एव चमकीली थी। बाल हलके थे और पुरानी हरी मखमली टोपी के नीचे, जो उसके सिर पर एक ओर जमी हुई थी, घुँघराले हो गए थे। बीच-बीच मे अतिथियो के आते रहने से तथा श्रोताओ

की सम्मतियो के कारण उसके किस्से का क्रम भग हो जाता था, कभी-कभी वह अपना पाइप फिर से भरने के लिए रुक जाता था और ऐसे समय पाकशाला की सुन्दरी लडकी पर प्रतारणापूर्ण कटाक्षपात और व्यग्यपूर्ण विनोद करने से नहीं चूकता था।

हमारे पाठक एक बडी आरामकुर्सी पर पाव पसार कर लेटे हुए उस कथा-कार का ध्यान करे, जो एक हाथ कुहनी से मोडकर कमर पर रखे हुए है और जिसके दूसरे हाथ मे चादी की चेन एव रेशमी झब्बेवाला मुडा हुआ पाइप है, सिर एक तरफ झुका हुआ है तथा बीच-बीच मे सनक के साथ आखे नचाता है, और निम्नलिखित कहानी सुना रहा है।

प्रेत वर

एक पर्यटक द्वारा कही गई कहानी

उत्तरी जर्मनी मे ओडेनवाल्ड के पर्वतो की एक चोटी है। यह एक वन्य रूमानी भूखण्ड है और मेन तथा राइन नदियो के सगम-स्थल से ज्यादा दूर नही है। बहुत साल हुए, इस चोटी पर बैरन वान लैण्डशार्ट का कोट था। अब वह नष्ट हो चुका है और 'बीच' तथा काले 'फर' के वृक्षो के अन्दर ढक गया है। परन्तु अब भी इन सबके ऊपर अपने पुरातन स्वामी की भाति सिर उठाये और निकटवर्ती प्रदेश की ओर तिरस्कार की दृष्टि से देखता हुआ प्राचीन प्रेक्षण-स्तम्भ खडा हुआ है।

यह बैरन काटजेनेलेनबोगेन[1] नामक महान् वश की एक शुष्क शाखा मे पैदा हुआ था। उसे सम्पत्ति का अवशेष तथा अपने पूर्वजो का समस्त गर्व उत्तराधिकार मे प्राप्त हुआ था। यद्यपि उसके पूर्वपुरुषो की सामरिक प्रवृत्तियो के कारण पारिवारिक सम्पत्ति का बहुत-सा भाग नष्ट हो गया था, फिर भी बैरन पुरानी जमीदारी का कुछ न कुछ स्वाग बनाये हुआ था। युग शान्तिमय था, और जर्मन सामन्तो ने, आम तौर पर, अपने असुविधाजनक पुराने गढो एव कोटो को, जो पहाडो के बीच गिद्धो के घोसलो-जैसे लगते थे, छोडकर घाटियो मे आरामदेह निवासस्थान बना लिये थे। किन्तु बैरन गर्वपूर्वक अपनी ही गढी मे बना रहा और आनुवशिक दुराग्रहपूर्वक पारिवारिक झगडो को भी उसने बनाये रखा। इसीलिए जो झगडे उनके परदादाओ-नकडदादाओ के बीच

---

१ अर्थात् मार्जार-कूर्पर (बिल्ली की कुहनी)। उन प्रदेशो के अत्यन्त शक्तिमान् एक वश का नाम। हमे बतलाया गया है कि यह नाम परिवार की एक अनुपम स्त्री के कारण, जो अपनी सुन्दर भुजाओ के लिए विख्यात थी, दिया गया था।

हुए थे उनके कारण अपने कुछ निकटतम पडोसियो से भी उसके सम्बन्ध अच्छे न थे।

बैरन की एक ही सन्तान थी—कन्या, किन्तु प्रकृति जव एक ही सन्तान देती है तो उम कमी की पूर्ति उसे विलक्षण बनाकर देती है। बैरन की कन्या के साथ भी यही बात थी। सब तरह की दाइयो, जनप्रवादो और देश-वधुओ ने ने उसके पिता को विश्वास दिला दिया कि सम्पूर्ण जर्मनी मे उसके समान सुन्दरी दूसरी लडकी नही है, और उनसे ज्यादा इसे कौन जान सकता था ? फिर वह कन्या दो ऐसी कुमारी फूफियो की देखरेख मे पालित-पोषित हुई थी जिन्होने अपने प्रारम्भिक जीवन के कुछ वर्ष एक छोटे-से जर्मन दरबार मे बिताये थे, और एक श्रेष्ठ नारी के शिक्षण के लिए ज्ञान की जिन सब शाखाओ की आवश्यकता मानी जाती है, उनमे दक्ष थी। उनके प्रशिक्षण मे वह उपलब्धियो का एक चमत्कार ही बन गई। जब वह अठारह साल की थी, तभी कसीदे की प्रशसनीय कला प्रदर्शित करने लगी थी तथा उसने चित्रयवनिकाओ पर सन्तो की समस्त गाथा ऐसी सशक्त अभिव्यक्ति के साथ काढ डाली थी कि वे पापमोचन-गृह (पर्गेटरी) की अनेक आत्माओ के समान लगते थे। वह किसी विशेष कठिनाई के बिना पढ सकती थी और चर्च के अनेक उपाख्यानो तथा हेल्डेनबुख के प्राय सभी शौर्य-चमत्कारो का ज्ञान रखती थी। लेखन-कला मे भी उसने काफी प्रगति करली थी और अपना नाम तो, बिना एक भी अक्षर छोडे, इतनी स्पष्टता से लिख लेती थी कि उसकी काकिया बिना चश्मे के ही उसे पढ सकती थी। वह हूबहू महिला-सी दिखनेवाली नाना प्रकार की गुडियाए तथा अलकरण की विविध वस्तुए बनाने मे दक्ष थी, उन दिनो प्रचलित हर तरह की नृत्यकला मे पारगत थी तथा विपची (हार्प) एव गिटार पर बहुत-सी धुने बजा लेती थी। इसके अतिरिक्त मिनेलीडर्स के सभी कोमल गाथागीत उसे कण्ठाग्र थे।

चूकि उसकी फूफिया अपने जवानी के दिनो मे प्रसिद्ध तितलिया और चोचलेबाज़ स्त्रिया रह चुकी थी, इसलिए वे अपनी भतीजी के आचरण की कठोर नियन्त्रिका और सतर्क अभिभाविका होने के सर्वथा उपयुक्त थी, क्योकि कोई वृद्धा सरक्षिका इतनी कठोर, दूरदर्शी एव शिष्टता की समर्थक नही होती जितनी एक वृद्धा विलासिनी होती है। कन्या शायद ही कभी उनकी दृष्टि-परिधि के बाहर जा पाती होगी, पहरे या देखरेख करने वालो के बिना वह

गढी के बाहर कभी नही गई, सदैव उसे कठोर शिष्टाचार एव निर्विवाद आज्ञापालन का उपदेश किया जाता था, और पुरुष ! ओह, उसे उनसे दूर रहने और उनके प्रति नितान्त अविश्वास रखने की ऐसी शिक्षा दी गई थी कि जब तक उचित अनुमति न हो तब तक वह ससार के सबसे सुन्दर अश्वारोही शूर पर भी आख डालने को तैयार न थी—फिर चाहे वह उसके चरणो मे ही क्यो न पडा हो।

इस प्रणाली का सुप्रभाव प्रत्यक्ष था। किशोरी विनय एव सयम का नमूना बन गई थी। जब दूसरी लडकिया ससार की चमक-दमक मे अपना मधुर सौन्दर्य नष्ट कर रही थी, तब वह अपनी इन विशुद्ध अविवाहिताओं की छाया मे अपनी लज्जा की मधुरिमा लिये नूतन एव सुन्दर नारीत्व मे उसी प्रकार विकसित हो रही थी जैसे रक्षक कण्टको के बीच गुलाब-कलिका खिलती है। उसकी फूफिया गर्व एव उल्लास के साथ उसे देखती थी और विश्वास करती थी कि चाहे दुनिया की और सब तरुणिया विपथगामिनी हो जाए, किन्तु काटजेनैलेन-बोगेन की उत्तराधिकारिणी के साथ वैसा कुछ नही हो सकता।

परन्तु बैरन वान लैण्डशार्ट को सन्ताने भले ही अधिक न हो, उनकी गृहस्थी कुछ छोटी न थी, क्योकि भगवान् ने उन्हे निर्धन सम्बन्धियो की बहुलता प्रदान की थी। उन सबका वही अनुरागपूर्ण रग-ढग था जो आम तौर से दीन सम्बन्धियो मे पाया जाता है, वे सब अद्भुत रीति से बैरन के प्रति आसक्त थे और झुण्ड के झुण्ड आने और गढी को सजीव बनाने का कोई भी अवसर छोडते नही थे। वे सभी पारिवारिक समारोह बैरन के खर्च पर मनाते थे, और जब प्रसन्न मुद्रा मे होते थे तब घोषित करते थे कि इन पारिवारिक सम्मिलनियो, इन हार्दिक उत्सवो से अधिक आमोदकारी धरती पर और कुछ नही है।

बैरन छोटा आदमी होते हुए भी दिल का बडा था और अपने निकटवर्ती लघु ससार मे सबसे महान् व्यक्ति होने की चेतना से उसका हृदय सन्तोष से प्रफुल्लित हो उठता था। उसे उन काले पुराने वीरो की लम्बी कहानिया सुनने का शौक था जिनके चित्र चारो ओर की दीवारो पर लटके हुए गम्भीरतापूर्वक नीचे की ओर देख रहे थे, और उसे अपने खर्चे पर पलनेवालो से अधिक अच्छे श्रोता और कहा मिल सकते थे ? वह अद्भुत बातो की ओर उन्मुख था और उन सब अतिप्राकृतिक कथाओ मे दृढ विश्वास रखता था जो जर्मनी के प्रत्येक

पर्वत एव घाटी मे बहुलता के साथ प्रचलित है । उसके अतिथियो की निष्ठा तो उसको भी पार कर गई थी , वे आश्चर्य की प्रत्येक कहानी मुँह बाये हुए तथा आखे फाड-फाडकर सुनते थे, और चाहे कहानी सौवी बार सुनाई जा रही हो वे चकित हुए बिना नही रहते थे । इस तरह रहते थे—बैरन वान लैण्डशार्ट, अपने टेबुल के वक्ता और अपने लघुक्षेत्र के निरकुश बादशाह, और सबके ऊपर इस समझ से खुश कि वह अपने काल के सबसे बुद्धिमान् व्यक्ति है ।

जिस अवसर से मेरी कहानी का सम्बन्ध है उस अवसर पर गढी मे एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बडा पारिवारिक उत्सव था और सब लोगो की भीड एकत्र थी । यह उत्सव बैरन की कन्या के भावी वर के स्वागत के लिए था । पिता एव बावेरिया के एक पुराने सामन्त के बीच बहुत दिनो से बातचीत चल रही थी कि दोनो कुटुम्ब अपने बच्चो का विवाह आपस मे करके और निकट आ जाए— अपनी मर्यादा को सयुक्त कर ले । बडी बारीकी के साथ प्रारम्भिक कार्रवाइया पूरी की गई थी । दोनो की मँगनी एक-दूसरे को देखे बिना ही हो गई और विवाहोत्सव का समय भी तय हो गया । इसी कार्य के लिए तरुण काउण्ट वान अल्टेनबर्ग को सेना से वापस बुला लिया गया था । वह अपनी दुल्हन को प्राप्त करने के लिए चल पडा था और रास्ते मे था । उसे वुर्ट्जबर्ग मे घटना वश रुक जाना पडा था और वहाँ से उसका लिखित सन्देश आ गया था कि किस दिन और किस घडी वह वहा पहुँचने की आशा करता है ।

सारी गढी उसका उचित स्वागत करने की तैयारी मे व्यस्त थी । सुन्दर दुल्हन असामान्य सतर्कता के साथ सजाई गई थी । दोनो फूफियो ने उसके प्रसाधन की देखरेख की थी और उसके परिधान की हर चीज के लिए सारी सुबह झगडती रही थी । किशोरी ने दोनो के झगडे का लाभ उठाकर अपनी रुचि का अनुसरण किया था और सौभाग्य-वश अच्छी सफलता प्राप्त की थी । वह उतनी ही सुन्दर लग रही थी जैसी कि तरुणाई से भरा उसका दूल्हा चाह सकता था, और प्रतीक्षा के स्पन्दन ने उसके रूप की दीप्ति और बढा दी थी ।

उसके मुख एव गले पर छाया मुग्धभाव, सीने का कोमल उभार, रह-रहकर दिवास्वप्न मे डूबती आखे— ये सब बाते उसके नन्हे हृदय मे मृदुल तूफान की द्योतक थी, क्योकि कुमारी फूफियो का ऐसे मामले मे दिलचस्पी लेना स्वाभाविक था । वे उसे दुनिया-भर के गम्भीर उपदेश दे रही थी कि उसे किस तरह

पेश आना चाहिए, क्या कहना चाहिए और प्रतीक्षित प्रेमी का स्वागत कैसे करना चाहिए।

बैरन भी तैयारियो मे कुछ कम व्यस्त न थे। सचाई तो यह है कि उनके पास कोई निश्चित काम करने के लिए नही था, किन्तु वह स्वभावत ही क्रियाशील व्यक्ति थे और जब सारी दुनिया हडबडी मे थी, तो वही कैसे चुप बैठ सकते थे! उन्होने ऊपर से नीचे तक सारी गढी मे असीम उत्कण्ठा का वातावरण उत्पन्न कर रखा था, वह बार-बार नौकरो को उनके काम से बुलवाते और उन्हे सावधान रहने के लिए उद्बोधित करते थे, और खुद प्रत्येक हाल और कक्ष मे अशान्त और हठी की भाति घूमते-फिरते थे।

इस बीच एक तगडा मृगशावक मार दिया गया था, जगल शिकारियो के कोलाहल से गूज उठा था, पाकशाला काम्य वस्तुओ से भर गई थी, तहखाने बढिया मदिरा से भर दिये गए थे, यहा तक कि हीडेलबर्ग का पीपा भी भर दिया था। जर्मन आतिथ्य की सच्ची भावना के साथ हर चीज विशिष्ट अतिथि का स्वागत करने को तैयार थी,-- किन्तु अतिथि ने ही दर्शन देने मे देर की। घण्टे पर घण्टा बीतता गया। जो सूर्य अपनी निम्नगामी किरणे ओडेनवाल्ड के समृद्ध वनो पर बरसा रहा था, वह अब पर्वत-शृगो के ऊपर चमकने लगा था। बैरन सबसे ऊची मीनार पर चढ गये और काउण्ट एव उसके पारिषदो की झलक पाने की आशा से दूर-दूर तक आखे फाड कर देखते रहे। एक बार तो उन्हे ऐसा लगा कि उन्होने उन्हे देखा है, तूर्यो की आवाज़ घाटी से बहती हुई आई और पर्वतो के कारण देर तक प्रतिध्वनित होती रही। नीचे दूरी पर बहुत-से घुडसवार दिखाई पडे, जो धीरे-धीरे सडक के रास्ते आगे बढ रहे थे, किन्तु जब वे पर्वत के पाद-भाग के निकट पहुचे, तो सहसा दूसरी ओर मुड गए। धूप की अन्तिम किरण विदा हो गई,—गोधूलि मे चमगादड चक्कर काटने लगे, सडक दृष्टि मे धुधली से और धुधली होती गई, और कभी-कभी अपने काम पर से घर लौटते इक्के-दुक्के किसानो को छोड कोई भी उत्साहित करने वाली चीज़ नजर नही आती थी।

जब लैण्डशार्ट की पुरानी गढी इस बेचैनी की हालत मे थी, तब ओडेनवाल्ड के एक-दूसरे भाग मे एक बहुत मनोरजक घटना घट रही थी।

तरुण काउण्ट वान अल्टेनबर्ग बडी शान्ति के साथ उस सयत ठुमुक चाल

से अपने रास्ते पर चला जा रहा था जिससे कोई आदमी उस स्थिति मे अपने विवाहस्थल की ओर जाता है, जब मित्र प्रेमार्चन (कोर्टशिप) का सम्पूर्ण सकट एव अनिश्चितता उसके हाथ से अपने हाथ मे ले लेते है और जब कोई दुल्हिन उसके लिए उसी निश्चितता के साथ प्रतीक्षा कर रही होती है जिस निश्चितता से यात्रा के अन्त मे भोजन उसकी प्रतीक्षा कर रहा होता है। बुर्ट्जबर्ग मे उसे अपना एक तरुण सैन्य-बन्धु मिल गया जिसके साथ उसने सीमाचल पर कुछ सैनिक सेवा की थी। नाम था हरमेन वॉन स्टार्केन फाउस्ट। वह जर्मन शूरता का एक दृढतम एव योग्यतम उदाहरण था, और इस समय सेना मे लौट रहा था। उसके पिता का गढ लैण्डशार्ट की प्राचीन गढी से ज्यादा दूर नही था, यद्यपि एक खानदानी झगडे के कारण दोनो कुटुम्ब परस्पर-विरोधी और एक-दूसरे के लिए अजनबी हो गए थे।

परिचय के भावनाभरे क्षण मे दोनो तरुण मित्रो ने एक-दूसरे से अपनी सम्पूर्ण विगत दुस्साहसिकताओ और समृद्धियो का वर्णन किया। काउण्ट ने एक ऐसी तरुणी के साथ अपने भावी परिणय की सारी कहानी सुनाई, जिसे उसने कभी देखा नही था परन्तु जिसके सौंदर्य के विषय मे उसने अत्यन्त उल्लासकर वर्णन सुने थे।

चूकि दोनो मित्रो का मार्ग एक ही दिशा मे था, इसलिए उन्होने शेष यात्रा साथ-साथ करने का निश्चय किया, और आराम के साथ धीरे-धीरे चल सके, इसलिए बुर्ट्जबर्ग से तडके ही रवाना हो गए। काउण्ट ने अपने अनुचरवर्ग को बाद मे आने और बीच मे उसके साथ हो लेने का आदेश दे दिया था।

दोनो मित्र राह मे अपने सैनिक दृश्यो एव घटनाओ का एक-दूसरे से वर्णन करते हुए चले जा रहे थे। काउण्ट कुछ उबानेवाली बाते कर रहा था क्योकि जब-तब वह अपनी दुल्हिन के प्रसिद्ध रूपाकर्षण तथा उसकी प्रतीक्षा करते हुए आनन्द का वर्णन करने लगता था।

इस प्रकार वे दोनो ओडेनवाल्ड के पर्वतो के बीच आ गए थे और एक अति निर्जन एव घने वन के दर्रे को पार कर रहे थे। यह बात सर्वविदित है कि जर्मनी के जगल सदा ही डाकुओ के अड्डे रहे है, जैसे कि उसके गढ भूत-प्रेतो के केन्द्र रहे है। और उस समय तो डाकुओ का और भी बाहुल्य था, क्योकि नौकरी से निकाले हुए सैनिक, डाकुओ के रूप मे, सारे देश मे घूम रहे

थे। इसलिए इनमे कोई असाधारणता नही मालूम पडनी चाहिए कि जगल के बीच इनके एक दल द्वारा दोनो तरुण अश्वारोहियो पर आक्रमण कर दिया गया। दोनो ने वीरता के साथ अपना बचाव किया, किन्तु डाकुओ की अधिक सख्या के कारण वे विवश हो गए। इसी समय काउण्ट का अनुचर-दल उनकी मदद के लिए आ पहुचा। उसको देखते ही डाकू भाग गए, किन्तु इस बीच काउण्ट को एक साघातिक घाव लग चुका था। धीरे-धीरे, और बडी सावधानी से वे उसे वुर्ट्जवर्ग नगर मे वापस ले आए और निकटवर्ती ईसाई मठ से एक ऐस श्रमण को बुलाया गया जो शरीर एव आत्मा दोनो की चिकित्सा करने के लिए प्रसिद्ध था, किन्तु उसकी विद्या का अर्द्धांश फालतू था, अभागे काउण्ट के क्षण इने-गिने थे।

दम तोडते हुए उसने अपने मित्र से प्रार्थना की कि तुरन्त लैण्डशार्ट गढी को जाए और उसकी दुल्हिन से वादा पूरा न कर सकने का साघातिक कारण वता दे। यद्यपि वह बहुत प्रचण्ड प्रेमी नही था किन्तु बहुत सूक्ष्मदर्शी व्यक्ति था और ईमानदारी के साथ चिन्तित था कि उसका अनुरोध तेजी और शिष्टता के साथ पूरा कर दिया जाए। उसने कहा—"जव तक यह नही होता, मै अपनी कब्र मे शान्तिपूर्वक न सो सकूगा।" उसने इन अन्तिम शब्दो को विचित्र गाम्भीर्य के साथ कहा। ऐसे प्रभावोत्पादक क्षण मे किये गए अनुरोध मे हिचकिचाने की तो कोई गुजाइश थी ही नही। स्टार्केन फाउस्ट ने उसे सान्त्वना देकर शान्त करने की चेष्टा की, निष्ठापूर्वक उसकी इच्छा की पूर्ति करने का वचन दिया और पवित्र प्रतिज्ञा के रूप मे अपना हाथ उसके हाथ मे रख दिया। मरते हुए मित्र ने स्वीकृति मे उसे दबाया, किन्तु शीघ्र ही प्रलापावस्था आ गई और वह अपनी दुल्हिन के विषय मे—अपनी मगनी, अपने दिए वचन, इत्यादि के विषय मे बक-झक करने लगा, अपना घोडा जल्द लाने की आज्ञा दी जिससे वह लैण्ड-शार्ट गढी पहुच सके और अपनी कल्पना मे घोडे पर बैठते समय उसके प्राण-पखेरू उड गए।

अपने साथी की असामयिक मृत्यु पर स्टार्केन फाउस्ट ने एक दीर्घ नि श्वास लिया, फिर उसकी आखो से सैनिक के अश्रुबिन्दु झर पडे। फिर वह उस बेढव सन्देशयात्रा पर विचार करने लगा जिसके लिए वचन दे चुका था। उसका हृदय भारी और दिमाग परेशान हो गया, क्योकि उसे शत्रुजनो के बीच बेबुलाये

अतिथि के रूप मे जाना और उनकी आशा की हत्या करनेवाली खबर सुनाकर उनके उत्सव को नष्ट कर देना था। फिर उसके सीने मे उत्सुकता भी करवटे ले रही थी कि काटजेनेलेनबोगन की इस दूर-दूर तक प्रसिद्ध सुन्दरी को देखना चाहिए जो इस सतर्कता के साथ ससार से दूर रखी गई है, क्योकि वह स्त्री जाति का एक भावुक प्रशसक था, और उसके चरित्र में उन्माद एव दुस्साहसिकता की ऐसी तेजी थी जो उसे सम्पूर्ण आश्चर्यजनक दुस्साहसिकताओ के प्रति आकर्षित करती थी।

रवाना होने के पूर्व उसने मित्र की अन्त्येष्टि क्रिया के लिए, कान्वेण्ट के पादरियो से मिलकर, सब व्यवस्था कर दी। निश्चय हुआ कि उसे वुर्ट्जबर्ग के गिर्जे मे उसके कुछ प्रतिष्ठित सम्बन्धियो के पास ही दफन किया जाए। काउट के शोकग्रस्त अनुचरमण्डल ने उसके अवशेष को अपने अधिकार मे ले लिया।

अब समय आ गया है कि हम काटजेनेलेनबोगेन के उस प्राचीन परिवार की ओर फिर लौटे। वहा सब लोग अतिथि के लिए और उससे भी ज्यादा भोज के लिए, अधीर हो रहे थे। हमे उस भले नाटे बैरन की भी खबर लेनी चाहिए जिसे हम सबसे ऊची मीनार पर छोड आए है।

रात हो गई किन्तु कोई अतिथि नही आया। बैरन निराश होकर मीनार से नीचे उतर आए। प्रीतिभोज, जिसे घण्टे पर घण्टे कई बार स्थगित किया जा चुका था, अब स्थगित नही किया जा सकता था। रसोई ठण्डी हो चली थी, रसोइया तडप रहा था, और सारा परिवार देखने मे उस सैनिकदल के समान लगता था जो अकालग्रस्त हो रहा हो। बैरन को विवश होकर, अतिथि की उपस्थिति के बिना ही, प्रीतिभोज के लिए आदेश देना पडा। सब खाने पर बैठ गए, और भोजन शुरू ही किया जानेवाला था कि फाटक के बाहर हॉर्न के बज उठने से मालूम हुआ कि कोई अजनबी आ रहा है। कुछ देर बाद दूसरी दीर्घ-ध्वनि ने गढी के पुराने महल को प्रतिध्वनि से भर दिया। दीवार से रक्षक ने भी उसका प्रत्युत्तर दिया। बैरन अपने भावी दामाद का स्वागत करने के लिए आगे बढे।

खाई का पुल गिराकर चौरस कर दिया गया था और अजनबी फाटक के सामने पहुच गया था। वह काले घोडे पर सवार लम्बा, वीर अश्वारोही था। चेहरा पीला पड रहा था किन्तु आखे दीप्त और रूमानी थी, उसकी मुद्रा मे

एक राजकीय विषादमयता थी। बैरन को आघात लगा कि वह ऐसे सादे और अकेले ढग से कैसे आया है। क्षणभर के लिए उसकी मर्यादा को चोट लगी और उसने सोचा कि ऐसे महत्त्वपूर्ण अवसर पर इस प्रकार आना उसके प्रति तथा उसके महत्त्वपूर्ण परिवार के प्रति उचित सम्मान के अभाव का सूचक है। किन्तु उन्होने अन्त मे इस निष्कर्ष के कारण अपने को शान्त कर लिया कि तरुणाई की अधीरता के कारण ही वह अपने पारिषदो से पहले आ गया होगा।

अजनवी ने कहा—"इस प्रकार किसी औचित्य के बिना आप लोगो के बीच आने के लिए मुझे दु ख है—"

बीच मे ही बैरन ने अपने सम्मान-प्रदर्शन एव बधाइयो से उसके कथन मे बाधा दी, बल्कि उसके शिष्टाचार एव बोलने के ढग से बैरन को अपने ऊपर गर्व हुआ। अजनवी ने एक-दो बार बैरन की वाणी के प्रभाव को रोककर अपनी बात कहने की चेष्टा भी की परन्तु वह व्यर्थ गई, इसलिए वह सिर झुकाकर सुनने लगा। बैरन के चुप होने तक वे दोनो गढी के अन्त कक्ष तक पहुच चुके थे, और अजनबी एक बार फिर कहने जा रहा था कि परिवार की नारी-मण्डली के आगमन से, जिसके आगे लज्जा से सिमट रही-सी वधू थी, फिर उसमे बाधा पड गई। क्षण-भर के लिए उसने वधू की ओर इस प्रकार देखा जैसे अभिभूत हो गया हो, ऐसा प्रतीत हुआ जैसे उसकी सारी आत्मा उस दृष्टि मे चमक उठी हो। एक कुमारी फूफी ने वधू के कान मे कुछ कहा, वधू ने कुछ कहने की चेष्टा की, उसकी आर्द्र नीली आखे कुछ ऊपर उठी। उसने अजनबी पर जिज्ञासा की एक सकोचभरी दृष्टि डाली और फिर आखे नीचे झुका ली। शब्द लुप्त हो गए, किन्तु उसके ओठो पर एक मधुर मुस्कान थिरक उठी, गाल का मन-मोहन तिल चमककर कह उठा कि उसकी दृष्टि मे असन्तोष का चिह्न नही है। अठारह वर्ष की एक मुग्धा युवती के लिए, जो प्रेम एव परिणय के लिए पहले से तैयार की गई हो, असम्भव था कि ऐसे वीर अश्वारोही से प्रसन्न न हो।

अतिथि इतनी देर से आया था कि ज्यादा बात-चीत के लिए अब समय नही था। बैरन के आगे तो किसी की चल ही नही पा रही थी। उन्होने कह दिया कि विशेष बातचीत कल सुबह होगी और अजनबी को ले जाकर भोजन पर बैठा दिया।

प्रीतिभोज की व्यवस्था गढी के बड़े हाल मे की गई थी। दीवारो पर

चतुर्दिक् काटज़ेनेलेनबोगेन के वश के वीरो के चित्र टगे तथा युद्ध मे छीने हुए फलक लगे हुए थे। टूटे कवचो, अश्व-युद्ध के खण्डित बर्छो, फटे झण्डो के साथ वन्य-युद्ध मे प्राप्त वस्तुए सजी हुई थी, कही भेडिये का जबडा था, कही शूकर के दात थे। एक जोडी बृहदाकार मृग-शृग तो तरुण वर के सिर के ऊपर ही लगा हुआ था।

अश्वारोही ने मण्डली या मनोरजन की ओर कोई विशेष ध्यान नही दिया। उसने भोजन भी मुश्किल मे ही चखा होगा, वह अपनी वधू के ध्यान मे ही डूबा हुआ लगता था। वह ऐसी धीमी बोली मे बात कर रहा था कि दूसरे सुन नही पाते थे, क्योकि प्रेम की भाषा कभी ज़ोर से नही बोली जाती। किन्तु स्त्री के कान क्या कभी इतने बहरे हुए है कि प्रेमी की धीमी फुसफुसाहट को न सुन सके ? उसके ढग मे कोमलता एव गम्भीरता का ऐसा मिश्रण था जिसका किशोरी वधू पर बडा भारी प्रभाव पड रहा था। जब वह ध्यानमग्न होकर उसकी बाते सुन रही थी तो उसके चेहरे पर कभी लालिमा आती और कभी जाती थी। कभी-कभी वह लज्जापूर्ण वाणी मे कुछ जवाब देती थी, और जब वह किसी और तरफ देख रहा होता था तो वह उसके रूमानी चेहरे पर एक तिरछी नज़र डाल लेती थी और कोमल आनन्द का एक मृदुल नि श्वास ले लेती थी। स्पष्ट था कि तरुण वर-वधू एक-दूसरे से प्रति पूर्णत आसक्त हो गए है। फूफियो ने, जो हृदय के रहस्यो के विषय मे दक्ष थी, घोषित कर दिया कि प्रथम दृष्टि मे ही दोनो एक-दूसरे को प्रेम करने लगे है।

प्रीतिभोज प्रफुल्लता के साथ, कम से कम शोरगुल के साथ तो, चलता ही रहा, क्योकि सभी अतिथि उस क्षुधावृत्ति से युक्त थे जो कम आय एव पार्वत्य जलवायु का परिणाम है। बैरन अपनी सर्वोत्तम और सबसे लम्बी कहानिया सुना रहे थे, और उन्होने उन्हे इतनी अच्छी तरह, और ऐसे प्रभावपूर्ण ढग से कभी नही सुनाया था। अगर कोई चमत्कार की बात होती तो उनके श्रोता आश्चर्य मे डूब जाते थे, और हास्यजनक बात होती तो ठीक मौके पर हसने मे चूकते नही थे। यह सच है कि अधिकाश बडे आदमियो की भाति, बैरन को अपनी मर्यादा के ख्याल से नीरस मज़ाक के अलावा और कोई मजाक करना नही आता था, किन्तु जब मजाक प्रभूत हाकहीमर मदिरा के स्वाद से युक्त हो तब नीरस होने पर भी दुर्निवार हो जाता है। गरीब पर हाज़िरजवाब लोगो ने

बहुनेरी अच्छी बाते कही, जिन्हे ऐसे अवसरो पर कहा जाता है, और जिन्हे दुहराने की जरूरत नही है, औरतो के कानो मे बहुत-सी चतुराई-भरी बाते कही गई जिन्हे सुनकर वे दमित हास्य से दोहरी हो-हो गई, बैरन के एकाध गरीब, परन्तु आनन्दी एव चौडे मुहवाले चचेरे बन्धु ने एक-दो गान गाये जिनको सुनते हुए कुमारी फूफियो ने अपने पखे झलने बन्द कर दिए।

सब राग-रग के बीच अजनबी अतिथि की मुद्रा विचित्र एव अप्रासगिक रूप से गम्भीर बनी रही, और ज्यो-ज्यो रात बढने लगी उसके चेहरे पर निराशा की रेखाए गहरी होती गई। यह विचित्र-सा लगेगा पर बैरन के परिहास भी उसे और विषादयुक्त बनाते-से लग रहे थे। कभी वह विचारो मे डूब जाता, कभी उसकी परेशान और अस्थिर आखे इधर-उधर घूम जाती और उसके अशान्त मन की कहानी कह जाती थी। वधू के साथ उसकी बातचीत अधिकाधिक गम्भीर और रहस्यमय होती गई। वधू की भौहो की सुन्दर सुषमा पर बादल घिरने लगे और उसकी मृदुल देह रह-रहकर कापने लगी।

ये सब बाते मण्डली की दृष्टि से छिपी न रह सकी। वर की अज्ञात-कारण उदासी से उनकी हर्षोत्फुल्लता मर गई—उनकी प्रेरणाओ को भी छूत लग गई—लोग आपस मे कानाफूसी करने लगे—आखो-आखो मे विनिमय होने लगा—खवे और सिर हिलाये जाने लगे। गायन और हास्य की मात्रा धीरे-धीरे कम होती गई—लोग बात करते-करते उदासी के साथ चुप हो जाते—फिर आश्चर्यजनक कहानियो और अतिप्राकृतिक उपाख्यानो की बारी आती। एक नीरस कहानी और अधिक नीरस कहानी को जन्म देती। जब बैरन ने उस प्रेत अश्वारोही की कहानी सुनाई जो सुन्दरी ल्यूनोरा को उठा ले गया था, तो कुछ महिलाए भयवश चीखने-चिल्लाने लगी। भयानक कहानी थी वह, जो अब सुन्दर पद्यो मे रूपान्तरित हो चुकी है और सारी दुनिया उसे पढती और उस पर विश्वास करती है।

वर ने भी गहरे ध्यान के साथ यह कहानी सुनी। वह अपनी आँखे बैरन के ऊपर स्थिर किये रहा, और जब कहानी समाप्ति पर आ रही थी, तो धीरे-धीरे अपने आसन पर ऊपर उठने लगा—लम्बे से और लम्बा होता गया, यहा तक कि बैरन की अभिभूत आखो मे वह दानव के समान लम्बा दिखाई देने लगा। जिस क्षण कहानी समाप्त हुई, उसने एक गहरी सास ली और मण्डली

से बडे सयत भाव से विदा ले ली। सब लोग हक्के-बक्के हो गए। बैरन को तो जैसे बिजली मार गई हो।

"क्या ! आधीरात मे गढी छोडकर जाना है ? क्यो ? इसी स्वागत के लिए हर तरह की तैयारी की गई है · यदि तुम अलग विश्राम करना चाहो तो कमरा मौजूद है ।"

अजनबी ने शोकाच्छन्न एव रहस्यमय भाव से सिर हिलाते हुए कहा- · "आज रात मुझे एक दूसरे ही कक्ष मे सोना होगा।

इस उत्तर मे तथा उत्तर जिस स्वर मे कहा गया था उसमे कुछ ऐसी चीज़ थी कि बैरन को अपना कलेजा बैठता-सा लगा, किन्तु उन्होने शक्ति सचित करके अपने आतिथ्य-सत्कार की प्रार्थना दोहराई।

परन्तु प्रत्येक प्रस्ताव पर अजनबी ने मौन रहते हुए परन्तु निर्णय के भाव से, अपना सिर हिला दिया और एकत्र मण्डली के प्रति विदाई का हाथ हिलाता हुआ हाल से धीरे-धीरे बाहर निकल गया। कुमारी फूफिया तो बिल्कुल बुत बन गईं, वधू ने अपना सिर झुका लिया और एक अश्रुबिन्दु उसकी आख मे उतर आया।

बैरन ने गढी के विशाल प्रागण तक, जहा काला अश्व अपनी टापो से भूमि कुरेद रहा था और अधीरतापूर्वक नथने फुफकार रहा था, अजनबी का अनुसरण किया। जब वे दुर्ग-द्वार, जिसमे एक शमादान से हल्की रोशनी हो रही थी, के पास पहुचे तो अजनबी ठहर गया और बैरन से खोखले स्वर मे बोला। उसकी आवाज़ मेहराबदार छत से टकराकर और भी अधिक भुतही लग रही थी।

उसने कहा—"अब जब हम अकेले है, मैं अपने जाने का कारण आपको बता रहा हू। मुझे एक गम्भीर एव अपरिहार्य कार्य से अन्यत्र जाना है—"

बैरन ने कहा—"क्यो ? क्या आप किसी दूसरे को अपनी जगह नही भेज सकते ?"

"वहा बदला नही चल सकता, मुझे खुद उपस्थित रहना पडेगा—मुझे वुर्ट्ज़बर्ग गिर्जाघर पहुचना है।"

कुछ उत्साहित होकर बैरन ने कहा—ओह ! परन्तु कल के पहले नही। कल आप अपनी वधू को लेकर वहा जाएगे।

दस गुनी गम्भीरता के साथ अजनबी ने कहा—नही, नही ! मेरा ठहराव

किसी वधू के साथ नही है ! कीडे ! कीडे मेरा इन्तजार कर रहे है ! मैं मरा हुआ आदमी हू—मुझे डाकुओ ने कत्ल कर दिया—मेरी लाश वुर्ट्जबर्ग मे पडी हुई है आधी रात को मुझे दफनाया जाना है—कब्र मेरी प्रतीक्षा कर रही है—मुझे अपना ठहराव पूरा करना ही होगा !

वह अपने काले अश्व पर उछलकर बैठ गया और खाई के पुल पर से होता हवा हो गया, रात के तूफान मे उसके अश्व की टापो के शब्द विलीन हो गए।

बैरन अत्यन्त सत्रास से कापते हाल मे लौट आए और जो वात हुई थी, सब को बता दी। दोनो फूफिया तो सुनते ही अचेत हो गई, दूसरे लोग एक प्रेत के सग वैठकर खाना खाने की कल्पना से पीले पड गए। कुछ लोगो की राय हुई कि हो न हो वह जर्मन उपाख्यानो का प्रसिद्ध जगली शिकारी ही था। दूसरो ने पहाडी प्रेतात्माओ, वन्य-दानवो तथा अन्य अधिप्राकृतिक आत्माओ की बाते सुनाई जिनसे स्मरणातीत काल से जर्मनी के निवासी तग किए जाते रहे है। एक निर्धन सम्बन्धी ने तो यह भी कहा कि कही तरुण अश्वारोही ने इस प्रकार का वहाना करके जान न छुडाई हो क्योकि उस विपादाच्छन्न व्यक्ति से सनकी-पन की उदासी टपक रही थी। किन्तु इस सुझाव के कारण सारी मण्डली उसपर झल्ला पडी और बैरन तो बहुत ही नाखुश हुए—और उसकी ओर यो देखा जैसे वह कोई काफिर हो। इसलिए उसने शीघ्र से शीघ्र अपनी बात वापस ले ली और सच्चे धर्मानुयायियो के सम्प्रदाय मे भरती हो गया।

किन्तु लोगो के मन मे जो भी अविश्वास रहे हो, दूसरे दिन जब तरुण काउण्ट की हत्या और बुर्ट्जबर्ग गिर्जे मे उसके समाधिस्थ किये जाने की लिखित सूचना आ गई तो सबका अविश्वास पूरी तरह दूर हो गया।

इससे गढ मे जो निराशा का वातावरण फैला, उसकी कल्पना की जा सकती है। बैरन ने अपने को कमरे मे बन्द कर लिया। अतिथि, जो उनके साथ खुशिया मनाने के लिए आए थे, ऐसी विपत्ति मे उनको अकेला छोडकर जाने की बात कैसे सोच सकते थे? वे प्रागण मे घूमते, छोटे-छोटे झुण्ड बनाकर हाल मे एकत्र होते और ऐसे भले आदमी की विपत्ति पर सिर एव कन्धे हिलाते थे। वे भोजन के टेबुल पर और देर तक बैठते, और अपने मन सभालने के लिए सदा से कही ज्यादा जोश के साथ खाते-पीते थे। किन्तु सबसे बुरी हालत तो विधवा वधू की थी। एक बार आलिंगन करने के पूर्व ही उसने पति को खो दिया! जिसका

प्रेत इतना सुन्दर और शीलवान् था, वह आदमी जीवित अवस्था मे कैसा रहा होगा ! उसने रो-रोकर घर भर दिया ।

अपने वैधव्य के दूसरे दिन रात को वह एक फूफी के साथ अपने शयन-कक्ष मे चली गई थी । फूफी ने रात मे उसके साथ ही सोने का आग्रह किया था । यह फूफी जर्मनी की प्रेत-कथा सुनाने मे अन्यतम थी । अभी-अभी वह अपनी सबसे लम्बी कहानियो मे से एक सुनाते-सुनाते बीच मे ही सो गई थी । यह कक्ष जरा दूर पर एक छोटे बाग से लगा हुआ था । भाजी लेटी हुई विषादग्रस्त दृष्टि से उगते हुए चन्द्रमा की किरणो की ओर देख रही थी, जो जालीदार गवाक्ष के सामने लगे वृक्ष की पत्तियो से छन कर आ रही थी । गढी के घडियाल ने अभी-अभी बारह बजाये थे । इसी समय बाग से सगीत की एक मृदुल तान सुनाई पडी । वह हडबडाकर अपनी शय्या से उठ बैठी और हलके पैरो से खिडकी पर जा पहुची । वृक्षो की छाया मे एक लम्बी मूर्ति खडी थी । ज्यो ही उसने अपना सिर उठाया, उसके चेहरे पर एक चन्द्र-किरण पड गई ! स्वर्ग और पृथ्वी (हे ईश्वर !) ! उसने प्रेतवर को देखा । इसी समय एक तेज़ चीख उसके कानो मे पडी । उसकी फूफी, जो संगीत के स्वर से जाग गई थी और उसके पीछे-पीछे चुपचाप खिडकी तक आई थी, उसकी गोद मे गिर पडी । जब उसने पुन उधर देखा, प्रेत लुप्त हो चुका था ।

दोनो स्त्रियो मे से फूफी को शान्त करने की अधिक आवश्यकता थी क्योकि भय के कारण उसका दिमाग काम नही कर रहा था । जहा तक किशोरी की बात है, उसके प्रेमी की प्रेतात्मा मे कुछ तो ऐसा था जो प्रिय लगता था । उसमे पुरुषोचित सौन्दर्य की वही एकरूपता थी, और यद्यपि किसी एक आदमी की छाया से किसी प्रेमासक्त कन्या के अनुराग को सन्तोष नही मिल सकता, किन्तु जहा ठोस पदार्थ न हो वहा उससे भी कुछ सान्त्वना मिल ही जाती है । फूफी ने कह दिया कि वह फिर कभी उस कक्ष मे न सोयेगी , भतीजी ने कुछ देर तक तो ज़िद की, फिर उसने भी ज़ोर देकर कह दिया कि वह गढी के किसी और कमरे मे न सोयेगी । परिणाम यह निकला कि उसे उसमे अकेले ही सोना पडा, हा, उसने अपनी फूफी से प्रतिज्ञा जरूर करवा ली कि वह प्रेत-दर्शन की कथा किसी को न बतायेगी, नही तो उसे धरती पर जो एकमात्र करुण आनन्द प्राप्त है—उस कक्ष मे रहने का जिसपर उसके प्रेमी की अभिभाविका छाया

रात मे पहरा देती है—वह भी छिन जाएगा ।

प्रौढ महिला कब तक वादा पूरा करेगी, यह अनिश्चित था, क्योंकि उसे अद्‌भुत बाते सुनाने का शौक था और कोई भयानक कहानी सबसे पहले सुना सकने मे विजय का एक गर्व होता है, फिर भी पास-पडोस के लोग अब तक नारी-द्वारा भेद सुरक्षित रखने के स्मरणीय उदाहरण के रूप मे यह बात बताते हैं कि उसने पूरे सप्ताह-भर उस भेद को अपने ही तक रखा था । और सप्ताह भर बाद जब एक दिन प्रात नाश्ते के टेबुल पर यह सूचना आई कि किशोर कन्या तो गायब है, कमरा खाली पडा है, शय्या पर उसके सोने का कोई चिह्न नही है और खिडकी खुली है तब आगे जबान पर सयम रखने का कोई कारण नही रह गया और वह अपनी प्रतिज्ञा से छूट गई । चिडिया उड गई थी !

लोगो ने जिस आश्चर्य एव उत्तेजना के साथ इस समाचार को सुना उसकी कल्पना केवल उन्ही को हो सकती है जिन्होने किसी बडे आदमी के ऊपर आए सकट से उसके मित्रो मे पैदा उत्तेजना को देखा है । जब फूफी, जो पहले आघात मे गूगी-सी हो गई थी, अपने हाथ पीट कर चीख उठी—"भूत ! भूत ! उसे भूत उठा ले गया !" तो गरीब सम्बन्धी भी भोजन पर अक्लान्त भाव से हाथ मारना छोड क्षण भर को रुक गए ।

फूफी ने चन्द शब्दो मे बाग के भयजनक दृश्य की कथा सुना दी और अन्त यह कहकर किया कि निश्चय ही प्रेत अपनी दुल्हिन को उठा ले गया है । दो घरेलू नौकरो ने इस राय का समर्थन किया क्योंकि उन्होने भी आधी रात के लगभग पहाडो पर घोडे की टापो का शब्द सुना था और इसमे सन्देह नही कि वह काले अश्व पर सवार प्रेत ही था जो उसे अपनी कब्र की ओर ले जा रहा था । सब उपस्थित लोग इस दारुण सम्भावना से दहल उठे, क्योंकि इस प्रकार की घटनाए जर्मनी मे बहुत सामान्य है और अनेक प्रामाणिक इतिहास-ग्रन्थ उनका समर्थन करते है ।

गरीब बैरन की स्थिति कितनी दयनीय थी ! वत्सल पिता और काटज़ेनेलेनबोगेन के महान् वश के एक सदस्य के लिए कैसी हृदयद्रावक समस्या थी ! उनकी एकमात्र कन्या या तो कब्र मे विलुप्त हो गई है, या फिर उन्हे कोई वन्य दानव दामाद के रूप मे मिलेगा, और वैसा ही सयोग रहा तो भूत-नातियो का झुण्ड भी प्राप्त होगा । स्वभावत वह पूर्णत घबरा गए थे और सारी गढी

कोलाहल से भर गई थी। आदमियो को आदेश दिया गया कि वे घोडे ले ले और ओडेनवाल्ड की हर सडक, पगडण्डी और घाटी को छान डाले। बैरन ने स्वयं लम्बा जूता पहना, कमर से तलवार लटकाई और सन्दिग्ध अनुसन्धान पर जाने के लिए घोडे पर चढने ही वाला था कि एक नई प्रेत-छाया देखकर रुक गया। एक महिला गढी की ओर आती दिखाई पडी। वह एक मियाने या टट्टू पर सवार थी और उसके साथ एक अश्वारोही दूसरे घोडे पर सवार चला आ रहा था। महिला टट्टू को दौडाते हुए फाटक तक आई, फिर अपने घोडे से उछलकर नीचे उतरी और बैरन के चरणो मे गिरते हुए उनके पैरो से लिपट गई। यह उनकी खोई कन्या थी और उसका साथी वही प्रेतवर था। बैरन के होश गुम हो गए, उन्होने अपनी कन्या पर नजर डाली, फिर प्रेत को देखा, उन्हे अपनी इन्द्रियो पर विश्वास नही हुआ। साथी का चेहरा-मोहरा भी प्रेतो की दुनिया मे जाने के बाद बहुत सुधर गया था। उसके वस्त्र शानदार थे और उनमे वही भव्य आकृति पुरुषोचित सतुलन से पूर्ण मालूम पडती थी। अब वह विवर्ण तथा उदास नही दिखाई पडता था। उसका सुन्दर मुख यौवन की दीप्ति से दमक रहा था और बडी-बडी आखो से आनन्द उमडा पडता था।

रहस्य शीघ्र ही खुल गया। अश्वारोही (जैसा कि आप लोग बराबर जानते रहे हैं कि कोई प्रेत नही था) ने हरमन वॉन स्टार्कन फाउस्ट कहकर अपना परिचय दिया। उसने तरुण काउण्ट के साथ अपनी यात्रा की बात सुना दी। उसने बताया कि कैसे शीघ्रता से चलकर वह दुखदायी समाचार देने गढी पर आया था किन्तु सच्ची कथा कहने के प्रत्येक प्रयत्न मे बैरन की वाग्मिता के कारण बाधा पडती रही ; किस प्रकार वधू के दर्शन से वह मुग्ध हो गया और जान बूझकर कुछ समय तक गलती को जारी रहने दिया। उसने बताया कि लौटने का कोई उपाय वह सोच ही रहा था कि बैरन की प्रेत-कथा ने उसे सनक-भरा वह ढग सुझा दिया। कैसे परिवार के सामन्ती कलह से भीत होकर वह छिपकर आता था और किशोरी की खिडकी के नीचे बाग मे घूमता था और कैसे उसने उससे प्रेम-याचना की, उसका प्रेम पाया और उसे प्राप्त करके ले गया। एक शब्द मे उससे विवाह कर लिया।

कोई दूसरी परिस्थिति होती तो बैरन अनम्य बना रहता, क्योकि वह पैतृक अधिकार के विषय मे बडा आग्रही था, और सम्पूर्ण पारिवारिक झगडो मे बडा

हठी था। किन्तु वह अपनी कन्या को प्यार करता था। वह उसे विलुप्त समझ-कर रोया था—उसने शोक किया था—अब उसे जीवित पाकर खुश हो गया। यद्यपि उसका पति शत्रु-परिवार का था, किन्तु ईश्वर की कृपा से प्रेत तो नही था। हा, जिस ढग से उसने व्यवहार किया था, अपने को भूत बताकर उसके साथ जो मजाक किया था, वह सब उसे पसन्द नही था, किन्तु वहा कुछ पुराने मित्र उपस्थित थे, जिन्होने युद्ध मे सेवा की थी। उन लोगो ने उसे विश्वास दिलाया कि प्रेम मे सब चाले क्षम्य है और अश्वारोही तो विशेष व्यवहार का पात्र है क्योकि पिछले दिनो ही उसने सेना मे काम किया है।

इसलिए सब बाते आनन्दपूर्वक तय हो गई। वही बैरन ने तरुण दम्पती को क्षमा कर दिया। गढी मे फिर धूमधाम शुरू हो गई। निर्धन सम्बन्धियो ने प्रेमपूर्ण दयालुता से परिवार के इस नवीन सदस्य को नहला दिया—वह कैसा वीर, कैसा उदार, कैसा धनवान् था! फूफियो पर जरूर दोषारोप किया गया कि कठोर एकान्त एव निष्क्रिय आज्ञापालन की उनकी प्रणाली निष्फल हुई किंतु उन्होने इन सबका कारण खिडकी मे छड एव जाली न लगाने की अपनी असाव-धानी को बताया। उनमे से एक को तो यही दुःख था कि उसकी कहानी का मजा जाता रहा और जीवन मे जो एक ही भूत उसने देखा था, वह भी नकली निकला। किन्तु भतीजी पूर्णतः सुखी थी कि उसने उस भूत को मास और रक्त के रूप मे प्राप्त कर लिया।

इस तरह कहानी खत्म होती है!

वेस्टमिंस्टर एब्बी

When I behold, with deep astonishment,
To famous Westminster how there resorte
Living in brasse or stoney monument,
The princes and the worthies of all sorte :
Doe not I see reformde nobilitie,
Without contempt, or pride, or ostentation,
And looke upon offenselesse majesty,
Naked of pomp or earthly domination ?
And how a play-game of a painted stone,
Contents the quiet now and silent sprites,
Whome all the world which late they stood upon
Could not content or quench their appetites,
  Life is a frost of cold felicitie,
  And death the thaw of all our vanitie

—Christolero's Epigrams by T B 1598

(स्वतन्त्र पद्यानुवाद)

जब आश्चर्य-मुग्ध नयनो से वेस्टमिंस्टर का अवलोकन—
मैं करता हूं, जहां जी रहे ताम्र और प्रस्तर के स्मारक,
जिनमे सभी तरह के राजाओ, विज्ञो का दर्शित जीवन ।
और देखता हू मै उनमे सुधरे सामन्तो का स्पन्दन ।
घृणा, गर्व, आडम्बर, वैभव और जगत् का निर्दय शासन ।
सब कुछ छूट गया है, अब तो हैं वे शुभ महिमा से मडित,
रंजित प्रस्तर का यह कैसा कौतुक, जिसमे कितनी पायन—

शान्त मौन आत्माए सोई तोड जगत् के सारे बन्धन।
पहले जिस विशाल धरती पर वे करती थीं पद-सचारण।
आज नही वे तृप्त उन्हें कर सकतीं, भूख बुझा सकती हैं।
अस्थिर ठडे सुख-विलास का है तुषार यह मानव-जीवन।
और मरण गल जाना है सम्पूर्ण अह औ आत्मप्रदर्शन।

—क्राइस्टोलीरो के एपीग्राम्स १५६८

उत्तर शरद् ऋतु के उन गम्भीर वल्कि विपादाच्छन्न दिनो मे से एक दिन जब प्रभात एव सध्या की छायाए लगभग ओतप्रोत हो जाती हैं, और वर्ष के ह्रास को धुधलके से, उदासी से भर देती है, मैंने वेस्टमिस्टर विहार के आस-पास चन्द घण्टे चहलकदमी करने मे बिता दिये। उस प्राचीन भवनावली की शोकाच्छन्न विभूति मे ऋतु के साथ कुछ सजातीयता थी, और जब मैं उसकी चौखट को पार कर रहा था तो मुझे ऐसा लगा मानो मै पुरानी दुनिया मे लौट आया हू और पुरातन युगो की आभाओ के बीच डूबा जा रहा हू।

मैने एक लम्वे, निचले और ऐसे तोरणयुक्त मार्ग मे होते हुए वेस्टमिटर स्कूल के अन्त प्रागण से प्रवेश किया, जो विशालकाय दीवारो मे बने गोल छिद्रो द्वारा प्रकाशित होने के कारण, सुरग-जैसा लगता था। इस अधेरे मार्ग मे चलते हुए मैंने सुदूर के मठो पर एक नजर डाली और देखा कि एक बूढा स्थल-निर्देशक उन छायामय तोरणो के बीच जा रहा है। अपने काले चोगे मे वह ऐसा लगता था मानो निकटवर्ती किसी समाधि से निकलकर कोई प्रेत वहा फिर रहा हो। इन अधेरे अवशेषो के बीच से विहार की ओर जाने से मन अपने पवित्र ध्यान और चिंतन के लिए तैयार हो जाता है। मढियो मे अब भी पुराने दिनो के एकान्त और शाति का कुछ न कुछ अश है। भूरी दीवारे सीलन से बदरग हो गई है और अधिक आयु के भार से टूट-टूट कर गिर रही है, भित्ति-स्मारकों के अभिलेखो पर भव्य काई की एक तह जम गई है और मृत्यु के सिर तथा दूसरे अन्त्य प्रतीको को उसने धुधला कर दिया है। महराबो की समृद्ध नक्काशी से छेनी के सूक्ष्म स्पर्शों का लोप हो गया है, तोरण-प्रस्तरो के बीच खचित गुलाबो से उनकी पत्तियो का सौदर्य मिट गया है, प्रत्येक वस्तु पर काल के क्रमिक ह्रास के चिह्न है, किन्तु अब भी, उस ह्रास के बीच भी, उनमे हृदय का स्पर्श एव रजन

करनेवाली कुछ-न-कुछ चीज़ है ।

मढियो के चौक मे सूर्य अपनी पीत शारदीय किरणे फेक रहा था , केन्द्र भाग मे जो लघु दूर्वा-भूमिखण्ड था वह चमक रहा था और मेहराबी मार्ग का कोना एक प्रकार की धूमिल श्री से विभासित हो उठा था । तोरणावृत वीथिकाओ के बीच से आखो को नीलाकाश का एक टुकडा या एक चल जलदखण्ड दिखाई पड रहा था । नीलाकाश मे सिर उठाये हुए विहार के सूर्यदीप्त शिखर चमक रहे थे ।

जब मै कभी विभूति एव ह्रास के इस मिश्रित चित्र पर विचार करता, और कभी अपने पाव के नीचे बने फर्श के अश समाधि-प्रस्तरो के आलेखो को पढने की चेष्टा करता हुआ मढियो के आसपास विचरण कर रहा था, मेरी आखे तीन ऐसी आकृतियो की ओर आकर्षित हुई जो पत्थरो को काटकर बनाई गई थी किन्तु अनेक पीढियो के पद-सचार से समाप्तप्राय हो चुकी थी । ये तीन प्रारम्भिक मठाधीशो के पुतले थे , चैत्यलेख मिट गए थे , सिर्फ नाम रह गए थे, जो शायद बाद के ज़माने मे फिर से उत्कीर्ण किए गए थे । (वाइटालिस १०८२, गिस्लेबर्टस क्रिस्पिनस १११४, एव लारेशियस ११७६) । मै कुछ देर तक पुरातत्त्व के इन स्फुट अवशेषो पर विचार करता रहा, जो काल के सुदूर तट पर भग्न पोतो की भाति छोड दिये गये थे और इसके सिवा और कोई कहानी नही कहते थे कि ये लोग कभी थे और बाद मे नष्ट हो गये , इसके सिवा और कोई उपदेश नही देते थे कि वह गर्व निस्सार है जो अपने भस्मावशेष द्वारा लोगो की श्रद्धाजलि लूटना चाहता है या अभिलेख मे जीना चाहता है । थोडे दिनो बाद, ये धूमिल अभिलेख भी नष्ट हो जाएगे और स्तूप-स्मारक न रह जाएगे । मैं इन समाधि-प्रस्तरो की ओर देख ही रहा था कि विहार की घडी की ध्वनि से चौक गया, जो पुश्ते-पुश्ते और मठो-मढियो मे प्रतिध्वनित हो रही थी । समाधियो के बीच गूजती हुई विदा होते समय की यह चेतावनी, जो घटा बीत जाने की कथा कहती है, एक लहर की भाति हमे आगे कब्र की ओर, मृत्यु की ओर बहा ले जाती है । मैं विहार के अन्तरग भाग मे खुलने वाले एक तोरण-द्वार की ओर बढ गया । वहा पहुचने पर भवन की विशालता पूर्णतः मन पर अकित हो जाती है जो मढियो के तहखानो के बिल्कुल विपरीत लगती है । आखे आश्चर्य के साथ दानवी आयाम वाले सगुच्छित स्तभो की ओर देखती है, जिनके

बीच से निकले तोरण आश्चर्यजनक ऊचाई तक चले गए है, और उनके आधार भाग मे टहलता-फिरता आदमी, अपने निज के हस्तकौशल की तुलना मे अपदार्थ-सा दीखता है । इस बृहद् अट्टालिका की विस्तृति और अधेरा एक गहन और रहस्यमय आतक से हमे भर देते है । हम बडी सावधानी और कोमलता के साथ पग रखते है, जैसे समाधि की पुण्य नीरवता को भग करने से डरते हो , प्रत्येक पग दीवारो के बीच फुसफुसाता और समाधियो के बीच बडबडाता है और जिस शान्ति को हमने भग किया है, उसके प्रति हमे अधिक सयत करता है ।

ऐसा जान पडता है कि इस स्थल की आतकपूर्ण प्रकृति आत्मा को झकझोर देती है और दर्शक को नीरव श्रद्धा से भर देती है । हमे अनुभव होता है कि हम अतीत युगो के ऐसे महान् पुरुषो की सचित अस्थियो से घिरे हुए है जिन्होने इतिहास को अपने कारनामो और धरित्री को अपने यश से भर दिया है ।

और फिर भी मानवीय महत्त्वाकाक्षियो की निस्सारता पर, यह देखकर कि वे किस प्रकार एक-पर-एक ठुसी हुई है और कैसे धूलि मे धकेल दी गई हैं, हसी आ जाती है । जिन्हे जीवित अवस्था मे बडे-बडे राज्यो को पाकर भी सन्तोष नही होता था, उन्हे एक छोटा गोशा, एक अधेरा कोना, जमीन का एक लघु टुकडा देने मे कैसी कजूसी वर्ती जाती है । कितनी शक्ले, कितनी आकृतिया कितनी युक्तिया पथिको का ध्यान आकर्षित करने और चन्द सालो तक किसी ऐसे नाम को विस्मरण से बचाने के लिए काम मे लाई जाती है जो एक दिन विश्व के चितन एव प्रशसा के अनेक युगो पर छा लेने की आकाक्षा से भर उठा था ।

मैने कुछ समय कवि-खण्ड मे बिताया, जो विहार के क्रूसाकार मार्ग के एक कोने मे स्थित था । आमतौर से समाधिया सादी है, क्योकि साहित्यिक व्यक्तियो के जीवन तक्षण कलाकार के लिए कोई आकर्षक विषय नही प्रदान करते । शेक्सपीयर एव एडीसन की स्मृतियो मे उनकी मूर्तिया खडी की गई है, किन्तु अधिकाश कवियो एव साहित्यकारो की वक्षमूर्तिया, चित्रगोलक और कभी-कभी तो केवल अभिलेख-मात्र उपलब्ध है । यद्यपि ये स्मारक बहुत सादे है किन्तु मैंने सदैव ही यह पर्यवेक्षण किया है कि विहार मे आनेवाले दर्शक इस भाग मे सबसे देर तक रहते है । जिस नीरस उत्सुकता या अस्पष्ट प्रशसा के भाव से वे महान् पुरुषो एव वीरो की शानदार समाधियो को देखते है उसका स्थान यहा एक प्यार एवं कृपाभरी भावना ले लेती है । वे यहा उसी प्रकार घूमते-

फिरते हे, जैसे मित्रो एव साथियो की समाधियो के बीच घूमते है, क्योकि निश्चय ही लेखक एव पाठक के बीच कुछ न कुछ साहचर्य तो होता ही है। दूसरे प्रकार के लोगो का ज्ञान भावी पीढियो को केवल इतिहास के माध्यम से होता है और वह माध्यम दिन-दिन विकृत और धुधला पडता जाता है, किन्तु ग्रन्थकार और उसके मानव-बन्धुओ के बीच जो ससर्ग स्थापित होता है वह सदा ही नूतन, सक्रिय और सीधा रहता है। वह अपनी अपेक्षा उन्ही के लिए अधिक जिया, उसने चतुर्दिक् के सुखोपभोगो का त्याग किया और सामाजिक जीवन के आनन्दो से अपने को इसलिए दूर रखा कि वह दूरस्थ हृदयो और दूरागत युगो के साथ अधिक घनिष्ठतापूर्वक बात कर सके। उचित है कि दुनिया उसकी ख्याति को प्यार करे, क्योकि वह हिसा और रक्त से नही वरन् आनन्द के अध्यवसाययुक्त वितरण-द्वारा खरीदी गई है। उचित है कि भावी पीढिया उसकी स्मृति के प्रति कृतज्ञ बने, क्योकि वह उनके लिए रिक्त नामो एव कोलाहल-भरे कृत्यो की नही, बल्कि प्रज्ञा के सारे खजानो, विचारो के चमकीले रत्नो और भाषा की स्वर्णिम भगिमाओ की विरासत छोड गया है।

कवि-खण्ड से मैं इमारत के उस भाग की ओर गया जिसमे बादशाहो की समाधिया है। मै इस भाग मे, जो कभी उपासनागृहो से पूर्ण था किन्तु अब महान् पुरुषो की समाधियो एव चैत्यलेखो से भर गया है, फिरता रहा। हर मोड पर मैंने कोई प्रसिद्ध नाम, अथवा इतिहास मे प्रतिष्ठाप्राप्त किसी शक्तिमान् वश का कोई चिह्न देखा। जब आख मृत्यु के इन धुधले कक्षो की ओर उठती है तो उसे विचित्र पुतलो की झाकी मिलती है—कुछ गवाक्षो मे प्रणत है, मानो भक्तिपूरित हो उठे हो, दूसरे धर्मभावना से हाथ जोडे हुए चैत्यो पर दण्डवत् कर रहे है, कवचधारी योद्धा पडे है जैसे युद्ध के बाद विश्राम ले रहे हो, क्रास लिये एव ऊची टोपिया पहिने हुए धर्माध्यक्ष है, चोगे और मुकुटिकाए पहिने सामन्तगण इस तरह लेटे हुए है मानो अपनी राजकीय गरिमा मे हो। इस दृश्य को देखते हुए जो आश्चर्यजनक रूप से जनाकीर्ण है किन्तु जहा प्रत्येक आकृति स्थिर एव मौन है, ऐसा लगता है मानो हम कथाओ मे वर्णित नगर की उस अट्टालिका मे हो जिसमे प्रत्येक प्राणी सहसा पत्थर के रूप मे बदल गया था।*

मैं एक ऐसी समाधि के पास रुक गया जिसपर पूरा कवच पहिने एक सूरमा का पुतला पडा हुआ था। उसकी एक भुजा पर बडी सी ढाल थी, उसके हाथ

याचना की मुद्रा मे सीने पर जुडे हुए थे, चेहरा शिरस्क—फोलादी टोप-से प्राय ढक गया था, चूकि सूरमा धर्म-युद्ध मे सम्मिलित था इसलिए उसकी टागे क्रास की तरह एक-दूसरे को लाघती हुई रखी गई थी। यह एक क्रूसेडर—एक जिहादी---की समाधि थी,---उन सैनिक उत्साहियो मे से एक की जिन्होने धर्म और रूमानियत को मिला दिया था, और जिनकी वीरता तथ्य और कल्पना को, इतिहास एव गाथा को मिलानेवाली कडी बन गई थी। कुलचिह्न भूषित, गाथिक स्थापत्य मे अलंकृत इन दुस्साहसिको की समाधियो मे कुछ न कुछ चित्रोपमता है। ये उन पुरातन उपासनागृहो मे फबती भी है, जिनमे आमतौर पर पाई जाती है, और इन पर विचार करते समय कल्पना अनेक पौराणिक स्मृतियो, रूमानी कथाओ तथा ऐसी शौर्ययुक्त शान-शौकत और तडक-भडक को प्रत्यक्ष कर देती है, जिसे ईसा की कब्र के लिए होने वाले युद्धो पर कविता ने फैला दिया है। ये बिल्कुल बीत गए समय के अवशेष है---ऐसे प्राणियो के, जो स्मृति से मिट गये है,---ऐसी प्रथाओ एव विधियो के, जिनके साथ हमारी कोई सजातीयता नही है। वे किसी ऐसे विचित्र एव दूर देश से आए प्रतीत होते है जिसका हमे कोई निश्चित ज्ञान नही है और जिसके विषय मे हमारी समस्त धारणाए धुधली और स्वप्निल है। इन गाथिक समाधियो पर बने पुतलो मे कुछ न कुछ गम्भीर एव आतककारी वस्तु है, जो मृत्यु की नीद मे, अथवा मृत्यु-काल की याचना मे भी उनपर छाई हुई है। आधुनिक समाधियो की कल्पनापूर्ण प्रवृत्तियो, अव्याकृत कष्टकल्पनाओ तथा रूपकात्मक सचयन की अपेक्षा इनका मेरी भावनाओ पर असीमित रूप से अधिक हृदयग्राही प्रभाव पडता है। अनेक पुरातन चैत्यलेखो की श्रेष्ठता से भी मै आकर्षित हुआ हू। पहिले युगो मे किसी बात को कहने का एक सरल परन्तु उदात्त ढग होता था। मै दूसरे किसी ऐसे चैत्यलेख को नही जानता जिसमे पारिवारिक मूल्य एव प्रतिष्ठित वश की इससे अधिक ऊची चेतना परिलक्षित होती हो जितनी इस चैत्यलेख मे होती है---"सारे बन्धु वीर थे, और सारी बहिने शीलवती थी।"

कवि-खण्ड के सामने वाले भाग मे एक ऐसी समाधि है जो आधुनिक कला की सर्वप्रशसित सिद्धियो मे से एक है, किन्तु जो मुझे उदात्त नही, भयावनी मालूम पडती है। यह रोविलाक द्वारा निर्मित श्रीमती नाइटिंगेल की समाधि है। स्मारक का अधोभाग इस प्रकार बना है जैसे उसके मर्मर-द्वार खोल दिये

गए हो और उसमे से वस्त्राच्छादित कोई ककाल बाहर निकल रहा हो। जब वह अपने आखेट के ऊपर बर्छा फेक रहा है और इस हालत मे कफन उसके मासहीन गात से नीचे गिर रहा है। स्त्री (श्रीमती नाइटिंगेल) अपने भीत पति की गोद मे गिर रही है और वह (पति) निष्फल पर उन्मत्त प्रयत्न द्वारा प्रहार को रोकने की चेष्टा कर रहा है। सब कुछ भयानक सत्य एव भावना द्वारा निर्मित किया गया है, हमे सचमुच कल्पना होती है कि जैसे हमे प्रेत के फूले हुए जबडे से निकली विजय की अबोधगम्य किलकारी सुनाई पड रही हो। किन्तु इस प्रकार हम मृत्यु को अनावश्यक आतक से क्यो भरे, और जिन्हे हम प्रेम करते है उनकी समाधि के विषय मे सत्रास क्यो फैलाए? समाधि तो उन सब चीजो से घिरी होनी चाहिए जिनमे मृत प्राणी के प्रति कोमलता और श्रद्धा उत्पन्न हो, या फिर जिनके द्वारा जीवितो मे गुणो का, शील का विकास हो। यह विरक्ति और निराशा की जगह नही है, बल्कि शोक एव ध्यान का स्थान है।

जब हम उन अधेरे तहखानो और नीरव वक्रमार्गो पर मृतात्माओ के विवरण पढते, घूम रहे होते है तो बाहर से व्यस्त जीवन की ध्वनि कभी-कभी हमारे कानो तक पहुचती है,—गुजरती हुई सवारियो की खटखटाहट, सर्वसाधारण की बुदबुदाहट या कदाचित् सुखोपभोग का हलका हास्य। हमारे चतुर्दिक् की मरणोपम शान्ति के विपरीत यह स्थिति कैसी स्पष्ट है, और इसका भावनाओ पर विचित्र प्रभाव पडता है—सक्रिय जीवन का प्रवाह उमडता चला आ रहा है और श्मशान भूमि की दीवारो तक से टकरा रहा है।

इस प्रकार मैं एक समाधि से दूसरी समाधि तक, और एक उपासनालय से दूसरे उपासनालय तक फिरता रहा। दिन धीरे धीरे बीत चला, विहार मे घूमने-फिरने वालो की दूरस्थ पग-ध्वनि कम से कम होती गई, मधुर जिह्वावाला घण्टा साध्य प्रार्थना के लिए आवाहन करने लगा और मैने देखा कि दूरी पर, श्वेत चोगे पहिने हुए गायकगण वक्र मार्ग को लाघकर गायनकक्ष मे प्रवेश कर रहे है। मैं हेनरी सप्तम के उपासनागार के प्रवेश-द्वार के सामने खडा हो गया। एक गहरे एव अधेरे किन्तु शानदार गुम्बद से होकर, चन्द सीढिया वहा तक पहुचा देती हैं। बडे-बडे पीतल के फाटक है जो समृद्धि एव सूक्ष्मतापूर्वक ढाले गए है, वे अपने कब्जो पर बडे भारीपन से घूमते है, मानो सबसे सजी-बजी उस श्मशान-भूमि मे किसी सामान्य मानव के चरणो को प्रवेश देने मे झिझक रहे हो।

भीतर प्रवेश करने पर ग्राखे वास्तुकला के ऐश्वर्य एव मूर्तियो के ब्यौरे के परिष्कृत सौन्दर्य को देखकर चमत्कृत हो उठती है। दीवारे तक सर्वत्र अलकृत है, वे नक्काशी के कामो से आच्छादित है, जहा-तहा खोखली करके गवाक्ष-रूप मे परिणत कर दी गई है तथा सन्तो एव शहीदो की मूर्तियो से भरी हुई है। ऐसा लगता है कि छेनी के कौशलपूर्ण श्रम से पत्थरो का भार और घनत्व समाप्त हो गया है और वे किसी जादू के जोर से अधर मे लटके हुए है, तक्षित छत ने आश्चर्यजनक सूक्ष्मता के साथ मकडी के जाले (तन्तुजाल) की वायवीय सुरक्षा प्राप्त करली है ।

उपासनागार के अगल-बगल नाइट्स आफ दि बाथ (एक बडी ब्रिटिश उपाधि के ऊचे-ऊचे स्टाल है, जो बलूत की लकडी को चतुराई से तराशकर बनाये गए है, यद्यपि गाथिक स्थापत्य के बेमेल अलकरणो से युक्त है। इन स्टालो के शिखरो पर उन नाइटो के शिरस्त्राण एव ढाल-तलवार सहित राजचिह्न लगे हुए है। उनके ऊपर उनकी पताकाए लटकी हुई है। इन पताकाओ पर जो कुल-चिह्न चित्रित है वे अपने सोनहले, बैगनी एव लाल रगो मे छत की ठडी, भूरी जालियो के बिल्कुल विपरीत लगते है। इस विशाल रोजे के बीच स्थित है इसके सस्थापक की समाधि—उसका पुतला, जो अपनी रानी के साथ है, एक शानदार समाधि पर खडा हुआ है। यह सब पीतल की एक बहुत अच्छी बनी हुई रेलिग से घिरा हुआ है ।

इस विशालता मे एक शोकाच्छन्न निर्जनता है । कब्रो एव विजयफलको का यह विचित्र मिश्रण, सजीव एव ऊपर उठने की महत्त्वाकाक्षाओ के ये चिह्न, ऐसे स्मारको के निकट बने हुए है जो प्रदर्शित करते है कि आगे-पीछे सभी को धूल एव शून्य मे मिल जाना है। पूर्व युगो के कोलाहल एव तडक-भडक के नीरव एव उजाड दृश्यो के बीच चलने से अधिक कोई दूसरी चीज मन पर अकेलेपन की ऐसी गहरी छाप नही डालती। नाइटो और उनके दरबारियो के रिक्त स्टालो तथा उन धूलि-धूसरित किन्तु अलकृत झण्डो को देखते हुए, जो किसी समय उनके आगे-आगे चलते थे, मेरी कल्पना के आगे वह दृश्य छा गया, जब यह हाल देश की शूरता एव सौन्दर्य से पूर्ण था, जब यह रत्नजटित पदाधिकारियो तथा सैनिक पक्तियो की दीप्ति से चमकता था, जब यह अनेक पगो की ध्वनि तथा मुग्ध जन-समुदाय के उल्लास से पूर्ण था। सब चला गया है;

इस स्थान पर पुन मृत्यु की नीरवता छा गई है—जो कभी-कभी केवल उन चिडियो की चहचहाचट से भग होती है जो किसी तरह इस भवन मे प्रविष्ट हो गई है और जिन्होने चूडियो एव भूलनो पर अपने नीड बना लिये है—जो जो निर्जनता एव उजडेपन के निश्चित चिह्न है।

जब मैने झण्डो पर कढे नाम पढे तो मालूम हुआ कि वे ऐसे मनुष्यो के नाम है जो दुनिया मे दूर-दूर तक फैल गए थे। कुछ, जिन्होने सुदूर समुद्रो पर यात्रा की, कुछ जिन्होने दूर देशो मे जाकर अपने शस्त्र-ज्ञान का प्रदर्शन किया, कुछ जो दरबारो एव मन्त्रिपरिषदो के षड्यन्त्रो मे व्यस्त रहे—मतलब सबने ही छायोपम सम्मान के इस महल मे एक और विशिष्टता पाने का प्रयत्न किया, समाधि रूपी एक विपण्ण पुरस्कार के लिए इतनी चेष्टा की।

इस उपासनागृह के दोनो ओर जानेवाली दो लघु वीथिकाए समाधि की समानता का एक करुण उदाहरण प्रस्तुत करती है। यह समानता पीडक को पीडित के स्तर पर ले जाती है, और घोर शत्रुओ की भस्म को एक मे मिला देती है। एक मे गर्विणी एलिजाबेथ की कब्र है, दूसरी मे उसकी शिकार सुन्दरी एव अभागिनी मेरी की कब्र है। दिन मे कोई घण्टा ऐसा नही वीतता जब मेरी के दुर्भाग्य पर किसी की दया का उद्गार न सुनाई पडता हो, यह उद्गार सदा ही उसकी उत्पीडनकर्त्री के प्रति नाराजगी से भरा होता है। एलिजाबेथ के चैत्य की दीवारे उसकी प्रतिद्वन्द्विनी की कब्र पर छोडे गए सहानुभूति के निःश्वासो से निरन्तर प्रतिध्वनित होती रहती है।

जिस वीथिका मे मेरी समाधिस्थ पडी है उस पर एक विलक्षण विषाद छाया हुआ लगता है। धूलि से धूमिल पड गई खिडकियो से छनकर वहुत थोडा प्रकाश आता है। इस स्थल का अधिकाश भाग गहरी छाया से पूर्ण है। दीवारे काल एवं ऋतुओ के प्रभाव से मलिन एव बदरग हो गई है। मेरी की एक मर्मर प्रस्तरमूर्ति समाधि पर फैली हुई है, इसके चतुर्दिक् लोहे की एक रेलिग है जो जग लगकर बहुत क्षीण हो गई है। इस रेलिग पर मेरी का राष्ट्रीय चिह्न गोखरू लगा हुआ है। मैं चलते-चलते थक गया था इसलिए समाधि के पास ही विश्राम लेने के लिए बैठ गया और अपने मन मे अभागिनी मेरी की बहुरगी एव सकटापन्न कहानी के बारे मे सोचता रहा।

अब विहार मे फिरन्तू लोगो की पगध्वनि समाप्त हो चुकी थी। मुझे कभी-

कभी केवल पुजारी की दूरागत ध्वनि सुनाई पडनी थी। वह साध्य प्रार्थना दोहरा रहा था तथा भजनीक मण्डली धीमे स्वर मे उसे गानी जा रही थी। फिर सब बन्द हो गया, सब कुछ नीरव, मौन हो गया। अब मेरे चारो ओर धीरे-धीरे जो नीरवना, शून्यता एव तमिस्रा छाती जा रही थी उनके कारण वह स्थान और गहरी तथा सजीदा दिलचस्पी से भर उठा था।

For ın the sılent grave no conversatıon,
No joyful tread of frıends, no voıce of lovers,
No careful father's counsel—nothıng's heard,
For nothıng ıs, but all oblıvıon,
Dust, and an endless darkness

उस नीरव समाधि मे कुछ भी बातचीत है नहीं सुनाती,
मित्रो की अब जो आनन्दित पग-ध्वनि, नही प्रेमियो की आवाजे
सुविचारित उपदेश पिता का, अब है नही सुनाई पडता
कुछ भी शेष नहीं है सूना है, विकराल शून्य है,
जो कुछ है सब धूलमात्र है और असीमित अन्धकार है।

सहसा बाजे की जोर की ध्वनि कानो पर फट पडी और वह तीव्र से तीव्रतर द्विगुणित होती गई—मानो ध्वनि की उत्तुग तरगे लहरा उठी हो। उनकी मात्रा और महिमा इस शक्तिशाली भवन के साथ कैसा मेल खाती है! किस तडक-भडक के साथ वे इसके विशाल तहखानो मे फैल जाती है और अपनी भयानक एकरसता की सासो से, मृत्यु की इन कन्दराओ को छेडती हुई मौन श्मशान को मुखर कर देती है! और अब वे विजय मे ऊपर उठती हुई तथा अपनी रामतुल्य तानो मे प्रश्वसित होती हुई ध्वनि पर ध्वनि के अम्बार लगाती जा रही है, अब वे रुक जाती है, और गायक-मण्डली की कोमल ताने राग की मधुरधारा मे फूट पडती है, वे ऊपर उठती है तथा छतो मे कूजने लगती है और इन ऊचे गुम्बदो से, स्वर्ग से आती स्वरलहरियो की भाति, खेलती है। और अब फिर गर्जनशील वाद्य (आर्गन) अपनी हृदयस्पर्शी गर्जनाओ के साथ बज उठता है—वायु को दबोचकर सगीत मे बदलता हुआ और उसे आत्मा के ऊपर उडेलता हुआ। कैसी लम्बी धुने है! कैसी व्यापक लये है! वह सगीत-अधिकाधिक सघन तथा शक्तिमान् होता जाता है—उसने विस्तृत अट्टालिका को भर

दिया है और लगता है, मानो दीवारे तक झनझना उठी है, कान स्तम्भित हो गए है, इन्द्रिया अभिभूत हो गई है। और अब वह अपने पूरे ऐश्वर्य मे उठ रहा है, वह धरती से स्वर्ग की ओर उठ रहा है, आत्मा स्वर के इस बढते हुए ज्वार मे ऊपर की ओर बहती चली जा रही है।

मैं कुछ देर उस दिवास्वप्न मे खोया बैठा रहा जो सगीत की तान कभी-कभी उत्पन्न कर देती है, सध्या की छाया हमारे चतुर्दिक् घनी होती जा रही है, समाधियो से गहरा, और गहरा अधेरा फैलने लगा है और दूर पर बजती हुई घडी क्रमश समाप्त होते हुए दिन की सूचना दे रही है।

मैं उठा और विहार से विदा होने की तैयारी की। जब मै उन सीढियो से नीचे उतर रहा था जो भवन के मुख्य भाग मे ले जाती है, मेरी आखे एडवर्ड दि कनफेसर की छतरी की ओर आकर्षित हो गई। मैं उसमे जानेवाली छोटी-सी सीढी पर इस विचार से चढ गया कि वहा से कब्रो के इस जगल का अवलोकन कर लू। छतरी एक प्रकार के चबूतरे पर बनी है और इसके पास चारो ओर अनेक राजाओ और रानियो की समाधिया है। इस ऊंचाई पर से आखे नीचे के खम्भो, उपासनागृहो और कक्षो की ओर देखती है, जो समाधियो से भरे हुए है। यही है वह स्थल जहा सूरमा, धर्माध्यक्ष दरबारी और राजमर्मज्ञ अपनी 'अन्धकार की शय्याओ' पर पडे हुए राख मे मिलते जा रहे है। मेरे निकट ही खडी है राज्याभिषेक की महान् कुर्सी, जो बलूत को बुरी तरह तराश कर प्राचीन गाथिक युग की बर्बर रुचि से बनी हुई है। ऐसा लगता है कि नाट्यशाला के कौशल से यह दृश्य दर्शक पर प्रभाव डालने के लिए ही बनाया गया हो। यह है मानवीय तडक-भडक और शक्ति के आरम्भ और अन्त का एक उदाहरण, सचमुच यहा है सिंहासन से समाधि के बीच बस एक ही पग का अन्तर। तब एक आदमी क्यो न यह सोचे कि ये बेमेल स्मृतिचिह्न जीवित महापुरुषो को शिक्षा देने के हेतु ही यहा एकत्र कर दिये गये है? अपनी दर्पभरी समृद्धि के क्षण मे यह दिखाने के लिए कि शीघ्र ही उपेक्षा और असम्मान की दुनिया मे वे पहुचने वाले है, कितनी जल्द भौहो के चतुर्दिक् लिपटा हुआ मुकुट हट जाएगा और उन्हे समाधि की धूल और असम्मान के बीच पडा रहना होगा और उस स्थान को निम्नतम व्यक्ति के चरण कुचलते रहेगे। क्योकि कहने मे विचित्र लगेगा, परन्तु कब्र भी यहा कोई पवित्रस्थल नही है। कुछ लोगो मे वह दुखदायी

उच्छृखलता होती है जो श्रद्धासमन्वित एव पवित्र वस्तुओ से भी खिलवाड करती चलती है । फिर ऐसे क्षुद्रमना भी है जो जीवितो के प्रति अपने विवश सम्मान-प्रदर्शन एव तुच्छ दासवृत्ति का बदला प्रसिद्ध मृतात्माओ से लेना चाहते है । एडवर्ड दि कनफेसर के शवाधार को तोड डाला गया है और उसके अवशेष को अन्त्येष्टि के अलकारो से रहित कर दिया गया है , दृप्त एलिजाबेथ के हाथ का राजदण्ड चुरा लिया गया है, और हेनरी पचम की मूर्ति शिरोरहित पडी है । एक भी राजकीय स्मारक ऐसा नही है जो इस बात का कुछ न कुछ प्रमाण न उपस्थित करता हो कि मानवजाति की श्रद्धाजलि कितनी मिथ्या और चचल है । कुछ लुट जाते है , कुछ तोड-फोड दिये जाते है , कुछ नीच वाक्यो एव अपमान से ढक जाते है, सभी न्यूनाधिक तिरस्कृत एव अपमानित है ।

अब मेरे ऊपर के ऊचे तोरणो मे बनी रगी खिडकियो से दिन की अन्तिम किरणे छनकर आ रही थी , विहार का अधोभाग गोधूलि के अधेरे मे डूब गया था । उपासनागृह और मार्ग बराबर अधकारमय होते जा रहे थे । बादशाहो के पुतले छाया मे घुल गये थे , अस्पष्ट प्रकाश मे स्मारको की मर्मर प्रतिमाओ की आकृतिया विचित्र हो गई थी , साध्य समीर इस प्रकार आता था मानो समाधि की ठण्डी सास हो, यहा तक कि कवि-खण्ड से गुजरते हुए स्थलनिर्देशक की दूरागत पगध्वनि मे भी कुछ न कुछ विचित्रता और निर्जनता थी । मैं दिन की इस सैर से लौट पडा और जब मढियो के सिहद्वार से बाहर आया तो मेरे पीछे द्वार ऐसे कर्कश स्वर के साथ बन्द हुआ कि सारी इमारत प्रतिध्वनियो से भर उठी ।

जिन पदार्थों पर मै विचार कर रहा था उनको अपने मन मे क्रमबद्ध करने की चेष्टा मैने की किन्तु देखा कि वे पहिले ही अस्पष्टता और भ्रान्तियो मे जा पडे है । नाम, आलेख एव फलक सब मेरी स्मृति मे धूमिल पड गए है, यद्यपि मैंने अभी ड्योढी के बाहर पैर रखा ही है । सोचने लगा कि समाधियो का यह विशाल सचय अपमान के कोष या यश की रिक्तता पर बार-बार दिये गए उपदेशो के विशाल अबार, तथा विनाश की निश्चितता के सिवा और क्या है ? निश्चय ही यह मरण का साम्राज्य—उसका महत् छायापन्न महल है, जहा वह दरबार लगाये बैठता है , मानवीय विभूति के चिह्नो का उपहास करता है और राजाओ की समाधियो पर धूलि एव विस्मृति उडेलना-फेरता रहता है । किसी

नाम की अमरता की शेखी कितनी निस्सार है। काल निरन्तर अपने पृष्ठो को उलटता जा रहा है, और हम वर्तमान की कथा मे ही इतने निमग्न है कि जो पात्र एव कथाए अतीत को दिलचस्प बनाती है उनकी ओर ध्यान ही नही जाता, और प्रत्येक युग ऐसा ग्रन्थ है जो शीघ्र विस्मृत हो जाने के लिए एक ओर फेक दिया जाता है। आज का आराध्य बीते कल के नायक को हमारे स्मृतिपट से धक्का मारकर हटा देता है, और कल वह भी अपने उत्तराधिकारी द्वारा स्थानच्युत कर दिया जाएगा। सर टामस ब्राउन कहते है—"हमारे पितृगण, हमारी अल्प-जीवी स्मृतियो मे अपनी समाधिया पा जाते है और शोकाच्छन्न होकर हमसे कहते है कि हम भी अपने उत्तरजीवियो की स्मृतियो मे इसी प्रकार दफना दिये जाएगे।" इतिहास धूमिल पडकर उपाख्यान बन जाता है, तथ्य सन्देह एव विवाद से ढक जाता है, पट्टिका के ऊपर से अभिलेख मिट जाता है, मूर्ति आधारभाग से गिर पडती है। खम्भे, गुम्बद, पिरामिड बालू के ढेर के सिवा और क्या है? और उन पर के चैत्यलेख धूल मे लिखे अक्षरो के सिवा और क्या कहे जा सकते हैं? किसी समाधि की सुरक्षितता, किसी शव-लेपन का स्थायित्व कहा है? महान् सिकन्दर के अवशेष हवा मे मिल गए है और उसका रिक्त शवाधार (ताबूत) एक संग्रहालय की उत्सुकताजनक सामग्री मात्र है। "जो मिश्री ममिया कैम्बीसस अथवा काल के हाथ छूट गई है, उन्हे अब लोभ खा रहा है, मिज़राइम घावो को अच्छा करता है और फेरो मलहम के लिए बेचा जाता है।"[१]

फिर इससे दृढतर रौज़ो की जो नियति हो चुकी है, उनसे मेरे ऊपर सिर उठाए इस भवन की रक्षा कैसे की जा सकती है? एक समय ऐसा अवश्य आएगा जब इसके स्वर्णिम तोरण, जो आज इतने ऊपर उठे हुए है, चरणो की नीचे की धूल मे मिल जाएगे, उस समय प्रशसा और सगीत की ध्वनि की जगह टूटे हुए मेहराबो से हवा सिसकारी मारेगी और खण्डित मीनार से उल्लू फडफडाते निकलेंगे, जब भास्वर सूर्यरश्मि मृत्यु की इन अंधेरी अट्टालिकाओ मे प्रवेश करेगी और गिरे हुए स्तम्भो मे लताए लिपटी होगी, और नामरहित अस्थिकलश के इर्दगिर्द फाक्सग्लोव (अप्सरागुलि बैंगनी-श्वेत फूलो का एक पौधा) अपनी

१ सर टी० ब्राउन।

कलिया झुका देंगे जैसे मृतात्मा का उपहास कर रहे हों। इस प्रकार मनुष्य एक दिन चला जाता है, उसका नाम अभिलेख और स्मृति से मिट जाता है, उसका इतिहास कहने की एक कहानी मात्र रह जाता है और उसका स्मारक ध्वंसावशेष मात्र हो जाता है।

क्रिसमस : बड़ा दिन

"किन्तु क्या वह पुराना-पुराना, भला-पुराना क्रिसमस चला गया ? क्या अब उसके अच्छे, 'धवल' जीर्ण सिर और दाढी के बाल के सिवा और कुछ नही बचा है ? अच्छा, तो मै यह जानते हुए कि उसका और अधिक कुछ नही पा सकता, इतना ही ले लूगा ।"

—ह्यू एण्ड क्राई आफ्टर क्रिसमस ।

A man might then behold
At Christmas, in each hall
Good fires to curb the cold,
And meat for great and small
The neighbors were friendly bidden,
And all had welcome true ;
The poor from the gates were not chidden
When this old cap was new

—Old Song

(स्वतन्त्र पद्यानुवाद)

एक मनुज तब देख सका था क्रिसमस मे, प्रत्येक हॉल मे,
शीत मिटाने को ज्वाला है, मांस-भोज हर एक थाल मे ।
और पड़ोसी मित्रतुल्य थे, सच्चा था जन-जन का स्वागत,
जब टोपी यह जीर्ण नई थी, हेय न था निर्धन द्वारागत ।।

इग्लैण्ड मे दूसरी कोई भी चीज़ मेरी कल्पना पर इतना आनन्दप्रद प्रभाव नही डालती जितना पहिले युगो की त्यौहार-सम्बन्धी प्रथाए तथा ग्राम्य खेल डालते हैं । वे उन तस्वीरो की याद दिला देते है जो जीवन के वासन्तिक प्रभात

त्योहार, जो शान्ति एव प्रेम के धर्म की घोषणा की स्मृति मे मनाया जाता है, पारिवारिक सम्बन्धो के एकत्र होने और उन सजातीय हृदयो के बन्धन को और निकट लाने की एक ऋतु भी बना दिया गया है, जिसे ससार की चिन्ताए, सुखोपभोग और दु ख निरन्तर शिथिल करते रहते है । इसी अवसर पर परिवार के बच्चे, जिन्होने जीवन की यात्रा शुरू कर दी है और बिखरकर दूर-दूर तक चले गए है, अपने पैतृक घर मे एक बार पुन एकत्र होते है—उस घर मे जो प्रेम की सब बिखरी शक्तियो को खीचकर एक स्थान पर केन्द्रित कर देता है और जहा वे अपने बचपन के प्यारभरे स्मारको के बीच एक बार पुन तरुण एव प्रेमार्द्र हो उठते है ।

वर्ष की इस ऋतु मे ही ऐसा कुछ है जो क्रिसमस के समारोह को सौन्दर्य प्रदान करता है । दूसरे अवसरो पर हम अपने आनन्द का अधिकाश केवल प्रकृति की सौन्दर्य-राशि से ग्रहण करते है । हमारी भावनाए दौडकर अपने को सूर्य-रश्मिपूरित भूदृश्यो पर उडेल देती है, और हम 'दूर-दूर तक हर जगह पहुच जाते है ।' पक्षी का गान, सोते का कल-कल, बसन्त की प्रश्वसित सुगन्ध, ग्रीष्म की मृदुल विलासिता, शरद् की स्वर्णिम तडक-भडक, नूतन उन्मेषकारी हरीतिमा के परिधान से आवृत धरती और अपनी गहरी रसपूर्ण नीलिमा तथा जलदीय महिमा से पूर्ण आकाश, सब हमे मौन किन्तु विलक्षण आनन्द से भर देते है और हम सब मनोवेगो के सुखोपभोग से पूर्ण हो उठते है । किन्तु शि शिर की गहनता मे, जब प्रकृति प्रत्येक प्रकार के आकर्षण एव सौन्दर्य से रहित हो जाती है तथा जब उस पर सघन हिम का परदा पड जाता है तब हम अपनी तृप्ति के लिए नैतिक स्रोतो की ओर उन्मुख होते है । भूदृश्य की शुष्कता और निर्जनता, छोटे धूमिल दिवस एव अधेरी राते हमारे प्रवास को सीमित करती और हमारी भावनाओ को भी विदेशो मे विचरण करने से विरत कर देती है । वे हमे सुखोपभोग के लिए सामाजिक वृत्तो की ओर उन्मुख करती है । हमारे विचार अधिक केन्द्रित हो जाते है , हमारी मैत्रीपूर्ण सहानुभूतिया अधिक स्फुरित हो उठती हैं । हम एक दूसरे की सगति का सौन्दर्य और अधिक अनुभव करते है, और अपने सुखोपभोग के लिए परस्पर निर्भरता के कारण एक-दूसरे के अधिक निकट आ जाते हैं । हृदय-हृदय को पुकारता है, और हम उस प्रेमालु कृपा के गहरे कूपो से आनन्द प्राप्त करते हैं जो हमारे हृदयो की शान्त कन्दराओ मे पडी होती है

और जिसका उपयोग करने पर हमे पारिवारिक उल्लास का पवित्र तत्त्व प्राप्त होता है।

बाहर का सघन अन्धकार हृदय को माध्य अग्नि की दीप्ति एव ताप से युक्त कमरे मे जाने के लिए प्रेरित करता है। रक्तिम ज्वाला कमरे मे कृत्रिम ग्रीष्म एव धूप को छिटका देती है। वह हर चेहरे को एक अधिक कृपापूर्ण स्वागत के भाव से दीप्त कर देती है। वह स्थान कहा है जहा आतिथ्य का निष्ठापूर्ण मुख इससे अधिक विस्तृत एव अनुकूल मुस्कान मे फैलता हो? वह स्थान कहा है जहा प्रेम की लज्जालु दृष्टि इससे अधिक मधुर रूप मे बोल उठती हो जितना शिशिर के अग्निपात्र का स्थान होता है? और जब शिशिर-समीर का सूखा झोका हाल मे झपटता हुआ दूरस्थ द्वार को भडभडा देता है तहखाने मे गूज उठता है और चिमनी को झकझोर देता है तब उस सयत एव आश्रित सुरक्षितता की भावना से अधिक कृतज्ञता और क्या हो सकती है जिसके साथ हम सुखमय कक्ष और पारिवारिक हास्यविनोद के दृश्य को देखते है?

चूकि उनके समाज के प्रत्येक वर्ग मे ग्रामीण स्वभाव का खूब प्रसार है, अग्रेज लोग सदैव ही उन उत्सवो और छुट्टियो के बडे प्रेमी रहे है जो ग्राम्य जीवन की स्तब्धता मे अनुकूल बाधा उपस्थित करती है, और वे पूर्वकाल मे, क्रिसमस की धार्मिक एव सामाजिक रीतियो का विशेष रूप से पालन करते थे। जिस विचित्र हास्य, स्वाग-तमाशे, हसी-खुशी तथा सुबन्धुता के प्रति पूर्ण समर्पण के साथ यह त्यौहार मनाया जाता था उसके जो शुष्क विवरण पुरातत्त्वान्वेषियो ने दिये है उनको पढकर भी बडी स्फूर्ति मिलती है। ऐसा लगता था कि उसने प्रत्येक द्वार को खोल दिया है, प्रत्येक हृदय को निर्बन्ध कर दिया है। यह किसान और जमीदार या सामत को एक-दूसरे से मिला देता था और आनन्द तथा कृपा शीलता के एक तप्त एव उदार प्रवाह मे सब श्रेणियो को गूथ देता था। गढो एव जमीदारो के भवनो के पुराने हाल वीणा एव क्रिसमस गान से प्रतिध्वनित हो उठते थे, और उनके समृद्ध भोजनालय आतिथ्यभार से दबकर कराहने लगते थे। गरीब से गरीब की झोपडिया भी इस प्रसन्न ऋतु का तेजपात एव शूलपर्णी की हरी सजावटो से स्वागत करती थीं, —प्रसन्न अग्नि झझरियो से अपनी किरणे बाहर फेककर पथिको को इस बात के लिए निमत्रित करती थी कि साकल उठाकर दरवाजा खोल ले और अन्दर आकर अग्निकुण्ड के चतुर्दिक् बैठी

उस गप्प-मण्डली मे शामिल हो जाए , जो लम्बी सध्या को मशहूर मजाको और बार-बार कही हुई क्रिसमम कहानियो से मनोरजक बनाने मे लगी है ।

आधुनिक मभ्यता का एक दु खद प्रभाव यह है कि उसने पुरातन हार्दिक त्यौहारी प्रथाओ के माथ बडी विनाश-लीला की है। उसने जीवन की इन सज्जाओ एव अलकरणो से प्राप्त तीव्र मर्मस्पर्शिताओ और स्फूर्तिप्रद सहायताओ से हमे वचित कर दिया हे, तथा समाज को अधिक चिकनी-चमकीली, किन्तु निश्चय ही कम स्वाभाविक सतह के रूप मे वदल दिया है। क्रिसमस के बहुत से खेल तथा उत्सव विल्कुल ही लुप्त हो गए है, और पुराने फाल्सटाफ के मद्यभाण्डार की भाति भाष्यकारो के बीच कल्पना एव विवाद के विषय बन गए है। वे प्रेरणा एव सबलता के उस युग मे प्रचलित थे जब मनुष्य जीवन का उपभोग अनगढ किन्तु हार्दिक एव स्फूर्तिप्रद रूप मे करता था—वह उत्तेजनाप्रधान एव चित्रात्मक युग जिसने काव्य को उसकी अत्यन्त समृद्ध सामग्री का दान किया है तथा नाटक को अत्यन्त आकर्षक चरित्र एव विषय प्रदान किए है। ससार आज अधिक सासारिक हो गया है। अब व्यसनशीलता, लम्पटता अधिक है, सुखोपभोग कम है। सुख एक ज्यादा चौडी किन्तु ज्यादा छिछली धारा मे फैल गया है और उसने उन बहुतेरे गहरे एव शान्त स्रोतो को भुला दिया है जहा वह पारिवारिक जीवन के शान्त हृदय के बीच मधुरतापूर्वक बहा करता था। समाज ने ज्यादा सभ्य एव शिष्ट रूप ग्रहण कर लिया है किन्तु उसने अपनी कितनी ही सुदृढ स्थानीय विशेषताए, गृहपालित भावनाए तथा अग्निकुण्ड के इर्द-गिर्द बैठकर मनाए जाने वाले सच्चे प्रमोद खो भी दिये है। स्वर्णिम अतीत की पारम्परिक प्रथाए, सामती आतिथ्यशीलताए, शानदार रगरेलिया, उन नवाबी महलो एव जमीदारो के कोटो के साथ ही समाप्त हो गई है जिनमे वे हुआ करती थी। वे छायापन्न हाल, महत् बलूती गैलरी तथा यवनिकावृत्त कक्ष मे ही अच्छी लगती थी, वे आधुनिक कोठियो के हलके, दिखाऊ सैलूनो और नुमाइशी बैठकखानो के योग्य नही है।

परन्तु अपने पुरातन उत्फुल्ल सम्मान से वचित हो जाने पर भी इग्लैण्ड मे आज भी क्रिसमस सुखावह चहल-पहल की अवधि के रूप मे बना हुआ है। उस गृह-भावना को पूर्णत जागृत देखकर बडा सन्तोष होता है जो प्रत्येक आग्लहृदय मे प्रधान स्थान रखती है। हर तरफ उन सामाजिक भोजो की तैयारिया, जो

मित्रो एव सजातियो को फिर से सयुक्त कर देते है, सुन्दर खुशी भरे उपहारो का आदान-प्रदान, सम्मान तथा मृदुल भावनाओ को तीव्र करने वाले ये प्रतीक, मकानो एव चर्चो मे सजी हरियालिया जो शान्ति एव आह्लाद के चिह्न है। ये सब मिलकर प्रेमल स्मृतियो को उत्पन्न करने और मृदुल सहानुभूतियो को जगाने मे वडा अनुकूल प्रभाव डालती है। यहा तक कि घुमक्कड़ गायक-दल की ताने भी, भले उनका गायन कर्कश हो, शिशिर की मध्य निशा मे पूर्ण स्वरैक्य के साथ सुनाई पडती है। उस नीरव एव गम्भीर घडी मे, 'जब मानव गहरी नीद मे डूबा होता है' मै उनके कारण जाग उठा हू और उन्हे मौन आनन्द के साथ सुना है। मैंने उस पवित्र एव प्रसन्न अवसर से उनको सम्बद्ध करते हुए कल्पना कर ली है कि वे मानो कोई दूसरी स्वर्गिक गायक-मण्डली के रूप मे मानवजाति के लिए शान्ति एव सद्भावना की घोषणा कर रहे है।

जब कल्पना इन नैतिक प्रभावो से प्रदीप्त हो उठती है तो वह प्रत्येक पदार्थ को सगीत एव सौन्दर्य मे बदल देती है। यहा तक कि देहात की गहन विश्रान्ति मे सुनाई पडनेवाला काक का काव-काव भी, 'रात्रिकालीन प्रहरियो को पखयुक्त वृद्धाओ के आगमन' का सन्देश देता है और सामान्य जन से कहता है कि पवित्र त्यौहार आ गया है।

सुख के इस सर्वनिष्ठ आवाहन मे, प्रेरणाओ के इस कोलाहल मे, अनुरागो के इस प्रवाह मे, जो इस समय चतुर्दिक् फैल जाते है, वह कौन पुरुष है जिसका हृदय भावनारहित रह सकता है? निश्चय ही यह ऋतु ही पुनर्भूत भावो की ऋतु है यह ऋतु हॉल मे आतिथ्य-सत्कार की अग्नि जलाने की ऋतु नही है वरन् हृदय मे भी उदारता की प्रेमल ज्योति जला लेने की ऋतु है।

वर्षो के अनुत्पादक अपव्यय को लाघकर स्मृति पट पर प्रारम्भिक प्रेम के दृश्य पुन उभर आते है, और गृहवासी आनन्दो की सुगन्ध से सुवासित गृह-भावना लडखाती, गिरती हुई प्रेरणा को पुन जीवन से उसी प्रकार भर देती है जैसे मरुस्थल मे चलने वाले श्रान्त पथिक को दक्षिण पवन सुदूरस्थ खेतो की ताजगी से मण्डित कर देता है।

मैं इस देश मे एक अजनबी और मुसाफिर हू और यद्यपि मेरे लिए कोई सामाजिक अग्नि-कुण्ड नही जलेगा, कोई आतिथ्यशील गृह अपने द्वार नही खोलेगा, न मैत्री का तप्त आलिगन मेरा अपनी देहरी पर स्वागत ही करेगा,

फिर भी मैं इस ऋतु के, इस त्यौहार के प्रभाव को, अपने चतुर्दिक् के मानवो की सुखी दृष्टि के कारण, अपनी आत्मा मे हसते हुए पाता हू। निश्चय ही सुख भी, आकाश के प्रकाश की भाति, प्रतिविम्वात्मक है और मुस्कानो से प्रदीप्त तथा निर्दोष आनन्द से प्रकाशित प्रत्येक चेहरा एक ऐसा दर्पण है जो सर्वोच्च एव नित्यप्रकाशित दया की किरणे दूसरे के पास फेकता है। जो अपने साथी मानवो की प्रफुल्लता को देखने की जगह कजूसी के साथ उससे हट जाता है और जब उसके चतुर्दिक् सब कुछ आनन्दपूर्ण हो रहा हो तब एकान्त मे बैठकर दुख और विषाद मे समय बिता देता है, उसे भले ही तीव्र उत्तेजना एव स्वार्थपूरित दृप्ति के क्षण प्राप्त हो किन्तु वह भी उन प्रिय एव सामाजिक सहानुभूतियो की कामना करता है जिनके कारण क्रिसमस का आकर्षण है।

घोड़े की डाकगाड़ी

पूर्व लेख मे मैने इग्लैण्ड के क्रिममसकालिक उत्सवो के विषय मे कुछ सामान्य विचार प्रकट किए है, अब मै क्रिसमस की कुछ झाकिया, जो देहात मे विताये एक क्रिसमस की है, प्रस्तुत करता हू। परन्तु मैं अपने पाठको से विनय करना चाहूगा कि वे बुद्धिमता का चोगा थोडी देर के लिए हटा दे और अपने को उस सच्ची औत्सविक भावना से भर ले जो गलतियो के प्रति सहनशील और केवल मनोरजन के लिए उत्सुक रहती है ।

जब मैं यार्कशायर मे दिसम्बर—प्रवास पर था तो क्रिसमस के एक दिन पूर्व लम्बी दूरी मैंने घोडे की एक सार्वजनिक डाकगाडी मे तय की। गाडी बाहर-भीतर मुसाफिरो से खूब भरी थी। इन मुसाफिरो की बातचीत से मालूम हुआ कि वे अपने मित्रो या सम्बन्धियो के घरो को, क्रिसमस भोज के लिए जा रहे थे। गाडी खेल-कूद के सामानो तथा मिठाइयो एव स्वादिष्ठ व्यजनो की टोक-रियो से भरी हुई थी, कोचवान के आसन के पास अपने लम्बे कान खडे किए खरगोश लटक रहे थे जो दूर के मित्रो द्वारा, होनेवाले प्रीतिभोज के लिए भेजे गए थे। अन्दर सहयात्री के रूप मे मुझे तीन गुलाबी गालोवाले लडके मिले थे, वे उस तगडे स्वास्थ्य एव पौरुष-भावना से पूर्ण थे जिन्हे मैंने इस देश के बच्चो मे आमतौर पर देखा है। वे बडे ही आह्लाद मे इन छुट्टियो के लिए घर लौट रहे थे और इस आशा से भरे हुए थे कि उन्हे मनोरजन की एक पूरी दुनिया ही मिल जाएगी। ये प्यारे बच्चे जो विशाल योजनाए बना रहे थे और अपने छ सप्ताह के किताबो, बेत एव बालशिक्षक की गर्हित दासता से मुक्ति के इस अव-काश मे जो अशक्य चमत्कार वे दिखलाना चाहते थे उनको सुनकर बडी खुशी होती थी। परिवार एव गृहस्थी के प्राणियो, यहा तक कि बिल्ली और कुत्ते तक, से भेट होने की आशा, और जिन उपहारो से उनकी जेबे भरी थी उन्हे अपनी छोटी बहिनो को देने के आनन्द से वे भरे हुए थे, किन्तु जिससे भेट करने के

लिए वे सबसे अधिक अधीरता के साथ प्रतीक्षा कर रहे थे वह था बैण्टम, जो एक टट्टू था। उनकी बातचीत से मालूम हुआ कि बूमेफेलस के युग से उस समय तक हुए सब घोडो मे वह सिरमौर था। कैसी दुलकिया लगाता है! कैसा दौडता है! किस तरह छलागे मारता है! सारे देश मे कोई ऐसी बाड नही जिसे वह लाघ न सकता होगा।

वे विशेप रूप से कोचवान की अभिभावकता मे थे और जब भी मौका मिलता उससे ढेर सवाल करते थे। उनका कहना था कि वह दुनिया के सर्वोत्तम मनुष्यो मे से एक है। मै भी कोचवान की व्यस्तता की अगभगी और महत्त्व को देख रहा था। वह सिर के कुछ एक ओर हटकर टोप लगाए था, उसके कोट के काज मे क्रिसमस हरीतिमा का एक गुच्छा लगा हुआ था। यह सदा ही बहुत ज्यादा चिन्ता और व्यस्तता रखनेवाला व्यक्ति होता है। फिर इस ऋतु मे तो वह विशेप रूप से ऐसा हो जाता है, क्योकि उपहारो के अत्यधिक विनिमय के कारण उसका काम बहुत बढ जाता है। यहा यदि मैं कर्मचारियो के इस बहुसख्यक एव महत्त्वपूर्ण वर्ग के सामान्य प्रतिनिधित्व के रूप मे एक शब्दचित्र दे दू तो कदाचित् वह मेरे उन पाठको को अग्राह्य नही होगा जिन्होने भ्रमण नही किया है। इस वर्ग का एक परिधान, एक भापा, एक ढग होता है जो उनकी अपनी विचित्रता है। ये चीजे पूरी बिरादरी मे प्रचलित होती है, इसलिए जहा भी एक आग्ल कोचवान दिखाई देगा कोई उसे दूसरे पेशे या भेद का समझने की भूल नही करेगा।

आमतौर से उसका चेहरा लम्बा और भरा होता है, उसपर विचित्र लाल आभा होती है मानो चमडी की प्रत्येक शिरा मे रक्त उछाल दिया गया हो, बार-बार के मद्यपान एव माल्ट-मदिराओ के कारण वह विनोदपूर्ण मोटाई मे फूल गया है और बहुसख्यक कोटो ने उसके इस आयाम मे और भी वृद्धि कर दी है। इन कोटो मे वह पातगोभी की तरह छिप गया है। ऊपरी कोट तो उसकी एडियो तक पहुंचता है। वह चौडे कगार और नीचे चदवेवाला हैट पहिने है, रगीन रूमाल की भारी पट्टी उसके गले मे बधी है जिसमे जानबूझकर सीने के पास गाठ दी गई है और वही उसे खोस भी दिया गया है। ग्रीष्म-ऋतु मे वह अपने काज मे एक बडा पुष्पगुच्छ लगाता है जो शायद किसी मुग्ध ग्राम्य-सुन्दरी द्वारा उपहार मे मिला होगा। उसका वेस्टकोट आमतौर से चमकीले रग का होता है

जिसपर धारिया पडी होती है, घुटन्ना या नेकर घुटने से बहुत नीचा होता है जो उसके पैरो की आधी दूरी पर उसके जौकी बूटो से मिल जाता है ।

इस सारी पोशाक का रख-रखाव बडी चुस्ती के साथ किया जाता है, उसे अपने वस्त्र उत्तम सामग्री से बनवाने का गर्व होता है, और ऊपर से स्थूल एव भद्दा दीखते हुए भी उसमे शरीर की वह स्वच्छता तथा समीचीनता है, जो प्राय अग्रेज मे स्वभावसिद्ध होती है । सम्पूर्ण मार्ग पर उसे महत्त्व एव सम्मान प्राप्त है, ग्रामीण गृहिणियो के साथ उसका अक्सर सलाह-मशविरा चलता है और वे उस पर बहुत विश्वास और अवलम्ब रखती है । प्रत्येक मृगनयनी ग्राम-सुन्दरी से उसकी गाढी छनती है । ज्यो ही वह स्टेशन पर पहुचता है, जहा घोडे बदले जाते हैं, वह लटक के साथ रास एक ओर रख देता है और जानवर साईस के हाथ सौप देता है, उसका काम बस एक स्टेशन से दूसरे स्टेशन तक गाडी पहुचा देना भर है । गाडी के अपने स्थान से उतरते ही उसके हाथ उसके वृहद् कोट की जेबो मे चले जाते है और वह सराय के आगन मे निरकुश शासक की अदा से विचरण करता है । यहा साईसो, तबेलचियो, जूते पर पालिश करने-वालो तथा उन उपजीवियो की प्रशसक भीड उसे घेर लेती है जो सरायो एव मदिरालयो मे प्राय पाये जाते है और वहा के भोजनालय मे डटकर भोजन करने और एकाध चुक्कड पा जाने के बदले हर तरह का सन्देश पहुचाने या काम करने के लिए सदा तैयार रहते है । ये सब उसकी ओर उसी तरह देखते है जैसे लोग किसी आप्तपुरुष या भविष्यवक्ता की ओर देखते है, वे उसकी उक्तियो को सजोकर रखते है, घोडो तथा अन्य सम्बद्ध बातो पर उसकी 'हा' मे 'हा' मिलाते है, और सबके ऊपर उसकी मुद्रा एव अगभगी की नकल करने की चेष्टा करते है । हर एक फटीचर, जिसकी पीठ पर कोई कोट होता है अपने हाथ जेबो मे डाल लेता है, उसी के ढग पर चलता है, वैसी ही वर्गभाषा बोलता है—मतलब कोचवान के भ्रूण का रूप ले लेता है ।

शायद मेरे अन्दर जो खुशी और शान्ति छा रही थी, उसी के कारण मुझे सम्पूर्ण यात्रा मे हर आदमी के चेहरे पर प्रफुल्लता दिखाई पडी हो । फिर भी यह तो है ही कि घोडागाडी अपने साथ सजीवता लिये चलती है और जब वह आगे बढती जाती है तो मानो सारे ससार को गतिशील कर देती है । किसी गाव मे प्रवेश करने पर उससे जो भोपू बजता है उसके कारण एक हडबडी मच

जाती है । कुछ मित्रो से मिलने दौड पडते है , कुछ बडल और बक्स लिए स्थान पाने को उतावले हो उठते है और जल्दी मे अपने साथ के आदमियो से विदा मागना भी उनके लिए मुश्किल हो जाता है । इस बीच कोचवान को छोटे-मोटे कितने ही काम कर लेने है—कभी कोई खरगोश या चकोर किसी को पहुचाना है , कभी किसी सार्वजनिक गृह मे कोई छोटा पार्सल या अखबार देना है , कभी जानेबूझे कटाक्ष एव गूढ अर्थवाले शब्दो के साथ, वह कुछ लजाई, कुछ हसती गृहपरिचारिका के हाथ मे किसी ग्रामीण प्रेमी की विचित्र-सी दीख पडने वाली प्यार की पाती पकडा देता है । जब गाडी गाव के बीच से गुजरती है, हर आदमी खिडकी पर दौड जाता है और आपको हर तरफ ताजे ग्रामीण चेहरे और ठहाका मारकर हसती तरुण लडकियो की झाकी मिलती है । मोडो पर गाव के बेकारो एव बुद्धिमानो के झुण्ड खडे दिखाई पडते है जो सिर्फ गाडी मे बैठी मण्डली को गुजरते देखने के महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए वहा एकत्र होते है । किन्तु सबसे मजेदार दृश्य तो लोहार के यहा दिखाई पडता हैं जिसके लिए गाडी का गुजरना बडी कल्पनापूर्ण घटना होती है । लोहार अपनी गोद मे घोडे की नाल रखे थोडी देर के लिए रुक जाता है , निहाई के पास बैठा काना आदमी अपना हथौडा ऊपर ही उठाये रह जाता है और भूल जाता है कि तप्तलोहा ठण्डा होता जा रहा है । कागज की भूरी टोपी पहिने भाथी पर बैठा कालाभूत मूठ पर थोडी देर के लिए झुक पडता है और श्वासरोगी एजिन को एक लम्बा नि श्वास लेने का मौका देता है तथा खुद तमोमय धुए एव लोहारशाला की सल्फरी ज्योति के बीच उस ओर ताक लेता है ।

शायद आगामी छुट्टियो एव त्यौहार के कारण देहात मे असामान्य सजीवता आ गई है क्योकि मुझे हर आदमी प्रसन्ननयन और प्रसन्नभावी जान पडता है । आमिष, मुर्ग इत्यादि भोजन की विलासिताए गावो मे घर-घर दिखाई पडती है । पसारियो, कसाइयो और फलविक्रेताओ के यहा ग्राहको की भीड है । गृहिणिया काम-काज मे लगी है और अपने घर सजा रही है तथा खिडकियो मे चमकीली लाल बेरी के गुच्छे लटकाये जा रहे है । यह सब दृश्य देखकर क्रिसमस की तैयारियो के विषय मे एक पुराने लेखक का वर्णन याद आ जाता है : "बधिया मुर्गे, मुर्गी, टर्की, कलहस, बतख गोमास एव भेडमास होते हुए भी सबको मरना ही होगा, क्योकि बारह दिनो मे विस्तृत मानव-समूहो को खूब

खिलाना-पिलाना होगा । अव वेर और मसाले, चीनी और शहद, समोसे और शोरबे सबकी जरूरत पडेगी । सगीत अब नही तो फिर कभी लय न होगा, क्योकि जब बूढे लोक अग्नि के इर्दगिर्द बैठकर गर्मी लेगे तब युवको को अपने को गर्म रखने के लिए नाचना-गाना पडेगा । ग्राम-कुमारिया आधा ही बाजार कर पाई है और यदि वे क्रिसमस की पूर्व सध्या को ताश की गड्डी लाना भूल गई है तो उन्हे फिर बाजार जाना पडेगा । शूलपर्णी एव सिरपेचे की टहनियो की बडी माग है और मालिक हो या मालकिन सभी विरजिस पहिने हुए है । ताश और चौसर मे खानसामा खूब लाभ उठाता है और यदि रसोइये मे हाजिरजवाबी की कमी न हो तो वह मृदुलतापूर्वक अपनी उगलिया चाट लेगा ।"

इस विलासी ध्यानमग्नता से मै अपने नन्हे सहयात्रियो का शोर सुनकर जग पडा । वे कई मील पहले से गाडी की खिडकियो के बाहर देख रहे थे और ज्यो-ज्यो घर नजदीक आता जा रहा था प्रत्येक वृक्ष और झोपडी को पहिचान रहे थे । और अब तो उनका आनन्द फट पडा । 'वह रहा जान ! और वह रहा बूढा कार्लो ! और वह है बैण्टम" अपनी तालिया बजाते हुए शैतान बच्चो ने कहा ।

वीथी के सिर पर एक बूढा गम्भीर-सा दीखनेवाला सेवक वर्दी मे खडा था । वह उनकी प्रतीक्षा कर रहा था । उसके साथ एक बूढा कुत्ता और वही दुर्धर्ष बैण्टम था--घोडो मे चूहे--जैसा, झबरे अयाल और लम्बी मुर्चही पूछ वाला, जो सडक के किनारे खडा चुपचाप झपकिया ले रहा था । बेचारे को उस कोलाहलपूर्ण अवसर की क्या कल्पना थी जो उसकी प्रतीक्षा कर रहा था ।

जिस ललक के साथ नन्हे बच्चे बूढे कोचवान पर लपके है और जैसे प्यार से उन्होंने कुत्ते को, जिसका सारा शरीर आनन्द से हिल रहा था, चिपटा लिया है उसे देखकर मुझे बडी खुशी हुई । किन्तु सबसे ज्यादा दिलचस्पी की चीज़ तो बैण्टम था । सब तुरन्त ही उसपर सवारी करना चाहते थे और कुछ कठिनाई से जान ने यह व्यवस्था की कि वे बारी-बारी से उसपर चढे और सबसे बडा पहले सवारी करे ।

अन्त मे वे चले गए , एक तो घोडे पर बैठ गया , कुत्ता आगे-आगे कूदता उछलता चला , दूसरो ने जान का हाथ पकडा और घर के बारे मे सवाल

पूछ-पूछकर तथा स्कूल की बाते सुना-सुनाकर उसे परेशान कर दिया। मैं उनकी ओर कुछ ऐसी भावना से देख रहा था जिसके बारे मे मैं नही जानता कि उसमे आनन्द या विषाद किसका प्राधान्य था। मुझे उन दिनो की याद आ गई जब मै उन्ही की तरह नही जानता था कि चिन्ता और शोक क्या चीज है और जब मेरे लिए भी अवकाश पार्थिव उत्सव की चूडा के समान थे। कुछ मिनट बाद ही हम घोडे को पानी पिलाने के लिए रुके और जब आगे चले तो सडक के मोड पर घूमते ही एक साफ-सुथरे ग्रामीण आवास पर हमारी नजर पडी। मैने पहिचाना कि एक महिला और दो किशोरी लडकिया पोर्टिको मे खडी है और मेरे वे किशोर सहयात्री, बैण्टम, कार्लो और बूढे जान के साथ, गाडी-वाली सडक से उधर चले जा रहे है। मैने गाडी की खिडकी से बाहर झुककर सुखद मिलन का दृश्य देखने की चेष्टा की किन्तु वृक्षो का एक झुरमुट बीच मे आ जाने के कारण वह मेरी आखो से ओझल हो गया।

शाम को हम एक गाव मे पहुचे जहा रात विताने का निश्चय मैने किया था। जब घोडागाडी सराय के बडे फाटक से अन्दर घुसी तभी मैने एक खिडकी से तेजी के साथ भोजनालय की जलती आग देख ली। मैं अन्दर गया और सौवी बार मैने आग्ल सराय की भोजनशाला द्वारा प्राप्त सुविधा, स्वच्छता तथा उदार सच्चे आराम को सराहा। भोजनशाला काफी वडी थी, ताम्र एव टीन के पात्र पालिश से चमक रहे थे और जहा-तहा क्रिसमस की हरीतिमाए सजाई हुई दिखाई पडती थी। तरह-तरह के मास-खण्ड छत से लटके हुए थे, चूल्हे पर पडा तवा बराबर खनखना रहा था। एक तरफ लगी घडी टिक-टिक कर रही थी। कुछ दूरी पर एक टेवुल लगा था जिसपर गोमास तथा अन्य स्वादिष्ठ खाद्य पदार्थ रखे हुए थे और जौ की शराब की दो फेनिल सुराहिया मानो अन्य वस्तुओ पर पहरा दे रही थी। निम्न श्रेणी के यात्री इस भोजन पर धावा बोलने की तैयारी कर रहे थे जब दूसरे लोग आग के पास बैठे अपनी मदिरा का मजा लेते हुए परस्पर गप-शप कर रहे थे। एक नवीना व्यस्त मालकिन के आदेशानुसार काम करती चुस्त परिचारिकाए यहा-वहा दौडती दिखाई पडती थी, वे बीच-बीच मे आग के पास बैठे लोगो से हसी-मजाक की एकाध बात भी कर लेती और ठहाका मारकर हस भी लेती थी। मध्य शिशिर के आराम की दीन रोबिन ने जो कल्पना की थी, वह इस दृश्य मे पूरी हो जाती थी—

Now trees their leafy hats do bear
TO reverence Winter's silver hair ,
A handsome hostess, merry host
A pot of ale now and a toast,
Tobacco and a good coal-fire,
Are things this season doth require[1]

(स्वतन्त्र पद्यानुवाद)

अब द्रुमदल अपने सिर पर करते पत्तो की टोपी धारण।
वे करते है, शिशिर-रजत-केशो का मानो अब अभिवदन।
सुन्दर आतिथेय रमणी हो, हसी-खुशी-मुसकानो वाली।
यव-मदिरा से पात्र भरा हो, भरी हुई भोजन से थाली।
तम्बाकू तैयार धरी हो, दहक रहे कोयलो की ज्वाला।
इस ऋतु मे बस यही चाहिए, भोजन, आग और मधुशाला।

मुझे सराय मे आये ज्यादा देर नही हुई थी कि एक डाकगाडी दरवाजे पर आकर खडी हो गई। एक तरुण व्यक्ति उससे बाहर आया और लैप के प्रकाश मे मेरी निगाह जो उसपर पडी तो मुझे लगा कि चेहरा कुछ पहिचाना-सा है। निकट से देखने के लिए मैं कुछ आगे बढ गया। उसकी आखे मेरी आखो से मिली। मैं गलती पर नही था, वह फ्रैक ब्रेसब्रिज था, एक प्रसन्नवदन, खुश-दिल व्यक्ति, जिसके साथ एक बार मै यूरोप का प्रवास कर चुका था। हम बडे प्रेम से मिले, क्योकि किसी पुराने सहयात्री का दर्शन होते ही हजारो सुखकर दृश्यो, कठोर दुस्साहसिकताओ तथा सुन्दर परिहासो की याद आ जाती है। सराय की एक अल्पकालिक भेट मे उन सब पर बातचीत करना असम्भव था, और यह जानने के बाद कि मुझे समय का अभाव नही है और मै केवल पर्यवेक्षण-निरीक्षण के विचार से इधर घूम रहा हू, उन्होने जोर दिया कि मै एक-दो दिन उनके पिता के ग्रामनिवास पर ठहरना मजूर करू। वे वही अपनी छुट्टिया बिताने और त्यौहार मनाने जा रहे थे और वह स्थान चन्द मीलो की दूरी पर

---

१. पुवर राबिस अलमानक, १६८४

ही था। उन्होने कहा "किसी सराय मे अकेले क्रिसमस-भोज ग्रहण करने से यह अच्छा ही होगा, और वहा आपको पुराने ढग का हार्दिक स्वागत प्राप्त होगा।" उनका तर्क सगत था और मै यह भी स्वीकार करूगा कि मैने सार्व-भौम उत्सव के लिए चतुर्दिक् जो तैयारिया होती देखी थी उनके कारण मै अपने अकेलेपन से घबरा उठा था। इसलिए मैने तुरन्त ही उनका निमत्रण स्वीकार कर लिया, डाकगाडी दरवाजे पर आई और कुछ ही मिनटो मे हम ब्रेसब्रिजो के पारिवारिक निकाय की ओर रवाना हो गए।

क्रिसमस की पूर्वसन्ध्या

Saint Francis and Saint Benedight
Blesse this house from wicked wight ,
From the night-mare and the goblin,
That is hight good fellow Robin ,
Keep it from all evil spirits,
Fairies, weezels, rats, and ferrets
From curfew time
To the next Prime

—Cartwright

फ्रासिस और बेनेडिक्ट संतो, दुष्ट प्राणियो से सरक्षण,
इस कुटुम्ब का त्राण करो, दुःस्वप्नो, भूतो से तुम निशिदिन,
अच्छे ऊचे प्रिय राबिन का सब दूषित प्रेतात्माओ से
परियो, डाकिनियो, चूहो से रक्षा करो कुटिल भावो से ।
प्रतिबधित रजनी से ले चल
अगले उष.काल तक मंगल ।

वह बडी चटक चादनी रात थी, किन्तु बेहद ठण्डी । हमारी डाकगाडी निरन्तर तुषाराच्छादितध रती पर तीव्र गति से बढती चली जा रही थी , कोचवान बराबर अपना चाबुक फटकार रहा था, और कुछ समय के लिए उसके घोडे चौकडी भर रहे थे । मेरे साथी ने कहा—वह जानता है कि कहा जा रहा है इसलिए उत्सुक है कि समय पर पहुच जाए जिससे नौकरो के कक्ष की हसी-खुशी मौज-मजे मे शामिल हो सके । तुम तो जानते ही हो कि मेरे पिता पुरानी परम्परा के कट्टर भक्त है, और पुरातन आग्ल आतिथ्य-सत्कार का कुछ न कुछ

पालन करने मे गर्व का अनुभव करते है । जो पुराना आग्ल भद्रजन आज अपने विशुद्ध रूप मे मुश्किल से ही दिखाई पडता है, वह उसका उदाहरण है । हमारे धनवान् लोग अपना इतना अधिक समय शहर मे व्यतीत करते हं और देश मे फैशन इतना ज्यादा फैलता जा रहा है कि प्राचीन ग्राम्य-जीवन की सुदृढ एव समृद्ध विशेपताए नये रग मे मिटती जा रही हैं । परन्तु मेरे पिता ने, बहुत पहिले से ही चैस्टरफील्ड की जगह सच्चे पीचम[1] को अपना पाठ्यग्रथ बनाया, उन्होने अपने मन मे निश्चय कर लिया कि किसी ग्राम्य भद्रजन के लिए अपनी पैतृक जमी--दारी पर प्राप्त स्थिति से अधिक सम्मानजनक और ईर्ष्या योग्य दूसरी बात नही हो सकती । इसलिए वे अपना सारा समय अपनी जमीदारी पर ही व्यतीत करते है । वे पुरातन ग्रामीण खेलो एव उत्सवो के पुनरुद्धार के अध्यवसायी अधि-वक्ता है और इस विषय का विवेचन करनेवाली प्राचीन एव आधुनिक रचनाओ का उन्होने अच्छा अध्ययन किया है । बल्कि उनके प्रिय लेखक दो सौ वर्ष पुराने है , उनका दृढ मत है कि वे अपने उत्तराधिकारियो की अपेक्षा सच्चे अग्रेज की भाति अधिक लिखते और सोचते थे । कभी-कभी तो वे इस बात पर दु ख भी प्रकट करते है कि क्यो वह सदियो पहले नही पैदा हुए जब इग्लैड अपने स्वरूप मे था, और उसकी विशिष्ट परम्पराए एव प्रथाए जीवित थी । चूकि वे मुख्य सडक से कुछ दूर हटकर, देश के एकान्त भाग मे रहते है, और कोई प्रतिद्वन्द्वी भद्रजन उनके आस-पास नही है, उनको अग्रेज के लिए सबसे ईर्ष्याजनक वह वरदान प्राप्त है कि वह अविकृत रूप से अपनी ही प्रवृत्ति का अनुगमन कर पाते है । उस हिस्से मे सबसे प्राचीन परिवार का प्रतिनिधि होने के कारण तथा इस-लिए भी कि अधिकाश कृषक उनके आसामी है, उनका बडा सम्मान है और वे सामान्यत "बाबू साहब (दि स्क्वायर) के नाम से मशहूर है । यह उपाधि स्मरणातीत काल से परिवार के प्रधान के साथ लगती आई है । मैं आपको ये बातें इसलिए बता रहा हू कि यदि उनकी कोई सनक वाहियात मालूम पडे तो आप उसे ठीक तरह से समझ सके ।"

कुछ समय से हम लोग एक बाग की दीवार के साथ-साथ चल रहे थे, और अन्त मे गाडी फाटक पर जा खडी हुई । वह बडा भारी, शानदार और पुरातन

---

१ **पीचम्स कम्पलीट जेण्टिलमैन, १६२२**

प्रणाली का बना हुआ था , लोहे के बडे-बडे छड लगे हुए थे और ऊपर की ओर फूल तथा अन्य अलकरण बने हुए थे। जिन विशाल वर्गाकार खम्भो मे वे लगे थे उनपर कुलचिह्न बने हुए थे। पास ही द्वारपाल की कुटिया थी जो काले फर-वृक्षो तले, निकुजो से ढकी हुई-सी थी।

कोचवान ने द्वारपाल के बडे घण्टे को बजाया , वह उस नीरव हिम-शीत वातावरण मे गूज उठा जिसके उत्तर मे दूर पर उन कुत्तो ने भोकना शुरू कर दिया, जो उस भवन की चौकसी करते थे। तुरन्त ही एक बुढिया फाटक पर आई। जब तेज चादनी उस पर पडी, तो मैंने उस छोटी आदिकालिक वृद्धा का पूरी तरह दर्शन किया। वह पुरानी शैली के वस्त्र पहिने थी, और उसके रजत केश हिमोज्ज्वल टोपी के नीचे से झाक रहे थे। वह अपने किशोर स्वामी को देखकर सरल आनन्द से भर गई थी और शिष्टाचार प्रदर्शित करती हुई चली आ रही थी। जान पडता था कि उसका पति परिचारक कक्ष मे क्रिसमसपूर्व सध्या मना रहा है , अन्य परिचारक उसके बिना रह न सकते थे क्योकि वह गाने और कहानी कहने मे घर मे एक ही था।

मेरे मित्र ने प्रस्ताव किया कि हमे उतरकर पार्क मे होते हुए हॉल तक चलना चाहिए, जो ज्यादा दूर नही है और गाडी को हमारे पीछे-पीछे आने देना चाहिए। हमारी सडक द्रुमाच्छादित वीथियो से होती हुई जाती थी , पत्तो एव डालियो के बीच से छनकर चादनी आती थी और कभी-कभी निर्मेघ गगन के गहन तोरणो मे लुढकता हुआ चाद दिखाई पड जाता था। उसके पार फैले लान (दूर्वा-भूमि-खण्ड) पर बर्फ की एक हलकी चादर जम गई थी, और उसमे जहा-तहा जमे बर्फ के ढेले चादनी मे चमक रहे थे। कुछ दूर पर निचली भूमि से पतली पारदर्शक भाफ ऊपर उठ रही थी और धीरे-धीरे सारा भूदृश्य उसमे डूबा जा रहा था।

मेरा साथी आत्मविभोर होकर अपने चतुर्दिक् देख रहा था। उसने कहा—"स्कूल की छुट्टियो मे न जाने कितनी बार घर आते समय मे इस वीथिका से गुजरा हूगा। जब छोटा था तो इन पेडो के नीचे कितनी बार खेल खेले होगे! मैं इनकी ओर उसी पितृप्रेम से देखता हू जिसके साथ हम उन लोगो की ओर देखते है जिन्होने बचपन मे हमे प्यार किया है, हमारा पोषण किया है। हमारे पिता हमारी छुट्टियो के विषय मे बहुत कठोर थे और पारिवारिक उत्सवो पर

सदा हमे अपने पास रखते थे । वे उसी सख्ती के साथ हमारे खेलो का निरीक्षण करते थे जिसके साथ कुछ अभिभावक अपने बच्चो के अध्ययन की देख-रेख रखते है । वह इस बात का ध्यान विशेष रूप से रखते थे कि हम पुराने अंग्रेजी खेलो को उनके मूल रूप मे ही खेले , इसके लिए पुरानी किताबो मे प्रमाण ढूढा करते थे, फिर भी मैं आपको विश्वास दिला सकता हू कि उनकी कट्टरता बडी आनन्ददायिनी थी । बूढे भले पिता की नीति यह थी कि बच्चे इसे अनुभव करे कि गृह ससार मे सबसे अधिक सुखपूर्ण स्थान है, और मै इस मधुर गृहभावना को किसी भी पिता द्वारा अपने बच्चो को दी हुई सर्वोत्तम भेट मानता हू ।"

विविध जाति और आकार (माग्रेल, पपी, ह्वेल्प, हाउण्ड इत्यादि) के कुत्तो ने लान के उस पार से खुले मुह दौडते आकर आगे बढने मे बाधा दी । वे द्वारपाल के घण्टे और गाडी की खडखडाहट से क्षुब्ध हो उठे थे ।

ब्रेसब्रिज ने हसते हुए चीखकर कहा—"अरे ! मुझपर भोकते हो !" उसकी आवाज़ सुनते ही उनका भौकना खुशी की गुर्राहट मे बदल गया और क्षणभर मे वह न केवल उनसे घिर गया बल्कि उन वफादार जानवरो के प्रेमल व्यवहार से वशीभूत-सा हो गया ।

अब पुरातन पारिवारिक भवन पूरी तरह दिखाई पडने लगा था । वह अशत गहरी छाया से आच्छादित था और अशत शीतल चादनी द्वारा प्रकाशित था । यह एक बडे आकार की अनियमित इमारत थी और विभिन्न युगो के स्थापत्य से पूर्ण लगती थी । एक हिस्सा तो बहुत पुराना जान पडता था । इसमे पत्थर के खम्भोवाली धनुषाकार खिडकिया थी । उनपर हरित लताए चढी हुई थी जिनके बीच से लघु हीरक के आकार के काच-पट चादनी मे चमक रहे थे । शेष भवन चार्ल्स द्वितीय के समय की फरासीसी शैली का था । मेरे मित्र ने बताया कि उसमे उस बादशाह के परिचित उसके एक पूर्वज ने सुधार एव परिवर्तन करवाया था । मकान के पास की भूमि पुरानी शैली से सजाई गई थी—उसमे कृत्रिम पुष्प-वीथिया, छटी-कटी झाडिया, ऊचे चबूतरे और पत्थर के भारी जगले थे, जो पुष्पपात्रो, सीसे की एक दो मूर्तियो एव फौवारो से अलकृत थे। मुझे बताया गया कि उसके पिता इस अप्रचलित अलकरण को उसके मूल रूप मे सुरक्षित रखने के प्रति बहुत सतर्क है । वे बागबानी के इस फैशन के प्रशसक है क्योकि उनके विचार से उसमे एक शान है, शिष्टता और रईसी बाँकपन है जो सुन्दर पुरातन

पारिवारिक शैली के अनुकूल पडता है। आधुनिक बागबानी मे प्रकृति की जो दम्भयुक्त अनुकृति है वह आधुनिक प्रजातत्री धारणाओ के साथ आई परन्तु वह बादशाही सरकार के अनुकूल नही पडती थी, उसमे 'सब धान बाईस पसेरी' वाली भावना की गध थी।

बागबानी मे राजनीति के इस मिश्रण पर मुझसे हसे बिना न रहा गया और मैने अपना भय प्रकट कर दिया कि उसके पिता अपने विश्वास मे बहुत असहिष्णु होगे। फ्रैंक ने मुझे विश्वास दिलाया कि यही एकमात्र उदाहरण है जब मैंने अपने पिता को राजनीति के फेर मे पडते देखा है। मेरा विश्वास है कि ये विचार उनके दिमाग मे पार्लियामेण्ट के एक सदस्य ने प्रविष्ट करा दिये, जो यहा आकर कुछ सप्ताह उनके साथ रहे थे।

मकान के निकट पहुचने पर हमे उसके एक सिरे से सगीत की ध्वनि आती सुनाई पडी, बीच-बीच मे अट्टहास भी सुनाई पड जाता था। ब्रेसब्रिज ने बताया कि यह ध्वनि निश्चय ही परिचारक-कक्ष मे आ रही है, जहा क्रिसमस के बारह दिनो मे हर तरह के धूमधडक्के की, मालिक न केवल इजाजत देते है बल्कि उसे प्रोत्साहित भी करते है बशर्ते सब कुछ प्राचीन प्रथा के अनुसार हो। वहा आँखमिचौनी, पागल घोडी की नालबन्दी, गर्म अगीठी, श्वेत रोटी की चोरी इत्यादि खेल होते है, मूल काष्ठखण्ड तथा क्रिसमिस शमाए नियमित रूप से जलाई जाती है, श्वेत बेरियो से युक्त झडबेरिया लगाई जाती है जिनके कारण सभी सुन्दर परिचारिकाए बडी मुसीबत मे रहती है।[1]

नौकर इन खेलो मे ऐसे मस्त थे कि हमे उन्हे बुलाने के लिये बार-बार घण्टी बजानी पडी। हमारे आगमन की सूचना मिलने पर, गृहस्वामी अपने अन्य दो पुत्रो-सहित हमे लेने के लिये बाहर आए। इन लडको मे एक तो सेना मे अफसर था और छुट्टी लेकर घर आया हुआ था, दूसरा आक्सफर्ड युनिवर्सिटी की शिक्षा पूरी करके हाल ही आया था। गृहस्वामी खूब स्वस्थ दिख रहे

---

१ अब भी खेत-घरो और भोजनालयो मे क्रिसमस मे झडबेरिया लगाई जाती है, और उसके नीचे आने वाली लड़कियो का चुम्बन लेने की छूट किशोरो के लिए होती है, वे हरबार झाडी से एक बेरी तोड़ लेते है। जब सब बेरियां खतम हो जाती है तब चुम्बन लेने की छूट भी समाप्त हो जाती है।

थे। उनके रजतकेश खुले रक्ताभ मुख के ऊपर घुघराले-से झूल रहे थे। उनकी मुखाकृति देखकर, कोई आकृति-विज्ञानी मेरी भाति एक दो सकेत पाकर, बता सकता था कि उसमे सनक और उदारता का अद्भुत सम्मिश्रण है।

पारिवारिक मिलन बडा ही भावपूर्ण और प्रेमल था। चूकि रात अधिक हो चुकी थी गृहस्वामी ने हमे अपने यात्रा के कपडो को बदलने का मौका नही दिया बल्कि तुरन्त हमे एक पुरातन प्रणाली के बडे हाल मे ले गए जहा मण्डली जुटी हुई थी। उसमे अनेकानेक पारिवारिक सम्बन्धो की विभिन्न शाखाओ के लोग एकत्र थे, उसमे वृद्ध काकाओ एव काकियो, सुखी विवाहिता गृहिणियो, बूढे अविवाहितो, किशोर ग्राम्य-बन्धुओ, अर्धयुवाओ तथा दीप्तनयना छात्रा-वासिनी चचल कुमारियो का स्वाभाविक अनुपात था। सब अपने-अपने काम मे लगे थे, कुछ ताश खेल रहे थे, कुछ अग्निकुण्ड के इर्द-गिर्द बैठे बातचीत कर रहे थे, हाल के एक सिरे पर कुछ बडे, कुछ अभी मुकुलित होते किशोरो का दल प्रफुल्लकारी किसी खेल मे व्यस्त था, लकडी के घोडो, तुरहियो, खडित गुड्डो के फर्श पर बिखरे होने से ज्ञात होता था कि नन्हे बच्चे सारा दिन आनन्द और खेल-कूद मे बिताने के बाद शान्त रात्रि मे सोने चले गए है।

जब तरुण ब्रेसब्रिज एव उसके नातेदारो के बीच दुआ-सलाम हो रहा था, मुझे उस कक्ष पर नजर डालने का अवसर मिल गया। मैने उसे हॉल कहकर पुकारा है और निश्चय ही, पुराने जमाने मे वह हॉल ही रहा भी होगा, गृह-स्वामी 'बाबूसाहब' ने उसे आदिकालिक रूप देने का पूर्ण प्रयत्न भी किया था। गहरे अग्निकुण्ड के ऊपर कवच एव अस्त्र पहिने एक योद्धा की तस्वीर थी, वह श्वेत अश्व के पास खडा था और सामने की दीवार पर उसके लौह शिर-स्त्राण, ढाल और बर्छे टगे हुए थे। एक सिरे पर दीवार मे बडे-बडे एक जोडी मृगश्रृग खुसे हुए थे, श्रृग शाखाओ से हैट, कोडे और अश्वताडिनिया रखने का काम लिया जाता था। कक्ष के कोनो मे शिकारी बन्दूके, मछली मारने की छडिया तथा अन्य खेल के औजार रखे थे। फर्नीचर पर पुराने युगो के अनुरूप भारी कारीगरी की गई थी, यद्यपि आधुनिक सुविधा की कुछ चीजे भी एकत्र कर दी गई थी तथा बलूती फर्श पर कालीन बिछा दी गई थी। सब मिलाकर उसमे बैठकखाने एव हॉल का विचित्र मिश्रण था।

बृहदाकार आतिशदान से झझरी हटा दी गई थी जिससे चैले जलाये जा

सके । इन थैलो के वीच एक बडा कुन्दा प्रज्वलित था और बहुत वडे परिमाण मे दीप्ति एव ताप फेक रहा था, तब मैंने समझा कि यही 'यूल क्लाग' है जिसे प्राचीन प्रथानुसार मगवाकर क्रिसमसपूर्व सध्या को जलाने का 'बाबू साहब' विशेष ध्यान रखते थे[1] ।

अपने पूर्वजो के आतिथ्यप्रिय अग्निपात्र के पास आनुवशिक आरामकुर्सी पर बाबूसाहब को बैठा तथा एक सौर मडल के सूर्य की भाति सब के हृदय तक स्फूर्ति एव प्रसन्नता का प्रकाश फेकते देखकर सचमुच खुशी होती थी । यहा तक कि जो कुत्ता उनके पाव के पास आराम से पडा होता था, वह भी जब अपनी

---

१ 'यूल क्लाग' लकडी का बडा-सा कुन्दा, कभी-कभी तो पेड का मूल-भाग ही होता है जिसे बड़े विधि-विधान के साथ क्रिसमसपूर्व सध्या को घर मे लाया जाता है और अग्नि-कुण्ड में डाल दिया जाता है । फिर उसे पिछले साल के 'क्लाग' के शेषाश के साथ जलाया जाता है। जब तक वह जलता है, मद्यपान होता है, गाने गाये जाते हैं, किस्से-कहानियां कही-सुनी जाती हैं। कभी-कभी उसके साथ क्रिसमस शमाए भी होती हैं, किन्तु झोपड़ो मे उस बडे प्रज्वलित कुन्दे की लाल आभा मात्र रहती है। 'यूल क्लाग' को सारी रात जलना चाहिए, यदि वह बुझ जाता है तो उसे दुर्भाग्य का चिह्न समझा जाता है। हेरिक ने अपने एक गान मे इसका जिक्र किया है—

कम, ब्रिग विद ए न्वाएज,
माई मेरी मेरी ब्वाएज,
दि क्रिसमस लाग टु दि फाइरिंग
ह्वाइल माई गुड डेम, शी
बिड्स यी आल बी फ्री
ऐण्ड ड्रिक टु योर हार्ट्स डिजायरिंग ।

अब भी इंग्लैण्ड के बहुत से खेतघरो एव भोजनागारो मे, विशेषत उत्तरांचल मे, 'यूल क्लाग' जलाया जाता है । इसके विषय मे कृषको मे बहुतेरे वहम प्रचलित हैं । यदि इसके प्रज्वलित रहते कोई ऐंचाताना या नग्नपाद व्यक्ति घर मे आता है तो उसे बड़ा अपशकुन माना जाता है । 'यूल क्लाग' का बचा अश अगले साल की क्रिसमस अग्नि जलाने के लिए सजोकर रख दिया जाता है ।

दिशा बदलता और जभाई लेता तो प्यार से अपने मालिक की ओर देख लेता, फर्श पर अपनी पूछ हिलाता और उनकी दयालुता तथा सरक्षण के विषय मे निश्चिन्त होकर पुन सोने के लिए फर्श पर लेट जाता था। जो हृदय सच्चे आतिथ्य से भरा होता है उससे कोई ऐसी चीज विकीर्ण होती रहती है कि जिसका वर्णन तो नही किया जा सकता किन्तु जिसका अनुभव होता है और जो अजनबी को तुरन्त निश्चिन्त कर देता है। उस वृद्ध वीर पुरुष के सुखकर अग्निकुण्ड के निकट बैठे हुए मुझे ज्यादा देर नही लगी होगी कि मै वहा उसी सहज भावना का अनुभव करने लगा मानो उसी परिवार का एक सदस्य रहा होऊ।

हमारे आने के कुछ ही देर बाद नैश भोजन की सूचना दी गई । भोजन एक बडे बलूती कमरे मे लगाया गया था। उसमे कई पारिवारिक चित्र शूलपर्णी एव सिरपेंचे की लताओ से सज्जित लगे हुए थे। रोज़ जलने वाले दीपको के अलावा, क्रिसमस शमाए नाम से पुकारे जाने वाले हरे गुच्छो से अलकृत दो बडे शमादान, पारिवारिक प्लेट के बीच रखे हुए थे। टेबुल पर नाना-प्रकार के भोज्य पदार्थ लगे हुए थे, किन्तु गृहस्वामी ने अपने लिए दूध तथा लौग, दालचीनी, शक्कर आदि मे पका हुआ गेहू का दलिया ही बनवाया था जो पुराने जमाने मे क्रिसमस पूर्वसध्या का मुख्य भोजन होता था।

मुझे यह देखकर बडा सुख हुआ कि भोज्यपदार्थों के बीच, मेरे पुराने मित्र कीमे का समोसे भी मौजूद है। फिर क्या था ! मै उन पर उसी जोश और प्यार के साथ टूट पडा जिसके साथ किसी बडे पुराने भद्र मित्र का स्वागत किया जाता है।

उस मण्डली मे सनकी-से दिखने वाले एक आदमी थे जिनके हसी-मज़ाक के कारण मण्डली की प्रफुल्लता बहुत बढ गई थी। श्री ब्रेसब्रिज उन्हे सदा मास्टर साइमन के विचित्र नाम से पुकारते थे। वे एक चुस्त नाटे आदमी थे और उनकी मुद्रा एक कुख्यात पुराने कुवारे की मुद्रा थी। उनकी नाक तोते के चोच-जैसी लगती थी, मुह पर चेचक के हल्के दाग थे और ऐसी शुष्क स्थायी आभा थी जैसी शिशिर मे तुषारमर्दित पत्ती की होती है। आखो मे बडी चचलता और उत्फुल्लता थी, साथ ही उनमे एक दुर्निवार ठिठोली एव भडैती का भाव भी था। निश्चय ही वे परिवार मे सबसे हाजिर-जवाब थे और खास तौर से औरतो से व्यग्यपूर्ण भद्दे मज़ाक मे माहिर थे। पुरानी बातो को लेकर ही हर्ष

का वातावरण पैदा कर देते थे। हा, उस परिवार की गाथाओ से अपरिचित होने के कारण मैं उनकी विनोद-वृत्ति का मजा नही ले पाता था। सामने बैठी उसकी मा की निन्दात्मक दृष्टि के बावजूद वह बगल मे बैठी एक तरुण लडकी को निरन्तर दमित हास्य की पीडा बर्दाश्त करने को बाध्य किये हुए थे। निश्चय ही वह मण्डली के तरुण सदस्यो के, जो उनकी कही या की गई हर बात और उनके चेहरे के हर मोड पर हस पडते थे, आराध्य बने हुए थे। मुझे इस पर कोई आश्चर्य नही था क्योकि वे उनकी निगाह मे सिद्धियो एव उपलब्धियो के एक चमत्कार की भाति थे। वे पच और जूडी जैसे हसोडो की नकल उतार सकते थे, एक जले काग और जेबी रूमाल की मदद से वे अपने हाथ को बूढी औरत के रूप मे बदल देते थे, सतरे को काट कर ऐसी परिहासजनक नकल करते थे कि किशोर-मण्डली हसते-हसते लोट-पोट हो जाती थी।

फ्रैंक ब्रेसब्रिज ने मुझे सक्षेप मे उनकी कहानी बताई। वे बहुत पुराने कुमारो मे से एक थे, निश्चित और स्वतत्र कुछ आय थी, जो व्यवस्थित ढग से रहने पर उनके लिए काफी थी। वे उस परिवार-कक्षा मे भ्रमणशील पुच्छल तारे की भाति घूमते-फिरते थे, कभी इनके यहा, कभी उनके यहा पहुच जाते थे। इग्लैण्ड मे ऐसे लोगो के लिए जिनके रिश्ते-नाते तो विस्तृत होते हैं किन्तु आमदनी कम होती है, यह आम बात है। वे चहकते तथा स्फूर्ति से भरे उस आदमी की तरह थे जो सदैव वर्तमान का उपभोग और आनन्द लेता है। चूकि वे अपने साथी एव दृश्य निरन्तर बदलते थे इसलिए उनमे वे मुर्चही और असतुलित आदते नही पैदा हो पाई थी जिनका आरोप प्राय पुराने कुमारो पर अनुदारतापूर्वक लगाया जाता है। वे पूरे ब्रेसब्रिज वश की उत्पत्ति, इतिहास अन्तर्विवाहो के विषय मे इतनी जानकारी रखते थे कि परिवार के गाथाकार ही बन गए थे और बूढो के बीच बडे प्रिय थे, वे सभी प्रौढ महिलाओ तथा बूढी कुमारिकाओ के प्रीतम थे क्योकि उनके बीच (उनमे) छोटे एव तरुण समझे जाते थे, वे बच्चो के बीच धूमधडाकेवाले बन जाते थे, इसलिए जिस कक्षा मे घूमते थे उसमे साइमन ब्रेसब्रिज से ज्यादा लोकप्रिय दूसरा कोई व्यक्ति नही था। पिछले कुछ सालो से वे 'बाबू साहब' के साथ ही रह रहे थे और उनके लिए स्थायी अनुचर बन गए थे। वे पुराने जमाने की बाते करते हुए हस पड़ते और प्रत्येक अवसर पर कोई न कोई उपयुक्त गान सुनाकर उन्हे खुश

कर दिया करते थे। उनकी इस अन्तिम विशेषता का एक नमूना तो हमे उसी समय देखने को मिल गया, क्योकि ज्योही भोजन का कार्य पूरा हुआ और सब सामान हटा लिया गया एव ऋतु के उपयुक्त मसालेदार मदिराए तथा अन्य पेय वहा लाकर रखे गए, मास्टर साइमन से एक पुरातन क्रिसमस-गान के लिए अनुरोध किया गया। उन्होने एक मिनट तक कुछ सोचा, फिर उनकी आखे चमक उठी और कण्ठ से, जो बुरा नही था और जिसका स्वर कभी-कभी फटे विपची-नाद की तरह बेसुरा हो जाता था, एक पुराना गीत गाना शुरू कर दिया।

Now Christmas is come,
Let us beat up the drum,
And call all our neighbors together,
And when they appear,
Let us make them such cheer,
As will keep out the wind and the weather

(स्वतन्त्र पद्यानुवाद)

क्रिसमस आया है रे भाई,
आओ ढोल बजाएं भाई,
कर लो सब एकत्र पडोसी हिलमिल करके आज।
जब वे इस घर पर आ जाएं,
उनको हम आनन्दित कर जाएं,
वायु और ऋतु की कठोरता घर से जाए भाज॥

भोजन ने सबको मस्त कर दिया था और अब सेवको के हॉल से एक पुराने वादक को बुलाया गया जहा वह शाम से बजा रहा था तथा 'बाबू साहब' के घर की बनी मदिरा से छक रहा था। मुझे बताया गया कि वह इस कोठी का ही आश्रित प्राणी है, और यद्यपि उसका घर गाव के अन्दर है परन्तु ज्यादातर इसी घर मे बना रहता है क्योकि 'बाबू साहब' हॉल से आती बीन की ध्वनि के शौकीन हैं।

नैश भोज के बाद के अधिकाश नृत्यो की भाति, यहा का नृत्य भी हर्ष-विह्वल था; इसमे बहुत से वृद्ध जन शामिल थे और बाबू साहब भी कई जोडो

मे प्रमुख नर्तक के रूप मे शामिल हुए। कहते है, उनके साथ वे लगभग आधी सदी से हर क्रिसमस मे नाचने आए थे। मास्टर साइमन, जो पुराने और नये के बीच एक कडी के समान थे और जो अपनी उपलब्धियो के हिसाब से कुछ पूर्वकालिक से लगते थे, भी अखाडे मे उतर पडे और एडी तथा अगूठे के बल 'रिगाडून' तथा पुरातन परम्परा के अन्य नृत्यो द्वारा श्रेय पाने की चेष्टा करने लगे। परन्तु उन्होने छात्रावास की एक लप-झप करनेवाली चचला लडकी को अपना भागीदार चुना था और उस लडकी ने अपनी मत्त उत्फुल्लता मे उनके सयत पद-चालन की पर्वाह न की और नृत्य बिगाड दिया। पुरातन लोगो मे दुर्भाग्यवश ऐसी ही असगत जोडिया चुनने की प्रवृत्ति होती है।

इसके विपरीत आक्सफर्ड वाले तरुण ने अपनी एक कुमारी काकी के साथ नाचना शुरू किया और बडी उच्छृड्खलता के साथ, उसके साथ हज़ारो प्रकार की शरारते की, वह सक्रिय मज़ाक करता था और अपनी काकियो एव भ्राताओ को चिढाने मे उसे मज़ा आता था। और सभी भावुक किशोरो की भाति, वह सब प्रकार की औरतो मे प्रिय था। किन्तु सबसे मनोरजक नृत्य-जोडी थी बाबू साहब द्वारा प्रतिपालित एक तरुण अधिकारी और सप्तदशवर्षीया एक सुन्दर लजाधुर किशोरी की। मैंने सध्या को उसकी लज्जाभरी कनखियो से ही जान लिया था कि दोनो के बीच प्रेमल घनिष्ठता बढ रही है, और तरुण सैनिक था भी वैसा नायक जो एक रूमानी लडकी को आकर्षित कर सकता हो। वह लम्बा, इकहरे बदन का और खूबसूरत था और पिछले दिनो के अधिकाश तरुण ब्रिटिश अफसरो के समान ही युरोप मे उसने विविध विद्याए थोडी-थोडी सीख ली थी,—वह फरासीसी और इतालवी भाषाएं बोल सकता था, भूदृश्यो के चित्र खीच सकता था, काम चलाऊ गा लेता था, और नृत्यकला मे दक्ष था, किन्तु इन सबके ऊपर बडी बात यह थी कि वाटरलू के युद्ध मे घायल हो चुका था और सत्रह वर्ष की उम्रवाली ऐसी कौन लडकी होगी, जो काव्य एव रूमानियत मे पगी होने पर भी शूरता एव पूर्णता के ऐसे दर्पण के प्रति आत्मदान करने से रुक सके।

ज्यो ही नृत्य समाप्त हुआ, उसने एक गिटार (वाद्य) उठा लिया और पुरातन मर्मर पत्थर के आतिशदान के सहारे लेटकर, ऐसे ढग पर जिसके कृत्रिम होने का मुझे कुछ-कुछ सन्देह है, त्रूबादूर (११ वी शती के फ्रास के गीतिकार) के एक लघु फ्रासीसी गीत की तान छेड दी। परन्तु बाबू साहब ने क्रिसमस की

पूर्वसध्या को सिवाय पुरानी अग्रेजी चीज गाने के और कोई चीज गाने के विरुद्ध आदेश दे दिया, तरुण गायक ने क्षण भर के लिए आखे ऊपर की, जैसे कुछ याद करने की चेष्टा कर रहा हो, और दाक्षिण्य की आकर्षक मुद्रा मे हेरिक के 'नाइट-पीस टु जूलिया' (जूलिया को निशा-खण्ड) का सुर शुरू कर दिया—

Her eyes the glow-worm lend thee,
The shooting stars attend thee,
And the elves also,
Whose little eyes glow
Like the sparks of fire, befriend thee

No will-o'-the wisp mislight thee,
Nor snake nor slow-worm bite thee,
But on on thy way,
Not making a stay,
Since ghost there is none to affright thee

Then let not the dark thee cumber,
What though the moon does slumber,
The stars of the night,
Will lend thee their light,
Like tapers clear without number

Then, Julia, let me woo thee,
Thus, thus to come unto me,
And when I shall meet
Thy silvery feet,
My soul I'll pour into thee

(स्वतन्त्र पद्यानुवाद)

खद्योत आंख अपनी दे दे तुझको रानी
चमकीले तारे दें सेवा तुझको अपनी
जिनकी लघु आंखें जलती हैं अंगारों-सी
वे जल-सर्पिणियां हो तेरे आगे पानी।

झूठा वह कच्छ-प्रकाश न तुझको भरमाये
व्याल और लघु कीट न दशित कर पायें,
जिस पथ मे चलती जाती हो तुम बिना रुके
प्रेतात्मा कोई हो न तुम्हे जो डरपाये ।

फैला यद्यपि तम तुम्हे न बोझिल कर पाये,
परवाह नहीं जो चांद श्रान्त हो सो जाये,
अगणित लघु दीपो-सा प्रकाश देंगे अपना
ज्योतित तारा-गण, रात अधेरी हो जाये ।

जूलिया, मुझे तू आज प्रेम कर लेने दे,
आजा, अपने को बाहो मे भर लेने दे,
मैं तेरे धवल रजत चरणो मे प्रणत बना,
आत्मा तुझमे उडेल, अपनी कर लेने दे ।

भले ही गान उस सुन्दरी जूलिया की प्रशसा मे लिखा गया हो या न लिखा गया हो, जो उसकी सहनर्त्तकी थी (मुझे मालूम हुआ कि उसका यही नाम था) किन्तु उस बेचारी मे ऐसी किसी भावना की चेतना नही थी, वह गायक की ओर बिल्कुल नही देख रही थी, उसकी आखे फर्श पर झुकी हुई थी । यह सत्य है कि उसके मुख पर लज्जा की मधुरिमा थी और वक्ष धीरे-धीरे प्रश्वसित हो रहा था किन्तु यह सब नृत्य के श्रम के कारण था, वल्कि उसकी उदासीनता इतनी बढी हुई थी कि उपहार के सुन्दर पुष्प-गुच्छ की कलिया बिखेरने मे उसे मज़ा आ रहा था और जबतक गान समाप्त हुआ वह कुसुमस्तवक छिन्न-भिन्न होकर फर्श पर पडा हुआ था ।

अब मण्डली कर-स्पर्श की पुरानी मृदुल प्रथा के साथ, रातभर के लिए बिखर गई । जब मैं हाल से अपने कमरे की ओर जा रहा था तब भी यूल क्लाग की बुझती चिनगारिया अपनी धुधली आभा चतुर्दिक् फैला रही थी, और यदि मौसम ऐसा न होता जिसमे कोई प्राणी बाहर निकलने का साहस नही करता, तो मेरे मन मे यह अधूरा प्रलोभन आ चुका था कि अर्द्धरात्रि को मैं चुपचाप अपने कमरे से खिसक जाऊ और देखू कि परिया अग्निकुण्ड के इर्दगिर्द हास-विलास तो नही कर रही है ।

मेरा कमरा भवन के पुराने हिस्से मे था, उसके भारी फर्नीचर शायद देवो के ज़माने मे निर्मित हुए होगे। मुडेरियो पर गहरी नक्काशी का काम था, जिसमे फूलो एव विकृत मुखाकृतियो का विचित्र सम्मिश्रण किया गया था। दीवारो पर टगे काले से दीखते चित्रो की अवली शोकग्रस्त मुद्रा मे मुझे देख रही थी। पलग बढिया जडाऊ, यद्यपि किचित् धूमिल, फौलाद का था और उसपर मसहरी का ऊचा चदोवा लगा हुआ था। वह एक धनुषाकार वातायन के सामने लगाया गया था। मैं पलग पर लेटा ही था कि वातायन के नीचे से आती सगीत की तान सुनाई पडी। मैं सुनने लगा और मुझे पता चला कि किसी निकटवर्त्ती ग्राम से आई मण्डली से यह स्वर आ रहा है। वह भवन के चतुर्दिक् घूम-घूमकर और खिडकियो के नीचे जा-जाकर गा रही थी। मैंने और अच्छी तरह सुनने के लिए पर्दे हटा दिए। चन्द्रकिरणो ने आकर पुरातन कक्ष के ऊर्ध्व भाग को अशत प्रकाशित कर दिया। ज्यो-ज्यो स्वर दूर होता गया, त्यो-त्यो वह कोमल एव हवाई होता गया। वह मौन एव चादनी के सर्वथा उपयुक्त लगता था। मै सुनता रहा, सुनता रहा वह अधिकाधिक कोमल एव दूरागत होता गया और धीरे-धीरे समाप्त हो गया, उधर मेरा सिर तकिये पर गिरता गया, बस मैं नीद मे डूब गया।

क्रिसमस-दिवस

Dark and dull night, flie hence away,
And give the honor to this day
That sees December turn'd to May

Why does the Chilling Winter's morne
Smile like a field beset with corn ?
Or smell like a meade new-shorne,
Thus on the sudden ?—Come and see
The cause why things thus fragrant be

—Herrick

(स्वतन्त्र पद्यानुवाद)

जा चली तू रात काली ।
रात नीरस और काली तू चली जा दूर सत्वर ।
और दे सम्मान इस दिन को कि जो तत्काल भूपर ।
इस दिसबर को मई में बदल देता शक्तिशाली ।
जा चली तू रात काली ।
यह ठिठुरती शिशिर ऋतु की सुबह जो है आज आई ।
हस रही क्यो शस्यपूरित खेत-सी ले अंगड़ाई ?
और क्यो है वह महकती नवकटी दूर्वास्थली-सी ?
इस तरह सहसा, अकल्पित, पुष्प की खिलती कली-सी ?
आ, यहां देखो कि चीजो ने कहां मधु गध पाली ?
जा चली तू रात काली ।

जब मैं दूसरे दिन सुबह जगा तो ऐसा लग रहा था मानो कल की रात की

सब घटनाएं एक स्वप्न थी, और केवल प्राचीन कक्ष की पहचान के कारण ही उनकी सत्यता मे विश्वास होता था। जब मैं तकिए पर पडा हुआ यही सब सोच रहा था, मुझे दरवाजे के बाहर नन्हे पगो की ध्वनि सुनाई पडी, फिर फुसफुसाहट की आवाज़ आई। फिर बच्चो की वाणी मे एक पुराने क्रिसमिस-भक्ति-गान की तान सुनाई पडी, जिसकी टेक यह थी—

Rejoice, our saviour he was born
On Christmas day in the morning

हर्षित हो कि हमारे त्राता ने भी जन्म लिया था।
इसी दिवस क्रिसमस प्रभात मे शुभ अवतार लिया था॥

मै धीरे-से उठा, अपने कपडे पहिने और सहसा द्वार खोल दिया। मैंने अत्यन्त मजुल परियो-से लघु शिशुओ की ऐसी टोली देखी जिसकी कल्पना कोई चित्रकार ही कर सकता है। यह टोली एक लडके और दो लडकियो की थी, सब से बडे की उम्र छ से ज्यादा न होगी और वह फरिश्ते-सा सुन्दर था। वे घर की फेरी लगा रहे थे, रुककर हर कमरे के दरवाजे पर गाते थे। मेरे सहसा अवतीर्ण होने से चौककर मौन हो गए, लजा गए। वे क्षण भर खडे हो कर अपने ओठो पर अगुलिया फेरने लगे, बीच-बीच मे भौंहो के नीचे से लजाधुर दृष्टि फेकते जाते थे, फिर किसी प्रेरणा-वश वे भाग खडे हुए और जब दालान के एक कोने पर मुड गए तो अपने पलायन की इस विजय पर उन्हे हसते हुए मैंने सुना।

पुरातन विधि के आतिथ्य के इस दृढ केन्द्र मे प्रत्येक वस्तु शुभ एव आनन्द-पूर्ण भावनाए पैदा करनेवाली दीखती थी। मेरे कक्ष का वातायन जिस ओर खुलता था, यदि ग्रीष्म ऋतु के दिन होते तो वह एक बहुत ही सुन्दर भूदृश्य होता। सामने ही एक ढलुवा लान (दूर्वाभूमि-खण्ड) था जिसके पादभाग मे एक सुन्दर सोता बह रहा था। उसके आगे उपवन का एक भाग था जिसमे बडे ही भव्य वृक्ष लगे थे और मृगवृन्द उछलते फिर रहे थे। कुछ दूरी पर एक स्वच्छ कुटीर था जिसकी चिमनियो से निकलता धुआ उसपर छा रहा था, और चर्च अपने काले चूडावर्त्त को स्वच्छ शीतल आकाश मे उठाये खडा था। भवन, आग्ल प्रथानुसार सदाबहार लताओ एव फूलो से आच्छादित था·· यहा तक कि उन्हें देखकर ग्रीष्मागमन का बोध होता था। किन्तु प्रभात अत्यन्त तुषाराच्छन्न था; पिछली रात की हलकी भाफ ठण्ड से जम गई थी और सुन्दर हिमावरण

से वृक्ष तथा घास का एक-एक चप्पा ढका हुआ था। उस चमकती हुई हरीतिमा मे दीप्तिपूर्ण प्रभातकालीन सूर्य की किरणे चकाचौध उत्पन्न करनेवाला प्रभाव डाल रही थी। मेरे वातायन के ठीक सामने उगे एक पार्वत्य अखरोट वृक्ष की चोटी पर, जिसकी डाले लाल फलो से झुक-सी रही थी, बैठी कोयल धूप ले रही थी तथा बीच-बीच मे अपनी तान छेड देती थी। वही नीचे एक मयूर बडे गर्व से अपने पखो का समस्त वैभव एव सौन्दर्य दिखलाता चहलकदमी कर रहा था।

मैने अपने कपडे पहने ही होगे कि एक सेवक आकर मुझे पारिवारिक प्रार्थना मे सम्मिलित होने को निमन्त्रित कर गया। उसने कोठी के पुरातन खण्ड मे स्थित एक छोटे गिर्जाघर तक हमे पहुचा दिया। मैंने देखा कि कुटुम्ब का प्रमुख भाग वहा दालान मे पहले ही एकत्र है, लोग सोफो, कुसियो पर बैठे है, बडी-बडी प्रार्थना-पुस्तके पडी है तथा परिचारक वर्ग नीचे बेचो पर बैठा है। दालान के सामने लगे एक डेस्क से वृद्ध गृहस्वामी ने प्रार्थनाए पढी, मास्टर साइमन क्लर्क का काम कर रहे थे और उत्तर देते जाते थे। न्याय के नाते मुझे यह भी कहना चाहिए कि उन्होंने बडी गम्भीरता एव शिष्टाचरण-पूर्वक अपने कर्त्तव्य का निर्वाह किया।

प्रार्थना के बाद एक भजन गाया गया जिसे स्वय मि० ब्रेसब्रिज ने अपने चहेते रचनाकार की एक कविता के आधार पर रचा था, मास्टर साइमन ने उसे एक पुरातन चर्च-राग मे ढाला था। चूकि घर मे सुकण्ठो की कमी नही थी, गान का प्रभाव बडा सुखकारी था। किन्तु कृतज्ञ-भावना के जिस आकस्मिक उद्गार के साथ एक पद गृहस्वामी 'बाबू साहब' ने गाया उससे मेरा हृदय उच्च भावो से भर गया तथा मुझे बडा ही सन्तोष प्राप्त हुआ। उस समय उनकी आखे चमक रही थी और वाणी ताल तथा लय की सम्पूर्ण सीमाओ को पार कर गई थी—

'T is thou that crown'st my glittering hearth
  with guiltless mirth,
And givest me Wassaile bowles to drink
  Spiced to the brink,
Lord, 't is thy plenty-dropping hand
  That soiles my land,

And gıv'st me for my bushell sowne,
Twıce ten for one

(स्वतन्त्र पद्यानुवाद)

मेरे दीप्तिमान् चूल्हे को दोषहीन निज मृदुल हास्य से
तुम मण्डित कर देते, देते सुरापात्र भर मधुर लास्य से।
मेवे और मसालों की मदिरा तुम पीने को देते हो,
दुःख मे भी सुधि लेकर मेरी, मुझको अपना कर लेते हो।
प्रभु तेरे बहुदानी कर हैं, जो मेरी धरती बोते हैं।
एक मूठ बोये नाजो को बीस मूठ कर दे देते हैं॥

बाद मे मुझे मालूम हुआ कि तडके की यह प्रार्थना वर्षभर प्रत्येक रविवार को और सन्तो के दिन होती रहती है और या तो मि० ब्रेसब्रिज पढते है या फिर परिवार का ही कोई सदस्य पढता है। एक जमाने मे तो इग्लैण्ड के सभ्रान्त एव सामन्तवर्ग मे यह प्रथा सार्वजनीन थी और दुख है कि अब इस प्रथा की उपेक्षा की जा रही है। मूर्ख से मूर्ख पर्यवेक्षक भी उन घरो एव परिवारो की व्यवस्थितता एव निरुद्विग्नता को देख सकता है जहा सुन्दर प्रभातकालीन प्रार्थना प्रत्येक स्वभाव को दिनभर के काम की कुजी प्रदान करती है और प्रत्येक प्राणी को सामजस्य की भावना से भरकर एकतान, एकरस कर देती है।

हमारे नाश्ते मे वही चीज़े थी जिन्हे बाबूसाहब पुरातन आग्ल नाश्ते की सामग्री बताते है। उन्होने चाय और टोस्ट के आधुनिक नाश्ते पर तीव्र एव कटुतापूर्ण रूप से दुख प्रकट किया और उसे आधुनिक स्त्रैणता एव दुर्बल नाडियो का तथा पुरातन आग्ल हार्दिकता के ह्रास का एक कारण बताकर उसकी निन्दा की। यद्यपि अपने अतिथियो की रुचि एव स्वाद का खयाल कर उन्होने इन चीज़ो की भी टेबुल पर व्यवस्था की थी किन्तु शीतल मास, मदिरा तथा अन्य पेयो से भण्डार भरा हुआ था।

नाश्ते के बाद मैं फ्रैंक ब्रेसब्रिज तथा मास्टर या मि० साइमन (बाबूसाहब को छोड परिवार के और सब लोग उन्हे इसी तरह पुकारते थे) के साथ टहलने निकल गया। हमारे साथ भद्र दीखने वाले अनेक प्रकार के कुत्ते भी लग गए। वे मास्टर साइमन के काज से लटकती सीटी के प्रति अत्यन्त निष्ठावान् थे तथा चलते हुए बीच बीच मे उनके हाथ की छड़ी पर नज़र डाल लेते थे।

पुरानी कोठी पीली धूप मे फीकी चादनी की अपेक्षा भी अधिक श्रद्धापात्र लगती थी। और मैं 'बाबूसाहब' के इस विचार का बल अनुभव करने से नही रह सका कि ये दिखाऊ चबूतरे तथा भारी ढले जगले तथा कटे छटे यू-वृक्ष अपने साथ आभिजात्य का वातावरण रखते है। वहा मुझे मोरो का बाहुल्य दिखाई पडा। जब मैने सूर्यकिरणालोकित एक दीवार के पास बैठे कुछ मोरो को देखकर 'मयूर-झुण्ड' (फ्लाक) की सज्ञा दी तो मास्टर साइमन ने शिकार की प्राचीन एव प्रमाणित पुस्तको के आधार पर मुझे बताया कि हमे 'झुण्ड' नही 'समुदाय' या 'दल' कहना चाहिए। उन्होने मुझे यह भी सूचित किया कि सर एथोनी फिटजेरबर्ट के अनुसार 'इस पक्षी मे समझ और स्वाभिमान भी होता है क्योकि यदि उसकी प्रशसा कीजिए तो वह अपनी पूछ फैला देगा—विशेषत सूर्य की तरफ उठाकर जिससे आप उसके सौन्दर्य को भलीभाति देख सके। किन्तु जब पख गिर जाते है तो उसकी पूछ भी गिर जाती है, तब वह दुखी होकर किसी कोने मे छिप जाता है और तभी बाहर आता है जब उसकी पूछ फिर से निकल आती है।'

उन्हे ऐसे सनकभरे विषय पर अपनी लघु विद्वत्ता का प्रदर्शन करते देख मैं मुस्कराये बिना न रह सका, किन्तु मैंने इतना ज़रूर समझ लिया कि यहा के हॉल मे, इस कोठी मे मयूरो का बडा महत्त्व है। फ्रैंक ब्रेसब्रिज ने मुझे बताया कि उसके पिता इनके बडे शौकीन है और इनकी नस्ल को बनाये रखने के लिए बडा प्रयत्न करते है। एक कारण यह है कि ये प्राचीन वीर-युग के चिह्न है और पुराने जमाने के शानदार भोजो मे इनकी बडी माग थी, दूसरा कारण यह है कि इनमे खुद भी एक प्रदर्शनात्मक सौन्दर्य, एक तडक-भडक और शान है जो पुरातन पारिवारिक कोठी के अनुरूप है। वे प्राय. कहा करते है कि पत्थर के किसी पुरातन जगले के ऊपर बैठे (नाचते) मोर से अधिक शानदार तथा गौरवशाली और क्या हो सकता है?

मास्टर साइमन को शीघ्र ही जनपद चर्च मे ग्रामीण भजनीको से मिलने जाना था क्योकि वे लोग उन्ही का चुना हुआ कोई गान गाने वाले थे। इस नाटे आदमी की शारीरिक स्फूर्ति के हर्षित प्रवाह मे कोई न कोई ऐसी चीज़ थी जिसे हर आदमी पसन्द करता था, और मुझे यह भी स्वीकार करना चाहिए कि उनको ऐसे लेखको के सटीक वचन उद्धृत करते देख मुझे आश्चर्य हुआ था, जो

रोज़ के अध्ययन की परिधि से दूर थे। मैंने इस बात का जिक्र फ्रैंक ब्रेसब्रिज से किया। उसने बताया कि मास्टर साइमन के सम्पूर्ण ज्ञान की परिधि आधे दर्जन पुरातन लेखको तक ही सीमित है। इन लेखको की कृतिया उसके पिता ने ही उन्हे दी थी और जब भी उन्हे अध्ययन का दौरा आता उन्हे ही वे बार-बार पढते रहते थे। ऐसा दौरा उन्हे किसी वर्षा के दिन या लम्बी शिशिर-सध्या को आता है। उन सब आदमियो की भाति जिनका ज्ञान चन्द पुस्तको तक ही सीमित होता है, वे उन किताबो को मूर्तिपूजक की निष्ठा के साथ देखते है और हर मौके पर उन्हे उद्धृत करते रहते है। जहा तक गानो की बात है, वे पिता जी के पुस्तकालय के पुरातन ग्रन्थो से लेकर पिछली सदी के श्रेष्ठ जनो मे प्रचलित सुरो के अनुकूल बना लिये गए है। हा, साहित्य के इन उच्छिष्ट अशो का वे जो व्यावहारिक प्रयोग करते है उसके कारण वे आस-पास के साईसो, शिकारियो एव छोटे खिलाडियो मे पुस्तकीय ज्ञान के चमत्कार माने जाते है।

हम लोग बात कर ही रहे थे कि हमे ग्राम्य-घण्टिका की दूरागत ध्वनि सुनाई पडी। मेरे दोस्त ने मुझे बताया कि उसके पिता क्रिसमस प्रभात मे सारे कुटुम्ब के चर्च जाने का बडा ध्यान रखते है, क्योकि वे इसे बधाई, कृतज्ञता और हर्ष बिखेरने का दिन मानते है। जैसा ओल्ड टसर ने कहा है—

At Christmas be merry, *and thankful withal,*
And feast thy poor neighbors, the great with the small

क्रिसमस मे तुम हर्ष मनाओ, पर कृतज्ञता से परिपूरित।
छोटे बड़े पड़ोसी जन को, खूब खिलाओ कर आमन्त्रित॥

फ्रेंक ब्रेसब्रिज ने कहा—"यदि आप चर्च चलना चाहते है तो मै वादा करता हू कि वहा अपने भाई साइमन की सगीतकला का नमूना आपको दिखा सकूगा। चूकि चर्च मे 'आर्गन' वाद्य नही है इसलिए उन्होने गाव के शौकिया गायको को इकट्ठा कर उनके सुधार के लिए एक सगीत-क्लब का सगठन किया है। मन्द्र स्वर के लिए उन्होने 'गहन सयत कण्ठो' को तथा धैवत स्वर के लिए, ग्रामीण भोदुओ मे से 'तीव्र ध्वनिशील कण्ठो' को एकत्र किया है। इसी प्रकार 'मधुर कण्ठो' के लिए, अपनी विचित्र अभिरुचि के साथ, पास-पडोस की सुन्दरतम रमणियो मे-से चुनाव किया है, यद्यपि वे यह भी कहते हैं कि इन सुन्दरियो को ताललय मे रखना बहुत कठिन है, क्योकि सुन्दरी गायिका, बार-बार बहक जाती है और

भूल पर भूल करती रहती है।"

चूकि तुषाराच्छादित होने पर भी प्रभात बहुत साफ और सुहावना था इसलिए कुटुम्ब के अधिकाश लोग चर्च तक पैदल ही गए। चर्च भूरे पत्थरो की बनी बहुत पुरानी इमारत है और कोठी के उद्यानवाले फाटक से लगभग आध मील दूर एक गाव के निकट है। उसके पास ही एक साफ-सुथरा पुरोहिताश्रम है। उसका अग्रभाग यू-ट्री से आच्छादित है, यह यू-ट्री दीवारो के सहारे फैला हुआ है जिनकी घनी पत्रावली मे बीच-बीच मे ऐसे रिक्त स्थान है जिनसे उसके लघु पुरातन गवाक्षो मे प्रकाश की किरणे आती है। जब हम इस आच्छादित नीड से गुजर रहे थे तो पादरी निकला और हमारे कुछ आगे चल पडा।

मैंने एक ऐसे गुलगुले, सुस्थितिवाले पादरी को देखने की आशा की थी जैसे धनवान् सरक्षक के पडोस मे सस्कृत जीवन व्यतीत करनेवालो मे प्राय पाये जाते है। किन्तु मुझे निराशा हुई। पादरी नाटा, दुबला, काला आदमी था और सिर पर धवल विग (उपकेश-टोप) पहिने था, जो काफी बडा होने के कारण कानो के पास फूल गया था यहा तक कि सिर उसके नीचे हटा हुआ मालूम पडता था जैसे कि अपनी खपटी के अन्दर सूखा अखरोट लगता है। बडे स्कर्ट के साथ वह एक मुर्चहा कोट पहने था जिसकी जेबो मे शायद चर्च की बाइबिल तथा प्रार्थना-पुस्तक रही होगी। उसके छोटे पैर लम्बे जूतो मे और छोटे लगते थे। इन जूतो मे बडे-बडे बक्सुए लगे हुए थे।

फ्रैंक ब्रेसब्रिज ने बताया—"पादरी महोदय आक्सफर्ड मे अध्ययन के समय मेरे पिता के घनिष्ठ सखाओ मे से थे और जब पिता जी वहा से अपनी जागीर पर चले आए तब उन्होने (पादरी) यह पेशा स्वीकार कर लिया। वे पुरातन विषयो के अन्वेषक है। कैक्सटन एव विकिन डी ओर्ड के सस्करण उनके आनन्द के विषय है। अपनी अयोग्यता के कारण जो पुरातन आग्ल लेखक विस्मृति के गर्भ मे जा चुके है उनके विषय मे अन्वेषण करने मे वे कभी थकते नही। कदाचित् मेरे पिता की इच्छानुसार ही उन्होने पुराने जमाने के उत्सवो एव त्योहारो की रीतियो तथा प्रथाओ के विषय मे गहरा अनुसन्धान किया है किन्तु यह सब उसी मन्थर भावना के साथ किया है जिससे शुष्क स्वभाव के लोग किसी अध्ययन पथ पर केवल इसलिए चल पडते है कि उसे विद्वत्ता के नाम से पुकारा जाता है, ऐसे लोग उस विषय की आन्तरिक प्रकृति के प्रति उदासीन होते है, फिर

चाहे वह प्रज्ञा का उदाहरण हो या कोरी बकवास का, या पुरातनता की अश्लीलता ही हो। इन्होने इन पुरातन ग्रन्थो का ऐसी गहराई के साथ अध्ययन किया है कि वे इनके चेहरे मे प्रतिबिम्बित हो उठे है। यदि चेहरे को सचमुच मन का अभिसूचक मान लिया जाए तो इनका मुख उन पुरातन ग्रन्थो के आवरणपृष्ठ के समान समझ लीजिए।"

चर्च के द्वार-मण्डप मे पहुचने पर हमने देखा कि पादरी भूरे सिर वाले क्लर्क को इस बात के लिए डाट रहा है कि उसने चर्च को सजाने मे अन्य हरे फूल-पत्तो के साथ आकाशबेल को क्यो मिला दिया? उसका कहना था कि यह अपवित्र पौधा है और ड्रूइडो (प्राचीन केल्ट जाति के ऐन्द्रजालिको) द्वारा अपने रहस्यमय अनुष्ठानो के लिए प्रयुक्त होने के कारण वर्जित है। उत्सव के समय हॉल और भोजनागार इत्यादि को सजाने मे भले ही लोग अज्ञान-वश इसका उपयोग कर ले किन्तु चर्च के पुजारी उसे अशुभ मानते है और पवित्र कार्यों के लिए उसे नितान्त अनुपयुक्त समझते है।

इस मुद्दे पर पादरी इतना अडिग था कि जब तक क्लर्क ने अपनी पसन्द के उन अलकरणो का अधिकाश हटा नही दिया, पादरी उस दिन का अनुष्ठान आरम्भ करने को तैयार नही हुआ।

चर्च का अन्तर्भाग श्रद्धायोग्य, पर सादा था, दीवारो पर ब्रेसब्रिजो के कुछ भित्तिस्मारक थे और वेदिका के पास ही पुरानी कारीगरी से युक्त एक चैत्य था जिसपर किसी कवचधारी योद्धा की प्रतिमा पलथी मारे रखी हुई थी,—पलथी मारने की स्थिति उसके जेहादी (क्रूसेडर) होने का चिह्न थी। मुझे बताया गया कि ये इसी वश के एक व्यक्ति हुए है जिन्होने 'पवित्रभूमि' (होलीलैण्ड) मे नाम कमाया था और इन्ही की तस्वीर हाल मे अग्निकुण्ड के ऊपर भी लगी हुई है।

अनुष्ठान के बीच, परिवार के लिए घिरे स्थान पर खडे होकर जोर-जोर से मास्टर साइमन प्रार्थना को दोहराते रहे, वे उस तरह की औत्सविक भक्ति का प्रदर्शन करते रहे, जिसका पालन पुरातन विचारधारा तथा पुरातन पारिवारिक सम्बन्धो के व्यक्ति नियमपूर्वक करते है। मैंने यह भी देखा कि वे एक प्रार्थना-पुस्तक के पन्ने बडे आडम्बरपूर्वक उलट रहे है—शायद अपनी एक अगुली मे पहनी बडी-सी एक अगूठी लोगो को दिखाना चाहते हो। अगूठी

पुराना पारिवारिक चिह्न-सी मालूम पडती थी । किन्तु जब अनुष्ठान का सगीतात्मक भाग शुरू हुआ तब तो उनकी भक्ति चरम सीमा पर पहुच गई , उनकी आखे भजनमण्डली पर केन्द्रित हो गईं और वे झूम-झूमकर तथा हाथो के कम्पन द्वारा सगीत की मात्राओ तथा सम का अनुसरण करते रहे ।

आरकेस्ट्रा—वृन्द वाद्य—एक छोटे-से दालान मे जुटा हुआ था । इसमे तरह-तरह के सनकी लोग थे , वे एक पर एक बैठे हुए थे । उनके बीच गाव के दर्जी पर मेरी दृष्टि विशेष रूप से पडी, —एक पीला आदमी, जिसका माथा एव चिबुक पीछे की ओर झुके हुए थे । वह क्लारनेट बजा रहा था और अपना चेहरा फुलाये हुए था । एक और आदमी 'नाटा, थुलथुल, वायलिन पर इस तरह झुका हुआ कि केवल उसका गोल खल्वाट सिर शुतुरमुर्ग के अण्डे-सा दिखाई पडता था । गायिकाओ मे दो-तीन सुन्दर मुख दिखाई पडते थे , उन चेहरो पर ठण्डी सुबह की तीक्ष्ण वायु ने चमकदार गुलाबी आभा पैदा कर दी थी । किन्तु पुरुष भजनीक अपने रूप की अपेक्षा अपने कण्ठ के लिए ही चुने गए प्रतीत होने थे, और चूकि एक किताब से कई को गाना पड रहा था, विचित्र देहाकृतियो के झुण्ड के झुण्ड वहा दिखाई पडते थे—उन चेरब-झुर्मुटो के समान जो कभी-कभी ग्राम्य-चैत्यो पर दिखाई पडते है ।

भजन-मण्डली की नित्य प्रार्थना का प्रबन्ध अच्छा था,—हा, कण्ठ-सगीत प्राय वाद्य-सगीत के पीछे रह जाता था, जिसकी पूर्ति के लिए किसी बेला-वादक को पद पुन दोहराने पडते थे । सबसे बडी परीक्षा तो उस गीत मे हुई जिसे मास्टर साइमन ने तैयार एव क्रमबद्ध किया था तथा जिसपर उन्होने बडी आशा लगा रखी थी । दुर्भाग्यवश शुरू मे ही गलती हो गई , गायक घबडा गए , मास्टर साइमन को तो बुखार चढ आया , सब कुछ विकल एव अनियमित गति से तबतक चलता रहा जबतक कि इस पद के साथ कोरस-गान शुरू नही हो गया—'नाऊ लेट अस सिंग विद वन एकार्ड' (आओ हम सब एक ही स्वर मे गाये अब मृदुगान) । परन्तु इसका आरम्भ होते ही मानो एक-दूसरे का साथ छोडने का सकेत मिल गया हो, सबकुछ बेसुरा और गडबड हो गया , हर आदमी अलग-अलग अलापने लगा, और जब जहा चाहता वहा खतम कर देता था , हा एक गायक ज़रूर कुछ दूर पर चश्मा पहने सबसे अलग खडा था, और अपने ही राग मे मस्त, सिर हिला-हिलाकर अपनी किताब को कनखियो

से देखता तीनताल मे गाता जा रहा था ।

पादरी ने क्रिसमस के समारोह एव अनुष्ठान पर एक बडा ही विद्वत्तापूर्ण प्रवचन किया । उन्होने यह भी बताया कि क्यो इसे न केवल कृतज्ञता-ज्ञापन-दिवस बल्कि आनन्द-दिवस के रूप मे भी मनाना चाहिए । उन्होने अपनी सम्मति की शुद्धता चर्च की प्रारम्भिक रीतियो का उल्लेख कर तथा थियोफीलस, सेसारिया, सेट साइप्रियन, सेट क्रिसोस्तोम, सेट आगस्टाइन एव अन्य अनेक सन्तो और धर्माचार्यो के वचनो को उद्धृत कर सिद्ध की । मुझे तो समझ मे नही आया कि एक ऐसे विषय पर, जिससे उपस्थित किसी भी व्यक्ति का विरोध नही था, इतने बडे-बडे आचार्यो के प्रमाण उद्धृत करने की क्या आवश्यकता थी, किन्तु मुझे शीघ्र पता चल गया कि उस आदमी का विरोध करनेवाले काफी सख्या मे थे, क्योकि क्रिसमस पर अपना अनुसन्धान जारी रखने के समय उन्होने अपने को क्रान्ति के साम्प्रदायिक विवादो मे फसा लिया था । उस समय प्यूरिटन या विशुद्धतावादी लोग चर्च के अनुष्ठानो एव रीतियो पर ऐसे भयकर प्रहार कर रहे थे कि पार्लमेण्ट की एक घोषणा द्वारा बेचारे क्रिसमस को देश-निकाला दे दिया गया था । योग्य पादरी उसी पुरातन जमाने मे जी रहे थे और वर्तमान की उन्हे कुछ भी खबर न थी ।

अपने पूर्वकालिक लघु अध्ययनकक्ष के एकान्त मे दीमक लगी पुस्तको के बीच बन्द इस आदमी को पुरानी पुस्तको के पृष्ठ ऐसे लगते थे जैसे वे आज के गजट हो, जब कि क्रान्ति का युग केवल आधुनिक इतिहास-मात्र था । वे भूल गए कि समस्त देश मे गरीब कीमा के समोसे (क्रिसमस) पर अत्याचार के उस युग को बीते दो सौ वर्ष हो गए जब दाखयुक्त दलिये का 'पोगा पथी' कहकर उपहास किया जाता था और तले मास को अख्रीष्टीय माना जाता था, रेस्टोरेशन के बाद जब बादशाह चार्ल्स गद्दी पर बैठा तो उसके मौजी दरबार मे पुन क्रिसमस का विजय-प्रवेश हुआ । अपने सघर्ष की स्फूर्ति के ताप से तथा जिन कल्पित शत्रुओ की बहुलता से उसे लोहा लेना पडा उनके कारण पादरी चमक उठा था । उसका क्रिसमस उत्सव के सम्बन्ध मे बूढे प्राइन तथा राउण्डहेड्स[1] के दो या तीन और विस्मृत समर्थको से कठोर विरोध था । उसने अपने श्रोताओ

---

[1]. सत्रहवीं शती के इग्लैण्ड के गृहयुद्ध मे सम्मिलित पार्लमेण्ट के सदस्य ।

भेजकर बढाते थे। शिशिर की तुषाराच्छन्न दासता पर ताप एव हरीतिमा की इस विजय मे सचमुच ही एक आह्लादकारी तत्त्व था, जैसा कि बाबूसाहब ने कहा, अनुष्ठान एव स्वार्थपरता की ठड को तोडकर प्रत्येक हृदय को द्रवित एव प्रवाहित कर देनेवाला यह क्रिसमस की आतिथ्यसत्कारशीलता का प्रतीक है। उन्होने बताया कि सुखावह खेत-घरो एव नीची छाजन की झोपडियो की चिमनियो से हसी-खूशी फूट पड रही है (जो धुआ निकल रहा है वह खुशी की निशानी है)। उन्होने कहा—"मुझे धनी-निर्धन सबके द्वारा यह दिवस मनाए जाते देखकर खुशी होती है, यह बहुत बडी बात है कि साल मे कम से कम एक दिन तो ऐसा है कि जहा भी जाओ, दुनिया की सारी न्यामतो के द्वार खुले मिलते है।"

बाबू साहब ने इस बात पर बहुत दु ख प्रकट किया कि 'इस ऋतु मे निम्न-स्तर के लोगो मे पहले जिन खेलकूदो और मनोरजनो का प्रचार था और जिनका आनन्द उच्चस्तर के लोग उठाते थे, उनका लोप होता जा रहा है। उस जमाने मे दिन का प्रकाश होते ही महलो एव कोटो के हॉल खोल दिए जाते थे और टेबुल पर तरह-तरह के मास एव यवमदिराए सजा दी जाती थी, सारे दिन बीन एव सारगी बजती रहती थी और अमीर-गरीब सब समान रूप से उसमे आते और खाते-पीते तथा आनन्द मनाते थे। पुराने खेलो और स्थानीय प्रथाओ के कारण किसान को अपने घर के प्रति एक रुझान रहता था और बडे एव भद्रजन उनमे भाग लेते तथा उन्हे बढाते थे, इसलिए वे (किसान) अपने स्वामी को, जमीदार को भी चाहते थे। इन प्रथाओ के कारण समय अधिक हर्षपूर्ण, अधिक कृपालु, और अधिक अच्छा हो जाता था। एक पुरातन कवि ने ठीक ही कहा है—"जो लोग इन निर्दोष खेलो को निर्वासित करने का प्रयत्न कर रहे है, मैं उनकी विचित्र नियमनिष्ठता तथा दिखाऊ गभीरता की कद्र करता हू परन्तु इन खेलो के साथ ही पुरानी ईमानदारी भी हमसे दूर चली जा रही है।"

उन्होने आगे और कहा—'राष्ट्र बदल गया है, हमने अपनी सत्यहृदय कृषक जनता को लगभग खो दिया है। वह उच्चवर्गो से कटकर अलग हो गई है और सोचती है कि उसका हित उनसे अलग है। वह अब बहुत ज्यादा जानने लगी है; अखबार पढने लगी है, मदिरागृहो मे बैठकर बाते करनेवाले राजनीतिज्ञो की बातें तथा सुधार की वार्ताए सुनने लगी है। मेरी समझ से इस कठोर समय मे उसे सद्भावना मे स्थिर रखने के लिए यह बात आवश्यक है कि सामन्त एव

जागीरदार अपना अधिक समय अपनी जमीदारियो मे व्यतीत करे, देहात के लोगो से खूब मिले-जुले और हर्षोत्पादक अग्रेजी खेलो को पुन प्रचलित करे।'

सार्वजनिक असन्तोष को दूर करने के लिए यह थी भले बाबूसाहब की योजना। उन्होने स्वय इसपर चलने की कोशिश की थी, कुछ साल पहले त्यौहारो मे वह हॉल को उसी पुरानी पद्धति से खुला रखते थे। किन्तु ग्रामीणो को आतिथ्य-सत्कार के इस कार्य मे अपना भाग ठीक तरह से पूरा करना नही आया, बहुतेरी अशोभन परिस्थितिया पैदा हुई, जागीर मे सारे देश के फिरन्तू और लफगे भर गए, एक हफ्ते के अन्दर पास-पडोस मे इतने भिक्षुक भर गए जिन्हे जनपद के अधिकारी सालभर मे भी बाहर नही निकाल सकते थे। इसलिए तब से उन्होने उस योजना को समाप्त कर दिया और क्रिसमस दिवस मे निकटवर्ती किसान-जनता के सभ्य भाग को निमन्त्रित करने तक अपने प्रयत्न को सीमित कर लिया। इसके अतिरिक्त जो गरीब लोग आते उन्हे मास-रोटी और मदिरा बाट दी जाती कि वे अपने घरो मे जाकर उपभोग करे तथा आनन्द मनाए।

हमे घर लौटे बहुत देर नही हुई थी कि दूरागत सगीत-ध्वनि सुनाई पडी। कोट-रहित और कमीज की आस्तीन मे सुन्दर फीते बाधे हुए ग्रामीण लडको का एक दल आता दिखाई पडा, उनके हैट हरे पत्रपल्लवो से अलकृत थे, वे हाथ मे सोटे लिए हुए थे। उनके पीछे-पीछे बहुत-से ग्रामवासी और किसान आ रहे थे। वे हॉल के दरवाजे पर रुक गए, वहा सगीत की विचित्र तान छिड गई और उन लडको ने नाचना शुरू कर दिया। वे कभी आगे बढते, कभी पीछे लौटते और सम पर लाठियो को एक साथ पटकते थे। उनमे एक ने लोमडी की खाल पहन रखी थी, जिसकी पूछ उसकी पीठ पर लहरा रही थी। वह नृत्य की सीमा तक उछल-कूद मचाता तरह-तरह के हाव-भाव कर रहा था।

बाबू साहब बडी दिलचस्पी और खुशी के साथ यह तमाशा देखते रहे, उन्होने उसके जन्म की पूरी कहानी मुझे सुनाई। उनके अनुसार उसका जन्म तब हुआ था जब टापू पर रोमनो का प्रभुत्व था। उनका स्पष्ट अभिप्राय यह था कि यह प्राचीनो के खड्ग-नृत्य की आनुवशिक सन्तति है। बोले—"अब यह लगभग लुप्त हो चुका है, मैने पडोस मे इसका कुछ चिह्न पाकर इसे प्रोत्साहन दिया और उद्धार किया।"

नृत्य समाप्त होने पर सम्पूर्ण मण्डली को मास तथा घर बनी मदिरा का वितरण किया गया। बाबू साहब खुद ग्रामीणो से हिलमिल रहे थे और लोग

उनके प्रति सम्मान का प्रदर्शन कर रहे थे। यह ठीक है कि दो-तीन युवक किसान मदिरापात्रो को मुह से लगाते समय, बाबू साहब की पीठ उनकी ओर होने के कारण मुह बिचका तथा आखे मार रहे थे किन्तु ज्यो ही उनकी आखे मेरी आखो से मिली, झट मुह लटकाकर गम्भीर और अत्यन्त विनीत बन गए। किन्तु मास्टर साइमन के साथ वे ज्यादा खुलेपन से मिलते-जुलते थे, क्योकि अपनी विविध वृत्तियो, कार्यों एव मनोरजनो के कारण आस-पास के गावो मे वे खूब प्रसिद्ध थे, वे हर खेतघर और झोपडे पर जाया-आया करते थे, किसानो एव उनकी स्त्रियो से गपशप करते थे, उनकी लडकियो के साथ घूमते-फिरते थे और भ्रमणशील कुमार भौरे की भाति ग्राम्याचल के सब गुलाबी ओठो का रसपान करते थे।

अतिथियो का सकोच हसी-खुशी एव प्रेमलता के इस वातावरण मे शीघ्र ही दूर हो गया। निम्नस्तर के लोगो का आह्लाद जब उनके ऊपर के वर्गों के दान एव घनिष्ठता से प्रोत्साहित होता है तब उसमे कुछ न कुछ सच्चाई और मुहब्बत का रग आ ही जाता है। तब कृतज्ञता की तप्त आभा उनके प्रमोद मे भर जाती है और सरक्षक द्वारा कहा गया एकाध कृपा का शब्द, आश्रित के हृदय को भोजन और मदिरा से भी अधिक हर्षित कर देता है। जब बाबूसाहब चले गए तो आमोद-प्रमोद का बाजार और गर्म हो गया तथा खूब हसी-मजाक होने लगा। एक प्रसन्नस्वभाव धवलशीर्ष रक्ताभ कृपक एव मास्टर साइमन के बीच तो खूब चोचे हुई। यह कृषक गाव मे अपनी हाजिरजवाबी के लिए प्रसिद्ध था। उसके सब साथी उसके जवाब के लिए मुह बाए प्रतीक्षा करते थे और उसे भलीभाति समझने के पहले ही खिलखिला पडते थे।

सारा भवन आमोद-प्रमोद मे डूब गया था। जब मैं भोज मे शामिल होने लिए कपडे पहनने अपने कमरे की ओर जा रहा था, तो एक छोटे प्रागण से सगीतध्वनि आती हुई सुनाई पडी। खिडकी से उधर देखने पर मालूम हुआ कि वह परिव्राजक गायको के दल से आ रही है, वे यूनानी अलगोजे और तम्बूरी बजा रहे है, एक चोचले वाली युवती नौकरानी चुस्त ग्रामीण युवक के साथ नाच रही है और दूसरे नौकर तमाशा देख रहे है। नाचते हुए लडकी की निगाह खिडकी मे मेरे ऊपर पड गई और बेचारी लजाकर घबराहट की शरारती अदा के साथ वहा से भाग खडी हुई।

क्रिसमस-भोज

लो आ गया हमारा सबसे हर्ष-भरा त्यौहार ।
सब कोई आनन्द मनाये, खुशी भरा ससार ।
हर कमरा अशोक पल्लव से सजा हुआ है आज ।
हर खंभे पर है होली पत्तो का सुन्दर साज ।
सभी पडोसी गण की चिमनी आज उगलती धूम ।
क्रिसमस के कुदे जलते है, आग रही छत चूम ।
चूल्हो पर सबके रखे है व्यजन नाना रूप ।
खुशी मचायें आज सभी मिल हो निर्धन या भूप ।
आज द्वार के बाहर ही मर जाये दुःख या शोक ।
घोर ठड से ठिठुराकर यदि वह जाये परलोक ।
क्रिसमस की मिठाइयो मे दफना देंगे हम यार ।
नाच कूदकर खुशी मनाने को होगे तैयार ।।

—विदर्स' जुवेनीलिया ।

मुह-हाथ धोकर मै फ्रैंक के साथ पुस्तकालय मे चहलकदमी कर रहा था कि हमे दूर से आती खटखटाहट की आवाज सुनाई पडी । फ्रैंक ने बताया कि यह भोज लगाये जाने का सकेत है। बाबूसाहब ने हॉल और भोजनालय सब मे पुरानी ही प्रथाए चला रखी है । घूर्णित बेलन से रसोइए ने टेबल पर आघात किया होगा, जिसका अर्थ यह है कि परिचारकगण मास-व्यजनो को परोसने के लिए ले जाए ।

भोज की तैयारी बडे हॉल मे की गई थी । बाबूसाहब क्रिसमस का भोज सदा वही देते है। उस विस्तृत कक्ष को गरम रखने के लिए कई कुन्दे जला दिए गए थे जिनसे ज्वालाए निकलकर चौडे मुह वाली चिमनी तक उठ रही थी । जिहादी वीर तथा उसके धवलअश्व की बडी तस्वीर फूलपत्तियो से अच्छी

तरह सजाई गई थी , उसके सामने की दीवार पर लगे शिरस्त्राण एव शस्त्रो के चतुर्दिक् भी मगल पल्लव लगा दिए गए थे। मुझे मालूम हुआ कि ये सब भी उसी योद्धा के थे। परन्तु मुझे इसमे सन्देह था कि चित्र एव अस्त्रादि उसी जिहादी योद्धा के है क्योकि उनपर आधुनिककाल की छाप थी। मुझे तो यही बताया गया कि चित्र स्मरणातीत समय से चला आ रहा है, और जहा तक कवच एव अस्त्रादि का सम्बन्ध है, वे काठकबाड रखने की कोठरी मे पडे हुए थे; 'बाबूसाहब' ने उन्हे वहा से निकलवाकर इस स्थान पर लगवाया और उन्हे पहिचानकर परिवार के योद्धा नायक का बतलाया। और चूकि वही इस गृहस्थी मे इन बातो पर एकमात्र प्रमाणपुरुष थे इसलिए उनकी बात स्वीकार कर ली गई। इस स्मृतिचिह्न के नीचे एक खुली आलमारी पर वे विविध पात्र रखे थे जो आनन्दी गृहरक्षको की कई पीढियो द्वारा धीरे-धीरे एकत्र किए गए होगे। इनके सामने दो क्रिसमसी शमाए थी जो दो तारो की भाति प्रदीप्त थी, जगह-जगह और दीप भी रखे थे और सब कुछ रजतव्योम की भाति चमक रहा था।

प्रीतिभोज के इस दृश्य मे हमने वाद्यसगीत की आवाज़ सुनते हुए प्रवेश किया। बूढा वीणावादक अग्निकुण्ड के पास एक स्टूल पर बैठा अपने वाद्य को बडे ज़ोर से झकृत कर रहा था। क्रिसमस के किसी भोज मे मैने इससे अधिक अच्छी एव मजु मुखाकृतियो को एकत्र नही देखा था। जो चेहरे सुन्दर नही थे, वे भी, कम से कम, हर्षित तो थे और हर्ष आपके चहेते चेहरो को सुन्दर बनानेवाला दुर्लभ पदार्थ है। मै तो सदा से ही किसी पुरातन आग्ल परिवार को अध्ययन के उतना ही योग्य समझता रहा हू जितना हालबीन के किसी छविचित्र—पोर्ट्रेट—अथवा अल्बर्ट डूरर के किसी प्रिण्ट के सचय को अध्ययन के योग्य समझता हू। उनसे बहुत-सी पुरातन बाते सीखी जा सकती है, पुराने ज़माने की मुखाकृति के विज्ञान की कितनी ही जानकारी मिलती है। शायद इसका कारण उन पुराने पारिवारिक चित्रो का सदा उनकी नज़र के सामने बना रहना हो, जो इस देश के भवनो मे सचित है, इन प्राचीन वशो मे पुरातत्त्व की विलक्षण रूपाकृतिया मिलती है, मैने तो एक सम्पूर्ण पारिवारिक चित्रागार मे वही कौटुम्बिक नासिका देखी है जो पीढी दर पीढी—यहा तक कि 'काकेस्ट' के युग से चली आई है। मेरे चतुर्दिक् जो योग्य समुदाय एकत्र था, उसमे भी कुछ ऐसी ही बात दिखाई पडती थी। उनमे से बहुतो के चेहरे गाथिक युग मे जन्मे

हुए लगते थे और बाद की पीढ़ियो द्वारा उनकी अनुकृति कर ली गई है, ऐसा जान पडता था। इनमे शान्त मुद्रा वाली एक ऐसी लडकी थी जिसकी ऊची रोमन नाक थी और जो 'बाबूसाहब' की बडी प्यारी थी। बाबूसाहब का कहना था कि वह सिर से पैर तक एक ब्रेसब्रिज लगती है और उनके एक ऐसे पूर्वज का प्रतिरूप जान पडती है जो हेनरी अष्टम के दरबार मे रहते थे।

पादरी ने कृतज्ञता पाठ किया। यह पाठ वह नही था जो सक्षिप्त और हम लोगो का जाना हुआ है, या जिसे आजकल के शिष्टाचारविहीन दिनो मे आमतौर से देवता के प्रति निवेदित किया जाता है, वह तो पुरातन शैली का काफी लम्बा और शिष्टतापूर्ण पाठ था। पाठ के बाद किंचित् विश्राम ऐसा लगा मानो किसी बात की प्रतीक्षा हो रही हो। सहसा हडबडी के साथ एक खानसामे ने हॉल मे प्रवेश किया। उसके अगल-बगल एक-एक अनुचर बडी-बडी जलती मोमबत्तिया लिए चल रहे थे। वह हाथ मे चादी की एक तश्तरी लिए हुए था, जिसपर बडा-सा शूकर शीर्ष रखा था जिसे 'रोजमेरी' नामक सुगन्धित लतापत्र से सजाया गया था। शूकर-शीर्ष के मुह मे एक नीबू रखा हुआ था। इस शूकर-शीर्ष को बडे सम्मानपूर्वक टेबुल के सिरे पर रखा गया। ज्यो ही उसे रखा गया, वाद्यकार ने धुन बजाई जिसके समाप्त होते ही बाबूसाहब के इशारे पर, हास्यास्पद गम्भीरता की मुद्रा मे आक्सफर्ड वाले पुत्र ने उठकर एक पुराना गीत सुनाया।

यद्यपि अपने मेज़बान की विचित्र सनको के विषय मे मुझे बहुत-कुछ बता दिया गया था, किन्तु एक मामूली-सी चीज को जिस दिखावे के साथ लाकर वहा रखा गया, उससे मुझे कुछ न कुछ उलझन जरूर हुई। बाद मे बाबूसाहब एव पादरी से बातचीत करने पर मुझे मालूम हुआ कि यह वराह-शीर्ष पुराने जमाने मे क्रिसमस के दिन बडे-बडे प्रीतिभोजो मे, बडे समारोहपूर्वक सगीत की ध्वनियो के बीच, लाया जाता था। यह प्रथा उसी का अनुकरण है। बाबूसाहब ने कहा—"मै पुरातन प्रथा को इसलिए नही पसन्द करता कि वह शानदार और अपने-आप मे सुखदायक है, वरन् इसलिए करता हू कि आक्सफर्ड के जिस कालेज मे मै पढता था, वहा इसका पालन किया जाता था। जब मै पुरातन गीत को गाये जाते सुनता हू, तब मुझे उन दिनो की याद आ जाती है जब मैं तरुण और चचल था, मुझे अपने उस पुराने कालेज हॉल और उसमे काले गाउन मे फिरते छात्र-बन्धुओ का स्मरण हो आता है। आज तो उन गरीब

लडको मे-से बहुत से कब्र मे चले गए है ।"

किन्तु पादरी ने, जिसका मन ऐसी स्मृतियो से आक्रान्त नही था, और जो भावना की अपेक्षा पाठ पर अधिक ध्यान रखता था, इस बात पर आपत्ति की कि गीत का जो पाठ आक्ज़ोनियन युवक ने गाया वह उससे भिन्न है जो कालेज मे गाया जाता है । फिर भाष्यकार के शुष्क अध्यवसाय के साथ उन्होने शुद्ध पाठ बताया और बीच-बीच मे टिप्पणिया भी करते गए, किन्तु जब देखा कि लोग उनकी ओर ध्यान न देकर दूसरी-दूसरी बातो मे लग गए है तो अपने श्रोताओ मे कमी होती पाकर उन्होने आवाज़ धीमी कर दी और अपने पास के एक स्थूलशीर्ष भद्रजन से कुछ कहकर बैठ गए ।

टेबुल मज़ेदार भोज्यपदार्थों से भरी थी और लबालब भरे भोजनागारो की इस ऋतु मे ग्रामीण बाहुल्य का प्रतीक मालूम पडती थी । इनके बीच 'प्राचीन सरल्वायन' (बैल के पुट्ठे का मास) को प्रतिष्ठा की जगह मिली हुई थी, मेरे मेज़बान ने बताया कि "यह पुराने आग्ल आतिथ्य का मान है ।" कुछ तश्त ऐसे थे जो विलक्षण ढग से सजाये गए थे और जिनके अलकरण मे स्पष्टत एक पारम्परिकता थी, किन्तु मै अपने को ज्यादा उत्सुक नही दिखाना चाहता था, इसलिए उनके बारे मे सवाल नही पूछा ।

किन्तु मैंने मासभरी कचौरी का तश्त देखा जो मोर पखो से बडे ही शानदार ढग पर सजाया गया था—बिल्कुल उस पक्षी की पूछ की नकल उतारी गई थी जिसके कारण टेबुल का काफी बडा भाग भर गया था । कुछ हिचकिचाहट के साथ बाबूसाहब ने बताया कि यह 'चकोर-कचौडी' (फीजेण्ट पाई) है, यद्यपि 'मोर-कचौडी' ही ऐसे अवसरो पर अधिक प्रामाणिक वस्तु मानी जाती है । किन्तु इस ऋतु मे इतने ज्यादा तादाद मे मोरो की मृत्यु हुई है कि उनका दिल एक और को मारने के लिए तैयार नही हुआ ।[1]

---

१ पुराने जमाने मे शानदार दावतो मे मोर की बड़ी मांग थी । कभी उसके ऐसे समोसे या कचौडी बनती थी जिनके एक सिरे पर उसका सिर तथा कलई की हुई चोंच होती थी और दूसरे पर पूछ । शूरता के लिए दिए जानेवाले भोजो में ऐसी कचौड़ियां परोसी जाती थीं, और युद्धान्वेषी वीर वहा अपने खतरनाक दुस्साहस की प्रतिज्ञा लेते थे ।

जिन अन्य क्रियाओ-द्वारा बाबूसाहब कुछ दूर पर बैठे विचित्र पुरातन परम्पराओ का पालन कर रहे थे यदि मै उन सबका वर्णन करू तो मेरे ऐसे अधिक बुद्धिमान् पाठक चिढ और ऊब जाएगे जिनमे परित्यक्त और विचित्र वस्तुओ के प्रति वह मूर्खतापूर्ण आकर्षण नही है जो मुझमे है। किन्तु उनके बच्चे तथा सम्बन्धी गण उनकी सनको के प्रति जो आदर प्रदर्शित कर रहे थे उसे देखकर मुझे प्रसन्नता हुई। वे लोग तुरन्त ही इन प्रथाओ की प्राणभावना को ग्रहण कर लेते थे और अपने अभिनय मे दक्ष जान पडते थे। निश्चय ही वे कितने ही रिहर्सलो के बीच से गुजर चुके होगे। फिर जिस गहन गम्भीरता के साथ खानसामा तथा दूसरे सेवक-गण अपने-अपने कर्त्तव्य का पालन कर रहे थे—भले वे कितने ही सनकभरे हो, उसे देखकर मेरा मनोरजन हो रहा था। उन सब के चेहरे पर एक पुरानापन था क्योकि बहुत दिनो से वे इसी परिवार मे, इस पुरातन भवन तथा उसके स्वामी की रीतियो एव इच्छाओ का पालन करते हुए, पल रहे थे और, बहुत सम्भव है, गृहस्वामी की सम्पूर्ण सनकभरी पाबन्दियो को सुन्दर गृहरक्षण के प्रामाणिक नियम मानने लगे थे।

जब कपडा हटाया गया तो खानसामा एक बृहदाकार सत्पात्र ले आया, उसमे दुर्लभ एव विलक्षण कारीगरी की गई थी। यह पात्र उसने बाबूसाहब के सामने रख दिया। इसके आने पर सब लोगो ने बडी खुशी प्रकट की। यही था वह मद्यपानोत्सव का मदिरापात्र (वैसेल बाउल), क्रिसमस के उत्सव का प्रसिद्ध पदार्थ। इसमे जो मदिरा थी, उसे बाबूसाहब ने स्वय तैयार किया था और उसे जिस मिश्रणकला की दक्षता के साथ वे तैयार करते थे उसपर उन्हे गर्व था। उनका कहना था कि उसके बनाने की प्रणाली इतनी जटिल है कि मामूली नौकरो की समझ के बाहर है। उसमे जो मसाले पडे थे उनके कारण पियक्कड से पियक्कड का दिल भी उछलने लगता।

इस बृहदाकार पात्र को आलोडित करते समय आन्तरिक प्रसन्नता से बाबूसाहब का चेहरा खिला पडता था। एक बार उसे अपने ओठो तक उठाने और प्रफुल्लित क्रिसमस की शुभाकाक्षा प्रकट करने के बाद उसे उन्होने मण्डली मे घुमवाया और१ हर एक ने उनका अनुकरण किया। उनका कहना था, "यह

---

१ क्रिसमस-भोज मे भी मोर के मास का तश्त बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान रखता था।

सद्भावना का प्राचीन स्रोत है जिसमे सब हृदय आकर एक मे मिल जाते है।"[१]

क्रिसमस की रगरेलियो के इस प्रतीक को घुमाए जाते देख चारो ओर हसी-खुशी का सागर लहराने लगा। रमणियो ने बडी लज्जा के साथ उसे चूमा। जब वह मास्टर साइमन के पास पहुचा तो उन्होने उसे दोनो हाथो से ऊपर उठाया और पुराना गीत गाने लगे —

The brown bowle,
The merry brown bowle
As it goes round about-a,
Fill
Still
Let the world say what it will,
And drink your fill all out-a

The deep canne,
The merry deep canne,
As thou dost freely quaff-a,
Sing
Fling
Be as merry as a king,
And sound a lusty laugh-a[२]

(स्वतन्त्र पद्यानुवाद)

यह भूरा मधुपात्र
यह हर्षित भूरा मधुपात्र
घूम रहा है फेरी करता—हो।

---

१ एक ही प्याले मे पीने का रिवाज कालान्तर मे अपने-अपने अलग प्याले मे पीने के रूप मे बदल गया। जब परिचारक वंसेल लेकर द्वार पर आता था तो तीन बार वैसेल, वैसेल, वैसेल पुकारता था जिसका उत्तर पादरी एक गीत गाकर देता था। — आर्केलाजिया

२. पुअर राबिस अलमानक से।

भर लो,
मदिरा भर लो।
कहने दो दुनिया जो कह ले,
भर लो, पीलो प्याला पहले—हो।
यह गहरी, मस्ती की सुराही
हा, हा, यह मस्ती की सुराही
मुक्त भाव से इसे उडेलो—हो।
गाश्रो
आश्रो
राजा-से तुम खुशी मनाश्रो
खाश्रो, पीश्रो, नाचो गाश्रो—हो।

भोज के बीच ज्यादातर परिवार-सम्बन्धी बातचीत ही होती रही, जिसके बारे मे मै अजनबी था। हा, मास्टर साइमन की किसी चचला विधवा के प्रति प्रेमलीला को लेकर बडा हो-हल्ला मचा। स्त्रियो ने ही आक्रमण शुरू किया, किन्तु पादरी के बाद जो मोटे सिरवाला आदमी बैठा था उसने पूरे भोज के समय तक उसे जारी रखा। वह उन मजाकियो मे-से था जो शिकार शुरू करने मे तो सुस्त होते है परन्तु शिकार का पीछा करने मे बडी चुस्ती दिखाते है। जब भी सामान्य वार्तालाप मे कोई विराम आता तो वह व्यग्य करने से चूकता नही था और जब भी वह मास्टर साइमन पर एक तीर चलाता तो दोनो आखे नचाकर मेरी ओर देख लेता था। साइमन साहब को, इस प्रकार चिढाये जाने मे मजा आता था, जैसा कि बूढे कुमारो को अक्सर ही आता है, वह अवसर का लाभ उठाकर, मुझे धीरे से, फुसफुसाकर यह सूचना देने से न चूकते थे कि जिस महिला का जिक्र किया जा रहा है वह अत्यन्त प्रतिभाशालिनी और सुन्दर महिला है और अपने टमटम मे बैठकर आती है।

इसी प्रकार के निर्दोष उल्लास की धारा के बीच भोज-काल बीत गया। भले ही पुराने हाल ने अपने जमाने मे इससे अधिक रगरेलियो के दृश्य देखे हो किन्तु मुझे सन्देह है कि उसने इससे अधिक सच्चे एव वास्तविक आमोद-प्रमोद का दृश्य देखा होगा। एक उदार प्राणी के लिए अपने चतुर्दिक् आनन्द का वितरण करना कितना सरल है, और एक दयालु हृदय किस प्रकार प्रसन्नता

का स्रोत बनकर अपने निकट की प्रत्येक वस्तु को मुस्कानो से भर देता है। योग्य भूमिपति का हर्षित मुख बिल्कुल सक्रामक था, वे स्वय तो सुखी थे ही, सारी दुनिया को सुखोन्मुख कर रहे थे, और उनकी छोटी-मोटी सनके उनकी उदारता के माधुर्य को और बढा देती थी।

जब स्त्रिया वहा से हट गई तो वार्त्तालाप मे और जान आ गई। अब बहुत-सी ऐसी बाते निकल पडी जो भोज के समय दिमाग मे तो आई थी किन्तु किसी महिला के लिए श्रवणयोग्य न थी और यद्यपि मैं यह तो नही कह सकता कि उनमे बहुत ज्यादा बुद्धि-चातुर्य था, किन्तु उससे ज्यादा हाजिरजवाबी की प्रतियोगिताए देखी है जिनमे इससे कही कम हास्य उत्पन्न होता था। हाजिर-जवाबी, आखिरकार, तीव्रबाण है, चुभनशील सामग्री है और कुछ जठरो (प्राणियो) के लिए बहुत ज्यादा तीक्ष्ण होती है, किन्तु सच्चाई-भरा शुभहास्य एक मुदित मण्डली के लिए तैल एव मदिरा का काम देता है और उस मुदित मित्रमण्डली की बराबरी और कुछ नही कर सकता जहा मजाक होते छोटे है किन्तु कहकहे खूब पैदा करते है।

बाबूसाहब ने कालेज के अपने प्रारम्भिक दिनो की चुहलबाजियो और दुस्साहसिकताओ की कई लम्बी कहानिया सुनाई, कुछ मे तो पादरी भी शरीक थे, यद्यपि ऐसी काली शरीररचनावाली मूर्ति के लिए यह कल्पना करना ज़रा मुश्किल था कि वह ऐसी उन्मत्त किलोलो का कर्ता हो सकता है। दोनो कालेजी सखाओ को देखने से ही मालूम हो जाता था कि अपने जीवन की विभिन्न प्रणालियो से आदमी कितने भिन्न हो जाते है। बाबूसाहब ने यूनि-वर्सिटी छोडी, अपनी पैतृक जागीर मे सुखपूर्वक रहने के लिए, समृद्धि एव सूर्यप्रकाश के स्फूर्तियुक्त उपभोग के लिए और इसीलिए वह इस बुढापे मे भी इतने जिन्दादिल थे, इतने सजीव थे। इसके विपरीत बेचारा पादरी धूलिधूस-रित पुस्तको तथा अपने अध्ययन कक्ष के मौन एव छायाओ के बीच रहने के कारण सूख और झड गया था। फिर भी प्राय बुझी हुई आग की एक चिनगारी अब भी उसमे पडी हुई जान पडती थी जो उसकी आत्मा के तलभाग मे चमक रही थी। और जब बाबूसाहब ने पादरी और एक सुन्दरी ग्वालबाला के आइसिस के तट पर मिलन की गूढ कथा की ओर सकेत किया तो उन्होने जो मुह बनाया उसे हास्य की ही अभिव्यक्ति कहा जा सकता है। और सच तो

यह है कि मुझे आज तक कोई ऐसा बूढा नही मिला है जिसे अपने यौवनकाल की प्रेमसम्बन्धी दुस्साहसिकताओ का वर्णन करने पर सचमुच बुरा लगा हो।

मैने देखा कि मदिरा और 'वैसेल' की धारा सयत विवेक की शुष्कभूमि पर तेजी के साथ फैलती जा रही है। ज्यो-ज्यो विनोद-वृत्ति शिथिल एव नीरस होती गई, त्यो-त्यो मण्डली का हास-विलास बढता गया, शोरगुल भी अधिक होता गया। मास्टर साइमन इस तरह चहक रहे थे जैसे ओस से आर्द्र टिड्डा उछलता है। उनके पुराने गीतो मे गर्मी आती जा रही थी। कुछ देर बाद वह विधवा के विषय मे उन्मत्त प्रलाप करने लगे। उन्होने एक विधवा के प्रति प्रेम-याचना सम्बन्धी एक लम्बा गीत भी सुनाया और मुझे बताया कि वह गीत एक पुरानी पुस्तक 'क्यूपिड्स सालिसिटर फार लव' (प्रेम के लिए कामदेव की याचना) से लिया गया है। यह पुस्तक कुमारो के लिए अच्छी सलाहो से भरी हुई है। उन्होने वादा किया कि मुझे पढने को देगे। उनके गीत का पहला पद यह था—

ही दैट विल वू ए विडो मस्ट नाट डैली,
ही मस्ट मेक हे ह्वाइल दि सन डथ शाइन,
ही मस्ट नाट स्टैण्ड विद हर, शैल आई, शैल आई ?
बट बोल्डली से, विडो, दाऊ मस्ट बी माइन।

(हिन्दी अनुवाद)

विधवा से जो प्रेम-याचना करे न वह शर्माये,
अवसर से चूके न ज़रा वह तब बाज़ी ले जाये,
उसके साथ खड़ा होकर न अनिश्चय मे रह जाये,
साहस धरकर कहे कि रानी, तू मेरी हो जाये।

इस गीत ने मोटे सिरवाले बूढे भद्रजन को भी उत्साहित कर दिया और उन्होने 'जो मिलर' की एक बडी कहानी सुनाने की चेष्टा कई बार की, जो इस प्रसग मे उपयुक्त लगती थी, किन्तु हर बार वे आधी दूर पहुचकर भूल जाते थे, जब कि उनको छोड और सबको कहानी के उत्तराश का ज्ञान था। पादरी पर भी इस उत्फुल्लता का असर हो रहा था और वे भी धीरे-धीरे झपकी लेने लगे, उनका विग सिर की एक ओर खिसक गया। इसी समय दीवान-खाने (ड्राइग रूम) से बुलाहट आ गई, मुझे सन्देह है कि हमारे मेजबान की निजी सलाह पर ही ऐसा होगा क्योकि मै जानता हू कि उनकी विनोदवृत्ति के

साथ सदा शिष्टाचार का भाव बना रहता है।

डिनर टेबुल के हटा लिए जाने के बाद हॉल कुटुम्ब के तरुण सदस्यो को सौप दिया गया और वे आक्सफर्ड वाले छात्र तथा मास्टर साइमन के प्रोत्साहन पर हर तरह की रगरेलिया मचाने और दीवारो को अपनी उछलकूद एव राग-रंग से प्रतिध्वनित करने लगे। मै बच्चो की उच्छृङ्खलता को, विशेषत: ऐसे प्रसन्न समारोहो के अवसर पर, देखकर आनन्दित होनेवाला प्राणी हू इसलिए उनके कहकहे सुनकर मै चुपके से ड्राइग रूम से बाहर निकल आया। मैने देखा कि वे लोग आख-मिचौनी का खेल खेल रहे है। मास्टर साइमन, जो उनकी रगरेलियो के नेता थे, हॉल के बीच आखो पर पट्टी बाधकर अन्धे बनाये गए थे। बच्चे उनके इर्दगिर्द नाच-कूद रहे थे, वे कभी उन्हे चिकोटी काटते, कभी उनके कोट का छोर पकडकर खीचते, कभी तिनको से उन्हे मारते थे। लगभग तेरह वर्ष की एक सुन्दरी नीलनयनी कन्या थी, उसके मुलायम केश उलझे हुए बडे सुन्दर लगते थे, उसका आनन्दोन्मत्त चेहरा तमतमा रहा था, उसकी फ्राक उसके कधो से कुछ अलग-सी हो रही थी—वह हुडदगी लडकी की मूर्ति-सी मालूम पडती थी। वह उन्हे खूब सता रही थी और जिस चतुराई के साथ मास्टर साइमन उससे अपनी रक्षा करते और इस उन्मत्त छोटी अप्सरा को पकड लेते थे उससे तो यही सन्देह होता था कि केवल सुविधा के लिए उन्होने आखो पर पट्टी बाध रखी थी, और उसमे से देख सकते थे।

जब मैं ड्राइग रूम मे लौटा, मैंने देखा कि वहा की मण्डली आग के चतुर्दिक् बैठी, पादरी की बाते सुन रही है। पादरी महोदय पुस्तकालय से लाई एक ऊची पीठ वाली बलूती कुर्सी पर, जो किसी अच्छे कारीगर की बनाई जान पडती थी, आराम के साथ लेटे हुए थे। इस सम्मानार्ह आसन के साथ उनकी छायाकृति तथा उनकी गहरी शीर्ण मुखाकृति पूरी तरह मेल खा रही थी। वे निकटवर्ती ग्रामो के उन लोकप्रिय अन्धविश्वासो एव कहानियो के बारे मे सुना रहे थे जिनका परिचय उन्हे पुरातन वस्तुओ का अनुसधान करते हुए प्राप्त हुआ था। मुझे तो कुछ-कुछ सन्देह होता है कि वे खुद भी इन मूढ विश्वासो के शिकार थे, जैसा कि देश के एकान्त एव निर्जन भाग मे रहकर अध्ययनशील जीवन बितानेवाले तथा अद्भुत चमत्कारो से पूर्ण पुरातन रहस्य-ग्रन्थो का पाठ करनेवाले विरागी प्राय हो जाते है। चर्च-वेदिका के पास की समाधि

पर पडे जिहादी के पुतले के विषय मे निकटवर्ती कृषको मे जो प्रवाद प्रचलित थे उनमे से कई उन्होने सुनाए। चूकि उस अचल मे वही इस प्रकार का एक-मात्र स्मारक था, गाव की स्त्रियो मे उसके विषय मे अनेक मूढ विश्वास प्रचलित थे। कहा जाता था कि तूफानी रातो मे, विशेषत जब बादल गर्जते हो, वह समाधि से उतरकर चर्च के आगन मे घूमता फिरता है, एक बुढिया ने, जिसकी कुटिया चर्च-प्रागण के बिल्कुल पास है, चर्च की खिडकियो से देखा कि चादनी मे वह इधर-उधर टहल रहा है। लोगो का खयाल था कि मृतक से किसी गलती का परिशोध करना रह गया होगा, या फिर वहा कोई गुप्त खजाना होगा, जिसके कारण प्रेतात्मा परेशानी और बेचैनी की हालत मे घूमती रहती है। कुछ ने कहा कि कब्र मे स्वर्ण एव रत्न गडे हुए है जिसपर प्रेतात्मा पहरा देती है। पुराने जमाने के एक चर्च-कर्मचारी की कथा भी प्रचलित है। कहते है कि वह रात मे चोरी से शवाधार तक पहुच गया किन्तु छूने ही पुतले के मर्मर हस्त ने उसे ऐसा चाटा रसीद किया कि वह वही पटरी पर बेहोश होकर गिर पडा। बहुत-से साहसी ग्रामवासी अक्सर इन कहानियो को सुनकर हस पडते है किन्तु वे भी अकेले वहा जाने मे हिचकते है।

इन कहानियो से तथा इनके बाद जो बाते कही गई, उनसे मालूम हुआ कि निकटवर्ती सम्पूर्ण अचल मे जिहादी इन प्रेत-कथाओ का एक लोकप्रिय नायक है। कुटुम्ब के परिचारकगण भी कहते है कि उसका जो चित्र हॉल मे टगा है उसमे भी कुछ न कुछ अति प्राकृतिक विशेषता अवश्य है। उनके मत से आप हॉल के चाहे जिस भाग मे जाइए योद्धा की आखे आप पर ही केन्द्रित रहेगी। बूढे द्वारपाल की पत्नी इसी कुटुम्ब मे जन्मी और पली है और परिचारिकाओ मे सबसे ज्यादा बातूनी है। वह भी कहती हे कि जब वह छोटी थी तो अक्सर सुनती थी कि 'मिड समरडे' की सध्या को जब सब जगह के भूत-प्रेत बैताल दिखाई पडने लगते है और चलते-फिरते नजर आते है, जिहादी घोडे पर चढकर तस्वीर से नीचे उतर आता था, घर मे इधर-उधर घूमता था और अपनी समाधि तक जाता था। उस समय चर्च का दरवाजा धीरे-से अपने-आप खुल जाता था, यद्यपि उसके लिए इसकी कोई आवश्यकता नही थी क्योकि वह तो द्वार बन्द होने पर, यहा तक कि पत्थर की दीवारो को पार करके भी चला जाता था। एक बार तो दुग्धालय की एक लड़की ने देखा

कि पार्क के बडे फाटक की दो छडो के बीच, कागज की तरह पतला होकर वह निकल गया।

मैंने देखा कि बाबूसाहब ने भी इन मूढ विश्वासो को बढाने मे सहायता की है। वे स्वय तो अन्धविश्वासी नही है किन्तु दूसरो को उस रूप मे देखने के बडे शौकीन है। बडी गम्भीरता से वे पास-पडोस की भूत-कथाओ को सुनते है और चामत्कारिक बातो के सम्बन्ध मे द्वारपाल की पत्नी की विचक्षणता के कारण उसको बहुत ज्यादा पसन्द करते है। वह खुद भी पुरानी गाथाओ एव रूमानी रचनाओ के बहुत अच्छे पाठक रह चुके है और इस बात पर प्राय. अफसोस करते है कि उनको वह सच नही मान सकते। उनकी समझ से मूढ विश्वासी को किसी कल्पना-लोक मे ही रहना चाहिए।

जब हम पादरी की कहानियो को बडे ध्यान से सुन रहे थे, हमारे कानो मे हॉल से आता हुआ विविध प्रकार की मिश्रित ध्वनियो का तूफानी स्वर फट पडा। इसमे नीरस बाजो की खनखनाहट, अनेक लघु स्वरो का कोलाहल तथा लडकियो की खिलखिलाहट मिली हुई थी। सहसा दरवाजा खुल गया और कतारबन्द एक मण्डली कमरे मे आ गई,—ऐसा लगा मानो परी का दरबार खत्म हो गया। उस अथक प्राणी मास्टर साइमन ने 'अव्यवस्था के राजा' (लार्ड आफ मिसरूल) का कर्त्तव्य पालन करते हुए छद्मवेश के अभिनय की योजना सोची, अपनी सहायता के लिए आक्सफोर्ड के युवक तथा तरुण अधिकारी को ठीक किया, वे दोनो तो हुडदग और मौज-मजे के लिए तैयार थे ही। बूढे गृहरक्षक से भी सलाह ले ली गई, पुराने कपडो की आलमारिया खोलकर वे सब बढिया चीजे निकाल ली गई जो पीढियो से अधेरे मे पडी हुई थी, बच्चो एव किशोरो को चुपचाप हॉल एव दीवानखाने से बुला लिया गया, और सबको छद्मरूप मे खूब अच्छी तरह सजाया गया।

कारवा के आगे-आगे प्राचीन 'क्रिसमस' का रूप धारण किए मास्टर साइमन चले आ रहे थे। वे किसी पुरातन गृहरक्षक के पेटीकोट पहने हुए थे। सिर पर एक लम्बा चोगे-सा हैट था जो किसी ग्रामीण मीनार पर लगाए जाने के योग्य था और कवेनेण्टरो (ईश्वर एव यहूदियो या ईसाइयो मे हुए इकरारनामे मे विश्वास करनेवालो) के जमाने का रहा होगा। उसके नीचे से उनकी नाक, तुषारपीडित आभा के साथ, इस तरह मुडकर निकल आई थी जैसे दिसम्बरी

भट्ठी का मुह हो। उनके साथ थी वही नीलनयनी चचला जो 'डेम मिसपाई' बनी थी। वह धूमिल पडे जडाऊ परिधान मे थी जो पेट पर लम्बा झूल रहा था, सिर पर कलगीदार हैट था, पावो मे ऊची एडी के जूते थे। तरुण अफसर राबिनहुड बना था।

उसके परिधान मे गम्भीर अनुसधान का कोई साक्ष्य नही दिखाई पडता था। उसकी जगह रम्य एव आकर्षक दीखने की वृत्ति थी जो अपनी पत्नी की उपस्थिति मे तरुण वीर के लिए स्वाभाविक थी। सुन्दर ग्राम्य वस्त्र पहने सुन्दरी जूलिया उसकी बाह पर झुकी हुई थी। वह 'मेड मेरियन' का पार्ट कर रही थी। शेष लोगो ने भी तरह-तरह के वेश बना रखे थे, कई लडकिया ब्रेसब्रिज वश की पुरानी सुन्दरियो के वस्त्रालकारो मे जकडी हुई-सी लगती थी, कई किशोरो ने जली छाल से गलमुच्छे बना रखे थे और बडे-बडे अगरखो, झूलती-बाहो तथा बटनदार उपकेशो या कटोपो मे 'रोस्ट बीफ' (तला गोमास) 'प्लम पुडिग' (मेवे मसालेदार हलुवा) तथा अन्य पुरातन भोजपदार्थो का पार्ट कर रहे थे। यह सारी मण्डली 'किग आफ मिसरूल' अव्यवस्था के राजा--आक्सफोर्ड वाले युवक के नेतृत्व मे काम कर रही थी। हमने देखा कि वह अपने सोटे के जरिए तमाशे के छोटे अभिनेताओ पर बडा शरारत-भरा शासन स्थापित किए हुए है।

पुरानी प्रथा के अनुसार जब ढोल बजाकर उसके पचमेल दल का अभियान शुरू हुआ तो कोलाहल एव हर्ष अपनी सीमा पर पहुच गया। मास्टर साइमन ने जिस राजकीय शान से, 'पुरातन क्रिसमस' के रूप मे अपनी अप्रतिम, यद्यपि ठहाका मारती हुई, डेम मिस पाई (मास-पूरित कचौडी) के साथ नाचते हुए प्रवेश किया, उसकी बडी प्रशसा हुई। इसके बाद सब पात्रो ने मिलकर सहनृत्य शुरू कर दिया। ऐसा जान पडता था कि कुटुम्ब के पुराने चित्र अपने चौखटो से निकलकर नीचे आ गए है और इस नाचरग मे शामिल हो गए है। अगल-बगल, दाहिने बाए विभिन्न सदिया डटी हुई थी, अन्धकार युग एकपादनृत्य कर रहे थे, तथा क्वीन बेस के युग, मध्यभाग मे अनुवर्त्तिनी पीढियो की शृङ्खला-द्वारा, आमोदपूर्वक उछलकूद रहे थे।

बाबू साहब बालकोचित प्रसन्नता के साथ मजा लेते हुए इन अद्भुत तमाशो और अपने पुरातन वस्त्रागार के पुनर्जीवन का यह दृश्य देख रहे थे। वे

हर्षविभोर हो अपने हाथ मल रहे थे, यद्यपि पादरी प्राचीन मोर-नृत्य[1] (पाओन-नृत्य) पर, जिससे उन्होने अपने नृत्य का विचार ग्रहण किया था, जो प्रामाणिक व्याख्यान दे रहे थे, उसका एक शब्द भी उन्हे सुनाई नही पड रहा था। मेरी आखो के आगे निर्दोष सनक और आनन्द के जो विविध दृश्य गुजर रहे थ, उनके कारण मै निरन्तर उत्तेजना की मनोदशा मे था। जब उन्मत्त उल्लास और हार्दिक आतिथ्य शिशिर की ठिठुरन और धुधलके के बीच प्रवाहित हो उठे हो और वृद्धावस्था ने अपनी उदासीनता दूर फेककर एकबार फिर तरुणाई के आमोदो की ताजगी को ग्रहण कर लिया हो तो कौन उत्साहित नही होगा ? इन दृश्यो मे मेरी दिलचस्पी इसलिए भी थी कि ये प्रथाए शून्य के गर्त्त मे विलीन होती जा रही है, और कदाचित् इग्लैण्ड मे यही एक कुटुम्ब रह गया है, जहा उन सबका पूर्ण सूक्ष्मता के साथ अब भी पालन किया जा रहा है। इन रगरेलियो मे अनोखापन भी था जिसके कारण उनमे विशेष स्वाद आ गया था। यह सब स्थान एव काल के उपयुक्त था, हास्य एव मदिरा से प्रकम्पित भवन लम्बे बीते युगो के हर्ष को प्रतिध्वनित कर रहा था।[2]

परन्तु क्रिसमस और उसके केलि-किलोल के विषय मे बहुत हो चुका, समय आ गया है कि मैं अपनी बकवास बन्द करू। मुझे लगता है, मानो मेरे

---

१ 'पाओ' शब्द 'पाओ' अर्थात् 'पीकाक' (मयूर) से निकला है। इस नृत्य के सम्बन्ध मे सर जान हाकिस लिखते है—"यह गम्भीर और शानदार नृत्य है, पुराने जमाने मे भद्रजन टोपिया पहने, तलवार लगाए हुए, लम्बे चोगे वाले गाउन पहिने तथा सामन्तगण अपने परिधान मे अलकृत हो इसमे सम्मिलित होते थे। महिलाए अपने लम्बे पीछे फैले घाघरे पहनकर नाचती थीं, जिससे वे मोर जैसी मालूम पड़ती थी।"—हिस्ट्री आफ म्यूजिक।

२ जब पहली बार यह लेख प्रकाशित हुआ था तब कुछ लोगो ने घोषणा की थी कि गावो का पुराने फैशनवाला क्रिसमस अब असामयिक हो चुका है। किन्तु उसके बाद भी जब लेखक डर्बीशायर और यार्कशायर के पास अपने क्रिसमस के अवकाश मे ठहरा था तो उपर्युक्त प्रथाओ को वहां अत्यन्त स्फूर्ति के साथ मनाए जाते देखने का अवसर उसे प्राप्त हुआ था। उसका कुछ हाल एक दूसरे लेख मे भी दिया गया है।

गम्भीर पाठक सवाल कर रहे है—'इन सब बातो से प्रयोजन क्या निकलेगा, इस वार्त्ता से दुनिया की बुद्धि मे क्या वृद्धि होगी ?' हाय ! क्या दुनिया की सीख के लिए ज्ञान की कुछ कमी है ? और यदि है भी तो क्या हजारो योग्यतर लेखनिया उसमे सुधार एव वृद्धि के लिए प्रयत्नशील नही है ? दूसरो को सिखाने की अपेक्षा उनको खुश करना, उपदेशक की अपेक्षा सखा का अभिनय करना, अधिक अच्छा है ।

फिर प्रज्ञा की वह कौन-सी मात्रा है जो मै ज्ञान के पुज मे डाल सकता हू ? और मुझे यह विश्वास ही कैसे हो कि मेरे परम विचारशील निष्कर्ष भी दूसरो की सम्मतियो के लिए प्रामाणिक पथदर्शक हो सकते ह ? किन्तु जब मै मनोरजन के लिए लिखता हू तो असफल होने पर उससे केवल एक ही बुराई हो सकती है—मेरी अपनी निराशा । और सौभाग्यवश इन बुरे दिनो मे यदि मै चिन्ताग्रस्त भौहो की एक सिलवट भी दूर कर सका, अथवा शोक के क्षणो मे किसी भरे हृदय को प्रसन्न कर सका, यदि मानव द्वेष के सघन होते हुए पटल को जब-तब चीरकर प्रवेश कर सका, मानव स्वभाव के उदार एव मृदुल पक्ष को प्रोत्साहित कर सका और अपने पाठक को अपने तथा अपने मानव-बन्धुओ के प्रति शुभभावना से पूर्ण कर सका तो समझूगा कि मेरा लिखने का श्रम व्यर्थ नही गया ।

लन्दन की पुरानी चीज़ें

मुझमे पुरातत्त्व के अनुसन्धानकर्त्ता का कुछ न कुछ अश जरूर है, और मै प्राचीन युग के चिह्नो एव अवशेषो की खोज मे लन्दन मे घूमा करता हू। ये चीजे ज्यादातर नगर के घने भागो मे मिलती है, और ईट-चूने (पक्की इमारतो) के जगल-द्वारा निगल ली गई—प्राय नष्ट एव विलीन ही हो गई है किन्तु फिर भी अपने चतुर्दिक् के सामान्य नीरस ससार से काव्यात्मक एव रूमानी अभि-रुचि प्राप्त करती रहती है। नगर के हाल के ही ग्रीष्म-परिभ्रमण मे इस प्रकार के एक उदाहरण से मै चमत्कृत हो उठा। मेरी समझ से नगर की खोज गर्मी के दिनो मे ही करनी चाहिए, तभी कुछ उपयोगी परिणाम निकलते है। इस ऋतु मे नगर शिशिर के धूए एव कोहरे तथा वर्षा एव कीचड से मुक्त होता है। कुछ देर से मैं फ्लीट स्ट्रीट मे जन-प्रवाह के थपेडे खाता चला जा रहा था। गर्म ऋतु ने मेरे ज्ञानतन्तुओ—भावनाओ—को निर्बन्ध कर दिया था और हर विसगति, धक्कामुक्की और विषम स्वर की ओर मेरा ध्यान चला जाता था। शरीर थक गया था, उत्साह शिथिल हो चुका था और जिस व्यस्त भीड के बीच से मुझे राह बनानी पड रही थी, उसके प्रति अनुकूलता की भावना मेरे अन्दर से खोती जा रही थी। अन्त मे निराशा से खीझकर मै भीड को चीरता हुआ एक गली मे निकल गया तथा कई मलिन मोडो एव कोनो से गुज़रता हुआ एक विचित्र एव शान्त चौक मे पहुच गया। इसके बीच मे एक दूर्वाच्छादित भूमि-खण्ड था जो देवदारुवृक्षो से आच्छादित था। एक फौआरा अपनी रजत जलधारा से उसे निरन्तर हरा और ताजा रखता था। पत्थर की बेंच पर एक छात्र हाथ मे किताब लिए बैठा था, वह कुछ तो किताब पढ रहा था और कुछ बच्चो के साथ चहलकदमी करती हुई दो तीन सुन्दरी नर्सरी कुमारियो (परिचारिकाओं) पर ध्यान लगाये हुए था।

मेरी दशा उस अरब की भाति थी, जो मरुस्थल की मारक अनुर्वरता के

बीच सहसा किसी शाद्वल भूमिखण्ड मे पहुच गया हो । धीरे-धीरे उस स्थान की शान्ति एव शीतलता ने मेरे उत्तेजित तन्तुओ (मन) को शान्त कर दिया और मुझ मे पुन स्फूर्ति आ गई । अब मै फिर चल पडा और अन्त मे एक बहुत पुराने गिर्जे के पास जा पहुचा । उसका सिहद्वार भारी एव समृद्ध सैक्सन स्थापत्य का नमूना था । अन्तरग भाग गोल एव ऊचा था और उसमे ऊपर से प्रकाश आ रहा था । चारो ओर पुराने युगो की स्मारक-समाधिया बिखरी पडी थी, जिनपर कवच एव अस्त्रधारी योद्धाओ के मर्मरनिर्मित पुतले फैले हुए थे । इनमे से कुछ पुतलो के हाथ भक्तिपूर्वक सीने पर क्रूस की शकल मे रखे थे, दूसरे ऐसे थे जो कब्र मे भी तलवार की मूठ पकडे हुए शत्रुता विकीर्ण कर रहे थे । कुछ पलथी मारे बैठे थे जिससे पता लगता था कि वे सम्प्रदाय के वीर सैनिक रहे होगे, जिहाद पर पवित्र भूमि (होली लैण्ड-पैलेस्टाइन) गए रहे होगे। यह इमारत क्षुद्र व्यस्तता एव व्यापार के केन्द्र मे स्थित थी, और सासारिक प्राणी के लिए इससे ज्यादा प्रभावशाली उपदेश और कहा प्राप्त होगा कि धनार्जन के व्यस्त जीवन के राजपथ से जरा मुड जाए और इन छायाच्छादित समाधियो के बीच, जहा सब कुछ धुध, धूलि एव विस्मरण मात्र है, थोडी देर बैठे ।

इसी प्रकार की एक दूसरी पर्यवेक्षण-यात्रा मे मैने 'व्यतीत ससार' का एक स्मृतिचिह्न देखा जो नगर के केन्द्र भाग मे परिबद्ध था । कुछ देर से मै नीरस एव अरुचिकर सडको पर फिर रहा था , वहा कुछ भी ऐसा नही था जो आखो को आकर्षित या कल्पना को प्रदीप्त करे । सहसा मैने देखा कि नष्टप्राय प्राचीन का एक गाथिक फाटक मेरे सामने है । वह एक ऐसे चतुष्कोण की ओर खुलता था जो शानदार गाथिक इमारत का प्रागण था—उसका सिहद्वार खुला हुआ मानो आमत्रण दे रहा था । निश्चय ही यह एक सार्वजनिक इमारत थी और चूकि मैं पुरातन की खोज मे था, मै कुछ हिचकिचाहट-भरे कदम रखता अन्दर गया । चूकि वहा कोई मेरा विरोध करने या मुझे खरी-खोटी सुनानेवाला नही दिखाई पडा, मै आगे बढता हुआ एक बडे हॉल मे पहुच गया । हॉल की महराबदार छत बहुत ऊची थी , उसमे एक बलूती दालान भी था । सभी गाथिक स्थापत्यकला के नमूने थे । हॉल के एक छोर पर एक बडा आतिशदान था जिसके चारो ओर ऊची पीठवाली लकडी की बेचे रखी थी । दूसरे छोर पर एक चबूतरा या मच था जिसके ऊपर पुरानी वेशभूषा मे एक आदमी की तस्वीर

लगी हुई थी। तस्वीर मे आदमी एक लम्बा लबादा पहिने हुए दिखाया गया था, उसके श्रद्धा उत्पन्न करनेवाली सफेद दाढी थी।

सम्पूर्ण सस्थान मे सन्यासोपम शान्ति एव एकान्त का वातावरण था और सबसे रहस्यमय आकर्षण की बात तो यह थी कि जबसे मै देहली पार कर इस इमारत मे आया था मुझे किसी भी मानवप्राणी के दर्शन नही हुए थे। एकान्त से उत्साहित हो मै धनुषाकार एक बडे वातायन के पास बैठ गया। वातायन से पीत सूर्य-प्रकाश का प्रवाह आ रहा था जो जहा-तहा रगीन शीशे की चौखटो की आभा से बहुरगी हो रहा था। एक खुले गवाक्ष से मन्द वासन्ती पवन आ रहा था। एक पुराने बलूती टेबुल पर अपनी बाह फैलाकर अपने हाथ पर सिर रखे मैं इस इमारत का प्राचीन काल मे क्या-क्या उपयोग होता रहा होगा, यह सब सोचता हुआ दिवास्वप्न मे डूब गया। इतना तो साफ दिखाई पड रहा था कि इसका आरम्भ किसी आश्रम के रूप मे हुआ होगा—शायद पुराने जमाने मे ज्ञान की वृद्धि के लिए ऐसे विद्यालय के रूप मे इसकी स्थापना हुई होगी जहा सहनशील सन्यासी, आश्रम के सघन एकान्त मे, पृष्ठ पर पृष्ठ, ग्रन्थ पर ग्रन्थ अध्ययन करता हुआ इस इमारत की विशालता को अपने मस्तिष्क मे भरता रहा होगा।

जब मैं इस प्रकार ध्यानमग्न बैठा सोच रहा था तो हॉल के ऊपरी छोर पर बने तोरण मे एक छोटा दिलहेदार दरवाजा खुला और लम्बे काले लबादे पहने हुए बहुसख्यक धवलकेशी वृद्धजन उसमे से एक-एक कर अन्दर आए और उसी तरह, एक शब्द भी बोले बिना, हॉल मे आगे बढते गए, उनमे से प्रत्येक जब मेरे पास से गुज़रा तो उसका चेहरा पीला पड गया। निचले छोर के दरवाजे से वे सब लुप्त हो गए।

मैं तो उन्हे देखकर ठक-सा रह गया। उनके काले लबादे और पुरातनकालिक मुद्राए इस अत्यन्त श्रद्धास्पद एव रहस्यमय अट्टालिका के अनुकूल ही थी। ऐसा लगा मानो जिन बीते वर्षों की प्रेतात्माओ के विषय मे मै सोच रहा था, वे ही मेरी आखो के सामने से गुज़र रही हो। मै ऐसी कल्पनाओ मे मग्न रूमानी भावना के साथ, सघन यथार्थ के केन्द्र मे स्थित उस इमारत की, जिसे मैंने छायाओ—भूतप्रेतो—का क्षेत्र मान लिया था, खोज करने चला।

मेरा भ्रमण मुझे अन्त प्रागणो, दालानो तथा ध्वसावशिष्ट कुटीरो की शृखला के बीच से ले चला, क्योकि मुख्य भवन के साथ विविध युगो तथा विविध

शैलियो मे बनी और भी सम्बद्ध इमारते थी। एक खुले स्थान पर बहुत-मे लडके, जो निश्चय ही इसी सस्थान के होगे, खेल खेल रहे थे, किन्तु मैं जहा भी गया काले लबादे मे उन रहस्यमय धवलकेशी वृद्धो को अवश्य पाया। कही वे इकले घूमते दिखाई पडते थे, कही झुण्डो मे बात करते दीखते थे। ऐसा जान पडता था कि वे इस स्थान मे सर्वत्र व्याप्त जिन्न है। अब मुझे पुराने युग के उन विद्यालयो का स्मरण हो आया जिनके विषय मे मैने पढा था कि वहा न्यायिक, ज्योतिष भूशकुनविद्या, प्रेतसिद्धि तथा अन्य निषिद्ध एव ऐन्द्रजालिक विज्ञानो की शिक्षा दी जाती थी। क्या यह भी तो वैसा ही कोई सस्थान नही है ? और ये काले लबादे वाले वृद्धजन जादूटोने के अध्यापक तो नही है ?

जब मेरी नजर एक ऐसे कक्ष पर पड रही थी जिसमे हर तरह के विलक्षण एव विरूप पदार्थ टगे थे तो मेरे दिमाग मे यही बाते आ रही थी। वहा जगली जातियो के युद्धास्त्र थे, विचित्र मूर्तिया थी भुसभरे मगर थे, आले पर बोतलो मे भरे साप तथा अन्य भयावने जीव रखे थे, पुरातन शैली के एक पलग के ऊचे चदोवे पर एक मानव खोपडी दात बिचका रही थी जिसके दोनो तरफ एक-एक सूखी हुई बिल्ली रखी हुई थी।

इस रहस्यमय कक्ष को, जो प्रेतसाधक की योग्य प्रयोगशाला जान पडता था, अच्छी तरह देखने के खयाल से मै और नजदीक गया, तो यह देखकर चौक पडा कि एक आदमी का चेहरा एक धुधले कोने मे मेरी ओर नज़र गडाए हुए है। यह एक नाटे, झुर्रीदार सूखे वृद्ध व्यक्ति का चेहरा था, उसके गाल पतले थे, आखे चमकीली थी और सफेद भौहे कमानीदार और आगे की ओर बढी हुई थी। पहले तो मुझे शुबहा हुआ कि चमत्कारपूर्ण ढग पर सुरक्षित यह कोई 'ममी' तो नही है किन्तु यह मूर्ति हिली और मैने देखा कि जीवित है। यह भी उन्ही काले लबादे वाले बूढे आदमियो मे-से एक था और जब मैंने उसकी विचित्र शरीर-रचना, उसके अप्रचलित परिधान तथा उन भयानक एव अमगल पदार्थों पर ध्यान दिया तो मुझे लगा कि मैं प्रधान जादूगर के पास पहुच गया हूं, जो इस ऐन्द्रजालिक बिरादरी पर शासन करता है।

मुझे दरवाजे के पास ठिठकता देखकर वह उठा और मुझे अन्दर प्रवेश करने को आमत्रित किया। मैने बडी हिम्मत के साथ उसके आदेश का पालन किया क्योकि मै कैसे जान सकता था कि उसके सोटे का एक चक्कर मुझे ही

किसी अद्भुत दैत्य के रूप मे न बदल देगा या वह आले पर रखी बोतलो मे से किसी एक मे मुझे कैद न कर देगा ? किन्तु वह ऐन्द्रजालिक के सिवा और ही कुछ निकला और उसके सरल वार्त्तालाप ने शीघ्र ही उस सब जादू एव रहस्य को दूर कर दिया जिससे इस पुरातन इमारत और उसके पुराने अधिवासियो को मैंने आच्छन्न कर लिया था।

मालूम यह हुआ कि मैं, वार्द्धक्य के कारण असमर्थ व्यापारियो तथा अपक्षीण गृहस्थो के एक ऐसे प्राचीन अनाथाश्रम के केन्द्र मे पहुच गया हू जिसके साथ सीमित सख्या मे लडको का एक स्कूल भी है। यह एक पुराने सन्यासी-आश्रम मे दो सदियो से भी पहले खुला था और अब भी उसकी वही प्रकृति और वातावरण कायम है। काले लबादे पहने बूढे आदमियो की जो पक्ति मेरे सामने से गुजरी थी और जिन्हें मैने जादूगर समझ लिया था, वस्तुत पेशनर थे और गिर्जे की प्रात कालीन प्रार्थना से लौट रहे थे।

जान हालुम नामक विचित्र पदार्थो के जिस नाटे सग्रहकर्त्ता को मैंने प्रधान जादूगर समझ लिया था, वह छ साल से यहा रह रहा था और उसने अपनी वृद्धावस्था के इस अन्तिम नीड को, अपने जीवनभर के सचित स्मृतिचिह्नो एव दुर्लभ वस्तुओ से सजा रखा था। खुद अपने बयान के अनुसार वह एक प्रकार का पर्यटक था, एक बार फ्रास हो आया था और हालैण्ड जाते-जाते रह गया था और उसे इसका दुख था। स्पष्टत वह सरलतम ढग का पर्यटक था।

अपनी प्रवृत्तियो मे वह अभिजातवर्गीय था और जैसा कि मुझे मालूम हुआ, पेशनरो के-से सामान्य जनो से दूर रहता था। उसके दो मुख्य साथी थे। एक तो अन्धा था और लैटिन (लातीनी) तथा ग्रीक (यूनानी) बोलता था—मतलब ऐसी भाषाए जिनसे हालुम बिल्कुल अपरिचित था। दूसरा था एक दुर्बल और टूटा हुआ आदमी, जिसके पिता उसके लिए चालीस पौण्ड छोड गए थे, इसके अतिरिक्त दस हजार पौण्ड उसकी पत्नी का विवाहाश भी था। नाटा हालुम ऐसी बडी रकमो का अपव्यय करने को अभिजात-रक्त एव उच्च भावना का निश्चित चिह्न मानता था।

पुनश्च पुरातन युग के जिस चित्रात्मक अवशेष की बात मैंने अपने पाठको से की है वह वही है जिसे "चार्टर हाउस" (मूलत "चार्टरयूज़") कहा जाता है। सर टामस सटन ने १६११ ई० मे किसी पुरातन कान्वेण्ट के भग्नावशेष मे इसे

स्थापित किया था। यह उन श्रेष्ठ दातव्य सस्थाओ मे से एक थी जो व्यक्तिगत दान से चलाई जाती है और लन्दन के आधुनिक परिवर्त्तनो एव नवीनताओ के बीच भी पुराने युगो की विचित्रता एव पवित्रता के साथ कायम है। यहा अस्सी टूटे हुए आदमी, जिन्होने कभी अच्छे दिन देखे है, रह रहे है। उन्हे वृद्धावस्था मे भोजन, वस्त्र, ईधन दिया जाता है तथा निजी खर्चों के लिए थोडी रकम की भी व्यवस्था है। पुराने सन्यासियो की भाति वे हाल मे साथ बैठकर भोजन करते है। इस सस्थान के साथ चवालीस लडको का एक स्कूल भी है।

इस विषय पर मैने स्टो के ग्रन्थ को देखा है। वह धवलकेशी पैशनरो के दायित्व के विषय मे लिखता है—"उन्हे सस्था की किसी भी बात मे दखल देने का अधिकार नही है। उनका काम इतना ही है कि वे ईश्वर की पूजा-प्रार्थना मे उपस्थित हो, और चू-चर्र या शिकायत किए बिना जो कुछ मिले उसे कृतज्ञतापूर्वक ग्रहण करे। उन्हे अस्त्र-शस्त्र, लम्बे बाल, रगीन जूते रखने की मनाही है। वे अपने हैट मे पख या कलगी नही लगा सकते, न लफगो की-सी पोशाक पहन सकते है। सच पूछिए तो वे ही सुखी है जो दुनिया की चिन्ताओ एव दुखो से दूर है, और ऐसे अच्छे स्थान मे रह रहे है जैसे मे ये वृद्ध जन रहते है। इन्हे अपनी आत्माओ की सार-सम्हाल रखने, ईश्वर की सेवा करने और बन्धुवत् प्रेम के साथ रहने के सिवा और कोई चिन्ता नही है।"

मैने अपने पर्यवेक्षण से पूर्वोक्त जो "स्केच" दिया है उसमे जिन लोगो को दिलचस्पी हो या जो लन्दन के रहस्यो के विषय मे कुछ और जानना चाहते हो उनके लिए मै स्थानीय इतिहास के उस ज्ञानखण्ड (कथा) की सिफारिश करना चाहूगा जो एक छोटे भूरे उपकेश तथा सूघनी के-से रग के कोटवाले वृद्ध ने मुझे बताई थी। चार्टर हाउस देखने के बाद ही उससे मेरा परिचय हुआ था। मैं स्वीकार करता हू कि पहले मुझे शका हुई थी कि कही यह उन अप्रामाणिक कथाओं मे से एक तो नही है जो मेरे-जैसे जिज्ञासु पर्यटको के गले मढ दी जाती है और जिनके कारण हमारे चरित्र की सत्यवादिता पर निन्दा थोपी जाती है। परन्तु जाच के बाद मुझे लेखक की सत्यवादिता के विषय मे सन्तोषजनक आश्वासन प्राप्त हुए है, बल्कि मुझे बताया गया है कि जिस मनोरजक अचल मे वह रहता है उसका पूर्ण एव यथार्थ इतिहास सकलित करने मे वह सचमुच लगा हुआ है। निम्नलिखित रचना को उसका नमूना समझना चाहिए।

लिटिल (लघु) ब्रिटेन

लन्दन महानगरी के मध्य एक छोटी बस्ती है जिसमे सकरी गलियो एव प्रागणो तथा जीर्ण-शीर्ण मकानो का ढेर है। इसको 'लिटिल ब्रिटेन' के नाम से पुकारा जाता है। इसके पश्चिम मे क्राइस्ट चर्च स्कूल एव सेण्ट बार्थोलोम्यू अस्पताल तथा उत्तर मे स्मिथफील्ड एव लागलेन है, समुद्र की भुजा की भाति एल्डर्सगेट स्ट्रीट इसे नगर के पूर्व भाग से और मुह बाए खाडी के समान बुल-ऐण्ड-माउथ स्ट्रीट उसे बुचर लेन तथा न्यूगेट के भागो से अलग करती है। इस प्रकार की सीमित एव नामाकित लघु बस्ती की ओर, पेटरनोस्टर-रो, आमेन कार्नर तथा आवेमेरिया लेन के अन्तर्वर्ती मकानो के ऊपर सिर उठाए हुए सेण्ट-पाल का महान् गुम्बद, मातृभाव से देख रहा है।

बस्ती का ऐसा नाम (लिटिल ब्रिटेन) पडने का कारण यह है कि पुराने जमाने मे यह ड्यूक आफ ब्रिटेनी का निवास स्थान था। ज्यो-ज्यो लन्दन की वृद्धि होती गई, बडे लोगो और फैशन का पश्चिमी भाग की ओर स्थानान्तरण होता गया और व्यापार ने भी उनके द्वारा छोडे सूने गृहो पर अधिकार कर लिया। कुछ समय के लिए तो लिटिल ब्रिटेन ज्ञान की मण्डी बन गया, वहा व्यस्त एव उत्पादन-बहुल पुस्तक विक्रेताओ की बाढ आ गई। कालान्तर मे उन्होने भी इसका त्याग कर दिया, और न्यूगेट स्ट्रीट के महत् अन्तरीप के उस पार पेटरनोस्टर रो एव सेण्टपाल चर्चयार्ड मे अपना अड्डा जमाया, जहा आज भी वे बढते एव गुणित होते जा रहे है।

यद्यपि इस प्रकार उसका ह्रास हो गया है, किन्तु लिटिल ब्रिटेन पर आज भी उसके पूर्व गौरव की छाप दिखाई पडती है। कुछ मकान ध्वस्तप्राय है किन्तु उनके अग्रभाग भीषण चेहरो तथा अज्ञात पक्षियो, जानवरो एव मछलियो की जीर्ण बलूती नक्काशी मे अत्यन्त समृद्ध है। उनमे ऐसे फल एव फूल भी कटे हुए दिखाई पडते है जिनका वर्गीकरण करने मे एक प्रकृतिशास्त्री को भी

परेशानी होगी। एल्डर्सगेट स्ट्रीट मे भी कुछ ऐसी जीर्ण इमारते है जो कभी शानदार पारिवारिक अट्टालिकाए थी, किन्तु बाद मे कई चालो के रूप मे विभाजित हो गई है। यहा प्राय आपको छोटे व्यापारी का कुटुम्ब मिलेगा जो गिरती पडती, कालचिह्नाकित, नक्काशी की हुई छतो, स्वर्णाकित कार्निसो तथा बृहदाकार मर्मरी अग्निकुण्डो के बीच भद्दे फर्नीचर के साथ रह रहा है। गलियो एव मैदानो मे भी बहुत-से छोटे मकान है, जो उस सीमा तक तो नही किन्तु लघु प्राचीन भद्रवर्ग की भाति, दृढतापूर्वक प्राचीनता का दावा किए हुए है। इनके छज्जो के सिरे सडको की ओर है। इनमे बडे-बडे धनुषाकार वातायन है, जिनके शीशे के चौखटो पर चित्र-विचित्र खुदाई के काम है। दरवाजे छोटे एव मेहराबदार है।[1]

इस प्राचीन एव सुरक्षित वासस्थान मे मैने अपने जीवन के कई शान्त वर्ष बिताए है। यहा मै एक लघुतम परन्तु प्राचीनतम मकानो मे-से एक की दूसरी मजिल मे सुखपूर्वक रहता हू। मेरी बैठक एक छोटे कमरे मे है जिसकी दीवारो मे तख्ते जडे हुए है। उसमे विविध प्रकार के फर्नीचर है। ऊची पीठ तथा पजे की आकृति के पावोवाली तीन-चार कुर्सियो को मै विशेष आदरभाव से देखता हू। इनपर जीर्ण किमखाब के आवरण पडे हुए है जिनसे ज्ञात होता है कि इन्होने अच्छे दिन देखे है और निश्चय ही लिटिल ब्रिटेन के कुछ प्राचीन भवनो मे रह चुकी है। मुझे लगता है कि उनका एक दल बन गया है और वे अपनी चर्मावरणवाली पडोसिनियो को घोर तिरस्कारपूर्वक देख रही है। मैने दुरवस्था मे पडे, बिगडी स्थितिवाले भद्रजनो को निम्नस्तर के उन लोगो के बीच अपना सिर उठाए हुए देखा है जिनके साथ सम्पर्क रखने को वे विवश कर दिए गए है। मेरी इस बैठक के सम्पूर्ण अग्रभाग को एक धनुषाकार वातायन ने घेर रखा है। इसके दिलहो पर मकान के निवासियो की अनेक पीढियो ने अपने नाम अकित कर दिए है। इनमे कही-कही भद्रजनोचित स्फुट पद्यखण्ड भी मिलते है जो ऐसी लिपि मे लिखे हुए है जिसे मै पढ नही पाता परन्तु जो लिटिल ब्रिटेन

---

१. स्पष्ट है कि इस मनोरंजक लेख के लेखक ने 'लिटिल ब्रिटेन' के अपने सामान्य शीर्षक मे बहुत-सी ऐसी छोटी-छोटी गलियो और चौको को सम्मिलित कर लिया है जो कपड़ा बाजार (क्लाथ फेयर) के अन्तर्गत हैं।

की अनेक सुन्दरियो की प्रशसा करते है, जो जमाना हुआ खिली, मुरझाई और विगत हो गई है। चूकि मेरे पास कोई निश्चित काम नही है, और निठल्ला हू फिर भी हर सप्ताह नियमित रूप से बिल चुकाता जा रहा हू, मुझे इस मुहल्ले मे एकमात्र स्वतन्त्र भद्रजन माना जाता है। चूकि मै अपने-आप मे आबद्ध एक समुदाय की आन्तरिक स्थिति जानने को बडा उत्कण्ठित रहा हू, इसलिए इस स्थान के विषय मे सब बाते और सब रहस्य जानने मे सफल हो सका हू।

लिटिल ब्रिटेन को मत्यत नगर का हृदय-देश एव सच्चे जानबुल-पन का गढ कहा जा सकता है। यह अपने पुरातन निवासियो एव फैशनो के साथ उस लन्दन का एक खण्ड है जो वह अपने अच्छे दिनो मे था। यहा अब भी पुरातन प्रथाए और त्योहारो से सम्बद्ध क्रीडाए सुरक्षित है। यहा के निवासी बडी धार्मिक निष्ठा के साथ 'श्रोव ट्विसडे' (प्रायश्चित्त-मगल) को मालपुए, गुडफ्राईडे को सलीब चिह्नयुक्त केक तथा माइकेलमस के समय कलहम का कबाब खाते है, वे वेलेण्टाइन दिवस को प्रेमपत्र भेजते है, पाच नम्बर को पोप जलाते तथा क्रिसमस के दिन आकाशवेल (मिसिलटो) के नीचे आनेवाली हर लडकी का चुम्बन लेते है। तला गोमास एव मेवे मसाले-युक्त पकवान के प्रति उनमे मूढ श्रद्धा है, वे पोर्ट एव शेरी को ही वास्तविक आग्ल मदिरा समझते है, अन्य सबको निकृष्ट विदेशी मदिरा मानते है।

लिटिल ब्रिटेन के पास नगर की अनेक चामत्कारिक वस्तुए है। इसके निवासी इन्हे जगत् के आश्चर्य मानते है, जैसे — सेण्टपाल का बडा घण्टा, जो जब बजता है तो सारा बियर खट्टा हो जाता है, सेण्ट डसटन की घडी की वे सुइया जो घण्टे बजाती है, स्मारक, टावर के अन्दर के शेर तथा गिल्डहाल के काष्ठ-दैत्य। ये लोग आज भी स्वप्नो तथा भाग्य-कथन पर विश्वास करते है। बुल-एण्ड-माउथ स्ट्रीट मे एक बुढिया रहती है जो इसी प्रकार चोरी गई चीजो का पता बताकर तथा कुमारी कन्याओ को अच्छे पति प्राप्त करने की बाते सुनाकर काफी पैदा कर लेती है। धूमकेतु दिखाई देने और ग्रहण लगने पर वे बेचैन हो उठते है। अगर रात मे कोई कुत्ता रोए तो वे मानते है कि आस-पास कोई मृत्यु निश्चित होगी। बहुतेरी प्रेत-कथाए, विशेषत पुरानी हवेलियो के बारे मे, प्रच-लित है, कुछ मे तो विचित्र दृश्यो के देखने की बात कही जाती है। विग, झूलती हुई आस्तीनें तथा तलवारे पहने लार्ड तथा शिरोबन्ध, कचुकी, चूडिया

तथा जडाऊ कपडे पहने लेडिया चादनी रात मे बडे रिक्त कमरो मे टहलती दीख पडती है और लोग मानते है कि अपने दरबारी परिधान मे इन भवनो के प्राचीन स्वामियो की आत्माए इस प्रकार वहा आती है ।

इसी प्रकार लिटिल ब्रिटेन के अपने दैवज्ञ एव महापुरुष भी है। पहली कोटि मे एक लम्बे, शुष्क वृद्ध भद्रजन है, जिनका नाम स्क्राइम है, और जिनकी अत्तारी की दुकान है । चेहरा मुर्दे-सा विवर्ण है और उसपर कही गड्ढे है, कही फुलाव है , आखो के चतुर्दिक् ऐसे भूरे वृत्त है मानो शृगाकार चश्मे हो । बूढी औरतो मे उसका बडा नाम है । वे उसे जादूगर समझती हे क्योकि उसकी दुकान मे दो-तीन भूसाभरे मगर टगे हुए है और कई साप भी बोतलो मे बन्द है । वह पचाग और अखबार खूब पढना है तथा साजिशो, षड्यत्रो, अग्निकाण्डो, भूकम्पो तथा ज्वालामुखी विस्फोटो के सनसनीखेज विवरणो को खूब पढता है । ज्वाला-मुखी विस्फोटो को तो वह इस युग के लक्षण मानता है । अपने ग्राहको को दवा के साथ देने के लिए, डरावनी कथाए सदा ही उसके पास तैयार रहती है । इस तरह वह शरीर और आत्मा दोनो मे कोलाहल पैदा कर देता है । वह शकुन एव भविष्यवाणी मे बहुत विश्वास रखता है तथा राबर्ट निक्सन एव मदर शिप्टन की भविष्यवाणिया उसे जबानी याद रहती है । ग्रहण या असाधारण धुधले दिन से वह जितने अर्थ निकाल लेता है, दूसरा कोई निकाल नही सकता । पिछली बार दिखाई पडे धूमकेतु की पूछ को उसने अपने ग्राहको एव शिष्यो के सिरो पर इस तरह उछाला कि वे बेचारे किकर्त्तव्यविमूढ-से रह गए । पिछले दिनो उसने एक लोकप्रिय कथा या भविष्यवाणी को लेकर बडी-बडी बाते बताई । प्राचीन जादूगरनियो मे, जो ऐसी चीजे सचित कर रखती है, एक कहावत बहुत प्रचलित रही है कि जब एक्सचेज (लन्दन की एक इमारत) के शिखर पर का टिड्डा बाउ चर्च के शिखर के नक्र (ड्रैगन) से हाथ मिलाए तब समझो कि भयानक घटनाए घटेगी । बडे आश्चर्यजनक रूप मे यह सम्मिलन हुआ । पिछले दिनो एक ही वास्तुकार 'एक्सचेज' के तोरण एव बाऊ चर्च के शिखर की मरम्मत के लिए नियुक्त हुआ था और यह भयानक बात है कि नक्र एव टिड्डा दोनो उसके कारखाने के आँगन मे एक दूसरे से गुथे हुए पडे है ।

मि० स्क्राइम कहा करते है कि—"भले ही दूसरे लोग नक्षत्रो का अवलोकन करे और आकाश मे ग्रहो की युति खोजे, किन्तु यहा तो, हमारे घर के पास ही,

हमारी आखो के सामने ही, धरती पर ऐसी युति है, ऐसा योग है जो ज्योतिषियो के सम्पूर्ण लक्षणो एव गणित को पार कर जाता है।" जब से ये अपशकुन-कारी ऋतुदर्शक एक दूसरे से मिल गए है, आश्चर्यजनक घटनाए होने लगी है। बूढे सम्राट्, ठीक है कि वे बयासी वर्ष के हो चुके थे, ने सहसा शरीर-त्याग किया, दूसरे बादशाह को गद्दी मिली, राजवश के एक ड्यूक अकस्मात् मर गए, एक दूसरे की फ्रास मे हत्या कर दी गई, सम्पूर्ण राज्य मे क्रान्तिवादियो की सभाए हुईं, मानचेस्टर मे रक्तिम दृश्य दिखाई पडे, कैटो स्ट्रीट का भारी षड्यन्त्र सामने आया, और सब से अधिक आश्चर्यजनक तो यह है कि रानी इग्लैण्ड मे लौट आई ! बडी रहस्यमयी मुद्रा मे, भयानक रूप से सिर हिलाते हुए ये सब दुर्घटनाए श्री स्क्राइम बयान करते है, और जब ये बाते उनकी दवाइयो के साथ गले के नीचे उतरती है तथा श्रोतागण उनके साथ अपने मन मे भुसभरे सामुद्रिक दैत्यो, बोतलबन्द सापो तथा दुर्घटनाओ के टाइटिल-पेज के समान उनकी मुखाकृति को देखते है तो सहम जाते है। इससे लिटिल ब्रिटेन के लोगो के मन मे बडे भय का प्रसार हो गया है। जब भी वे बाऊ चर्च की ओर से गुज़रते है तो उसके शिखर से उन्हे कोई शुभ बात फैलती नजर नही आती—उसी शिखर से, जो पुराने समय मे सदा मगल सन्देशो का वाहक रहा है।

लिटिल ब्रिटेन का एक ऐसा ही भविष्यवक्ता वह मुस्टण्ड पनीर-विक्रेता है जो एक पुराने पारिवारिक भवन के एक खण्ड मे उतने ही आराम से रहता है जितना कोई मोटी तोदवाला रह सकता है। वह कोई साधारण स्थिति या महत्त्व का आदमी नही है, और उसकी ख्याति हगिस लेन, लैडलेन—बल्कि एल्डरमैनबरी (नामक मुहल्लो) तक फैल गई है। चूकि वह पिछले पचास वर्षो से रविवासरीय समाचारपत्रो को पढता रहा है और जेटिलमैस मैगजीन, रैपिन का 'इग्लैण्ड का इतिहास' तथा 'नैवल क्रानिकल' का भी पाठक रहा है, राज्य के मामलो मे उसकी राय अक्सर ली जाती है। उसके दिमाग मे ऐसी कितनी ही सूक्तिया और लोकोक्तिया भरी है जो काल की निहाई पर खरी उतर चुकी है और सदियो से प्रचलित रही है। उसकी दृढ सम्मति है कि जबतक इग्लैण्ड अपने प्रति सच्चा है तबतक कोई शक्ति उसे हिला नही सकती। वह राष्ट्रीय ऋण के विषय मे बहुत-सी बाते कहता है, वह सिद्ध कर देता है कि यह ऋण बडा भारी राष्ट्रीय रक्षाबाध है, और आशीर्वाद-स्वरूप है। उसके जीवन का

अधिकाश लिटिल ब्रिटेन के सीमान्त भाग मे बीता है , सिर्फ उत्तरकाल मे, धनवान् हो जाने और प्रतिष्ठा मे वृद्धि हो जाने के बाद से उसने मस्ती लेना और दुनिया को देखना शुरू किया है। उसने हैम्पस्टेड, हाईगेट तथा अन्य निकटवर्ती कस्बो का भ्रमण किया और वहा सारी दोपहरिया खुर्दबीन से राजधानी का निरीक्षण करने तथा सेण्ट बार्थोल-म्यू के शिखर की निन्दा करने मे बिता दी। बुल ऐण्ड-माउथ स्ट्रीट का एक भी डाकगाडी का कोचवान ऐसा नही है जो उसे गुजरते देख अपना टोप न उतार ले। गूज एव ग्रीडीरोन के डाकगाडी के कार्यालयो मे वह बहुत बडे सरक्षक के रूप मे देखा जाता है। उसके कुटुम्ब का तीव्र आग्रह रहा है कि वह मारगेट[1] की ओर भी अभियान करे किन्तु उसे उन नवीन वाष्पचालित नौकाओ के विषय मे बडा सन्देह है और वह जीवन की इस वृद्धावस्था मे समुद्री यात्रा करने को तैयार नही होता।

लिटिल ब्रिटेन मे कभी-कभी झगडे और विभेद भी उठ खडे होते है। एक बार तो दो प्रतियोगिनी समाधि-सस्थाए बन जाने के कारण दलबन्दी की भावना खूब बढ गई थी। एक सस्था अपनी बैठके एक स्थान पर करती थी और उसका नेता था पनीर-विक्रेता। दूसरी की बैठके अन्य स्थान मे जादूगर के तत्त्वावधान मे होती थी। यह कहने की तो जरूरत नही कि दूसरी सस्था पूरे ओज पर थी। मैने दो-एक सध्याए हरएक की सभा मे बिताई है और दफनाने की प्रणाली, चर्च-प्रागणो की तुलनात्मक [illegible] तथा पेटेण्ट लौह शवाधारो के विषय मे बडी मूल्यवान्, सूचनाए प्राप्त की है। मैने टिकाऊ होने के कारण इन लौह-शवाधारो पर प्रतिबन्ध लगाने की वैधता पर हर पहलू से बहस होते सुनी है। इन सस्थाओ के कारण जो झगडे उठे थे, हर्ष की बात है कि पिछले दिनो वे समाप्त हो गए है, किन्तु एक अर्से तक वे विवाद का विपय बने रहे क्योकि लिटिल ब्रिटेन के लोग मृत्युसस्कार के सम्मान और कब्रो मे आराम के साथ लेटने को बहुत महत्त्व देते है।

इन समाधि-सस्थाओ के अतिरिक्त बिल्कुल भिन्न प्रकार की एक तीसरी सस्था भी यहा है, जो सारे मुहल्ले मे मगलहास्य का सूर्यप्रकाश फैला देती है। यह पुराने ढग के एक मकान मे, जो वेगस्टाफ नाम के खुश दिल भठियारे ने ले

---

१. लन्दन का बन्दरगाह।

रखा है, सप्ताह मे एकबार मिलती है । इसका चिह्न है ज्योर्तिमय अर्द्धचन्द्र तथा अगूरो का एक प्रलोभक गुच्छा । पुरानी इमारत पर पिपासित पथिक को आकर्षित करनेवाले अनेक नाम है—'मदिरा, रम एव ब्राण्डी भण्डार' अथवा 'पुरातन टाम, एव मिश्रित मदिराए' स्मरणातीत काल से यह सुरादेवी एव हास्यदेवता (के उपासको) का मन्दिर रहा है। इसपर सदा ही वेगस्टाफ परिवार का आधिपत्य रहा है, इसलिए इसका इतिहास बहुत कुछ वर्तमान मकानमालिक के हाथ मे सुरक्षित है । एलिजाबेथ के शासन-काल के वीर एव योद्धा इसमे प्राय आया करते थे, कभी-कभी चार्ल्स द्वितीय के युग के हाजिरजवाब लोग भी यहा आते रहे है, किन्तु वैगस्टाफ को सबसे ज्यादा गर्व इस बात पर है कि एकबार जब हेनरी अष्टम अपनी निशाकालीन मटरगश्ती मे यहा आए थे तो अपने प्रसिद्ध भ्रमण-दण्ड से उन्होने अपने एक पूर्वज का सिर तोड दिया था। पर लोग इसे गृहस्वामी की झूठी शेखी मात्र समझते है ।

जिस गोष्ठी (क्लब) का साप्ताहिक अधिवेशन यहा होता है उसका नाम है 'लिटिल ब्रिटेन के गर्जनशील बच्चे' (रोरिग लैड्स आफ लिटिल ब्रिटेन) वे ऐसी पुरानी चर्चाओ, खिलखिलाहटो एव आकर्षक कहानियो मे माहिर है जो इस मुहल्ले की विशेषता है और राजधानी के अन्य किसी भाग मे प्राप्त नही है । इनमे एक भावुक अन्त्येष्टिक्रिया करनेवाला (अण्डरटेकर) है जो हास्यरस के गानो मे बेजोड है, किन्तु क्लब के प्राण, बल्कि सारे लिटिल ब्रिटेन का मुख्य मस-खरा वैगस्टाफ स्वय है । उसके सब पूर्वज मसखरे थे, और उसने सराय के साथ ही गानो और मजाको का बहुत बडा भण्डार पूर्वजो से पाया है । ये गाने और हास्य पीढी दर पीढी चलते रहे है, वह नाटा फुर्तीला जवान है, उसके पाव के घुटने कुछ टेढे है, हाडी-सा पेट है, लाल मुह है, आर्द्र हसते नयन है, पीछे की ओर के बाल कुछ सफेद है। जब भी मण्डली की नैश-सभा आरम्भ होती है उसे अपना 'निष्ठा की आत्मस्वीकृति' (कनफेशन आफ फेथ) गान गाना पडता है। यह मद्यपान सम्बन्धी एक प्रसिद्ध गान है । जिस रूप मे उसे वह पिता से प्राप्त हुआ उसमे उसने बहुतेरे परिवर्तन कर दिए है । जिस दिन से यह गान लिखा गया तभी से वह 'अर्द्धचन्द्र एव द्राक्षा-गुच्छ' मदिरालय का प्रिय एव लोकप्रिय गान रहा है । उसका तो यहा तक कहना है कि जब लिटिल ब्रिटेन के गौरव के दिन थे तब क्रिसमस के स्वागो मे यह सामन्तो एव रईसो के

सामने गाया जाता था।[1]

---

१. चूकि मेरे मेजबान के अर्द्धचन्द्र के 'कनफेशन आफ फेथ' से अधिकांश पाठक अपरिचित होगे और चूकि यह लिटिल ब्रिटेन मे प्रचलित गानो का एक नमूना है, मै इसे मूल पाठ के रूप में यहा दे रहा हू। मै यह भी कहना चाहता हूं कि टेक या कोरस को सारा क्लब दोहराता था और दोहराने के साथ ही टेबुल पर जोर से थपकी देता और कासे के पात्रो को परस्पर टकराकर बजाता था।

I cannot eate but lytle meate,
My stomacke is not good,
But sure I thinke that I can drinke
With him that weares a hood,
Though I go bare, take ye no care,
I nothing am a colde,
I stuff my skyn so full within,
Of joly good ale and olde,

Chorus Backe and syde go bare, go bare,
Booth foote and hand go colde,
But belly, God send thee good ale ynoughe,
Whether it be new or olde.

I have no rost, but a nut brawne toste,
And a crab laid in the fyre,
A little breade shall do me steade,
Much breade I not desyre
No frost nor snow, nor winde, I trowe,
can hurte mee, if I wolde,
I am so wrapt and throwly lapt
Of joly good ale and olde

Chorus : Backe and syde go bare, go bare, etc

गोष्ठी की रात को इस हर्षित भवन से आते हसी-खुशी के शोर, गान की

And Tyb my wife, that, as her lyfe,
Loveth well good ale to seeke,
Full oft drynkes shee, tyll ye may see,
The tears run downe her cheeke,
Then doth she trowle to me the bowle,
Even as a moult—worme sholde,
And sayth, sweete harte, I took my parte
Of this joly good ale and olde,
Chorus Backe and syde go bare, go bare, etc

New let them brynke, tyll they nod and winke,
Even as goode fellows sholde doe,
They shall not mysse to have the blisse,
Good ale doth bring men to,
And all poore soules that have scowred bowles,
Or have them lustily trolde,
God save the lywes of them and their wives
Whether they be yonge or olde.
Chorus Backe and syde go bare, go bare, etc.

(गद्यानुवाद)

मै खा नही सकता, थोडे से मास के सिवा
मेरा पेट ठीक नही है
किन्तु मैं समझता हू कि पी जरूर सकता हू
उसके साथ जो हुड (चर्मटोप) पहने हुए है
चाहे मैं नगा हो जाऊ, तुम चिन्ता मत करो,
मुझे ठण्ड न लगेगी।

तान तथा आधी दर्जन बेसुरी आवाजो का समवेत विस्फोट सुनने से किसी के

मैने अपनी चमडी अन्दर से इतनी भर रखी है—
हर्षदायिनी बढिया 'एल' मदिरा से ।

कोरस हो जाए आगे और बगल से नगे

हो जाए पाव और हाथ दोनो ठडे,
किन्तु ओ जठर, ईश्वर तुझे बढिया और काफी 'एल' भेजता रहे।
फिर वह चाहे पुरानी हो या नई ।
मेरे पास कबाब नही है, बादामी रग का टोस्ट भर है
और एक केकडा आग मे पडा हुआ है
जरा-सी रोटी मुझे चगा कर देगी,
ज्यादा रोटी मै नही चाहता ।
कोई तुषार या बर्फ, या हवा
मुझे हानि नही पहुचा सकती
ऐसा पूरी अच्छी तरह ढका हुआ हू मै,
हर्षदायिनी बढिया 'एल' मदिरा से ।

कोरस हो जाए आगे और बगल से नगे, इत्यादि ।

और मेरी पत्नी, जो प्राण की भाति
अच्छी मदिरा को प्यार करती है,
भर-भर प्याले पीती जाती है, जबतक तुम
उसके गालो पर आसू ढुलकते न देख लो ।
फिर वह खुशामद करती पात्र मेरी ओर बढा देती
जैसा कि पक्का मद्यप करता है,
कहती है—मेरे प्रियतम मैंने पी लिया है
इस हर्षदायिनी 'एल' मदिरा को ।

कोरस : हो जाए आगे और बगल से नगे, इत्यादि ।

अब उन्हे पीने दो, जब तक कि वे सिर हिलाने और आख मट-
काने न लगे ।

भी हृदय को सुख मिलेगा। ऐसे समय सडक पर सुनने वालो की भीड लग जाती है जिन्हे इससे वैसा ही आनन्द मिलता है जितना हलवाई की खिडकी मे झाकने वालो या किसी रसोइए की दुकान से निकलती भाफ सूघने वालो को मिलता है।

दो वार्षिक घटनाए ऐसी है जो लिटिल ब्रिटेन मे सबसे ज्यादा सनसनी और उत्तेजना पैदा करती है ये है—सेंट बार्थोलोम्यू का मेला तथा लार्ड मेयर दिवस। मेला निकटवर्ती अचल स्मिथफील्ड मे होता है और उस समय गप-शप लगाने और आवारागर्दी करने के सिवा कोई काम नही रहता। लिटिल ब्रिटेन की शान्त सडके विचित्र आकृतियो एव चेहरो से भर जाती है, हर सराय मे जमघट लगता है और रगरेलियो का बाजार गर्म हो उठता है। पान-कक्ष से सुबह शाम, दोपहर, रात—हर समय वीणा की ध्वनि या गान की तान सुनाई पडती है। उस समय आप हर खिडकी मे कुछ ऐसे साथियो को बैठे देख सकते है जिनकी आखे अधमुदी है, जिनके हैट एक ओर पडे है, पाइप मुह मे है, सुरापात्र हाथ मे है, प्रणयक्रीडा कर रहे है और अपनी मदिरा पर बेसुरे ढग पर प्रमत्त गान गा रहे है। यहा तक कि वे निजी कुटुम्ब भी, जो हमारे पडोसियो मे दूसरे समय बडे शिष्टाचार का पालन करते है, इस प्रमोदोत्सव से बच नही पाते। परिचारिकाओ को घर के अन्दर रखने जैसी बात उस समय नही रह जाती,—नानाप्रकार के खेलो, उडते घोडो, आग खा जानेवालो, चर्खियो तथा अन्य तमाशो से वे पागल-सी हो उठती है, बच्चे त्योहार का अपना सारा पैसा तरह-तरह के खिलौनो और खाने-पीने की चीजो मे खर्च कर देते है और ताशे, बिगुल तथा सीटियो की आवाज़ से घर को सिर पर उठा लेते है।

जैसा कि अच्छे लोगो को करना चाहिए
उनको उस आनन्द को प्राप्त करने का अवसर नही खोना चाहिए
जो अच्छी 'एल' आदमियो तक लाती है
वे गरीब प्राणी जिन्होने पात्र खाली कर दिए है
या उन्हे फिर से अच्छी तरह भर लिया है।
ईश्वर उनके और उनकी पत्नियो के जीवन की रक्षा करे
फिर चाहे वे तरुण हो या वृद्ध।
कोरस हो जाए आगे और बगल से नगे। इत्यादि।

किन्तु लार्ड मेयर दिवस तो बहुत बडा सालाना जलसा होता है । लिटिल-ब्रिटेन के लोगो का ख्याल है कि लार्डमेयर पृथ्वी पर सबसे बडा अधिपति है , उसकी छ घोडो की रजत गाडी मानवीय वैभव का शिखर है , और समस्त शेरिफो एव ऐल्डरमैनो के साथ उसका जुलूस दुनिया का सबसे बडा समारोह है । वे इस ख्याल मे विभोर हो जाते है और उसे खूब बढा-चढाकर कहते है कि स्वय बादशाह भी टेम्पुल बार (मेयर का ऑफिस) के दरवाज़े पर दस्तक दिए बिना और लार्ड मेयर की अनुमति लिए बिना नगर मे प्रवेश नही कर सकता—, क्योकि यदि वह ऐसा कर दे तो कोई नही जानता कि कैसा प्रलय उपस्थित हो जाए और उसका क्या परिणाम हो । जो हथियारबन्द सवार लार्ड मेयर के आगे-आगे चलता है उसे आदेश रहता है कि जो भी आदमी नगर की मर्यादा का अपमान करे उसे टुकडे-टुकडे कर दो । फिर वह जो नाटा आदमी मखमली कटोरा (टोप) सिर पर रखे राजकीय गाडी की खिडकी के पास बैठा है और भाले के डण्डे जितना लम्बा नगर-खड्ग लिए हुए है, यदि एक बार वह खड्ग निकाल ले तो फिर समझो कि सम्राट् भी सुरक्षित नही है ।

इसलिए इस परमशक्तिमान् शासक की छाया मे लिटिल ब्रिटेन के भले लोग चैन की नीद सोते है । टेम्पुल-बार सब प्रकार के आन्तरिक शत्रुओ के लिए एक प्रभावशाली बाड है । और अगर कोई विदेशी आक्रमण हुआ तो बस लार्ड मेयर के टावर मे जाने और रक्षादल (ट्रेन बैण्ड्स) को बुलाने तथा गोमासभोजियो की स्थायी सेना को आदेश देने-भर की देर है, और फिर वह सारी दुनिया मे लोहा ले सकता है ।

इस प्रकार अपने ही मामलो, अपनी ही आदतो और अपनी ही रायो से आवृत्त लिटिल ब्रिटेन बहुत दिनो से इस छत्रक सदृश बढती महानगरी के बीच उसके हृदय-रूप मे धडकता रहा है । मै इसे एक ऐसा चुना हुआ स्थान समझकर खुश होता रहा हू, जहा बलिष्ठ जानबुलवाद (आग्लप्रकृति) के सिद्धान्त, बीज की भाति बोये जाते है और जब राष्ट्रीय चरित्र विकृत एव दूषित हो जाता है तब उसे नवीन प्राण, नूतन शक्ति प्रदान की जाती है । मै इसलिए भी खुश रहा हू कि इस क्षेत्र मे सदा मेलजोल और सामजस्य की भावना रही है, क्योकि पनीर-विक्रेता और जादूगर के अनुयायियो मे तबतक मत-भिडन्त हो जाने या समाधि-सस्थाओ मे कभी-कभी झगडे हो जाने के बावजूद ये सब बाते क्षणिक

बादलो की भाति शीघ्र ही समाप्त हो जाती है और पडोसी शुभाकाक्षा के साथ परस्पर मिलते है , हाथ मिलाकर जुदा होते है, और पीठ पीछे कुछ कहने के सिवा कभी एक-दूसरे की निन्दा नही करते ।

मैं ऐसे बढिया वनभोजो के दुर्लभ वर्णन आपके सामने उपस्थित कर सकता हू, जहा हम 'आल-फोर्स,' 'पोप जान,' 'टाक-कम-टिकिल मी' तथा अन्य पुराने खेल खेलते थे, और जहा कभी-कभी एकाध ग्राम्य-नृत्य भी हो जाता था । फिर साल मे एकबार एकत्र होकर पडोसी एपिग फारेस्ट को जिप्सी पार्टी लेकर भी जाते थे । वहा जब हम पेडो के नीचे घास पर भोजन करते तब जो आमोद-प्रमोद होता था, उसे देखकर हर आदमी का हृदय बाग-बाग हो जाएगा । वैग-स्टाफ और खुशदिल अन्त्येष्टिक्रियाकारी के गानो को सुनकर जो कहकहे लगते थे उससे सारा जगल गूज उठता था । भोजन के बाद भी किशोर आखमिचौनी, छिपो और ढूढो इत्यादि खेल खेलने मे मस्त हो जाते थे , उन्हे झाडियो मे फसे या किसी सुन्दरी लडकी के किसी झुरमुट के पीछे से कूक उठते देखकर कैसा आनन्द आता था । उधर वे लोग यह सब खेलते, इधर बडे-बूढे लोग पनीर विक्रेता या जादूगर के इर्द-गिर्द जमा हो जाते और उनसे राजनीति की बाते सुनते, क्योकि वे देहात मे समय काटने के लिए आमतौर से अपने साथ कोई अखबार ले आते थे । बीच-बीच मे वे बहस और तर्क मे उलझ जाते या गर्म हो उठते किन्तु उनके झगडे एक योग्य छातासाज़ की बिचवई से शीघ्र ही सुलझ जाते क्योकि वे विषय को ठीक तरह समझे बिना भी फैसला कर दिया करता था जो दोनो दलो को अपने ही पक्ष मे जान पडता था ।

किसी तत्त्वज्ञानी या इतिहासकार ने कहा है कि सभी साम्राज्यो (समाजो) मे परिवर्तन एव क्रान्तियो का होना अनिवार्य है । विलासिता और शृगारिकता आ जाती है, झगडे उठ खडे होते है, और जब-तब ऐसे कुटुम्ब उठ खडे होते हैं जिनकी महत्त्वाकाक्षा एव षड्यन्त्र सारी व्यवस्था को छिन्न भिन्न कर देते हैं । पिछले दिनो लिटिल ब्रिटेन की शान्ति मे भी बुरी तरह व्याघात हुआ और एक रिटायर्ड कसाई के महत्त्वाकाक्षी कुटुम्ब ने उसके शिष्टाचार की स्वर्णिम सरलता को पूरी तरह ध्वस्त कर दिया ।

लैम्ब-कुटुम्ब मुहल्ले के सबसे समृद्ध एव लोकप्रिय कुटुम्बो मे-से एक रहा है । लैम्ब कुमारिया तो लिटिल ब्रिटेन की सर्वश्रेष्ठ सुन्दरियो मे रही है । जब

कर दी कि वे लोग लैम्ब परिवार से कोई सरोकार नही रखेगे। यह ठीक है कि जब श्रीमती लैम्ब को अपने बडे-बडे परिचितो से काम नही रहता था, तो वह अपनी कुछ पुरानी साथिनो को चलताऊ ढग से चाय पर बुला लेती और जैसा कि वे कहती यह सब 'मैत्री के रूप मे' ही होता था, और यह भी सच है कि इसके विरुद्ध कस्मे खा लेने के बाद भी उनके निमन्त्रण सदा स्वीकार किये जाते थे। यही क्यो, ये भद्र महिलाए बैठकर पियानो पर बैठी लैम्ब कुमारिकाओ के सगीत की आयरिश ताने सुनती और खुश होती थी, जब श्रीमती लैम्ब एल्डरमैन प्लकेट, लाखो की उत्तराधिकारिणी मिस टिम्बरलेक्स इत्यादि की घटनाए और किस्से सुनाती तो वे बडे ध्यान से उन्हे सुनती थी। किन्तु वे अगली गप्प-गोष्ठी मे, जो कुछ हो चुका रहता था उसको बताकर तथा लैम्बो एव उनकी रगरेलियो की सब बाते सुनाकर अपने मन को सन्तोष दे लेती तथा अपनी साथिनियो के तिरस्कारभाव को दूर करने मे समर्थ हो जाती थी।

कुटुम्ब मे एक ही आदमी ऐसा था जो फैशनेबुल नही बनाया जा सका, और वह था खुद रिटायर्ड कसाई। आनेस्ट लैम्ब, अपने नाम की मृदुलता के बावजूद, एक उजड्ड, पर दिलदार आदमी था। उसकी आवाज शेर जैसी थी, सिर के बाल इतने काले थे मानो जूते का ब्रुश हो, चौडा चेहरा उसके गोमास की भाति ही चितकबरा था। यद्यपि पुत्रिया 'बूढा भद्रजन' कहकर उसके विषय मे बात करती, असीम कोमलता के साथ उसे पापा कहकर पुकारती, और ड्रेसिंग गाउन तथा स्लिपर पहिनने तथा अन्य भद्रजनोचित आदतो के लिए उसे उत्साहित करती रहती थी परन्तु सब कुछ व्यर्थ होता था। वे चाहे जो करे, वे कसाई को अपने स्थान से खिसका नही पाती थी। उसका दृढ स्वभाव उनकी सारी चापलूसियो को तोडकर बाहर आ जाता था। वह दिल खोलकर गवारू ढग पर खिलखिलाता था, उसका शुभ हास्य अनम्य था। उसके मजाक सुनते ही उसकी नाजुक कन्याए काप उठती थी। वह सुबह के समय जिद करके अपना नीला सूती कोट पहिनता, दो बजे भोजन करता और चाय के साथ थोडा सासेज अवश्य लेता था।

किन्तु वह अपने कुटुम्ब की अलोकप्रियता की लपेट मे आए बिना नही रहा। उसके पुराने साथी धीरे-धीरे उसके प्रति विरक्त हो गए। उसने देखा कि अब वे उसके मजाक पर हसते नही हैं बल्कि जब-तब 'कुछ' लोगो पर व्यग्य करते

है और 'बडप्पन की दोस्ती' की ओर इशारा करते है। इससे वह ईमानदार कसाई बहुत परेशान हुआ, बल्कि जाल मे फस गया। स्त्रियो की स्वाभाविक चतुराई के साथ उसकी पत्नी और लडकियो ने स्थिति का फायदा उठाया और अन्त मे उसे इस बात के लिए राजी कर लिया कि वैंगस्टाफ के मदिरालय मे तीसरे पहर पाइप तथा चषक पर बैठने की आदत छोड दे, दोपहर के भोजन के बाद अकेले बैठे, 'पोर्ट'— जिस मदिरा से वह घृणा करता था—की चुस्की ले तथा एकान्त एव नीरस आभिजात्य का आनन्द लेता हुआ कुर्सी पर झपकी लिया करे।

अब तो कोई भी लैम्ब-कुमारियो को फरासीसी शिराभरण पहिने, अज्ञात सुन्दरियो के साथ सडको पर घूमता हुआ देख सकता था, वे इतनी जोर से बोलती और हसती थी कि प्रत्येक सन्नारी जो सुनती थी, घबडा उठती थी। वे इतनी दूर तक बढ गई कि सरक्षण भी देने लगी। यहा तक की एक फरासीसी नृत्यकला-शिक्षक को वहा अपना शिक्षणालय खोलने को भी तैयार कर लिया। किन्तु लिटिल ब्रिटेन के लोग इसपर इतने उत्तेजित हुए और बेचारे फरासीसी की ऐसी दुर्गति की कि वह सामान लेकर एक दिन चुपके से भाग गया—मकान का किराया देने की भी याद उसे न रही।

पहले तो मैंने अपने मन को यह समझा लिया था कि समाज की यह असन्तोषाग्नि केवल पुरातन आग्ल शिष्टाचार के प्रति लगन तथा नवीनता के प्रति भीति के कारण जल उठती है, इसलिए अनुचित गर्व, फरासीसी फैशन तथा लैम्ब कुमारियो के प्रति मौन तिरस्कार की इस तीव्र अभिव्यक्ति की मैंने सराहना की। किन्तु मुझे यह कहते दु ख होता है कि मेरे पडोसियो ने निन्दा करने के बाद उन्ही के उदाहरण का अनुसरण करना शुरू कर दिया। मैंने अपनी मकान-मालकिन को अपने पति से यह हठ करते सुन लिया कि अपनी लडकियो को फ्रेंच सगीत एव चतुर्युग्म नृत्य के कुछ पाठ सीखने की अनुमति दी जानी चाहिए। चन्द रविवारो के बाद ही मैंने लैम्ब कुमारियो की भाति फरासीसी बोनेट पहिन तथा लिटिल ब्रिटेन मे मटरगश्ती करते कम से कम पाच लडकियो को देखा।

तब भी मुझे आशा थी कि ये सब गलतिया धीरे-धीरे दूर हो जाएगी, या लैम्ब परिवार ही मुहल्ले से बाहर चला जाएगा, या मर जाएगा या अटर्नी के नवसिखुओ के साथ भाग खडा होगा और समाज मे पुन शान्ति एव सरलता

छा जाएगी । किन्तु दुर्भाग्यवश एक प्रतिद्वन्द्विनी शक्ति उठ खडी हुई । एक सम्पन्न तैलकार मर गया और अपने पीछे अपनी विधवा के लिए काफी स्त्रीधन, तथा रूपवती कन्याए छोड गया । तरुण लडकिया मन ही मन मितव्ययी पिता के उत्तराधिकार के लिए बहुत समय से तडप रही थी क्योकि वह उनकी सब मृदुल आकाक्षाओ को रोक रखता था । अब उनकी महत्त्वाकाक्षाओ की पूर्ति के मार्ग मे कोई बाधा नही रही, इसलिए वे ज़ोरो से भडक उठी । अब वे खुल्लमखुल्ला कसाई के कुटुम्ब के विरुद्ध मैदान मे आ खडी हुई । यह ठीक है कि पहले से आरम्भ करने के कारण लैम्बो की फैशन के मामले मे कुछ लाभ-जनक स्थिति थी । वे थोडी भली-बुरी फ्रेंच बोल लेते थे, पियानो बजा लेते थे, चार जोडो का नृत्य जानते थे बडे-बडे लोगो से उनका परिचय हो चुका था । किन्तु ट्राटर (तैलकार) कुटुम्ब से मैदान मार लेना मुश्किल था । जब लैम्ब-कुमारिया अपने हैट मे दो पख लगाती तो ट्राटर कुमारिया चार लगाती थी और उनके सुन्दर रग भी पहले से दुगुने प्रकार के होते थे । यदि लैम्ब-कुमारिया कोई नृत्य करती तो ट्राटर-कुमारिया कब उनके पीछे रह सकती थी ? और यद्यपि उनकी मण्डली उतनी अच्छी नही होती थी किन्तु सख्या मे वह दुगुनी ज़रूर होती थी और उसमे दुगुनी हसी-खुशी भी दिखाई पडती थी ।

अन्त मे सारा समाज इन दो कुटुम्बो के झण्डे तले दो फैशनेबुल वर्गो मे बट गया । 'जान आ और मुझे छू' (आतीपाती) और पोप जोन जैसे पुराने खेल बिल्कुल त्याग दिए गए, अब तो सरल ग्राम-नृत्य का कोई सवाल ही न रहा । पिछले क्रिसमस के समय जब आकाशबेल के नीचे मैने एक तरुणी का चुम्बन लेने की चेष्टा की तो मुझे बुरी तरह झिझोड दिया गया, क्योकि लैम्ब कुमारियो ने इसे 'दारुण रूप से अशिष्ट' घोषित कर दिया था । लिटिल ब्रिटेन का कौन-सा भाग सबसे फैशनेबुल है, इसे लेकर भी कटु प्रतियोगिता ठन गई, लैम्ब क्रास-की स्क्वायर का पक्ष लेते थे और ट्राटर लोग सेंट बार्थोलोम्यू के पक्ष मे थे ।

इस तरह यह छोटा प्रदेश भी दलबन्दियो एव आन्तरिक कलह से उस महान् साम्राज्य की भाति ही विच्छिन्न हो गया जिसका नाम उसके साथ लगा है । अन्तिम परिणाम क्या होगा, इस बात को लेकर खुद जादूगर, अपने भविष्य-कथन की सारी योग्यता के साथ भी, परेशान है । मुझे तो ऐसा लगता है कि सच्चे जानबुलवाद के सम्पूर्ण विनाश मे जाकर इसका अन्त होगा ।

तुरन्त इसका जो प्रभाव पडा है वह भी मेरे लिए अत्यन्त दुख दायी है। अकेला होने के कारण, और जैसा कि मै पहले कह चुका हू किसी काम के अयोग्य तथा बेकार होने के कारण, उस जगह पेशे से मैं ही एकमात्र भद्रजन समझा जाता रहा हू। इसलिए दोनो दलो के लोग मुझे मानते है, और मुझे उनकी सब मन्त्रि-परिषदो मे भाग लेना पडता है तथा एक-दूसरे के द्वारा की जानेवाली चुगली सुननी पडती है। चूकि मै इतना शिष्ट हू कि किसी भी अवसर पर स्त्रियो से असहमत नही हो पाता इसलिए दोनो के सामने, उनके विरोधियो की बुराई करके उनके पक्ष-समर्थन मे बुरी तरह फस गया हू। मेरा अन्त करण लचीला है इस-लिए इन सब बातो के लिए उसे तो मै राजी कर लेता हू परन्तु इस भय से अपने को मुक्त नही कर पाता कि यदि कभी लैम्बो और ट्राटरो मे मैत्री हो गई और उन्होने एक-दूसरे से ये बाते कही तब क्या होगा ? तब तो मेरा सर्वनाश ही हो जाएगा।

इसलिए मैने समय रहते हट जाने का निश्चय किया है, और इस महानगरी मे मै अपने लिए सचमुच कोई दूसरा नीड खोज रहा हू, जहा पुरातन आग्ल शिष्टाचार का अब भी पालन होता हो, जहा फ्रेच न तो खाई-पीई जाती हो, न नाची या बोली जाती हो, और जहा अवकाश प्राप्त व्यापारियो के फैशनेबुल कुटुम्ब न हो। ऐसा निवास मिलते ही मै पक्के गद्दार की भाति भाग खडा हूगा, अपने वर्तमान गृह को लम्बा यद्यपि शोकप्रद, सलाम ठोकूगा और लैम्बो तथा ट्राटरो के दलो को लिटिल ब्रिटेन के विच्छिन्न साम्राज्य का बटवारा करने को छोड चला जाऊगा।

स्ट्रैटफोर्ड-ऑन-ऐवन

दाउ साफ्ट-फ्लोइग ऐवन, बाई दाई सिल्वर स्ट्रीम
ग्राफ थिग्स मोर दैन मार्टल स्वीट शेक्सपियर वुड ड्रीम,
दि फेयरीज बाई मून लाइट डांस राउण्ड हिज़ ग्रीन बेड,
फार हैलोड दि टर्फ इज़ व्हिच पिलोड हिज़ हेड ।

—गैरिक

(स्वतन्त्र पद्यानुवाद)

तू ऐवन मदगतिशीला, तेरे चादी-से प्रवाह मे
मृदुल मर्त्य शेक्सपियर पा रहा स्वप्नाधिक गौरव ग्रथाह मे ।
उसकी हरित मृत्यु-शय्या के निकट चन्द्रिका मे है नर्तित,
परिया, क्योकि शीश के नीचे का दूर्वांचल जन-गण-वदित ।

एक गृहहीन मनुष्य जिसके पास इस विस्तृत विश्व मे सचमुच ग्रपना कहने लायक कोई स्थान नही है, दिनभर की थकान-भरी यात्रा के बाद जब ग्रपने बूट उतारकर फेक देता है ग्रौर ग्रपने पाव स्लिपर मे डाल लेता है तथा पान्थ-शाला के ग्रातिशदान के सामने कमर सीधी करने के लिए ग्रपने को फैला देता है तो उसे स्वतन्त्रता ग्रौर भौतिक विजय की एक क्षणिक ग्रनुभूति होती है। बाहर की दुनिया जो चाहे करे, राज्य उठे या गिरे, किन्तु जबतक, उसकी जेब मे इतना पैसा है कि बिल चुका सके, तबतक कुछ देर के लिए तो, जो कुछ वह देख रहा है, उन सबका बादशाह है। उसकी ग्रारामकुर्सी ही उसका सिहासन है, कुरेदनी ही उसका राजदण्ड है, ग्रौर लगभग बारह फुट वर्गाकार लघु कक्ष ही उसका साम्राज्य है। यह जीवन की ग्रनिश्चितताग्रो के बीच से छीना हुग्रा निश्चिन्तता का ग्रास है, यह बदली के दिन कृपापूर्वक उदित होनेवाला एक सूर्य-प्रकाशोज्वल क्षण है, ग्रौर जो ग्रादमी जीवन—ग्रस्तित्व—के यात्रा-पथ पर कुछ दूर बढ चुका है वही सुखोपभोग के ग्रासो एव क्षणो को प्राप्त कर

लेने का महत्त्व जानता है। आग को कुरेदकर तेज करते हुए मैने सोचा—"क्या मैं अपनी इस सराय मे अपनी सुविधा न कर लू ?" और आरामकुर्सी पर पीछे की ओर ढुलक गया तथा स्ट्रैटफोर्ड-ग्रॉन-ऐवन की रेडहार्स सराय के अपने लघु-कक्ष पर तृप्ति की एक नजर डाली।

जिस चर्च मे शेक्सपियर अनन्त निद्रा मे सोया पडा है, उसके घण्टाघर ने जब अर्द्धरात्रि के घण्टे बजाये तब मेरे मन मे कवि के मधुर शब्द गूज रहे थे। द्वार पर एक हल्की-सी थपकी सुनाई पडी और सुन्दरी सेविका का मुस्कान-भरा मुख दिखाई पडा, उसने जरा हिचकिचाते हुए पूछा—"क्या आपने बुलाने की घण्टी बजाई थी ?" मैने उसके पीछे जो इशारा था, वह समझ लिया कि अब सोने का समय हो गया है। चक्रवर्तित्व का मेरा सारा सपना खतम हो गया, इसलिए बुद्धिमान् राजा की भाति, राजच्युत किए जाने से बचने के लिए, गाइड बुक को काख मे दबाए मैने सिहासन छोड दिया और शय्या की शरण ली। सारी रात मै शेक्सपियर, महोत्सव और डेविड गैरिक के ही सपने देखता रहा।

दूसरा प्रभात उन गतिशील प्रभातो मे-से एक था, जिन्हे हम कभी-कभी बसन्त के आरम्भ मे देखते है। यह मार्च का मध्य तो था ही। लम्बे शिशिर की ठिठुरन एकाएक खतम हो गई, उत्तरी वायु ने दम तोड दिया, अब मृदु समीरण पश्चिम से चोरी-चोरी आता था और प्रकृति मे जीवन की श्वास भर जाता था। वह प्यार और दुलार की थपकिया देकर प्रत्येक कली और फूल को सुगन्ध एव सौन्दर्य मे स्फुटित होने को प्रेरित कर रहा था।

मैं काव्यात्मक तीर्थयात्रा की दृष्टि से ही स्ट्रैटफोर्ड आया था। पहले मै उस मकान को देखने गया जिसमे शेक्सपियर पैदा हुआ था और जहा, प्रवाद के अनुसार, उसे अपने पिता का ऊन की तुनाई का धन्धा सिखाया गया था। यह लकडी और गारे का बना एक छोटा क्षुद्रदर्शन गृह है, प्रतिभा का वास्तविक नीड, जो अपनी सन्तति को कोने-अतरे मे सेना पसन्द करता है। इसके मलिन कक्षो की दीवारे प्रत्येक भाषा मे, प्रत्येक देश और राजा-रक प्रत्येक वर्ग के तीर्थ-यात्रियो के नामो एव आलेखो से भरी हुई है और प्रकृति के इस महान् कवि के प्रति सार्वदेशिक एँव स्वैच्छिक सम्मान की भावना को प्रकाशित करती है।

मकान को एक मुखर वृद्धा ने दिखाया, उसका मुख फीके लाल रग का था, जो, ठडी नीली उत्सुक आखो से प्रदीप्त एव अत्यधिक मैली टोपी के नीचे घुघराले

हो गए भूरे बालो के कृत्रिम गुच्छो से ग्रलकृत था। ग्रन्य सब प्रसिद्ध चैत्यो की भाति यहा भी बहुत-सी पुरानी चीजे थी ग्रौर उनका प्रदर्शन करने मे उसने बडी तत्परता दिखाई। वहा उस तोडदार बन्दूक का टूटा हुग्रा हत्था था जिससे ग्रपनी वन-सम्वन्धी चोरियो मे शेक्सपियर हिरनो को मारता था। उसकी तम्बाकू की डिब्बी थी, जिससे सिद्ध होता है कि वह तम्वाकू पीने मे सर वाल्टर रैले का प्रतियोगी था। वह तलवार भी थी जिसे लेकर उसने हैमलेट का ग्रभिनय किया था, वैसी लालटेन भी थी जिससे फ्रायर लारेंस ने कब्र पर रोमियो एव जूलियट को खोज निकाला था। शेक्सपियर के शहतूत-वृक्षो का भी बाहुल्य था।

सबसे ग्रधिक उत्कण्ठा की सामग्री है शेक्सपियर की कुर्सी। जो किसी ज़माने मे उसके पिता की दुकान थी, उसके ठीक पीछे एक छोटी ग्रधेरी कोठरी मे चिमनीवाले कोने के पास वह कुर्सी पडी हुई है। बचपन मे कितनी ही बार यहा बैठकर उसने शिशु की लालसा के साथ धीरे-धीरे घूमती हुई कबाब की सलाखो को देखा होगा, शाम के समय स्ट्रैटफोर्ड की बूढियो की गपशप, चर्च-प्रागण-सम्वन्धी कहानिया ग्रौर इग्लैण्ड के सकटमय युगो की बाते सुनी होगी। यहा का रिवाज है जो भी इस मकान को देखने ग्राता है उसे एक कुर्सी पर बैठना पडता है—यह कवि की कुछ प्रेरणा प्राप्त करने या किस विचार से किया जाता है, यह मैं नही जानता। मैं तो केवल तथ्य की बात कह रहा हू। मेरी ग्रातिथेया ने एकान्त मे मुझे विश्वास दिलाया कि यद्यपि वह ठोस बलूत की बनी है किन्तु भक्तो का उत्साह इतना प्रबल है कि कम से कम प्रति तीन वर्ष पर कुर्सी मे नया पेदा लगाना पडता है। इस ग्रसाधारण कुर्सी के विवरण मे यह बात भी लिखने लायक है कि इसमे लोरेतो की साता कासा की उडनशील प्रकृति या जादूगर की ग्ररबी कुर्सी की कुछ न कुछ विशेषता है क्योकि यद्यपि वह कुछ साल पहले एक उत्तरीय राजकुमारी के हाथ बेच दी गई थी किन्तु कहते ग्राश्चर्य होता है कि वह पुन उसी चिमनीवाले कोने मे न जाने किस प्रकार लौट ग्राई है।

ऐसे मामलो मे मैं सदा से ही सहज विश्वासी रहा हू ग्रौर जब धोखा सुखद हो ग्रौर उससे कोई हानि न होती हो तो मैं सर्वथा धोखा खाने को तैयार रहता हू। इसलिए मैं स्मृतिचिह्नो, उपाख्यानो तथा भूत पिशाचो एव महापुरुषो की जीवन-झाकियो मे तुरन्त विश्वास कर लेता हू; यही क्यो, मैं ग्रपने सन्तोष

के लिए यात्रा करनेवाले सभी पर्यटको को भी ऐसा ही करने की सलाह देता हू। जब तक हम अपने को उनमे विश्वास कर लेने को तैयार रखते है और यथार्थ का सब मजा उनसे प्राप्त कर लेते है तब इससे क्या अन्तर पडता है कि वे सच्ची है या झूठी है। इन बातो मे दृढ प्रसन्नभाव से विश्वास कर लेने से बढकर और कुछ नही है, और इस अवसर पर तो स्वेच्छापूर्वक मै अपनी आतिथेया के इस दावे पर विश्वास करने तक बढ गया कि वह कवि के वश मे ही पैदा हुई है। किन्तु मेरी निष्ठा के भाग्य से उसने मेरे हाथो मे अपना रचा एक नाटक रख दिया, जिससे उसकी सपिण्डता के विश्वास को गहरी चोट लगी।

शेक्सपियर के जन्मस्थान से कुछ ही पग आगे बढने पर मै उसकी समाधि तक पहुच गया। वह जनपदीय चर्च की वेदिका-भूमि मे समाधिस्थ पडा है। यह एक लम्बी और श्रद्धाजनक इमारत है जो आयु के कारण भग्न हो गई है, किन्तु अब भी बडे समृद्ध अलकरणो से पूर्ण है। यह ऐवन नद के तट पर कुजो के बीच स्थित है और नगर के उपनगरीय भाग से निकटवर्ती उपवनो के कारण अलग हो गई है। शान्त और एकान्त स्थल है, नदी चर्चप्रागण के पादतल मे कल-कल करती बह रही है, और तट पर उगे देवदारु की डालिया उसके स्वच्छ वक्ष पर झुकी हुई है। दूर तक पथ के दोनो ओर उनकी पक्ति चली गई है और उनकी डालिया एक-दूसरे से इस प्रकार गुथ गई है कि गर्मी के दिनो मे हरीतिमा का एक लम्बा तोरण-पथ बन जाता है जो चर्च-प्रागण के फाटक से चर्च के द्वारमण्डप तक चला गया है, कब्र घास से ढक गई है, भूरे समाधि-प्रस्तरो मे से कुछ तो जमीन मे करीब-करीब धस गए है, और बहुतेरे काई से आधम-आध भर गए है, जिसके कारण जीर्ण भवन रगीन आभाओ से पूर्ण हो गया है। दीवारो के छज्जो और दरारो मे छोटी-छोटी चिडियो ने अपने घोसले बना लिए हैं और वे निरन्तर फुदकती एव चहचहाती रहती है तथा काक-वृन्द उसके ऊचे शृगो के चतुर्दिक् चक्कर काटा करते है।

चहलकदमी करते हुए मेरी भेंट चर्चरक्षक धवलकेशी एडमाण्ड्स से हो गई। मैं चर्च की चाबी लेने उनके साथ उनके घर तक गया। वह, बचपन से अबतक, स्ट्रैटफोर्ड मे अस्सी वर्ष बिता चुके है और अब भी अपने को स्फूर्तिशाली व्यक्ति समझते है—सिवाय इसके कि कुछ साल पहले वे अपने पैरो का उपयोग पूर्णत खोते-खोते रह गए। उनका आवास एक कुटीर है, वह ऐवन नद तथा

उसके निकटवर्ती हरे मैदानो के सामने बना हुआ है, वह स्वच्छता, सुव्यवस्था और सुख की तस्वीर है , इस देश के दीन से दीन गृह मे हम इन बातो की झाकी देख सकते है। एक नीचा सफेदी-पुता कमरा, जिसका पत्थर का फर्श भली भाति रगडकर पोछ दिया गया है, बैठक, हाल और भोजनागार का काम देता है। आले पर कासे और मिट्टी की तश्तरियो की पक्ति की पक्ति करीने से सजी हुई थी। एक पुराने बलूती टेबुल पर, जिसे रगडने पोछने के बाद पालिश कर दिया गया था, पारिवारिक बाइबिल एव प्रार्थना-पुस्तक पडी हुई थी, और दराज मे बहुत उपयोग मे लाई हुई आधी-कोडी पुस्तके दिखाई दे रही थी। यही उनका पारिवारिक पुस्तकालय था। कमरे के दूसरे छोर पर कुटीर-फर्नीचर की वह महत्त्वपूर्ण वस्तु घडी टिक-टिक कर रही थी। उसके एक तरफ चमकता हुआ गर्म करने का एक पात्र लटका हुआ था, तथा दूसरी ओर बूढे की सीग की मुठियावाली रविवासरीय छडी थी। आतिशदान काफी चौडा और गहरा था और उसके चतुर्दिक् गप-मण्डली भलीभाति बैठ सकती थी। एक कोने मे बूढे की पोती बैठी सिलाई का काम कर रही थी, वह एक नीलनयना सुन्दरी थी उसके सामने वाले कोने मे एक अति-असमर्थ वृद्ध मित्र बैठे थे जिसे उन्होने जॉन ऐज के नाम से पुकारा और जिसके बारे मे बाद मे मुझे ज्ञात हुआ कि वह बचपन से उनका साथी था। बचपन मे दोनो साथ-साथ खेले थे, जवानी मे साथ-साथ काम किया था, अब वे जीवन की सध्या को लडखडाते और गप-शप लगाते हुए बिता रहे थे और शायद कुछ दिनो बाद निकटवर्ती चर्च-प्रागण मे साथ-साथ दफनाये भी जाए। अस्तित्व की दो धाराए इस प्रकार साथ-साथ शान्तिपूर्वक बहती बहुत कम दिखाई देती है।

मैंने आशा की थी कि इन पुराने पुरावार्त्ताकारो से कवि की कुछ परम्परागत स्मृतिकथाए एकत्र कर सकूगा, किन्तु उनसे कोई नई बात मालूम नही हुई। शेक्सपियर की रचनाओ के बाद तुलनात्मक उपेक्षा का जो लम्बा मध्यान्तर आया उसने उनके इतिहास पर एक छाया डाल दी है, और कवि के लिए यह सौभाग्य एव दुर्भाग्य दोनो की बात है कि उसके जीवनी-लेखको के लिए चन्द कल्पनाए करने के सिवा और कुछ कहने को नही रह गया है।

जब प्रसिद्ध स्ट्रैटफोर्ड जयन्ती मनाई गई थी तब चर्चरक्षक और उनके साथी, दोनो, समारोह मे बढ़ई के रूप मे नियुक्त किए गए थे। उनको उत्सव के प्राण

गैरिक की याद थी, जो सारी व्यवस्था का प्रधान निरीक्षक था ग्रौर जो चर्च-रक्षक के शब्दो मे नाटा ग्रादमी था—बडा ही स्फूर्तिशाली ग्रौर खुशदिल । जॉन ऐज ने शेक्सपियर के मलबेरी वृक्ष को काटने मे भी सहायता की थी ग्रौर उन्हे बिक्री के लिए जेब मे रखे हुए था ।

इन दोनो वृद्धो को शेक्सपियर के जन्मस्थान वाली बातूनी वृद्धा के विषय मे सन्देह प्रकट करते सुनकर मुझे दु ख हुग्रा । जब मैने उसके बहुमूल्य स्मृति-चिह्नों, विशेषत मलबेरी वृक्ष के शेषाश की चर्चा की तो जान ऐज ने सिर हिला दिया। चर्चरक्षक ने तो उस घर मे शेक्सपियर के पैदा होने के विषय मे भी शका प्रकट की । मै शीघ्र ही समझ गया कि उस बुढिया की हवेली पर इन हजरत की बुरी नजर है, क्योकि वह कवि की समाधि का प्रतिद्वन्द्वी है ग्रौर वहा की ग्रपेक्षा समाधि-स्थान मे कम दर्शक ग्राते है । इस प्रकार इतिहासकारो मे शुरू से ही मतभेद है ग्रौर केवल ककरो के कारण सत्य की धारा उद्गम पर ही कई विरोधी स्रोतो मे बहती दिखाई पडती है ।

हम निम्बुमार्ग से होकर चर्च तक पहुचे ग्रौर एक गाथिक द्वारमण्डप से ग्रन्दर प्रवेश किया । यह द्वारमण्डप भारी बलूत के नक्काशीदार दरवाजो से ग्रलकृत है । ग्रन्दर का भाग खूब लबा-चौडा है ग्रौर उसका स्थापत्य तथा सज्जा ग्रधिकाश ग्राम्य-चर्चों की ग्रपेक्षा कही उत्तम है । यहा सामन्तो एव रईसो की कुछ प्राचीन छतरिया है, जिनमे से कुछ के ऊपर कुलचिह्नाकित वर्म-ढाल तथा झडे लटके हुए है । शेक्सपियर की समाधि वेदिका के भीतर है । यह स्थान बहुत शान्त ग्रौर प्रेतवासीय है । नुकीली खिडकियो के सामने ऊचे देवदारु पखा झलते है, ग्रौर दीवारो से थोडी ही दूर बहती हुई ऐवन नदी निरन्तर कल-कल निनाद करती रहती है । एक चपटा पत्थर उस स्थान का निर्देश करता है जहा कवि समाधिस्थ है । उसपर चार पक्तिया खुदी हुई है, जो कहा जाता है वही लिखकर छोड गया था, ग्रौर जिनमे कुछ न कुछ ग्रनोखापन ग्रवश्य है । यदि ये पक्तिया सचमुच उसी की है तो समाधि की शान्ति के प्रति उसकी उत्कण्ठा को प्रकट करती है, जो उदात्त भावनाशील एव विचारप्रधान मनस्वियो के लिए स्वाभाविक है ।

Good friend, for Jesus' sake forbeare
To dig the dust enclosed here,

Blessed be he that spares these stones,
And curst be he that moves my bones.

(स्वतत्र हिन्दी अनुवाद)

प्यारे मीत, ईश-हित रुक जाओ, न करो मनमानी।
गड़ी हुई मिट्टी मत खोदो इसकी जो कल्याणी।
उसका मगल हो जो प्रस्तरखण्डो को दे छोड़।
सर्वनाश हो उसका जो देवे हड्डिया झिझोड़॥

समाधि के ठीक ऊपर, दीवार मे बने एक ताख पर शेक्सपियर की एक वक्षप्रतिमा (बस्ट) है। यह उसकी मृत्यु के थोडे ही दिनो बाद लगाई गई थी, इसलिए कहा जाता है कि इसमे कवि से बहुत साम्य है। मूर्ति बहुत सुखद और भव्य है। ललाट धनुपाकार और सुन्दर है और मैंने सोचा कि इसमे कवि के उस प्रसन्न एव समाजप्रिय मुख के दर्शन कर रहा हू जिसके लिए वह अपने समकालिको के बीच प्रसिद्ध था। इसके साथ यह मूर्ति उसकी प्रतिभा की विशालता भी विकीर्ण करती है। प्रस्तर-लेख मृत्यु के समय उसकी आयु का उल्लेख करता है—तिरपन वर्ष दुनिया की दृष्टि से यह अकाल-मृत्यु है, क्योकि जो प्रतिभा जीवन के तूफानी परिर्वतनो से सुरक्षित थी और लोक-यश तथा राजकीय अनुकूलता के सूर्यप्रकाश मे खिलती जा रही थी उससे (जीवन के) स्वर्णिम शरत् मे क्या-क्या आशाए नही की जा सकती थी ?

चैत्य पर जो शिलालेख है उसका कुछ कम प्रभाव नही पडा है। इसी के कारण अपने गाव की गोद से उसके अवशेष वेस्टमिंस्टर एब्बी नही भेजे गए, जिमका इरादा एक बार किया गया था। कुछ साल पहले की बात है, बगल मे एक तहखाना बनाने के लिए मज़दूर जमीन खोद रहे थे कि धरती धसक गई और तोरण की भाति एक रिक्त स्थान निकल आया जिससे होकर कोई कवि की समाधि तक पहुच सकता था। किन्तु किसी ने शापो द्वारा रक्षित अवशेषो को हाथ लगाने की हिम्मत नही की, और कही कोई फिरन्तू या उत्सुक व्यक्ति या पुरावस्तुओ का सग्रहकर्त्ता चोरी करने का लोभ न करे इसलिए बूढे चर्चरक्षक ने दो दिनो तक वहा पहरा दिया, इस बीच तहखाना बन गया और वह रास्ता भी पुन बन्द करा दिया गया। बूढे (चर्चरक्षक) ने मुझे बताया कि गुफा के अन्दर जाकर देखने की चेष्टा उसने की थी परन्तु शवाधार या अस्थिया

दिखाई नही पडी—सिर्फ मिट्टी और धूल वहा थी। मैंने मन मे सोचा कि शेक्सपियर की धूल को देखना भी कितनी बडी बात है !

उसकी समाधि के बाद उसकी पत्नी, उसकी चहेती बेटी श्रीमती हाल तथा परिवार के अन्य व्यक्तियो की समाधिया है। पास के एक चैत्य पर उसके पुराने मित्र सूदखोर जान कब का पूरे कद का पुतला है। कहा जाता है कि इस पुतले पर उसने एक विचित्र समाधिलेख लिखा था। आस-पास और भी मरणस्मारक है परन्तु किसी ऐसी चीज की ओर मन जाता ही नही, जिसका सम्बन्ध शेक्सपियर से न हो। उसका ही विचार इस स्थान के कण-कण मे भिदा हुआ है, इमारतो का सम्पूर्ण अबार उसका ही रौजा-सा जान पडता है। सन्देह से अबाधित भावना यहा खुलकर खेलती है। उसके दूसरे सकेत (स्थान) झूठे या सन्दिग्ध हो सकते है, किन्तु यहा स्पष्ट प्रमाण एव पूर्ण निश्चितता है। जब मै ध्वनित होती हुई पटरी पर से गुजर रहा था तब यह सोचकर पुलक से भर गया कि सचमुच मेरे पगो के नीचे शेक्सपियर के अवशेष मिट्टी मे मिलते जा रहे है। बहुत देर बाद जाकर मै अपने को वह स्थान छोडने के लिए तैयार कर सका। चर्च-प्रागण से गुज़रते हुए मैने यू-वृक्ष की एक टहनी तोड ली, यही एक चिह्न है जो मैं स्टैटफोर्ड से अपने साथ ले आया।

अब मैं तीर्थयात्री के भक्तिभाजन प्रायः सभी पदार्थो को देख चुका था किन्तु मेरे मन मे चार्लीकोट जाकर लूसी परिवार का पुराना पारिवारिक केन्द्र देखने और उस पार्क मे घूमने की कामना शेष थी जिसमे स्ट्रैटफोर्ड के कुछ आवारो के साथ शेक्सपियर ने हिरन चुराने का यौवनोन्मुख अपराध किया था। हमे बताया जाता है कि इस जगली कार्य मे वह बन्दी बना लिया गया, और रक्षक के घर तक पहुचाया गया, जहा रातभर उसे भयकर कैद मे रखा गया। जब उसे सर टामस लूसी के सामने उपस्थित किया गया तो उसके प्रति उन्होंने निश्चय ही बडा क्षोभकारी और अपमानजनक व्यवहार किया होगा, क्योकि उसकी भावना पर उसका ऐसा प्रभाव पडा कि एक व्यग्योक्ति लिखकर उसने चार्लीकोट के पार्क के फाटक पर चिपका दी।

सामन्त के सम्मान पर इस दौरात्म्यपूर्ण आक्रमण ने उन्हे इतना क्रुद्ध कर दिया कि उन्होने वार्विक के एक वकील को इस मृग-चोर तुक्कड के विरुद्ध कठोर कानूनी कार्रवाई करने को लिखा। शेक्सपियर ने जनपद के एक सामन्त और

वकील दोनो की सयुक्त युक्ति को झेलने की प्रतीक्षा नही की, उसने तुरन्त ऐवन के सुखद तट तथा अपने पैतृक पेशे को छोड दिया, लन्दन चला गया, थियेटर का आश्रय लिया, फिर अभिनेता बना, और अन्त मे नाट्यमच के लिए लिखना शुरू कर दिया। इस प्रकार सर टामस लूसी के अत्याचार के कारण स्ट्रैटफोर्ड ने एक उदासीन ऊन तुननेवाले को खो दिया, किन्तु ससार को एक अमर कवि मिल गया। किन्तु बहुत दिनो तक लार्ड आफ चार्लीकोट का कठोर व्यवहार वह भूल नही सका और अपनी रचनाओ द्वारा उसका बदला ले लिया।

कवि की इस प्रारम्भिक अनीति की सफाई देने की चेष्टा उसके बहुत से जीवनी-लेखको ने की है, किन्तु मै इसे उन अविचारपूर्ण कारनामो मे से एक मानता हू जो उसकी स्थिति एव मनोदशा मे स्वाभाविक माने जा सकते है। शेक्सपियर जब किशोर था तो नि सन्देह उसमे वे सब उन्मत्तताए और अनियमितताए थी जो भावुक, अनुशासनहीन और अनिदेशित प्रतिभा मे होती है। कवि स्वभाव मे आवारगी का कुछ न कुछ अश होता ही है। जब उसे अपने ऊपर स्वतन्त्र छोड दिया जाता है तो वह निर्बन्ध और उन्मत्त होकर दौडता है तथा हर तरह के सनकीपन और स्वच्छन्दता मे प्रमुदित होता है। यह नियति के जुए मे घूमते पासे के समान है, कोई नही कह सकता कि एक निसर्गजात प्रतिभा एक बदमाश का निर्माण करेगी या एक कवि का। यदि सौभाग्य-वश शेक्सपियर के मन ने कविता की ओर मोड न लिया होता तो शायद वह शिष्ट आचरण के सब नियमो को उसी प्रकार लाघ जाता जैसे सब नाटकीय नियमो का अतिक्रमण कर गया है।

मुझे ज़रा भी सन्देह नही है कि अपने किशोर-जीवनकाल मे स्ट्रैटफोर्ड के आस-पास स्वच्छन्द बछेडे की भाति फिरते समय उसके साथ सभी तरह के विचित्र लोग आ जुटे होगे, उसने वहा के सब प्रमादियो एव उन्मादियो का साथ किया होगा और उन अभागे लडको मे से एक रहा होगा जिनका ज़िक्र आते ही वृद्धजन अपना सिर हिला देते है और भविष्यवाणी करते है कि एक न एक दिन उन्हे फासी के तख्ते पर चढना ही होगा। उसके लिए सर टामस लूसी के पार्क मे हिरन की चोरी करना वैसा ही था जैसा किसी स्काट सामत के लिए युद्धाभियान करना होता है, और उसकी जिज्ञासु, पर उच्छृङ्खल, कल्पना

के लिए वह एक सुखप्रद दुस्साहस के समान आकर्षक लगा होगा।[1]

चार्लीकोट का पुराना महल और उसके चतुर्दिक् फैला पार्क अब भी लूसी-परिवार के अधिकार मे है, और कवि के यत्किञ्चित् इतिहास की इस सनकभरी परन्तु घटनापूर्ण परिस्थिति से सम्बद्ध हो जाने के कारण मनोरजक हो उठा है। चूकि महल स्ट्रैटफोर्ड से केवल तीन मील की दूरी पर स्थित था मैने पैदल ही उसे जाकर देखने का निश्चय किया, जिससे मै कुछ उन दृश्यो के बीच घूमने का आनन्द ले सक जिनसे शेक्सपियर के ग्राम्य-प्रतीको की अपनी प्रारम्भिक कल्पनाए ग्रहण की होगी।

देहात उस समय भी नगा और पल्लवरहित था, किन्तु आग्ल दृश्य सदा

---

१ किशोरावस्था मे शेक्सपियर तथा उसके साथियो की उच्छृङ्खल आदतो का वर्णन ज्येष्ठ आयरलैण्ड ने अपनी पुस्तक 'पिकचरस्क व्यूज आन दि ऐवन' मे किया है — स्ट्रैटफोर्ड से लगभग ७ मील पर बेडफर्ड का बाजारू कस्बा था जहा की 'एल' मदिरा प्रसिद्ध थी। एक बार वहां के मद्य विक्रेताओ ने पास-पडौस के लोगो को एल-पान मे प्रतियोगिता करने की चुनौती दी। जो इनमे भाग लेने आए और चैम्पियन निकले उनमें शेक्सपियर भी था। नशा मालूम होते ही सब अपने घर की ओर लौट पड़े किन्तु एक मील जाते-जाते उनके पांवो ने जवाब दे दिया और एक पेड़ के नीचे पड़कर उन्होने रात बिताई। यह पेड अब भी है और शेक्सपियर के वृक्ष के नाम से ही पुकारा जाता है।

सबेरे उसके साथियो ने जगाया और पुनः बैडफर्ड चलने की सलाह दी पर उसने निम्नलिखित तुकबन्दी सुनाकर वहां जाने से इन्कार कर दिया।

पाईपिग पैबवर्थ, डांसिग, मार्सटन,
हाटेड हिलब्रो, हगरी ग्रेफ्टन,
डर्जिग एक्सहाल, पैपिस्ट विक्सफोर्ड,
बेगरली ब्रूम, ऐंड ड्रकन बेडफोर्ड।

आयरलैण्ड का कथन है कि उपर्युक्त गावो के साथ लगे विशेषण आज भी प्रयुक्त होते है। पेबवर्थ के लोग अब भी तम्बाकू पीने की कला के लिए प्रसिद्ध हैं; हिलब्रो को भुतहा हिलब्रो कहा जाता है; और ग्रैफ्टन अपनी धरती की बजरता के लिए प्रसिद्ध है।

ही हरीतिमायुक्त रहते है, और मौसम के तापमान मे जो आकस्मिक परिवर्तन हो गया था, भूदृश्य पर उसका गतिशील प्रभाव आश्चर्यजनक था। बसन्त का यह प्रथम जागरण बडा ही स्फूर्तिजनक और जीवनदायी था, उसका गरम प्रश्वास इन्द्रियो पर चुपके से फैल रहा था, आर्द्र एव कोमल धरती हरित कोमल दूर्वा के अकुर फेकने लगी थी, तरुओ एव निकुजो से फूटती आभाए और कलिया आती हुई हरीतिमा एव कुसुमावली का आश्वासन दे रही थी। शीतल ओसबिन्दु शिशिर-परिच्छद की सीमा का निर्देश करते हुए, कुटीरो के सामने लगे लघु उद्यानो मे श्वेत शुभ्र कलियो पर चमकते थे। खेतो से भेडो की मिमियाहट की हलकी ध्वनि आने लगी थी। छाजन की ओरियो तथा मुकुलित बाडो पर गौरैया नाचती फिरती थी, लाल की पिछली शिशिरकालीन विलापाकुल तान अब जीवन्त हो चली थी। लवा, दुर्गन्धित चरागाहो से बाहर निकलकर ऊपर आकाश के बादलो के बीच उडता सगीत की धारा बहाने लगा था। मै इस गायिका चिडिया को ऊपर और ऊपर जाते देख रहा था—यहा तक कि उसकी काया बादल के शुभ्रवक्ष पर एक बिन्दु जैसी रह गई, यद्यपि कान अब भी उसकी सगीत-माधुरी से भरे हुए थे। ऐसे समय मुझे सिम्बेलाइन मे शेक्सपियर का वह छोटा गीत याद आ गया—

Hark! Hark! the lark at heaven's gate sings,
And phoebus' gins arise,
His steeds to water at those springs,
On chaliced flowers that lies

And winking mary buds begin
To ope their golden eyes,
With everything that pretty bin
My lady sweet, arise!

(स्वतन्त्र हिन्दी पद्यानुवाद)

सुनो! सुनो! वह लार्क गा रहा स्वर्ग-द्वार के नेरे।
सूर्यदेव उग रहे पुन. करने जगती के फेरे।

उसके काल अश्व चलते देने स्रोतो मे पानी ।
चषक रूपो से जो फूलों पर शोभित होते रानी ।
सैन मारती हुई प्रमोदित सुन्दर कोमल कलियां ।
खोल रही है धीरे-धीरे निज स्वर्णिम आखड़िया ।
उस सुन्दर पीपे को लेकर सब मजुल हरियाली ।
उठो, उठो ! सुन्दरी प्रियतमे ! मेरी आली !

निश्चय ही यह सम्पूर्ण अचल ही काव्यात्मक धरती है, प्रत्येक वस्तु शेक्सपियर की भावना से सम्बद्ध है । मैने जो भी कुटिया देखी, उसके विषय मे मेरे मन मे यही आया कि अपने बालपन मे वह यहा आता रहा होगा—और ग्राम्य-जीवन तथा वहा के शिष्टाचार के विषय मे यही से गहरा ज्ञान प्राप्त किया होगा, तथा जिन पौराणिक कथाओ एव प्रमत्त मूढ विश्वासो को जादूगर की कला की भाति उसने अपने नाटको मे गूथा है उन्हे यही सुना होगा । क्योकि हमे बताया गया है कि उसके समय मे शिशिर-सध्याओ का यह एक लोकप्रिय मनोरजन था कि लोग आग के चतुर्दिक् बैठ जाते थे और भ्रमणशील शूरो, रानियो, प्रेमियो, सामतो, महिलाओ भीमकाय व्यक्तियो, वामनो, चोरो, छलियो, जादूगर-नियो, परियो, भूतप्रेतो और सन्यासियो की मज़ेदार कहानिया कहते सुनते थे ।

कुछ दूर तक मेरी राह ऐवन के सामने से गई थी । यह नदी एक विस्तृत एव उपजाऊ घाटी मे अनेक चक्राकार मोड लेती है । कभी वह बेतो के जगलो के बीच से, जो उसके किनारो पर उगे हुए है, चमकती बहती है, कभी झाडियो के बीच अथवा हरित तटो के नीचे विलुप्त हो जाती है, और कभी शाद्वल भूमिखण्ड के करारो से नील जल पुज प्रवाहित करते हुए पूर्णत आखो के सामने आ जाती है। देहात के इस सुन्दर हृदय-देश को 'वेल आफ दि रेड हार्स' (रक्ताश्व की घाटी) कहते है । लहरियादार नील पर्वतो की एक दूरस्थ रेखा इसकी सीमा-सी लगती है, और सब अन्तर्वर्त्ती भूदृश्य इस तरह फैले हुए है मानो ऐवन की रजतश्रृङ्खलाओ मे बाध दिए गए हो ।

लगभग तीन मील सडक से चलने के बाद मैं एक पगडण्डी पर मुड गया, जो खेतो की मेडों पर से होती हुई पार्क के निजी फाटक तक गई थी । पैदल पथिक की सुविधा के लिए सीढिया बनी हुई थी, क्योकि उस भूमि से एक सार्वजनिक मार्ग भी था । इन सत्कारशील जमीदारियो को देखकर मुझे सुख

होता है, क्योकि इन मे हर ग्रादमी की कुछ न कुछ सम्पत्ति होती है—कम से कम वहा तक तो होती ही है जहा तक पगडण्डी का सम्बन्ध है। इसके कारण गरीब ग्रादमी ग्रपनी किस्मत से समझौता कर लेता है, इससे भी बडी बात यह कि वह ग्रपने पडोसी के सौभाग्य से—उसके पार्क एव प्रमोद-भूमि का स्वामी होने के सौभाग्य से भी समझौता कर लेता है क्योकि वे उसके ग्रानन्द के लिए भी खोल दिए गए है। वह भी उतनी ही स्वतत्रता के साथ विशुद्ध वायु मे श्वास लेता है, ग्रौर छाया मे उसी प्रकार विचरण करता है जिस प्रकार भूमिपति करता है, ग्रौर यद्यपि जो कुछ वह देखता है उसे ग्रपना कहने की सुविधा उसे नही है किन्तु उसके लिए खर्च करने ग्रौर उसे व्यवस्थित करने का बोझ भी तो उसपर नही है।

ग्रब मैंने ग्रपने को बडे-बडे बलूतो एव एल्मो (देवदारुग्रो) से घिरे मार्ग पर पाया। इन वृक्षो के बृहदाकार शताब्दियो के विकास के गवाह है। उनकी शाखाग्रो से हवा सरसराती बह रही थी ग्रौर वृक्ष-शृगो पर स्थित ग्रपने ग्रानुवशिक नीडो पर बैठे काक-वृन्द काव-काव कर रहे थे। ग्राखे दूर छोटी होती हुई दृश्यावली तक जाती थी जिनके बीच दूरस्थ एक मूर्त्ति के सिवा ग्रौर कोई चीज़ बाधक न थी। हा, खुले मैदान के उस पार एक सैलानी हिरन ग्रवश्य छाया की भाति चला जा रहा था।

इन शानदार पुरातन वृक्ष-वीथियो मे ऐसा कुछ ग्रवश्य है जिसका प्रभाव गाथिक स्थापत्य-जैसा पडता है—न केवल रूप-साम्य के कारण वरन इसलिए भी कि उनमे लबी कालावधि का साक्ष्य भरा पडा है, ग्रौर इसलिए भी कि उनका जन्म ऐसे ज़माने मे हुग्रा जिससे हम रूमानी महनीयता की भावनाग्रो को सम्बद्ध करते है वे एक प्राचीन कुटुम्ब की दीर्घकालादृत गरिमा तथा गर्वपूर्वक केन्द्रित स्वतत्रता को भी प्रकट करती है। मैंने एक योग्य परन्तु ग्रभिजात पुराने मित्र को ग्राधुनिक रईसो के विशाल प्रासादो के विषय मे यह कहते सुना है कि "धन ग्रवश्य ही पत्थर ग्रौर चूनेगारे को लेकर बहुत-कुछ कर सकता है, किन्तु ईश्वर का धन्यवाद है कि सहसा बलूतो की वीथी का निर्माण करना उसके बूते की बात नही है।"

ग्रपने प्रारम्भिक जीवन-काल मे इस समृद्ध दृश्यावली तथा फुलब्रोक के निकटवर्त्ती पार्क, जो उस समय लूसी जमीदारी का एक भाग था, के रूमानी

एकान्त मे उसके परिभ्रमण करने के कारण ही शेक्सपियर के कुछ टीकाकारो ने यह कल्पना की है कि उसने जैक्स के उदात्त वन-वर्णन तथा अपने नाटक 'ऐज़ यू लाइक इट' की वनस्थली के चित्रो को यही से लिया है। ऐसे ही दृश्यो के बीच एकान्त परिभ्रमण-द्वारा मन स्फूर्ति की गहरी परन्तु शान्त बूदो का आस्वाद लेता रहता है और प्रकृति के सौन्दर्य एव महिमा के प्रति गम्भीर रूप से जाग्रत् हो जाता है। कल्पना दिवास्वप्न और उल्लास मे प्रकाशित हो उठती है, अस्पष्ट किन्तु दिव्य प्रतिभाए एव विचार उसपर उदित होते रहते है, और हम विचारणा की मौन एव प्राय अनिर्वचनीय विलासिता मे प्रमुदित हो जाते है। शायद ऐसी ही किसी मनोदशा मे, और शायद मेरे सामने के इन वृक्षो मे से ही किसी एक के नीचे, जो ऐवन के दूर्वाच्छादित तटो एव कपित जल के ऊपर अपनी विस्तृत छाया फेक रहा होगा, बैठकर कवि ने वह लघु गान लिखा होगा जिसमे एक ग्रामीण विलासी की आत्मा का प्रश्वसन है।

अण्डर दि ग्रीन वुड ट्री,
हू लव्स टु लाई विद मी
ऐण्ड ट्यून हिज़ मेरी थ्रोट
अनटु दि स्वीट बर्ड्स नोट,
कम हिदर, कम हिदर, कम हिदर
हियर शैल ही सी
नो ऐनेमी,
बट विण्टर ऐण्ड रफ़ वेदर।

(स्वतत्र हिन्दी पद्यानुवाद)

हरित वन्य इस तरु के नीचे
मम सग पड़ना प्रिय दृग मींचे
हर्षित कण्ठ साधता जाता
मधुर तान पखी की लाता
आओ यहां, आओ यहां, आओ यहा हे प्राण-प्रियतम !
वह देखेगा यहां
शत्रु नही कोई जहां
किन्तु शिशिर का डंक यहां है, और बुरा है मौसम।

अब मै घर के सामने पहुच गया था। यह ईटो की बनी एक बडी इमारत है, कोणो पर पत्थर लगे हुए है और रानी एलिज़ाबेथ के समय की गाथिक प्रणाली मे बनी हुई है। यह उसके राज्यकाल के प्रथम वर्ष मे बनी थी, बाह्याकृति आज भी अपने मूल रूप मे बनी है, और उन दिनो के धनवान् ग्रामीण भद्रजन के निवास का नमूना है। भवन के सामने जो एक प्रकार का आगन है उसमे पार्क से आनेवाले मार्ग का एक बडा फाटक खुलता है। इस आगन को दूर्वाभूमिखण्ड, निकुञ्जो और फूल की क्यारियो से सजाया गया है। फाटक पुरातन प्राचीर के अनुकरण पर बना है, इसे एक प्रकार की सैनिक चौकी कहा जा सकता है जिसके दोनो ओर बुर्ज है—यद्यपि यह सब सुरक्षा की जगह केवल सज्जा के लिए ही अधिक बना है। भवन का अग्रभाग पूर्णत पुरातन प्रणाली का है, इसमे प्रस्तर-स्तभोवाले गवाक्ष है, भारी पत्थरो के धनुषाकार वातायन है, एक सिंह-द्वार है जिसके ऊपर पत्थर मे कुलचिह्न खुदे हुए है। भवन के प्रत्येक कोने पर एक अष्टभुजी बुर्ज है जिसपर कलईदार गोले एव वातदर्शक लगे है।

ऐवन पार्क के बीच से बहती है, वह एक ढालुए किनारे के पादभाग से मुडती है। यह ढालुवा किनारा मकान के पश्चाद् भाग से शुरू होता है। उसकी (ऐवन की) सीमाओ पर हिरनो के बडे-बडे झुण्ड या तो चर रहे थे या विश्राम कर रहे थे, उसकी छाती पर हस बडी गरिमा के साथ तैर रहे थे। जब मै उस सम्मानार्ह पुरातन हवेली को देख रहा था तो मुझे जस्टिस शैलो के निवास पर फालस्टाफ की स्तुति तथा शैलो की बनावटी उदासीनता एव वास्तविक अह की याद आ गई।

फालस्टाफ—आपका भवन बहुत अच्छा एव समृद्धिपूर्ण है।

शैलो—मिथ्या, मिथ्या, मिथ्या, सरजान, सब भिखारी है भिखारी। हा, अच्छी हवा है।

शेक्सपियर के समय मे इस पुरातन हवेली मे चाहे जो उत्फुल्लता रही हो, इस समय तो वहा नीरवता एव निर्जनता का वातावरण था। आगन की ओर खुलनेवाले महत् लौह-द्वार मे ताला बन्द था, इधर-उधर दौडते व्यस्त सेवको का भी कोई दिखावा न था। जब मै गुज़र रहा था तो एक हिरन ने धीरे-से मेरी ओर देखा, क्योकि अब उसे स्ट्रैटफोर्ड के सरहदी डाकुओ का कोई भय नही

रह गया था। पारिवारिक जीवन का एक मात्र चिह्न जो मुझे दिखाई पडा, एक सफेद बिल्ली थी जो सजग दृष्टि से इधर-उधर देखती छिपती हुई अस्तबल की ओर जा रही थी—मानो किसी दारुण चढाई पर जा रही हो । हा, मुझे इतना और लिखना चाहिए कि कोठार की दीवार पर एक दुष्ट कौए की लाश लटक रही थी जिससे प्रकट होता था कि लूसी परिवार मे अब भी चोरो के प्रति वही तिरस्कार का भाव है और अब भी वे आचलिक प्रभुता का उसी कठोरता के साथ प्रयोग करते है जो कवि के विरुद्ध इस प्रकार प्रयुक्त हुई थी।

कुछ देर तक इधर-उधर फिरने के बाद अन्त मे मै पार्श्वस्थ मुख्य द्वार तक पहुचा। यही भवन मे जाने का प्रतिदिन का मार्ग था। एक योग्य भवनरक्षिका ने शिष्टतापूर्वक मेरा स्वागत किया और बडे सद्भाव और सूचकता के साथ मुझे भवन का अन्तरग भाग दिखाया। अधिकाश भाग मे सुधार और परिवर्त्तन हो चुका है और उन्हे आधुनिक रुचि एव जीवन-विधि के अनुकूल बना दिया गया है। हा, बलूत की बनी एक अच्छी-सी सीढी है, फिर बडा-सा हाल है, जो प्राचीन कृषि-भवनो का श्रेष्ठ अग होता था, और जिसको बहुत-कुछ उसी रूप-रग मे रखा गया है जिसमे वह शेक्सपियर के जमाने मे रहा होगा। छत मेहराबदार और ऊची है, उसके एक छोर पर गैलरी बनी हुई है जिसमे एक आर्गन (वाद्य) रखा है। शिकार के वे अस्त्र-शस्त्र तथा ढाले, जो पहले जमाने मे आम तौर पर ग्राम्य-सामन्तो के हाल को सजाती थी, हटा दी गई है और उनका स्थान कौटुम्बिक चित्रो ने लिया है। एक चौडा सत्कारशील अग्निकुण्ड है, जिसमे पुरातन शैली से पर्याप्त काष्ठाग्नि जलाने की गुजाइश है, क्योकि एक समय यही शिशिरकालीन उत्सवो एव समारोहो का मुख्य केन्द्र हुआ करता था। हाल की दूसरी दिशा मे एक बृहत् धनुषाकार गाथिक खिडकी है, जिसमे पत्थर के खभे लगे है और जो आगन की ओर देख रही है। यहा निर्मल स्वच्छ शीशे पर लूसी परिवार की अनेकानेक पीढियो के कुलचिह्न अकित है, कुछ तो १५५८ के है। ढाल पर अकित चिह्नो के बीच मुझे तीन 'शुभ्रकण्टक' (लूसेज) देखकर बडी खुशी हुई क्योकि इसी के कारण पहली बार सर टामस का चरित्र जस्टिस शैलो के साथ निबद्ध हुआ था। इनका वर्णन (शेक्सपियर के) मेरी वाइफ आफ विण्डसर नाटक मे हुआ है, जहा जस्टिस फालस्टाफ के प्रति क्रुद्ध है क्योकि उसने उसके आदमियो को पीटा है। हिरन को मार डाला है, और उसके निवास

मे घुस आया है। निश्चय ही यह लिखते समय कवि को अपने एव अपने साथियो के अपराधो का स्मरण रहा होगा और हम कल्पना कर सकते है कि शैलो मे जो कौटुम्बिक गर्व है या वह जो प्रतिशोध की धमकिया देता है, वह सब सर टामस के दर्पपूर्ण विमर्ष का ही व्यग्यचित्र है।

शैलो—सरह्यू, मुझे न फुसलाइए, मै इसे कठोर दण्ड का विषय बनाऊगा, यदि बीस जान फालस्टाफ भी होगे तो सर राबर्ट शैलो की निन्दा न कर पाएगे।

स्लेण्डर—उसकी जो ग्लोस्टर जनपद मे 'जस्टिस आफ पीस' (मजिस्ट्रेट) है।

शैलो—और भाई स्लेण्डर, सरक्षक (कास्टलोरम) भी।

स्लेण्डर—और धार्मिक न्यायाधीश (रोटालोरम) भी, और एक भद्रजन जो धर्मयाजक भी है, और जो किसी भी बिल, वारण्ट, रिहाई के आदेश पर अपने को भूमिपति लिखता है—भूमिपति! (आर्मीजीरो)।

शैलो—हा, हा, मै लिखता हू, और इन तीन सौ वर्षों से बराबर यही करता रहा हू।

स्लेण्डर—उसके पूर्व चले गए उसके सब उत्तराधिकारियो ने भी यही किया है, और जो सब पूर्वज उसके बाद आएगे, यही करेगे। वे अपने चिह्न मे एक दर्जन 'शुभ्रकण्टक' (व्हाइट लूसेज़) लगाएगे।

शैलो--कौसिल इस (मुकदमे) को सुनेगी, यह दगा है।

ऐवंस—यह उचित न होगा कि दगे का केस कौसिल सुने, दगे मे ईश्वर का कोई भय नही होता कान खोलकर सुन लो, कौसिल ईश्वर के भय की बात सुनना चाहेगी, दगे की बात नही, अपनी चौधराई उसमे करना।

शैलो—हा! हा! ओह मेरे प्राण! यदि मै फिर से तरुण हो जाता तो तलवार इसे खत्म कर देती।

इस प्रकार सज्जित खिडकी के पास पीटर लेली द्वारा अकित लूसी परिवार की एक महिला की एक तस्वीर टगी है जो चार्ल्स द्वितीय के समय की सर्वश्रेष्ठ सुन्दरियो मे गिनी जाती थी। बुढिया रक्षिका ने तस्वीर की ओर इशारा करते हुए अपना सिर हिलाया और मुझे सूचित किया कि इस महिला को ताश का बहुत बुरा शौक था और वह पारिवारिक सम्पत्ति का बहुत-सा भाग जुए मे गवा बैठी। इसी मे पार्क का वह भाग भी था जहा शेक्सपियर और उसके

साथियो ने हिरन को मारा था। उन सब खोई भूमियो को अबतक भी कुटुम्ब फिर से प्राप्त नही कर सका है। किन्तु इस मौजी महिला के बारे मे इतना तो मानना ही होगा कि उनके हाथ और भुजाए अत्यन्त सुन्दर तथा आकर्षक थी।

परन्तु जिस तस्वीर ने मेरा ध्यान सब से ज्यादा आकर्षित किया वह थी आतिशदान के ऊपर लगी बडी सी तस्वीर, जिसमे सर टामस लूसी और उनके उन कुटुम्बियो की छविया थी जो शेक्सपियर के उत्तर जीवन-काल मे इस हाल के निवासी थे। पहले तो मैने सोचा कि वह स्वय प्रतिशोधक सामत ही है किन्तु गृहरक्षिका ने मुझे विश्वास दिलाया कि यह उनके पुत्र की तस्वीर है, पहले (पिता) का तो एकमात्र प्राप्त साम्य चार्लीकोट के निकटवर्ती पुरवे के चर्च मे बनी उनकी समाधि पर लगा पुतला भर है इस तस्वीर को देखने से उस समय की वस्त्र सज्जा एव ढग पर काफी प्रकाश पडता है। सर टामस गुलूबन्द और चुस्त सदरी पहिने हुए है, जूते सफेद है जिनमे फुदने लगे है। पीली दाढी है जिसे मास्टर स्लेण्डर बेत के रग की दाढी कहेगे। उनकी पत्नी चित्र के दूसरे छोर पर बैठी है, वे चौडा गुलूबन्द और लम्बा चोगा पहिने है। बच्चो मे पवित्र कठोरता है और उनकी पोशाक नियमानुकूल है। इस परिवार-मण्डली मे कुत्ते भी शामिल है, सामने की भूमि मे अपने अड्डे पर एक बाज बैठा है। एक बच्चे के हाथ मे धनुष है—मतलब, सभी बाते सामन्त आखेट-कौशल को प्रकट करनेवाली है—शिकार, बाज छोडना, धनुर्विद्या, सब मे। और ये सब बाते उन दिनो योग्य सामन्तो के लिए कितनी आवश्यक मानी जाती थी।

मुझे यह जानकर बडा दु ख हुआ कि हाल का प्राचीन फरनीचर गायब हो गया। मै तो यह आशा करके गया था कि मुझे वह शानदार बाहवाली कुर्सी देखने को मिलेगी जिस पर बैठकर पिछले युग का ग्राम्य सामत अपनी देहाती शासन-सीमा मे राजदण्ड फटकारता था और जिसपर सर टामस उस समय बैठे होगे जब भीरु शेक्सपियर उनके सामने उपस्थित किया गया होगा। चूकि मै अपने मनोरजन के लिए तस्वीरे बनाना पसन्द करता हू इसलिए मैने इस विचार से अपना दिल बहला लिया कि रातभर कैद मे रहने के बाद दूसरे दिन सुबह अभागे कवि के मामले की सुनवाई इसी हाल मे हुई होगी। मैंने मन मे कल्पना की कि ग्रामाधिपति अपने खानसामो, परिचारको और नीले कोटधारी सेवको से घिरा बैठा है—सब अपने बैज पहिने हुए है। अभागा अपराधी, निराश और खण्डित,

रक्षको, शिकारियो एव कशाधिकारियो के पहरे मे लाया जाता है, उनके पीछे देहाती उजड्ड लोगो की भीड है। उत्सुक परिचारिकाए अधखुले दरवाजो से अपने दीप्त मुख निकाले झाक रही है, गैलरी मे बैठी सामन्त की सुन्दरी कन्याए बडे सौष्ठव के साथ कुछ आगे झुककर तरुण बन्दी को उस करुणा के साथ देख रही है जो स्त्रीत्व के अन्दर निवास करती है।' उस समय कौन यह सोच सकता था कि यह दीन अनुचर, जो एक ग्राम्य भूपति की क्षणिक सत्ता के सामने काप रहा है और देहाती मूर्खों के उपहास का केन्द्र बना हुआ है, शीघ्र ही राजाओ के आनन्द का साधन बन जाएगा, सब भाषाओ और कालो मे चर्चा एव लेखन का विषय बन जाएगा तथा मानव-मन का सर्वाधिकारी हो जाएगा और जो एक व्यग्य-कृति द्वारा अपने उत्पीडक को ही अमर कर देगा।

अब सेवक ने मुझे बाग मे चलने को निमन्त्रित किया, और मेरे मन मे भी आया कि उस कुज और हरीतिमा को चलकर देखू जहा जस्टिस ने सर जान फालस्टाफ एव कजिन साइलेंस की, अपने हाथ के लगाए वृक्ष के सेब और अज-मोद तोडकर खातिरदारी की थी, किन्तु मैं दिन का इतना बडा भाग सैर-सपाटे मे बिता चुका था कि मुझे आगे कोई खोज-बीन करने के विचार का त्याग करना पडा। मै विदा हो रहा था तब गृहरक्षिका और परिचारक की इन शिष्टाचारपूर्ण प्रार्थनाओ से मुझे बडा सन्तोष हुआ कि कुछ जलपान करके जाइए। उन्होने उस शुभ पुरातन आतिथ्यसत्कार का परिचय दिया जो पुराकाल की गढियो के दर्शनार्थी हम लोगो को आजकल क्वचित् ही प्राप्त होता है। मुझे कोई सन्देह नही कि यह एक ऐसा गुण है जिसे लूसियो के वर्तमान प्रतिनिधि ने अपने पूर्वजो से उत्तराधिकार मे प्राप्त किया है, क्योकि अपने व्यग्यचित्र तक मे शेक्सपियर ने जस्टिस शैलो को आग्रहपूर्वक फालस्टाफ की खातिरदारी करते दिखाया है—

मुर्गे और नीलकण्ठ की कसम, महोदय, आप आज रात यहां से न जा सकेंगे। मै आपको क्षमा नही करूगा, आप क्षमा नहीं किए जाएंगे, बहाने नहीं माने जाएंगे, कोई बहाना काम नहीं देगा; आपको क्षमा नहीं किया जाएगा। ··डेवी, चन्द कबूतर, चन्द छोटी टांगो वाली मुर्गियां भेड़ की एक अस्थिसन्धि, और कोई सुन्दर लघु खिलौना, कह दो विलियम कुक से।"

अब मैंने पुराने हाल से अनिच्छापूर्ण विदाई ली। मेरा दिमाग तत्सम्बन्धी

कल्पित दृश्यो एव चरित्रो से इस प्रकार भर गया था कि मुझे लगता था मानो मैं सचमुच उनके बीच रह रहा हू । हर चीज उन्हे इस प्रकार ले आती थी मानो सब कुछ हमारी आखो के सामने हो रहा हो । और ज्योही भोजनागार का द्वार खुला, मुझे लगा कि अब मास्टर साइलेस की क्षीण वाणी सुनाई ही देने वाली है—

रगरेलियां मची हाल मे दाढी सबकी हिलती है
स्वागत करो श्रोवराइड[1] का हृदय-कली अब खिलती है ।

अपनी सराय मे लौटने पर भी मै कवि की अप्रतिम देन के विषय मे सोचे बिना नही रह सका—इस प्रकार अपने मन के जादू को प्रकृति के मुह पर फेर देने की सामर्थ्य, वस्तुओ एव स्थानो मे ऐसे सौन्दर्य की सृष्टि, जो उनमे था नही, और इस श्रम-दिवसवाली दुनिया का पूर्ण परियो के लोक मे परिवर्तन । निश्चय ही सच्चा जादूगर वही है जिसका जादू न केवल इन्द्रियो पर वरन कल्पना और हृदय पर भी चलता है । शेक्सपियर के महत् प्रभाव के अन्दर मै सारे दिन सम्मोहन की-सी स्थिति मे फिरता रहा । मैं काव्य के दर्पण से भूदृश्य देखता रहा जिसके कारण प्रत्येक वस्तु इन्द्रधनुषी रगो मे रग गई थी । मैं कल्पित प्राणियो से घिर गया था—ऐसे हवाई असत् प्राणियो से जो कवि की शक्ति से पैदा हो गए थे, फिर भी जिनमे मेरे लिए वास्तविकता के सब सुख निहित थे । मैंने उसके बलूत-वृक्ष के नीचे जेक्स का स्वगत-भाषण सुना था, सुन्दरी रोजालिण्ड एव उसके सखा को वनाचल मे सैर करते देखा था, और सबके ऊपर एक बार पुन भावना मे मोटल्ले जैक फालस्टाफ तथा उसके समकालिको—महत् जस्टिस शैलो से लेकर सरल मास्टर स्लेण्डर तथा मजुला एनी पेज तक के सामने उपस्थित हुआ था । कवि को हजारो प्रणाम एव बधाइया, जिसने जीवन की नीरस वास्तविकताओ पर निर्दोष भ्रान्तियो का मुलम्मा चढा दिया था, जिसने मेरे बहुरगी पथ पर अनुपम एव अक्रीत आनन्दो को बिखेर दिया था, तथा अनेक निर्जन एकान्त घण्टो को सामाजिक जीवन की सम्पूर्ण प्रेमल एव प्रफुल्ल सहानुभूतियो से भर दिया था ।

जब मै लौटते समय ऐवन पर बने पुल को पार कर रहा था तो मैं वहा से

---

१ **श्रोवटाइड-लैण्ट (ईस्टर के पहले के ४० दिन) के पूर्व का काल ।**

उस दूरस्थ चर्च को देखने के लिए ठहर गया जिसमे कवि समाधिस्थ है और उस अभिशाप पर प्रसन्न हुए बिना न रह सका जिसने उसकी भस्मी को उस शान्त एव सम्मानित स्थान मे निर्विघ्न रहने दिया है। यदि उसे चैत्यलेखो एव कुलचिह्नाकित फलको अथवा उपाधिधारियो की अर्थक्रेय स्तुतियो की धूलधूसरित मण्डली के बीच रख दिया गया होता तो उसके नाम को क्या सम्मान प्राप्त हो सकता था ? यह सम्मानित भवन इस सुन्दर निर्जनता मे केवल उसकी छतरी के रूप मे खडा है—इसकी तुलना मे यदि उसे वेस्टमिस्टर एबी के किसी जनाकीर्ण कोने मे स्थान मिला होता तो क्या स्थिति होती ? समाधि के विषय मे इतनी व्यग्रता बहुत खिची हुई भावनाशीलता की सन्तति हो सकती है किन्तु मानव प्रकृति दुर्बलताओ एव मूढाग्रहो से ही निर्मित है और उसकी सर्वोत्तम एव कोमलतम विशेषताए इन कल्पित भावनाओ से जुडी हुई है। जो दुनिया मे प्रसिद्धि प्राप्त करने मे सलग्न रहा है और जिसने पार्थिव अनुकूलताओ की पूरी फसल काट ली है, वह भी, अन्त मे, इसी निष्कर्ष पर पहुचेगा कि कोई भी प्रेम, कोई भी सम्मान, कोई भी तालिया, आत्मा के लिए उतनी मधुर नही है जो उसके जन्मस्थान मे उत्पन्न होती है। वही स्थान है जहा वह अपने समशील एव बचपन के मित्रो के बीच शान्ति एव सम्मान के साथ रहने की कामना करता है और जब श्रान्त हृदय एव डूबता मस्तिष्क उसे चेतावनी देना आरम्भ करता है कि जीवन की सध्या घिरती चली आ रही है तो वह उसी अनुरक्त भाव से अपने बचपन के दृश्यो की छाती पर लेटने की कामना करता है जिसके साथ लघु शिशु अपनी मा की गोद मे लेटने की इच्छा रखता है।

जब तरुण कवि एक सन्दिग्ध ससार मे अपमान एव तिरस्कार भोगता हुआ घूम रहा था तब यदि अपने पैतृक गृह की ओर शोकभरी दृष्टि डालते हुए उसे ज्ञात रहता कि ज्यादा समय बीतने के पूर्व ही वह यश प्राप्त करके वहा लौट आएगा, या उसका नाम उसकी जन्मभूमि के लिए यश और गर्व की वस्तु हो जाएगा; उसकी मिट्टी बडी धर्मभावना एव निष्ठा के साथ उसके अत्यन्त मूल्यवान् खजाने के रूप मे सुरक्षित रखी जाएगी तथा जिस लघु बिन्दु मे उसकी अश्रुपूरित आखे केन्द्रित हैं वह एक दिन इस सुन्दर भूदृश्य के बीच प्रकाशस्तभ बन जाएगा और प्रत्येक राष्ट्र के साहित्यिक तीर्थयात्रियो को अपनी समाधि की ओर आकर्षित करेगा, तो उसके प्राण कितने प्रमुदित हो उठते।

इण्डियन[1] के चरित्र की विशेषताएं

मै प्रत्येक श्वेतमानव से पूछता हू कि क्या कभी ऐसा हुआ है कि उसने लोगन के केबिन मे भूखे प्रवेश किया हो और उसने उसे खाने को न दिया हो, कभी वह ठण्डा और नगा आया हो और उसने उसे पहिनने को कपडे न दिए हो ?

—एक इण्डियन सरदार के भाषण से ।

जब हम उत्तरी अमरीकी बनवासी को उन प्राकृतिक दृश्यो की—विशाल झीलो, असीम वनो, महीयसी नदियो एव मार्गहीन मैदानो—की पृष्ठभूमि मे देखते है, जिनके बीच वह रहता और जीता है तो ज्ञात होता है कि उसकी प्रकृति एव आदतो मे कुछ न कुछ ऐसी चीज अवश्य है जो, मेरी समझ मे, अद्भुत रूप से आकर्षक और भव्य है । जिस प्रकार अरब का निर्माण ही मरुस्थल के लिए हुआ है वैसे ही उसका निर्माण जगल के लिए हुआ है । उसकी प्रकृति कठोर, सरल एव सहिष्णु है,—वह कठिनाइयो से जूझने और अभाव से लडने के सर्वथा उपयुक्त है । दयाजनित गुणो के समर्थन के लिए उसके हृदय मे कोई स्थान नही । फिर भी यदि हम उसकी उस गर्वित उदासीनता एव सहज वाक्सयम को भेदकर अन्दर प्रवेश कर सके, जिसने उसके चरित्र को आकस्मिक पर्यवेक्षण से दूर कर रखा है, तो हम देखेगे कि वह सभ्य जीवन के अपने साथी मानव से सहानुभूतियो एव अनुरागो मे उससे कही ज्यादा बधा हुआ है जितना सामान्यत उसके विषय मे बताते है ।

उपनिवेशीकरण के प्रारम्भिक युगो मे, अमरीका के अभागे आदिमवासियो के साथ श्वेतमानवो-द्वारा दोहरा अन्याय होता रहा है । भाडे के टट्टुओ तथा अनियन्त्रित युद्ध के प्रयोग द्वारा उनसे उनकी पुश्तैनी जागीरे छीन ली गई,

---

१ 'इण्डियन' शब्द यहां इस नाम से पुकारी जानेवाली एक आदिम जाति के लिए प्रयुक्त हुआ है जो उत्तरी अमरीका के कुछ भागो मे फैली हुई है।

और कट्टरपथी तथा स्वार्थी लेखको-द्वारा उनका चरित्र लाञ्छित किया गया। उपनिवेशकर्त्ता प्राय उसके साथ जगली जानवर-जैसा व्यवहार करता था, और लेखक उसके प्रति किये गए अत्याचारो को उचित सिद्ध करने का प्रयत्न करते थे। उपनिवेशकर्त्ता को उसे सभ्य बनाने की अपेक्षा उसे नष्ट कर देना अधिक सरल प्रतीत होता था, लेखक विवेक से काम लेने की जगह उसे बदनाम करना ठीक समझता था। जगली और काफिर विशेषण इन दोनो वर्गो की शत्रुता के लिए काफी समझे जाते थे। इस प्रकार वनो मे फिरनेवाले इन गरीबो को पीडित और बदनाम किया जाता था, इसलिए नही कि वे अपराधी थे, बल्कि इसलिए कि वे अज्ञान थे।

शायद ही कभी श्वेत मानव ने वन्य मानव के अधिकारो को समझने की चेष्टा की हो या उसका आदर किया हो। शान्ति-काल मे वह धोखे के व्यवसाय का शिकार होता रहा है, युद्धकाल मे तो उसे ऐसा भयकर पशु समझ लिया जाता रहा है जिसका जीवन या मरण केवल सावधानी और सुविधा का प्रश्न-मात्र हो। जब आदमी की अपनी सुरक्षा खतरे मे पड जाती है तब वह प्राणियो को नष्ट करने के विषय मे बडा निर्दय हो जाता है। ऐसे समय, जब वह सर्प के दश का अनुभव कर रहा हो और उमे नष्ट करने की शक्ति का भी अपने अन्दर अनुभव कर रहा हो, उससे दया की आशा करना व्यर्थ है।

इस प्रकार आरम्भ मे जिस विद्वेष का प्रवर्त्तन हुआ, वह आज भी आमतौर पर प्रचलित है। यह सत्य है कि प्रशसनीय भावनाओ से पूरित होकर कई विद्वत्परिषदो ने इण्डियन कबीलो के वास्तविक स्वभाव एव जीवन-शैली का अनुसन्धान करने एव विवरण देने का प्रयत्न किया है, अमरीकी सरकार ने भी उनके प्रति मैत्री एव क्षमाशीलता की वृत्ति धारण करने और धोखे तथा अन्याय से उनकी रक्षा करने का विवेकपूर्ण एव मानवोचित कार्य किया है।[1]

---

१ अमरीकी सरकार ने इन इण्डियनों की दशा सुधारने का अथक प्रयत्न किया है। वह उनमें सभ्यता की कलाओं तथा नागरिक एवं धार्मिक ज्ञान के प्रचार का प्रयत्न भी करती रही है। श्वेत व्यापारियो की धोखाधड़ी से उनकी रक्षा करने के लिए ही किसी भी व्यक्ति द्वारा उनकी जमीन खरीदने की आज्ञा नहीं दी जाती ; सरकार की स्पष्ट अनमति के बिना उपहार के रूप मे

किन्तु सीमावर्ती अचलो मे रहनेवाले तथा बस्तियो के इर्दगिर्द मडराने वाले इन अभागो के विषय मे सर्वसाधारण की वृत्ति अब भी वही है। अब तो ये सामान्यत ऐसे विकृत प्राणियो का वर्ग बन गए है जो समाज के दूषणो द्वारा और दुर्बल तथा भ्रष्ट हो गए है, किन्तु जिन्हे सभ्यता का कोई लाभ नही मिला है। जो गौरवपूर्ण स्वतन्त्रता, वनवासियो के गुणो का प्रधान स्तभ थी, वह हिल-कर धराशायी हो गई है, और सारी नैतिक रचना तहस-नहस हो गई है। उनकी प्रेरणाए हीनता की भावना से अपमानित एव विकृत हो गई है, और उनका नैसर्गिक साहस उनके शिक्षित पडोसियो के श्रेष्ठ ज्ञान एव शक्ति के कारण दब गया है। समाज उनपर उस विनाशकारी अधड की भाति आया है जो कभी-कभी सारे उपजाऊ अचल को विनाश के गर्त मे डुबो देता है। उसने उनकी शक्ति छीन ली है, उनके रोगो मे वृद्धि कर दी है और उनकी मूल बर्बरता पर कृत्रिम जीवन के अधम पापो की कलम रोप दी है। उसने उनको हज़ारो फालतू आवश्यकताए प्रदान कर दी है, जब कि उनके जीवित रहने के साधनो को नष्ट कर दिया है। उसने उनकी हालत शिकार के उन प्राणियो-जैसी कर दी है जो कुल्हाडी की ध्वनि एव बस्ती के धुए से भाग खडे होते है और दूरस्थ घने जगलो तथा मनुष्य के पग से अपरिचित निर्जनो की शरण लेने को बाध्य होते है। इस प्रकार हम प्राय ऐसे इण्डियनो को अपने सीमान्त प्रदेशो मे पाते है जो एक ज़माने के शक्तिमान् कबीलो के ध्वसावशेष मात्र रह गए है। उनमे से जो बस्तियो के आस-पास रह गए है उनकी हालत और खराब हो गई है। गरीबी, कुढन और निराशा से भरी गरीबी तथा मनस्ताप का वह कीटाणु जो वन्य जीवन मे अज्ञात था, उनकी समस्त स्फूर्ति को चट कर गया है तथा उनके चरित्र के प्रत्येक स्वतत्र एव उदात्त गुण को नष्ट कर रहा है। वे मद्यप, आलसी, दुर्बल, चोर तथा दुर्वृत्त होते जा रहे है। वे बस्तियो के आस-पास या सुख सामग्रियो से भरे विशाल भवनो मे आवारो की तरह घूमते फिरते है। ये बस्तिया, ये भवन उन्हे तुलनात्मक रूप से अपनी हीनता एव दुर्दशा के प्रति और जाग्रत् कर देते है। विलासिता उनकी आखो के सामने अपनी विशाल खाद्य-सामग्री

भी कोई उनकी जमीन नही ले सकता। इन सावधानियो पर सख्ती के साथ अमल किया जाता है।

फैला देती है किन्तु उन्हे भोजन मे शामिल होने का अधिकार नही देती। खेतो मे प्राचुर्य अठखेलिया करता फिरता है किन्तु उस उत्पादन-बाहुल्य के बीच, भण्डार भरे होने के बावजूद, वे भूखो मर रहे है , सारा जगल कटकर सुन्दर उद्यान के रूप मे पुष्पित हो गया है किन्तु उनकी स्थिति उनमे रेगनेवाले कीडो-जैसी ही रह गई है।

जब वे अपनी धरती के निर्विवाद स्वामी थे तब उनकी दशा कितनी भिन्न थी ! उनकी जरूरते थोडी थी और उनकी पूर्ति के साधन उनकी पहुच के अन्दर थे। उनके आस-पास जितने लोग थे, उन सब की एक-सी स्थिति थी, वे एक-समान वस्तुए प्राप्त करते थे , एक समान कठिनाइया झेलते थे , एक ही तरह की चीजे खाते थे , और एक-से ही मामूली कपडे पहिनते थे। उनके आवास पर छते नही थी , वे गृहहीन अजनबियो के लिए खुले होते थे , द्रम-दल के बीच धुआ बल खाता नही उठता था किन्तु उसकी आग के पास बैठने और शिकारी के शिकार का स्वाद लेने के लिए उसका (अजनबी का) स्वागत था। न्यू इग्लैण्ड का एक प्राचीन इतिहासकार कहता है—"उनका जीवन इतना चिन्तारहित है और वे इतने प्रेमालु है कि उनके पास जो कुछ होता है उसे सबकी चीज़ समझकर सब उसका उपभोग करते है, और इसमे वे इतने सहानुभूतिशील है कि अभाव-वश एक आदमी भूखा रहे इसकी अपेक्षा सब भूखे रह जाएगे , इस प्रकार, हमारे वैभव की ओर न देखते हुए, अपनी ही चीज़ो के बीच सन्तुष्ट रहकर वे अपना समय आनन्दपूर्वक काट देते है , इसे ही कुछ लोग बुरा समझते है।" जब ये इण्डियन अपनी आदिम प्रकृति के गौरव और स्फूर्ति से पूर्ण थे तब उनका यह हाल था। वे उन जगली पौधो के समान थे जो वन की छाया मे खूब फूलते-फलते है किन्तु कृषि के हाथो मे सूख जाते और सूर्य के प्रभाव-तले नष्ट ही हो जाते है।

वनवासियो के चरित्र का वर्णन करते समय लेखको ने सन्तुलित मनोवृत्ति एव यथार्थ ज्ञान की कुत्सित विद्वेष एव उग्र अतिशयोक्ति का परिचय ही अधिक दिया है। उन्होने उन विशिष्ट परिस्थितियो का ठीक तरह से विचार नही किया जिनमे वे बेचारे रह रहे थे, न उन विलक्षण सिद्धान्तो का ही खयाल किया जिनके प्रभाव मे उनका शिक्षण हुआ था। कोई प्राणी शासन और नियम का इतनी कठोरता के साथ पालन नही करता जितनी कठोरता के साथ इण्डियन

करता है । उसका सम्पूर्ण आचरण कुछ ऐसे सामान्य सूत्रो के अनुसार नियत्रित होता है जो उसके मन मे शुरू मे ही बैठा दिए जाते है । जो नैतिक नियम उसका शासन करते है वे बहुत थोडे है किन्तु वह उनका पूर्णत अनुसरण करता है, जब कि श्वेतमानव धर्म-नियमो, सदाचारनीतियो एव आचरण के नियमो से खूब सम्पन्न है, किन्तु वह उनमे से कितनो का उल्लघन करता रहता है ?

इण्डियनो के विरुद्ध एक आम शिकायत यह है कि वे सन्धिपत्रो की पर्वाह नही करते, और जब प्रकटत शान्ति दीखती है तब विश्वासघात एव स्वच्छन्दता के साथ अकस्मात् लडाई छेड देते है । किन्तु इण्डियनो के साथ श्वेत मानवो की बातचीत बिल्कुल भावनाहीन अविश्वासपूर्ण, उत्पीडक एव अपमानजनक होती है । वे उनके साथ क्वचित् ही उस विश्वसनीयता एव स्पष्टता का व्यवहार करते है जो वास्तविक मैत्री के लिए अनिवार्य है, उनकी गर्व या मूढ विश्वास की भावनाओ पर चोट न लगे, इसकी भी पर्याप्त सावधानी नही रखी जाती । इसके कारण स्वार्थ-भावना की अपेक्षा भी अधिक शीघ्रता से इण्डियन मे शत्रुता का उदय हो जाता है । अकेला वनवासी अनुभव करता है चुप रहकर, परन्तु अनुभव वह बडी तीव्रता के साथ करता है । उसकी भावनाए श्वेतमानव की भाति व्यापक क्षेत्र मे विस्तृत नही होती किन्तु सरल एव गहरे स्रोतो मे केन्द्रित होती है । उसका अह, उसके अनुराग, उसके मूढ विश्वास सब बहुत थोडे पदार्थों की ओर प्रधावित होते है, किन्तु उनपर लगे घाव उसी अनुपात मे अधिक दारुण होते है और उनको शत्रुता के ऐसे हेतु प्रदान करते है जिन्हे हम पर्याप्त रूप से समझ नही सकते । फिर जहा कोई वर्ग सख्या मे सीमित होता है और सब मिलकर एक पैतृक कुटुम्ब बनाते है, जैसा कि इण्डियन कबीला होता है, वहा एक व्यक्ति की चोट सबकी चोट होती है, और प्रतिशोध की भावना तुरन्त सब मे फैल जाती है । आग के इर्द-गिर्द बैठी परिषद् की एक ही बैठक लडाई की योजना और व्यवस्था के लिए पर्याप्त है । वहा सब योद्धा और साधु एकत्र हो जाते है । वाग्मिता एव मूढ विश्वास योद्धाओ के मन मे आग लगाने के लिए मिल जाते है । वाग्मी उनकी सैनिक स्फूर्ति को जगा देता है और वे पैगम्बर एव स्वप्नदर्शी की दृष्टियो से, एक प्रकार के धार्मिक उन्माद से परिपूर्ण कर दिए जाते है

इण्डियन स्वभाव के एक विशिष्ट हेतु से प्रादुर्भूत ऐसे ही एक आकस्मिक

रोष का वर्णन मेसाचुसेट्स की प्रारम्भिक बस्ती के एक पुराने आलेख मे मिलता है। प्लिमथ के क्षेत्रपालो ने पैंसनागेसिटस्थित मृतको के चैत्यो को भ्रष्ट कर दिया था और साचेम की माता की समाधि को लूटकर जिन चमडो से वह अलकृत थी, उन्हे निकाल ले गए थे। इण्डियन लोग अपनी जाति के श्मशानो के प्रति निष्ठा के लिए प्रसिद्ध है। उदाहरण प्राप्त है कि ऐसे कबीलो के लोग, जो अपने पूर्वजो के गृहो से निर्वासित होकर बाहर पीढियो पर पीढिया बिता चुके है, यदि सयोग-वश उसके पास से गुज़र रहे होते है, तो राजमार्ग छोड, विलक्षण रूप से सही परम्परा के आधार पर, मीलो देहात को पार कर जगल मे स्थित ऐसे समाधिस्तूप तक पहुचते है जहा प्राचीन काल से उनके कबीले की हड्डिया भूमिस्थ है, और वहा घण्टो ध्यान एव उपासना मे बिताते है। ऐसी उदात्त एव पवित्र भावना से प्रभावित होकर साचेम, जिसकी मा की समाधि भ्रष्ट की गई थी, ने अपने आदमियो को एकत्र किया और उनके सामने निम्न-लिखित सरल एव करुण वक्तृता दी। इसे हम इण्डियन वाग्मिता का एक विलक्षण उदाहरण तथा वनवासी की पैतृक निष्ठा एव पवित्रता की प्रभावशाली घटना कह सकते है।

"जब पिछली रात सम्पूर्ण आकाश का यशस्वी प्रकाश इस पृथिवी-मण्डल के नीचे चला गया था, और पक्षी मौन हो गए थे, मै अपनी प्रथा के अनुसार विश्राम की तैयारी करने लगा। मेरी आखे गहरी नीद मे मुद भी नही पाई थी कि मुझे लगा कि मैने ऐसा सपना, ऐसा दृश्य देखा है जिससे मेरा मन परेशान हो गया। उस भयावह दृश्य से जब मै काप रहा था, एक प्रेतात्मा ने ज़ोर से पुकारकर कहा—'मेरे बेटे, देख, बेटे, जिसे मैंने साध से पाला है, देख उन स्तनो को, जिनसे तूने दूध पिया है, देख उन हाथो को जिनसे तुझे गर्म रखा है और प्राय तुझे खिलाया है। क्या तुम उन उन्मत्त आदमियो से बदला लेना भूल जाओगे जिन्होने अत्यन्त घृणित ढग पर मेरी समाधि को भ्रष्ट किया है और हमारी प्राचीन स्मृतियो एव प्रथाओ का तिरस्कार किया है? देखो, साचेम की मा की समाधि सामान्य लोगो की समाधि की भाति एक घृणित जाति-द्वारा भ्रष्ट कर दी गई है। इन चोर लोगो के विरुद्ध, जो ताजा-ताज़ा हमारी भूमि मे घुस आए है, मा शिकायत करती और तुम्हारी सहायता की याचना करती है। यदि इसे न सुना गया तो मैं अपने इस अनन्त विश्राम-

स्थल मे शान्त न बैठूगी।' इतना कहकर प्रेतात्मा लुप्त हो गई, मै पसीने से तर हो गया था और मेरी बोली बन्द हो गई थी। कुछ देर बाद मुझे कुछ ताकत आई और मैने अपनी पलायित स्फूर्तियो को एकत्र किया तथा आप सब की सलाह एव सहायता लेने का निर्णय किया।"

मैने इस घटना का वर्णन विस्तार से इसलिए किया है कि लोग समझ सके कि शत्रुता के जिन आकस्मिक कार्यो का कारण उनकी सनक एव विश्वास-घात को बताया जाता है वे प्राय गहन एव उदार हेतुओ से उठ खडे होते है और हम इण्डियन के स्वभाव एव प्रथाओ पर ध्यान न देने के कारण उन्हे ठीक तरह से समझ नही पाते।

इण्डियन के विरुद्ध तीव्र निन्दात्मक नारे का दूसरा कारण पराजित के प्रति उनकी बर्बरता को बताया जाता है। इसका उद्‌गम अशत नीति—पालिसी—और अशत मूढ विश्वास मे है। कबीलो को कभी-कभी राष्ट्र भी कहा जाता है यद्यपि वे सख्या-बल मे इतने अधिक नही है। कई योद्धाओ की हानि उनमे गहराई से अनुभव की जाती है—विशेषत तब जब वे लडाइयो मे प्राय फसे होते है। उनके इतिहास मे ऐसे कितने ही उदाहरण पाये जाते है जिनमे एक कबीला, जो अपने पडोसियो के लिए अरसे से भीषण समझा जाता था, अपने प्रमुख योद्धाओ के मार डाले जाने या पकड लिए जाने पर टूटकर बिखर गया है। इसलिए विजेता के लिए निर्दय होने का बडा प्रलोभन था—किसी निष्ठुर प्रतिशोध के परितोष के लिए उतना नही, जितना भावी सुरक्षा के लिए। जगली जातियो मे आम तौर से तथा प्राचीनो मे भी प्रचलित यह मूढ विश्वास इण्डियन मे भी पाया जाता है कि उनके जो मित्र लडाई मे मारे गए है उनकी प्रेतात्माए बन्दियो के रक्त से सन्तुष्ट एव शान्त होती है। किन्तु जो बन्दी इस प्रकार बलि नही किये जाते, वे मृतको की जगह उनके कुटुम्बो मे ग्रहण कर लिए जाते है और उनके साथ नातेदारो तथा मित्रो-जैसा विश्वास तथा प्रेम का बर्ताव होता है। उनकी ऐसी खातिरदारी की जाती है, ऐसा मनोरजन किया जाता है कि जब उनके सामने विकल्प रखा जाता है तब वे अपने घर तथा यौवन काल के मित्रो के पास लौटने की जगह, अपने परिगृहीत बन्धुओ के साथ रहना ज्यादा पसन्द करते है।

जब से श्वेतो ने देश का औपनिवेशीकरण कर लिया है, अपने बन्दियो के

प्रति इण्डियनो की क्रूरता बढ गई है। जो कुछ पहिले नीति एव मूढ विश्वास की पूर्ति तक सीमित था, अब प्रतिशोध की तृप्ति के रूप मे विस्तृत हो गया है। वे यह अनुभव किये बिना कैसे रह सकते है कि श्वेतो ने उनके पुरातन राज्य पर जबर्दस्ती अधिकार कर लिया है, वे ही उनकी दुर्दशा के कारण है और उनकी जाति का क्रमिक विनाश उन्ही के कारण हुआ है ? उन्होने जो आघात और अपमान व्यक्तिगत रूप से सहन किये है, उनके कारण फुफकारते हुए वे लडने को तैयार हो जाते है और युरोपीय युद्धप्रणाली के व्यापक विनाश एव आत्यन्तिक सहार के कारण उन्मत्त एव हताश हो उठते है। उनके गावो को जलाकर, और जीविका के उनके क्षुद्र साधनो को नष्ट कर श्वेतो ने ही उनके सामने हिंसा के उदाहरण उपस्थित किये है, फिर भी उनको आश्चर्य होता है कि वनवासी उन लोगो के साथ नरमी और विशालहृदयता का व्यवहार क्यो नही करते जिन्होने उनके लिए विपदा और किसी तरह जीवित रहने के अलावा कुछ नही छोडा है।

चूकि इण्डियन युद्ध मे खुली लडाई की जगह कूटचालो का प्रयोग करते है, हम उन्हे कायर एव विश्वासघाती कहकर कलकित करते है, किन्तु अपनी अनगढ आचरण-सहिता की दृष्टि से उनके लिए ऐसा करना उचित है। बचपन से ही उनको सिखलाया जाता है कि युद्ध मे चालबाजी प्रशसा की वस्तु है, चुपचाप छिप रहने और अपने शत्रु से लाभ उठाने को वीर से वीर योद्धा भी बुरा नही समझता, जिस कौशल एव चतुराई से वह शत्रु को सहसा चकित एव नष्ट करता है उसकी श्रेष्ठता के कारण ही वह विजयी होता है। प्रकृति से ही मनुष्य खुली वीरता की जगह सूक्ष्म चतुराई के प्रति अधिक उन्मुख है क्योकि वह अन्य पशुओ की तुलना मे शारीरिक दृष्टि से अशक्त होता है। फिर पशु सुरक्षा के प्रकृतिदत्त शस्त्रो से सज्जित होते है, सीग, उग्रदन्त, पजे, पूछ से युक्त होते है, किन्तु मनुष्य को तो अपनी उच्चतर विचक्षणता पर ही निर्भर करना पडता है। इन सब शत्रुओ के साथ भिडन्त होने पर वह कूटचालो से ही काम लेता है, और जब प्रकृति-विपर्यय के कारण उसकी शत्रुता अपने साथी मानव के प्रति उन्मुख होती है तो वह शुरू मे उसी सूक्ष्म युद्धकला को अपनाता है।

युद्ध का तो सिद्धान्त ही यह है कि अपनी कम से कम हानि करते हुए शत्रु को अधिक से अधिक हानि पहुचाना। वह शूरतापूर्ण साहस जो बुद्धि के सकेत का

तिरस्कार करता और किसी खतरे के सामने दौड पडता है, समाज की सन्तति है। यह साहस शिक्षा-द्वारा उत्पन्न होता है। यह सम्मानार्ह है, क्योकि वस्तुतः यह व्यथा के प्रति प्रेरणाजन्य विरक्ति के ऊपर उदात्त भावना की विजय है, यह अपने उस शरीर-सुख एव सुरक्षा के ऊपर गर्व और लज्जा-भय-द्वारा जीवित रहता है। इस प्रकार वास्तविक पाप का भय दूसरे केवल कल्पना मे अस्तित्व रखने वाले पाप के भीषणतर भय से पराजित हो जाता है। फिर विविध साधनो से उसे काम्य और ऊर्जस्वी बना दिया गया है। उस पर हृदयोद्वेलनकारी गान और वीरभावनापूर्ण कहानिया लिखी गई है। कवि एव चारणो ने उसके चतुर्दिक् कल्पना के शृगार सज्जित करने मे हर्ष का अनुभव किया है, इतिहासकार तक ने अपनी लेखनशैली की सन्तुलित गम्भीरता को भुला दिया है और इसकी प्रशसा मे उत्साह एव भावुकता से भर गया है। विजय एव समृद्ध समारोह उसको पुरस्कार मे मिले है, राष्ट्र की कृतज्ञता एव प्रशसा को स्थायी रूप देने के लिए ऐसे स्मारक बनाए गए है जिनपर कला ने अपने कौशल को सीमा पर पहुचा दिया है और समृद्धि ने अपना कोष रिक्त कर दिया है। इस प्रकार कृत्रिम रूप से उत्तेजित किए जाने के कारण साहस वीरता की असाधारण एव नकली मात्रा तक ऊपर उठ गया है और युद्ध की सज्जा एव परिस्थितियो के बीच व्यूहित कर दिए जाने के कारण इस कोलाहलकारी गुण ने उन बहुत सारे शान्त एव दुर्लभ गुणो को भी दबा दिया है जो मौन रहकर मानव चरित्र को उदात्त बनाते और मानव-सुख की धारा को प्रवाहित करते रहते है।

किन्तु साहस यदि आभ्यन्तरिक रूप से खतरे और पीडा की अवज्ञा है तो इण्डियन का जीवन उसका एक अटूट प्रदर्शन है। वह सनातन शत्रुता एव खतरे की स्थिति मे जीता है। सकट और दुस्साहस उसकी प्रकृति से मेल खाते है, बल्कि यह कहना ज्यादा ही ठीक होगा कि वे उसकी शक्ति को जाग्रत् करने और जीवन मे दिलचस्पी पैदा करने के लिए आवश्यक है। जो विरोधी कबीले छिपकर वार करने और असावधान देख एकाएक धावा कर देने की युद्धकला मे माहिर है उनसे घिरा रहने के कारण, वह सदा लडाई के लिए तैयार रहता है और अपने अस्त्रशस्त्र सदा हाथ मे रखता है। जिस प्रकार जलयान सागर की निर्जनता मे भयानक इकलेपन के भाव से चलता रहता है, जैसे पखी बादलो एव तूफानो मे डूबकर, अन्तरिक्ष के अगम विस्तार मे एक बिन्दु की भाति अपना मार्ग बनाता

चलता है, उसी तरह इण्डियन अपने रास्ते पर नीरव अकेला किन्तु जगल की अनन्त गोद मे बाधाओ से जूझता हुआ चलता रहता है। दूरी और खतरे की दृष्टि से उसके अभियान भक्त की तीर्थयात्रा या मध्ययुगीन सामन्त योद्धा के जिहाद को लज्जित करते है। एकान्त बीमारी, घात मे बैठे शत्रु तथा मुह बाए दुर्भिक्ष के सकटो से घिरा हुआ वह विस्तृत बनो को पार करता है। तूफानी झीले, वे बडे भौमिक सागर उसके भ्रमण मे बाधा नही डाल सकते। पेडो की छाल से वनी अपनी हल्की डोगी मे, वह उनकी लहरो पर पख की भाति तिरता चलता है और नदियो की चिघाडती धाराओ पर बाण की तेजी से उडता है। वह अपनी जीविका तक श्रम एव खतरे के बीच छीनकर पाता है। आखेट की कठिनाइयो एव खतरो से वह अपना भोजन एकत्र करता है, वह रीछ, बाघ तथा भैंसे को मारकर उनके चमडे से शरीर ढकता है और प्रपातो की गर्जनाओ के बीच सोता है।

मृत्यु के प्रति उच्च उपहास मे, तथा वह निष्ठुरतम प्रहारो को जिस धैर्य के साथ सहन करता है उसमे प्राचीन या आधुनिक काल का कोई नायक उसके आगे नही जा सकता। अपने विचित्र शिक्षण के कारण हम इस विषय मे उसे श्वेतमानव के भी ऊपर उठते देखते है। श्वेतमानव तोपो के मुह पर स्थित शानदार मृत्यु की ओर झपटता है, इण्डियन शान्तिपूर्वक उसके आगमन को देखता है और चतुर्दिक् फैले शत्रुओ की विविध यत्रणाओ तथा अग्निवर्षा की विलम्बित व्यथाओ को विजयोल्लासपूर्वक सहन करता है। वह अपने उत्पीडको पर व्यग्य कसने और उनके उत्पीडन-चातुर्य को उत्तेजित करने मे गर्व तक का अनुभव करता है। और जब धू-धू करती और निगलती हुई लपटे उसके प्राण दुह रही होती है और जब मास स्नायुओ को छोडकर सिकुड जाता है, तब वह अपना अन्तिम विजय-गान गाता है जिसमे एक अविजित हृदय की अवज्ञा होती है तथा अपने पूर्वजो की प्रेतात्माओ के प्रति यह आवाहन होता है कि वे आकर देखें कि वह बिना कराह के मर रहा है।

अभागे मूल निवासियो के चरित्र को पुराने इतिहासकारो ने निन्दोक्तियो से जिस प्रकार छायाच्छन्न कर रखा है उसके होते हुए भी, कभी-कभी कोई किरण फूट उठती है और उनकी स्मृतियो पर करुण प्रकाश डाल देती है। पूर्वी प्रान्तो के उद्धत विवरणो मे जब-तब ऐसे तथ्य मिल जाते हैं जो यद्यपि विद्वेष और

धर्मान्धता के रग मे डूबे हुए है, फिर भी अपनी कुछ बात कहते है और जब विद्वेष का अन्त हो जाएगा तो उनपर प्रशसा एव सहानुभूति से विचार करना सभव होगा।

न्यू इग्लैण्ड मे हुए इण्डियन युद्धो के एक सीधे-सादे विवरण मे उस विनाश की एक करुण कहानी मिलती है जो पिक्वोड इण्डियन कबीले पर ढाया गया था। जिस प्रकार उन्हे अन्धाधुन्ध रूप से कसाई की भाति कत्ल किया गया उसका ब्यौरा लिखने मे मानवता कापती है। एक जगह हम पढते है कि रात मे किसी इण्डियन किले पर अकस्मात् हमला कर दिया गया, उनके कुटीरो मे आग लगा दी गई और जब अभागे निवासी जान बचाकर भागे तो उन्हे या तो गोली मार दी गई या कत्ल कर दिया गया, "एक घण्टे के अन्दर सब परम-धाम पहुचा दिए गए और खत्म कर दिए गए।" इतिहासकार बडे धर्मभाव से कहता है कि इसी प्रकार की कई कार्रवाइयो के बाद "हमारे सैनिको ने ईश्वर की सहायता से उनको अन्तिमरूप से विनष्ट कर देने का निश्चय किया।" अभागे वनवासी अपने घरो एव गढियो मे आखेट की भाति घेर लिए गए और जब वे भागे तो बन्दूको एवं तलवारो से उनका पीछा किया गया। तब एक छोटे से किन्तु वीर दल ने, जो पिक्वोड योद्धाओ का शोकाच्छन्न अवशेष था, अपनी स्त्रियो एव बच्चो के साथ, एक दलदल मे आश्रय लिया।

असन्तोष से जलते हुए, हताशा से क्षुब्ध, अपने कबीले के विनाश के दुःख से फट रहे हृदय के साथ, और अपनी पराजय के कल्पित कलक से दुखी उन्होने अपमानकारी शत्रु के हाथ अपने प्राणो की भिक्षा मागने से इन्कार कर दिया और पराजय एव दासता की अपेक्षा मृत्यु को स्वीकार किया।

जब रात हुई तो वे अपने अधेरे शरणस्थल मे इस प्रकार घेर लिए गए कि भागना असभव हो गया। उनका शत्रु निरन्तर उनपर बन्दूको से गोलिया चलाता रहा, जिसका अर्थ यह है कि बहुत से उसी दलदल मे मरकर धस गए। दिन निकलने के पहले के अन्धकार और कोहरे मे कुछ इण्डियन घेरा डालने-वालो के बीच से भाग निकले और जगलो मे जा छिपे—शेष विजेताओ के हाथ मे पड गए, जिनमे से बहुतेरे दलदल मे कुत्ते की मौत मरे क्योकि वे अपनी इच्छा से पागलपन मे चुपचाप बैठे रहे और गोली से मार दिए गए या तलवार से टुकडे-टुकडे कर दिए गए पर दया की भीख उन्होने नही मागी, नही मागी।

जब इन थोडे से निराश्रित किन्तु निर्भय लोगो पर सूर्योदय का प्रकाश फैला और सैनिक दलदल के अन्दर गए तो देखा कि उनमे से बहुत से झुण्ड बना-बनाकर एक साथ बैठे हुए है । दस-दस बारह-बारह गोलिया भरकर उनपर एक साथ छोडी गई । इसलिए जो मरे हुए थे उनके अलावा और भी बहुत से मर गए तथा दलदल मे धस गए, किसी दोस्त या दुश्मन ने फिर उनकी खबर न ली ।

क्या कोई आदमी उनके दृढ निश्चय, अनम्य गर्व, भावना की वह उच्चता जिसने इन आत्मशिक्षित वीरो के हृदय का निर्माण किया था और मानव स्वभाव की स्वाभाविक प्रेरणाओ से उन्हे ऊपर उठा दिया था, की प्रशसा किए बिना इस सीधी-साधी कहानी को पढ सकता है ? जब गालो ने रोम नगर को ध्वस्त किया था तब उन्होने देखा कि सिनेटर लोग अपने लबादे पहिने हुए दृढता-पूर्ण शान्ति के साथ अपनी कुर्सियो पर बैठे हुए है , इस प्रकार उन्होने बिना प्रतिरोध या याचना किए मृत्यु का आलिगन किया । उनके इस आचरण की भव्य एव उदात्त कहकर प्रशसा की गई, अभागे इण्डियनो के मामले मे इसी कार्य को दुराग्रह एव बदमिजाजी की सज्ञा प्रदान की गई । हम दिखावे और परिस्थिति के हाथ के कैसे छलावे है, कैसी धोखे की टट्टिया है ! अच्छे रगो के वस्त्रो से आच्छादित, गौरवपूर्वक सिहासन पर बैठे हुए गुण से, नगा, निराश्रित और जगल के एकान्त मे नष्ट होता हुआ गुण कितना भिन्न है !

किन्तु अब मैं इन दु खपूर्ण, अधेरे चित्रो का वर्णन समाप्त करना चाहता हू । तब से ये पूर्वी कबीले विलुप्त हो चुके है, जिन वनो ने उनको आश्रय दे रखा था, उन्हे काटकर खतम कर दिया गया है और आज न्यू इग्लैण्ड की घनी बस्तियोवाले राज्यो मे शायद ही उनका कोई पता लगता है—सिवाय इसके कि किसी-किसी गाव या सोते का इण्डियन नाम अब भी रह गया है । आगे-पीछे यही हाल उन कबीलो का भी होनेवाला है जो सीमाचलो मे बसे है और श्वेत-मानवो के युद्ध मे शामिल होने के लिए कभी-कभी अपने जगलो से बाहर निकल आते है । चन्द दिन और बीतने दो और वे भी उसी राह विदा कर दिए जाएगे जिससे उनके भाई-बन्द पहले गए है । चन्द जत्थे जो अब भी हूरन एव सुपीरियर तथा मिसिसपी की सहायक नदियो के किनारो पर घूमते फिरते दिखाई पडते हैं उनकी नियति भी उन कबीलो की ही नियति है जो कभी मैसाचुसेट्स और कनेक्टीकट के अचलो मे फैले हुए थे और हडसन के तटो तक शान के

पोकनोकेट का फिलिप

एक इण्डियन गाथा

स्मारक ताम्र-मूर्ति मे जैसे होता कभी नहीं परिवर्तन,
करुणा हृदय स्पर्श करती पर कही न उसमे होता स्पदन।
अपने तरु-कपित पलने से लेकर अर्थी तक जो शिक्षित,
भले-बुरे की भीषण अतियो मे जिसका जीवन है गुफित।
सवेदनाशून्य—केवल भय की लज्जा के भय से पूरित,
वन का एक तपस्वी, मानव अश्रुविन्दु से जो अनसिंचित।[1]

—कैम्पवेल

यह दुख की बात है कि जिन पुराने लेखको ने अमरीका के आविष्कार और बस्तियो के बसने की गाथाए लिखी है उन्होने वनवासियो के जीवन मे प्राप्त प्रशसनीय चरित्र के विश्वसनीय विवरण बहुत कम दिये है। पर जो थोडी गाथाए मिलती है वे विलक्षण एव चित्ताकर्षक है, वे मानव स्वभाव की समीपवर्ती भाकिया प्रस्तुत करती है, और यह प्रकट करती है कि तुलनात्मक रूप से आदिम स्थिति मे मनुष्य क्या होता है और सभ्यता से उसे क्या मिलता है। मानव स्वभाव के इन अनाविष्कृत तथा विजन क्षेत्रो को प्रकाशित करने मे,

---

१ **ऐज मोनूमेण्टल ब्रांज अनचेंज्ड हिज लुक**
ए सोल दैट पिटी टच्ड, बट नेवर शुक :
ट्रेण्ड फ्राम हिज ट्री-राक्ड क्रेडिल टु हिज बायर,
दि फियर्स एक्सट्रीम्स आफ गुड ऐण्ड इल टु ब्रुक
इम्पैसिव—फियरिंग बट दि शेम आफ फियर—
ए स्टोइक आफ दि वुड्स—ए मैन विदाउट ए टियर।

—कैम्पवेल

नैतिक भावना के इस अकृत्रिम विकास का दर्शन करने मे तथा उन उदार एव रूमानी विशेषताओ को समझने मे, जिन्हे समाज ने कृत्रिम रूप से पल्लवित किया है पर जो वन्यजातियो की सहज कठोर स्थिति एव अनगढ विशालता मे फलती फूलती रहती है, आविष्कार का कुछ न कुछ आकर्षण अवश्य है ।

जिस सभ्य जीवन मे मनुष्य का सुख, बल्कि अस्तित्व तक, अपने साथी मानवो की राय पर निर्भर करता रहता है, उसमे वह निरन्तर एक कृत्रिम अभिनय करता रहता है । आदिवासी चरित्र की श्रेष्ठ एव विलक्षण विशेषताए उसमे परिष्कृत कर डाली जाती है अथवा जिसे हम आभिजात्य कहते है उसके प्रभाव मे मृदुल-कोमल बना दी जाती है । यह सभ्य मानव इतनी अधिक छोटी-छोटी वचनाए करता है, और लोकप्रिय बनने के लिए ऊपर से इतनी उदार भावनाए प्रकट करता रहता है कि उसके यथार्थ चरित्र को कृत्रिम चरित्र से अलग करना मुश्किल हो जाता है । इसके विपरीत इण्डियन सुमस्कृत जीवन के नियन्त्रणो एव शिष्टाचारो से मुक्त होने के कारण तथा बहुत बडी मात्रा मे इकला और स्वतन्त्र प्राणी होने के कारण, अपनी पसन्द की प्रवृत्तियो या अपने विवेक के आदेशो का पालन करता है । इस प्रकार उसके स्वभाव की विशेषताए, स्वतन्त्रता पूर्वक बर्त्ती जाने के कारण महती एव आकर्षक रूप मे वृद्धि पाती है । (सभ्य) समाज एक लॉन के समान है, जहा प्रत्येक खुरदुरापन, प्रत्येक ऊबड-खाबड पदार्थ चिकना और समतल कर दिया जाता है, प्रत्येक कुश-कण्टक निकाल दिया जाता है और जहा मखमली सतह की हसती हुई हरीतिमा को देखकर आखे प्रसन्न होती है, किन्तु जो प्रकृति को उसकी उद्दामता और विविधता मे देखना चाहता है उसे तो वन मे ही जाना होगा, सकरी घाटियो की खोज करनी होगी, तूफानी धाराओ को पार करना होगा और कगारो पर चढना होगा ।

जब मैं प्रारम्भिक औपनिवेशिक इतिहास के एक ग्रन्थ को यो ही उलट-पुलट रहा था तब मेरे मन मे इसी प्रकार के विचार उठ रहे थे । इस ग्रन्थ मे बडी कटुता के साथ, इण्डियन लोगो की क्रूरताओ तथा न्यू इग्लैण्ड मे नये बसने वालो के साथ उनके युद्धो का वर्णन किया गया है । इन पक्षपातपूर्ण अधूरी गाथाओ मे भी यह देखकर व्यथा होती है कि आदि-वासियो के रक्त मे सभ्यता के चरण-चिह्न किस प्रकार खोजे जा सकते है और दूसरो के देश पर कब्जा कर लेने की इच्छा से किस प्रकार श्वेत उपनिवेशकर्त्ता लडने को तैयार हो जाते है,

और उनकी लडाई कैसी निर्दय और विनाशकारी होती है। जब हम सोचते है कि न जाने कितने बुद्धिमान् प्राणी धरती से खत्म कर दिए गए, प्रकृति की स्वर्ण-मुद्राओ तुल्य न जाने कितने वीर एव उदात्तप्राण मानव खण्डित एव पददलित करके धूल मे मिला दिए गए तो हमारी कल्पना भी सहम जाती है।

जिस इण्डियन योद्धा पोकनोकेट के फिलिप के नाम से मैसाचुसेट्स और कनेक्टीकट का सम्पूर्ण अचल एक दिन थर्राता था उसकी भी यही नियति हुई। समसामयिक जो साचेमवृन्द पीक्वोडो, नरागनसेतो, वाम्पेनोगो तथा अन्य प्राच्य कबीलो पर न्यू इग्लैण्ड की प्रथम औपनिवेशिक बस्तियो के जमाने मे शासन कर रहे थे—अप्रशिक्षित आदिवासी वीरो का एक दल जिसने मानव प्रकृति के लिए सभव परम उदार लडाई लडी और विजय की आशा या यश की आकाक्षा का जरा भी विचार किए बिना अन्तिम श्वास तक अपने देश के लिए लडते रहे—उनमे वह सबसे प्रसिद्ध था। काव्य-काल के उपयुक्त रूमानी गाथा तथा स्थानीय कहानी के उपयुक्त विषय होते हुए भी, इतिहास के पृष्ठो पर उनके विश्वसनीय चरण-चिह्न बहुत ही कम दिखाई पडते है, किन्तु वे परम्परा के धुधले सध्यालोक मे महती छायाओ की भाति चलते-फिरते दिखाई पडते है।[1]

जब तीर्थयात्रियो ने (प्लिमथ उपनिवेशी अपने वशजो द्वारा इसी नाम से पुकारे जाते है), पुरानी दुनिया के धार्मिक अत्याचारो से भागकर नई दुनिया के तटो पर पहली बार शरण ली थी, तब उनकी हालत बहुत दर्दनाक और निराशा-जनक थी। एक तो वे सख्या मे पहले से ही कम थे, फिर बीमारी एव कष्टो के कारण बराबर उनकी तादाद कम होती जा रही थी। वे भयकर जगलो एव वनवासी कबीलो से घिरे हुए थे, ध्रुव-प्रदेश के सदृश ठडे तथा नित्य-परिवर्तनशील जलवायु के विपर्यय की कठोरताओ से सत्रस्त थे, उनके मन भयावह अपशकुनो से भरे हुए थे और धार्मिक उत्साह की बलवती उत्तेजना के सिवा उनके पास कोई ऐसी चीज़ नही थी जो उन्हे निराशा के गर्त्त मे डूबने से बचा सकती।

गई-गुजरी स्थिति मे वाम्पेनोगो के प्रधान सैगामोर मैसास्वायत का आगमन

---

१. इस लेख का प्रूफ देखते समय लेखक को सूचना प्राप्त हुई है कि एक प्रसिद्ध अग्रेजी कवि ने पोकनोकेट के फिलिप की कथा के ऊपर एक वीर काव्य लिखकर लगभग समाप्त कर लिया है।

हुआ। वह एक शक्तिमान् शासक था और देश के काफी बडे भाग पर शासन करता था। उसने अजनबियो की अल्पसख्या का लाभ उठाने और उन्हे अपनी राज्य-सीमा से बाहर निकाल देने की जगह उनके प्रति उदार मैत्री की भावना प्रकट की और आदिकालीन आतिथ्य के साथ उनका सत्कार किया। वह बसत के आरम्भ मे बहुत थोडे अनुयायियो के साथ उनकी न्यू प्लिमथ की बस्ती मे आया और उनके साथ शान्ति एव मैत्री का पवित्र सम्बन्ध स्थापित किया, उसने उन्हे भूमि का एक भाग बेच दिया और उनके लिए अपने वनवासी मित्र शासको की शुभकामना प्राप्त करने का भी वचन दिया। इण्डियन के विश्वास-घात के लिए चाहे जो कहा जाए किन्तु इतना निश्चित है कि मैसास्वायत की ईमानदारी और शुभभावना पर कभी शका नही की गई है। वह श्वेतमानवो का पक्का और उदार मित्र बना रहा, उनका अधिकार क्षेत्र बढाने और उस भूमि पर उन्हे दृढ बनाने मे बराबर सहायता करता रहा। उसने उनकी बढती हुई शक्ति एव समृद्धि से कभी ईर्ष्या नही की। अपनी मृत्यु से कुछ पहले वह एक बार फिर अपने पुत्र अलेक्जेण्डर के साथ, शान्ति एव मैत्री के बन्धन दृढ करने तथा अपनी अगली पीढी के लिए भी उसे जारी रखने के लिए, न्यू प्लिमथ आया था।

इस कान्फ्रेस मे उसने मिशनरियो के हस्तक्षेपकारी उत्साह से अपने पूर्वजो के धर्म की रक्षा करने का यत्न भी किया और प्रस्ताव रखा कि उसकी प्रजा को अपना पुरातन धर्म छोडने का आगे कोई प्रयत्न न किया जाए, किन्तु जब उसने देखा कि अग्रेज ऐसी किसी शर्त का विरोध करने मे दृढ है तो उसने उसे छोड दिया। उसके जीवन का प्राय अन्तिम कार्य यह था कि वह अपने दो लडको, अलेक्जेण्डर और फिलिप (उनका यह नाम अग्रेजो ने रखा था) को एक प्रधान उपनिवेशी के घर ले गया और दोनो तरफ से कृपा एव विश्वास रखने की अपील की। उसका अनुरोध था कि जैसा प्रेम एव मैत्री भाव उसके और श्वेतो के बीच बना रहा है वैसा ही उनके और उसके पुत्रो के बीच भी बना रहे। बूढा साचेम तो शान्ति के साथ मर गया और उसके कबीले की दुर्दशा होने के पूर्व, ही अपने पूर्वजो से जा मिला किन्तु उसके पीछे उसके बच्चे श्वेतो की अकृतज्ञता का अनुभव करने के लिए रह गए।

उसके बाद उसका सबसे बडा लडका अलेक्जेण्डर गद्दी पर बैठा। वह तेज-

मिजाज तथा जल्दबाज़ था, और अपने उत्तराधिकार प्राप्त अधिकारो एव मर्यादा के प्रति बडा अहकारी तथा आग्रही था। अजनबियो के अनुचित हस्तक्षेप एव स्वेच्छा-चारितापूर्ण आचरण के कारण उसका असन्तोष बढ गया। निकटवर्त्ती कबीलो के विरुद्ध वह उनके मूलोच्छेदनकारी युद्धो को बडी बेचैनी के साथ देख रहा था। शीघ्र ही उसे उनकी शत्रुता का सामना पडा। उस पर आरोप लगाया कि वह नरागनसेतो से मिलकर अग्रेजो के विरुद्ध विद्रोह एव उन्हे देश से निकाल देने का षड्यन्त्र कर रहा है। यह कहना सभव नही है कि यह दोषारोप तथ्यो पर आधा-रित था या केवल सन्देह पर आश्रित था। किन्तु हिंसा और जबर्दस्ती से भरी उपनिवेशियो की कार्रवाइयो से इतना ज़रूर स्पष्ट है कि इस समय तक वे अपनी तीव्र गति से बढती हुई शक्ति को अनुभव करने लगे थे और मूलनिवासियो के प्रति उनका व्यवहार कठोर और अनुदार होता जा रहा था। उन्होने अले-क्जेण्डर को गिरफ्तार करने और उसे अपनी अदालत के सामने उपस्थित करने का आदेश देकर एक सैनिक दल भेजा। उसे उसके जगल-गृह मे खोज निकाला गया। वहा वह अपने कुछ अनुयायियो के साथ, किसी शिकार का पीछा करने के बाद, नि शस्त्र, विश्राम कर रहा था। अपनी इस सहसा गिरफ्तारी तथा शास-कीय मर्यादा की अवहेलना-से इस गर्वी वनवासी की रोषशील भावना इतनी आहत हुई कि उसे प्रचण्ड बुखार आ गया। उसे इस शर्त पर अपने घर लौटने की आज्ञा दी गई कि बाद मे स्वय उपस्थित होने के आश्वासन के रूप मे वह अपने लडके को साथ कर दे। किन्तु जो चोट उसे लगी थी वह साघातिक थी और घर पहुचने के पहले ही वह प्राण मे लगी चोट का शिकार हो गया।

अलेक्जेण्डर का उत्तराधिकारी था मेटाकोमेट। उपनिवेशी उसकी उच्च भावना एव महत्त्वाकाक्षी स्वभाव के कारण, उसे बादशाह फिलिप कहते थे। इन गुणो के साथ उसमे ऊर्जा और साहसिकता भी थी। परन्तु इन्ही गुणो के कारण वह विद्वेष और आशका का पात्र मान लिया गया। उस पर दोषारोप किया गया कि वह सदा से ही श्वेतो के विरुद्ध गुप्त एव अप्रशम्य शत्रुता रखता रहा है। सभवत और बहुत स्वभावत, बात ऐसी रही भी होगी। वह उन्हे देश मे ज़बर्दस्ती प्रवेश करने वाला तो समझता ही था, वह मानता था कि वे छूट पर छूट लेते जा रहे हैं और अपना ऐसा प्रभाव बढाते जा रहे है जो वनवासी-जीवन लिए के हानिकर है। उसे दिखाई पड रहा था कि उसके देशबन्धुओ की सम्पूर्ण

नस्ल उनके आगे पृथ्वी के ऊपर नष्ट होती जा रही है, उनके क्षेत्र उनके हाथ से निकलते चले जा रहे है और उनके कबीले दुर्बल, विच्छिन्न एव पराधीन होते जाते है। कहा यह जाएगा कि उपनिवेशियो ने भूमि मूलत खरीद ली थी किन्तु उपनिवेशीकरण की प्रारम्भिक अवधियो मे इण्डियनो से जो खरीद हुई थी वह किस तरह की गई थी, इसे कौन नही जानता ? अपनी ऊची व्यापारिक दक्षता के कारण युरोपीय सदा सस्ते मे सौदा कर लेते थे, और आसानी से वे लडाइयो को उत्तेजित कर देते और उसकी आड मे विस्तृत प्रदेशो पर कब्जा कर लेते थे। एक असस्कृत वनवासी कानून की उन बारीकियो को नही समझता जिनसे क्रमश और कानूनी तौर पर हानि पहुचाई जाती है। वह केवल मुख्य तथ्यो को देखकर ही निर्णय करता है, इसलिए फिलिप के लिए, इतना जानना ही काफी था कि युरोपीयो के अनधिकार प्रवेश के पूर्व उसके देशबन्धु धरती के स्वामी थे, और अब अपने ही पूर्वजो के देश मे वे खानाबदोश होते जा रहे है।

किन्तु उनके मन मे सामान्य शत्रुता की चाहे जो भावना रही हो और अपने भाई के प्रति किए गए व्यवहार से उसे जो भी विशेष आक्रोश रहा हो फिलहाल उसने उन्हे दबा दिया, उपनिवेशियो के साथ ठेके को फिर से जारी किया और पोकनोकेट मे, जिसे अग्रेज माउण्ट होप[1] के नाम से पुकारते थे और जो उसके कबीले के राज्य की पुरानी राजधानी थी, वर्षों तक शान्तिपूर्वक रहा। किन्तु जो सन्देह शुरू मे अस्पष्ट एव अनिश्चित था, वह धीरे-धीरे एक रूप और सार ग्रहण करता गया, और अन्त मे उसपर आरोप लगाया गया कि उसने विविध प्राच्य कबीलो को भडकाने और एक साथ यत्न करके अपने उत्पीडको के जुए को उतार फेक देने का षड्यन्त्र किया है। इतने दिन बीत जाने के बाद, इण्डियनो के विरुद्ध इस दोषारोपण का ठीक-ठीक ऊहापोह करना कठिन है। श्वेतो मे सन्देहो के प्रति इतनी उन्मुखता थी, और हिसक कार्यो मे वे इतने सधे हुए थे कि प्रत्येक बेकार की कहानी को वे वजन और महत्त्व देते थे। जहा कहानी बताने वालो को उत्साहित किया जाता और पुरस्कार दिया जाता हो वहा जासूसो का बाहुल्य होना स्वाभाविक था। जब तलवार की सफलता निश्चित हो जाती तो वह म्यान से बाहर निकल पडती थी और साम्राज्य का निर्माण

---

१. **इस समय रोड द्वीप का ब्रिस्टल।**

कर लेती थी ।

फिलिप के विरुद्ध केवल एक ही निश्चित साक्ष्य मिलता है । यह सौसामैन नामक एक भगोड इण्डियन का आरोप है । इसने उपनिवेशियो के बीच रहकर आशिक शिक्षा भी प्राप्त की थी जिससे उसकी स्वाभाविक धूर्त्तता और बढ गई थी । उसने जिस सुगमता के साथ दो-तीन बार अपनी वफादारी और अपने धर्म मे परिवर्तन किया, उसी से उसके सिद्धान्तो की शिथिलता का पता लगता है । उसने कुछ समय तक फिलिप के विश्वसनीय सचिव एव परामर्शदाता का काम किया था और उसके दान एव सरक्षण का उपभोग किया था । किन्तु जब उसने देखा कि उसके सरक्षक के ऊपर अनिश्चितता के बादल मडरा रहे है तो उसने उसकी नौकरी छोड दी और श्वेतो की ओर चला गया और उन लोगो की अनुकूलता प्राप्त करने के लिए उनकी सुरक्षा के विरुद्ध षड्यत्र करने का अपराध अपने पूर्व स्वामी एव हितैषी पर लगाया । सख्त जाच की गई । फिलिप एव उसके चन्द प्रजाजनो की जाच हुई किन्तु उनके विरुद्ध कुछ भी प्रमाणित नही हुआ । तथापि उपनिवेशी अब इतनी दूर जा चुके थे कि उनके लिए प्रत्या-वर्त्तन करना कठिन था, उन्होने पहले ही निर्णय कर लिया था कि फिलिप एक खतरनाक पडोसी है, उन्होने अपने अविश्वास को खुल्लमखुल्ला प्रकट कर दिया था और उसकी शत्रुता को निश्चित बनाने के लिए काफी कार्रवाइया कर ली थी । इसलिए ऐसे मामलो की सामान्य तर्क-प्रणाली के अनुरूप उनकी सुरक्षा के लिए उसका विनाश आवश्यक हो गया । विश्वासघाती जासूस सौसा-मैन भी कुछ दिनो बाद एक तलैया मे मरा हुआ पाया गया । वह अपने कबीले के प्रतिशोध का शिकार हो गया । तीन इण्डियन, जिनमे से एक फिलिप का मित्र एव परामर्शदाता था, गिरफ्तार किये गए, उनका मुकदमा हुआ, और एक बिल्कुल ही अविश्वसनीय गवाह के साक्ष्य पर उनको हत्यारा घोषित करके मौत की सजा दे दी गई । बाद मे उन्हे फासी पर चढा दिया गया ।

अपनी प्रजा के प्रति इस व्यवहार और अपने मित्र को दिए गए कलकपूर्ण दण्ड ने फिलिप के स्वाभिमान पर गहरी चोट की और उसके क्रोध को भडका दिया । इस प्रकार जो वज्र उसके ही पाव पर आ गिरा था, उसने उसे घिरते हुए तूफान के प्रति सावधान कर दिया और अब उसे श्वेत मानवो की शक्ति के अन्दर अपनी सुरक्षा का विश्वास नही रह गया । अपमानित एव भग्नहृदय भाई

की जो दशा हुई थी, वह भी उसके मन मे चुभ रही थी। नारागनसेतो के एक बडे साचे म मियानटोनिमो की करुण कहानी भी उसे चेतावनी दे रही थी। उसे भी उपनिवेशियो की अदालत के सामने षड्यत्र करने के आरोप मे उपस्थित किया गया था किन्तु वहा से वह निरपराध सिद्ध होकर छूट गया, उसे मैत्री का आश्वासन दिया गया किन्तु विश्वासघातपूर्वक उसे खतम कर दिया गया। इसलिए फिलिप ने अपने योद्धा सैनिको को एकत्र किया, अजनबियो मे से भी जिनको अपने कार्य मे सहायता देने को तैयार कर सका, किया, औरतो-बच्चो को सुरक्षा के लिए नारगनसेत भेज दिया। अब वह जहा भी जाना था, सशस्त्र योद्धाओ के साथ जाता था।

जब दो दल अविश्वास एव खीझ की ऐसी मन स्थिति मे हो तब जरा-सी चिनगारी भी उन्हे प्रज्वलित कर देने के लिए काफी होती है। चूकि इण्डियनो के हाथ मे शस्त्र थे, वे शरारत करने लगे। उन्होने छोटी-मोटी कई वारदाते की। एक ऐसी ही झपट मे किसी उपनिवेशी ने एक योद्धा को गोली चलाकर मार दिया। यह घटना खुली लडाई के लिए सिगनल-सी हो गई। इण्डियनो ने अपने साथी की मृत्यु का बदला लेने का प्रयत्न किया, और युद्ध का डका सारे प्लिमथ उपनिवेश मे बज उठा।

इन तिमिराच्छन्न एव विपादपूर्ण युगो के प्रारम्भिक विवरणो मे हमे जन-मानस की रुग्ण अवस्था के अनेक सकेत मिलते हे। मार्गहीन वनो एव जगली कबीलो के बीच, धार्मिक अलगाव और अपनी परिस्थिति के वीरानेपन के कारण उपनिवेशी भी अन्ध विश्वासपूर्ण भावनाओ की ओर उन्मुख हो गए थे और उनकी कल्पनाए जादू-टोने तथा भूतप्रेत की भयानक धारणाओ से पूर्ण हो उठी थी। शकुन मे भी उनका बहुत ज्यादा विश्वास हो गया था। फिलिप और उसके साथी इण्डियनो से झगडा होने के बहुत पहले उनको विविध प्रकार की ऐसी भयानक चेतावनिया मिल चुकी थी जो बडे और जन सकटो के पहले प्राय देखी जाती है। इण्डियन धनुष न्यू प्लिमथ के अन्तरिक्ष मे उदित दिखाई पडा। वहा के निवासियो ने इसे बहुत बडा अपशकुन समझा। हैडले, नार्थेम्पटन तथा उनके निकटवर्ती कस्बो मे "पृथिवी को कम्पित करने और जोरो की प्रतिध्वनि करनेवाले गोले के गिरने की आवाज़ सुनाई पडी।"[१] दूसरे लोग भी एक शान्त,

१. रेवरेण्ड इनक्रीज माथर्स हिस्ट्री

सूर्यप्रकाशदीप्त प्रभात मे बन्दूके चलने से उद्विग्न हो उठे, ऐसा लगा मानो गोलिया उनके पास से सनसनाती हुई गुजर रही है और आकाश गुजाती हुई रणभेरिया पश्चिम की ओर जा रही है। कुछ और लोगो को ऐसा लगा मानो वे अपने सिर के ऊपर दौडते हुए घोडो की आवाज सुन रहे है। इसी समय के लगभग कुछ ऐसे दानवी बच्चे जन्मे जिनके कारण कई कस्बो के मूढ विश्वासी भयानक अपशकुन की कल्पना से भर उठे। इन अपशकुनकारी दृश्यो मे बहुतो को प्राकृतिक घटनाओ के रूप मे ग्रहण किया जा सकता है। जैसे उत्तरीय प्रकाश उन अक्षाशो पर कभी-कभी स्पष्ट दिखाई पडता है, कभी-कभी वायु-मण्डल मे उल्काओ का विस्फोट होता है, वन-वृक्षो की फुनगियो के बीच अकस्मात् दौडने वाले प्रभजन का स्वर सुनाई पडता है, गिरते वृक्षो या टूटी चट्टानो का धमाका होता है, तथा इसी प्रकार की अन्य विलक्षण आवाज़े और प्रतिध्वनिया होती है जो वन्यप्रदेशो के एकान्त की गभीर नीरवता के बीच कानो को विचित्र लगती है। इनके कारण कुछ विषादपूर्ण कल्पनाए उठ खडी हुई होगी। अद्भुतता के प्रेम के कारण उनमे अतिशयोक्ति से काम लिया गया होगा, और उस उत्कण्ठा के साथ सुनी गई होगी जिसके साथ हम सब भयावनी एव रहस्यमय बातो को सुनते है। इन अन्धविश्वासपूर्ण कल्पनाओ का सार्वदेशिक प्रचलन, और उस समय के एक विद्वान् द्वारा उनका गभीर लेखन, युग की प्रकृति के अनुकूल ही है।

इसके कारण जो सघर्ष शुरू हुआ उसका रूप वही था, जो सभ्य मानवो एव बर्बरो के बीच की लडाई मे दिखाई पडता है। श्वेतो की ओर से श्रेष्ठ कौशल एव सफलता के साथ उसका सचालन हुआ, किन्तु साथ ही प्रतिपक्षियो के प्राकृतिक अधिकारो की उपेक्षा करके व्यर्थ उनका रक्त भी बहाया गया। जहा तक इण्डियनो का सम्बन्ध है वह ऐसे आदमियो की हताशा के साथ लड़ा गया जो मृत्यु के भय से रहित थे और जिन्हे शान्ति मे अपमान, पराधीनता और पतन के सिवा और कुछ मिलने की आशा नही रह गई थी।

हमे लडाई की घटनाए उस समय के एक योग्य पादरी के विवरणो से मिलती हैं। वह इण्डियनो की प्रत्येक विरोधी कार्रवाई पर, भले वह कितनी ही उचित एव न्यायपूर्ण हो, तिरस्कार एव असन्तोष प्रकट करता है, जब कि श्वेतो के अत्यन्त हिंस्र एव रक्तपिपासापूर्ण अत्याचारो का प्रशसा के साथ वर्णन करता

है। फिलिप को हत्यारा और गद्दार कहकर निन्दित किया गया है, इस बात का कोई विचार नही किया गया है कि वह एक कुलीन नरेश था, और अपने परिवार के साथ किए गए अन्यायो का प्रतिशोध लेने के लिए अपनी प्रजाओ-सहित वीरतापूर्वक लड रहा था या यह कि वह अपने वश की लडखडाती हुई शक्ति को पुन स्थापित करने और जबर्दस्ती कब्जा करनेवाले अजनबियो के उत्पीडन से अपनी मातृभूमि को मुक्त करने के लिए लड रहा था।

एक विस्तृत और एक साथ उठ खडे होने वाले विद्रोह की योजना, यदि सचमुच ऐसा विद्रोह खडा हो गया होता, विशाल मन के योग्य थी, और यदि समय से पहले उसका पता न चल गया होता तो उसके परिणाम विशाल होते। परन्तु सचमुच जो युद्ध छिडा वह ब्यौरो का एक युद्ध था, वही आकस्मिक झडप और असम्बद्ध दुस्साहस के रूप मे चलता रहा। फिर भी उसमे फिलिप की सैनिक प्रतिभा और दुस्साहसिक वीरता प्रकट हुई, और जहा भी विद्वेष एव रोषपूर्ण विवरण के बीच हमे सरल तथ्य मिल जाते है वहा हमे उसके स्फूर्तिशाली मानस, समयानुसार कौशल-क्षमता, व्यथा एव कष्ट के प्रति तिरस्कार-भावना तथा अजेय निश्चय के दर्शन होते है, जिससे उसके प्रति सहानुभूति एव प्रशसा से हमारा मन भर जाता है।

जब वह माउण्ट होप के अपने पैतृक अचलो से खदेड दिया गया तो उसने उन विस्तृत एव मार्गहीन वनो की सघनता को अपना अड्डा बनाया जो बस्तियो की सीमाओ पर फैले हुए थे और किसी जगली पशु या इण्डियन के सिवा और सबके लिए दुर्भेद्य थे। यहा उसने अपनी सेनाओ को उसी प्रकार एकत्र किया जैसे गर्जते हुए बादलो की गोद मे तूफान अपनी विनाशकारी शक्तियो को एकत्र करता है और जिस समय और स्थान की जरा भी कल्पना नही होती वहा अकस्मात् प्रकट होकर गावो मे विनाश और त्रास पैदा कर देता है। इन भारी तबाहियो के सकेत जब-तब मिलते रहते थे, जिनसे उपनिवेशियो के मन आतक और भय से परिपूर्ण हो जाते थे। कभी दूर ऐसे निर्जन जगलो से आनेवाली बन्दूक की आवाज सुन पडती जहा मालूम था कि कोई श्वेत मानव नही रहता, कभी जगल से चरकर लौटनेवाले पशु घायल होकर लौटते, या एक-दो इण्डियन वन की सीमा पर घूमते दिखाई पड जाते और फिर अकस्मात् कही लुप्त हो जाते—जैसे बिजली कभी-कभी उन बादलो के किनारे पर चुप-

चाप खेलती दिखाई पड जाती है जिनमे तूफान उठनेवाला होता है ।

कभी-कभी उपनिवेशी फिलिप का पीछा करते, यहा तक कि उसे घेर भी लेते , किन्तु वह उनके जाल से आश्चर्यजनक रीति से निकल जाता और जगल मे जाकर सब प्रकार की खोज या जाच की सीमा के बाहर पहुच जाता था—जब तक कि वह फिर देश को विनष्ट करता हुआ किसी दूरस्थ बस्ती मे न दिखाई पडता । उसके प्रधान केन्द्र अक्सर उस दलदली भूमि मे होते थे जो न्यू इग्लैण्ड के कुछ भागो मे फैली हुई है, जिसमे गहरी काली मिट्टी के बडे-बडे ढोके है और जिसमे कटीली झाडिया, सरपत, और गिरे हुए वृक्षो के नष्टप्राय तने जगह-जगह पडे हुए है और विषण्ण हेमलाक वृक्षो की छाया फैली हुई है । अपने अनिश्चित आश्रय तथा भूलभुलैया-जैसी पगडडियो के कारण ये झाडियो से भरे हुए निर्जन श्वेतमानव के लिए प्राय अगम्य-से थे, यद्यपि इण्डियन इन भूलभुलैयो मे भी हिरन की गतिशीलता के साथ अपनी राह बना लेते थे । एक बार की बात है, 'पोकासेटनेक' नाम के बहुत बडे दलदल मे फिलिप अपने अनुयायियो के एक दल के साथ खदेड दिया गया । इन दलदलो मे फसकर किसी पकिल गड्ढे मे गिरकर विनष्ट हो जाने अथवा इधर-उधर छिपे शत्रुओ द्वारा गोली मार दिये जाने के भय से अग्रेजो ने यहा उसका पीछा करने का साहस नही किया । उन्होने इस 'नेक' के प्रवेश-द्वार को घेर लिया और वहा एक किला बनाना शुरू कर दिया । उनकी कल्पना थी कि इस प्रकार वे शत्रु को भूखो मार डालेगे । किन्तु फिलिप और उसके योद्धा आधी रात के अधेरे मे एक बडे पटरे पर बैठ-कर, समुद्र की राह पश्चिम की ओर निकल गए , औरतो-बच्चो को पीछे छोड गए । जाते हुए वे मैसाचुसेट्स और नियमक प्रदेशो के कबीलो मे युद्ध की आग भडकाते तथा कनेक्टीकट की बस्तियो को धमकाते गए ।

इस तरह फिलिप सार्वदेशिक भय की वस्तु बन गया । उसके चारो ओर जो रहस्य फैला हुआ था, उसने उसके वास्तविक आतक को बहुत बढा दिया । अब वह एक ऐसा पापात्मा बन गया जो अधेरे मे चलता था, जिसके आगमन को कोई देख नही पाता था, और जिसके विरुद्ध कब सावधान रहना चाहिए, इसे कोई नही जानता था । सारा देश अफवाहो और आशकाओ से भर गया । फिलिप सर्वव्यापी-सा हो गया था, क्योकि विस्तृत सीमाओ के जिस भी भाग मे जगल से कोई विस्फोट होता, फिलिप को ही उसका नेता बताया जाता था ।

उसके विषय मे मूढ विश्वासपूर्ण कितने ही प्रवाद प्रचलित हो गए। कहा जाने लगा कि वह प्रेतविद्या जानता है, और एक इण्डियन बुढिया जादूगरनी, जिसकी सलाह वह लेता है, ताबीज-यत्रादि से उसकी मदद करती है। इण्डियन सरदार लोग तो खास तौर पर ऐसा समझते थे—चाहे वे ऐसा अपनी अन्ध-श्रद्धा के कारण करते हो या अपने अनुयायियो को प्रभावित करने के लिए। और वन-वासियो के हाल के युद्धो से भी इसके प्रमाण मिलते है कि भविष्यवक्ता और स्वप्नदर्शी का इण्डियन विश्वासो पर कैसा प्रबल प्रभाव पडता है।

जब फिलिप पोकासेट से निकल भागा तब उसका भाग्य बहुत बुरी दशा मे था। बार-बार की लडाइयो के कारण उसकी सेनाए बहुत थोडी रह गई थी, और उसके साधन प्राय सब चुक गए थे। विपत्ति के इस काल मे समस्त नारा-गनसेतो के मुख्य साचेम कैननचेट के रूप मे उसे एक वफादार दोस्त मिल गया। यह महान् साचेम मियानटोनिमो का पुत्र एव उत्तराधिकारी था, जिसके बारे मे पहले उल्लेख किया जा चुका है, और जिसे षड्यत्र के आरोप से सम्मानपूर्वक मुक्त हो जाने के बाद भी, उपनिवेशियो की विश्वासघातपूर्ण उत्तेजनाओ के कारण व्यक्तिगत रूप से मार डाला गया था। पुरातन वृत्तलेखक कहता है—"वह अपने पिता के सम्पूर्ण अह एव स्वच्छन्दता का उत्तराधिकारी था पर इसके सिवा उसे पिता से अग्रेजो के प्रति वैमनस्य का भाव भी विरासत मे मिला था।" इसमे सन्देह नही कि वह उसके अपमानो एव चोटो का भी वारिस था और उसकी हत्या का उचित प्रतिशोधकर्त्ता था। यद्यपि इस नैराश्यपूर्ण युद्ध मे सक्रिय भाग उसने कभी नही लिया था, फिर भी उसने फिलिप और उसकी खण्डित सेनाओ का खुले दिल से स्वागत किया और उन्हे उदार आश्रय तथा सहायता दी। इसके कारण अग्रेज उसके शत्रु हो गए और निश्चय यह हुआ कि एक ही बार दोनो साचेमो पर ऐसा प्रहार किया जाए कि दोनो नष्ट हो जाए इसलिए मैसाचुसेट्स, प्लिमथ और कनेक्टीकट से एक बहुत बडी सेना एकत्र की गई और घोर शिशिर ऋतु मे वह नारगसेत-अचल मे भेज दी गई। घोर शिशिर होने के कारण दलदल जम गए थे, कही पत्तो तक के निशान न थे और इस समय अपेक्षाकृत सरलता के साथ उनसे प्रयाण किया जा सकता था और इस समय वे इण्डियनो को अन्धकारमय और अगम्य गढियो के रूप मे आश्रय देने की शक्ति से रहित हो चुके थे।

आक्रमण की आशका के कारण कैननचेट अपनी अधिकाश रसद तथा वृद्ध, अशक्त लोगो एव स्त्रियों-बच्चो को एक सुदृढ दुर्ग मे उठवा ले गया। वहा उसकी तथा फिलिप की सेना के चुने हुए योद्धा भी एकत्र हुए। यह गढी, जिसे इण्डियन दुर्भेद्य समझते थे, एक ऊचे टीले अथवा दलदल के बीच एक पाच-छ एकड विस्तृत टापू पर स्थित थी। वह ऐसी चतुराई और कौशल से बनाई गई थी जो सामान्यत इण्डियन गढियो मे नही दिखाई पडती। उसे देखकर इन दोनो सरदारो की सैनिक प्रतिभा का भी कुछ पता लगता था।

एक भडैत द्रोही इण्डियन ने अग्रेजो का पथदर्शन किया, जिससे अग्रेज दिसम्बर की बर्फ के बीच भी इस गढी तक पहुच गए और इस गढ-सैन्य पर एकाएक टूट पडे। भीषण और तूफानी युद्ध हुआ। आक्रमणकारियो का प्रथम आक्रमण विफल हुआ और उन्हे खदेड दिया गया। जब अग्रेजो के कुछ बहुत वीर अफसरो ने हाथ मे तलवार लेकर गढी पर धावा किया तो वे गोली से मार दिए गए। किन्तु शीघ्र ही उन्होने पुन आक्रमण किया। इस बार कुछ ज्यादा सफलता मिली। गढी के एक भाग पर वे पहुच गए। अब इण्डियन एक स्थान से दूसरे स्थान पर खदेडे जाने लगे। उन्होने एक-एक इच भूमि के लिए भीषण युद्ध किया। उनके अधिकाश वीर टुकडे-टुकडे काट डाले गए, और एक लम्बी सूनी लडाई के बाद, फिलिप और कैननचेट, बचे-खुचे योद्धाओ के साथ, गढी से निकल गए और निकटवर्ती जगल के सघन निकुजो के बीच शरण ली।

विजेताओ ने इण्डियनो के झोपडो और गढी मे आग लगा दी। सारी गढी धू-धू करके जल उठी, कितने ही बूढे आदमी, स्त्रिया और बच्चे लपटो मे भस्म हो गए। उनके इस अन्तिम कृत्य ने जगलियो की तितिक्षा पर भी विजय पाई। जब भगोडे योद्धाओ ने अपने आवासो को नष्ट होते हुए देखा और अपनी पत्नियो तथा बच्चो का दिल दहलानेवाला आर्त्तनाद सुना तो क्रोध एव निराशा की हुकार से निकटवर्ती जगल गूज उठे। समसामयिक लेखक लिखता है :—"झोपडियो का जलना, स्त्रियो-बच्चो का आर्त्तनाद तथा योद्धाओ के हुकार ने मिलकर ऐसा भीषण तथा करुण दृश्य पैदा कर दिया कि उससे कुछ सैनिक द्रवित हो गए।" वही लेखक आगे लिखता है— "उनके मन मे बडा सन्देह पैदा हो गया और बाद मे उन्होने इस पर पूछ-ताछ भी की कि क्या अपने शत्रुओ को जीते-जी जला देना मानवता की दृष्टि से उचित और बाइबिल

के उदार सिद्धान्तो के अनुकूल है ?"[1]

वीर एव उदार कैननचेट का जो हश्र हुआ, वह खास तौर से लिखने लायक है। उसके जीवन का अन्तिम दृश्य इण्डियन महानता के लिखित उदाहरणो मे एक परम उदात्त उदाहरण है।

इस घोर पराजय के कारण उसकी शक्ति और साधन नष्ट हो गए थे, फिर भी वह अपने मित्र के प्रति तथा उस अभागे लक्ष्य के प्रति जिसे उसने उठाया था, वफादार बना रहा, उसने सन्धि एव शान्ति के उन सब प्रस्तावो को ठुकरा दिया जिनमे फिलिप एव उसके अनुयायियो का साथ छोड देने को कहा गया था। उसने घोषित किया—"वह अग्रेजो की दासता स्वीकार करने की जगह अपने अन्तिम सिपाही के बच रहने तक लडेगा।" उसका घर नष्ट कर दिया गया, उसका देश विजेताओ-द्वारा वीरान कर दिया गया। तब वह फिरता-फिरता कनेक्टीकट के तटो पर जाने को बाध्य हो गया। वहा भी उसने पाश्चात्य इण्डियनो के सम्पूर्ण समाज को इकट्ठा कर लोहा लेने की कोशिश की और अनेक अग्रेज बस्तियो को ध्वस्त कर दिया।

जब बसत के दिन आए तो वह अपने केवल तीस चुने हुए आदमियो के साथ, माउण्ट होप के निकटवर्ती सीकोंक मे घुसकर अपनी सेनाओ के पोषण-हित अन्न बोने के लिए बीज प्राप्त करने की कठिनाई-भरी यात्रा पर रवाना हुआ। जब यह लघु साहसी दल सुरक्षित रूप से पीक्वोड प्रदेश को पार कर नारागनसेत के मध्य भाग मे पहुच चुका था, और पाटुकेट नदी के पास झोपडो मे विश्राम कर रहा था तो उस ओर आ रहे शत्रु की सूचना उसे दी गई। उस समय कैननचेट के पास केवल सात आदमी थे। उनमे से दो को उसने शत्रु की खबर लाने के लिए पास की पहाडी पर भेज दिया।

अग्रेजो और इण्डियनो के एक सैनिक दल को तेजी के साथ आगे आते देखकर वे दोनो भय के मारे सास छोडकर अपने सरदार के स्थान के पास से होते आगे भाग गए और उसे खतरे से आगाह तक नही किया। तब कैननचेट ने एक और सैनिक को पता लगाने भेजा। उसने भी ऐसा ही किया। तब उसने दो और को भेजा। इनमे से एक बहुत भयग्रस्त होकर घबराया हुआ दौडा-दौडा लौटा

१ रेवरेण्ड डबल्यू० रगिल्स की पाण्डुलिपि।

और बोला कि समस्त ब्रिटिश सेना पास आ गई है। कैननचेट ने देखा कि अब तुरन्त भाग जाने के सिवा दूसरा विकल्प रह नही गया है। उसने पहाडी के इर्दगिर्द कही छिपने की कोशिश की किन्तु विरोधी इण्डियनो ने उसे देख लिया और उन्होने तथा चन्द द्रुतगामी अग्रेजो ने तेजी के साथ उसका पीछा किया। जब उसने देखा कि द्रुततम शत्रु उसके पास पहुचने ही वाला है तो पहले उसने अपना कम्बल और बाद मे अपना रजतालकृत कोट तथा कमरबन्द भी फेक दिये। इन चिह्नो से उसके शत्रुओ को ज्ञात हुआ कि वह कैननचेट है और उन्होने और भी अधिक उत्कण्ठा तथा तेजी के साथ उसका पीछा किया।

अन्त मे नदी के बीच से भागते समय उसके पाव को किसी पत्थर की ठोकर लगी, और वह इस तरह गहराई मे गिर गया कि उसकी बन्दूक पानी मे बुरी तरह भीग गई। इस घटना ने उसे इस तरह निराशा से भर दिया कि, जैसा कि उसने बाद मे स्वीकार किया—"उसका दिल और अतडिया उसके अन्दर ऐठ कर रह गई और वह शक्तिरहित सूखी लकडी-सा हो गया।"

वह इतना ज्यादा घबडा गया था कि जब नदी से थोडी ही दूर पर उसे एक पीक्वोड इण्डियन ने पकड लिया तो शरीर से बलवान् एव साहसी होते हुए भी उसने कोई प्रतिरोध नही किया। किन्तु जब उसे बन्दी बना लिया गया तो उसके अन्दर उसकी सम्पूर्ण अह-भावना जाग उठी। और उस क्षण के बाद हम उसके शत्रुओ द्वारा लिखे विवरणो मे, पाते है कि उसमे राजोचित उच्च वीरता की ही झलक बार-बार दिखाई पडती है। जो अग्रेज वहा पहले पहुचे उनमे से एक ने, जिसकी उम्र के बाईस साल भी पूरे नही हुए थे, उससे कोई सवाल किया। तब उस गर्वित-हृदय योद्धा ने उसके तरुण मुख की ओर गहरे तिरस्कार के साथ देखते हुए उत्तर दिया—"तुम अभी बच्चे हो, तुम युद्ध की बाते समझ नही सकते, अपने भाई या दलपति को आने दो, उसे मै उत्तर दूगा।"

अपनी जाति के साथ अग्रेजो के सामने आत्मसमर्पण कर देने की शर्त पर उसकी प्राणरक्षा के प्रस्ताव बार-बार उसके सामने आए, किन्तु उसने तिरस्कार पूर्वक उनको अस्वीकार कर दिया और उस प्रकार का कोई प्रस्ताव अपनी प्रजाओ को भेजने से इन्कार किया। यह भी कहा—"उनमे से कोई उसे मजूर नही करेगा।" जब श्वेतो के प्रति विश्वासघात करने और वह धमकी देने की बात उसे सुनाई गई कि वह अग्रेजो को उनके घरो मे जला डालेगा, तो

उसने अपना औचित्य सिद्ध करने की पर्वाह किए बिना रोषपूर्वक कहा कि दूसरे लोग भी उसकी ही भाति लडाई के लिए उत्सुक थे, इसलिए 'उसके बारे मे वह कोई बात नही सुनना चाहता।'

ऐसा उदात्त एव अनम्य प्राणी, अपने लक्ष्य और अपने मित्र के प्रति इतना निष्ठावान् कि उसे उदार एव वीर लोगो के हृदय मे स्थान मिलना चाहिए था, किन्तु कैननचेट इण्डियन था, ऐसा प्राणी, जिसके लिए युद्ध के पास कोई शिप्टता नही थी, मानवता के पास कोई नियम-कानून न था, धर्म के पास कोई दया नही थी, — उसे मौत की सजा दी गई। उसके जो अन्तिम शब्द लिखे मिलते है, वे उसकी आत्मा की महानता के ही योग्य है। जब उसे मौत की सजा दी गई, उसने कहा—"यही वह चाहता है, क्योकि हृदय कोमल पड जाने या अपने अयोग्य कुछ कहने के पूर्व ही उसे मर जाना चाहिए।" उसके शत्रुओ ने उसे सैनिक की मृत्यु प्रदान की वह अपनी ही पद-मर्यादा वाले तीन तरुण साचेमो के हाथ, स्टोनिघम स्थान पर, गोली से मार दिया गया।

नारागनसेत गढ मे उसकी पराजय, तथा कैननचेट की मृत्यु से किग फिलिप के भाग्य को गहरे आघात लगे। उसने मोहावको को भडकाकर युद्ध का रूप देने की एक असफल चेष्टा की, किन्तु यद्यपि उसमे राजमर्मज्ञ की सहज बुद्धि थी किन्तु उसका कौशल उसके अधिक विचक्षण शत्रुओ के बेहतर कौशल से कट गया और उनके युद्धोपम कौशल के आतक से निकटवर्त्ती कबीलो का निश्चय और साहस मन्द पड गया। अभागे राजा ने देखा कि दिन-दिन उसकी शक्ति नष्ट होती जा रही है और उसके दल की सख्या बराबर घटती जा रही है, कुछ श्वेतो द्वारा प्रलुब्ध कर लिए गए है, दूसरे कुछ भूख और थकान तथा बार-बार के आक्रमणो के शिकार हो गए है। उसकी सामग्री सब छिन गई है, उसकी आखो के आगे ही उसके चुने हुए मित्र उठते जा रहे है, उसी के आदमियो ने उसके काका को गोली मार दी है, उसकी बहिन बन्दिनी बना ली गई है, और एक बार जान बचाकर भागते समय उसे अपनी प्यारी पत्नी और एकमात्र पुत्र को शत्रुओ की दया पर छोड देना पडा है। इतिहासकार कहता है—"इस प्रकार धीरे-धीरे उसके विनाश की क्रिया आगे बढती गई, उसके कष्ट घटने की जगह बढते ही गए, उसके जीते-जी ही अपने बच्चो के बन्दी होने, मित्रो के नष्ट हो जाने, अपनी प्रजाओ के कत्ल, सब कौटुम्बिक सम्बन्धियो के

मरण तथा समस्त बाह्य सुख-सुविधाओ से रहित होने का भान होता गया।"

उसके दुर्भाग्य की मात्रा पूरी करने के लिए उसके अपने अनुयायियो ने ही उसकी जान लेने का षड्यन्त्र करना शुरू किया। उन्होने सोचा कि उसका बलिदान करके वे शायद अपने लिए अपमानजनक सुरक्षा प्राप्त कर लेगे। धोखे से उसके अनेक निष्ठावान् अनुयायियो को शत्रु ने फास लिया। इनमे फिलिप के नाते की और उसकी विश्वासपात्र पोकासेट की इण्डियन राजकुमारी वेटामो भी थी। उस समय तक वेटामो उसके साथ ही थी और उसने एक निकटवर्त्ती नदी पार कर भागने की चेष्टा भी की परन्तु तैरने मे या ठण्ड और भूख से शिथिल पड जाने के कारण, वह धारा के पास ही तट पर नगी मरी हुई पाई गई। किन्तु मौत के बाद भी उत्पीडन की क्रिया बन्द नही हुई। मृत्यु भी, जो पीडितो-दुखियो का आश्रयस्थल है और जहा पहुच जाने के बाद दुष्ट लोग भी हाथ रोक लेते है, इस परित्यक्ता स्त्री का आश्रय नही बन पाई, जिसका महा-पराध केवल यह था कि वह अपने सम्बन्धी और मित्र के प्रति वफादार थी। उसकी लाश से अपुरुषोचित एव कायरतापूर्ण बदला लिया गया। सिर धड से जुदा करके बास पर टाग दिया गया और उसे टाटन मे उसकी बन्दिनी प्रजाओ के दर्शन के लिए खोल दिया गया। उन्होने तुरन्त अपनी अभागिनी रानी के चेहरे को पहिचान लिया और इस बर्बरतापूर्ण दृश्य ने उन्हे इतना प्रभावित किया कि वे बहुत बुरी तरह रो पडे।

अपने चतुर्दिक् फैले दुर्भाग्य एव जटिल सकटो को फिलिप ने चाहे जितने धीरज से सहन किया हो, अपने ही अनुयायियो के विश्वासघात ने उसके हृदय को मसल दिया और उसे बिल्कुल हताश कर दिया। कहा जाता है कि "इसके बाद उसने कभी खुशी नही जानी, न उसे किसी योजना मे कोई सफलता ही मिली।" आशा का बसत टूट चुका था,—साहस की उत्कटता समाप्त हो चुकी थी,—उसने अपने इर्द-गिर्द देखा, सब कुछ खतरे और अन्धकार से भर गया था, दया करने के लिए कोई आख नही थी, न कही कोई भुजा शेष थी जो उसे मुक्त कर सके। चन्द ऐसे अनुयायियो का एक छोटा-सा दल लेकर, जो इस नैराश्यपूर्ण स्थिति मे भी उसके प्रति निष्ठा रखे हुए थे, अभागा फिलिप माउण्ट होप के पास लौट आया, जो उसके पूर्वजो का प्राचीन निवास था। यहा अपनी पहले की शक्ति एव समृद्धि स्थानो मे, प्रेतात्मा की भाति, फिरता रहा। इस

समय वह घरबार, बाल-बच्चो और मित्रो, सबसे रहित था। उसकी निराश्रय एव करुण परिस्थिति का उससे अच्छा चित्र और क्या हो सकता है जो इस इतिहास-लेखक ने बिना यह ख्याल किये दिया है कि ऐसा करके वह इस अभागे योद्धा के लिए, जिसका तिरस्कार करता है, अपने पाठको मे सहानुभूति की भावना उत्पन्न कर रहा है ? वह कहता है—"उस जगली हिंस्र पशु के समान, जिसका पीछा अग्रेजी सेनाए जगलो मे सौ मील विस्तृत क्षेत्र मे कभी आगे, कभी पीछे कर रही थी, फिलिप अन्त मे माउण्ट होप की अपनी माद मे खदेड दिया गया। वहा उसने अपने चन्द सर्वश्रेष्ठ मित्रो के साथ, एक ऐसे दलदल मे आश्रय लिया जो उसके लिए तबतक बन्दीगृह के रूप मे बना रहा जबतक कि दैवी अनुज्ञा से मृत्यु के हरकारे उससे बदला लेने के लिए नही आ गए।"

निराशा के इस अन्तिम आश्रय मे भी उसकी स्मृति के चतुर्दिक् एक उदासी-भरी महानता पुजीभूत हो गई है। हम कल्पना करते है कि वह अपने चिन्ताग्रस्त अनुयायियो के बीच बैठा, चुपचाप अपने विशिष्ट भाग्य के बारे मे सोच रहा है और अपने छद्मस्थान की भीषणता तथा नीरसता से उस पर एक वन्य सुषमा छा गई है। वह पराजित है, पर भीत नही है, टूटकर धरती पर गिर गया है, परन्तु अपमानित नही है, सकटो के बीच वह और स्फूर्ति से उठता दिखाई पडता है, और कटुता की अन्तिम तलछट पीने मे वह भयानक सन्तोष का अनुभव करता है। जो क्षुद्रजन होते है वे दुर्भाग्य के आगे कन्धा डाल देते हैं, जो महत्प्राण होते है वे उसके ऊपर उठ जाते है। पराजय स्वीकार करने का विचार फिलिप को पागल कर देता था। उसके एक अनुयायी ने जब उसके सामने शान्ति का नुस्खा रखा तो उसने उसे वही मारकर खत्म कर दिया। उस मरे आदमी का भाई भाग खडा हुआ और उसी ने अपने सरदार के पलायन मार्ग का पता शत्रुओ को दे दिया। तुरन्त ही श्वेतो एव इण्डियनो का एक दल उस दलदल की ओर रवाना किया गया जहा छिपा हुआ फिलिप क्रोध और निराशा से दात पीस रहा था। उनके आगमन का पता लगने के पहले ही वह घेर लिया गया। थोडी देर के अन्दर उसने देखा कि उसके पाच सबसे सच्चे अनुयायी उसके पावो तले मरे पडे हैं और किसी प्रकार का प्रतिरोध निरर्थक है। वह अपने झोपडे से बच निकलने के लिए बडी तेजी से भागा किन्तु अपनी ही जाति के एक भडैत इण्डियन द्वारा गोली से मार दिया गया—गोली उसके हृदय देश मे जाकर लगी।

यह है वीर किन्तु अभागे बादशाह फिलिप की लघु कथा, जो अपने जीवन-काल मे बराबर उत्पीडित रहा और जिसे मृत्यु के बाद भी लाछित और अपमानित किया गया। किन्तु जब हम उसके शत्रुओ द्वारा लिखित पक्षपातपूर्ण वृत्त पर भी विचार करते है तो उसमे हमे एक ऐसे सुन्दर एव उदात्त चरित्र के दर्शन होते है जो हममे अपने भाग्य के लिए सहानुभूति और अपनी स्मृति के लिए सम्मान की भावना पैदा करता है। हम देखते है कि समस्त उत्पीडनकारी चिन्ताओ और निरन्तर युद्ध की भीषण भावनाओ के बीच भी उसमे दाम्पत्य प्रेम एव पैतृक वात्सल्य की मृदुल भावनाए जाग्रत् थी और वह मैत्री के उदार मनोवेगो से परिपूर्ण था। उसकी प्रियतमा पत्नी एव एक मात्र पुत्र के बन्दी बना लिए जाने का उल्लेख बडे हर्ष के साथ यह कहकर किया गया है कि उसे उसकी तीव्र यातना हुई, किसी घनिष्ठ मित्र की मृत्यु को बडी शान के साथ उसकी चेतना पर नवीन आघात के रूप मे वर्णित किया गया है। किन्तु जिनके प्यार मे उसे अटूट विश्वास था, उन अनेक अनुयायियो के विश्वासघात एव दल-विपर्यय से उसके हृदय को सबसे ज्यादा धक्का लगा और जैसे उसका सब सुख ही मर गया। वह एक ऐसा देशभक्त था जिसे अपनी मातृभूमि के प्रति गहरा आकर्षण था—वह एक ऐसा राजा था जो अपनी प्रजा के प्रति अनुरक्त था, सच्चा था और जो उनकी अनीतियो के प्रति असन्तोष प्रकट करने वाला था। वह ऐसा सैनिक था, जो युद्ध मे साहसी, दुर्भाग्य मे, थकान मे, भूख मे, हर तरह के शरीर-कष्ट मे धैर्यवान् था, और जिस कार्य को उसने उठाया था उसमे मर मिटने को सदा तैयार रहता था। गर्वित-हृदय का और अपनी प्राकृतिक स्वतन्त्रता के प्रति अदम्य प्रेम से पूर्ण होने के कारण अपनी उग्र भावना को झुका देने तथा बस्तियो की सुख-सुविधा एव विलासिता के बीच पराश्रित एव तिरस्कृत रूप मे रहने की अपेक्षा वह जगलो के हिंस्र पशुओ की सगत तथा निर्जनो एव दलदलो की अधेरी और बुभुक्षित कन्दराओ मे रहना ज्यादा पसन्द करता था। वह ऐसे वीरोचित गुणो एव उच्च सिद्धियो से पूर्ण था जो यदि किसी सभ्य योद्धा मे होती तो कवि उसपर कविता लिखते और इतिहासकार उसकी गाथाए लिखकर अपने को धन्य अनुभव करते, किन्तु वह बेचारा अपनी ही मातृभूमि मे मारा-मारा फिरता रहा और अन्धकार तथा तूफान के बीच डूबने वाली अकेली नौका की भाति नष्ट हो गया। उसके पतन पर रोनेवाला एक भी करुण नयन नही, उसके सघर्ष का विवरण लिखनेवाला एक भी हाथ नही।

जान बुल[1]

ऐन ओल्ड सांग, मेड बाई एन एजेड ओल्ड पेट,
आफ ऐन ओल्ड वर्शिपफुल जेंटिलमैन हू हैड ए ग्रेट इस्टेट,
दैट केप्ट ए ब्रेव ओल्ड हाउस ऐट ए बाउण्टीफुल रेट,
ऐण्ड ऐन ओल्ड पोर्टर टु रिलीव द पुअर ऐट हिज गेट ।
विद ऐन ओल्ड स्टडी फिल्ड फुल आव् लर्नेड ओल्ड बुक्स,
विद ऐन ओल्ड रीविरैण्ड चैपलेन, यू माइट नो हिम बाई हिज लुक्स
विद ऐन ओल्ड बटरी हैच वोर्म क्वाइट आफ दि हुक्स,
ऐण्ड ऐन ओल्ड किचन दैट मेनटेंड हाफ ए डजन ओल्ड कुक्स ।
लाइक एन ओल्ड कोर्टियर आदि

—ओल्ड साग

"यह एक वयोवृद्ध पुराने कवि का एक पुरातन गान है,—एक बूढे श्रद्धा-भाजन भद्रजन के विषय मे, जिसके पास एक बडी जागीर थी, जो एक साहसी पुरातन गृह को उदारतापूर्ण भावनाओ के साथ चलाये जा रहा था । गरीबो का भार उठा लेने के लिए उसके गृह पर एक सेवक मौजूद रहता था । उस घर मे एक पुरातन अध्ययन-कक्ष भी था जिसमे विद्वत्तापूर्ण पुरानी पुस्तके भरी हुई थी । गृह के साथ एक बूढा विद्वान् पुजारी भी था, जिसे तुम देखते ही पहिचान सकते थे । गृह मे एक पुरातन रसद-द्वार है जो कुलाबो से अलग हो गया है, एक पुरातन पाकशाला है जिसमे आधा दर्जन पुराने रसोइए नियुक्त है ।"

हास्य की और किसी शाखा मे अग्रेज इतने बढे-चढे नही है जितनी उस शाखा मे है जो व्यग्यचित्रण तथा उपहासास्पद या चिढाने का नाम देने से सम्बद्ध है । इस प्रकार उन्होने न केवल व्यक्तियो के, बल्कि जातियो एव राष्ट्रो

---

१. पत्रकारिता की भाषा मे इंग्लैण्ड का नाम ।

के भी सनकभरे नाम रखे है। अपना मजाक करने के रुझान मे उन्होने अपने को भी नही छोडा है। एक आदमी तो सोचेगा कि अपने प्रतिरूपण मे एक राष्ट्र किसी महत् वीरत्वपूर्ण एव प्रभावशाली वस्तु का चित्रण करने की ओर प्रेरित होगा, किन्तु लोकप्रिय हास्य तथा जो कुछ स्पष्ट, हास्यात्मक और परिचित है उसके प्रति अपने प्रेम के कारण ही उसने अपनी राष्ट्रीय विचित्रताओ को एक ऐसे दृढाग, मोटल्ले वृद्ध पुरुष के रूप मे मूर्त्तिमान् किया है जो तिकोना हैट, लाल वास्कट तथा चमडे की बिरजिस-पायजामा-पहिने हुए है तथा जिसके हाथ मे मज़बूत बलूती छडी है। इस प्रकार अपनी अत्यन्त निजी दुर्बलताओ को हास्यजनक बिन्दु तक प्रदर्शित करने मे उसने अत्यन्त आनन्द का अनुभव किया है, और इस बात मे इतना सफल हुआ है कि वास्तविक जीवन मे उपस्थित कोई प्राणी भी जनमानस के समक्ष ऐसे परिपूर्ण रूप मे उपस्थित नही है जितना कि वह सनकी प्राणी 'जान बुल' है।

शायद इस प्रकार चित्रित अपने चरित्र के निरन्तर ध्यान से ही वह प्रतीक राष्ट्र पर आरोपित हो गया होगा, और किसी समय बहुत कुछ कल्पना के सहारे जो चित्रित था, वह यथार्थ हो गया। जब किसी आदमी की विचित्रताओ का निरन्तर वर्णन किया जाता है तब वह उन्हे ग्रहण भी कर लेता है। अग्रेजो के सामान्य वर्गो ने जान बुल का जो श्रेष्ठ आदर्श अपने मन मे खीच रखा है उस पर वे आश्चर्यजनक रूप से मुग्ध है और जो विशाल व्यग्यचित्र निरन्तर उनकी आखो के आगे है। उसके अनुसार चलने का वे प्रयत्न भी करते है। दुर्भाग्य की बात इतनी ही है कि कभी-कभी अपने विद्वेष या नीचता के लिए वे अपने शेखीभरे बैलवाद को एक बहाना या आड बना लेते है। यह बात मैने धरती के उन गृहपालित वास्तविक पुत्रो मे खास तौर से देखी है जो कभी लन्दन नगरी की सीमा के बाहर नही गए है। यदि इनमे से कोई वार्तालाप मे गवारू या अशोभन हो उठता है और अशिष्ट सत्य बोल जाता है तो स्वीकार कर लेता है कि वह असली जान बुल है, और कभी अपने मन की बात कहने से चूकता नही। यदि वह मामूली बातो के विषय मे जब-तब अनुचित आवेश मे उबल पडता है तो कह देता है कि जान बुल एक चिडचिडा मस्तमौला है, और तब उसका आवेश एक क्षण मे खतम हो जाता है और फिर वह मन मे कोई बुराई, कोई द्वेष नही रखता। यदि वह रुचि के भद्देपन तथा विदेशी शिष्टताओ के प्रति

उदासीनता का प्रदर्शन करता है तो वह अपने अज्ञान के लिए ईश्वर का धन्यवाद करता है और कहता है कि वह बस सीधा-सादा जानबुल है और उसे आडम्बर तथा तुच्छ-भडकीली वस्तुओ के प्रति कोई आकर्षण नही है। अजनबियो द्वारा गावदी बनाये जाने की ओर उसकी उन्मुखता, और सनको के लिए बहुत ज्यादा खर्च कर देने की अपनी प्रवृत्तियो को वह उदारता कहकर भूल जाता है—क्योकि जान सदा ही बुद्धिमान् की अपेक्षा उदार अधिक है।

इस प्रकार जान बुल के नाम की आड मे यह अपने हर एक दुर्गुण को गुण मे बदलने का प्रयत्न करता है और अपने को साफ-साफ जीवित प्राणियो मे सबसे ईमानदार घोषित करने से नही चूकता।

आरम्भ मे यह चरित्र चाहे जितना कम अनुकूल रहा हो, धीरे-धीरे अब उसने सारी जाति को, सारे राष्ट्र को आच्छन्न कर लिया है, या यह भी कह सकते है कि उन्होने अपने को एक-दूसरे के अनुकूल बना लिया है, और एक अजनवी, जो अग्रेजो की विलक्षणताओ का अध्ययन करना चाहता है, व्यग्य-चित्रवाली दुकानो की खिडकियो मे प्रदर्शित जान बुल के अगणित आकृतिचित्रो से बहुमूल्य सूचनाए एकत्र कर सकता है फिर वह ऐसे उर्वर हसोडो मे से एक है जो निरन्तर नये पोर्ट्रेट (आकृतिचित्र) निकालते रहते है, और विभिन्न दृष्टि-कोणो से विभिन्न पक्षो को हमारे सामने उपस्थित करते रहते है। यद्यपि अनेक बार उसका वर्णन किया जा चुका है, किन्तु, मेरी आखो से जो कुछ दिखाई पडा है उसका एक लघु स्केच यहा देने का लोभ मे सवरण नही कर सकता।

देखने मे जानबुल एक सरल, ऊपर से नीचे तक तथ्यपरायण व्यक्ति है जिसके साथ समृद्ध गद्य का बाहुल्य और उसकी अपेक्षा काव्य की कमी है। उसके स्वभाव मे रूमानियत बहुत कम पाई जाती है, किन्तु दृढ प्राकृतिक भावना खूब मिलती है। वह हाजिर जवाबी की अपेक्षा हास्य मे ज्यादा बढा-चढा है, वह शोख की अपेक्षा जिन्दा दिल अधिक है, मनहूस नही, विषादयुक्त है, सर-लता से आकस्मिक अश्रुबिन्दु मे द्रवित हो सकता है या जोरो की हसी मे बदल सकता है, किन्तु भावनाओ को उपेक्षा के साथ देखता है, और हल्के-फुल्के परि-हास के लिए उसके मन मे स्थान नही। यदि आप उसकी विनोदशीलता चलने दे और उसे अपने विषय मे बाते करने दे तो वह बहुत बढिया साथी साबित होगा और किसी झगडे मे तन-धन से अपने दोस्त का साथ देगा, फिर चाहे उस

पर कितना ही आघात हो ।

सच कहे तो इस अन्तिम बात के लिए तो उसमे ऐसा रुझान है मानो वह इसके लिए तैयार ही रहता हो । वह एक ऐसा व्यस्तमना व्यक्ति है जो केवल अपने या अपने कुटुम्ब के विषय मे ही नही सोचता, बल्कि सारे देश के लिए सोचता है और हर आदमी के सवाल को उठाने को सदा तैयार रहता है। वह अपने पडोसी के मामलो को सुलझाने के लिए स्वेच्छा से निरन्तर अपनी सेवाए पेश करता रहता है, और यदि वे उसकी सलाह लिए बिना कोई महत्त्वपूर्ण निश्चय कर लेते है तो बहुत बुरा मानता है, यद्यपि जब भी वह ऐसे मैत्रीपूर्ण कार्य मे पडता है तो सब दलो से झगडे बिना और फिर उनकी अकृतज्ञता पर गाली दिए बिना नही रहता। दुर्भाग्यवश उसने अपने यौवनकाल मे सुरक्षा के उदात्त विज्ञान मे शिक्षा ग्रहण की और अपने अगो एव शस्त्रो के प्रयोग मे निपुण हो जाने तथा घूसेबाजी और लाठी चलाने मे पूर्ण आचार्यत्व प्राप्त कर लेने के कारण वह तब से बराबर लडाई-झगडे का जीवन व्यतीत करता रहा है । चाहे उसके कितने ही दूर के पडोसियो मे कोई झगडा हो रहा हो, सुनते ही डण्डा घुमाकर बुदबुदाये बिना वह नही रह सकता, वह तुरन्त सोचने लगता है कि अपने हित या सम्मान मे क्या इस झगडे मे हस्तक्षेप करना ठीक न होगा। उसने सारे देश पर इस परिपूर्णता के साथ गर्व एव नीति के सम्बन्धो को फैला रखा है कि कोई भी घटना, उसके किसी न किसी कल्पनारचित अधिकार या मर्यादा का भग किए बिना घटित ही नही हो सकती । अपने लघु अचल मे समासीन, इन तन्तुओ को प्रत्येक दिशा मे फैलाए हुए, वह उस चण्ड, बोतलोदर मकडे-सा लगता है जिसने सारे प्रकोष्ठ पर अपना जाल इस तरह बुन रखा है कि उसकी शान्ति भग किए बिना और अपनी माद से रोषपूर्वक झपटकर निकले बिना एक मक्खी उसमे भिनक नही सकती, न मन्द बयार उसमे बह सकती है ।

यद्यपि अन्दर से वह सचमुच भले हृदय का, भले स्वभाव का व्यक्ति है किन्तु विवाद और लडाई-झगडे मे दखल देने को बहुत पसन्द करता है । उसकी एक विशेषता यह है कि वह सिर्फ झगडे के आरम्भ मे रस लेता है। वह बडी तेजी के साथ लडाई मे जाता है, किन्तु विजयी होने के बाद भी उससे शिकायत करता ही बाहर आता है । और यद्यपि सघर्ष-बिन्दु पर उससे ज्यादा दृढता के साथ शायद ही कोई लडता हो, किन्तु जब लडाई खत्म हो जाती है और वह

समझौते की बात करने आता है तो हाथ मिलाते ही इतना विभोर हो जाता है कि अपने प्रतिद्वन्द्वी को वह सब हथिया लेने देता है जिसके लिए वे अभी तक लड रहे थे। इसलिए उसे लडाई के विरुद्ध अपनी रक्षा करने की उतनी आवश्यकता नही, जितना मित्र बनाने के विरुद्ध सावधान रहने की है। लडकर, धमकाकर आप उससे एक कौडी नही ले सकते, किन्तु उसे खुश करके उसकी जेब का सारा माल हथिया ले सकते है। वह उस मजबूत जहाज की भाति है जो भीषण से भीषण तूफान को बिना किसी क्षति के सहन कर लेता है किन्तु जब उसके बाद शान्ति फैल जाती है तब अपने मस्तूल उतारकर रख देता है।

उसे विदेशो मे अपनी रईसी दिखाने का बडा शौक है, उसे लम्बा पर्स, बाहर निकालने और घूसेबाज़ी के मैचो, ग़ुडदौडो, मुर्गे की लडाइयो मे अपना पैसा शाहखर्ची के साथ नष्ट करने तथा उच्च स्तर के लोगो के बीच अपना सिर ऊपर उठाए रखने का शौक है। किन्तु शाहखर्ची के ऐसे एक दौरे के बाद ही उसे मितव्ययिता की भीषण मतलिया होने लगती है, तब वह छोटे से छोटे खर्च को भी रोक देता है, एकदम डूब जाने और सदावर्त्त मे लाकर रखे जाने की निराशाभरी बाते करता है, और ऐसी मन स्थिति मे बिना उग्र कहा-सुनी के सौदागर का छोटा-सा बिल भी नही चुकाता। सच पूछे तो वह दुनिया मे सबसे नियमित पर असन्तुष्ट वेतनदाता है। वह अपनी बिरजिस की जेब से अपना सिक्का असीम हिचकिचाहट के साथ निकालता है, एक-एक कौडी चुका देता है, किन्तु हर गिनी (एक सिक्का) को देते समय बडबडाता रहता है।

अपनी मितव्ययिता की सारी बातो के बावजूद वह खुलकर देने वाला दाता तथा आतिथ्यसत्कारशील गृहस्थ है। उसकी मितव्ययिता सनक से भरी हुई है, और उसका मुख्य हेतु ऐसे उपाय करना है जिससे वह शाहखर्च हो सके। वह ऐसा आदमी है कि एक दिन तो मास के एक लुक्मे और पोर्ट (शराब) के अद्धे पर नाक-भौ सिकोडता है, किन्तु दूसरे ही दिन अपने सारे पडोसियो की दावत के लिए पूरे बैल को उबालकर रख देता है और शराब का पीपा खोल देता है।

उसका पारिवारिक अधिष्ठान अत्यन्त व्ययसाध्य है,—किसी बाहरी प्रदर्शन के कारण उतना नही, जितना ठोस मास और पकवान या उन अनुयायियो की बहुसख्या के कारण जिनको वह खिलाता-पहिनाता है, इसलिए भी कि छोटी-छोटी सेवाओ के लिए बडी-बडी रकमे दे देने की उसमे अजीब आदत है। वह

बडा ही दयालु और उदार मालिक है, और यदि उसके परिचारक उसकी विशेषताओ की तारीफ करते रहे, कभी-कभी उसके अह को परितुष्ट करने वाली बाते कहते रहे, और उसकी आखो के आगे उसके माल पर बहुत ज्यादा हाथ साफ न करे, तो वे उसे अच्छी तरह निभा सकते है। जो भी चीजे उसके सहारे जीती है, पनपती और मोटल्ली होती जाती है। उसके गृह परिचारक अच्छा वेतन पाते है, छककर खाते और परिपुष्ट होते है, तथा कुछ ज्यादा काम भी नही करते। उसके घोडे कोमल और सुस्त होते है, और उसकी राजकीय गाडी के सामने धीमी चाल से चलते है, उसके घरेलू कुत्ते, दरवाजे के पास चुपचाप सोते रहते है और सेंध मारनेवाले पर भी शायद ही कभी भौकते है।

उसका पारिवारिक महल एक पुराना दुर्गीकृत जागीरी भवन है, जो आयु के कारण भूरा पड गया है और ऋतु-प्रताडित दिखाई पडने पर भी बडा आदरास्पद है। वह किसी निश्चित नक्शे के अनुसार नही बना है, बल्कि विविध रुचियो एव कालो के अनुसार बनाए गए अशो का एक बृहत् पुज है। केन्द्र भाग पर सेक्सन स्थापत्य के चिह्न स्पष्ट है और वह उतना ही मजबूत भी है जितना भारी पत्थरो और पुराने अग्रेजी बलूत से बना कोई मकान हो सकता है। उस शैली के सभी स्मारको की भाति, यह भी धूमिल मार्गो, जटिल भूल-भुलैयाओ तथा अधेरे प्रकोष्ठो से पूर्ण है, और यद्यपि आधुनिक काल मे ये अशत दीप्त हो गए है, किन्तु उसमे ऐसे स्थान अब भी है जहा आपको अधेरे मे टटोल-टटोलकर चलना पडा है। समय-समय पर मूल इमारत मे वृद्धि होती रही है, और बडे-बडे परिवर्तन हो गए है, युद्धो एव तूफानो के बीच मीनारे तथा दुर्ग-प्रकोष्ठ बनाए गए है, शान्ति के समय पार्श्वगृहो का निर्माण हुआ है, और विभिन्न पीढियो की सुविधा या सनक के अनुकूल सेवक-गृह, ठहरने के स्थान तथा कार्यालयो की रचना हुई है—यहा तक कि यह कल्पना मे आ सकने योग्य बडा ही विस्तृत, और असम्बद्ध आवास बन गया है। एक पूरा पार्श्वभाग पारिवारिक उपासनागृह के लिए सुरक्षित है—निश्चय ही यह बडा विशाल रहा होगा और विविध युगो मे बदले एव सरल किए जाने पर भी उसमे एक गभीर धार्मिक तडक-भडक है। इसके अन्दर की दीवारो मे जॉन के पूर्वजो के कीर्ति-स्तभ बने हुए है। उसमे चुस्ती के साथ मुलायम गद्दिया और पक्तिबद्ध कुर्सिया लगी हुई है, जहा उसके कुटुम्ब के ऐसे सदस्य, जिनकी रुचि चर्च की प्रार्थना

की ओर है, अपना कर्त्तव्य पालन करते हुए आराम के साथ ऊघते रहते है ।

इस उपासनागृह को रखने मे जॉन को बहुत ज्यादा धन व्यय करना पडा है, किन्तु वह अपने धर्म का पक्का है और अपने उत्साह मे ऐसा जोशीला है कि उसके आस-पास बहुतेरे भिन्न मत रखनेवाले उपासना-गृह बन गए है, और उसके चन्द पडोसी, जिनसे उसने झगडा कर लिया था, प्रबल पोपवादी हो गए हे ।

उपासनागृह के कार्यो के लिए, बहुत खर्च करके, उसने एक रोबीले पारिवारिक पुजारी को रख छोडा है । यह पुजारी बडा विद्वान् और सुसस्कृत है, सच्चा अभिजात ईसाई है और वृद्ध गृहस्वामी की राय का सदा समर्थन किया करता है, उनके स्खलन पर चतुराई के साथ आख से इशारा करता है, दुराग्रह पर बच्चो को डाट देता है । और उसके किरायेदारो को बाइबिल पढने, प्रार्थना करने, और सबके ऊपर नियमित रूप से तथा बिना शिकायत किये किराया चुकाते जाने के लिए उत्साहित करने मे उसका बहुत बडा उपयोग है ।

कौटुम्बिक कक्ष बहुत पुरानी रुचि के, कुछ भारी, और प्राय असुविधाजनक है, किन्तु उनमे पुराने जमाने की शान अब भी है । वे बढिया कामवाले किन्तु विवर्ण पर्दो, भारी-भरकम फर्नीचर और वजनी अलकृत प्लेट-पुज से भरे हुए है । लम्बे-चौडे आतिशदान, बडे-बडे भोजनागार, विस्तृत सुरागार तथा दावत के विशाल हॉल, सब बीते युग की उस मुखर आतिथ्यशीलता की कहानी कहते है जिसके आगे जागीरभवन के आधुनिक समारोह छाया-जैसे लगते है । परन्तु कितनी ही कोष्ठावलिया ऐसी है जो सूनी और कालजीर्ण हो रही है, तथा कितने ही स्तभ और बुर्ज बरबादी की ओर लडखडा रहे हैं और जोर की आधियो मे उनके गिर जाने का भय है ।

जॉन को कई बार सलाह दी जा चुकी है कि वह पुराने मकान की एक बार अच्छी तरह सफाई और मरम्मत (ओवरहालिग) करवा दे, कुछ निरर्थक हिस्सो को गिरवादे और दूसरो को उपयुक्त सामग्री से सुदृढ करवा दे, किन्तु बुड्ढा ऐसी बाते सुनकर झल्ला पडता है । वह बलपूर्वक कहता है कि भवन बहुत अच्छा भवन है, वह मजबूत और ऋतुरोधी है और तूफानो मे हिल नही सकता—, वह कई सौ वर्ष से खडा है, इसलिए अभी उसके गिरने की कोई सभावना नही है । जहा तक उसके असुविधाजनक होने का सवाल है, उसका कुटुम्ब असुविधाओ का अभ्यस्त है, और उनके बिना उसे आराम नही मिल

सकता। जहा तक उसके भारी-भरकम ग्राकार ग्रौर टेढे-मेढे निर्माण की बात है, वह सदियो की वृद्धि का परिणाम है ग्रौर हर एक पीढी ने ग्रपने विवेक से उसमे सुधार किया है। उसका कहना है कि उसके-जैसे प्राचीन कुटुम्ब को रहने के लिए बडे मकान की जरूरत पडती है, नये नवाबो के कुटुम्ब ग्राधुनिक कुटीरो एव चुस्त कक्षो मे रह सकते है किन्तु प्राचीन ग्राग्ल कुटुम्ब को किसी पुराने ग्राग्ल जागीरनिवास मे ही रहना चाहिए। यदि ग्राप भवन के किसी भाग के फालतू होने की ग्रोर सकेत करते है, तो वह जोर देकर कहता है कि वह तो शेष भवन की दृढता या ग्रलकरण तथा सम्पूर्ण के सामजस्य के लिए बहुत ग्रावश्यक है। वह बडे जोर के साथ कहता है कि ये सब भाग एक-दूसरे से इस तरह गुथे हुए बनाये गए है कि यदि ग्राप उनमे से एक को गिराते है तो उन सबके गिर जाने का भय है।

ग्रसल रहस्य यह है कि जॉन को रक्षा करने ग्रौर सरक्षण देने का बडा शौक है। वह इसे जरूरी समझता है कि एक प्राचीन एव सम्मानित कुटुम्ब ग्रपनी मर्यादा के लिए खूब ज्यादा ग्रादमियो को रखे ग्रौर ग्रपने ग्राश्रितो द्वारा खा लिया जाए, इसलिए ग्रशत ग्रहकारवश ग्रौर ग्रशत दयालुहृदयता के कारण उसने नियम-सा बना लिया है कि ग्रपने ग्रवकाश प्राप्त करने योग्य सेवको के लिए भी ग्राश्रय एव जीविका का प्रबन्ध करते रहना चाहिए।

परिणाम यह है कि ग्रन्य ग्रनेक कौटुम्बिक सस्थानो की भाति, उसकी जागीर भी उन पुराने भृत्यो से भारग्रस्त हो गई है जिन्हे वह निकाल नही सकता तथा उसपर एक ऐसी पुरातन शैली का बोझ है जिसे वह छोड नही सकता। उसका भवन ग्रशक्तो के एक बडे ग्रस्पताल के समान है ग्रौर ग्रपनी सम्पूर्ण विस्तृति के बावजूद वह ग्रपने निवासियो के लिए काफी नही है। एक भी ऐसा कोना-ग्रतरा नही है जो किसी न किसी निरर्थक व्यक्ति द्वारा रहने के लिए प्रयोग न किया जा रहा हो। बडे-बडे खाऊ मासभोजियो, गठियाग्रस्त पेशनरो, दुग्धालय एव मासालय के ग्रवकाश प्राप्त वीरो के झुण्ड इसकी दीवारो के ग्रास-पास मटरगश्ती करते, इसके लानो पर रेगते, इसके वृक्षो के नीचे झपकी लेते ग्रौर इसके दरवाज़ो पर पडी बेचो के ऊपर धूप सेकते दिखाई पडते है। प्रत्येक कार्यालय ग्रौर बहिर्गृह इन फालतू ग्रादमियो ग्रौर उनके कुटुम्बो से घिरा है, क्योकि वे विलक्षण रूप से उत्पादनक्षम हैं ग्रौर जब मरते है तो निश्चित रूप से

जॉन के लिए भूखे प्राणियो की व्यवस्था करने का उत्तराधिकार छोड जाते है। नष्टप्राय और गिरते हुए किसी स्तभ पर एक गेती नही चलाई जा सकती क्योकि किसी रध्र या दरार से किसी ऐसे असमर्थ वृद्ध आश्रित की भूरी मुण्डिका झट निकल पडती है जो सारी जिन्दगी जॉन के खर्चे पर जीता रहा है और कुटुम्ब के एक असमर्थ सेवक के सिर के ऊपर से छत गिराने पर दारुण शोर मचाता है। यह ऐसी याचना है कि जॉन का ईमानदार हृदय हर्गिज़ अनसुनी नही कर सकता, इसलिए जिस आदमी ने निष्ठापूर्वक सारी जिन्दगी उसका मास और पकवान खाया है, उसे इसका निश्चय है कि अपनी वृद्धावस्था मे भी उसे पाइप और प्याले का उपहार प्राप्त होगा।

उसके उपवन का एक बहुत बडा भाग अश्वभूमि मे बदल गया है। जहा उसके असमर्थ घोडे अपने जीवन के शेषाश के लिए निश्चिन्त हो चरने को छोड दिए जाते है, कृतज्ञ स्मृतियो का कैसा अच्छा उदाहरण है, जिसका अनुकरण यदि कुछ पडोसी करने लगे तो कोई उनको दोष नही दे सकता। बल्कि आगन्तुको को ये बूढे घोडे दिखलाने, उनके गुणो का बखान करने, उनकी पुरानी सेवाओ की प्रशसा करने और जिन सकटापन्न दुस्साहसो तथा कठिन कार्रवाइयो मे उन्होने उसका साथ दिया है उनकी शेखी बघारने मे उसे बडा सुख मिलता है।

अपनी कौटुम्बिक प्रथाओ और कौटुम्बिक बोझो की बडाई करने मे वह सनक की सीमा तक चला जाता है। उसकी जागीर जिप्सियो के दलो से भर गई है, फिर भी वह उनको निकाल बाहर करने की चेष्टा नही करता क्योकि वे न जाने कब से, स्मरणातीत समय से, उस स्थान मे रहते आए है और कुटुम्ब की प्रत्येक पीढी मे नियमित रूप से अनधिकार प्रवेश करते रहे है। जो बडे-बडे पेड उसके मकान को घेरे हुए है उनकी एक सूखी शाखा को भी काटने की अनुमति देना उसके लिए कठिन है, क्योकि ऐसा करने से उन कौवो को पीडा होगी जो वहा शताब्दियो से पलते आ रहे है। दरबो पर उलूको ने अधिकार जमा लिया है, किन्तु वे पुश्तैनी उल्लू है, इसलिए उन्हे छेडने की जरूरत नही है। अबाबीलो ने हर चिमनी का मुह अपने घोसलो से बन्द कर दिया है, गौरैयो ने हर कार्निस और उसके साथ बनी चित्रवल्लरी पर आसन जमा लिया है, स्तभो के इर्दगिर्द काक फडफडाते है ओर प्रत्येक वातदर्शक पर अड्डा जमाये हुए है, बूढे भूरे सिरवाले चूहे मकान के हर हिस्से मे अपने बिलो से निकल कर

दिन-दहाडे निर्विघ्न घूम रहे है । सक्षेप मे, जॉन की उन सब बातो पर श्रद्धा है जो अर्से से कुटुम्ब मे होती आई है—यहा तक कि वह बुराइयो मे भी सुधार की बात तक सुनने को तैयार नही, क्योकि वे बुराइया कुटुम्ब की बहुत पुरानी बुराइया है ।

इन सब सनको और आदतो के बुरी तरह एकत्र हो जाने के कारण वृद्ध भद्रजन की थैली बहुत-कुछ खतम हो चली है, और चूकि वह पैसे के मामले मे निश्चित समय की पाबन्दी पर गर्व करता है, और पास-पडोस मे अपनी साख बनाए रखना चाहता है, इसलिए अपने ठहरावो का पालन करने मे उसे बडी परेशानी भोगनी पडती है उसके कुटुम्ब मे जो रार और कुढन निरन्तर पैदा होती रहती है उसके कारण भी यह परेशानी और बढती गई है । उसके बच्चे विभिन्न कार्यो के लिए पाले-पोसे गए है, और वे विभिन्न ढग से सोचते है और चूकि उन्हे सदा अपने मन की बात को साफ-साफ कहने की छूट रही है, वे उसकी वर्तमान स्थिति मे भी जोरो के साथ इस सुविधा का लाभ उठाने से नही चूकते । कुछ ऐसे है जो जाति के सम्मान के लिए खडे हो जाते है । स्पष्ट है कि पुरातन सस्थान को, उसी स्थिति मे बनाए रखना पडता है, भले उसपर खर्च कुछ भी पडे । दूसरे कुछ ऐसे है जो ज्यादा समझदार है और बूढे भलेमानस से अनुरोध करते है कि वह अपने खर्च मे कमी करे और गृहस्थी का सारा कार-बार और उदार आधार पर चलाए । कभी-कभी ऐसा लगता है कि वह उनकी बात सुनने को तैयार है, किन्तु एक लडके के दुर्विनीत एव अशास्य आचरण से उनकी उपयोगी सलाह पूर्णतया विफल होती रही है । वह शोर मचानेवाला कूढमग्ज लडका है, उसकी आदते निम्नस्तर की है, और वह मदिरालयो का चक्कर काटने के लिए अपने व्यवसाय की उपेक्षा करता है, ग्रामीण क्लबो का वक्ता है, और अपने पिता के दीनतम किरायेदारो के लिए प्रमाणपुरुष है । ज्यो ही वह अपने किसी भाई को सुधार या कटौती की बात करते सुनता है, त्यो ही कूदता-फादता वहा पहुच जाता है, उन्हे बोलने नही देता और ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगता है । उसकी जबान जब एकबार चल पडती है तो कोई चीज उसे रोक नही सकती । वह कमरे मे बकवाद करता फिरता है, खर्चीली आदतो पर बूढे को धमकाता है; उसकी रुचियो और कार्यो की हसी उडाता है, इस बात पर ज़ोर देता है कि बूढे नौकरो को घर के बाहर निकाल देना चाहिए,

असमर्थ घोडो को भेडियो के आगे डाल देना चाहिए, मोटल्ले पुजारी को निकाल बाहर करना चाहिए और उसकी जगह किसी क्षेत्र-उपदेशक को रख लेना चाहिए, इतना ही नही, सम्पूर्ण कौटुम्बिक भवन को गिराकर ईंट गारे का एक सीधा-सादा घर बनाना चाहिए। वह प्रत्येक सामाजिक मनोरजन और कौटुम्बिक समारोह को गालिया बकता और जब भी कोई रईसी गाडी घर आती है तब बडबडाता हुआ मदिरालय की ओर पलायन कर जाता है। यद्यपि वह निरन्तर अपने पर्स के खाली होने की शिकायत करता रहता है परन्तु अपनी सम्पूर्ण पाकेटमनी (जेबधन) मदिरालय के समारोहो मे खर्च कर देता है और जिस मदिरा पर बैठकर अपने पिता की फिजूलखर्चियो की चर्चा करता है उसी पर दाव लगाने और शर्त बदकर पीने से नही चूकता।

बहुत आसानी से यह कल्पना की जा सकती है कि इस प्रकार आडे आने की बाते बूढे अश्वारोही वीर के ज्वलनशील स्वभाव से कितना मेल खाती होगी। बार-बार के विरोध के कारण अब वह इतना चिडचिडा हो उठा है कि कटौती या सुधार का नाम-मात्र लेना उसके और मदिरालय के इस नायक के बीच तकरार का आरम्भ कर देना है। चूकि मदिरालय का यह नायक पैतृक अनुशासन के लिए बहुत प्रबल और भारी है, और उसे लाठी-डण्डे का कोई भय नही, इसलिए उनमे अक्सर वाग्युद्ध हो जाता है, और कभी-कभी तो इतने जोर का होता है कि जॉन को अपने पुत्र टाम को अपनी मदद के लिए पुकारना पडता है। टाम अफसर है और विदेशो मे कार्य कर चुका है, इस समय घर पर ही आधी तनखाह पर रह रहा है। यह लडका गलत बात हो या सही, बूढे का साथ देने को सदा तैयार रहता है। उसे बमचख और धमाचौकडी का जीवन सबसे ज्यादा पसन्द है, आख का जरा-सा इशारा होते या सिर हिलाते वह कटार निकाल लेता है और यदि बकबकिया पैतृक अधिकार के विरुद्ध कोई काम करता है तो वह कटार उसके सिर पर घुमाने लगता है।

इन कौटुम्बिक झगडो की बात, स्वभावत बाहर भी फैल गई है और जॉन के पडोस मे कलक-चर्चा को बढाने का कारण बन गई है। ज्यो ही उसका मामला उठाया जाता है लोग बडे विवेकवान् बन जाते है और अपना सिर हिलाने लगते है। वे सब आशा करते है कि उसका मामला उतना बुरा नही है जितना लोग प्रचारित करते है। किन्तु जब किसी आदमी के अपने ही बच्चे

उसकी फिजूलखर्ची पर बडबडाने लगते है, तो बाते कुव्यवस्थित हो ही जाती है। वे समझते है कि वह ऊपर से नीचे तक रेहन हो चुका है, और निरन्तर ऋणदाता महाजनो के फेर मे पडा रहता है। गृहस्वामी खुले हाथवाला भद्रजन है, किन्तु वे समझते है कि उसने बडा खर्चीला जीवन बिताया है, उनको कभी मालूम नही हुआ कि शिकार, घुडदौड, रगरेलियो और पुरस्कार-सघर्ष से कोई लाभ हुआ हो। सक्षेप मे, मि० बुल की जमीदारी बडी अच्छी है, और बहुत समय कुटुम्ब मे चली आ रही है, किन्तु यह सब होते हुए भी उससे अच्छी कितनी ही जमीदारियो को उन लोगो ने तबाह होते देखा है।

इन सब से बुरी बात तो वह प्रभाव है जो इन आर्थिक व्यग्रताओ और पारिवारिक झगडो के कारण बेचारे मालिक पर खुद पड रहा है। पहले वह प्रसन्न, भरी आकृति और मस्त गुलाबी चेहरा लेकर उपस्थित हुआ करते थे, किन्तु पिछले दिनो तुषार-प्रताडित सेब की भाति झुर्रीदार और सकुचित हो गए है। उनका गुलाबी सुनहले कामवाला वेस्टकोट, जो समृद्धि के दिनो मे और झझा के पूर्व जलयात्रा करते समय पेट पर कसा होता था, अब उनके शरीर पर ढीला होकर झूलता दिखाई पडता है, जैसे शान्ति के समय जहाज के मुख्य पाल की दशा होती है। उनकी सब चर्म तहो बिरजिसे और सिकुडनो से भर गई है, और उनके एक समय के दृढ चरणो के दोनो छोर मुह बाये जूतो मे फस-फस जाते है।

पहले उनका तिकोना हैट सिर की एक ओर झुका होता था, हाथ का सोटा नचाते, और बीच-बीच मे जमीन पर हार्दिक धमाके के साथ उसे पटकते चलते थे, जो मिलता उसके चेहरे की ओर दृढता के साथ देखते थे, शिकार या मद्यपान-सम्बन्धी किसी गीत की कडी गुनगुनाते चलते थे। परन्तु अब अपने मे ही खोए, सिर झुकाए, सोटा बगल मे दबाए, और हाथ बिरजिस की रिक्त जेबो मे नीचे तक डाले हुए चलने है।

ईमानदार जॉनबुल की इस समय ऐसी दुर्दशा है। किन्तु इतना सब होते हुए भी इस बूढे आदमी का हृदय अब भी वैसा ही बडा और वीरभावनापूर्ण है यदि आप उसके प्रति सहानुभूति या चिन्ता की जरा भी बात करते है तो एक क्षण मे वह आग-बबूला हो जाता है; बडे ज़ोर से कहता है कि वह समस्त देश मे सबसे धनवान् और सबसे तगडा व्यक्ति है, ऐसे समय वह अपने भवन को

अलकृत करने के लिए बडी-बडी रकमे निकालने या दूसरी जमीदारी खरीदने की बात करता है, और एक अकड के साथ अपना सोटा उठाकर लाठी के दूसरे शक्तिपरीक्षण की कामना करता है ।

यद्यपि इस सबमे कुछ न कुछ सनकीपन हो सकता है, फिर भी मै स्वीकार करता हू कि मै जॉन की स्थिति को दिलचस्पी की प्रबल भावनाओ के बिना नही देख सकता । अपनी समस्त पुरानी आदतो और कठोर पूर्वाग्रहो के साथ भी वह स्वर्णिम हृदय का आदमी है । शायद वह विलक्षण रूप से उतना अच्छा न हो जितना अपने को समझता है, किन्तु उसके पडोसी उसे जिस रूप मे पेश करते है उससे दुगुना अच्छा तो जरूर है । उसके गुण खास उसी के है, वे सब सादे गृहपालित और अकृत्रिम है । उसके दोष तक उसके सुन्दर गुणो का अनूठा-पन व्यक्त करते है । उसका खर्चीलापन उसकी उदारता प्रकट करता है, उसके झगडालूपन से उसके साहस का पता लगता है, उसकी श्रद्धालुता उसके खुले मजहब की ओर सकेत करती है, उसकी अहमिता उसके गौरव का चिह्न है, और स्पष्टवादिता से उसकी सच्चाई प्रकट होती है । ये सब एक समृद्ध एव उदारचरित के अतिरेक है । अपने ही बलूत के समान वह ऊपर से खुरदरा परन्तु अन्दर से दृढ और विश्वसनीय है । इस वृक्ष के विकास और महिमा के अनु-पात से उसकी छाल मे अतिवृद्धि के लक्षण दिखाई पडते है, और अपने विस्तार एव सघनता के कारण जरा भी आधी चलते ही शाखाओ मे भयानक कराह और चरमराहट होने लगती है । उसके पुरातन पारिवारिक भवन के रूप मे कुछ न कुछ ऐसी चीज है जो अत्यधिक काव्यात्मक और चित्रात्मक है, और जबतक वह आराम से रहने योग्य रहेगा, तबतक रुचियो एव मतो के वर्तमान सघर्ष के बीच पडने पर मेरा जी कापता रहेगा । इसमे कोई सन्देह नही कि उसके कुछ परामर्शदाता अच्छे वास्तुकार है और काम के साबित हो सकते है, किन्तु मुझे भय है कि अधिकाश (परामर्शदाता) सिर्फ समतलकार है, और यदि एक बार उनकी खन्तिया इस सम्मानजनक भवन के ऊपर चली तो तबतक न रुकेगी जब तक सारी इमारत जमीदोज न हो जाए, बल्कि भय है कि शायद वे भी उसी के साथ पृथ्वी के गर्भ मे दफन न हो जाए । मै तो इतना ही चाहता हू कि जॉन की वर्तमान कठिनाइया उसे भविष्य के लिए कुछ और बुद्धि-विवेक प्रदान करे जिससे वह दूसरे आदमियो के मामलो को लेकर अपने दिमाग को परेशान करना

बन्द करे, अपने पडोसियो के कल्याण का निरर्थक कार्य छोड दे तथा ससार मे अपने डडे के सहारे शान्ति और सुख की वृद्धि की बात समाप्त कर दे। मै चाहूगा कि वह घर पर शान्ति के साथ रहे, धीरे-धीरे अपने घर की मरम्मत कराए, अपनी रुचि के अनुसार अपनी समृद्ध जमीदारी मे खेती-बाडी करे—यदि उचित समझे तो अपनी आय का सचय करे, कर सके तो अपने अशास्य बच्चो को शासित एव व्यवस्थित करे, अपनी पुरातन समृद्धि के उल्लासपूर्ण दृश्यो को पुनर्जीवित करे और अपनी पैतृक भूमि पर बहुत दिनो तक हरित, सम्मानयुक्त और आनन्दमय वृद्धावस्था का उपभोग करे।

गांव का गौरव

तव समाधि के पास न कोई वृक चीखे दौड़ा आकर,
व्याक्रोशी उलूक भी कोई वहां न फडके तम पाकर।
उग्र समीरण के झटके या प्रबल आंधियो का नर्त्तन,
यहां न हो तव कोमल मधुमय मिट्टी का करने कर्त्तन।
जैसे मधु बसन्त कर देता जगतीतल को आनन्दित,
तैसे प्रेम सदा रक्खे तेरी समाधि को आनन्दित,

—हेरिक

इग्लैण्ड के दूरस्थ अचलो के बीच, एक यात्रा मे मै एक ऐसी पगडडी पर जा पहुचा जो देश के निर्जन भाग की ओर चली गई थी। उससे चलकर एक दिन दोपहरी मे मै एक ऐसे गाव मे जा पहुचा जो सुन्दर ग्राम्य एव एकान्त स्थान पर बसा हुआ था। वहा के निवासियो मे ऐसी आदिकालीन सरलता थी जो बडे और सवारी-गाडियो के आने-जानेवाले मार्गों के किनारे बसे गावो मे नही दिखाई पडती। मैंने वही रात बिताने का निश्चय किया, और भोजन से निवृत्त होकर निकटवर्त्ती दृश्यो का आनन्द लेने के लिए बाहर निकल गया।

जैसा कि आमतौर से यात्रियो के साथ घटित होता है, मेरी चहलकदमी शीघ्र ही मुझे चर्च तक ले गई, जो गाव से कुछ दूरी पर बना हुआ था। निश्चय ही वह जिज्ञासा की वस्तु था; उसका पुरातन स्तभ पूरी तरह लताओ से घिर गया था, जिनके बीच कही-कही पुश्ते का उठा भाग, या भूरी दीवार का कोई कोना, या खुदाई का कोई अलकरण, हरित आवरण के नीचे से झाक रहा था। बडी सुहावनी सध्या थी। दिन का पूर्वभाग काला और बौछारयुक्त था, किन्तु दोपहर के बाद आसमान खुल गया था, और यद्यपि उदास बादल अब भी फैले हुए थे, किन्तु पश्चिम की ओर सोनहले आकाश का एक काफी चौडा भाग ऐसा था जहा से अस्तगत सूर्य स्रवित पत्रावली के बीच से झाक रहा था और सम्पूर्ण

प्रकृति करुण मुस्कान से प्रकाशित हो उठी थी। यह सब एक ऐसे भले ईसाई की विदा-बेला-सा लग रहा था जो ससार के पापो और दु खो पर मुस्कराता हुआ, अपने अस्तकाल की भव्यता मे भी आश्वासन दे रहा हो कि वह पुन अपनी विभूतियो के साथ उदित होगा।

मै एक आधे-धसे समाधि-प्रस्तर पर बैठ गया और जैसा कि लोग ऐसे गभीर क्षणो मे किया करते है विगत दृश्यो और पुराने मित्रो—जो दूर थे या मर चुके थे—के ध्यान मैं डूब गया। मैं ऐसी करुण कल्पनाओ के बीच गोते खाने लगा जिनमे सुख से भी अधिक मधुर कोई चीज होती है। बीच-बीच मे निकटवर्ती घण्टाघर से आती घण्टे की ध्वनि मेरे काना मे पडती थी, उसका स्वर दृश्य से एकरस था, और वह बाधा डालने की जगह मेरी भावनाओ मे बज उठता था। बहुत देर बाद मुझे खयाल आया कि यह घण्टा समाधि के किसी नवीन अधिवासी के लिए बज रहा है।

अब मैने देखा कि ग्राम्य हरीतिमा के बीच से कोई अर्थी आ रही है। वह एक वीथिका से धीरे-धीरे आ रही थी, और उसकी वक्रता के अनुसार कभी आखो से ओझल हो जाती, और कभी हरित बाडो के व्यवधान के बीच पुन दिखाई पडती—यहा तक कि वह उस स्थान से भी गुजर गई, जहा मै बैठा हुआ था। अर्थी को श्वेत वस्त्र-भूषित किशोरिकाए उठाए हुए थी, एक दूसरी लडकी जो प्राय सत्रह साल की होगी, श्वेत पुष्पो की एक माला लिए हुए आगे-आगे चल रही थी,—जो इस बात का चिह्न था कि मृतात्मा एक तरुण और अविवाहित कन्या थी। अर्थी के पीछे-पीछे उसके माता-पिता चल रहे थे। वे उच्चस्तर के किसान परिवार के सम्मानार्ह दम्पती थे। देखने से लगता था कि पिता अपनी मनोभावनाओ का दमन कर रहे है, किन्तु उनकी निश्चल आखे, कुञ्चित भौहे और गहरी रेखाओ-झुरियो-से पूर्ण आनन उस सघर्ष को प्रकट कर देने थे जो उनके अन्दर चल रहा था। उनकी पत्नी उनके कधे पर झुकी हुई थी और मा की वेदना के क्षेपकारी विस्फोटो के साथ जोर-जोर से रो रही थी।

मैं जुलूस के पीछे-पीछे चर्च मे चला गया। अर्थी चर्च-कक्ष के मध्य मे रख दी गई। जिस स्थान पर मृतात्मा ने आसन जमाया था उसके ठीक ऊपर श्वेत पुष्पो की वह माला, एक जोडी सफेद दस्ताने के साथ, टाग दी गई।

अन्त्येष्टि-सस्कार-सम्बन्धी प्रार्थना की हृदयविकम्पनकारी करुणा से सभी

परिचित है, क्योकि कौन ऐसा भाग्यवान् है जो अपने किसी प्रिय पात्र के शव के साथ उसकी समाधि तक न गया हो ? किन्तु अपनी उठती जवानी मे निर्दोषिता एव सौन्दर्य के किसी अवशेष को कब्र मे रखते समय जो प्रार्थना की जाती है उसके करुण प्रभाव का क्या कहना ? मिट्टी को कब्र मे रखते समय जब वह सरल वचन कहा गया— 'धरती धरती मे, भस्म भस्म मे, धूलि धूलि मे' (अर्थ टु अर्थ, ऐशेज टु एशेज़, डस्ट टु डस्ट) तो मृतात्मा के तरुण सगियो की आखो से अविरल अश्रु बहने लगे। अब भी लगता था कि पिता अपनी मनोभावनाओ के साथ सघर्ष कर रहे है और अपने को इस आश्वासन से शान्त कर रहे है कि जो प्रभु की गोद मे मर गया वह धन्य है। किन्तु मा तो अपनी सन्तान के विषय मे यही सोचती थी कि अपनी मधुरिमा के बीच एक फूल तोड लिया गया और बिखरा दिया गया है। राचेल की भाति वह अपनी सन्तान के लिए रो रही थी और शान्त नही हो सकती थी।

सराय मे लौटने पर मुझे मृतात्मा की सम्पूर्ण कहानी मालूम हुई। कहानी बिलकुल सीधी-सादी और ऐसी थी, जो अक्सर सुनी जाती है। वह लडकी गाव का सौन्दर्य और गौरव थी। उसके पिता कभी बडे समृद्ध कृषक थे, किन्तु इस समय परिस्थितियो के शिकार थे। यही उनकी एक मात्र सन्तान थी, और पूरी तरह घर मे ही ग्राम्य जीवन की सरलता के बीच पाली-पोसी गई थी। वह ग्राम्य-पुजारी की शिष्या थी, और उनकी लघु शिष्य-मण्डली मे सबसे प्रिय थी। वृद्ध पुजारी पैतृक सावधानी से उसे पढा रहा था। यह शिक्षण सीमित और उस वातावरण के अनुकूल था जिसमे उसे जीवन बिताना था, इसलिए उसने यही यत्न किया कि जीवन मे वह अपनी मर्यादा और स्थिति का आभूषण बनकर रहे, उसने उसे इससे ऊपर उठाने की चेष्टा नही की। माता-पिता की कोमलता और दुलार, तथा सम्पूर्ण सामान्य कार्यो से छूट ने उसमे एक ऐसी प्राकृतिक सुषमा और चरित्र की स्वच्छता पैदा कर दी थी जो उसकी देह के कोमल सौन्दर्य से मेल खाती थी। उसे देखकर लगता था मानो वह वाटिका का एक ऐसा कोमल पौधा हो जो खेत के कठोर पौधो के बीच सयोग-वश उग आया हो।

सब सगी-साथी उसके आकर्षण की श्रेष्ठता को अनुभव और अगीकार करते थे, किन्तु इसके कारण उनके मन मे कोई ईर्ष्या न थी, क्योकि उसकी

अकृत्रिम सुजनता तथा आचरण की विजयिनी दयालुता इससे भी बढी-चढी थी। सचमुच उसके बारे मे कवि का यह कथन सत्य था—

दिस इज दि प्रेटियेस्ट लोबॉर्न लैस, दैट एवर
रैन आन दि ग्रीन-स्वार्ड, नथिंग शी डज आर सीम्स
बट स्मैक्स आफ समथिंग ग्रेटर दैन हरसेल्फ,
टू नोबुल फार दिस प्लेस।

["यह निम्नजाता कन्या हरित दूर्वाभूमि पर आजतक दौडनेवाली कन्याओ मे सबसे सुन्दर है, वह जो कुछ करती या देखती है उसमे उससे भी महत्तर किसी वस्तु की गन्ध है। इतनी उदात्त है कि इस स्थान के योग्य नही है।"]

यह गाव ऐसे अलग-थलग स्थानो मे से एक था जिनमे अब भी पुरातन आग्ल प्रथाओ के कुछ चिह्न पाए जाते है। इसमे अब भी ग्रामीण त्यौहारो तथा अवकाशकालीन क्रीडा-कौतुक के लिए स्थान था। और मई के जो समारोह कभी बहुत लोकप्रिय थे, उनकी छाया अब भी यहा दिखाई पडती थी। वर्तमान पुजारी ने ही इनको प्रोत्साहित कर रखा था, क्योकि वह पुरातन प्रथाओ का प्रेमी और उन सरल ईसाइयो मे से एक था जो धरती पर आनन्द और मानव-जाति मे परस्पर सदिच्छाओं की वृद्धि करने मे ही अपने जीवन-कार्य की पूर्ति देखते है। उसके तत्त्वावधान मे हर साल ग्राम्य-हरीतिमा के केन्द्रस्थान मे मेरु-दण्ड खडा दिखाई पडता था, मई-दिवस को वह मालाओ और पताकाओ से सजाया जाता था, और पुराने युगो की भाति, एक मई की रानी नियुक्त की जाती थी, जो खेलो की अध्यक्षता करती और पुरस्कार तथा पारितोषिक प्रदान करती थी। गाव की चित्रात्मक परिस्थिति और उसके अकृत्रिम समारोहो के अनोखेपन से आकर्षित होकर अक्सर बाहर के क्षणकालिक दर्शन भी आ जाते थे। एक मई-दिवस के समारोहो मे दर्शको के बीच एक तरुण अफसर भी आ गया, जिसकी रेजीमेण्ट थोडे दिनो से पास मे ही टिकी हुई थी। इस ग्रामीण समारोह मे जो एक देशी स्वाद था उससे वह बहुत प्रभावित हुआ, किन्तु इससे भी ज्यादा प्रभाव उस पर मई की रानी के खिलते हुए सौन्दर्य का पडा। यह वही गाव की प्रिय बालिका थी जिसे फूलो का मुकुट पहिनाया गया था और जो बालि-कोपम लज्जा और आनन्द की सुन्दर द्विविधा एव हिचकिचाहट के साथ मुस्करा रही थी। उसके ग्रामीण स्वभाव की निष्कपटता के कारण युवक ने शीघ्र ही

की ओर प्रथम बार उसके हृदय ने करवट ली थी। वह मर्यादा और सम्पत्ति के क्षुद्र भेदो के बारे मे कुछ भी नही सोच पाती थी, बल्कि जिस ग्रामीण समाज की वह अभ्यस्त थी, उससे उस (प्रेमी) की बुद्धि, व्यवहार, आचरण मे जो भेद था, उसी ने उसे उसकी राय मे महत् बना दिया था। वह उसकी बाते प्रलुब्ध कानो और मौन हर्ष-भरी लज्जावनत आखो से सुनती थी, ऐसे समय उसके कपोलो पर स्फूर्ति का आवरण होता था, और यदि कभी वह प्रशसा की लज्जित दृष्टि फेकती तो उसे तुरन्त हटा लेती थी और अपनी तुलनात्मक अयोग्यता के विचार से लज्जारुण होकर एक नि श्वास ले लेती थी।

उसका प्रेमी भी उसी की भाति भावातुर था, किन्तु उसके प्रणयावेश मे निम्न स्तर की वासना भी मिली-जुली थी। उसने हलकेपन के साथ रिश्ता शुरू किया था, क्योकि उसने प्राय अपने साथी अफसरो का ग्रामीणाओ पर अधिकार करने की शेखी मारते सुना था और रसिकता की अपनी ख्याति के लिए एसा ही कुछ स्वय भी करना आवश्यक समझने लगा था। किन्तु वह तरुण भावनाओ से बहुत भरा हुआ था। उसका हृदय अब तक फिरन्तू और लम्पट जीवन से बहुत अधिक कठोर और स्वार्थी नही हो पाया था, उसने जो ज्योति-शिखा जलानी चाही थी उसी से स्वय जल उठा था, और इसके पूर्व कि वह अपनी परिस्थिति को समझ पाता, वह सचमुच प्रेम मे डूब गया।

तब वह क्या करता? बीच मे वही पुरानी बाधाए थी जो सदा ही ऐसी अविचारपूर्ण आसक्तियो मे घटित होतीं है। जीवन मे उसकी जो पद-मर्यादा [illegible] सम्बन्धो के लिए आग्रहशीलता—एक गर्वी एव अनम्य पिता के ऊपर उसकी निर्भरता—सब उसे विवाह की बात सोचने से विरत करती थीं। किन्तु जब वह इस निर्दोष बालिका की ओर देखता—जो इतनी कोमल और इतनी विश्वासशील थी, जिसके रग-ढग मे ऐसी एक पवित्रता थी, जिसके जीवन मे ऐसी एक निर्दोषता थी, जिसकी दृष्टि मे ऐसी एक विनत लज्जाशीलता थी कि कोई भी अमर्याद एव उच्छृङ्खल वासना उसके सामने ठहर न पाती थी। अपने को सुदृढ बनाने के लिए वह फैशनबाज आदमियो के हजारो निष्ठुर उदाहरणो की याद करता, और उस भावनाहीन व्यग्यमिश्रित हलकेपन के साथ, अपनी उदार भावनाओ की दीप्ति को धुधला कर देने की चेष्टा करता, जिसके साथ कि उसने उनको नारी-स्वभाव के विषय मे बाते करते सुना था परन्तु

उसका सब प्रयत्न व्यर्थ हो जाता था। जब वह लडकी के सामने जाता तो देखता कि वह अब भी कौमार्य की पवित्रता की उस रहस्यमय किन्तु शान्त मनोरमता से घिरी हुई है जिसकी पुण्यपरिधि मे कोई अपराधी विचार प्रवेश नही कर सकता।

यह स्थिति चल रही थी कि एकाएक रेजीमेण्ट के यूरोप जाने का आदेश आ गया। इससे उस युवक प्रेमी के मन मे और उलझन पैदा हो गई। कुछ समय तक तो वह अत्यन्त व्यथाजनक अनिश्चय की स्थिति मे रहा, उसे अपनी प्रेमिका से यह समाचार कहने मे हिचकिचाहट हुई—यहा तक कि प्रयाण करने का दिन सिर पर आ गया, तब विवश होकर उसने सध्याकालीन सैर के समय उसे यह सूचना दी।

लडकी को कभी वियोग की बात सूझी ही नही थी। उसका सुख-स्वप्न एकदम भग हो गया, उसने इसे एक आकस्मिक और अदम्य दुर्घटना के रूप मे ग्रहण किया, और एक बच्चे की निष्कपट सरलता के साथ रोने लगी। प्रेमी ने उसे खीचकर सीने से लगा लिया और उसके कोमल कपोलो पर बहते हुए आसुओ को चूमा। इस कार्य मे उसे प्रेमिका की ओर से कोई बाधा नही मिली, क्योकि शोक और कोमलता के ऐसे मिश्रित क्षणो मे अनुराग-भरा दुलार प्रदीप्त हो उठता है। प्रेमी स्वभावत जल्दबाज और प्रचण्ड था और जब उसने देखा कि सुन्दरी बालिका उसकी गोद मे पडी है तो एक ओर उसके ऊपर अपनी शक्ति और अधिकार के विश्वास तथा दूसरी ओर उसे सदा के लिए खो देने के भय सबने मिलकर उसकी श्रेष्ठ भावनाओ को दबा दिया, उसने साहस के साथ प्रस्ताव किया कि घर छोडकर भाग चलो और मेरे सौभाग्य का साथ दो।

वह नारी-अपहरण की कला मे अभी नवसिखुआ था, वह अपनी नीचता पर स्वय भी लज्जित था और स्पष्ट बोल न पाता था। किन्तु उसका शिकार लडकी इतनी निर्मलमना थी कि पहले तो वह उसकी बात का मतलब ही न समझ सकी कि उसे क्यो अपने गाव और अपने माता-पिता की छाव छोड देना है। किन्तु अन्त मे जब उसके प्रस्ताव का गूढार्थ उसके पवित्र मन पर चमक उठा तो उसका प्रभाव बडा विनाशकारी हुआ। वह रोई नही—उसने लानत मलामत नही शुरू की—उसने एक शब्द नही कहा, किन्तु जैसे उसने कोई विषैला नाग एकाएक देखा हो, भीत होकर पीछे हट गई। अपने प्रेमी पर

यत्रणा की ऐसी निगाह डाली जो उसके कलेजे को छेदकर अन्दर चली गई, और घोर वेदना मे अपने दोनो हाथ जोडे अपने पिता के कुटीर की ओर, मानो शरण लेने के लिए, भाग खडी हुई।

अफसर हतबुद्धि, अपमानित और अनुतप्त होकर लौट गया। पता नही उसकी भावनाओ के सघर्ष का क्या परिणाम हुआ होता, पर इसी समय रेजीमेण्ट के प्रयाण के शोरगुल ने उसका ध्यान अपनी ओर खीच लिया। नवीन दृश्यो, नवीन सुखोपभोगो, नवीन साथियो ने उनकी आत्म-निन्दा की भावना को शीघ्र ही दूर कर दिया और उसकी कोमलता का गला दबोच दिया। फिर भी छावनियो की उत्तेजना, सैनिक दलो के आमोद-प्रमोद, सेनाओ की पक्तिबद्धता यहा तक कि युद्ध के तुमुल के बीच कभी-कभी उसके विचार ग्रामीण शान्ति और सरलता के उन्ही दृश्यो पर लौट जाया करते थे,—वही सफेद कुटिया है, वही चादी के सोते की ओर जानेवाली पगडडी है, जो हाथार्न लताओ की बाड के साथ-साथ चली गई है, और उस सब के बीच उसकी भुजाओ पर झुकी वह लघु ग्रामकन्या अचेतन अनुराग-भरी आखो से देखती उसकी बाते सुन रही है।

अपने सम्पूर्ण आदर्श जगत् के चूर-चूर हो जाने के कारण बेचारी लडकी को जो चोट लगी थी, वह सचमुच बडी निर्दय चोट थी। पहले तो बेहोशियो और हिस्टीरिया के दौरो ने उसकी कोमल देह को झकझोरकर रख दिया, उसके बाद एक स्थिर और लालसायुक्त अवसाद ने उसे घेर लिया। उसने अपनी खिडकी से विदा होती सेना को प्रयाण करते देखा। उसने अपने बेवफा प्रेमी को, रणभेरियो की ध्वनि और शस्त्रो की चमक के बीच, विजयगर्व से दूर जाते देखा। प्रभातकालीन सूर्य की रश्मियो मे चमकती हुई उसकी आकृति और हवा मे लहराती उसकी कलगी पर रोती हुई आखरी नजर डाली। एक उज्ज्वल स्वप्न की भाति वह उसकी नजरो से दूर चला गया और उसे घोर अन्धकार मे छोड गया।

इसके बाद की कहानी के ब्यौरे लिखना एक घिसी-पीटी बात होगी। प्रेम की दूसरी कहानियो की भाति वे भी अवसादयुक्त है। लडकी समाज से दूर रहने लगी, और जिन स्थानो मे पहले अपने प्रेमी के साथ बहुत घूमती थी, वहा अकेली घूमती फिरती। घायल हिरनी की तरह वह रोने के लिए नीरवता

और एकान्त की खोज करती और यत्रणा के जो काटे उसके हृदय को छेद रहे थे उनका ध्यान किया करती। कभी-कभी वह गाव के चर्च की बरसाती मे सध्या को देर तक बैठी रह जाती, कभी खेतो से लौटती हुई ग्वालकन्याए सुनती कि वह कुजो के बीच डोलती हुई किसी करुण गीत की कडिया गुनगुना रही है। वह चर्च जाकर वहा पूजा-उपासना करने मे अधिकाधिक तल्लीन होती गई, जब बूढे लोग इतनी दुर्बल, फिर भी प्रखर जवानी मे उस पवित्र भगिमा के साथ, जो विषाद देह मे उभार देता है, वहा उसे आने देखते तो मानो वह कोई आध्यात्मिक वस्तु हो, उसके लिए रास्ता छोड देते थे, और उसके पीछे देखते हुए सिर हिलाते थे, मानो कह रहे हो कि यह कोई अच्छा लक्षण नही है।

उसे विश्वास हो गया था कि वह तेजी से कब्र की ओर जा रही है, किन्तु उसे वह विश्रामस्थल के रूप मे देखती थी। जिस रजतसूत्र ने उसे जीवन के साथ, अस्तित्व के साथ बाध रखा था, वह ढीला पड गया था, और सूर्य के नीचे (दुनिया मे) उसके लिए कही कोई सुख नही रह गया था। यदि कभी उसके मृदुल हृदय मे अपने प्रेमी के विरुद्ध कोई नाराजी रही भी हो तो वह अब समाप्त हो चुकी थी। वस्तुत वह वासनाओ के लिए ही अक्षम थी, और शोकाच्छन्न मृदुलता के किसी क्षण मे उसने अपने प्रेमी को सदा के लिए उससे विदाई का एक पत्र लिखकर डाल दिया था। वह अत्यन्त सरल भाषा मे लिखा गया था, किन्तु अपनी सरलता के कारण ही बडा करुण और हृदयद्रावक था उसने लिखा था कि वह मर रही है। उसने यह भी नही छिपाया कि वही इसका कारण है। उसने जो यत्रणाए भोगी थी, उन्हे भी लिख दिया, और अन्त मे सूचना दी कि जब तक वह उसे अपनी ओर से क्षमा और शुभकामनाए न भेज दे तब तक वह शान्ति के साथ मर नही सकती थी (इसीलिए पत्र लिखा है)।

धीरे-धीरे, तिल-तिल करके उसकी शक्ति घटती गई। अब वह कुटिया के बाहर नही जा पाती थी। बडी मुश्किल से लडखडाती वह खिडकी तक जाती और वहा अपनी कुर्सी के सहारे बैठा दी जाती। वहा सारे दिन बैठे रहकर भूदृश्यो को देखते रहना ही उसका एक मात्र सुख था। अब भी वह किसी से कोई शिकायत नही करती थी, न जो रोग उसके कलेजे को खा रहा था, उसका पता ही किसी को देती थी। वह कभी अपने प्रेमी का नाम तक नही लेती थी, बस अपना सिर मा की गोदी मे रखकर चुपचाप रोती रहती थी। उसके माता-

पिता अपनी आशा की इस मुरझाती कली पर गहरी चिन्ता मे डूबे हुए भी अपने मन को समझाते थे कि उसमे फिर ताजगी आ जाएगी, और जो ज्योतिर्मयी अपार्थिव अरुणिमा कभी-कभी उसके गालो पर चमक उठती है वह शायद उसके लौटते हुए स्वास्थ्य का लक्षण हो।

एक रविवार की दोपहरी मे वह इसी प्रकार माता-पिता के बीच बैठी थी, उसके हाथ उनके हाथ मे थे, गवाक्ष की जाली हटा दी गई थी, और उससे जो समीरण धीरे-धीरे आ रहा था, वह उन पुष्प-लतिकाओ की भीनी सुगन्ध ले आता था जो उसी के हाथो खिडकी के पास बाधकर लटकाई गई थी।

उसके पिता ने अभी-अभी बाइबिल का एक अध्याय पढकर समाप्त किया था, उसमे पार्थिव वस्तुओ की असारता और स्वर्ग के सुखो का उल्लेख किया गया था। इस पाठ से उसके कलेजे मे सुख और शान्ति फैल गई प्रतीत होती थी। उसकी आखे दूरस्थ ग्राम्यचर्च पर लगी हुई थी, साध्य प्रार्थना का घण्टा बज चुका था, अन्तिम ग्रामवासी बरसाती मे पहुच रहा था, और प्रत्येक वस्तु उस पावन निस्तब्धता मे डूब गई थी जो विश्रामदिवस (रविवार) की विशेषता है। उसके माता-पिता पिपासित हृदय से उसकी ओर ताक रहे थे। रोग और शोक ने, जो कुछ चेहरो को भद्दा बना देता है, उसे देवियो-जैसा सुन्दर बना दिया था। उसकी कोमल नीली आखो मे एक आसू काप रहा था। क्या वह अपने बेवफा प्रेमी की बात सोच रही थी ? या उसके विचार उस दूरस्थ चर्च-प्रागण मे घूम रहे थे जिनकी गोद मे वह शीघ्र ही सोनेवाली थी ?

सहसा टापो की ध्वनि सुनाई पडी एक अश्वारोही कुटीर की ओर सरपट चला आ रहा था। वह खिडकी के सामने घोडे से उतर पडा—बेचारी लडकी के मुह से एक हल्की आवाज निकली, और फिर वह अपनी कुर्सी मे गिर गई यह था उसका अनुतापदग्ध प्रेमी। वह लपककर घर मे आया और प्रेमिका को अपनी छाती से लगा लेने को दौडा, किन्तु उसकी अपक्षयित देह, उसके शवोपम चेहरे—ऐसा विवर्ण, फिर भी अपने विनाश मे ऐसा मधुर-सुन्दर—को देख उसका कलेजा बैठ गया, और उसने घोर यत्रणा मे अपने को उसके चरणो मे डाल दिया। वह इतनी क्षीण हो गई थी कि उठ न सकी—उसने अपने कम्पित हाथो को उसकी ओर बढाने की चेष्टा की, उसके ओठ हिले जैसे उसने कुछ कहा हो, परन्तु कोई शब्द नही निकला, उसने अनिर्वचनीय

कोमलतापूर्ण एक मुस्कान के साथ अपने प्रेमी पर दृष्टि डाली, और फिर सदा के लिए आखे मूद ली।

यह है इस ग्राम्य कहानी का ब्यौरा, जिसे मैने एकत्र किया। छोटी-सी बात है, और मै जानता हू कि उसकी सिफारिश करने लायक कोई नवीनता भी उसमे नही है। विलक्षण घटनाओ और नमक मिर्च लगी उत्तेजक कहानियो की वर्तमान अभिरुचि के सामने ये बाते घिसी-पिटी और अपदार्थ लगेगी, किन्तु उस समय उन्होने मुझे बहुत आकर्षित किया, और जो प्रभावोत्पादक अनुष्ठान मैने अभी-अभी देखा था, उसने मेरे मन पर उससे कही ज्यादा गहरा प्रभाव डाला जितना अधिक आकर्षक अनेक परिस्थितिया मुझ पर डाल सकती थी। तब से मै पुन उस स्थान पर हो आया हू, और फिर चर्च मे भी गया हू,—केवल उत्सुकता-वश नही, बल्कि अधिक अच्छे हेतु से। उस समय शिशिर की संध्या थी, वृक्ष पत्र-हीन हो रहे थे, चर्च-प्रागण नगा और शोकाच्छन्न था, और हवा सूखी घास मे से होती नीरसतापूर्वक डोल रही थी। किन्तु गाव की उस चहेती बालिका की समाधि पर सदाबहार लगा हुआ था और वेत्रदण्ड उस पर इस प्रकार झुका दिए गए थे कि समाधि का हरित भूमिखण्ड सुरक्षित रहे।

चर्च-द्वार खुला हुआ था, मैं अन्दर चला गया। अन्त्येष्टि दिवस की भाति अब भी वहा फूलो की माला और दस्ताने थे। यह सच है कि फूल कुम्हला गए थे किन्तु इस बात की पूरी सावधानी रखी गई थी कि धूल उनकी शुभ्रता को नष्ट न करने पाए। मैने ऐसे बहुतेरे चैत्य देखे है, जहा दर्शको की सहानुभूति-भावना को जाग्रत् करने मे कला ने अपनी सम्पूर्ण शक्तिया समाप्त कर दी है किन्तु मैने एक भी ऐसा स्मारक नही देखा जिसने मेरे हृदय के साथ उससे अधिक मर्मस्पर्शी ढग पर बात की हो जिससे व्यतीत निर्दोषता के इस सरल परन्तु कोमल स्मारक ने की है।

मत्स्य-वेधक

प्रकृति-सुन्दरी प्रेम-निमग्ना रसमय उस दिन लगती थी।
शक्तिमान् जीवन-रस-सरिता पौधो मे भी बहती थी।
नवरस से परिपूरित थीं मृदु आलिंगनकारी वल्लरियां,
पक्षी थे उड़ रहे साथ मे ले अपनी मजुल वल्लभिया।
सावधान कर्बुरी मत्स्य जो था अगाध जल के भीतर।
छद्मवेशिनी चारा-मक्खी को खाने आया ऊपर।
धैर्यसहित कौशलवाला मम मित्र खडा सुन्दर तट पर।
अपना कपित वश-दण्ड ले मत्स्य फसाने मे तत्पर।

—सर एच० वोटन

कहा जाता है कि बहुतेरे अभागे बच्चे राबिसन क्रूसो का इतिहास पढकर अपने घर से भाग जाते है और समुद्रयात्रा का जीवन अगीकार कर लेते है, इसी प्रकार मुझे भी सन्देह है कि वशी-डडा लिए हुए चरागाहो के निकटवर्त्ती सोतो के तट पर घूमनेवाले अनेक भद्रजनो की स्फूर्ति का कारण आइजक वाल्टन के प्रलोभनकारी पृष्ठ है। मुझे याद है कि मैने कई साल पहले उसकी पुस्तक कम्पलीट ऐंगलर (निपुण मत्स्यवेधक) अमरीका मे कुछ मित्रो की मण्डली के बीच पढी थी, और हम सब मछली मारने के नशे से भर गए थे। वर्षारम्भ हुए अधिक दिन नही हुए थे, ज्यो ही मौसम अच्छा हुआ, और वसन्त ग्रीष्म की सीमा पर द्रवित होने लगा, हम लोगो ने बसी (मछली मारने की डण्डी) अपने-अपने हाथ मे ली और देहात की ओर निकल गए—उस समय हम उसी प्रकार प्रमत्त हो रहे थे, जैसे वीरता की पुस्तके पढकर डान क्विग्ज़ाट पागल हो गया था।

हमारी पार्टी मे एक महाशय ऐसे थे जो अपने साज़-सामान के साथ डान-जैसे ही लग रहे थे क्योकि वह ऊपर से नीचे तक साहसिक यात्रा की पूरी तैयारी करके आए थे। वह चौडी किनारी का मोटे सूतवाला कोट पहिने हुए

थे, जिसमे कम-से-कम पचास जेबे तो जरूर रही होगी, खूब मजबूत जूते और चमडे का गेटर (टखने से घुटने तक का पट्टा भी पहिन रखा था, कमर की एक तरफ मछली रखने के लिए टोकरी टगी थी, वह जाल और वशी लिये हुए थे। इसके अलावा भी कई ऐसी असुविधाजनक चीजे थी जो सच्चे मत्स्यवेधक (मच्छीमार) के आयुधागार मे पाई जाती है। कार्यक्षेत्र के लिए इस प्रकार सज्जित होने के कारण देहाती लोग उसे बडे आश्चर्य के साथ देखते थे क्योकि उन्होने इस रूप मे कभी किसी मछलीमार को नही देखा था।

हमे पहला पाठ मिला हडसन की अधित्यकाओ के बीच एक पहाडी सोते के पास। मत्स्यवेध-विषयक उन युक्तियो के लिए यह एक अभागा स्थान था जिनका आविष्कार शान्त आग्ल स्रोतस्विनियो के मखमली तटो पर हुआ था। यह तो उन जगली सोतो मे से एक था, जो हमारे रूमानी निर्जनो के बीच ऐसी अदृश्य सौन्दर्य राशि की सृष्टि करते है जो चित्रात्मकता के अन्वेषक की स्केचबुक को भर देने के लिए पर्याप्त होती है। कभी-कभी वह चट्टानी श्रेणियो के ऊपर से उछलता हुआ इस प्रकार नीचे गिरता था कि वहा छोटी-छोटी (पानी की) चादरे या झालरे बन गई थी। इन झालरो पर पेडो ने अपनी चौडी सन्तुलनकारी भुजाए फैला रखी थी, और झुके हुए तटो पर लम्बे अनामी कुतृणो के ऐसे झुरमुट निकल आए थे जिनसे हीरे की बूदे टपकती रहती थी। कभी वह वन की जटिल छाया मे खड्डो के बीच चीखता और फूत्कार करता हुआ बहता था तथा उसे कल-कल नाद से भर देता था, और इस दुर्दान्त गति के बाद खुले मे ऐसा शान्त एव विनीत भाव मुह पर लिए धीरे से प्रवेश करता था जिसकी कल्पना ही की जा सकती थी—जैसे मैने किसी महामारी-सी कर्कशा गृहिणी को देखा हो जो अपने घर को कोलाहल से भर देने के बाद धीरे से दरवाजे के बाहर निकल आई हो और सारी दुनिया से मुस्कराती हुई शिष्टाचार बरत रही हो एव मधुरालाप कर रही हो।

ऐसे समय यह घुमक्कड सोता पर्वतो के बीच की हरित भूमि की छाती पर कैसी मृदुलता के साथ फिसलता बहता है। वहा की शान्ति केवल चरनेवाले आलसी चौपायो के गले मे बधी घटियो की ध्वनि या निकटवर्ती वन से आती किसी लकडी काटनेवाले की कुल्हाडी की आवाज से ही भग होती है।

जहा तक मेरा सवाल है मैं तो ऐसे सब खेलो मे बुद्धू रहा हू जिनमे धीरज

या दक्षता की आवश्यकता पडती है। मैने कभी आधे घण्टे से अधिक मत्स्यवेध का कार्य नही किया है—इतने ही समय मे मेरी भावना सन्तुष्ट हो जाती और मुझे आइज़क वाल्टन के इस कथन के सत्य पर पूरा-पूरा निश्वास हो जाता, कि मछली मारने की कला भी, कविता की तरह, जन्मजात होती है। मछली की जगह मैने ही अपने को फसा लिया, हर वृक्ष मे उलझकर टकराता फिरा, अपना चारा खो लिया, वशी तोड दी, यहा तक कि निराश होकर मैने प्रयास का ही त्याग किया और वृक्षो के नीचे आइजक को पढते हुए दिन बिता दिया। मैने अपने को यह समझाकर सन्तुष्ट कर लिया कि वस्तुत मुझे अपनी सच्ची सरलता तथा ग्रामीण भावना की आकर्षक प्रवृत्ति ने, न कि मछली मारने के उत्साह ने, ग्रसित कर लिया था। किन्तु मेरे साथी अपनी प्रतारणाओ मे कही अधिक दृढ और लगनशील थे। मै इस समय भी उन्हे अपनी आखो मे देख रहा हू कि वे सोते के किनारे-किनारे उन स्थानो का चक्कर लगा रहे है जो दिन मे दिखाई पड रहे है या जहा सोते के तट पर पौधो और झाडियो का बाहुल्य है। मै देख रहा हू कि अपनी दुर्गम शिकारगाह मे उनको आते देख बगुला खोखली-सी कूक देकर उडा जा रहा है, पहाडियो की तग घाटियो मे चक्की चलाने के लिए बनाए गए गहरे काले जलाशय के ऊपर फैली वृक्ष की सूखी टहनी पर बैठी रामचिरैया (शिकारी पक्षी) उन्हे बडे सन्देह के साथ देख रही है, पत्थर या कुदे पर धूप ले रहा कछुवा वहा से खिसक चला है, और उनके आगमन के साथ ही भयभीत दादुर सिर के बल पानी मे कूद रहा है तथा चीख-कर आस-पास के जल-जगत् को चेतावनी दे रहा है।

मुझे यह बात भी याद है कि दिन के अधिकाश भाग मे परिश्रम करके, ध्यान लगाकर और झुके रहकर भी जब हम लोगो को हमारे बढिया साधनो से कोई सफलता नही मिली, तब एक फूहड-सा देहाती लडका पहाडियो से नीचे उतरा, उसके हाथ मे किसी पेड की शाखा को तोडकर बना ली गई वशी थी, चन्द गज दोहरा डोरा था, और भगवान् झूठ न बोलाए, अकुश की जगह टेढी की हुई एक पिन थी, उसने कीचड से कीडे निकालकर उनका चारा बनाया, और आधे घण्टे के अन्दर उससे अधिक मछलिया पकडकर रख दी जितनी हमने सारे दिन मे भी नही प्राप्त की थी।

परन्तु सबसे ज्यादा याद मुझे उस भले, स्वादिष्ठ, सूखे भोजन की आ रही

है जो हमने पहाडी के एक पक्ष से निकलकर बहते विशुद्ध मृदुजल के सोते के पास, करज वृक्ष की छाया मे किया था। यह भी कि उसके खतम होने पर हमारी मण्डली का एक आदमी किस प्रकार अहीरन की छोरी के साथ आइजक वाल्टन की भेंट की बात पढकर सुना रहा है, जब कि मै घास पर लेटा हुआ बादलो के धवलपुज मे किले बना रहा हू - यहा तक कि किले बनाते-बनाते सो जाता हू। यह सब केवल आत्मश्लाघा-सा मालूम होगा, फिर भी मै इन स्मृतियो का वर्णन किए बिना नही रह सकता, जो मेरे मन पर सगीत की लय की भाति छा गई है, और एक सुखद दृश्य जिससे मैने कुछ समय पहले ही देखा है, के कारण उठ खडी हुई है—याद आ गई है।

वेल्श पहाडियो से निकलकर आलुन नाम की एक सुन्दर लघु धारा डी मे बहती है। एक दिन सुबह के वक्त मै उसके तट पर घूम रहा था कि मेरा ध्यान किनारे पर बैठे एक भुण्ड की ओर गया। निकट जाने पर मैने देखा कि उनमे एक तो महारथी मत्स्यवेधक है, और दो उसके शिष्य है। पहला था एक बूढा जिसका एक पाव काष्ठ-निर्मित था, उसके कपडो मे अनेक पर सावधानी से सिले, पैबन्द लगे थे जिनसे उसकी ऐसी गरीबी का पता लगता था, जो ईमानदारी के साथ आई हो और जिसकी रक्षा सुरुचिपूर्वक की गई हो। उसके चेहरे पर विगत तूफानो परन्तु वर्तमान मे सुखद मौसम के चिह्न थे। उसकी भुरिया एक अभ्यस्त मुस्कान मे बदल गई थी, उसके लौह-धूसर केश उसके कानो तक लटके हुए थे और उसमे उस दार्शनिक की प्रसन्न मुद्रा थी जो दुनिया को उसी रूप मे लेता है जिस रूप मे वह प्राप्त है। उसका एक साथी गूदडधारी था और उसकी दृष्टि पक्के आखेटचोर की छद्मदृष्टि थी। मै विश्वासपूर्वक कह सकता हू कि वह घोर से घोर अधेरी रात मे भी पास-पडोस के किसी भी भद्र-जन के मत्स्य-जलाशय से चोरी कर ले जा सकता था। दूसरा लम्बा देहाती लडका था, आलसी मुद्रा वाला था और उसमे एक ग्रामीण सौन्दर्य था। बूढा अभी-अभी मारी हुई कर्बुरी मछली के उदर की जाच कर रहा था। इससे वह यह पता लगाना चाहता था कि कौन-से कीडे चारे के रूप मे उपयुक्त है। वह अपने साथियो को इस विषय पर सीख दे रहा था, जिसे वे बडे ही आदर भाव से सुन रहे थे। जब से मैने आइजक वाल्टन की पुस्तक पढी थी तब से सभी मछलीमार बन्धुओ के प्रति मेरे मन मे सद्भावना जाग्रत् हो गई थी। वह

कहता है कि वे सब कोमल, मधुर तथा शान्तिमय भावना वाले होते है । उसके बाद जब से मैने 'वशी से मछली का शिकार' नाम की पुस्तिका पढी है तब से उनके प्रति मेरे मन मे आदर का भाव बढ गया है । उसमे कहा गया है— भलीभाति याद रखो कि अपने मनोरजन के लिए जाते समय यदि तुम किसी आदमी का फाटक खोलते हो तो उसे बन्द करना न भूलो । और इस कौशल का उपयोग तुम प्रलोभन मे पैसा बटोरने मात्र के लिए न करो, बल्कि मुख्यत अपनी सान्त्वना के लिए, और अपने शरीर के, विशेषत मन के, स्वास्थ्य के लिए करो ।

मुझे लगा कि जो कुछ मैंने पढा था उसका दृष्टान्त-समर्थन मैं उस उस्ताद मत्स्यवेधक मे पा सकता हू, और उसकी नजरो मे एक ऐसी प्रसन्न सन्तुष्टि थी जिसने मुझे उसकी ओर आकर्षित कर दिया । जिस दृढता के साथ वह सोते के एक भाग से दूसरे भाग मे जाकर शिकार करता था उसकी प्रशसा किए बिना मैं नही रह सकता । वह वशी को हवा मे उछालता और इस प्रकार उसे ज़मीन पर घिसटने या झाडियो मे फसने का मौका दिए बिना अपना चारा एक विशेष स्थान पर फेकता । कभी वह उसे धीरे से तीव्र उतार पर छोडता, कभी उन अधेरे गड्ढो मे से किसी एक मे छोडता जो किसी झूलते तने या मुडी जडो मे बन जाते है और जिनमे बडे मत्स्य कभी-कभी छिप जाते है । इसके साथ-साथ वह अपने दोनो शिष्यो को प्रशिक्षण भी देता जाता था, उन्हे दिखाता था कि उन्हे दण्ड को किस तरह पकडना चाहिए, चारे को किस तरह बाधना चाहिए और उन्हे सोते की सतह पर किस तरह नचाना चाहिए । इस दृश्य को देखकर मुझे अपने शिष्य के प्रति साधु पिसकेटर के उपदेश याद आ गए । उक्त स्थान के चतुर्दिक् का अचल गोचरभूमि जैसा था, जिसका वर्णन करने का वाल्टन को बहुत शौक है । यह गेसफर्ड की सुन्दर घाटी के समीपवर्ती चेशायर के विशाल मैदान का एक भाग था, यही लघु वेल्श पहाडिया नूतन, वृद्धिशील शाद्वल भूखण्डो के बीच से सिर उठाती है । जैसा कि उसकी पुस्तक मे वर्णित है, यह दिन भी मधुर एव सूर्यकिरणालोकित था, हा बीच-बीच मे हलकी फुहार पड जाती थी जिसके कारण सारी धरती पर हीरक-कण बिछ जाते थे ।

मैं उस बूढे मत्स्यवेधक से शीघ्र ही बातचीत मे डूब गया, उससे मेरा ऐसा मनोरजन हुआ कि उसकी कला मे शिक्षा ग्रहण करने के बहाने मैं सारे दिन

उसके साथ लगा रहा। उसके साथ मै सोते के तटो पर घूमता और उसकी बाते सुनता रहा। हर्षोत्फुल्ल वृद्धावस्था की सम्पूर्ण सरल वाचालता उसमे थी, जिसके कारण वह अपनी बातें बताता जाता था, फिर मत्स्य-वेधन की अपनी योग्यता प्रदर्शित करने का एक अवसर मिल जाने के कारण वह कुछ फूल भी गया था, क्योकि कौन ऐसा है जो कभी-कभी आचार्य बनने को उत्सुक न हो जाता हो ?

अपने समय मे वह भी बडा सैलानी था, और अपनी जवानी मे कई साल अमरीका, विशेषत सवन्नाह, मे रह चुका था। वही उसने व्यवसाय मे प्रवेश किया किन्तु अपने भागीदार की नासमझी से चौपट हो गया था। उसके बाद उसने जीवन मे कितने ही चढाव-उतार देखे, फिर जलसेना मे सम्मिलित हो गया। वहा कैम्परडाउन के युद्ध मे तोप के एक गोले से उसकी टाग उड गई, किन्तु यह दुर्घटना उसके लिए वरदान सिद्ध हुई क्योकि इसके कारण उसे पेशन मिल गई। थोडी सी पैतृक सम्पत्ति भी थी। दोनो से लगभग ४० पौण्ड की आय उसे हो जाती थी। वह अपने देश के गाव मे चला गया और वहा शान्ति एव स्वतन्त्रता के साथ रहने लगा और शेष जीवन मत्स्य-वेध की भव्यकला मे लगा दिया।

मुझे ज्ञात हुआ कि उसने आइजक वाल्टन को बडे ध्यान से पढा है और उसकी सरल स्पष्टता तथा विनोदशीलता को भी अपने जीवन मे ग्रहण किया है। यद्यपि वह भाग्यचक्र से ससार मे बहुत दुख उठा चुका था किन्तु उसे सन्तोष था कि स्वय अपने आप मे ससार भला और सुन्दर है। यद्यपि विभिन्न देशो मे उसके साथ वैसा ही बुरा व्यवहार हुआ था जैसे कोई भेड हर कटीली झाडी द्वारा क्षत-विक्षत हुई हो, फिर भी वह प्रत्येक देश एव जाति के विषय मे उत्साह और दयालुता के साथ बात करता था, जैसे उसे केवल गुणो को ही देखने की आदत हो। तब मेरी जितने भी आदमियो से भेट हुई थी उनमे वही एक ऐसा आदमी था जो अमरीका मे आकर भी अभागा ही रह गया था, पर जिसमे इतनी सच्चाई और उदारता थी कि इस असफलता मे उसने अपनी ही गलती स्वीकार की और देश को अभिशाप नही दिया। जो लडका उससे शिक्षा ग्रहण कर रहा था, एक मुटल्ली वृद्धा विधवा का पुत्र और उत्तराधिकारी था। विधवा गाव के सराय की मालकिन थी। लडके से उसे काफी आशा थी गाव के बेकार भद्रजन उसे बहुत चाहते थे। शायद अपनी देखरेख मे उसे रखने

मे इस बूढे आदमी की दृष्टि यह भी रही होगी कि उसे मधुशाला मे विशेष सुविधाजनक स्थान मिलता रहेगा और कभी-कभी 'एल' मदिरा का एकाध प्याला मुफ्त मिल जाया करेगा ।

यदि हम मत्स्य-वेधको की भाति मछली मारने मे कीडो-मकोडो के साथ की जानेवाली निष्ठुरताओ और उत्पीडनो को भूल सके, तो मत्स्यकला मे निश्चय ही कुछ ऐसा है जो जीवन मे शिष्टता और मन मे पवित्र भव्यता की सृष्टि करता है । अग्रेज अपने मनोरजन मे भी वडे व्यवस्थित होते है, वे खेल-कूदवालो (स्पोर्ट्समेन) मे सबसे ज्यादा वैज्ञानिक है इसलिए उन्होने मत्स्य-वेध के भी पूरे नियम और प्रणाली की रचना की है । और सचमुच यह मनो-रजन इग्लैण्ड की मृदु एव परम समृद्ध दृश्यावली के अनुकूल भी है क्योकि वहा प्रत्येक विषमता, प्रत्येक रूक्षता भूदृश्यो के कारण कोमल पड जाती है । इस सुन्दर देश की छाती पर जो निर्मल स्रोतस्विनिया रजतशिराओ की भाति दौडती है, उनके किनारे-किनारे घूमना कितना सुखद है । वे आपको कितने लघु गृह दृश्यो के बीच मे ले जाती है—कही वे अलकृत मैदानो के बीच बहती है, कभी ऐसी समृद्ध गोचर भूमियो से उमडती हुई गुजरती है जहा नवजात हरीतिमा मधुगधवाही फूलो से अठखेलिया करती है, कभी वे गावो एव पुरवो के पास से बहती है और फिर बडी अदा के साथ छाया मे विश्राम करने चली जाती है । प्रकृति की मधुरिमा और भव्यता, तथा (मत्स्य-वेध) कला मे अपेक्षित शान्त चौकसी, के कारण मन क्रमश चिन्तन मे डूब जाता है जिसमे जब-तब किसी पक्षी के गान, कृषक की दूर से आने वाली सीटी, या शान्त जल से उछल पडने और काचोपम जलस्तर पर पारदर्शक रूप से तैरती मछली के कारण सुखद बाधा उपस्थित होती है । आइजक वाल्टन कहता है—"जब मुझे चीज (मछली) मिल जाएगी, मै सन्तुष्ट हो जाऊगा और सर्वशक्तिमान् ईश्वर की शक्ति, ज्ञान और सर्वपालकता के प्रति हमारे विश्वास मे वृद्धि हो जाएगी, तब मैं किसी प्रवहमान सोते के हरित तटो की सैर करूगा, वहा कमलिनियो की शोभा देखूगा, किसी बात की चिन्ता न करूगा, कितने अन्य लघु प्राणी न केवल प्रकृति-स्वामी प्रभु ने कृपापूर्वक पैदा किए है बल्कि वह उनको आहार भी देता है (यद्यपि मनुष्य नही जानता, कि कैसे देता है), यह जानकर हम उस पर विश्वास कर सकते है ।"

यहा मैं मत्स्यकला के एक पुरातन आचार्य की कविता उद्धृत करने का लोभ सवरण नही कर सकता, जिसमे यही निर्दोष और सुखद भावना भरी हुई है—

लेट मी लिव हार्मलेसली ऐण्ड नियर दि ब्रिक,
आफ ट्रेण्ट आर ऐवन हैव ए ड्वेलिंग-प्लेस,
व्हेयर आई मे सी माई क्विल, आर कार्क, डाउन सिक,
विद ईगर बाइट आफ पाइक, आर ब्लीक, आर डेस,
ऐण्ड आॅन दि वर्ल्ड ऐण्ड माई क्रियेटर थिंक,
व्हाइलस्ट सम मेन स्ट्राइव इल-गाटन गुड्स ट' इम्ब्रेस,
ऐण्ड अदर्स स्पेण्ड देयर टाइम इन बेस एक्सेस
आफ वाइन, आर वर्स, इन वार, आर वाण्टननेस ।

लेट देम दैट विल, दीज पास्टाइम्स स्टिल परसू,
ऐण्ड आन सच प्लीजिंग फैंसीज फीड देयर फिल,
सो आई दि फील्ड्स ऐण्ड मीडोज ग्रीन मे व्यू,
ऐण्ड डेली बाई फ्रेश रिवर वाक ऐट विल,
एमग दि डेसीज ऐण्ड दि वायलेट्स ब्लू,
रेड ह्यासिथ ऐण्ड येलो डैफोडिल ।

— जे० डेवर्स

(अर्थात् "मुझे किसी की हानि किये बिना ट्रेण्ट या ऐवन नदियो के तट पर रहने दो । यही मेरा एक घर हो जहा मै अपने पक्षदण्ड या कार्कदण्ड को पानी मे डूबते और पाइक, ब्लीक या डेस मछलियो को फसाते देखू । और दूसरे कुछ लोग बुरे कार्यों से प्राप्त सामग्रियो को छाती से चिपटाने की चेष्टा करते है, तथा दूसरे कुछ निम्नस्तर के असयमो—मद्यपान, या उससे भी बुरे कार्य युद्ध या विनाश मे अपना समय व्यतीत करते है, तब मै ससार और अपने निर्माता के बारे मे सोचू । जो चाहते हो, वे अब भी अपने इस खेल को जारी रखे, या मनोरजक कल्पनाओ से अपना पेट भर ले । परन्तु मै हरे मैदानो एव खेतो को देखा करू, और नवीन सरिता के तट पर मनमाना घूमू—गुलबहार, वायलेट, रक्तिम ह्यासिथ और पीत डैफोडिल पुष्प-पादपो के बीच ।")

बूढे मछलीमार से विदा होते समय, मैने उसके घर का पता पूछ लिया था, और जब चन्द दिनो की यात्रा के बाद मुझे मालूम हुआ कि उसके गाव के निकट हू, तो मैं पता लगाकर वहा पहुच गया। मैने देखा कि वहा वह एक कुटिया मे रहता है, जिसमे केवल एक कमरा है। किन्तु उसका ढग और व्यवस्था इस प्रकार की थी कि आश्चर्य होता था। यह कुटिया गाव के एक छोर पर, सडक से कुछ हटकर, हरित तट पर स्थित थी। इसके सामने एक छोटी वाटिका थी, जिसमे ज्यादातर भोजनालय मे काम आने लायक मसालो के पौधे थे, कुछ फूलो के पौधे भी थे। कुटीर के अग्रभाग पर माधवीलता फैली हुई थी और चोटी पर वातदर्शक के रूप मे एक जलयान लगा था। अन्तरग भाग जहाज़ी शैली मे सजा हुआ था, क्योकि सारी सुख-सुविधा उसे लडाकू जहाज के डेक की बदौलत ही प्राप्त हुई थी। छत से एक हिडोला लटक रहा था, जो दिन के समय इस तरह हटाकर रख दिया जाता था कि बहुत थोडी जगह ले। कमरे के बीच मे एक जहाज लटक रहा था, जिसे उसी ने बनाया था। कमरे मे २-३ कुर्सिया, एक टेबुल, एक समुद्री सन्दूक—बस यही मुख्य फर्नीचर थे। दीवार पर समुद्री वीरगीत तथा समुद्री युद्धो के चित्र टगे हुए थे जिनके बीच कैम्परडाउन के युद्ध का चित्र प्रमुख स्थान पर लगाया गया था। दीवार के आले पर समुद्री सीपिया सजी हुई थी। उसके ऊपर एक पादयत्र लटक रहा था जिसके अगल-बगल अत्यन्त कटुदर्शन दो जलसेनापतियो के काष्ठचित्र थे। मछली के शिकार के औजार बडी सावधानी से काटो के सहारे टगे थे। एक आले पर उसका पुस्तकालय था, जिसमे मत्स्यवेध पर एक पुस्तक, कनवैस आवरण-युक्त एक बाइबिल, समुद्री यात्रा-सम्बन्धी एक-दो पुस्तके, समुद्री जन्त्री और गानो की एक पुस्तक थी।

उसके परिवार मे बस एक आखवाली बडी काली बिल्ली, और एक तोता था। यह तोता उसी ने किसी समुद्री यात्रा मे पकडकर पाल लिया था और उसे खुद ही सिखाया-पढाया था। वह नौ-अधिकारियो की भारी आवाज मे अनेक समुद्री वाक्य बोलता था। इस कुटिया को देखकर मुझे राबिसन क्रूसो की कुटिया याद आ गई। हर चीज़ कायदे से, साफ-सुथरे ढग पर रखी गई थी और इस व्यवस्था मे युद्धपोत की नियमितता थी। उसने बताया कि वह हर रोज सुबह इस डेक को साफ करता है और दोनो समय के आहारो के बीच भी उसे बुहारता है।

मैने उसे अपने दरवाजे के सामने सध्या की मृदुल धूप मे बेच पर बैठे तम्बाकू पीते हुए पाया। उसकी बिल्ली शान्तभाव से देहरी पर बैठी घुरघुरा रही थी और तोता अपने पिजडे के मध्यभाग मे लटके किसी लोहे के छल्ले मे होनेवाली विचित्र वृद्धि का वर्णन कर रहा था। सारे दिन वह मछली का शिकार करता रहा था, और उसने अपने शिकार का वर्णन इतनी तफसील के साथ सुनाया जैसे कोई सेनापति किसी लडाई का वर्णन कर रहा हो। उसने इसका वर्णन विशेष रूप से किया कि कैसे उसने एक बडा ट्राउट मत्स्य फसाया। उसके शिकार मे उसे अपनी सारी योग्यता और सजगता लगा देनी पडी थी। यह मत्स्य उसने विजयोपहार रूप मे सराय की मेरी मेजवान के पास भेज दिया था।

प्रसन्न एव सन्तुष्ट वृद्धावस्था को देखने मे कैसा सुख है! इसके समान एक गरीब आदमी को, जीवन-भर तूफान के बीच झूलने के बाद, जीवन की सध्या मे सुन्दर, शान्त आवास मे सुरक्षित रूप से बैठे देखने मे कैसा आनन्द है! वैसे उसका सुख, स्वय उसके अन्दर से उत्पन्न हुआ था, और बाह्य परिस्थितियो पर निर्भर नही था, क्योकि उसने ऐसा अक्षय सुन्दर-स्वभाव पाया था, जो ईश्वर की सबसे मूल्यवान् देन है, जो चिन्तन के क्षुब्धसागर पर अपने को तैल की भाति फैला देता है और बुरे से बुरे मौसम मे भी मानस को स्निग्ध और एक-रस रखता है।

उसके बारे मे और ज्यादा पता लगाने पर मालूम हुआ कि वह सारे गाव का चहेता है और मदिरालय का आप्तपुरुष है, जहा वह देहातियो को अपने गीतो से खुश करता है और विचित्र देशो, जलयान-ध्वस तथा समुद्री युद्धो की कथाए सुना-सुनाकर उन्हे चकित कर दिया करता है। पास-पडोस के खिलाडी और शिकारी उसकी बडी इज्जत करते है, उसने उनमे से कई को मछली का शिकार करना सिखाया है। वे लोग बडे सम्मान से अपने साथ भोजन करने के लिए उसे बुलाया करते है। उसके जीवन की सम्पूर्ण गति ही शान्त और आपत्तिरहित रही है, क्योकि मौसम और ऋतु के अनुकूल रहने पर वह मुख्यतया निकटवर्ती सोतो के आस-पास बीतती रही है, और मौसम के प्रतिकूल रहने पर वह घर पर ही बैठकर अपने सरक्षको या शिष्यो के लिए वशी, जाल इत्यादि बनाने मे अपने समय का उपयोग करता रहा है।

रविवार को वह नियमित रूप से चर्च जाता है, यद्यपि उपदेश के बीच प्राय सोता रहता है। उसका विशेष अनुरोध है कि मरने पर उसे उस हरे स्थान पर दफनाया जाए जो उसे चर्च मे बैठे अपनी जगह से दिखाई पडता है, जिसे उसने बचपन से ही निश्चित कर रखा है और जिसे घर से दूर रहने पर, क्षुब्ध-सागर तल पर मछलियो का आहार बन जाने के खतरे के बीच, भी सोचता रहा है—इसी स्थान पर उसके माता-पिता भी दफनाये गए है।

और अब मै समाप्त करता हू, क्योकि मुझे भय है कि मेरे पाठक ऊब रहे होगे किन्तु मै इस मत्स्यवेधी बन्धु का चित्रण किए बिना नही रह सकता था, जिसने इस विद्या के सिद्धान्तो के प्रति मुझमे इतना प्रेम पैदा किया, यद्यपि मैं उसकी कला की निपुणता कभी प्राप्त न कर सकूगा। मै इस शब्दचित्र को ईमानदार आइजक वाल्टन के शब्दो के साथ समाप्त करता हू जिनमे उसने मेरे पाठको पर प्रभु की कृपा के लिए, पुण्य जीवन के समस्त सच्चे प्रेमियो के लिए, जो उसकी पूर्वप्रबन्ध की कृपा मे विश्वास करके शान्त भाव से, मत्स्यवेध के लिए जाने है, प्रार्थना की है।

निद्रालु खोह की कहानी

स्वर्गीय डीडरिख निकरबोकर के कागजो मे प्राप्त

ए प्लीजिग लैण्ड ग्राफ ड्राउजी हेड इट वाज,
ग्राफ ड्रीम्स दैट वेव बिफोर दि हाफ-शट आई,
ऐण्ड ग्राफ गे कैसिल्स इन दि क्लाउड्स दैट पास,
फोर एवर फ्लशिग राउण्ड ए समर स्काई

—कैमिल ग्राफ इण्डोलेस

तन्द्रिल मिर का वह सुखद देश,
ग्रधमुदे नयन पर नर्तित स्वप्नो से पूरित ।
गरमी के नभ मे प्रवहमान घन-मध्य जहां,
बनते सुख के गढ मधुर कल्पना मे झकृत ।।

—निठल्लेपन का गढ

उस विस्तृत दर्रे की गोद मे, जो हडसन के पूर्वीय तट को एक वक्ररेखा से विभाजित करता है, एक छोटा-सा व्यापारिक कस्बा या ग्रामीण बन्दरगाह है जिसे कुछ लोग ग्रीसबर्ग कहते है, किन्तु ग्राम तौर से, ग्रौर उचित ही, वह 'टैरी टाउन' (ग्रटकाऊ नगर) के नाम से विख्यात है। इस स्थान के पास नदी की धारा बहुत चौडी हो गई है ग्रौर इस चौडी धारा को पुराने डच नौयात्री 'टप्पन जी' के नाम से पुकारते थे, यहा जहाज की गति धीमी कर देते थे ग्रौर उसे पार करते समय रक्षा के लिए सत निकोलस से प्रार्थना करते थे। कहा जाता है कि यह टैरी टाउन नाम भी पुराने समय मे निकटवर्त्ती देहात की भली गृहस्थ पत्नियो ने इसलिए रखा था कि जब बाजार के दिन उनके मर्द वहा जाते थे तो

गाव की सराय मे रुक जाने की सुदृढ नैसर्गिक प्रवृत्ति उनमे उमड पडती थी। जो भी हो, मै किसी बात को तथ्य के रूप मे मानने के लिए जोर नही देता किन्तु कथा को निश्चित और प्रामाणिक बनाने के लिए इन बातो का उल्लेख करता हू। इस गाव से थोडी ही दूर, शायद दो मील पर, एक छोटी-सी घाटी अथवा ऊची पहाडियो के बीच गर्त्त (गड्ढे)-जैसा भूखण्ड है, जो ससार के अत्यन्त निर्जन स्थानो मे से एक है। इसके बीच से छोटा-सा एक सोता बहता है, जिससे बस इतनी ही कलकल ध्वनि होती है कि आदमी तन्द्रिल हो उठे। वहा की एकरस शान्ति और नीरवता को बस कभी-कभी बटेर की ध्वनि या किसी काष्ठकूट (कठफोडवा) का कट-कट शब्द ही भग कर पाता है।

मुझे याद आता है कि जब मै किशोर था, तब गिलहरी का प्रथम शिकार मैने लम्बे अखरोट वृक्षो के उस उपवन मे किया था जो घाटी के एक पक्ष को छाया से ढके हुए है। मै तो वहा दोपहरी मे, जब सम्पूर्ण प्रकृति विलक्षण रूप से शान्त रहती है, पहुचा था और अपनी ही बन्दूक की आवाज़ से, जिसने आस-पास की शान्त नीरवता को भग कर दिया था, और क्रुद्ध प्रतिध्वनियो के रूप मे प्रलम्वित हो उठी थी, चौक पडा था। यदि मेरे मन मे कभी ऐसे विश्राम-स्थल की कामना अकुरित हो जहा मै ससार एव उसकी व्यग्रताओ से दूर जाकर विक्षुब्ध जीवन का शेष भाग चुपचाप बिता देने का सपना देख सकू, तो मैं नही जानता कि इस नन्ही घाटी से ज्यादा अच्छा स्थान कोई दूसरा हो सकता है।

इस स्थान की ऐसी मदिर शान्ति और यहा के निवासियो (जो मूल डच उपनिवेशियो के वशज है) के विलक्षण स्वभाव के कारण ही यह विलग्न द्रोणी स्लीपी हालो या निद्रालु खोह के नाम से विख्यात है और सम्पूर्ण निकटवर्त्ती अचल के निवासी यहा के अनगढ लोगो को 'स्लीपी हालो ब्वाएज' (निद्रालु खोह मानुष) कहते है। इस भूमि पर एक तन्द्रिल, स्वप्निल प्रभाव फैला हुआ जान पडता है, जो इसके वातावरण तक मे प्रविष्ट हो गया है। कुछ कहते है कि उपनिवेशी-करण के प्रारम्भिक दिनो मे मृत एक उच्च जर्मन डाक्टर ने इस स्थान को भुतहा बना रखा है, दूसरो का कहना है कि मास्टर हेड्रिक हडसन द्वारा इस देश का पता लगाये जाने के पहले अपने कबीले का प्रवक्ता या ओझा एक बूढा इण्डियन सरदार यहा ऐन्द्रजालिक समारोह किया करता था। इतना निश्चित है कि यह स्थान अब भी किसी मोहिनी शक्ति के प्रभाव मे है, जो अच्छे लोगो

के मन को भी अभिभूत किए हुए है और जिसके कारण वे निरन्तर दिवास्वप्न मे डूबे हुए चलते-फिरते है। उनमे हर तरह के विचित्र विश्वास प्रचलित है, उनको तन्मय अचेतनता के दौरे होते है, और तरह-तरह की चीजे दिखाई पडती है, वातावरण मे उन्हे गाने और आवाजे सुनाई देती है। सारा अचल स्थानीय कथाओ, भुतहे स्थानो और धूमिल अन्धविश्वासो से पूर्ण है, देश के दूसरे किसी भाग की अपेक्षा इस घाटी मे प्रायः अधिक तारे टूटते और उल्काए चमकती है, और भय तथा दु स्वप्न ने सारी कलाओ के साथ इसे अपनी प्रिय क्रीडाभूमि बना रखा है।

किन्तु जो प्रभावी मृतात्मा इस अभिचारित अचल मे घूमती फिरती है और जो सब हवाई शक्तियो का सेनापति जान पडती है, वह है घोडे पर बैठी एक शीर्षहीन आकृति का आभास या छलावा। कुछ लोग कहते है कि यह एक हेसियन सैनिक की प्रेतात्मा है जिसका सिर क्रान्तिकारी युद्ध के समय किसी बेनाम लडाई मे तोप के गोले से उड गया था, और जो तबसे यहा के लोगो को रात के अन्धकार मे इस तरह दौडता दिखाई पडता है मानो वायु के पखो पर सवार हो। उसका भ्रमण घाटी तक ही सीमित नही है, बल्कि वह कभी-कभी निकटवर्त्ती मार्गों, मुख्यत थोडी दूर पर स्थित चर्च के पास तक, भी जाता दिखाई पडता है। यहा तक कि इन भागो के कुछ अत्यन्त प्रामाणिक इतिहासकार भी, जो इस प्रेत के विषय मे सावधानी के साथ तथ्यो का सकलन और जाच करते रहे है, कहते है कि चूकि इस सैनिक का शरीर उस चर्च के आगन मे दफनाया गया था, इसलिए उसकी प्रेतात्मा हर रात को अपने सिर की खोज मे युद्ध स्थान तक अश्वारोहण किया करती है, और कभी-कभी निशीथकालीन आधी के समान तेज चाल से जो वह खोह से गुजरता है उसका कारण यह है कि जब देर हो जाती है तो उसे दिन निकलने के पहले ही चर्च प्रागण की अपनी समाधि मे पहुच जाने की उतावली रहती है।

यह है सामान्य आशा इस पौराणिक अन्ध विश्वास की, जिसने उस छाया-ग्रस्त अचल मे अनेक अद्भुत कथाओ के लिए सामग्री प्रस्तुत की है, और यह प्रेतात्मा सम्पूर्ण देहात के अग्निकुण्डो के निकट बैठने वाली मण्डलियो मे 'निद्रालु खोह के सिर कटे घुडसवार' के नाम से विख्यात है।

आश्चर्य की बात तो यह है कि मैने जिस स्वप्निल प्रवृत्ति का उल्लेख किया

है वह इस घाटी के मूल निवासियो तक ही सीमित नही है बल्कि जो कोई भी वहा आकर रहता है उसमे भी वह उसके अज्ञान मे प्रविष्ट हो जाती है। उस निद्रालु अचल मे प्रवेश करने के पूर्व वे चाहे जितने जाग्रत् एव सावधान रहे हो, इतना निश्चित है कि थोडे ही समय मे वे वहा के वातावरण के मायावी प्रभाव से अभिभूत हो उठेगे, और कल्पनाशील होने, स्वप्न देखने और आभासो एव छायाओ का दर्शन करने लगेगे।

मैं समस्त सभव स्तुति के साथ इस शान्त स्थान का उल्लेख कर रहा हू, क्योकि न्यूयार्क के महान् राज्य की गोद मे जहा-तहा पाई जानेवाली ऐसी ही एकान्त डच उपत्यकाओ मे जनसख्या, सामाजिक चलन तथा प्रथाए ज्यो की त्यो स्थिर है, इस अशान्त देश के अन्य भागो मे प्रव्रजन तथा सुधार की महती धाराए निरन्तर जो परिवर्तन करती जा रही है उनकी ओर यहा किसी का ध्यान नही जाता। ये तो शान्त, स्थिर जल के उन लघु गड्ढो की भाति है जो तीव्र धारा के किनारो पर बन जाते है और जहा हम तिनको एव बुलबुलो को चुपचाप जल पर स्थित देखते है या फिर गुजरती धारा के वेग से अबाधित अपने नकली आश्रयस्थल-बन्दरगाह—मे धीरे-धीरे चक्कर लगाते पाते है। यद्यपि निद्रालु खोह की तन्द्रिल छाया मे चक्रमण किए हुए मुझे कितने ही वर्ष बीत गए है, फिर भी मुझे विश्वास है कि अब भी वहा हमे वही वृक्ष, और वही परिवार उसकी छायामयी गोद मे फूलते-फलते मिलेगे।

अमरीकी इतिहास के एक व्यतीत युग मे, समझ लीजिए तीस साल पहले, प्रकृति के इस निभृत स्थान मे ईछाबोड क्रेन नाम का एक योग्य व्यक्ति रहता था और पास-पडोस के बच्चो को शिक्षा देने के विचार से 'निद्रालु खोह' मे आया था। मूलत वह कनेक्टीकट राज्य का निवासी था। यह राज्य यूनियन-सघ को दिमाग के नेता और वन के लिए पथदर्शक प्रदान करता है और हर साल अपने यहा से सीमाचलीय लकडहारो एव देहाती स्कूल मास्टरो के दल के दल भेजता है। क्रेन (इसका अर्थ सारस की भाति लम्बा भी होता है) नाम उसके शरीर को देखकर अनुचित नही मालूम पडता था। वह लम्बा परन्तु बहुत ही दुबला था, उसके कधे सकरे थे, हाथ-पैर लम्बे थे, हाथ उसके आस्तीन से मील-भर आगे निकले मालूम पडते थे, पाव ऐसे जो बेलचे का काम दे सकते थे। सारे अग ऐसे मानो एक-दूसरे से ढीले-ढाले जोड दिए गए हो।

सिर छोटा था और सिरे पर चपटा हो गया था, कान बहुत बडे-बडे थे, बडी-बडी हरी काचवत् (चमकीली) आखे थी, सुग्गे जैसी लम्बी नाक थी, जो उसके तकुए-जैसे कण्ठ पर जुडे वातदर्शक के समान लगती थी और बताती थी कि हवा किधर बह रही है। किसी ऐसे दिन जब तेज हवा चल रही हो, पहाडी के पार्श्व चित्र पर अपने चारो ओर उडते हुए वस्त्रो के साथ वह ऐसा लगता था, मानो दुष्काल की आत्मा ही धरती पर उतरी चली आ रही हो या किसी नाज के खेत से कोई कौवा उडा दिया गया हो।

उसका विद्यालय-कक्ष, लकडी के कुदो से बने एक लम्बे कमरे की इमारत था। खिडकियो मे कही शीशे लगे थे, और कही वे पुरानी कापियो के पन्नो से मढ दी गई थी। जब विद्यालय न लगता तब दरवाजे के हत्थे मे बेत की मोडी हुई टहनी लगाकर उसे एक काष्ठदण्ड के सहारे इस तरह बन्द कर दिया जाता था कि चोर अन्दर तो आसानी से आ सकता था परन्तु फिर बाहर निकलने मे उसे कठिनाई होती। शायद बहुत सभवत योस्टवॉन हाउटेन नामक तक्षण कला-विशेषज्ञ ने सर्पमीन की टोकरी से इस तरह का विचार लिया होगा। यह विद्यालय-कक्ष एकान्त किन्तु सुखद स्थान पर वन्य पहाडी के पाद भाग मे बना हुआ था। पास ही एक सोता बहता था, और उसके एक किनारे एक विशाल भोज-वृक्ष खडा था। किसी भी निद्रालु ग्रीष्म-दिवस मे कुछ दूर से ही अपने पाठ पढते हुए उसके शिष्यो की आवाज, मधुमक्खी के छत्ते की ध्वनि की भाति, सुनाई पडती थी जिसमे जब-तब शिक्षक के आदेश के स्वर से बाधा होती थी, या जब वह ज्ञान के पुष्प-पत्र पर चहलकदमी करते हुए किसी आलसी शिष्य को उत्साहित करता होता तब कभी-कभी भोजवृक्ष का तेज स्वर उसमे बाधक होता था। सच्ची बात यह है कि वह एक ईमानदार, आत्मनिष्ठ, व्यक्ति था, और सदा इस स्वर्णिम सूत्र को याद रखता था—डण्डे का प्रयोग न करने से बालक बिगड जाता है। और ईछाबोड क्रेन के शिष्य निश्चय ही बिगडे हुओ मे नही थे।

किन्तु मै यह कल्पना नही करूगा कि वह स्कूल के उन निर्दय शासको मे से एक था, जो अपनी प्रजाओ के कष्ट मे आनन्द प्राप्त करते है, इसके विपरीत वह कठोरता की अपेक्षा विवेकपूर्वक ही न्याय का प्रयोग करता था—दुर्बलो की पीठ का भार उतारकर शक्तिमानो की पीठ पर रख देता था। जो दुर्बल बालक

डण्डे के उठाते ही कापने लगता था, उसे छोड दिया जाता, पर बिगडे-दिमाग, पुष्ट शरीर और दुराग्रही ऐसे डच बालक पर दूनी गति से न्याय-दण्ड गिरता था, जो कुढता, ऐठता और उद्दण्ड हो उठता था। इन सब बातो को वह माता-पिताओ के प्रति अपने कर्त्तव्य का पालन कहता था और दण्ड देने के बाद वह बच्चे को यह आश्वासन देना भूलता नही था कि जबतक वह जिएगा इसे याद रखेगा और इसके लिए धन्यवाद देता रहेगा।

जब स्कूल के घण्टे खत्म हो जाते तो वह बडे छात्रो के साथ खेलता भी था। तब वह उनका सखा बन जाता था। छुट्टी के दिनो मे दोपहर का वह कुछ ऐसे शिशु-छात्रो को उनके घर पहुचाने जाता, जिनकी बहिने सुन्दर होती या जिनकी माताए अच्छी गृहिणिया और खिलाने-पिलाने की शौकीन होती थी। वह अपने शिष्यो से अच्छा सम्बन्ध रखने की पूरी चेष्टा करता था। स्कूल से होनेवाली आय थोडी थी, और वह उसके लिए दैनिक रोटी की व्यवस्था करने मे भी अपर्याप्त होती, क्योकि वह भोजनभट्ट था, और दुबला होते हुए भी अनाकोडा नामक जलसर्प की भाति अपने उदर को फैलाने की सामर्थ्य रखता था। इसलिए अपनी जीविका की समस्या हल करने के लिए, उन अचलो की प्रथा के अनुसार जिन किसानो के बच्चे वह पढाता था, उनके घर जाकर रहता और खाना खाया करता था। वह उनके साथ बारी-बारी से एक-एक सप्ताह रहता था। इस तरह अपनी समस्त पार्थिव सम्पत्ति एक गठरी मे बाधकर लिए हुए वह पास-पडोस मे रहने के लिए जाया करता था।

अपने ग्रामीण सरक्षको पर उसका बहुत बोझ न पडे, वे बच्चो को पढाने का खर्च हानिकर भार के रूप मे न अनुभव करे, और शिक्षको को अकर्मण्य एव परोपजीवी न समझने लगे, इसलिए वह अनेक प्रकार से उनके लिए अपने को उपयोगी एव सुखद बनाने की चेष्टा करता था। वह कृषको के खेती-सम्बन्धी हलके कामो मे सहायता देता, घास-भूसा बनाने मे मदद करता, भेडो की मरम्मत कर देता, घोडो को पानी पिला लाता, गोचर भूमि से गायो को हाक लाता, और शिशिर मे आग तापने के लिए लकडिया काट लाता। अपने लघु साम्राज्य, स्कूल के अन्दर की सारी शासकीय मर्यादा और निरकुश शासन को भुलाकर यहा वह अत्यन्त नम्र और अनुग्रहभाजन बन जाता था। बच्चो को, विशेषत सबसे छोटे बच्चे को प्यार-दुलार करके वह माताओ का प्रिय बन

जाता, और एक घुटने के सहारे, बच्चे को लिए पाव से घण्टो तक उसे पालने मे झुलाया करता था।

अन्य कामो के साथ-साथ वह पास-पडोस का सगीत-शिक्षक भी था, और तरुणो को भजनगान-विद्या सिखाकर उसने कितने ही चमचमाते सिक्के प्राप्त किए थे। यह उसके लिए कुछ कम गौरव की बात न थी कि वह रविवार को, चर्च-गैलरी के अग्रभाग मे, अपने चुने गायको के दल के साथ बैठता, और अपने मन मे तो पादरी से विजय-ध्वजा छीन ही लेता था। इतना तो निश्चित है कि उसकी वाणी सम्पूर्ण उपस्थित समुदाय की वाणी के ऊपर छा जाती थी। किसी नीरव रविवासरीय प्रभात मे उस चर्च मे कुछ विचित्र स्वरालाप अब भी सुनाई पडता है, जो क्षुद्र जलाशय के दूसरे तट पर आधा मील दूर भी सुना जा सकता है। लोग कहते है कि यह आवाज इछाबोड क्रेन की नाक से ही निकलकर आ रही है। इस तरह बुरे-भले हर तरह से वह योग्य शिक्षक मजे मे चल रहा था और जो लोग दिमागी श्रम के बारे मे कुछ नही जानते, वे सब समझते थे कि उसका जीवन बडे आराम से बीत रहा है।

देहात के महिला-मण्डल मे स्कूल मास्टर आमतौर से कुछ महत्त्व का आदमी माना जाता है, क्योकि उसे असस्कृत देहाती युवको की अपेक्षा कही अधिक सुरुचि एव शिक्षावाला समझा जाता है—ऐसा व्यक्ति जो विद्वत्ता मे केवल पादरी से कम ठहरता है। इसलिए उसके आगमन से किसी क्षेत्रगृह के चाय की टेबुल पर कुछ हलचल का होना तथा केक या मिठाई की एक अतिरिक्त तश्तरी का योग, और चादी की चायदानी का प्रदर्शन स्वाभाविक है। हमारा विद्वान् शिक्षक, इस तरह समस्त देहाती कुमारियो के मुस्कानो के बीच सुखी था। रविवार के दिन, चर्च-प्रागण मे, विविध प्रार्थनाओ के बीच वह उनके साथ दिखाई पडता था। वह उनके लिए निकटवर्ती वृक्षो पर फैली जगली द्राक्षालताओ से अगूर तोड लाता, उनके मनोरजन के लिए समाधि-प्रस्तरो पर खुदे सब चैत्यलेख पढ देता, या उनकी पूरी टोली लिए समीपवर्ती जलाशय के तटो पर घूमता फिरता, जब कि ज्यादा शर्मीले देहाती भोदू, उसकी उच्चतर प्राजलता एव वार्तालाप शैली से ईर्ष्या करते हुए, पीछे ठिठक जाते थे।

अपने अर्द्ध-सैलानी जीवन के कारण भी वह एक चल-समाचारपत्र था और स्थानीय गप-शप के सम्पूर्ण विवरण को हर घर तक पहुचा दिया करता था,

इसलिए भी आने पर सदा सन्तोषपूर्वक उसका स्वागत किया जाता था। फिर स्त्रिया, बडा बुद्धिमान् समझकर उसका आदर करती थी, क्योकि उसने कई किताबे पूरी की पूरी पढ डाली थी और काटन माथर कृत हिस्ट्री आफ न्यू इग्लैण्ड विचक्रैफ्ट (न्यू इग्लैण्ड के जादू-टोने का इतिहास) मे तो माहिर था, और उस ग्रन्थ मे उसको बडा पक्का विश्वास भी था।

असल मे वह लघु चातुर्य एव सरल विश्वास का एक विचित्र मिश्रण था। चमत्कारिक वस्तुओ के लिए उसकी भूख तथा उन्हे पचाने की शक्ति भी असाधारण थी, और ये दोनो बाते इस जादुई जगह मे रहने के कारण और बढ गई थी। उसकी विशाल भूख के लिए कोई कहानी बहुत हीन या विराट् नही थी। जब दोपहर के बाद उसका स्कूल बन्द हो जाता तो स्कूल के पास बहनेवाले सोते के तट की दूर्वाभूमि पर लेटकर माथर की भीषण कथाओ को तबतक मुखाग्र करता रहता था जबतक कि सध्या का बढता हुआ अधियारा उसकी आखो के सामने के पृष्ठो को एक दम धुधला न कर देता। जब वह अपने उस दिन के विशेप कृषक-गृह को दल-दल और धारा तथा आतकपूर्ण जगल के बीच से होते हुए लौटता तो उस जादुई समय मे प्रकृति की प्रत्येक ध्वनि—पहाडी पर से आता व्हिपूरविल[1] (पक्षी) का रोदन, तूफान के आगमन के लक्षण-रूप वृक्षो की अपशकुनकारी चर्मराहट, कर्कश उलूक का शुष्क स्वर, अथवा डरकर अपने बसेरो से निकल पडनेवाले पक्षियो की आकस्मिक फरफराहट,—उसकी उत्तेजित कल्पना को और बढावा देती। घोर अधकाराच्छन्न स्थानो मे तेजी से चमकने वाले जुगनू उसके रास्ते मे जब एकाएक प्रकाश की धारा फैला देते तो वह चौक पडता, और यदि कभी अपनी गलत उडान मे कोई बडा भौरा उडता हुआ उससे टकरा जाता तो वह गरीब यह समझता कि किसी प्रेतविद् के अस्त्र से उसका स्पर्श हो गया है। ऐसे अवसर पर उस विचार को भुला देने या दुष्ट प्रेतात्माओ को दूर भगा देने के लिए उसके पास एक ही उपाय था कि किसी भजन के पद गाने लगे। शाम के समय अपने दरवाजो पर बैठे हुए निद्रालु खोह के भद्रजन सानुनासिक सगीत को, जो अपने विलम्बित मधुर स्वरो के साथ

---

१ व्हीपूरविल एक पक्षी है जो केवल रात में बोलता है। उसका यह नाम इसलिए पड़ा है कि उसकी आवाज से यही शब्द निकलता है।

दूरस्थ पहाडी या धूमिल सडक से तैरता हुआ आता था, सुनकर श्रद्धाभिभूत हो उठते थे।

उसके भयावने आनन्द का दूसरा स्रोत था—उन वृद्धा डच पत्नियो के बीच लम्बी शिशिरसध्याए बिताना, जो आग के पास बैठकर कातती थी और जिनके समीप ही चूल्हो पर बहुत सारे सेब उबलते होते थे। उनके पास बैठकर वह उनकी भूत-प्रेतो, पिशाच-सेवित खेतो, पुलो-सोतो और घरो की, विशेषत सिरकटे घुडसवार या खोह के सरपट दौडते हेसियन की, चमत्कारपूर्ण कहानिया सुनता। वह भी उन्हे पिछले युगो मे कनेक्टीकट मे फैली हुई तत्र-मत्र की कहानिया सुनाता, हवा मे सुनाई पडनेवाली ध्वनियो की बात करता और भीषण अपशकुनो और दृश्यो के किस्से सुनाता। वह धूमकेतुओ और टूटते तारो की कथा तथा यह चिन्ताजनक तथ्य सुनाकर उन्ह घबडा देता था कि पृथ्वी उस समय सचमुच उलट जाती है और हम आधे समय तक उलटा लटके रहते है। दहकती हुई लकडियो की आग के पास, ज्वाला के कारण लाल चमकते हुए ऐसे कमरे मे आराम से बैठना, जहा कोई भूत-प्रेत अपना चेहरा दिखाने का साहस नही करता, तो बडा सुखदायी होता था किन्तु यह सुख काफी महगा पडता था क्योकि रात को घर लौटते समय भीषण भय और त्रास के बीच से गुजरना पडता था। बर्फीली रात की धुधली और डरावनी चमक के बीच भयावनी आकृतियो एव छायाओ से भरे मार्ग से लौटना! किसी दूरस्थ वातायन से आकर सूने मैदान पर पडती हुई प्रकाश की कम्पित किरण को वह कैसी प्यासी आखो से देखता था। तुषाराच्छन्न किसी झाडी को न जाने कितनी बार रास्ते मे खडी श्वेतावरणयुक्त प्रेतात्मा समझ घबडा जाता था, न जाने कितनी बार नीचे जमी बर्फ की पर्त्त पर अपने ही पाव की आवाज से रक्त जमा देनेवाले भयवश वह काप उठता था, न जाने कितनी बार अपने ही कधे के ऊपर देखने मे डरता था कि कही अपने पीछे आनेवाली किसी विरूप प्रेतात्मा पर निगाह न पड जाए। न जाने कितनी बार वह वृक्षो के बीच सरसराते आनेवाले तेज तूफान से यह कल्पना करके डर जाता था कि हो न हो यह अपनी निशाकालीन खोजो पर निकला हुआ सिरकटा अश्वारोही है।

परन्तु ये सब बाते केवल रात के समय भय का कारण थी—वे मन की ऐसी छायाए थी जो केवल अन्धकार मे चलती-फिरती है, और यद्यपि उसने

अपने जीवन मे अनेक भूत-प्रेत देखे थे और अपने एकान्त भ्रमण मे एकाधिक बार विविध रूपधारी शैतान से भी उसकी भेट हुई थी, फिर भी दिन का प्रकाश होते ही ये सब भीषणताए समाप्त हो जाती थी, और यदि उसके रास्ते मे एक ऐसा प्राणी न आ पडता जिससे मर्त्य मानव को, भूत-प्रेतो और जादूगरो सबको मिलाकर उनसे भी ज्यादा परेशानी का सामना करना पडता है, तो शैतान और उसकी सम्पूर्ण कारसाजियो के बीच भी उसका जीवन आराम से बीत जाता। और यह प्राणी थी—एक स्त्री।

प्रत्येक सप्ताह मे एक दिन सध्या को जो सगीत-शिष्य भजन-कीर्त्तन विद्या मे शिक्षा ग्रहण करने के लिए उसके पास आते थे, उनमे एक लडकी भी थी—कत्रिना वान तैसेल। यह एक समृद्ध डच कृषक की कन्या और एक मात्र सतान थी। वह अठारह साल की नवीना किशोरी थी, वह चकोर की भाति मासल, और अपने पिता के आडुओ की भाति पकी द्रवणशील और रक्त कपोलवाली थी, और सर्वत्र न केवल अपने सौन्दर्य, बल्कि अपनी विस्तृत अभिलाषाओ के लिए भी प्रसिद्ध थी। इसके साथ वह कुछ छैल छबीली भी थी, जैसा कि उसके परिधान से भी प्रकट होता था, जो पुरातन एव आधुनिक शैलियो का मिश्रण था तथा उसके आकर्षण को और बढा देता था। वह शुद्ध पीत स्वर्ण के आभूषण पहनती थी, ये आभूषण उसकी नकडदादी सारडाम से ले आई थी, इनके साथ वह पुराने ज़माने की प्रलोभकारिणी चोली पहनती थी, और उस अचल के सर्वाधिक सुन्दर चरण और टखने प्रदर्शित करने के लिए उत्तेजक रूप से छोटा पेटीकोट धारण करती थी।

स्त्रियो के प्रति इछाबोड क्रेन का हृदय यो ही बडा कोमल ओर मूर्खतापूर्ण था, इसलिए इसमे कोई आश्चर्य की बात नही कि ऐसे प्रलोभनकारी ग्रास की ओर उसकी आखे शीघ्र ही, विशेषत उसके पैतृक भवन के दौरे के बाद, आकर्षित हो गईं। वाल्टस वॉन तैसेल बडा ही उन्नतिशील, समृद्ध, सन्तुष्ट और उदार हृदय कृषक था। यह ठीक है कि वह अपने कृषिक्षेत्र (फार्म) की सीमाओ के बाहर की बात न देखता था, न सोचता था किन्तु उसके अन्दर हर चीज सुचारु, सुखप्रद और सुव्यवस्थित थी। वह अपने धन से सन्तुष्ट था परन्तु उसका गर्व उसे नही था। उसका भवन हडसन नद के तट पर ऐसे हरे-भरे, सुरक्षित एव उपजाऊ स्थान पर स्थित था, जिसे डच किसान प्राय अपने निवास के लिए पसन्द करते

है। एक विशाल देवदारु ने अपनी चौडी शाखाए इसके ऊपर फैला रखी थी, उसी के चरणतल मे इसके मधुरतम जल का एक सोता बैरल के बने एक लघु कुण्ड मे गिर रहता था, और उसे भरने के बाद घास मे छिपे-छिपे गुजरता हुआ एक निकटवर्ती धारा मे, जो एल्डरवृक्षो और नाटे सरपतो के बीच से बहती थी, जाकर मिल जाता था। मकान के निकट ही एक विशाल धान्यागार था— इतना विशाल कि चर्च की जगह काम आ सकता था। उसकी हर एक खिडकी और सुराख से खेतो का खजाना निकला आ रहा था, सुबह से शाम तक उसमे से अनाज पीटनेवाले मूसल का स्वर आता रहता था, गौरैया चिडिया छज्जो के आस-पास फुदकती फिरती थी और छत पर झुण्ड के झुण्ड कबूतर धूप का आनन्द लेते थे, उनमे से कुछ की आखे ऊपर की ओर उठी हुई थी, मानो वे मौसम को देख रहे हो, कुछ ने अपने सिर अपने डैनो मे छिपा रखे थे या वे अपनी छाती मे डूबे हुए थे, जब कि दूसरे कुछ अपनी मादाओ के सामने फूले हुए नाच रहे थे। गुलगुले मोटे शूकर अपने हाते की शान्ति एव बाहुल्य के बीच घुरघुरा रहे थे, और उनके बीच से कभी-कभी दूध-पीते छौने, मानो हवा लेने के लिए, निकल आते थे। बगल की तलैया मे गरिमायुक्त हिमोज्ज्वल हस दल, समस्त मुर्गाबियो का नेतृत्व करते तैर रहे थे, आगन मे टर्कियो के दल के दल चपड-चपड दाने चुग रहे थे, और गिनीपिगे, इधर-उधर दौडती हुई, कर्कशा एव दु शील गृहिणियो की भाति, असन्तोषजनक स्वर मे चीख रही थी। कोष्ठागार के द्वार के सामने, एक पति, एक योद्धा और एक श्रेष्ठ सुजन का नमूना प्रस्तुत करता हुआ बहादुर मुर्गा अपने चमकते पखो को फडफडाकर हृदय के आनन्द और गर्व के साथ बाग दे रहा था,—वह कभी-कभी धरती को अपने पजो से खोद कर धूल उडाता, और फिर अपनी पत्नियो और बच्चो के सदा भूखे कुटुम्ब को आवाज़ देकर बुलाता था कि वे आकर उसके द्वारा आविष्कृत समृद्ध आहार का उपभोग करे।

ऐसे समृद्ध शिशिरकालिक वैभव को देखकर उसे भोगने की सभावना से शिक्षक के मुह मे पानी आ गया। अपने सर्वग्रासी मन की आखो से उसने वहा कुलेल करते प्रत्येक छौने को आग पर सीझते और अपने पेट मे तथा सेब को मुह मे जाते हुए देखा, उधर कबूतर बढिया व्यजन के रूप मे रूमाल से ढके प्लेटो मे सुला दिए गए है, बत्तखे और हस तश्तरियो मे आराम के साथ भले

विवाहित दम्पतियो की भाति सजे हुए है, जिन पर बढिया प्याज सॉस का पर्दा पडा है । शूकरो को वह नमकीन शूकर-मास और मजेदार रसीले सिंझे पुट्ठो के रूप मे देख रहा है ।

आनन्द मे डूबे इछाबोड ने यह सब कल्पना करते हुए जब अपनी बडी-बडी आखो के आगे घूमते हरित भूखण्डो, गेहू, राई, कोट्ट और इण्डियन मक्का से भरे खेतो एव लाल-लाल फलो से लदे उन वृक्षो को देखा, जो वान तैसेल के सुखद निवास के इर्द-गिर्द लगे हुए थे, तो उसका हृदय उस लडकी के लिए कराह उठा जो इस राज्य की उत्तराधिकारिणी होने वाली है । अब उसकी कल्पना इस बात की ओर दौडने लगी कि उन्हे कैसे नकद मुद्रा मे बदला जा सकता है और उस रुपये को किस प्रकार वन्य भूमि के विस्तृत खण्डो एव इस निर्जन मे बने काष्ठ भवनो मे लगाया जा सकता है । कल्पना मे उसकी सम्पूर्ण आशाए सिद्ध हो जाती है और युवती कत्रिना तथा बच्चो के भरे-पूरे कुटुम्ब के साथ घोडागाडी मे गृहस्थी का सब सामान लिए, केण्टकी, टेनेसी की ओर या ईश्वर जाने किस स्थान के लिए रवाना भी हो गया है ।

जब उसने मकान के अन्दर प्रवेश किया, पूरी तरह अपना हृदय हार चुका था । यह एक विशाल क्षेत्रगृह था, छत बीच मे ऊची किन्तु किनारे की ओर ढालुई थी और प्रारम्भिक डच उपनिवेशियो की शैली मे बनी हुई थी, सामने की ओर नीचे झुकी ओरियो ने एक ऐसे दालान का रूप धारण कर लिया था जिसे बुरे मौसम मे बन्द किया जा सकता था । इसमे कण्डनिया, अश्वसज्जा, खेती बारी के विविध औजार तथा निकटवर्त्ती नदी मे मछली फसाने के जाल आदि टगे हुए थे । छोरो पर, गर्मी के दिनो मे उपयोग के लिए बेचे रखी हुई थी । एक सिरे पर बडा सा चर्खा और दूसरे छोर पर मथानी थी जिससे प्रकट होता था कि वह ओसारा कितने ही महत्त्वपूर्ण कार्यों के लिए प्रयोग किया जा सकता है । इसी दालान से आश्चर्यचकित इछाबोड ने हॉल मे प्रवेश किया । यह हाल भवन का केन्द्र तथा मुख्य निवास स्थान था । वहा एक बडी खुली आलमारी पर रखे दीप्तिमान् कास्यपात्रो से उसकी आखे चौधिया गई । एक कोने मे काते जाने के लिए ऊन का बडा-सा गट्ठर रखा था, दूसरे कोने मे अभी कर्घे से बुनकर आए हुए गगाजमनी (ऊनी-सूती मिश्रित) कपडे का ढेर लगा था । दीवारो के सहारे इण्डियन मक्का के भुट्टे, सुखाए हुए सेबो एव आडुओ की झालरे

सुन्दर तोरणो की भाति लटकी हुई थी जिनमे बीच-बीच मे लाल मिर्चे गूथ दी गई थी। खुले छुटे हुए दरवाज़े ने उसे एक ऐसे सर्वोत्तम बैठकखाने की झाकी प्रस्तुत कर दी जिसमे चगुल जैसे पावोवाली कुर्सिया एव काली महोगनी लकडी के टेबुल दर्पण की भाति चमक रहे थे, एक तरफ शतावरी के गुच्छो के आवरण के नीचे से बेलचो और सडसियो की झलक दिखाई पड रही थी, उसके आले पर नकली सतरे एव शख सजे हुए थे, ऊपर विविध पक्षियो के रगीन अण्डे टगे थे, कमरे के मध्य भाग मे एक बडा शुतुरमुर्ग का अण्डा लटका हुआ था तथा कोने मे रखे फलक मे, जिसे जान-बूझकर खुला छोड दिया गया था, पुराने रजत एव चीनी के पात्रो का विपुल भण्डार दिखाई पड रहा था।

जब से इछाबोड की नजर इन उल्लासकारी अचलो पर पडी थी, उसके मन की शान्ति समाप्त हो गई थी, और जब उसके अध्ययन का एक मात्र विषय यही रह गया था कि वॉन तैसेल की अनुपम कन्या का प्रेम कैसे प्राप्त किया जा सकता है। इस प्रयास मे उसके सामने उससे कही अधिक कठिनाइया थी जितनी पुराने जमाने के उस योद्धा प्रेमी के सामने आती थी, जिसका बस देवो, जादूगरो और अग्निमुखी सर्पदानवो जैसे सहज-पराजेय शत्रुओ से पाला पडता था, और जिसे केवल लोहे-पीतल के बडे-बडे फाटको और दृढ दीवारो को तोडकर किले के कारागार मे, जहा उसके हृदय की रानी बन्द होती थी, पहुचना पडता था। यह सब वह उतनी ही सरलता से कर गुजरता था जिस सरलता से कोई क्रिसमस की गुझिया तक पहुच जाता है। और तब वह स्त्री भी उसे निश्चित रूप से वरमाला पहिना देती थी। इसके विपरीत इछाबोड को एक देहाती नखरेबाज छबीली के हृदय तक राह बनानी थी जिसमे अनेक प्रकार की सनके और अस्थिरचित्तताए थी। इस राह मे नित्य कई कठिनाइया और बाधाए आती थी। फिर उसे यथार्थ खून-मास वाले ऐसे भीषण प्रतियोगियो और बहुसख्यक ग्रामीण प्रशसको से टक्कर लेनी थी जो उसके हृदय तक पहुचने के प्रत्येक द्वार पर छाये हुए थे और एक-दूसरे पर बडी चौकसी की और रोषपूर्ण दृष्टि रखते थे, परन्तु किसी नवीन प्रतियोगी पर टूट पडने के लिए सब एक हो जाते थे।

इन प्रतियोगियो मे सबसे प्रबल था एक मुस्टण्ड, रगबाज अब्राहम नाम का व्यक्ति, या डच सक्षेपीकरण के अनुसार ब्रोम वॉन ब्रण्ट। वह उस देहात

का वीर नायक था। सारा अचल उसकी शक्ति एव साहमिकता के चमत्कारो से प्रतिध्वनित था। वह वृषस्कन्ध, दोहरी मोहडीवाला था। उसके सिर के बाल छोटे, घघराले और काले थे, उसका चेहरा रूखा पर असुखद नही था, उसमे विनोद और धृप्टता की सयुक्त मुद्रा थी। उसकी भीम-जैसी देहयष्टि एव अगो की महती शक्ति देखकर ही लोग उसे ब्रोम बोम के उपनाम से पुकारने लगे थे। इसी नाम से वह सार्वदेशिक रूप मे विख्यात था। वह अश्वारोहण के महत् ज्ञान और कौशल के लिए प्रसिद्ध था; घोडे की पीठ पर उसकी विचक्षणता वैसी ही थी जैसी एक तातार की होती है। वह घुटदौड तथा मुर्गे की लडाइयो मे सबसे आगे रहता था। शारीरिक बल की श्रेप्ठता के कारण ग्रामीण जीवन मे आदमी का प्रधान स्थान बन जाता है, इसलिए वह भी प्रमुख बन गया था, सब झगडो मे पच बनता था और ऐसे समय अपना हैट सिर के एक छोर पर रखे ऐसी मुद्रा और वाणी मे अपना फैसला देता था कि फिर उसपर कुछ करने या अपील करने की गुजाइश नही रहती थी। लडने-भिडने या रगरेलिया मनाने को वह सदा तैयार रहता था, परन्तु उसके स्वभाव मे दुर्भावना की अपेक्षा शरारत अधिक थी, और अपनी सारी आतककारी रूक्षता के बावजूद उसके अन्दर हसी-खुशी से भरी हुई सुजनता थी। उसके तीन-चार जिगरी साथी थे जो उसे अपना आदर्श मानते थे और जिनकी बदौलत वह सम्पूर्ण देहाती अचल मे घूमता फिरता था—मीलो तक के हर एक झगडे या उत्सव मे शामिल होकर उसका मजा लेता था। जाडे के दिनो मे वह अपनी विचित्र फर की टोपी से, जिसमे बडी हेकडी के साथ लोमडी की दुम बाध लेता था, पहिचान लिया जाता था। और जब किसी देहाती मण्डली मे लोग दूर से ही इस चूडा को वेगवान् अश्वारोहियो के बीच डोलती देखते तो समझ लेते थे कि कोई न कोई तूफान खडा होनेवाला है। कभी कभी उसका गिरोह मध्यरात्रि मे क्षेत्रगृहो के पास बडे शोरगुल के साथ दौडता सुनाई पडता, मानो डान कजाक की फौज हो। ऐसे समय वृद्धाए एकाएक नीद से जागकर आशकापूर्वक उसकी ओर तबतक कान लगाये रहती जबतक वह वहा से गुजर नही जाता था और तब बोल पडती—वह जा रहा है ब्रोम बोस और उसका दल। पडोसी उसकी ओर आतक, प्रशसा और सद्भावना मिश्रित दृष्टि से देखते थे और जब कभी पास-पडोस मे कोई भावोन्मत्त क्रीड़ा की घटना या कोई झगड़ा होता तो वे

सदा सिर हिलाकर कहते कि बस ब्रोम बोस ही इसके मूल मे है ।

इस वन्य वीर ने कुछ समय से खिलती हुई कत्रिना को अपनी भौडी प्रेम-कला का विषय बना लिया था, और यद्यपि उसका काम-किलोल वैसा ही था जैसे रीछ की थपकिया एव दुलार होता है, फिर भी लोग कानाफूसी करते थे कि लडकी उसे एक दम निराश नही करती है । निश्चय ही इस क्षेत्र मे उसका आगमन अन्य प्रतियोगियो को हट जाने के लिए एक सिगनल था, क्योकि वे इस शेर के प्रेम-पथ के बीच आने को तैयार नही थे । यहा तक कि जब उसका घोडा वॉन तैसेल के अहाते मे किसी रविवार की रात को बधा दिखाई देता तो वे समझ जाते थे कि उसका मालिक अन्दर प्रेमालाप मे निमग्न है, तब सब प्रतियोगी निराश होकर खिसक जाते और दूसरे स्थानो की खोज-खबर लेते थे ।

ऐसा भीषण था वह प्रतिद्वन्द्वी जिसका सामना इछाबोड क्रेन को करना था, और उससे अधिक बलशाली आदमी, सब बातो का विचार कर, प्रतियोगिता से हट जाता, और उससे ज्यादा बुद्धिमान् निराश होकर बैठ रहता । किन्तु इस शिक्षक की प्रकृति मे लोच लचक के साथ अध्यवसाय का भी मिश्रण था । आकृति और भावना दोनो मे वह एक लचीले बेत के समान था—विनत परन्तु कठोर । वह झुक जाता था किन्तु कभी टूटता नही था, और यद्यपि वह जरा-सा भार पडते ही नमित हो जाता था, किन्तु उस बोझ के दूर होते ही, एक झटके मे फिर सीधा हो उठता था और सदा की भाति अपना सिर ऊपर उठाये चलता था ।

अपने प्रतिद्वन्द्वी के विरुद्ध खुले मैदान मे आना तो पागलपन था और अपनी प्रेमल प्रवृत्तियो से हटनेवाला भी वह नही था इसलिए इछाबोड ने बडे शान्त एव प्रच्छन्न ढग से अपना खेल आगे बढाया । सगीत-शिक्षक का पर्दा ओढकर वह क्षेत्रगृह मे कितनी ही बार जाता, उसे माता-पिता से पथ मे बाधक होने का कोई भय नही था, जैसा कि प्राय प्रेमियो के साथ होता है । वॉन तैसेल एक सरल, उदार व्यक्ति था, वह अपने पाइप से भी ज्यादा अपनी लडकी को प्यार करता था, और एक बुद्धिमान् आदमी तथा बढिया पिता के रूप मे उसने उसे हर चीज मे अपने मन के अनुसार चलने की छूट दे रखी थी। उसकी उल्लेखनीय पत्नी भी घर के कामो तथा मुर्गीखाने की देखरेख मे इतनी व्यस्त रहती थी, और जैसा कि उसने बडे अनुभव से कहा था, हस एव बत्तखे मूर्ख

होती है और उनकी देखरेख बहुत ज़रूरी है, किन्तु लडकिया खुद अपनी हिफा-जत कर सकती ह। इसलिए जब व्यस्त गृहिणी घर मे इधर-उधर के कामो मे मशगूल रहती या दालान के एक किनारे बैठकर चर्खा चलाती, तो दूसरे छोर पर बैठा वॉन तैसेल अपने साध्य पाइप का आनन्द लेता और कोष्ठागार के शिखर पर लगे काष्ठ-योद्धा का, जिसके प्रत्येक हाथ मे एक-एक तलवार थी, हवा से युद्ध करना देखा करता। इस समय इछाबोड कन्या के साथ चश्मे के किनारे विशाल देवदारु के नीचे बैठकर अपनी प्रणयकथा कहा करता या फिर साध्य बेला मे उसके साथ घूमने निकल जाता था, क्योकि यह समय प्रेमियो की वाग्मिता के लिए अनुकूल होता है।

मै यह जानने का दावा नही करता कि स्त्रियो का हृदय कैसे अनुरक्त और विजित किया जाता है। मेरे लिए तो वे सदैव पहेली और प्रशसा की वस्तु रही है। कुछ के पास एक ही भेद्य बिन्दु या प्रवेश-द्वार होता है, जब कि दूसरी कुछ से मिलने के हज़ार रास्ते होते है और हजार-हजार ढग से उन्हे वश मे लाया जा सकता है। पहली श्रेणी की स्त्री का पाना कौशल की बहुत बडी विजय है, किन्तु दूसरी श्रेणी की स्त्री पर अधिकार जमाये रखना सेनापतित्व का और बडा प्रमाण है, क्योकि वहा दुर्ग-विजय के लिए आदमी को हर दरवाजे और खिडकी पर लडना पडता है। इसलिए जो हजार सामान्य हृदयो को जीत लेता है, वह यश का भागी है, किन्तु जो एक लीलावती—एक नखरेबाज औरत के हृदय पर एकछत्र शासन कर सकता है, वह निश्चय ही सच्चा वीर है। सच्ची बात यही है कि दुर्द्धर्ष ब्रोम बोस को ऐसी सफलता नही मिली थी, और जिस क्षण से इछाबोड क्रेन ने अपनी प्रेमक्रीडा शुरू की, ब्रोम की दिलचस्पी कम हो गई। अब उसका घोडा रविवार की रातो को वहा बधा नही दिखाई पडता, परन्तु धीरे-धीरे उसके और निद्रालु खोह के शिक्षक के बीच साघातिक शत्रुता पैदा हो गई।

ब्रोम की प्रकृति मे असस्कृत शौर्य का अश तो था ही और वह खुले युद्ध तक उसे ले जाता तथा पुराने योद्धा प्रेमियो की सक्षिप्त एव सरल शैली मे—सरल सघर्ष मे प्रेमिका की प्रवृत्तियो का निर्णय कर लेता, किन्तु इछाबोड को भली-भाति ज्ञात था कि उसका प्रतियोगी बल मे उससे बहुत बढा-चढा है और उससे लड़कर वह जीत नही सकता। उसने बोस को यह शेखी बघारते हुए भी

सुन लिया था कि वह स्कूल मास्टर को उठा कर दोहरा कर देगा और उसी के स्कूल की आलमारी मे उसे घुसेड देगा। इसलिए वह उसे ऐसा अवसर देने की मूर्खता नही कर सकता था। इस दृढतापूर्ण शान्त-शैली मे वडा उत्तेजक तत्त्व छिपा था और उसने ब्रोम के पास इसके सिवा कोई विकल्प नही रहने दिया कि वह ग्रामीण परिहास का सहारा ले और अपने प्रतिद्वन्द्वी के साथ कोई उजड्ड क्रियात्मक दिल्लगी कर दिखाये। बस बोस और उसके अश्वारोही साथियो के लिए इछाबोड सनकभरे उत्पीडन का विषय बन गया। अब वे उसके अभी तक शान्त राज्य मे हस्तक्षेप करने लगे। उन्होने चिमनी का मुह ऊपर से बन्द कर दिया, जिससे उसकी सगीत-पाठशाला धुए से भर गई। सब तरह के भीषण बन्धनो और सुरक्षा के उपायो के बावजूद रात को उसके विद्यालय-कक्ष मे घुस गए और उसकी सब चीजे उलट-पुलट दी। स्कूलमास्टर अब यह सोचने लगा कि हो न हो देश की सब डाइने यही अपनी सभा करती है। परन्तु इससे भी ज्यादा परेशानी की बात तो यह थी कि ब्रोम उसी की प्रियतमा के सामने उसका मजाक उडाने लगा और एक बदमाश कुत्ते को बडी बुरी तरह रोना सिखाया तथा लडकी को भजनकला की शिक्षा देने के लिए इछाबोड के प्रतिद्वन्द्वी रूप मे उसे प्रस्तुत कर दिया।

इस प्रकार प्रतियोगी शक्तियो की तुलनात्मक स्थिति मे कोई ठोस परिवर्तन के बिना मामला कुछ दिनो तक चलता रहा। एक दिन शरत् के तीसरे पहर इछाबोड विचारग्रस्त मुद्रा मे अपने उस ऊचे स्टूल पर बैठा हुआ था जहा से वह अपने क्षुद्र साहित्यिक राज्य के सम्पूर्ण हितो को प्राय देखा करता था। अपने हाथ मे वह निरकुश शासन के राजदण्ड-स्वरूप एक सोटे को हिला रहा था, न्यायदण्ड उसके सिहासन के पीछे तीन काटो पर धरा था और अपराधियो के मन मे निरन्तर भय पैदा करता था। उसके सामने की डेस्क पर वे निषिद्ध और प्रतिबन्धित अस्त्र दिखाई पड रहे थे जो काहिल बच्चो के शरीर से तलाशी मे प्राप्त हुए थे—जैसे आधे चबाये सेब, फिटफिटिया (बच्चो की नकली बन्दूके), चकइया, मक्खी पकडने के पिजडे तथा नाना प्रकार के छोटे-छोटे कागज़-निर्मित मुर्ग-खिलौने। साफ मालूम हो रहा था कि किसी को अभी-अभी न्याय-दण्ड मिल चुका है, क्योकि उसके सब छात्र अपनी पुस्तको पर ध्यान से झुके पढने मे, या एक आख मास्टर पर लगाये पीठ पीछे कानाफूसी करने मे

व्यस्त दिखाई पड रहे थे। सारे विद्यालय-कक्ष मे शान्ति फैल रही थी। अकस्मात् मोटिया कपडे का जैकेट और पायजामा पहिने और अग्निदेवता की-सी गोल-मटोल टोपी लगाए तथा एक मरटुट घोडे की पीठ पर बैठे हुए, जिसे वह रस्सियो की लगाम के सहारे दौडा रहा था, एक हबशी (नीग्रो) के आगमन से इस शान्ति मे बाधा उपस्थित हुई। वह स्कूल के दरवाजे तक आकर रुका और इछाबोड को एक उत्सव मे शामिल होने का निमत्रण दिया जो उसी दिन शाम को मीनहीर वॉन तैसेल के घर पर होनेवाला था। उस महत्त्वपूर्ण मुद्रा मे सन्देश देने और लच्छेदार भाषा के प्रयोग की चेष्टा के बाद, जो ऐसे क्षुद्र दौत्यकार्य मे नीग्रो मे सहज दिखाई पडती है, अपने मिशन के महत्त्व एव शीघ्रता को प्रकट करता हुआ वह सोते की ओर भाग गया।

जिस स्कूल-कक्ष मे अभी शान्ति विराज रही थी वहा व्यस्तता और कोलाहल का राज्य हो गया। छोटी-मोटी बातो पर रुके बिना छात्रो को जल्दी-जल्दी पाठ पढाये जाने लगे, जो (छात्र) फुर्तीले थे, उन्हे दण्ड से मुक्ति देकर आधा-तिहाई पाठ पढाकर आगे उछाल दिया गया, जो मन्द थे उन्हे पीछे खडे होकर और जब-तब कठिन शब्दो के पढने मे सहायता देकर गतिशील कर दिया गया। किताबे आले पर रखी जाने की जगह इधर-उधर पडी रही, कलमदान उलट गए, बेचे नीचे गिरा दी गई, और सारा स्कूल अपने निश्चित समय से एक घण्टा पहले ही विशृखल हो गया और बच्चो की फौज, अपनी शीघ्र मुक्ति के आनन्द मे भरी हरियाली के इर्द-गिर्द उछलने-कूदने और शोर करने लगी।

अब बहादुर इछाबोड ने अपने प्रसाधन मे कम से कम आधा घण्टा और लगाया, अपन मोर्चहे काले सूट को झाड-पोछकर पहिना और एक टूटे शीशे मे देखकर अपना चेहरा सवारा। एक योद्धा-अश्वारोही के रूप मे अपनी प्रियतमा के समक्ष उपस्थित होने के उद्देश्य से, अपने एक पडोसी कृषक, क्रोधी और बूढे डच हैस वॉन रिपर से उसका घोडा माग लिया, और उसपर वीरतापूर्वक सवार होकर पुराने सामन्त-याद्धा प्रेमी की भाति, दुस्साहसिकता के पथ पर चल पडा। यह अच्छा होगा कि एक रूमानी कथा को यथार्थ रूप देने के लिए यहा हम अपने नायक और उसके वाहन के विषय मे कुछ बता दे कि वे कैसे दिख रहे थे। जिस घोडे पर वह सवार था, वह एक दुर्बल, जुताई का घोडा था, जिसका और सब कुछ समाप्त हो चुका था, सिर्फ उसकी बदमाशी अब भी कायम थी।

वह कृश और झबरा था, गर्दन पतली और सिर हथौडे-सा था। उसके मोर्चंहे अयाल और पुच्छ उलझे हुए और उनमे गाठे पडी हुई थी। एक आख की पुतली गायब थी और उसमे प्रेतवत् चमक थी, दूसरे मे एक सच्चे शैतान की ज्योति थी। इन सब बातो के बावजूद अपने समय मे उसमे ज़रूर आग और पौरुष रहा होगा, जैसा कि उसके नाम 'गन पाउडर' (तोप की बारूद) से मालूम पडता है। वह अपने मालिक वॉनरिपर का एक चहेता घोडा रह चुका था और वॉन रिपर भयानक अश्वारोही था, और सभवत उसने उस (घोडे) मे अपनी भी कुछ प्रेरणा भर दी होगी, क्योकि बूढा और टूटा हुआ दिखने पर भी उसमे देश के किसी भी तरुण घोडे से अधिक शरारत थी।

ऐसे घोडे के लिए इछाबोड उपयुक्त व्यक्ति था। रकाबो के छोटे होने के कारण उसके घुटने काठी के उभरे अगले भाग तक आ रहे थे और उसकी पतली केहुनिया टिड्डे की केहुनियो-जैसी लगती थी। वह राजदण्ड के समान खडी चाबुक हाथ मे लिए हुए था, और जब घोडा चला तो उसकी भुजाओ की चाल पक्षी के उडते हुए डैनो के समान प्रतीत होती थी। उसके छोटे माथे के कारण लघु ऊनी टोपी सरककर नाक के ऊपर आ रही थी, और उसके काले कोट के किनारे प्राय घोडे की पूछ पर फरफरा रहे थे। इछाबोड और उसके घोडे की यह शकल थी, जब वे हैस वान रिपर के फाटक से निकले। यह एक ऐसा दृश्य था जो दिन-दहाडे बहुत कम दिखाई पडता है।

जैसा कि मै कह चुका हू, यह शरद् का एक सुहावना दिन था, आकाश स्वच्छ और भव्य था और प्रकृति उस प्रभूत सोनहले अलकरण से भूपित थी जिसे हम बाहुल्य की धारणा के साथ सम्बद्ध करते है। वनो ने सयत भूरे एव पीत रग का परिधान धारण कर रखा था, और कोमल तरुपक्ति तुषारपात से दीप्तिमान् नारगी, बैंजनी और लाल रगो मे रगी हुई थी। वन्य वको की पक्ति आकाश मे चक्कर काटने लगी थी, सफेदा तथा अखरोट के कुजो मे गिलहरी की आवाज गूजती थी, और निकटवर्त्ती खेत से रह-रहकर बटेर का चिन्ताकुल स्वर आने लगा था।

छोटी चिडिया अपने विदाई-भोज का मजा ले रही थी। अपने आनन्द-किलोल के शिखर पर आसीन वे निकुजो-निकुजो, पेडो-पेडो पर फुदकती, चहचहाती फिरती थी। किशोर शिकारियो का प्रिय शिकार काकरोचिन

(लालपक्षी) वेदनाकुल उच्च स्वर मे बोलता था, फुदकती कोकिलाए काले बादलो मे उड रही थी, अपनी लोहितवर्ण कलगी, चौडे काले कण्ठगोलक और सुन्दर दुम के साथ स्वर्णपखी हुदहुद या काष्टकूट, अपने लालधारीवाले डैनो, पीली धारी की दुम तथा परो की लघु स्पेनी टोपी लगाए हुए देवदारुक, अपने सुन्दर हलके नीले कोट एव सफेद अधोवस्त्रो मे सज्जित कोलाहली नीलकण्ठ सब चीखते-चहचहाते, झुकते-फुदकते और कुज-वन के प्रत्येक गायक के साथ दोस्ती निभाते दीख पडते थे।

रास्ते मे धीरे-धीरे चलते हुए इछाबोड की आखे, जो खाद्य-वाहुल्य के प्रत्येक लक्षण के प्रति खुली हुई थी, उल्लासपूर्ण शरद् के खजानो को देखकर प्रसन्नता से चमक उठी उसने देखा, सब तरफ सेबो के विस्तृत पुज है—कुछ पीडनकारी ऐश्वर्य के साथ पेडो पर ही लटक रहे है, कुछ बाज़ार के लिए टोकरो एव पीपो मे भर लिए गए है, और बहुत से बडी-बडी ढेरियो मे सेब-मदिरा के लिए एकत्र है। और दूरी पर इण्डियन मक्का के बडे-बडे खेतो की ओर उसकी दृष्टि गई। उसने देखा कि अपनी पत्तियो के पर्दे से उनके सुनहले भुट्टे झाक रहे है और रोटी तथा पकवान का आश्वासन दे रहे है। उनके नीचे पडे कूष्माण्ड अपने गोल उदर को सूर्य की ओर उठाए हुए बढिया समोसो के लिए पर्याप्त सभावनाए प्रकाशित कर रहे है। अब वह सुगन्धित मोथी के खेतो के बीच से गुजर रहा है, उसे मधुमक्खियो के छत्ते की गन्ध आ रही है, और जब वह उसकी ओर नज़र उठाता है तो उसके मन मे मक्खन से अच्छी तरह पूर्ण मधु-मिश्रित तथा कत्रिना वॉन तैसेल के सुन्दर लघु हाथो से परोसे गए सुदर्शन स्लैपजेक (एक प्रकार का केक) की कल्पना साकार हो उठती है।

इस प्रकार अपने मन को अनेक मृदु विचारो तथा शर्करामिश्रित कल्पनाओ का स्वाद चखाता हुआ वह उन पहाडियो के बीच से गुजरा जो शक्तिमान् हडसन के कतिपय सर्वोत्तम दृश्यो की ओर देख रही है। सूर्य ने अपना विस्तृत गोलक धीरे-धीरे पश्चिम नभ पर उतारना आरम्भ कर दिया है। टप्पन जी का विशाल वक्ष, निश्चल और चिकना, सामने फैला है, सिवाय इसके कि जहा-तहा एकाध मृदु कम्पन दूरस्थ पर्वत की नील-छाया को तरगित एव विलम्बित कर रहा है। थोडे से धूसर बादल आकाश मे फैले हुए है किन्तु उन्हे आन्दोलित करने वाली वायु की एक भी सास कही नही है। क्षितिज पर सोनहली आभा फैली

अब मै जादुओ की उस दुनिया का कुछ वर्णन कर दू जो मेरे नायक के वॉन तैसेल के भवन के मुख्य कक्ष मे प्रवेश करते ही उसकी मुग्ध दृष्टि के सामने फट पडी। मै रूपवती किशोरियो एव लाल तथा श्वेत सज्जा-प्रदर्शनो की बात नही कह रहा हू वरन असली डच ग्राम्य टी-टेबुल के उन पर्याप्त आकर्षणो की बात कर रहा हू जो शरद् की बाहुल्यपूर्ण ऋतु मे वहा उपस्थित थे,—अवर्णनीय प्रकार के ऐसे केको से भरे बडे-बडे थाल जो केवल अनुभवी डच गृहिणिया बनाना जानती है। कोमल मीठी पूरिया थी, मृदुल, रसभरी, और खस्ता भगुर पूरिया भी थी। मीठो केक, छोटे केक, सोठ के मीठे केक, मधु (शहद) के केक, न जाने कितने केक थे, केको का पूरा परिवार था। इसी प्रकार सेब की गुझिया, आडू की गुझिया, पेठे की गुझिया, शूकर मास तथा गोमास के भुने कतले, आलूबुखारा, आडू, नाशपाती, श्रीफल के अचार और मुरब्बे थे, भुने मत्स्य और चूजे की तो बात ही क्या! इनके अलावा वहा दूध और क्रीम के कटोरे रखे थे। सब चीजे मिली-जुली रखी थी और उनके बीच मातृवत् चायदानी से भाफ ऊपर उठ रही थी। मेरे पास इतनी शक्ति और समय नही है कि यह दावत जिस प्रशसा और वर्णन के योग्य है उसे यहा दू क्योकि मुझे अपनी कहानी आगे बढाने की भी आतुरता है। प्रसन्नता की बात है कि इछाबोड क्रेन को उतनी जल्दी नही थी जितनी उसके इतिहास लेखक को है इसलिए उसने हर एक चीज का स्वाद लिया।

वह दयालु और कृतज्ञ प्राणी था, जिसका हृदय उसी अनुपात मे फूलता था जिस अनुपात मे उसकी चमडी बढिया चीज़ो से भरती जाती थी और जिसकी स्फूर्ति भोजन से उसी प्रकार उभरती थी जिस प्रकार कुछ लोगो की स्फूर्ति मद्यपान से उभरती है। खाते हुए वह अपनी बडी-बडी आखे चतुर्दिक् घुमाए बिना नही रह सका और इस सभावना से प्रमुदित हो उठा कि एक दिन वह इस अकल्पनीय विलासिता एव विभूति का स्वामी हो सकता है। फिर उसके मन मे आया कि कितनी जल्द वह जीर्ण विद्यालय-कक्ष की ओर पीठ फेर सकेगा, वॉन रिपर तथा अन्य प्रत्येक क्षुद्र सरक्षक की ओर उगली नचा सकेगा और किसी भी सैलानी शिक्षक ने यदि उसे साथी कहकर पुकारने का साहस किया तो उसे लात मारकर बाहर निकाल सकेगा।

बाल्टस वॉन तैसेल तृप्ति एव प्रसन्नता से फूले मुख के साथ अपने अतिथियो

के बीच घूम रहा था । वह शारदीय चाद के समान पूर्ण एव प्रसन्न था । उसकी सत्कारशीलता सक्षिप्त परन्तु अभिव्यक्तिशील थी, वह हाथ मिलाता, कधे पर थपकी देता, कहकहा लगाता और आग्रहपूर्वक सबको स्वय इच्छानुसार विविध पदार्थ लेकर खाने का निमत्रण देता जाता था ।

और अब हाल से आती सगीत की तरगो ने लोगो का नृत्य के लिए आवाहन किया । सगीतकार था एक बूढा धवल-केश नीग्रो जो पास-पडोस का, पिछले पचास वर्षो से भी अधिक समय से एक मात्र भ्रमणशील आर्केस्ट्रा वादक था । उसका वाद्य उसी की भाति जीर्ण एव खण्डित था । अधिकाश समय वह दो या तीन तारो को ही बजाता था तथा गज की प्रत्येक गति पर सिर हिलाता जाता था, जब भी कोई नवीन जोडा नृत्य आरम्भ करने को होता तो वह जमीन तक सिर झुकाता और अपना पैर पटकता था ।

इछाबोड को अपने नाचने पर भी उतना ही गर्व था, जितना बोलने की शक्ति पर था । उसका एक भी अग, एक भी तन्तु स्थिर नही था, उसकी शिथिल रूप से लटके अगोवाली काया को पूर्णरूप से स्पन्दित एव सारे कक्ष मे नृत्यरत देखकर ऐसा लगता था मानो, नृत्यकला का देवता सेण्टवाइटस स्वय ही शरीर धर कर आपके सामने उपस्थित है । खेतो और पास-पडोस से वहा हर आयु और आकार के नीग्रो आए थे और उनके चमकते काले चेहरो का पिरामिड प्रत्येक द्वार एव वातायन पर दिखाई पड रहा था । वे सब इछाबोड की प्रशसा कर रहे थे । वे इस दृश्य को बडे आनन्द से देख रहे थे, उनकी आखो की पुतलिया आश्चर्य से फैल-फैल जाती थी । और बच्चो पर बेत आजमानेवाला प्राणान्वित एव आनन्दित हुए बिना कैसे रह सकता था ? उसके हृदय की देवी उसके साथ नाच रही थी और उसकी प्रत्येक काम-क्रीडा का उत्तर आकर्षक मुस्कानो से दे रही थी । बेचारा ब्रोम बोस, प्रेम एव ईर्ष्या के दश से पीडित, एक कोने मे चिन्तामग्न बैठा था ।

जब नृत्य समाप्त हो गया तो इछाबोड अधिक बुद्धिमानो की मण्डली की ओर आकर्षित हुआ । ये लोग, बूढे वॉन तैसेल के साथ दालान के एक छोर पर बैठे तम्बाकू पी रहे थे और पुराने जमाने की स्मृतियो के विषय मे बाते कर रहे थे, और युद्ध के विषय मे लम्बी-लम्बी कहानिया सुना रहे थे ।

जिस जमाने की बात मै कर रहा हू, उस जमाने मे यह अचल उन विशेष

स्थानो मे से एक था जो गाथाओ एव महान् पुरुषो से भरे हुए थे। युद्ध काल मे ब्रिटिश तथा अमरीकी सैन्यपक्ति इसके पास ही डेरा डाले हुए थी, और बहुत लूटमार होने के कारण यह प्रदेश शरणार्थियो, चरवाहो तथा सब प्रकार के सीमान्त वीरो से भर गया था। उस घटना को बस इतना ही समय बीता था कि प्रत्येक कथाकार अपनी कहानी मे कुछ नमक-मिर्च मिलाकर और कल्पना से जोड-जाडकर तथा अपनी-अपनी स्मृतियो की अस्पष्टता के कारण अपने को ही नायक बनाकर उपस्थित कर दे।

ऐसी ही कहानी थी डोफ्यू मार्टलिग, नीली दाढी वाले डच की, जिसने मिट्टी के एक ढूहे से पुरानी बन्दूक के सहारे एक ब्रिटिश रणपोत को करीब-करीब पकड ही लिया था, किन्तु छठी बार वह बन्दूक ही फट गई। इसी प्रकार एक और बूढे सज्जन थे, जिनका नाम मै यहा न लूगा, क्योकि बहुत अधिक धनवान् होने के कारण इस हलके ढग पर उनका जिक्र नही किया जा सकता, जिन्होने व्हाइटप्लेस की लडाई मे एक छोटी तलवार से दस्ती गोले का मुकाबला किया था और सचमुच उसे तलवार की मूठ पर सनसनाते हुए रोका था। प्रमाण मे वह किसी भी समय उस तलवार को दिखाने के लिए तैयार थे, जिसकी मूठ कुछ मुड गई है। और भी कई थे जिन्होने मैदान मे इसी प्रकार वीरता दिखाई थी और उनमे एक भी ऐसा नही था जिसने यह न कहा हो कि युद्व का सुखद अन्त कराने मे उसका बडा हाथ रहा है।

किन्तु इसके बाद भूत-प्रेत के जो किस्से चले, उनके सामने तो ये कुछ भी नही ठहरते। यह पडोस ऐसे किस्सो से भरा पडा है। इन छायापन्न, बहुत दिनो के बसे विश्राम-स्थलो मे स्थानीय कहानिया और मूढ विश्वास खूब फूलते-फलते भी है, जब हमारे ग्राम्यस्थलो मे आबादी के बराबर बदलते रहने से वे पद-दलित हो जाते है। हमारे अधिकाश गावो मे प्रेतात्माओ को कोई प्रोत्साहन नही मिलता, क्योकि पहली ही नीद खत्म होने तथा उनके कब्रो मे करवट बदलने के पहले ही उनके उत्तराधिकारी या बचे हुए मित्र वहा से दूर चले जाते है, इसलिए जब वे रात मे घूमने निकलती भी है तो भेंट करने के लिए उनके परि-चितो मे वहा कोई नही होता। यही कारण है कि हमे बहुत दिनो से बसी डच जातियो के अलावा, और कही भूत-प्रेत की बाते सुनने को नही मिलती।

किन्तु इन भागो मे अतिप्राकृत कथाओ के प्रसार का एक विशेष कारण

इनका 'निद्रालु खोह' के निकटवर्त्ती होना है। उस भुतहे अचल से बहकर आनेवाली हवा म ही छूत है। वह सारे प्रदेश मे स्वप्नो एव कल्पनाओ का वातावरण फैला देती है। वॉन तैसेल के इस समारोह मे निद्रालु खोह से आए हुए कुछ लोग भी उपस्थित थे, तथा सदा की तरह, वे अपने अद्‌भुत एव आश्चर्यजनक किस्से सुना रहे थे। शवयात्रा के तथा उस विशाल वृक्ष के आसपास, जहा अभागा मेजर ऐण्ड्रे मारा गया था, सुनाई पडनेवाली उस नारी प्रेतात्मा का भी जिक्र किया गया जो 'रावेन राक' की तग घाटी मे आया करती है, और चूकि वह वहा हिमपात से ही मरी थी, इसलिए शिशिर की रातो मे, तूफान आने के पूर्व, वहा प्राय उसकी चीख सुनाई पडती है। परन्तु ज्यादातर कहानिया निद्रालु खोह के सिरकटे सवार के विषय मे थी जिसे पिछले दिनो कई बार रात मे पहरा लगाते देखा गया था। यह भी कहा गया कि वह चर्च प्रागणस्थित समाधियो के बीच प्रत्येक रात को अपने घोडे की रस्सी पकडे जाता दिखाई पडता है।

इस चर्च की एकान्त, निर्जन स्थिति के कारण सदा ही उसे उद्विग्न प्रेतात्माओ की प्रिय विहारस्थली बनने का अवसर प्राप्त होता रहा है। वह एक ऊचे टीले पर बना है और उसके चारो ओर बबूल तथा ऊचे देवदारु के जगल है जिनके बीच से उसकी सफेदी की हुई स्वच्छ दीवारे यो चमकती है मानो विश्रामस्थल की छायाओ के बीच से ख्रीष्टीय पवित्रता झाक रही हो। वहा से एक ढालुवा ज़मीन रजत जलस्तर तक चली गई है। इस मार्ग के किनारे ऊचे-ऊचे वृक्ष खडे है जिनके बीच कही-कही हडसन की नीली पहाडिया दिखाई पड जाती है। चर्च के हरित दूर्वायुक्त प्रागण को, जहा सूर्य की किरणे शान्ति के साथ सो रही है, देखो तो लगेगा कि कम से कम यहा तो मृतक शान्ति से विश्राम कर रहे होगे। चर्च के एक ओर एक चौडी वन्य अधित्यका है, जिसमे एक बडा सोता टूटी हुई शिलाओ और गिरे वृक्षो के तनो के बीच होता हुआ बहता है। चर्च से थोडी ही दूर पर, सोते के एक गहरे भाग पर पहले लकडी का एक पुल था। जो सडक वहा तक जाती थी वह, बल्कि खुद पुल भी ऊपर फैले वृक्षो की घनी छाया से आच्छादित था, जिसके कारण दिन के समय भी वहा अधेरा रहता था, फिर रात के भयानक अन्धकार का तो कहना ही क्या है? यह सिरकटे सवार की सैर का एक प्रिय स्थान था, यहा उसे अनेक बार देखा गया था। ब्राउवेर के

विषय मे कहा जाता है कि खुद उसका भूत-प्रेत मे जरा भी विश्वास नही था। निद्रालु खोह (स्लीपी हालो) की चढाई से लौटते ममय उसकी भेट सिरकटे सवार से हो गई। वह उसके (भूत) पीछे लग गया, दोनो पहाडियो और दलदलो के बीच झाडियो तथा अन्य व्यवधानो के ऊपर से अपने घोडे कुदाते हुए पुल तक पहुचे। यहा पहुचकर सिरकटा सवार ककाल के रूप मे बदल गया, उसने पकडकर ब्राउवेर को नाले मे पटक दिया और बिजली की कडकडाहट की भाति गरजता वृक्षो की फुनगियो के ऊपर से भाग गया।

इसके खत्म होने ही इससे तिगुनी रोमाचक कहानी ब्रोम बोस ने सुनाई—सिग-साग नामक निकटवर्ती गाव से लौटते समय एक रात को अधरात मे डोलने वाले इस अश्वारोही से मेरी भेट हो गई। हम लोगो मे शर्त हुई कि जो घुडदौड मे दूसरे को पछाड देगा उससे एक प्याला पच (एक पेय) पीने का अधिकारी होगा। मै करीब-करीब विजयी हो चुका था और मेरे डेयरडेविल ने प्रेत-अश्व को बुरी तरह पछाड दिया था किन्तु चर्चवाले पुल के पास आते ही वह भाग खडा हुआ और आग के एक भभूके मे लुप्त हो गया।

ये सब कथाए उसी तद्रिल धीमी वाणी मे कही गई जिसमे आदमी प्राय अन्धकार के समय बात करते है। श्रोताओ के चेहरो पर केवल कभी-कभी ही पाइप की आकस्मिक चमक पड जाती थी ये कहानिया इछाबोड के मानस की गहराई मे प्रवेश करती गईं। उसने अपने प्रिय ग्रन्थकार काटन माथेर की पुस्तक से अनेक उद्धरण पढकर सुनाए, फिर अपने देश कनेक्टीकट राज्य मे हुई कितनी ही अद्भुत घटनाए बताई और निद्रालु खोह के पास अपने निशाकालीन भ्रमण मे देखे भयानक दृश्यो का वर्णन किया।

अब धीरे-धीरे उत्सव समाप्त हो चला। पुराने किसानो ने अपने-अपने कुटुम्ब के लोगो को अपने छकडो मे भरा और रवाना हो गए। पहियो की खड-खडाहट सडको एव दूरस्थ पहाडियो के ऊपर से देर तक सुनाई देती रही। कुछ किशोरियो ने अपने प्रिय टट्टुओ की जनानी जीनो पर आसन जमाया और उनके प्रसन्न हृदय से निकली हसी, घोडो के खुरो के शब्द से मिलकर, नीरव वनप्रान्तो के ऊपर प्रतिध्वनित होती रही, फिर धीरे-धीरे हलकी होते हुए अन्त मे समाप्त हो गई। अब रगरलियो एव कोलाहल का वह स्थान नीरव और सूना हो गया। सिर्फ इछाबोड पीछे रह गया था। उसे इस बात का पूर्ण विश्वास

हो गया था कि वह सफलता के पथ पर काफी दूर आ गया है, और अब उसे उत्तराधिकारिणी से आमने-सामने बैठकर बात कर लेनी चाहिए। इस भेट मे क्या गुजरी, यह बताने की चेष्टा मै नही करूगा, क्योकि सच बात यह है कि मैं उसे जानता नही किन्तु मुझे भय है कि कुछ न कुछ गडबडी जरूर हुई होगी क्योकि थोडी ही देर बाद वह वहा से निराश एव शिथिल मुद्रा मे बाहर निकला। ओह, ये औरते ! ये औरते ! क्या वह लडकी नाज-नखरे-भरे छल से काम ले रही थी ? क्या गरीब शिक्षक के प्रति यह प्रोत्साहन उसके प्रतिद्वन्द्वी को पराजित करने की आड-भर था ? केवल ईश्वर ही इसे जान सकता है, मै नही। मेरे लिए इतना ही कहना काफी है कि इछाबोड ऐसी मुद्रा मे वहा से निकला मानो किसी सुन्दरी के हृदय की अपेक्षा किसी कुक्कुटालय के द्वार पर बोरा टागता रहा हो। ग्राम्य सम्पत्ति के जिस दृश्य की वह अक्सर प्रशसा किया करता था, उसकी ओर दाहिने बाये निगाह डाले बिना, वह सीधे अस्तबल मे गया और गनपाउडर को जोर-जोर से कई ठोकरे मार और घूसे लगाकर किसी तरह उस आरामदेह जगह से, जिसमे वह मक्का एव जई के पहाड के पहाड तथा रामपर्ण एव दूर्वा से भरी घाटियो के स्वप्न देखता गहरी नीद सो रहा था, अत्यन्त अशिष्टतापूर्वक उठा दिया।

रात मे यह बडे जादू टोनेवाला समय था, जब इछाबोड भारी एव निराश हृदय से घर की ओर लौटा। उसका मार्ग उन ऊची पहाडियो के बीच होकर जाता था जो टेरीटाउन के ऊपर उठी हुई थी। इसी रास्ते से वह तीसरे पहर कितनी खुशी के साथ गुजरा था। समय उसी की भाति दारुण था। उसके बहुत नीचे, टप्पन जी, अपने धुधियाले और अस्पष्ट जल-प्रवाह के साथ फैला हुआ था। उसपर कही-कही किसी लंगर डाले नीरव जलयान का लम्बा मस्तूल दिखाई पडता था। निशीथ की गहरी नीरवता मे उसे हडसन के उस तट से आता पहरू कुत्ते का भोकना तक सुनाई पड रहा था, किन्तु वह आवाज इतनी हल्की और अस्पष्ट थी कि उससे मानव के इस वफादार साथी से उसके बहुत दूर होने का ही विचार आता था। बीच-बीच मे अकस्मात् जाग उठे किसी मुर्गे की विलम्बित बाग बहुत-बहुत दूरी पर पहाडियो मे स्थित किसी क्षेत्रगृह से आती प्रतीत होती थी। किन्तु वह भी उसके कान मे स्वप्निल आवाज की भाति सुनाई पडती थी। उसके आस-पास कही जीवन का कोई चिह्न नही था।

हा, कभी-कभी निकटवर्त्ती दलदल से झिल्ली की विषादपूर्ण झकार सुनाई पड जाती थी या ऐसे किसी बडे दादुर की कण्ठध्वनि आती सुन पडती थी जो ठीक तरह से न सो सकने के कारण अकस्मात् अपनी शय्या पर उठ बैठा हो ।

सध्या के समय भूत प्रेतो की जितनी भी कहानिया उसने सुनी थी, अब उसके स्मृतिपट पर उदित होने लगी । रात गहरी, और गहरी होती जा रही थी, लगता था मानो तारे आकाश मे और गहरे डूबते जा रहे है और उडते हुए बादल, बीच बीच मे उन्हे उसकी दृष्टि से छिपा लेते है। इसके पूर्व उसने अपने को कभी इतना अकेला और उदास नही अनुभव किया था । फिर अब वह उसी स्थान के पास पहुच रहा था जहा अनेक प्रेत-कथाओ के दृश्य घटित हुए थे। सडक के बीच मे एक विशाल कन्दपुष्प वृक्ष खडा था, जो पास-पडोस के अन्य वृक्षो के बीच देव-जैसा मालूम पडता था और एक प्रकार का सीमाचिह्न था । उसकी शाखाए ग्रन्थिल, विलक्षण और इतनी बडी थी कि सामान्य वृक्षो के तनो-जैसी मालूम पडती थी और मुडकर करीब-करीब पृथ्वी तक आ गई थी और पृथ्वी से फिर ऊपर उठ गई थी। अभागे ऐंड्री की दु खदायी घटना के साथ इसका नाम जुड गया था, यही उसे बन्दी बनाया गया था इसलिए यह मेजर ऐन्ड्री तरु के नाम से सर्वत्र विख्यात हो गया था । सर्वसाधारण इसे आदर एव मूढ विश्वास-पूर्वक देखते थे । ऐसा कुछ तो इसलिए था कि मेजर के प्रति उनकी सहानुभूति थी, कुछ इसलिए कि उसके विषय मे उन्होने विचित्र दृश्यो एव उससे आने वाले रोदन की आवाज़ो की बात सुन रखी थी ।

जब इछावोड इस वृक्ष के पास पहुचा तो सीटी बजाने लगा, उसे लगा कि उसकी सीटी का प्रत्युत्तर दिया गया है—यद्यपि यह सूखी टहनियो से लग-कर बहनेवाली आधी की आवाज थी । जब वह कुछ और निकट पहुचा तो उसे लगा मानो उसने पेड के मध्य भाग से लटकती कोई सफेद चीज देखी है,—वह रुक गया और सीटी बजाना बन्द कर दिया, किन्तु अच्छी तरह देखने पर मालूम हुआ कि वस्तुत उतनी जगह बिजली गिरने से छिल गई है और अन्दर का सफेद गूदा दिखाई देने लगा है । अकस्मात् उसने किसी की कराह सुनी, उसके दात बज उठे और उसके घुटने काठी से टकरा गए, यद्यपि यह आवाज वायु-प्रकम्पित एक बडी डाल के दूसरी से रगडने के कारण पैदा हुई थी । वह पेड के पास से तो सुरक्षित गुजर गया, किन्तु उसके सामने नये विघ्न खडे हो गए ।

वृक्ष से लगभग दो सौ गज आगे एक छोटा सोता सडक को लाघता दल-दली और घने वन से भरी 'विलीज दलदल' नामक घाटी की ओर चला गया था। सोते पर से सडक को पार करने के लिए टेढे-मेढे कुछ कुन्दे रख दिए गए थे। वे ही पुल का काम देते थे। सडक के उस तरफ जहा से सोता जगल मे प्रवेश करता था,—ओक और शाह बलूत वृक्षो के एक झुरमुट पर वन्य द्राक्षालताए इस तरह छा गई थी कि वह स्थान अधेरी गुफा-जैसा हो रहा था। इस पुल पर से गुज़रना कडी परीक्षा की बात थी। ठीक, इसी जगह अभागा ऐन्ड्री पकडा गया था और उन शाह बलूतो एव द्राक्षालताओ से बने गह्वर मे ही छिपे साहसी सैनिको ने उसपर हमला किया था। तभी से इसे भुतहा नाला कहा जाता है और अधेरा होने के बाद इसे अकेला पार करनेवाले स्कूली लडके का मन भयप्रद भावनाओ से भर जाता है।

जब इछाबोड नाले के निकट पहुचा, उसका हृदय धडकने लगा, फिर भी उसने अपनी सम्पूर्ण दृढता को समेटकर अपने घोडे की पसलियो पर आधी कोडी ठोकरे लगाईं और पुल को तेजी से पार करने का यत्न किया, किन्तु आगे की ओर बढने की जगह दुष्ट जानवर बगल मे घूम गया और बाड की ओर दौडा। इछाबोड का भय देर होने से बढता जा रहा था, उसने लगाम से दूसरी ओर मोडने के लिए झटका दिया और दूसरे पाव से एड लगाई, पर सब व्यर्थ हुआ, यह सच है कि उसका घोडा चल पडा परन्तु दौडा वह सडक के उस पार झडबेरियो की झाडियो मे कूदने के लिए। अब स्कूल मास्टर ने गन पाउ-डर की मरियल पसलियो पर चाबुक और ठोकर दोनो का प्रहार करना शुरू किया। फुफकारता और हिनहिनाता घोडा दौडा किन्तु पुल के पास पहुचते ही सहसा खडा हो गया जिससे उसका सवार सिर के बल गिरते-गिरते बचा। ठीक इसी क्षण पुल के पास वाले दलदल से आई एक पगध्वनि इछाबोड के कानो को सुनाई पडी। उसने देखा कि झुरमुट की गहरी छाया मे, नाले के किनारे, एक विशाल, कदाकार, काली, ऊची चीज खडी हुई है। वह हिलती-डुलती नही है बल्कि चिन्तित मुद्रा मे खडी है—उस विशाल राक्षस के समान जो यात्री पर टट पडने को तैयार हो।

डरे हुए शिक्षक के सिर के बाल भय के मारे खडे हो गए। अब क्या किया जाए? लौट पड़ने और भाग जाने के लिए बहुत विलम्ब हो चुका था, फिर

भागने पर भी प्रेत या पिशाच के हाथ से बच निकलने की क्या सभावना थी, क्योकि वह तो हवा के पखो पर उड सकता है ? इसलिए साहस का प्रदर्शन करते हुए उसने हकलाती आवाज मे पूछा—तुम कौन हो ? कोई उत्तर नही मिला। अब उसने और ज्यादा उत्तेजित स्वर मे सवाल दोहराया। फिर भी कोई उत्तर नही। एक बार फिर उसने अडिग गन पाउडर पर चाबुक मारी, और आखे मूदकर भजन का एक पद गुनगुनाने लगा। इसी समय वह डरावनी छायामूर्ति हिली और उछलकर एकदम सडक के बीच आ कूदी। यद्यपि रात गहरी और अधेरी थी, फिर भी उस अज्ञात की आकृति को कुछ-कुछ पहिचाना जा सकता था। वह एक बृहदाकार अश्वारोही था तथा काले रग के एक शक्ति-मान् घोडे पर सवार था। उसने ताडना या मैत्री की कोई बात नही की, बल्कि सडक के एक किनारे बूढे गनपाउडर से अन्धपक्ष (पीछे) की ओर खडा रहा। अब तक गनपाउडर का भय एव घबराहट दूर हो चुकी थी और वह निश्चल हो गया था।

इछाबोड को इस विचित्र निशीथकालीन साथी के लिए क्या आकर्षण हो सकता था ? उसे ब्रोम बोस के साथ हुई अश्व पर दौडते हेसियन की घटना याद आ गई, इसलिए उसने उसे पीछे छोड देने की आशा से घोडे को तेज किया। अजनबी ने भी उसी प्रकार घोडे की चाल बढा दी। इछाबोड ने घोडे को रोक लिया और उसके पीछे रह जाने के इरादे से धीरे-धीरे चलाना शुरू किया। दूसरे ने भी वैसा ही किया। अब उसका कलेजा बैठने लगा—उसने भजन की धुन अलापने की चेष्टा की परन्तु उसकी सूखी जीभ तालू से चिपककर रह गई और वह एक स्वर भी न निकाल सका। उस दुराग्रही साथी की उदास एव हठीली चुप्पी मे कुछ ऐसी चीज थी जो बडी रहस्यपूर्ण और डरावनी लगती थी। शीघ्र ही कारण का पता चल गया। ज़रा ऊची जमीन पर चढते ही इछा-बोड ने देखा कि वह आसमान तक खडा, बृहदाकार, नकाब मे ढका है और यह देखकर थरथर काप उठा कि वह सिर कटा भी है। फिर यह देखकर उसका भय और बढ गया कि जो सिर उसके कधो के ऊपर होना चाहिए था वह काठी के उठे अग्रभाग पर धरा हुआ है। अब तो उसका भय हताशा तक पहुच गया। वह गनपाउडर पर ठोकरो और घूसो की वर्षा करने लगा, क्योकि उसे आशा थी कि इस प्रकार वह अपने साथी के चगुल से निकल भागेगा, किन्तु प्रेतात्मा

भी उसी के साथ पूरी गति से दौडी। दोनो ऊबड-खाबड रास्तो पर दौडने लगे, उनकी हर उछाल पर ककड उछलते और चिनगारिया निकलती थी। इछाबोड के नाजुक कपडे हवा मे फरफराने लगे क्योकि उसने अपनी लम्बी पतली काया, भागने की उत्सुकता मे, घोडे के सिर के ऊपर तक फैला रखी थी।

अब वे उस सडक तक पहुच गए थे जो 'निद्रालु खोह' की ओर जाती है, किन्तु गनपाउडर जिस पर भूत सवार हो गया था, सडक की जगह उलटी दिशा मे मुड गया और बाई ओर पहाडियो के नीचे कूद चला। यह मार्ग एक रेतीले खोह की ओर गया था, और लगभग चौथाई मील तक वृक्षपक्तियो की छाया मे आच्छादित रहने के बाद प्रेत-कथा मे प्रसिद्ध पुल को पार करता था और उस पार सफेदी से पुते चर्चवाले टीले को जाता था।

अब तक घोडे मे समाये भय के कारण उसके अकुशल आरोही को, इस दौड मे एक लाभ मिल रहा था, किन्तु जब वह खोह के बीच आधी दूर पहुच चुका था, काठी की तग टूट गई और उसने अनुभव किया कि काठी उसके नीचे से हटकर गिरती जा रही है। उसने उसके अग्रभाग को पकड लिया और उसे सीधी और स्थिर रखने की चेष्टा की, किन्तु उसकी चेष्टा व्यर्थ हुई और दोनो बाहो से गनपाउडर की गर्दन से चिपटकर बडी मुश्किल से अपने को बचा सका। काठी जमीन पर गिर पडी और उसने उसे पीछा करनेवाले द्वारा कुचले जाते हुए सुना। एक क्षण के लिए हैस वान रिपर के रोष का ध्यान उसे आया, क्योकि यह उसकी रविवासरीय काठी थी, किन्तु छोटी-मोटी बाते सोचने के लिए समय कहा था, भूत उसकी पीठ पर सवार हो रहा था और (अकुशल आरोही होने के कारण) उसे अपनी सीट पर जमे रहना ही कठिन हो रहा था, कभी वह एक तरफ, कभी दूसरी तरफ खिसक पडता था और कभी उछलकर घोडे की रीढ की उठी हुई हड्डियो पर गिरता था— ऐसे समय उसे ऐसी चोट लगती थी कि जान पडता था उसका शरीर टुकडे-टुकडे हो जायगा।

वृक्षो के बीच राह देख वह इस आशा से प्रफुल्ल हो उठा कि चर्च-सेतु निकट ही है। नाले के हृदय मे किसी रजत-तारिका की कापती परछाई ने उसे बता दिया कि वह गलत नही है। उसने चर्च की दीवारे दूर के वृक्षो के नीचे चमकती देखी। उसे याद आ गया कि ब्रोम बोस का प्रेत-प्रतियोगी यही कही लुप्त हो गया था। इछाबोड ने सोचा—यदि मै किसी तरह उस पुल तक पहुच

जाऊ तो समझूगा कि सुरक्षित हू । इसी समय उसने काले घोडे को अपने बिल्कुल पीछे हाफते और फूत्कार करते सुना, उसने यहा तक कल्पना की कि घोडे की श्वास उसे लग रही है । अब उसने एक और सक्षोभकारी ठोकर घोडे की पसलियो मे मारी, बस, बूढा गनपाउडर पुल के ऊपर कूद पडा । वह प्रतिध्वनिशील तख्तो पर गर्ज उठा और दूसरे तट पर पहुच गया । अब इछाबोड ने पीछे की ओर यह जानने के लिए देखा कि उसका पीछा करनेवाला, नियमानुसार, आग और गधक की लपटो मे जल गया या नही । उसी समय उसे दिखाई पडा कि भूत अपनी रकाब मे उठ खडा हुआ है और अपना सिर उठाकर उसपर फेक रहा है । इछाबोड ने उस भयानक क्षेप्यास्त्र को रोकने की चेष्टा की, किन्तु तबतक बहुत देर हो चुकी थी और वह बडे ज़ोर के साथ उसके सिर से टकराया—बस, वह सिर के बल धूल मे गिरा और गनपाउडर, काला घोडा और प्रेत सवार एक अधड की भाति पास से निकल गए ।

दूसरे दिन प्रभातकाल मे घोडे को अपने मालिक के फाटक के पास घास चरता हुआ पाया गया । उसकी पीठ पर काठी नही थी, लगाम उसके पैरो के नीचे पडी हुई थी । इछाबोड ने कलेवे के समय अपनी शक्ल नही दिखाई,—भोजन का समय हो गया किन्तु इछाबोड का पता नही । बच्चे स्कूल पहुचे और नाले के किनारे बेकार फिरने लगे, परन्तु स्कूल मास्टर का पता नही । अब हैस वॉन रिपर को गरीब इछाबोड तथा अपनी काठी के विषय मे कुछ चिन्ता होने लगी । तलाश शुरू हुई और बडी दौड-धूप के बाद उसका पता लगा । चर्च जानेवाली सडक के एक भाग पर काठी धूल मे दबी हुई मिली, फिर लोगो ने देखा कि घोडो के खुर सडक मे गडे हुए है और निश्चय ही यहा उसे बडी तेजी से भगाया गया है । वे निशान पुल तक चले गए है, जिसके उस पार नाले के एक चौडे भाग के किनारे, जहा जल गहरा और काला हो गया है, अभागे इछाबोड की टोपी पडी हुई है और उसी के पास फटा हुआ एक कुम्हडा पडा है ।

नाले मे खोज की गई किन्तु स्कूल मास्टर का शव नही मिला । हैस वॉन रिपर उसकी सम्पत्ति का मृत्युलेख-प्रवर्त्तक था । उसने उस गठरी की जाच की जिसमे उसकी सारी पार्थिव सम्पदा थी । उसमे दो कमीजे, गले के दो पट्टे, दो ऊनी जुर्राब, डोरियो के दो पुराने घुटन्ने, एक मुर्चहा उस्तरा, जगह-जगह मुडे हुए पन्नोवाली भजनो की एक कापी तथा एक टूटी तारवशी प्राप्त हुई । जहा

तक विद्यालय के फर्नीचर एव ग्रन्थो का सवाल है, वे समाज के थे। हा, काटन माथेर-लिखित जादू टोने का इतिहास (हिस्ट्री श्राफ विचक्रैफ्ट), न्यू इग्लैण्ड अलमन्तक (नई इग्लैण्ड जत्री) और स्वप्नो एव भाग्य का फल बतानेवाली एक और किताब इछाबोड की अवश्य थी। इस अन्तिम किताब मे फुल्सकेप आकार के कागज के एक पन्ने पर वॉन तैसेल की उत्तराधिकारिणी के सम्मान मे लिखी कुछ कविताओ की नकल करने का निरर्थक प्रयत्न किया गया था। इन जादू-टोनेवाली पुस्तको एव कविता को हैस वॉन रिपर ने आग के हवाले कर दिया, और उस समय से अपने बच्चो को स्कूल न भेजने का निश्चय कर लिया और कहा कि ऐसी पढाई-लिखाई से कुछ फायदा होनेवाला नही है। जो भी नकदी स्कूल मास्टर के पास रही होगी, और उसे उस तिमाही का वेतन एक दो दिन पहले ही मिला था, उसे वह गायब होने के समय अपनी ही जेब मे रखे रहा होगा।

अगले रविवार को जब लोग चर्च मे एकत्र हुए तो इस रहस्यमय घटना की बडी चर्चा हुई, उसके विषय मे कितनी ही कल्पनाए की गई। चर्च-प्रागण, पुल तथा जहा हैट मिला था, वहा कितने ही दर्शक और कथक्कड एकत्र हुए। ब्राउबेर, बोस तथा और भी कितने ही लोगो की घटनाए याद की गई और सब कहने-सुनने तथा वर्तमान दुर्घटना के लक्षणो के साथ तुलना करने के बाद, लोग इस निश्चय पर पहुचे कि सिरकटा सवार ही इछाबोड को उठा ले गया। चूकि इछाबोड कुवारा था, और किसी का कर्जदार नही था, इसलिए किसी ने उसके विषय मे ज्यादा माथापच्ची नही की। स्कूल खोह के एक दूसरे हिस्से मे हटा दिया गया और दूसरा शिक्षक वहा शासन करने लगा।

यह सच है कि एक बूढे किसान ने, जो कई साल बाद काम से न्यूयार्क गया था और जिससे इस भुतही घटना का ब्योरा प्राप्त हुआ था, लौटकर गाव मे यह बताया कि इछाबोड क्रेन अब भी जीवित है, और उसने अपनी पुरानी जगह कुछ तो भूत तथा हैस वान रिपर के भय से, और कुछ उत्तराधिकारिणी कन्या द्वारा अकस्मात् निराश कर दिए जाने के दुख से छोड दी और देश के एक दूर भाग मे अड्डा जमाया। वहा वह स्कूल भी चलाता था और कानून का अध्ययन भी करता था। बाद मे उसने वकालत शुरू की, राजनीतिज्ञ बन गया, चुनाव मे भाग लिया, अखबारो के लिए लेख लिखे और अन्त मे टेन पाउण्ड कोर्ट

(दस पौण्डी अदालत) का न्यायपति बना दिया गया है। अपने प्रतियोगी के लुप्त हो जाने के बाद ब्रोम बोस ने किशोरी कत्रिना के साथ विजयगर्वपूर्वक विवाह कर लिया। जब भी इछाबोड की कहानी उसके सामने कही जाती तो लगता था कि वह घटना के विषय मे बहुत कुछ जानता है। कुम्हडे के जिक्र पर वह सदा अट्टहास कर उठता था। इसलिए लोगो को सन्देह था कि वह जितना कहता है घटना के विषय मे उससे कही ज्यादा जानकारी उसे है।

बूढी देहाती गृहिणिया, जो इन बातो की सर्वोत्तम निर्णायिकाए होती है, आज तक कहती है कि इछाबोड अतिप्राकृत साधनो से उडा ले जाया गया, और पास-पडोस मे शिशिरकालीन साध्य अग्निपुज के सामने कही जानेवाली यह एक प्रिय कहानी है। अब पुल पहले से भी ज्यादा अन्धविश्वासपूर्ण भय का स्थान बन गया है, और शायद इसी कारण इधर कुछ वर्षो से सडक इस तरह मोड दी गई है कि वह चक्की वाली तलैया के किनारे-किनारे चर्च को चली जाती है। सूना हो जाने के कारण स्कूल-कक्ष टूट-फूट गया है और लोग कहते है कि उसमे अभागे स्कूल मास्टर की प्रेतात्मा आती है, और ग्रीष्म ऋतु की सध्या मे खेत जोतकर लौटनेवाले छोकरो को कई बार ऐसा लगा है कि उन्होंने निद्रालु खोह के शान्त एकान्त मे पहुचने पर उसके द्वारा गाये जानेवाले करुण भजन की दूर से आती आवाज सुनी है।

पुनर्लेखांकित

श्री निकरबोकर की हस्तलिपि मे प्राप्त

पूर्वोक्त कथा प्राय उन्ही शब्दो मे दी गई है जिनमे मैने उसे मैनहट्टोज के प्राचीन नगर की महापालिका की एक बैठक मे सुना था। उस बैठक मे उसके अनेक प्रवीणतम एव महत्तम सदस्य उपस्थित थे। कथाकार एक खुशमिजाज, सादा एव सुजनतापूर्ण प्रौढ व्यक्ति था। वह काले और हल्के मिश्रित रग का गगाजमुनी कपडा पहिने था और उसका चेहरा करुण हास्यपूर्ण था। मुझे बहुत सन्देह था कि वह गरीब है—क्योकि वह मनोरजक बनने का बडा प्रयत्न कर रहा था। जब उसकी कहानी समाप्त हो गई, तो बडी हसी-खुशी प्रकट की गई और उसका बडा अनुमोदन हुआ—विशेषत दो-तीन एल्डरमैनो द्वारा, जो

बैठक मे ज्यादातर समय सोते रहे थे। किन्तु वहा एक लम्बे शुष्कदर्शन तथा अधोनत भृकुटियो वाले बूढे भद्रजन ऐसे थे जो आदि से अन्त तक कठोर मुख-मुद्रा बनाये बैठे रहे। वे जब तब अपनी भुजाए मोड लेते, सिर झुका लेते तथा फर्श की ओर देखने लगते थे, जैसे अपने मन से किसी सन्देह को उलट-पलट रहे हो। वे आपके ऐसे विचक्षण आदमियो मे थे जो कभी हसते नही—किन्तु जिनके न हसने का कोई कारण होता है, और वे ऐसा करते है जब कानून उनके पक्ष मे होता है। जब लोगो के कहकहे खत्म हो गए और शान्ति छा गई तो उन्होने एक हाथ अपनी कुर्सी के हत्थे पर झुकाया और दूसरा हाथ कमर पर रखे, सिर के हल्के परन्तु बडे सयत कम्पन तथा भौहो के आकुञ्चन के साथ पूछा कि कहानी का नैतिक तत्त्व क्या है और वह क्या प्रमाणित करती है,?

कथाकार, जो इतने श्रम के बाद कुछ आराम पाने के लिए इस समय मदिरा का ग्लास अपने ओठो से लगा रहा था, क्षण भर के लिए रुक गया, अपने प्रश्नकर्त्ता की ओर असीम श्रद्धा की दृष्टि से देखा, और ग्लास को धीरे-धीरे नीचे टेबुल तक ले जाने के बाद बोला कि कहानी बडी तर्कना के साथ यह सिद्ध करती है—

कि जीवन मे कोई भी स्थिति ऐसी नही है जिसके अपने लाभ एव आनन्द न हो—बशर्ते हम किसी मज़ाक को उसी रूप मे ग्रहण करे जिस रूप मे उसे पाते है।

कि जो प्रेत-सैनिको के साथ दौड लगाता है उसे सभवत उसका बुरा परिणाम भोगना पडेगा।

और एक देहाती स्कूल मास्टर को डच उत्तराधिकारिणी द्वारा परिणय-बन्धन से इन्कार करना राज्य मे उसकी उच्च पदोन्नति की सीढी है।

इस व्याख्या के बाद सयत बूढे भद्रजन की भौहे एक दूसरे के बहुत निकट आ गई और मालूम पडा कि रूपक की इस तर्कसम्मत व्याख्या ने उन्हे बडी परेशानी मे डाल दिया है। उधर गगाजमुनी कपडे वाले आदमी ने उसकी ओर विजयपूर्ण मुद्रा से देखा। अन्त मे सयत व्यक्ति ने कहा—आप जो कहते है, बहुत अच्छी बात है किन्तु मेरे ख्याल से फिर भी कहानी मे कुछ अत्युक्ति जान पडती है, एक दो बातो पर मुझे सन्देह है।

कथाकार ने कहा—विश्वास की बात है, महोदय! और जहा तक विषय-वस्तु का सवाल है, मुझे खुद उसकी आधी बातो मे भी विश्वास नही है।

डी. के.

उपसंहार[1]

गो लिटिल बुक, गाड सेण्ड दी गुड पैसेज,
ऐण्ड स्पेशली लेट दिस बि दाई प्रेयर,
अनटु दैम आल दैट दी विल रीड आर हियर,
व्हेयर दाउ आर्ट रांग, आफ्टर देयर हेल्प टु काल
दी टु करेक्ट इन एनी पार्ट आर आल।

—चासर

लघु पुस्तक तू जा जगती में, तेरा मार्ग करें प्रभु सुखकर।
सब पढने-सुननेवालो से यही प्रार्थना हो तव सुन्दर।
किसी अंश मे या सब मे ही त्रुटिया हो यदि तेरे अन्दर।
वे सब कृपया कर सहायता तुझे बना देवेंगे शुचितर॥

—चासर (अपनी "बेली डेम सैस मर्सी" मे)

"स्केच-बुक" (चित्राकन-पुस्तिका या चित्राधार) की द्वितीय पोथी को समाप्त करते हुए लेखक उस अनुग्रह के लिए तथा अजनबी के रूप मे उसके साथ जो कृपापूर्ण व्यवहार किया गया है उसके लिए गहरी कृतज्ञता प्रकट करता है। समीक्षको की जाति को भी, भले ही दूसरे लोग उसके बारे मे चाहे जो कहे, उसने अत्यन्त भद्र एव सुशील पाया है। यह सच है कि उनमे से हर एक ने, अपनी बारी मे, एक-या दो लेखो पर आपत्ति की है और इन वैयक्तिक अपवादो के कारण, यदि उन सबको एकत्र करके देखा जाए, तो सारी कृति ही निन्दा योग्य ठहरती है, किन्तु लेखक को यह देखकर सान्त्वना प्राप्त हुई है कि जिसकी

---

१. लन्दन संस्करण की द्वितीय पोथी (वाल्यूम) की परिसमाप्ति करते हुए।

एक ने खासतौर पर निन्दा की है उसी की दूसरे ने विशेषरूप से प्रशसा की है । इस प्रकार कृति की प्रशसा को निन्दा के विरुद्ध तोलने पर उसे ज्ञात होता है कि सब मिलाकर लोगो ने उसकी प्रशसा ही अधिक की है, बल्कि आवश्यकता से अधिक प्रशसा की है ।

वह जानता है कि उसे उदारतापूर्वक जो सलाह दी गई है, उसके अनुसार न चलने पर इस कृपा के नष्ट हो जाने का खतरा है, क्योकि जहा इतनी अधिक मात्रा मे मूल्यवान् परामर्श नि शुल्क दिया जाता है वहा भी यदि वह दिशाभ्रष्ट हो जाए तो आदमी का अपना ही दोष है । किन्तु अपनी सफाई मे वह इतना ही कह सकता है कि कुछ समय तक उसने निश्चय कर लिया था कि पहली पोथी पर जो सम्मतिया प्रकट की गई थी उन्ही के अनुसार वह दूसरी पोथी मे चलने की चेष्टा करेगा । किन्तु शीघ्र ही सत्परामर्शो की परस्पर-प्रतिकूलता के कारण उसकी गाडी रुक गई । एक ने उसे परिहासजनक न बनने की सलाह दी, दूसरे ने कहा कि करुणात्मक बनने से वचो, तीसरे ने उसे विश्वास दिलाया कि वह वर्णन मे तो चल सकता है किन्तु वृत्तात्मक बनने की चेष्टा उसे नही करनी चाहिए, चौथे ने कहा कि उसे कहानी बनाने की कला का अच्छा ज्ञान है, और चिन्तन की मुद्रा मे वह सचमुच मनोरजक लगता है, किन्तु यदि वह समझता हो कि उसमे परिहास की शक्ति है तो उसकी भारी भूल है ।

इस प्रकार अपने मित्रो के परामर्श से परेशान होकर, जिसमे से प्रत्येक ने एक विशेष मार्ग उसके लिए बन्द कर दिया था किन्तु और सारी दुनिया चहल-कदमी के लिए खुली छोड दी थी, उसने अनुभव किया कि उन सबके परामर्शो के अनुसरण का मतलब होता है—चुपचाप खडे रह जाना, निष्क्रिय हो रहना। कुछ समय तक तो वह किंकर्त्तव्यविमूढ बना रहा, पर फिर सहसा उसके मन मे विचार उठा कि उसने जिस प्रकार आरम्भ किया था, उसे ही जारी रखे । उसकी पुस्तक बहुमुखी होने और विविध रुचियो के मनुष्यो के लिए लिखी जाने के कारण, यह आशा नही की जा सकती कि कोई आदमी सारी पुस्तक से प्रसन्न और सन्तुष्ट होगा, किन्तु यदि इसमे प्रत्येक पाठक को अपने योग्य कुछ सामग्री मिल जाती है तो उसका उद्देश्य पूर्णतया सिद्ध हो जाता है । विविध सामग्रियोवाले एक टेबुल पर बैठे सब अतिथियो को सभी तश्तरियो मे समान स्वाद नही मिलता । किसी को भुने छोने पर घृणा होती है, दूसरा कढी या

श्रौर किसी वस्तु को तिरस्कारपूर्वक देखता है, तीसरा मृगमास श्रौर वनकुक्कुट के पुरातन स्वाद को सहन नही कर पाता, श्रौर चौथे का पुरुष-उदर इधर-उधर महिलाश्रो के लिए पडी हल्की वस्तुश्रो को घृणापूर्वक देखता है। श्रपनी-श्रपनी बारी मे प्रत्येक वस्तु किसी के द्वारा निन्दित है, फिर भी रुचि-वैभिन्न्य के उस समूह मे शायद ही कोई तश्तरी किसी के द्वारा चखे श्रौर प्रशसित हुए बिना लौट जाती हो।

इन बातो का विचार कर दूसरी पोथी को भी, उसने पहली पोथी की ही भाति, विविधतापूर्ण ढग पर सजाया है। वह पाठक से इतना ही श्रनुरोध करना चाहता है कि उसे जहा-तहा कोई भली लगनेवाली चीज मिल जाए तो वह यह विश्वास रखे कि वह उसके जैसे प्रबुद्ध पाठको के लिए ही विशेष रूप से लिखी गई है, साथ ही उससे यह भी प्रार्थना है कि यदि वह कोई चीज़ नापसन्द करता है तो उसे सहन करले—यह समझकर कि लेखक को उसकी श्रपेक्षा कम सस्कृत रुचि के श्रादमियो के लिए उसे लिखना पडा है।

गम्भीरतापूर्वक ले तो लेखक को श्रपने ग्रन्थ की श्रनेकानेक त्रुटियो एव श्रपूर्णताश्रो का पता है। वह यह भी भलीभाति जानता है कि ग्रन्थलेखन की कला मे वह कितना श्रनभ्यस्त श्रौर श्रक्षम है। उसकी विचित्र स्थिति से उत्पन्न झिझक के कारण उसकी श्रक्षमता श्रौर बढ गई है। वह श्रपने को एक श्रजनबी देश मे लिखता हुश्रा पाता है श्रौर वह एक ऐसी जनता के सम्मुख उपस्थित हो रहा है जिसे वह बचपन से ही श्रातक एव श्रद्धापूर्वक देखता श्राया है। वह उसका समर्थन श्रनुमोदन पाने के लिए श्राकुल है किन्तु श्रनुभव करता है कि वह श्राकुलता ही निरन्तर उसकी शक्तियो को शिथिल कर रही है श्रौर उस सहजता एव श्रात्मविश्वास से उसे रहित करती जाती है जो सफल श्रध्यवसाय के लिए श्रावश्यक है। फिर भी उसके साथ जो कृपापूर्ण व्यवहार किया गया है उससे उसे श्रागे बढते जाने का प्रोत्साहन मिला है श्रौर उसे श्राशा है कि समय श्राने पर वह दृढतर श्राधार पर खडा हो सकेगा। इसलिए वह कुछ प्रयास करता, कुछ हिचकिचाता, श्रपने सौभाग्य पर चकित तथा श्रपने दुस्साहस पर स्तभित, श्रागे चला जा रहा है।

परिशिष्ट

वेस्टमिस्टर एब्बी के विषय मे टिप्पणी

छठी शताब्दी की समाप्ति के लगभग ब्रिटेन पर सैक्सन लोगो का राज्य था, उस समय वह बर्बर अवस्था मे था, चारो ओर मूर्तिपूजा प्रचलित थी। उसी जमाने की बात है कि एक दिन रोम के बाजार मे पोप ग्रीगोरी महान् कुछ बिकते हुए एग्लोसैक्सन युवको के सौन्दर्य को देखकर मुग्ध हो गए और उन्होने इन सुदर्शन किन्तु तमसाच्छन्न द्वीपवासियो के बीच धर्मोपदेश देने के लिए मिशनरियो—धर्मप्रचारको को भेजने का निश्चय किया। इस जानकारी से अपने इस निश्चय मे उन्हे और प्रोत्साहन मिला कि एग्लो-सैक्सन राजाओ मे सबसे शक्तिमान्, केण्ट के बादशाह ईथेलबर्ट ने पेरिस के बादशाह की एक मात्र कन्या ईसाई राजकुमारी बर्था से विवाह किया है, और विवाह के पूर्व ठहराव हो चुका है कि उसे अपने धर्म के अनुसार चलने की पूरी स्वतन्त्रता रहेगी।

विचक्षण धर्माध्यक्ष को ज्ञात था कि धार्मिक निष्ठा के मामलो मे स्त्री का कितना प्रभाव होता है। उन्होने तुरन्त कैण्टरबरी स्थित ईथेलबर्ट के दरबार मे रोमन साधु आगस्टाइन को, चालीस पादरियो के साथ, इस उद्देश्य से रवाना किया कि राजा को ईसाई बनाया जाए और उसके द्वारा द्वीप मे पैर जमा लिया जाए।

ईथेलबर्ट ने बडी सजगता के साथ उनका स्वागत किया और विदेशी पुरोहितवर्ग के प्रति अविश्वास एव उनके जादूटोने से भयभीत होने के कारण खुले मे उनसे भेट और चर्चा की। अन्त मे वे उसे उसकी पत्नी की भाति ही निष्ठावान् ईसाई बनाने मे सफल हो गए। राजा के धर्मपरिवर्तन के कारण प्रजा का धर्म भी बदल गया। आगस्टाइन के उत्साह एव सफलता का पुरस्कार उसे यह मिला कि उसे कैण्टरबरी का आर्कबिशप बना दिया गया और समस्त ब्रिटिश चर्चों के ऊपर उसके अधिकार को मान्यता दी गई।

ईसाई धर्म स्वीकार करनेवाले धर्मान्तरकारियो मे एक प्रमुख व्यक्ति था सेबर्ट का सेगेबर्ट। वह पूर्वी सैक्सनो का राजा और ईथेलबर्ट का भाजा था और लण्डन मे राज्य करता था। आगस्टाइन के साथ आनेवाले मेलीटस नामक व्यक्ति को वहा का बिशप बनाया गया।

सेबर्ट ने अपने धार्मिक उत्साह मे, ६०५ मे, नगर के पश्चिम नदी किनारे, अपोलो (सूर्यदेवता) के मन्दिर के भग्नावशेष पर एक आश्रम (विहार, मोनैस्ट्री) बनवाया। सच पूछे तो यही वेस्टमिस्टर एब्बी की वर्तमान इमारतो का उद्गम है। चर्च के सस्कार एव सत पीटर के प्रति उसके समर्पण के लिए बडी तैयारिया की गई थी। निश्चित दिन को प्रभात मे बिशप मेलीटस बडी आनबान और पवित्रता के साथ अनुष्ठान करने चले। जब वे भवन के समीप पहुचे तो उन्हे एक मछुवा मिला जिसने उन्हे बताया कि अब वहा जाना व्यर्थ है क्योकि अनुष्ठान समाप्त हो चुका है। बिशप उसकी ओर आश्चर्य से देखने लगे। मछुवे ने कहा कि पिछली रात को जब वह टेम्स मे अपनी नाव पर था, सत पीटर उसके सामने प्रकट हुए और उन्होने कहा कि वह रात मे ही चर्च का सस्कार एव प्राण-प्रतिष्ठा स्वय करेगे। तदनुसार देवदूत ने चर्च के अन्दर प्रवेश किया। उनके प्रवेश करते ही चर्च सहसा आलोकित हो उठा। स्वर्गीय सगीत और अगुरु-धूम के बादलो के बीच बडी धूमधाम से अनुष्ठान सम्पन्न हुआ। इसके बाद देवदूत पुन नाव पर आए और उसे अपना जाल नदी मे फेंकने के लिए आदेश किया। उसने वैसा ही किया और चमत्कारपूर्ण ढग पर बहुत अधिक मछलिया फस गईं। उसे आज्ञा दी गई कि इनमे से एक मछली बिशप को देना और कह देना कि देवदूत ने चर्च का सस्कार करने के उत्तरदायित्व एव आवश्यकता से उन्हे मुक्त कर दिया है।

मेलीटस बहुत चौकस आदमी थे, उन्हे ऐसी बातो मे कम ही विश्वास था। इसलिए उन्होने मछुवे की कथा की पुष्टि करनी चाही। उन्होने चर्च का द्वार खोला। देखा कि मोमबत्तिया अब तक लगी है और क्रूस, पवित्र जल इत्यादि रखे है। जगह-जगह तेल छिडका हुआ है तथा विशाल अनुष्ठान के अन्य चिह्न मौजूद हैं। अब भी यदि थोडा-बहुत सन्देह रहा तो मछुवे द्वारा उस मत्स्य के उपस्थित करने पर जिसे बिशप को भेट करने की आज्ञा दी गई थी, वह भी पूर्णतया दूर हो गया। इन सबको न मानना तो प्रत्यक्ष दर्शन का तिरस्कार करना

होता । भले बिशप को विश्वास करना पडा कि स्वय सत पीटर ने प्रकट होकर चर्च का सस्कार किया है । इसलिए वे उसे करने से रुक गए ।

उपर्युक्त परम्परा एव विश्वास के कारण ही किंग एडवर्ड, दि कन्फेसर ने यहा एक धार्मिक भवन बनवाने और उसे समर्पित करने का निश्चय किया । उसने पुराने चर्च को गिरवा दिया और उसकी जगह १०४५ मे दूसरे चर्च का निर्माण कराया । यही एक भव्य चैत्य मे उसके अवशेष दफनाये गए ।

इसमे पुन यदि पुनर्निर्माण नही तो परिवर्तन हेनरी तृतीय ने १२२० मे कराया, तभी से यह अपने वर्तमान रूप मे आने लगा ।

हेनरी अष्टम के जमाने मे इसका कान्वेण्टवाला रूप समाप्त हो गया, सम्राट् ने साधुओ को निकाल बाहर किया और वहा की सम्पूर्ण आय अपने कब्जे मे कर ली ।

एडवर्ड दि कन्फेसर के स्मृतिचिह्न

१६८८ मे गिर्जाघर के एक भजनीक ने एक विचित्र वक्तव्य छपवाया था । इसका नाम था पाल प्राई । इस वक्तव्य मे उसने एडवर्ड दि कन्फेसर के शव के अपनी समाधिगुफा मे छ सौ वर्षो से भी अधिक समय तक शान्तिपूर्वक सोते रहने के बाद उसकी अस्थियो के सम्बन्ध मे अपने अन्वेषण का वर्णन किया था । इस खोज मे उसने मृत सम्राट के सलीब एव सोने की चेन को निकाल लिया था । उसका कहना है कि उसने भजन मण्डली मे १८ वर्ष तक काम किया था । इस अवधि मे उसके भजनीक बन्धु तथा एब्बी के धवलकेश परिचारको को यह बात भलीभाति ज्ञात थी कि सम्राट् एडवर्ड का शव एक ऐसे शवाधान या बक्स मे बन्द है जो उसकी स्मृति मे बने चैत्य के ऊपरी भाग मे अस्पष्ट रूप से दिखाई पडता है । किन्तु एब्बी के किसी भी किस्से मे निकट से उसका निरीक्षण करने की बात नही कही गई थी । अन्त मे योग्य वक्तव्यदाता अपनी जिज्ञासा की शान्ति के लिए सीढी लगाकर उसकी सहायता से शवाधान तक पहुचा, वहा पहुचने पर उसे मालूम हुआ कि वह काष्ठनिर्मित है, काष्ठ बहुत मजबूत और दृढ है तथा लोहे की पट्टियो से कसा हुआ एव सुरक्षित है ।

बाद मे जब १६८५ मे जेम्स द्वितीय के राज्याभिषेक मे मचान को नीचे उतारा गया तो दिखाई पडा कि शवाधान टूटा हुआ है, उसके ढक्कन मे एक छेद है,

जो शायद कारीगरो द्वारा सयोगवश हो गया होगा। किन्तु तबतक राजकीय भस्म के पवित्र निक्षेपागार के साथ किसी ने छेडछाड करने का यत्न नही किया किया जबतक कि कई सप्ताह बाद परिस्थिति का ज्ञान उक्त भजनीक को नही हुआ। वह दो ऐसे मित्रो को साथ लेकर एब्बी पहुचा, जो समान रुचि के थे और जो समाधि को देखना चाहते थे। वह कही से एक सीढी ले आया और उसके सहारे चढकर पुन शवाधान तक पहुचा, और जैसा कि सुना था, उसने ढक्कन मे छ इच लम्बा और चार इच चौडा एक छेद देखा। यह छेद बाये सीने के सामने ही था। उसमे हाथ डालकर, अस्थियो को टटोलते हुए उसने कधे के नीचे से एक सलीब निकाला जो खूब अलकृत एव एनामेल-युक्त था और चौबीस इच लम्बी एक सोने की चेन मे बधा हुआ था। दोनो चीजे उसने अपने जिज्ञासु मित्रो को दिखलाई, जो उसी की तरह आश्चर्यान्वित हो गए।

वह कहता है—"जब मैने क्रूस और चेन को शवाधान के बाहर निकाला तभी तभी **मैने सम्राट् का सिर छेद के सामने खींचकर देखा**। वह अच्छी हालत मे था और दृढ था, ऊपर तथा नीचे के जबडे दात से पूर्ण थे और लघु किरीट के रूप मे एक इच से कुछ अधिक चौडी सोने की पट्टी कनपटियो को घेरती चली गई थी। शवाधान मे श्वेत सूती वस्त्र तथा सोनहले रग के फूलो से युक्त रेशमी कपडा भी था जो देखने मे नवीन लगता था किन्तु जरा भी दबाव पडते ही मालूम पडा कि वह प्राय विनष्ट एव जीर्ण हो चुका है। शवाधान मे उसकी सम्पूर्ण अस्थिया थी, इसी प्रकार बहुत धूल भी थी। मैने उन्हे उसी रूप मे छोड दिया।"

एडवर्ड दि कन्फेसर के ककाल को इस तरह अश्रद्धापूर्वक उसके शवाधान मे एक निरीक्षणकारी भजनीक द्वारा इधर-उधर खीचे जाने तथा ढक्कन के छेद से उसके मुख के सामने मुह बिचकाने से अधिक अच्छा पाठ मानवीय अहकार के लिए और क्या हो सकता है ?

अपनी जिज्ञासा शान्त कर लेने बाद भजनीक ने सलीब और चेन को पुन शवाधान मे रख दिया और अपने अन्वेषण की सूचना देने के लिए डीन की खोज की। चूकि डीन उस समय नही मिले और उसे भय हुआ कि दूसरे लोग इस "पवित्र कोष" को निकाल न ले, वह एक भजनीक बन्धु को लेकर दो या तीन घण्टे बाद पुन वहा पहुँचा और उसकी उपस्थिति मे उसने वे स्मृतिचिह्न वा

अवशेष फिर से निकाले। बाद मे उसने घुटनो के बल झुककर उन्हें सम्राट् जेम्स के हवाले कर दिया। तदनन्तर सम्राट् ने पुराने शवाधान को एक नये अत्यन्त सुदृढ शवाधान के अन्दर रखवा दिया। इस नये शवाधान का "प्रत्येक तख्ता दो इच मोटा था और वे सब लोहे की लम्बी कीलो से एक मे जुडे हुए थे। अब भी वे उसकी इस पवित्र सजगता के प्रमाण-स्वरूप वहा मौजूद है कि उनमे सुरक्षित भस्मी को कोई भ्रष्ट न करे।"

चूकि इस चैत्य का इतिहास शिक्षा से परिपूर्ण है, मैं आधुनिक समय मे लिखित उसका एक वर्णन यहा दे रहा हू। एक अग्रेज़ लेखक ने लिखा है—"यह इकला और परित्यक्त चैत्य जो कुछ किसी जमाने मे था, आज उसका ककाल-मात्र होकर रह गया है। ठोस मसाले पर बने इसके दीप्तिमय अलकरण की चन्द धुधली रेखाए भर रह गई है और वे सूर्य की किरणो मे सदा दमकती रहती है। —अब केवल दो सर्पिल स्तम्भ बच गए है। काष्ठनिर्मित अयनिक ढक्कन बहुत टूट गया है और धूल से ढका हुआ है। जहा तक पहुचा जा सकता है सब जगह मौज़ेक निकाल लिया गया है। खिडकियो के एक फुटे वर्गाकार शीशे और बढिया सगमर्मर के पॉच गोल टुकडे भर रह गए है" —माल्कम

'स्केच' (पुस्तक) में वर्णित एक चैत्य का लेख

"यहा सोते है न्यूकैसिल के लायल ड्यूक और उनकी डचेस—उनकी दूसरी पत्नी, जिससे उनको कोई सन्तान न थी। उसका नाम था मार्गरेट लूकाज़—कोलचेस्टर के लार्ड लूकाज की सबसे छोटी बहिन। एक श्रेष्ठ वश। सभी भाई वीर और बहिने सुशीला थी। डचेस बुद्धिमान्, प्रत्युत्पन्नमति और विद्वान् महिला थी, जैसा कि उनकी अनेक पुस्तके प्रमाणित करती है। वे अत्यन्त सुशीला, प्रेमल एव सजग पत्नी थी, और अपने स्वामी के निर्वासन एव दुर्दिन मे सदा उनके साथ रही और जब वे घर लौटे तो उनके एकान्त वास मे उनका साथ कभी नही छोडा।

शिशिर के समय, जब दिन छोटे होते है, तीसरे पहर की पूजा-प्रार्थना दीपको के प्रकाश मे की जाती है। परिणाम यह होता है कि भजनमण्डली का भाग तो अशत प्रकाशित हो उठता है, जब गिर्जाघर के मुख्यभाग और क्रूसाकारनिर्मित गिर्जे के वक्रभाग गहरे और घटाटोप अन्धकार मे डूबे रहते हैं।

खुली फन्तियो और छज्जो के गहरे भूरे रग के बीच भजनीको के धवल वस्त्र चमकते है, आशिक प्रकाश के कारण खम्भो एव पर्दो की बृहदाकार छायाए पैदा हो जाती है और चतुर्दिक् घिरे अन्धकार मे किसी समाधि के अलकरण या स्मारकीय पुतले पर जहा-तहा फैल जाती है। बाजे के उभरते स्वर इस दृश्य के अनुकूल ही होते है।

जब प्रार्थना समाप्त हो जाती है तो भजनमण्डली के लोग धवलवस्त्र पहिने, हाथ मे दीप लिए डीन को इमारत के कान्वेण्टवाले भाग मे उसके निवास की ओर पहुचाने जाते है। यह जुलूस एब्बी के बीच से छायापन्न गलियारो से होता हुआ गुजरता है—कोनो और तोरणो तथा विकट समाधि-स्मारको को प्रकाशित करता, और फिर सबको अपने पीछे अन्धकार मे छोडता हुआ।

डीन के आगन से रात के समय मठो मे प्रवेश करते ही आखे, अधेरे तोरणाच्छन्न मार्ग से होती हुई एक समाधि पर अधलेटी दूरस्थ मर्मरमूर्ति पर जा पडती है जिसपर गैसलाइट की तेज़ चमक पडने के कारण एक रगारग प्रभाव उत्पन्न होता है। यह पल्टनी वश के एक व्यक्ति का भित्तीय स्मारक है।